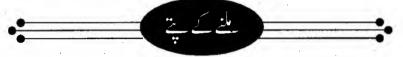


(جمله حقوق كمابت وطباعت بكن معنف محفوظ بي

| الحير السارى في تشريحات البخاري (جلداوّل) | نام كتاب: |
|--|---------------|
| استاذ العلماء حضرت مولانا محمصديق صاحب مدخلاك فيخ الحديث جامعه خيرالمدارس، ملتان | افادات: |
| حضرت مولا ناخورشيداحمه صاحب تونسوي (فاضل ومدرس جامعه خيرالمدارس،ملتان) | ترتيب وتخريج: |
| مولوی محمد یجی انصاری (دری جامد فرالداری، المتان) مولوی محمد اساعیل (حدم جامد فرالداری، التان) | کمپوزنگ |
| مکتبه امدادیه ، ٹی بی هسپتال روڈ ،ملتان | ناشرٰ: |
| ١٦ رمضان المبارك ١٣٢٣ه اشاعب دوم: جمادى الاولى ١٣٢٧ه | اشاعتِ اوّل: |
| محرم الحرام اسهاه | اشاعب سوم : |



ا:..... مولاناميمون احمد صاحب (مدرس جامعه خيرالمدارس،ملتان)

٢: مولا نامحفوظ احمرصاحب (خطيب جامعه مجدغله منڈی، صادق آباد)

m:..... مكتبه رحمانيدارووبا زار، لا مور

سم:.... اسلامی کتب خانه، لا مور

۵:..... قدى كت فانه آرام باغ ،كراچى





اس کتاب کی تھی میں حتی المقدور کوشش کی گئے ہے۔ پھر بھی اگر کوئی غلطی معلوم ہوتو ناشریا مصنف مدظلۂ کو ضرور مطلع فرمائیں تا کہ اس کی آئندہ اشاعت میں تھیج کردی جائے۔ (شکریہ)

وم» فهرس

| صفحه | مضامین |
|--------------|--|
| 10 | پیش لفظ - |
| . 17 | اظهارتشكر |
| 14 | عرضمرتب |
| 19 | سوانح حيات |
| ۲۳ | تقريظ |
| ro | علم حديث كي اصطلاحي تعريف |
| 19 | حدیث ، اثر ، خبر کے درمیان فرق |
| ۳. | موضوع علم حديث |
| 1 "1" | غايت علم حديث |
| ١٣١ | حدیث کی وجه تسمیه |
| mh. | ضروت علم حديث |
| PY - | فضائل علم حديث |
| r'A | حجيت حديث |
| .MI | حفاظت حديث |
| 60 | حفاظت حديث بصورت كتابت |
| ra | حفاظت حديث بصورت صحف ورسائل |
| _ ^2 | ضبط كتابت بصورت كتب |
| /^q | حدیث پاک اور تاریخ میں امتیاز |
| ۵۱ | منکرین حدیث کے شبھات اور ان کے جو ابات |
| ۵۹ | حکم منکریں حدیث |
| ۵9 | بيان اصطلاحات حديث |
| וצ | |
| 44 | الداب علم حديث |
| 77 | الرجمة المولف |
| 44 | مراب صحاح سنه |
| | ر افسام محدثین معارف معددیا معارف |

| فہرس | √ | الخيرالساري |
|------|-----|-------------------------|
| 14. | | اقسام شرک |
| 120 | * , | مسئله تاثيرنجوم |
| 120 | | مناسبة بترجمة الباب |
| 120 | | مسائل مستنبطه من الحديث |

﴿ كتاب الايمان ﴾

| صفحه | |
|------------|--|
| | مضامین |
| 122 | ايمان كالغوى واصطلاحي معنى |
| 149 | اسلام کے لغوی او راصطلاحی معنی میں مناسبت |
| 169 | ایمان اور اسلام کے درمیان مناسبت |
| * 1/4 | ضدالايمان والاسلام |
| 1/4 | كفر اصطلاحي |
| 1. | اقسام كفر |
| IAI | تصديق اقرار اعمال ميرتين بحثير |
| IAT | هل الايمان يزيدوينقص اختلافات ثلثه |
| IAT | ایمان کے بارے میں جمہور متکلمین اور امام اعظم کاملہ |
| IAM | دلائل احباف |
| 11/4 | دلائل جمهور |
| 1/4 | دلائل معتزله وخارجيه |
| 114 | دلائل كراميه و مرجئه |
| 1/4. | دلائل جمهور محدثين |
| 191 | ﴿باب ﴾ قول النبي سَنْ بني الاسلام على خمس وهو قول وفعل |
| 194 | وقال ابراهيم ولكن ليطمئن قلبي |
| 199 | حدثنا عبيدالله بن موسى قال انا حنظلة بن ابى سفين الخ |
| . 1** | استعاره کمی تعریف واقسام |
| Y+1 | مسائل مستنبطه |
| . Y+1 | ﴿باب ﴾ امور الايمان الخ |
| r•r | لَيْسَ الْبِرُ أَنْ تُولِّوُ او بُحُوهَكُمُ الآية |
| F+ P" | حدثنا عبدالله بن محمدالجعفى الخ |

| مرس | رنگیر،سادی |
|-------------|---|
| 100 | حج مبرور کی تعریف |
| ray | اقسام حصر و امثله |
| 102 | ﴿باب ﴾ اذالم يكن الاسلام على الحقيقة |
| ۲ 4• | ﴿ باب ﴾ افشاء السلام من الاسلام |
| PYI | الانصاف من نفسك اس جمله كي مختلف تفاسير |
| 777 . | ﴿باب ﴾ كفران العثميرو كفردون كفر |
| 444 | فاذاا كثراهلهاالنساء |
| 440 | ﴿باب ﴾ المعاصى من امرالجاهلية |
| 147 | لانصرهذاالرجل |
| rya | القاتل و المقتول في النار |
| , rya. | مسئله مشاجر ات صحابة |
| 121 | مسئله سبّ صحابةً |
| 127 | حكم رو افض |
| 121 | مسئله تكفير |
| 121 | ﴿باب ﴾ظلم دور ظلم |
| 124 | ﴿باب ﴾ علامة المنافق |
| 121 | اقسام نفاق |
| 129 | خیانت کی اقسام |
| TAT | ﴿باب ﴾ قيام ليلة القدرمن الايمان |
| tv. | غفرله ماتقدم |
| rar · | ﴿باب ﴾ الجهاد من الايمان |
| PAY | لايخرجه الاايمان بي اوتصديق بي |
| YAY | من اجراوغنيمة او الاخله الجنة |
| MA | لولاان اشقعلی امتی |
| MA | ولودت ال اقتل في سبيل الله |
| . ۲۸۸ | ﴿باب ﴾ تطوع قيام رمضان |
| YAA | غیرمقلدین سے چندمناظرے |
| 19 + | ﴿باب ﴾ صوم رمضان احتسابا من الايمان |
| 19 + | ﴿باب ﴾ الدين يسر الخ |

| فہرس | الخيرالساري ﴿ • ا ﴾ |
|--------------|---|
| MKV. | اذاولدت الامة ربتها كي متعدد توجيهات |
| rrq | في خمس لايعلمهن الاالله |
| rr. | ﴿باب﴾ |
| mmr. | ﴿باب ﴾فضل من استبرأ لدينه |
| mmm | وبينهمامشتبهات |
| rra | ﴿باب ﴾ ادآء الخمس من الايمان |
| 772 | غيرخزاياو لاندامي |
| ۳۳۸ | ﴿باب ﴾ماجاء ان الاعمال بالنية والحسبة الخ |
| mh. | در جات ایمان |
| LL. • | نیت اور حسبه میرے فرق |
| ۳۲۰ | مسئلة نيت في الوضوء |
| 444 | ﴿باب ﴾قول النبي سَيْشُ الدين النصيحة |
| 444 | نصیحت کا ماخذ |

﴿ كتاب العلم ﴾

| صفحه | مضامین |
|-------------|-----------------------------------|
| Ph4 | كتاب الايمان سربط |
| Pry | علم كالغوى واصطلاحي معنى |
| rrz | علم کی اقسام |
| FFA | حكم حصول علم |
| mud | مقام نبوت افضل هي يامقام ولايت؟ |
| roi | ﴿باب ﴾ فضل العلم |
| ror | ﴿باب ﴾ من سئل علما |
| r 00 | يارسول الله كهند كاحكم |
| raa | پیروں کی اقسام |
| ray | ﴿باب ﴾من رفع صوته بالعلم |
| roa - | ﴿باب ﴾ قول المحدث حدثنا و اخبرنا |
| MAL | ﴿بابل ﴾ طرح الامام المسئلة |
| MAM | ﴿باب ﴾ القراءة والعرض على المحدث |
| MAY | حدثنا عبدالله بن يوسف (مسئله بول) |

| à | 411 | - 1 N - ± |
|-----------------|--|---------------------------------|
| فی محمد محمد | | خیرالسار <i>ی</i> |
| PZI | | ﴿باب ﴾ مايذكرفي المناو |
| 727 | | مثاوله اور مكاتبه كي اقسا |
| 720 | به المجلس | ﴿باب ﴾ من قعد حيث ينتهى |
| 722 | | مسائل مستنبطه من الحديد |
| 72 A | مبلغ اوعى من سامع الخ | الباب ﴾ قول النبي المبالكترب |
| PA+ | | ﴿باب ﴾ العلم قبل القول و الع |
| 7% | أبيتخولهم الخ | وباب ما كان النبي الم |
| r 10 | اياما معلومة | ﴿باب ﴾ من جعل لاهل العلم ا |
| PAY | يفقهه في الدين | ﴿نَابِ ﴾من يردالله به خيراً! |
| raz . | | انما انا قاسم والله يعطى |
| MAA | | ﴿باب ﴾الفهم في العلم |
| MA9 | ث | مسائل مستنبطه من الحديد |
| 17 19 | والحكمة | ﴿باب ﴾ ا لاغتباط في العلم |
| mq. | | غبطه وحسدا |
| 797 | موسى الخ | ﴿باب ﴾ماذكرفي ذهاب |
| ٣٩٢ | چار ابحاث | حضرت خضر سمي متعلق |
| m90 | ك كه متعلق چند اشكالات اور ان كه جو ابات | حدثنا محمد بن عروة (حديث |
| 79 4 | ث | مسائل مستنبطه من الحديد |
| m92 . | بم علمه الكتاب | ﴿بابِ ﴾ قول النبي عَبْرُاللَّهُ |
| 799 | الصغير | ﴿باب ﴾ متى يصح سماع |
| ۱۳۰۰ | متعلق اختلاف | تحمل حديث كي عمر اس |
| 14.4 | العلم | ﴿باب ﴾ الخروج في طلب |
| h+h | لَم ِ لَم | ﴿باب ﴾ فضل من عَلِم وعا |
| 14-6 | جهل | ﴿باب ﴾ رفع العلم وظهور ال |
| γ• Λ | .تفاسیر | ان یضع نفسه کی متعداد |
| ۳•۸ | | احاديث مير رفع تعارض |
| P* 9 | | ﴿باب ﴾ فضل العلم |
| M+ | ظهر الدابة او غيرها | ﴿باب ﴾ الفتياوهوواقف علم |
| רור | | ﴿باب ﴾ من اجاب الفتياب |
| MIA | | ﴿باب ﴾ تحريض النبي عبير |
| 74. | | ﴿باب ﴾ الرحلة في المسئ |

.

ž

| فہرس | (Ir) | لخيرالسارى |
|----------|--------------------------------------|---------------------------|
| ۳۲۱۰ | کے درمیان فرق | دیانت،قضا اور فتوی |
| MTT | علم | |
| rrr | | قد حدث امر عظيم |
| רידרי . | موعظة والتعليم اذارأي مايكره | ﴿باب ﴾ الغضب في ال |
| 447 | از میں هلنے کاقصه | فلیخفف،غیرمقلد کے نہ |
| LLY | تمتاع . | مسائل لقطه، تعریف و اس |
| h.h.* | ركبتيه عندالامام والمحدث | ﴿باب﴾من برک علی |
| اسم | بث ثلثا ليفهم الخ | وباب من اعاد الحديد |
| MAM | - و اهله | ﴿باب ﴾ تعليم الرجل امتا |
| רישיין . | حثين حثين | باب سے متعلق دو اهم به |
| mmy | ء وتعليمهن | ﴿باب ﴾ عظة الامام النسا |
| PP2 | شدايث | ﴿باب ﴾ الحرص على ا |
| rra | <u> </u> | اسعدالناس اقسام شفاعن |
| ٩٣٩ | | وباب ﴾ كيف يقبض العل |
| 44. | | علم کے خاتمے کے اسباب |
| rrr | على حلةفي العلم | ﴿باب ﴾ هل يجعل للساء يوم |
| ייייייי | فلم يفهمه فراجعه حتى يعرفه | ﴿باب ﴾ من سمع شيئا |
| rr2 . | ائب قاله ابن عباسٌ عن النبي عيوسيُّم | ﴿باب ﴾ ليبلغ الشاهد الغا |
| لالما | اص في الحرم) | لايعين عاصيا (مسئله قصا |
| ra+ | على الننوعيديلية | ﴿باب ﴾ اثم من كذب |
| rar | مىرالله ملى وسلم | حكم كذب على إلنبي |
| ror | فقد رانی (چندابحاث) | من راني في المنام |
| ray | | ﴿باب ﴾ كتابة العلم |
| ran | | ترجمة الباب كي غرض |
| ro2 | الدمير قتل كدمتعلق مسئله اختلافيه | کافر کے مسلمان کے ب |
| M4. | عتلافیه | دیت کے متعلق مسئلہ اخ |
| LAI | حضرت ابو هريره ً | اسباب كثرت روايات |
| 641 | مان (حديث قرطاس) | حلاثنا يحيى بن سليه |
| . הלה | يل | ﴿باب ﴾ العلم و العظة بالل |
| arn | لأخرة ك چند تفسيريس | رب كاسية عارية في |
| ראא י | | ﴿باب ﴾ السمريالعلم |

| فہرس | الخيرالسارى ﴿١٣﴾ |
|-------------------------------------|--|
| P42 | ترجمة الباب كي غرض |
| MYA | شاہ اهل الله كى جنوب كد دربار ميں حاضرى |
| (*\f4 | ترجمة الباب سے مناسبت |
| 779 | ﴿باب ﴾ حفظ العلم |
| r21 | ترجمة الباب كي غرض |
| 12° | ﴿باب ﴾ الانصات للعلماء |
| ۳۵۳ | ترجمة الباب كي اغراض |
| ۳۷۲ | ﴿باب ﴾ مايستحب للعالم اذاسئل الخ |
| rza | ﴿باب ﴾ من سئل وهو قائم عالماجالسا |
| rz9 | ترجمة الباب كي غرض |
| rz 9 | ﴿بابِ ﴾ السوال والفتياء عند رمي الجمار |
| · ΛΑ• | ترجمة الباب كي غرض |
| M.• | ﴿باب ﴾ قول الله ، وَمَا أُوتِيَتُمُ مِنَ الْعِلْمِ الْاقلِيلَا |
| MAY | ترجمة الباب كي غرض |
| MY | قُل الرُّوْحُ مِنَ ٱمُررَتِي * |
| MY | روح کے بارے میں فلاسفہ اور متکلمین کامذھب |
| ۳۸۲ | روح اور نفس میر فرق |
| የአ ዮ | ﴿باب ﴾ من ترك بعض الاختيار الخ |
| MAG | ترجمة الباب كي غرض |
| MAG | تغيرات ثلثه في بناء الكعبه |
| MA | مسائل مستنبطه من الحديث |
| MAY | ﴿باب ﴾ من خص بالعلم قوما دون قوم كراهية ان لايفهموا |
| ۳۸۸ | ترجمة الباب كي غرض |
| ۳۸۸ | اس باب اور گزشته باب میر فرق |
| PA 9 | ﴿باب ﴾ الحياء في العلم |
| [4] | ترجمة الباب كي اغراض |
| MAL | ﴿باب ﴾ من استحيى فامرغيره بالسوال |
| ا ۲۹۳ | ﴿باب ﴾ ذكر العلم والفتياء في المسجد |
| ١٩٩٨ | ﴿باب ﴾ من اجاب السائل باكثر مماساله |
| 79a | ترجمة الباب كي غرض |
| The second of | |
| وبالمستون والمستون والمستون والماسا | |



بيشِ لفظ

بِسُمِ اللهِ الرَّحَمٰنِ الرَّحِيمِ

اولاً: تمام تعریفیں اس ذات کے لیے ہیں جس نے مدایتِ انسانی کے لیے قرآن پاک نازل فرمایا اور محمد رسول الله علیقی کا کستان کا شارح فرمایا اور حضور علیقی کی اسوہ حسنہ کی انتباع کو ضروری قرار دیا۔

ثانياً: صلوة وسلام أس ذات برجس كقول وفعل اورتقر بركوحديث ياك كانام ديا كيا_

ثالثاً: الله تعالى كى كرورُ ول رحمتين بول أن محدثين پرجنهول في حضور علي كى مديث باك كومحفوظ فرمايا اور صحيح اسناد كے ساتھ أمت تك پنجايا في خصوصاً امام بخارى رحمة الله عليه پر، جنهول في صحت حديث كا اجتمام كيا اور أمت في اس (بخارى شريف) كو "ارصح الكتب بعد كتاب الله" كالقب ديا۔

رابعاً: ہزاروں رحمتیں نازل ہوں اُستاذِ محترم مولا ناخیر محمصاحب نوراللہ مرقدہ پرجنہوں نے محنت کر کے بخاری شریف کا چالیس سال تک درس دیا، آ پکے سامنے یہ ہدیہ "المخید السادی فی تشدید حات البخادی " استاد موصوف کی تقریر ہے جس کو مدار بنا کر بندہ نے درس بخاری شریف جاری رکھا، اس میں کمی ویدشی ممکن ہے۔اصولاً تمام مضامین حضرت الاستاذ مولا ناخیر محمصاحب رحمۃ اللہ علیہ کے ہیں اس میں پچھاضا نے حالات حاضرہ کے پیشِ نظر کئے گئے اور کی وکوتا ہی بندہ راقم الحروف کی بے مائیگی کی بناء پر ہوئی ۔طلبہ کے رجمان کود کھے کرخصوصا طالبات کے نصاب بخاری کا پہلا جزء ہونے کی وجہ سے ضرورت محسوس کی گئی کہ اس کو بی کرائے طلبہ وطالبات کو فائدہ پہنچایا جائے۔

دُعاء ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کو قبول فرمائیں اور طلبہ وطالبات کے لیے مفید بنائیں۔ (امین) اگراس میں کوئی غلطی ہوتو اس پراطلاع فرمائیں تا کہ آئندہ اشاعت میں اصلاح کرلی جائے۔

فقط

بنده محمر صديق غفرلهٔ خادم الحديث جامعه خير المدارس، ملتان

اظهارتشكر بشيراللهِ الرَّحْسُ الرَّحِيْم

حضور پاک الله نے فرمایا ((من لم یشکر الناس لم یشکر الله))اس حدیث پاک کے تقاضا سے بندہ ال بعض حضرات کا تہدول سے شکر گزار ہے جنہوں نے ترتیب و میں حصرایا۔

اولاً: مولاناخورشيداحمصاحب مدظله جنبول في خزيج وترتيب كاكام انتهائي محنت اورلكن سي كيا-

ثانیاً: جامعے کے استادالحدیث حضرت مولانا شیر محمرصاحب مدخلائد اور حضرت مولانا شبیر الحق صاحب مدخلائد جنہوں نے نظر ثانی کر کے مفید مشوروں سے نوازا۔

ثالثاً: عزیرتم مولوی محمد یجی سامهٔ (مدر سامه طدا) اور مولوی محمد اساعیل (معلم جامعه طدا) جنهول نے کمپوزنگ کر کے کتاب کو سین بنانے کی بھر پورکوشش کی۔

فقط

بند کامحرصدیق غفرلهٔ خادم الحدیث جامعه خیر المدارس،ملتان

عرض مرتب بسُم اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْم

الحمدالة رب العلمين والعاقبة للمتقين والصلوة والسلام على سيدالانبياء والمرسلين

المابعد! الله تعالى كا ب مدوب انتها وشكر ب جس كففل وكرم سے بنده اس لائق وقابل بواكراستاذى، استاذ العلماء على المحد الله تعلی المحد معدد من المعدد المحد من ترتیب وتخ بخ الحدیث معزت مواد نامحد معدد من مدیث معدد من ترتیب و تخ بخ الحدیث معلى و تسلی و مطلب و دوال بات اور علم مدیث معدد من قرائی و آشائی کشائفین تک پنجانے کی ہمت وسعادت عطافر مائی۔

حضرت شخ الحدیث منظام کاتعلق اس خوش نصیب اور سعادت مندطا کفد و جماعت ہے جن کو حضرت مولا نا خیر محمد صاحب رسمۃ الله علیہ ہے تلمد (شاگردی) کاشرف عاصل ہے۔ اور حضرت نورالله مرقدہ کی خدمت میں رہ کران کے علوم ومعارف سے خوب نفع انحایا ہے۔ حضرت شخ الحدیث مظلم نے زندگی کا بیشتر حصد دین متین کی نشر واشاعت میں لگا دیا ہے۔ عمر کے اکیاسیوی (۱۸) سال میں بھی شان وشوکت ، ہمت ومحنت ، عزم واستقلال سے بخاری شریف جلداق ل پڑھار ہے ہیں اور عاج اللہ تعالی حضرت کے فیصل کو دنیا میں جاری وساری رکھے (ایمن) صدیث سے تعلق و محبت ، اور مودت و عقیدت رکھے والوں کی خدمت میں بی خاص علمی تحف در الخیر الساری) میش کرنے کی سعادت حاصل کی جاری ہے ور دھیقت خیر مجسم، والوں کی خدمت میں بی خاص علمی تحف در الخیر الساری) بیش کرنے کی سعادت حاصل کی جاری ہے ہو ور اللہ مرقدہ ، بانی جامعہ خیر المدارس ، ملتان کے دری و تعلیمی خصوصیات ، انوارات و تجلیات کا مظمر الم ہے یایوں کہ لیجئے کہ بیا نبی کا فیض ہے جو جاری وساری ہے ۔ بخاری شریف کی یہ تقریر بصورت تحریر حضرت شخ الحد یہ ضاحب دامت بر کا تیم کی تقریب بیا بچین سالہ تدریس اور ان گنت کتابوں کے مطالعہ کا خلاصہ اور نجوڑ ہے۔

بندہ نے حضرت شخ الحدیث مظلم کی تقریر کوحتی المقدور مہل اور عام نم اور اردوادب کے سانچ میں ڈھالنے کی سعی و

کوشش کی ہے۔اس کے ملاوہ درج ذیل امور کا خاص اہتمام کیا گیا ہے۔

- (١) تخ ت كرت موع ماخذ كاحوالدورج كياب
- (۲) حسب ضرورت حاشیہ میں مکمل حدیث نقل کی ہے۔
- (٣) بخارى شريف كى اكثر احاديث كوتر يج كاجامه يهنايا يــــ
- (٣) مكرر لا كى جانے والى احاديث كى رقوم الا حاديث اور انظر كے عنوان سے نشان دہى كى ہے۔
 - (۵)....راوی (سحالی) کے مختمر حالات پرروشی ڈالی ہے۔

(۲).....راوی (صحابی) کی کل مرویات کوآشکارا کیا ہے۔

(٤) كنيت ولقب ع مشهور موانے والے صحابہ كرام اور تابعين كے اساء كراي لكھ بيں۔

(٨)....قرآن مجيد كي آيات مباركه كاحواله دية وقت ياره ،سورة اورآيت كي نمبر كااندراج كيا ہے۔

(٩)بعض مقامات پر بیاض صدیقی کا حواله لکھا ہے اس سے مراد حضرت مولا ناخیر محمد صاحب نورالله مرقد ہ کی وہ تقریر ہے •

جے حضرت شیخ الحدیث مذالم ہے اپنے استاذ مولد ناخیر خمرصا حب سے بخاری شریف پڑھنے کے زمانہ میں لکھاتھا۔

(۱۰) سعلا، وعوام ،طلباء وطالبات کی سہولت اور آسانی کے لیے احادیث بخاری شریف لکھ کرشنے الحدیث والنفیر استاذ

العلماءعلامة شبيراحمة غانى رحمة الله عليه كى درس بخارى سے تحت اللفظ ترجمه معمولي حذف واضافه كے ساتھ شامل كيا ہے۔

بندہ اپنی کم علمی کا مُعتر ف ومُقِر ہے۔ میرے لیے استے عظیم کا م کو کرنا، ترتیب وتخ ت کا جامہ پہنانا، منظرِ عام پرلانا، بظاہر مشکل تھا، کیکن اللہ پاک کی نصرت شامل حال رہی اور حضرت الاستاذ مظلہم کی طرف سے ہر طرح کی حوصلہ افزائی ہوتی رہی ، شفقت کا معاملہ رہا ، علم وقمل میں برکت کی دعا نیں ملتی رہیں ، کامل و اکمل رہبری، رہنمائی بھی حاصل رہی۔ اس کتاب کی ترتیب وتخ تج، تعدیل تھی میں حضرت الاستاذ مظلم کی تو جہات و ہدایات میر احوصلہ برحاتی رہیں۔ رب ذوالجلال، خالق ارض وساء کی ذات پاک پر جمروسہ کرتے ہوئے اس کام کوشروع کر دیابندہ نے اپنی استطاعت کی حد تک بھر پورکوشش کی ہے کہ کام تااختام بلوغ المرام ہو کوئی آیت وحدیث مسلدہ بحث حوالہ کے بغیر ندر ہے لیکن یقینا بہت می باتوں کے حوالے رہ گئے ہوں گے۔

محترم قارئین انتھجے کے سلسلے میں مولوی اختر رسول (متعلم تخصص فی التصنیف جامعہ ہذا) کی معاونت حاصل کی گئ لیکن اس کے باوجود اس عظیم الثان کام میں غلطی کے امکان کونظر انداز نہیں کیا جاسکتا۔اس لیے علماء وطلباء سے گزارش ہے کہ اگر اس میں کوئی غلطی نظر آئے تو نظر کرم فرماتے ہوئے آتا گاہ فرمائیس تا کہ غلطیوں کا از الدکیا جاسکے۔

محترم قارئین سے گزارش ہے کہ اپنی تحرفگا ہی دعاؤں ،التجاؤں میں بیددعاء بھی شامل کرلیں کہ اللہ پاک اس کتاب (الخیر الساری فی تشریحات البخاری) کوشرف قبولیت بخشے ،علاء وطلباء وعالمات وطالباتِ اورعوام کے لیے نافع بنائے اور ہم سب کے لیے ذخیرۂ آخرت بنائے (امین)

والسلام (مولانا)خورشیداحمه (بهاروالوی تونسوی) فاضل ومدرس جامعه خیرالمدارس،ملتان کیم رمضان المبارک ۱۴۲۳ه همطابق ۲ رنومبر۲۰۰۲ء

سوانخ حيات

سلسلة نسب: محرصديق بن حاجى نى بخشّ بن اكبردينٌ بن ابراجيمٌ

كنيت: ابوالقاروق

نسبت: جالندهري

قوم: ارائين

ولادت باسعادت: سس ستبر٢ ١٩٢١ء يك نبر ٢٥١ گ ـب او كي ضلع توبي سنكه مين پيدا بوت ـ

عصرى تعليم: جب عرمبارك يا في مال موئى تووالد ما جدنے ابتدائي عصرى تعليم كے ليرايخ كاؤن کے اسکول میں داخل کرادیا۔ جارسالہ پرائمری نصاب متاز نمبروں سے باس کیا۔ پھرلوئر ٹدل (یانچویں وچھٹی) کی تعلیم کے لئے گاؤں سے غیر میل دور چک نمبر۱۸۲ گ۔ب چھاپیاں والی میں داخلہ لیا۔دوسال میں لوئر مُدل پاس کر لیا۔غالبًا گاؤں سے چومیل کے فاصلے پر چک نمبر ۱۹۱گ۔ب بسم اللہ پور میں مُدل کی تعلیم کمل کر لی۔ یاک وہند پر انگریز کے نا جائز قبضہ کے باوجود بعض اسکولوں میں فاری تعلیم پڑھائی جاتی تھی کیکن انگریزی نہیں پڑھائی جاتی تھی۔ لہٰذا آپ نے فاری میںمہارت حاصل کر کی۔اس دوران گاؤں میں ہی ناظر ہ قر آن یا کبھی کمل پڑھ لیا۔ دیسی تعلیم کا آغاز: معدب عطری تعلیم کی تکیل کے بعد مشفق ومبربان حضرت مولانا محد انوری ا فیمل آبادی کے والدمحر محضرت مولانافتح دین کی ترغیب سے گاؤں کی مسجد میں حضرت مولاناعبد المجید صاحب، نورنگ پورفاضل سہار نبور کے ہاں ذین کتب بڑھنے کے لیے داخلہ لیا۔فاری سے لے کرفد وری، کنز الدقائق تک کتابیں بڑھیں۔ تعلیمی سفر: غالبًا ۱۹۳۴ء کوحظرت مولا نافتح دین صاحبً اورابتدائی کتب کے استاد حضرت مولانا عبدالمجيد صاحبٌ كے خطوط لے كرمدرسه خيرالمدارس جالندهركاسفركيا _وہاں بہنچ كرحفزت مولانا خيرمحمرصاحب رحمة الله عليه سے ملاقات كى اور پھر مدرسه ميں داخله كى درخواست پيش كى _ تين دن كى كوشش كے بعد آ ي نے داخلية منظور فرمایا۔ چارسال تکمشفق اساتذہ ہے شرف تلمذ حاصل رہا مختلف علوم وفنون کی کتابیں پڑھیں۔ ہدایہ اولین، آ ثارانسنن مطول اورملاحسن وغيره كتابون كادرس ليا_

خیر المدارس جالند هرسے ملتان: حفرت مولا ناخیر محرصاحب کے مربی ومرشد حفرت مولا ناخیر محرصاحب کے مربی ومرشد حفرت محلا اللہ علیہ کا دعا کیں رنگ لاکیں اور حفرت مولا ناشمیر احمد عثانی رحمة اللہ علیہ جیسے اکابر دیو بندکی کوششوں سے پاکستان معرض وجود میں آیا۔ مسلمانوں کی کثیر تعداد ہندوستان سے بحرت کر کے پاکستان آئی۔ حضرت مولا ناخیر محمد صاحب بھی ملتان تشریف لے آئے، یہاں بہنی کر عابقہ نام سے بی جامعہ خیر المدارس کا اجراء فرمایا۔

حفرت الاستاذ بھی نامساعد مالات میں جالندھرے اوگی چک نمبر ا۲۵ گ۔ب میں واپس لوٹ،آئے۔ حفرت مولا نا خیر محمد صاحبؓ نے خیر المدارس کے اجراء کے بعداینے سابقہ شاگر دِرشید کو یا وفر مایا۔

جامعہ میں دوبارہ داخلہ:مریجامعہ کی اطلاع پرآپ نے جامعہ خیرالمدارس ملتان میں دوبارہ داخلہ لیا اور جلالین دمشکو قشریف کے درجہ کی کتابیں پڑھیں۔اگلے سال علوم عقلیہ ونقلیہ ، تفاسیر واحادیث کے ماہر و حاذق جیدعلاء کے پاس آخری سال کی کتب پڑھیں۔

کتب اوراساتذ ہ کرام کے اسماء گرامی یہ ھیں۔

ا:..... بخارى شريف معزت مولانا خير محمر صاحبٌ مهتم وشيخ الحديث.

۲: ترندی دا بودا و دشریف مطرت مولا ناعبدالرحمٰن صاحب کیمل یوری صدر مدرس ـ

المسلم شريف حضرت مولا نامفتى عبدالله صاحب وروى ـ

منبائی شریف، مؤطین وابن ماجه حضرت مولا ناعبدالشکورصاحب کیمل پوری ..

۱۳۷۸ ھوسند فراغ حاصل کی اور ۱۳۹۹ ھو تھیل کے اسباق پڑھنے شروع کیے۔

تقرربطور معین مدرس : سسدر جامعه نے آپ کی علمی صلاحیت واستعداد دیکھ کر محیل کے اسباق پڑھنے کے ساتھ ساتھ معین مدری کے طور پر تدریس کی ذمہ داری سونپ دی ۔ آپ تین اسباق پڑھتے اور تین ہی پڑھایا کرتے تھے۔

تقرر بطور مدرس: ابھی ایک ہی سال گزراتھا کہ مدیر جامعہ نے شوال ۱۳۷۰ھ بذریعہ چھی آپ کو جامعہ کا مستقل مدرس مقرر فرمایا (ستاون سال ہو چکے ہیں حضرت مولانا خیر محمصا حب کے دستِ مبارک ہے کھی ہوئی چھی آج بھی اصلی حالت میں حضرت کے پاس موجود ہے) اللہ تعالیٰ کے فضل وکرم سے مختلف حالات سے گزرتے ہوئے تا حال جامعہ کی خدمت میں اسی جذبہ اور گئن سے مصروف عمل ہیں جو شروع دن سے تھا اور اس وقت شنخ الحدیث

کے منصب پر فائز ہیں۔عرصہ درازتک پوری کیفیات وانوارات کے ساتھ بخاری شریف جلد ثانی کا درس ویا اور تقریباً چودہ، پندرہ سال سے جلداوّل کا درس دے رہے ہیں۔اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ حضرت الاستاد کا سابیہ تا دیر ہمارے سروں پر قائم رہے تا کہ ہماری طرح تشدگان علوم آپ کے علم کے سمندر سے فیض باب ہوتے رہیں۔

مر و المراجعة المراج

مومدین میک برا و مین این میر میرسی میرسی میرسی این میرسی میرسی میرسی میرسی این این میرسی میر

حضرت مولانا خیرمحرصاحب کے دست مبارک ہے کھی ہوئی چشی

جامعه میں پچپن سال:دس سال سے زائد عرصه دارالا قامه میں گرانی کے فرائض انجام دیئے طلباء کی اخلاقی تربیت کا خاص خیال رکھاان کے رہن مہن پرخصوصی توجه دی تا کہ وہ اپنی اقامتی ضروریات سے بے نیاز ہو کراپی پڑھائی جاری رکھ کیس۔ زیورعلم سے آراستہ ہو کراچھا معاشرہ تشکیل دے کیس۔ آپ کی گرانی میں تعلیم پانے والے ایسے ظیم انسان تیار ہوئے جن کی نظیر تلاش کرنا ناممکن تونہیں ، مشکل ضرور ہے۔

اوردس سال تک حضرت والا دارالا فقاء میں مندا فقاء پر فائز رہے، کتب بنی اور قوت استدلال سے سائلین کے سوالوں کے جوابات دیے۔ ہزاروں فقافی لکھ کرفتوی لینے والوں کی ٹیاس بجھائی، آج وہ فقافی فی خیرالفتافی کی صورت میں پانچ جلدوں میں شائع ہو بھے ہیں بچھابھی شائع ہونے باتی ہیں۔

موجودہ مدیر جامعہ خیرالمدارس حضرت مولانا قاری محمد حنیف جالندهری صاحب اطال اللہ بقاءہ کے دورِ اہتمام میں جامعہ کی نظامت حضرت کوسونی گئی،عرصہ دس سال جامعہ کی نظامتی ذمہ داری نبھائی بہمی سی شکایت کاموقع نہیں آنے ویا۔ نظامت بگرانی، فنوی نویس کے ساتھ ساتھ تدریس کام جاری رکھا، اللہ تعالیٰ کے فضل وکرم سے آج تک تدریسی خدمات میں مصروف ہیں۔

درس بخاری :درس بخاری شریف سے پہلے تین سال تک آپ نے جامعہ میں تر ندی شریف پڑھائی جامعہ کے صدر مفتی اور شخ الحد یث حضرت مولانا مفتی مجرعبداللہ ڈیروگ نے بخاری شریف جلد تانی پڑھانے کا تھم فرمایا۔ کی سال تک بخاری شریف جلد تانی پڑھاتے رہے۔

حضرت مولا نامفتی عبداللہ صاحب ڈیروئ کے بعد جامع المعقولات والمنقولات علامہ محمد شریف کشمیری شخ الحدیث کی مسند پرجلوہ افروز ہوئے اس عرصہ میں بدستور بخاری شریف جلد ثانی پڑھانے کا اعزاز حضرت والا کو حاصل رہا ، علامہ محمد شریف کشمیری اخیر عمر میں کافی علیل ہو گئے زندگی سے وفا کی امیدیں ختم ہوتی نظر آنے لگی ، علم وعرفان کاچراغ مممانے لگاتو علامہ صاحب نے حضرت الاستاذ کو بخاری شریف جلداول پڑھانے کا حکم دیا ، آپ نے اس کو سعادت عظمی سمجھتے ہوئے قبول فر مایا اور بخاری شریف جلداول کا درس دینا شروع کیا ، سینکڑوں بلکہ ہزاروں ملکی وغیر ملکی وفاقی وغیروفاقی تشنگان علوم بخاری پڑھنے آئے ، آپ کے درس میں بیٹھے ، آپ کے علمی سمندر میں سے حصہ لیا۔ اور عرب وعجم ، ایران وافغانستان ، الغرض دنیا کے مختلف مما لک میں اللہ کا دین پھیلانے چلے گئے۔

نصوف : کی ذات والاصفات میں تدریس وتصوف کا حسین امتزاج ہے۔ آپ کا بیعت کا تعلق ولی کامل حضرت مولانا خیر محمد صاحب نوراللہ مرقدہ سے تھا اور آپ کو حاجی فتح محمد صاحب سے خلافت ملی ہے (جوحضرت مولانا خیر محمد صاحب سے خلافت کی تشہیر فرمائی البت علاء وطلباء اور عوام کی سے خلافت کی تشہیر فرمائی البت علاء وطلباء اور عوام کی سے خلافت کی تشہیر فرمائی البت علاء وطلباء اور عوام کی ایس مناس بیٹے والا نفع سے محروم نہیں رہا۔ آپ نے اصلاح اور تزکیفس پرخصوصی توجہ دی ، آپ کے پاس آنے والا اور آپی مجلس میں بیٹے والا نفع سے محروم نہیں رہا۔ آپ نے طلباء کو معاشرہ کا بہترین فرد بنانے کی بھر پورکوشش کی تاکہ پڑھا ور پڑھا کرا چھامعاشرہ بھی تشکیل دے کیس۔

حسن بیان:الله تعالی نے حضرت الاستاذ کودل کش اور دنشین حسن بیان سے نوازا ہے۔جنہوں نے آپ کی تقریر سی دو آ کے گرویدہ ہوگئے۔

اسیاسی بصیرت: سیاس بصیرت کے لحاظ سے بھی اپنے طبقہ میں حضرت کو خاص مقام حاصل ہے۔ حضرت الاستاذ مولا نا خیر محمد صاحبؒ کے طریق پرسیاسی جماعتوں کو دفاعی لائن شار کرتے ہیں جو جماعتیں اسلام نافذ کرناچا ہتی ہیں ان کواسخسان کی نگاہ سے دیکھتے ہیں، ایسے ہی دین تحریکات مثلاً تحریکِ ختم نبوت اور تحریکِ نظام مصطفیٰ کو وقت کی ضرورت قرار دیتے ہیں ۔قرار دادمقا صدمنوانے کے لئے چلائی جانے والی تحریک میں بھر پور حصہ لیا اور اللہ پاک کے فضل وکرم سے میتحریک کامیاب ثابت ہوئی۔

الله رب العزت حضرت الاستاذكي عمر مين بركت عطاء فرمائ اور جهار يسرون پران كاسابيتا ديرقائم ركھ (امين)

تقريظ

(يادگار اسلاف، حفزت مولانا قاری محمر حنيف جالندهري زيدمجد مهم مهتم جامعه خير المدارس، ملتان)

الحمدلله والسلام على عباده الذين اصطفى

ا مابعد! حدیث کاموضوع نی اکرم علی کا دات گرامی کیٹیت رسول ہے اس کے بجوادب نی کریم علی کا ہے و ای آپ علی کا ہے و ای آپ علی کا کہ اور جس طرح نی کریم علی کا کہ اور جس طرح نی کریم علی کا کہ اور جس طرح آپ علی کا خات کی شان اقدس میں گستاخی و بے ای طرح آپ علی کا خات کی احداد آپ علی کا مرح اس میں کی خوجت میں جی خواد آپ علی کا مرح اس میں کا مرح اس میں کا مرح آپ علی کے علی کے میں میں میں کہ میں کہ میں کہ میں کا مرح آپ علی کے دیارت کا معادت ماصل کرنے والے شرف صحابیت یا کر پوری امت سے متاز ہوئے ای طرح آپ علی کے دیکر شعبوں میں کا مرکز نیوالے والوں سے متاز و منفرد ہیں۔

پر صدیث صرف روایت کانام نہیں بلکہ امام علی بن المدین (محصر الفقه فی معانی المحدیث نصف العلم و معرفة الرجال نصف العلم" صدیث محمانی میں فور وَلَر کرنااس موضوع کانصف علم ہے اور نصف ثانی صدیث کے معانی میں فور وَلَر کرنااس موضوع کانصف علم ہے اور نصف ثانی صدیث کے رجال کی معرفت ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ فقہ صدیث کے مقابل کی اور ماخذ کانام نہیں بلکہ صدیث کے معانی سیحضے کانام ہی فقہ ہے۔ امام تر فدی تجائز کی ایک بحث میں فرماتے ہیں "و کذلک قال الفقهاء و هم اعلم بمعانی العدیث (جامع تذی جاس ۱۸۸) "اور فقہاء نے ایسے ہی کیا ہے اور یکی لوگ صدیث کے معانی کو انچھی طرح تیجھے والے ہیں۔

کتب احادیث میں امام محربن اساعیل بخاری رحمة الله علیه کی تالیف "المجامع الصحیح" کوجوانتیازی مقام ومرتب حاصل ہے اس سے اہل علم بخوبی آشنا ہیں ،امام مسلمؓ نے امام بخاریؓ کے بارے میں قتم کھاکر فرمایا "اشھدانه لیس فی الدنیا مثله "(مقدمہ فنح الباری) آپ جیسا محدث روئے زمین پڑس میں اس کی شہادت دیتا ہوں۔

محدثینؒ کے نزدیک سندعالی کامیسر آتا ایک بڑاطر ہ امتیاز ہے اس پہلوسے بھی بخاری شریف کا درجہ دیگر کتپ صحاح ہے متاز ہے۔

بخاری شریف کی تدریس حق تعالی شانه کاانعام اورایک علمی اعزاز ہے، جامعہ خیرالمدارس ملتان میں احقر کے حد امجد استاذ العلماء حضرت مولا ناخیر محمد جالندھری قدس سرہ کے بعد محدث العصر حضرت مولا نا علامہ محمد شریف کشمیرگ ، شخ الحدیث حضرت مولا نامفتی محم عبداللہ ڈیروگ حضرت مولا نامفتی محمد عبدالتار صاحب مدخللہ اور ہمارے استاذِ مکرم شخ الحدیث حضرت مولا نامحمصدیق صاحب دامت برکاهم مدریس بخاری شریف کے مند پرتشریف لائے۔

استاذِ عرم شیخ الحدیث حفرت مولانا محرصدیق صاحب دامت برکاتهم ،حفرت داداجان کے مایہ ناز اور قابلِ فخر تلافدہ میں شار ہوتے ہیں آپ کو بیسعادت اورخصوصیت حاصل ہے کہ فاری سے کیکر دور ہُ حدیث تک کی اکثر کتب آپ نے حضرت داداجان کی نگرانی وسریریتی اوررہنمائی میں پڑھائی ہیں ۔حضرت مولا ناخیر محمرصا حب قدس سرہ کی رحلت کے بعد دورہُ حدیث شریف کی تقریباتمام کتب کی تدریس کی سعادت یا فی اوراب تقریبا ۱۳ سال سے بحثیت شخ الحدیث بخاری شریف زیروس ہے۔ آ پ سادہ پوش وسادہ دل ہیں گرعلم وفضل ، تدریس اور تغییم کا پیعالم ہے کہ مشکل سے مشکل فن اور پیچیدہ ہے پیچیدہ مسكة بكانداز بيان كسامني إنى بن جاتا ب-احقر كوحفرت سابتدائى كتب سے كرانتا كى اسباق تك يرالهنكى سعادت حاصل رہی ہے۔ میں پوری ذ مدداری اوراعماد سے بیاکہ سکتا ہوں کداللہ تعالی نے تفہیم اور بیان کا جوسلیقہ اور صلاحیت آ پ کوعطافر مایا ہے وہ بہت کم مدرسین میں نظرآ یا علمی ودین حلقوں میں آ پ کی شہرت ہوئے گل کی طرح پھیلی ہوئی ہے ۔ جامعہ خیرالمدارس میں دورہ حدیث شریف کے لیے طلبہ کرام دور دراز سے مسفر کر کے پہنچتے ہیں اور یہاں اساتذہ کرام سے اپنی علمی بیاس بجماتے ہیں ، جامعہ کے شخ الحدیث حضرت مولا نامحمرصدیق صاحب مدخللہ کی امالی جوآپ کے درسِ بخاری شریف کے دوران طلبہ نے تحریر کیس پختیق و نکته ری او تعہیم معانی ومطالب حدیث میں اپنی مثال آپ ہیں اور ۵۰ سال سے زائد آ کی تدریسی زندگی کامغز اورخلاصہ ہیں ،ان امالی کی اشاعت کا تقاضا ایک عرصہ سے اہلِ علم کی طرف سے کیا جار ہاتھا مگر بوجوہ تا خیر ہوتی رہی۔حال ہی میں پہ جان کرقلبی مسرت ہوئی کہ بیلمی ذخیر ہ تر تیب ومراجعت اور تحقیق ونظر ثانی کے مراحل ہے گز رکر طباعت کے مرحلہ میں ہے،احقر کی رائے میں اس کی اُشاعت طلبہ واسا تذہ حدیث کے لیےان شاءاللہ ایک علمی خزینہ اور نعت غیر مترقبہ ہوگی۔ جوانھیں دیگر بہت ی شروح وتعلیقات ہے بے نیاز کردے گی ان امالی کانام'' الخیرالساری'' تجویز کیا گیا ہے امید ہے کہ بیسلسلہ خیرتاابد جاری وساری رہے گااوراہل علم اس سے استفادہ کرتے رہیں گے۔ دعاہے کہ حق تعالی شانداسے ا بني بارگاه ميں قبول فرما كرتمام خلائق بالخصوص طلبه اوراسا تُذهُ حديث كے لئے نافع اور مفيد بنا كيں۔ (امين)

والسلام

(حضرت مولانا) قاری محمد صنیف جالندهری مهتم جامعه خیرالمدارس ،ملتان ۱۲/رمضان المبارک ۱۳۲۳ه

علم مدیث شروع کرنے سے بل محدثین اساتذہ چندا بحاث بیان فرماتے ہیں۔

﴿علم حدیث کی اصطلاحی تعریف﴾

الميس مختلف اتوال بين -

(١) هوعلم بقوانين (قواعد) يعرف بها احوال السند والمتن من صحةوحسن الى آخر ما قاله ر

(٢) علامه سيوطي في ايخ الفيه "ميل حديث بالدراي كي تعريف اس طرح كى ب-

علم الحديث ذو قوانين تحد ۞ يدرى بها احوال متن وسندي

حافظ ابن جرِ نے اس تعریف کوان الفاظ میں بیان فر مایا ہے۔

معرفة القواعدالمعرفة بحال الراوى والمروى ت

ان دونو ل تعريفول كامال ايك ٢-

(٣) علاميني فرمات بين هو علم يعرف به اقوال رسول الله عَلَيْكُ وافعاله واحواله ي

عصمی انبیاء مسلم امر ہے اس لیے کہ اللہ پاک جس کا چنا وکرلیں انمیں نقص نہیں ہوسکتا کیونکہ وہ علیم وجیر ہے اور تمام انبیاء علیهم السلام مصطفٰے ہیں جیسا کہ قران مجید میں اللہ پاک کا ارشادِگرامی ہے ﴿ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفْے ادْمَ ﴾ د اس ہے معلوم ہوا کہ نبوت کسی نہیں بلکہ وہبی ہے نہ کہ جیسام زالعین نے سمجھا ہے۔

آیت فدکورہ سے ثابت ہوا کہ نبوت وہی ہے عصمت انبیاء بھی لازی امر ہے تو ان کے اقوال وافعال واقعال واقعال واقعال واقعال واقعال ہے تو ہوگا۔

(٣) علامة خاويٌ نے فتح المخيث ميں علم مديث كي تعريف اس طرح فرمائي ہے، مااصيف الى النبي عَلَيْكُ قولاً اوفعلاً اوتقريراً اوصفة حتى الحركات والسكنات في اليقظة والمنام ن

ع مقدمها وجزالمها لک ج اص س سع مقدمه او جزالمها لک ج اص س سع مقدمه الدرالمنفود ج اص ۹ سع شدمه او جزالمها لک ج اص ۲ مؤد قر القاری بی اسلام فی الملیم بی اص اله به سه سروة آل عمران آیت سس که فی المغیب جا ص ۲۱ (۵) محققین کی پندیده تعریف بین هو علم یعرف به احواله ﷺ قو الأو فعالاً و تقریراً و صفة یا علماء حدیث کے زویک مشہور یہی ہے۔

قولاً كا مِصداق: حضور عَلِي كَ قولى حديث الشَّم على حالى قال الرسول عَلَيْكُ إِي قال النبي عَلَيْكُ كيةولى حديث چونكدوجي غيرملو باس ليه واجب العمل عقر ان مجيد مين ع ﴿ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحُيَّ يُوْحِي ﴾ ي فعلاً کا مصداق:وة حديث ب جسمين صحابي اينا مشامده بيان كرے يوں كم رأيت النبي النبي هنكذا. افعالِ ني عَلِيْنَةً كي اتباع اس ليرضروري ہے كه قرانِ مجيد ميں ﴿وَاتَّبِعُ سَبِيلٌ مَنُ أَنَابَ إِلَى ﴾ ي اور ﴿إِنْ كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَبِعُونِي ﴾ آيا ہے۔اس سے معلوم ہوا كة صور علي كافعال برجم عمل ضرورى ب تقريراً كا مصداق: وه وديث بي صميل صحالي الإناعمل بيان كرتا ب كُنَّا نَفُعلُ بين يدى رسول الله عَلَيْكِ كذا، جيسا يك مديث مي ب عَنُ جَابِرٌ كُنَّا نعول والقران ينول ه

اس کوحد پیٹ فعلی میں تارکیا جاتا ہے۔تقریرات رسول علیہ پر بھی عمل ضروری ہے بعنی آ یے علیہ نے کسی کو كام كرتے ديكھ كرسكوت فرمايا، يہ بھى ہمارے ليے جت ہے۔ قرانِ مجيد ميں ہے ﴿ يَا يُفَاالرَّسُولُ بَلَّغُ ﴾ ت اگر آ پیالیت کو فعل صحابی بسند نه ہوتا تو سکوت نه فر ماتے ، کیونکہ آ پیالیت کسی برے فعل ہے ڈر کرسکوت نہیں فر ماسکتے ، اس ليے كدالله باك نے فرمايا ﴿ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ﴾ يَآ بِ عَلَيْتُهُ كَ لَيَ تَبِلَغُ ضرورى ہے، تبلغ نہيں كررے تواس كامطلب سے كه آپ ایستان كوده كام پندے۔

صفةً كا مصداق: وه حديث عصمين صحابي حضور علي كاحوال وصفات كوبيان كرتا ع حَلْقاً يا خُلُقاً لِعِنى صورت ،سيرت كے لحاظ ہے صفات دوسم پر ہوئيں۔

سخاوت وغیرہ دوسری قتم کی صفات ہیں ان کوشائل کہتے ہیں بیتمام اقسام حدیث کے اجزاء ہیں ۔صفتِ رسول تا الله پہمی عمل ضروری ہے ۔ صفت دوقتم پر ہے (۱) صفت جسمانی جیسے آپکا رنگ اور بناوٹ، شکل وصورت . به او جزالسالک خ۱ ص۳۳ ع پاره ۲۷ سورة جمم آیت ۳ سع پاره ۲۱ سورة لقمان آیت ۱۵ سع پاره ۳ سورة آل عمران آیت ۳۱ هیخاری شریف ن ۲ س

۲۸۸ کے بیارہ ۲ سورة ما نکرہ آیت ۲۷ کے بیارہ ۲ سورة ما نکرہ

(۲) صفت نفسانی جرکا تعلق صرف نفس کے ساتھ ہوجیا کہ صدیث میں ہے کان رسول علیہ احسن الناس و کان اشجع الناس (۱۱ کان اللہ علیہ مارے لیے قابل جحت ہے کیونکہ حضرت انس رہا کان اجو دالناس و کان اشجع الناس (۱۱ کان کے اور یہ می ہمارے لیے قابل جحت ہے کیونکہ حضرت انس رہا کہ اللہ کان حضور علیہ کی مشابہت کی کوشش کرتے تھا سے آپ علیہ کی صفات مبحوث عنها ہوئیں۔ ایک اور صدیث میں ہے جو دالناس صدراً و اصدق الناس لهجة ع

﴿وجه الاختلاف والتطبيق﴾

حاکم ابوعبداللد منیشا پوری نے علم حدیث کی بچاس اقسام بیان کی ہیں ،علامہ نووی اور ابن صلاح نے ١٥ اور علامہ جلال الدین سیوطی نے "تدریب المراوی" میں ١٩٣ اقسام بیان کی ہیں ٢

علم حدیث بہت ساری انواع واقسام پر شمل ہے یہاں تک که علماء نے ذکر کیا ہے کہ علم حدیث جانے کیلئے ساٹھ علوم کا جاننا ضروری ہے لیکن ان میں سے مشہور دوعلم ہیں۔

ا . علم روايتِ حديث

۲. علم درايتِ حديث

علامہ جزائریؓ نے علم حدیث کی دوشمیں کرے الگ الگ تعریف کی ہے۔

تعريف علم روايت حديث : هوعلم بنقل اقوالِ النبي عَلَيْكُ وافعاله بالسماع المتصل وضبطها وتحريرها.

تعريف علم دراية حديث: هو علم يتعرف منه انواع الرواية واحكامهاو شروط الرواة واصناف المرويات واستخراج معانيها ع

ا ہے علم اصول مدیث کی تعریف قرار دیا گیا ہے جس کوعلامہ سیوطی وغیرہ نے بھی بیان فرمایا ہے۔

﴿دليل كون هذه الاقسام من الحديث﴾

قول: بھی حدیث کا جزء ہے قران پاک نے حضور علیہ کے بارے میں فرمایا ﴿ اَطِیعُو اللّٰهُ وَاطِیعُو ا الرّسُولَ ﴾ اور اطاعت انتثال امر کو کہتے ہیں اسکے مقابلے میں عصیان عدمِ انتثال امر کو کہتے ہیں صاحبِ اصول اسلم شریفے عص ۲۵۲ می شاکر زری صاح تشریحات زری ص ۲۵ مقدم فتح اللہم جاسم ا

الثاثی ای کی دلیل میں بیاشعار نقل کرتے ہیں۔

| بذاك | احبتهم | في | مريهم | حبلى | بصرم | لأمريك | اطعت |
|--------------------------|--------|----|-------|-------|--------|--------|------|
| وان عاصوك فاعصے من عصاكس | | | عيهم | فطا و | طاوعوك | فهم ان | |

فعل: ١٠٠٠٠٠ بِعَلِيْكُ كَافْعُل بَعِي من الحديث (مديد ع) ع قُلُ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَبِعُونِي (١١١) ع

تقریر : آپنائی کا تقریر بھی من الحدیث ہے ﴿ یا یُھاالو سُولُ بَلِغُ مَا اُنْوِلَ اِلْیُکِ ﴾ یکوئی صحابی حضور عقائی کے سامنے کوئی عمل کرتا ہے اگر وہ مَا اُنْوِلَ کے خلاف ہونے کے باوجود ندروکیں بنیس ہوسکتا، لطیفے کے نہیں روکا تو معلوم ہوا کہ مَا اُنْوِلَ کے خلاف ہونے کے باوجود ندروکیں بنیس ہوسکتا، لطیفے کے طور پر یہ بھی سجھنے کہ نبی کی تقریر جحت ہے نہ کہ ولی کی ۔ نبی معصوم ہوتا ہے بھی تا پہندیدہ کام پر خاموثی اختیار نہیں کرسکتا نبی جری اور بہادر ہوتا ہے بر دل نہیں ہوسکتا۔

صفت: آ پَالِيَّةَ كَ صَفَت بَهِي جزءِ عديث به ﴿ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ﴾ م الهذا آ پَالَيَّةَ كَا خُلَّ جُت ہوا۔

﴿تعريف السنة والحديث عندالفقهاء ﴾

السنة: تطلق على قول الرسول عَلَيْكُ وفعله وسكوته وعلى اقوال الصحابة وافعالهم ه

الحديث: يطلق على قول الرسول عَلَيْكُمْ حاصة بن

سوال: ال تعريف كي روسة قريرادرصفت بتعريف حديث سي فكل محية؟

جواب : افعال کے تحت تقریر یعی مبعا شامل ہے کیونکہ چپ رہنا بھی ایک فعل ہے اور صفت کا خارج ہونا کوئی معزنہیں اس لئے کہ فقہاء کے مطمع نظراحکام ہیں وہ صفات سے بحث ہی نہیں کرتے اس لئے فقہاء کے نزدیک صفات اسمیں شامل ہی نہیں۔

الصول الشاشى سيراره المورة آل عمران آيت الله سيراره ومائده آيت ١٤ سي باره ١٩ سورة القلم آيت عن في درالانوارس ١٤ ايينا

ایک اور بحث: بعض نے علم صدیث کی تعریف ہوں کی ہے علم ببحث فیہ عن اقوال النبی ملائے وافعاله واحواله واقوال الصحابة والتابعین وافعا لهم واحوالهم یہ بیتعریف حابر رام کے اتوال وافعال کو بھی شامل ہے۔

دلیل : یو مفرات کتے ہیں کہ مفور علقہ کے ساتھ صحابہ کرام گومشا بہت تا مدومنا سبت تا مدواصل ہوگئ تھی، محبت ومعیت طویلہ کی وجہ سے صحابہ کا قول ، قعل اور تقریر جبت ہاں لیے کہ آپ اللہ معصوم ہیں تو صحابہ کرام ہی کو بھی نوع من المعصومیت حاصل ہوگئ جیے صفور علیہ کو شانِ مبتوعیت حاصل ہے اس طرح صحابہ کرام ہی کو بھی حاصل ہے اس کو اللہ تعالی نے یوں بیان فرمایا ہے ﴿ وَ الَّذِ ینَ اتّبَعُو هُمْ بِاِحْسَانِ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوا عَنْهُ ﴾ یوس محل ہے اس کو اللہ عنہ کے اللہ عنہ کہ و منابہ ما اقتدیت ماصل ہے اس کو اللہ عنہ کی طرف راجع ہے نیز حضور علیہ نے فرمایا ((اصحابی کا لنجوم فبایھم اقتدیت مامی کی حدیث۔ احتدیت میں نہ کہ مور محتقین کے زد کی صحابی کے قول وقعل وتقریر کو اثر کہتے ہیں نہ کہ حدیث۔

﴿ عدیث ،اثراورخبرکے درمیان فرق

الفرق بين الحديثِ والاثر:

جنہوں نے علم حدیث کی تعریف میں صحابہ کے اقوال وافعال کو شامل کیا ہے انکے نزدیک حدیث اور الر مترادف ہیں ، جنہوں نے اثر کا اطلاق صرف صحابی کے قول وفعل پر کیا ہے انکے نزدیک ان دونوں میں تباین کی نبست ہے۔ بھی بھی آ ٹار کا لفظ احادیث مرفوعہ پر بھی بول دیتے ہیں چنا نچہ امام طحادی نے اپنی کتاب (جس میں احادیث مرفوعہ بھی ہیں) کا نام' معانی الآ ٹار' رکھا ہے اس طرح الی ہی ایک کتاب کا نام' تہذیب الآ ٹار' ہے اور آ ٹار کی کتابوں کو احادیث کی کتابیں بھی کہا جا تا ہے جیسے مصنف ابن الی شیبہ ومصنف عبدالرزات ۔

الفرق بين الحديثِ والخبر:

بعض نے خبر کی تعریف بیک ہے۔

(١) ما يبحث فيه ما نسب الى النبي عَلَيْكُ وغيره، الصورت مِن نبت عام خاص مطلق كي موكّ خر

ل تقرير بخارى، ي على ٢٦ خير الاصول ٢ ياره ١١ سورة توب آيت ١٠٠ سم ملكوة ج٢ ص٥٥٨ س لمعات التقيع مقدم منكوة ج اص٢٦

عام طلق اور حدیث خاص مطلق ہے یا

بعض نے خبر کی تعریف یہ کی ہے۔

(۲) علم یبحث فیه ما نسب الی غیر النبی مسلطهٔ اس صورت میں نبیت تباین کی ہوگی متأخرین کا یہی مسلک ہے کیونکہ عام طور پر جوتاریخ میں مشغول ہواس کومورخ کہتے ہیں اور حدیث میں مشغول ہونے والے کومحد ث

الفرق بين الحديثِ والسنة:

﴿موضوع علمِ حديث﴾

اس میں محدثینؓ کے مختلف اقوال ہیں۔

الثانى:ذات النبى النبى

الثالث: الفاظ الرسول عليه الصلاة والسلام من حيث صحة صدورها عنه عليه وضعفه الى غير ذلك الله عبد المسلام الله عبد الله عبد

الرابع: المرويات والروايات من حيث الاتصال والانقطاع ي

﴿غایتِ علم حدیث﴾

عایت کو بیان کرنے میں مختلف عنوانات ہیں، مآل سب کاایک ہی ہے۔

الأول: الفوز بسعادة الدارين عن دارين عن مراد دار دنيا ددار آخرت بددار آخرت كى فوز (كاميابى) دخول جنت اورجهم سن چه كارا ب ﴿ فَمَنُ زُحْزِحَ عَنِ النَّادِ وَالْدُخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدُ فَازَ ﴾ وادرارِ دنيا كى فوز (كاميابى) يدب كما يسا عمال كى توفق مل جائے جودخول جنت كاسب بنيں۔

الثانى: غاية علم حديث حصول دعاء ني الله مراء عليه عليه في الله المراء (عبدا) سمع مقالتي فحفظها فوعاها وادّاها)) الماتال المراء (عبدا)

الثالث: محبوب عليه كى كلام سے حصول لذت.

الرابع: معرفة العقائد والاخلاق والاحكام الفرعية لرضاء الله تعالى

﴿ حدیث کی وجه تسمیه ﴾

متعدد وجوه بیان کی گئی ہیں

الوجه الاول: علامه ابن جرئ فق البارى مين ذكركيا بكه مديث بمقابله قديم ب- قديم ،الله تعالى كا كلام باورياس كمقابله مين حادث وجديد بالهذااس كوحديث كها كيا-

الوجه الثانى: بعض محدثين في اوروجه بيان كى بجوكه آسان بكر مديث بات چيت كوكيت بي اور اصل بين مديث كامصداق حضور علي كي بات چيت عى ب-

سوال: ہماری کلام بھی توبات چیت ہے تواس کو بھی حدیث کہنا چاہیے حالانکہ اس کوحدیث نہیں کہا جاتا؟ جواب: لغت کے لحاظ سے تو کہ سکتے ہیں لیکن اصطلاح میں آپ ایستے کی عظمتِ شان کی وجہے آپ اللہ کے کام کے ساتھ حدیث کوخاص کردیا گیا اوروں کی کلام کوحدیث نہ کہا جائیگا۔

یے مقال اسعادہ بنا صسے ۱۳۹۷ مقدمہ حاشیاتیا کی لمولانا اشفاق الرحمٰن کا منطوی ص استعمدہ القاری جامل الدر الدوس ۵ مالدر المعضود وس ۱۳ سے معلودہ آل مران آیت ۱۳۵۵ میں ۱۳۵۰ میل اور ۱۳۵۰ میں ۱۳۵۰ میں ۱۳۵۰ میں ۱۳۵۰ میں ۱۳۵۰ میں ۱۳۵۰ میل اور ۱۳۵ م

سوال: مدیث تو بات چیت کو کہتے ہیں حالانکہ احادیث میں افعال وتقریرات کا ذکر بھی ہوتا ہے تو ان کو حدیث کہنا کیے صحیح ہوا؟

جواب: حدیث میں زیادہ تر اتوال کا ذکر ہی ہوتا ہے فعل اور تقریر کو حدیث کہنا تغلیباً ہے اور حدیث کا نام کلام اس لئے نہیں رکھا کی کم کلام سے التہاس نہ ہو۔

الوجه المثالث: تیسری وجه علامة شیراحم عنائی نے مقدمہ فتے الملہم میں ذکری ہے کہ لفظ حدیث ،تحدیث نعمت سے اور نعمت سے مراد ہدایت ہے۔ اللہ تعالی نے جو ہدایت کی نعمت عطافر مائی اس کوآپ تالیہ نیمیان فرمایا تو اس کا نام حدیث رکھ دیا گیا ۔ آپ تالیہ کی زبان مبارک سے جاری کلام اس نعمت ہدایت کا بیان ہے۔ تحدیث نعمت سے لفظ کی راس کا نام حدیث رکھ دیا گیا کیونکہ بھی ملائی سے مزید مجرد لے لیا جاتا ہے اور یہاں تحدیث ثلاثی مزید سے حدیث ثلاثی مجرد لیا گیا ہے۔

تفصیل : یہ کہ سورۃ الفحیٰ میں اللہ پاک نے آپ علی کے تین حالتیں بیان فرمائی ہیں تینوں حالتوں کے مطابق تین انعامات کا ذکر فرمایا اور اس کے مقابلے میں تین حکم ہیں، پہلی حالت یکم (یتیم) کی ہے اس کے مقابلے میں انعام ایو آء (محکانہ وینا) ہے اور حکم فَامًا الْیَتِیُمَ فَلا تَفْهَرُ ہے۔ دوسری حالت عائل (مختاج) ہونا ہے اور اس کے مقابلے میں انعام اغزاء (غنی کرنا) ہے اور حکم وَامًا السَّائِلَ فَلا تَنْهُرُ ہے۔ تیسری حالت صال (گراہ) ہونے کی ہے اس کے مقابلے میں انعام ہدایت ہوگم وَامًا بنعُمَةِ رَبِّکَ فَحَدُنُ ہے تواس سے معلوم ہوا کہ جو بھی حضور علی ہے این فرما کیں گے وہ ہدایت ہوگی، اور آپ علی کا بیان کرنا تحدیثِ نعمت ہوا یہ حکوم ہوا کے علی کا بیان کرنا تحدیثِ نعمت ہوا تی حقال کے مقابلے کا بیان حدیث ہوا ع

ضالاً: الفظلي دوتفسري كي كي بير _

الاول:راه کامتلاشی صال کہتے ہیں کہ راہی چلتے چورا ہے پر آجائے پھرکوئی اس کو بتلادے کہ تیراراستہ میں ہے۔۔۔

الثاني: جنگل میں بیری کا درخت جو اکیلا کھڑا ہوتا ہے أسے صال کہتے ہیں یہ کلام تثبیہ پرمحمول ہے لیمی آپ الله کوتنہا پایا پس آپ علیقہ کورہنما بنادیا ہے

00000000

﴿ضرورتِ علم حديث،

دلیلِ اول: الله تعالی نے انسان کو وجود اور عقل کی نمت عطافر مائی ہے اور اس کو اشرف المخلوقات بنایا اس کا
کوئی بھی انکارنیس کرسکنا چنانچہ الله تعالی نے فر مایا ﴿ وَلَقَدْ كُرَّ مُنابَنِی ٓ اَدَمَ ﴾ یا اس طرح ﴿ لَقَدْ خَلَقْنَا اُلِائْسَانَ
فِی ٓ اَحْسَنِ تَقُو یہ ﴾ ی اس طرح ﴿ خَلَقَ لَکُمْ مَّا فِی الْارْضِ جَمِیْعا ﴾ ی اور ﴿ سَخَّرَ لَکُمْ مَّا فِی السَّمُونِ وَمَافِی الْارُض ﴾ ی بیت کاشکریدادا
السَّمُونِ وَمَافِی الْارْض ﴾ ی بیتمام آیات دلائلِ اشرفیت ہیں ان کا تقاضا یہ ہے کہ انسان اس نمت کاشکریدادا
کرے اور شکر نمت کے لیے دیکھا جائے کہ سب سے زیادہ شاکر ،شکورکون ہے؟ یہ بات توعیاں اور مسلّم ہے کہ سب
سے زیادہ شکورضور علیہ کی ذات ہے کیونکہ آپ آلیہ اس اس کے مادت کرتے کہ پاؤں سوج جاتے ہے آپ علیہ نے نوا اور افلا اکون عبداً شکور ا) ہے شکر کرنے کے لئے آپ علیہ کے قول وقعل کی اتباع ضروری ہے اور سے کے صد یہ ہے معلوم ہوگا کے مضور علیہ کے اقوال وافعال کیا ہیں؟

الشكال: بمیں تعلیم نہیں كه انسان اشرف المخلوقات ہے اس لئے كه انسان تو حاجات میں گھر ا ہوا ہے۔ مخلوقات میں سب سے زیادہ محتاج انسان ہے۔ سورج، چاند، ستارے ان سب كوانسان كی ضرورت نہیں اور انسان كو ان سب كی ضرورت ہے تو گویا سائل نے كثر تواحبیاج كواشرفیت كے خلاف سمجما؟

جو اب: الله تعالى نے انسان كو دجود كے ساتھ الك نعت جوہرِ عقل كى دى ہے جس سے انسان كل كا نئات كو مسئر كرسكتا ہے تو جب اس جو ہركيوجہ سے كا نئات مسئر ہوگى تو انسان علّو اور تكبر ميں آ جائيگا يہاں تك كه خدا كى كا دعوىٰ كرديگا جيے فرعون نے كيا أس نے كہا تھا أنّا زَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ لِي

روس والوں نے جب ملکوں کو فتح کیا تو چوکوں پر بورڈ لگا دیئے تھے کہ اس طرف خدانہیں ہے تو اللہ تعالی نے اس طرح کے دعووں ہے روکنے کے لیے انسان کیساتھ احتیاجات متعلق کردیں تو احتیاجات دلیلِ عدمِ اشرفیت نہیں بلکہ دلیلِ اشرفیت ہیں۔

ل ياره ١٥ سورة ني اسرائيل آيت ٢٠

ع يارو ٣٠ سورة الين آيت ٥

س ياراد ا سورة بقره آيت ٢٩

س بإره ٢٥ مورة جائيه آيت ١٠

هی مقلوة شریف ص ۱۰۹، شاکر مذی ص ۱۹

ل پاره ۴۰ مورة نازعات آیت ۲۴

مثال:اس کی مثال اس طرح ہے کہ جتنا کوئی بلند مرتبہ ہوتا ہے اسکی حفاظت کے لیے پہرے بھی اتنے ہی زیادہ ہوتے ہیں بیاحتیاجات انسانیت کی حفاظت کے لیے پہرے ہیں۔

دلیل رابع: تمام دنیا کے نزدیک به بات مسلم ہے که عدل محمود ہے جیسا کر آن مجید میں آیا ہے اِعْدِلُو اَهُو اَقْرَبُ لِلتَّقُوبی اورای طرح ایک روایت میں ہے کہ جب آپ ال غنیمت تقسیم کر ہے تصفواعتراض کیا گیا کہ عدل کریں تو آپ نے اس کے جواب میں فرمایا کہ اگر میں عدل نہ کروں گاتو کون عدل کرے گا اور عدل کے مقابل جور وظلم فرموم ہے۔

عدل کی تعویف:انسان کے اندرملکات تین تم پر بین ۱ علمیه ۲ شهویه ۳ غضبیه ان ملکات کو إفراط وتفریط سے بچا کراعتدال میں رکھناعدل ہے۔ قوتِ علمیہ کااعتدال حکمت ہے قوتِ شہویہ کااعتدال عفت ہے اور قوتِ غضبیہ کااعتدال شباعت ہے توصفتِ محمود (عدل) پیدا کرنے کیلئے ضروری ہے کہ ایک ذات کی افتدا کی جائے جس کے اندران مینوں چیزوں کا اعتدال ہواور وہ آ پ اللی کی ذات بابرکات ہے بایں طور کہ آ پ اللی افتدا کی جائے جس کے اندران مینوں گوئناب والمور میں قرآن نے کہا یُعلِّم الله کم اس سے وَ الْحِکُمةُ اس سے حکمت ثابت ہوئی اور ایک روایت میں آتا ہے کہ صوفات کے بارے میں فرمایا انبی اتفاکم اس سے عفت ثابت ہوئی اور ایک دوسری روایت میں ہے کہ صحابہ کرام نے حضوفات کے بارے میں فرمایا اشجع الناس اس سے عفت ثابت ہوئی اور ایک دوسری روایت میں ہے کہ صحابہ کرام نے حضوفات کے بارے میں فرمایا اشجع الناس اس سے شیاعت ثابت ہوئی۔ اور اقتداء کے لئے احوال کا معلوم ہونا ضروری ہے اور بیرحدیث سے معلوم عوشے لہذا صدیث ضروری ہوئی۔

ل باره ٢ سورة ماكده آيت 24 سروقلم ايت من سروقلم آيت سر معارف القرآن ٦٠ ص٥٣٣ كوالدابوديان س حياست السحابر٢٠ ص٥١١ بحوالد بداير، اين سعد

دلیلِ خامس:انسان قدرتِ خداوندی کامظهر ہے اس میں جوعناصر ہیں وہ صفاتِ متضادہ کے حامل ہیں۔اور وہ عناصر چیں۔ وہ عناصر چار ہیں۔(۱) آگ (۲) ہوا(۳) پانی (۴) مٹی۔ائی خصوصیات مختلف وجوہ سے آپس میں ظراؤوالی ہیں۔ وجه الاول: آگ اور مٹی میں خشکی ہے پانی اور ہوا میں تری ہے۔

و جه المثانی: ہوااور آگاو پرکواٹھتی ہیں پانی اور ٹی نیچکو آتے ہیں یہ قدرت کا نمونہ ہے کہ تضادات کو انسان کے اندرجع کر کھا ہے یہ چیزیں اخلاق میں بھی تضاد پیدا کرتی ہیں ٹیس (خشکی) ہے جس سے صفت بخل پیدا ہوتی ہے پانی میں بھیلنے کی صفت ہے اس سے جرص پیدا ہوتا ہے۔ آگ میں بلندی ہے کہ دوسرے کو ہلاک کر دے اس سے کیر پیدا ہوتا ہے۔ ہوا خود پھیلتی ہے اس سے انسان میں شہرت پیندی پیدا ہوتی ہے۔ یہ چاروں اخلاق ذمیمہ ہیں جو ان کو اعتدال میں رکھے ہوئے ہوا کی اقتدا ضروری ہے اور اس کا نمونہ آپ علیلے کی ذات مبار کہ ہے۔ جنہوں نے انکواعتدال میں رکھا اگر انکواعتدال میں نہ لایا جائے تو نساؤ ظیم بر پا ہوتا ہے تو ان اخلاق کی مبار کہ ہے۔ جنہوں نے انکواعتدال میں نہ لایا جائے تو نساؤ ظیم بر پا ہوتا ہے تو ان اخلاق کی اصلاح کی ضرورت ہے جب انکی اصلاح ہوجا نیگی تو دنیا میں امن پیدا ہوجا نیگا۔ ہیں دعوے ہے ہتا ہوں کہ جب تک ان اخلاق ذمیمہ کا عامل ہوگا تو ان اخلاق ذمیمہ کا عامل ہوگا تو ان اخلاق ذمیمہ کا عامل ہوگا تو اس کسے پیدا ہوگا ؟

دليل سادس: سالله تعالى نانسان كاندردوتوتين ركى بير (١) ملكيه (٢) بيميه

قوتِ ملکید، یعنی فرشتوں والی قوت، نہ کھانا نہ پینا، اور قوت بہیمید، یعنی کھانا پینا ایک دوسرے کے ساتھ چٹنا وغیر ذ لک۔اگر قوتِ ملکید غالب آجائے توانسان با کمال بن جاتا ہے اور ترقی کر کے ملا نکہ کے مقام تک بہنے جاتا ہے۔اگر بہیمت غالب آجائے توانسانیت سے گر کر حیوان (اصطلاحی) بن جاتا ہے لہذا الی ذات کی اتباع ضروری ہوگی جس نے بہیمیت کو مغلوب اور ملکیت کو غالب کیا ہو، اور وہ آپ اللہ کی ذات ہے حدیث میں آیا ہے تو ضوا مماست النادی) یا آئیس علماء لمی چوڑی بحث کرتے ہیں حضرت شاہ ولی اللہ فرماتے ہیں کہ اصل میں انسان جب کھانا کھا تا ہے تو اس سے ملکیت متاکم ہوتی ہے اس لیے حدیث شریف میں آگ سے کی ہوئی چیز کھانے کے بعد وضوکا تھم دیدیا گیا تا کہ اس کی کا زالہ ہوجائے۔

لِ مِشْكُوة شريف س وجم

دفیلِ سابع: قرآن پاک (هُدی لِلنَاسِ) ہے یعن تمام انسانوں کے لئے ہدایت ہے اور اسکاہدایت ہو ناحدیث پر موقوف ہے اس لئے کہ صدیث قرآن کی شرح ہے اللہ تعالی نے خود فر مایا ﴿ وَ ٱنْوَلْنَاۤ اِلَیْکَ الذِّ کُولِتُبَیْنَ لِلنَّاسِ ﷺ نے اور شرح بھی خود اللہ تعالی نے سکھائی ہے ﴿ ثُمَّ اِنَّ عَلَیْنَا بَیَانَهُ ﴾ نے

دلیلِ ثامن: ضابط ہیکلا م الملوک ملوک الکلام، اور ملوک کے کلام کو سیحضے کے لئے مقربان ملوک ہوتے ہیں اور اللّٰد تعالی کے مقرب حضور علیضہ ہیں تو اللّٰہ تعالی کی کلام کو سیجھنے کے لئے حضور علیضہ کی حدیث ضروری ہوئی۔

دلیلِ قاسع: تمام دنیا کاس پراتفاق ہے کہ اصلاح مستقبل کے لیے احوالِ ماضیہ کا معلوم ہونا ضروری ہے۔ ابنمونہ کے لیے احوالِ ماضیہ میں سب سے زیادہ کامیاب اور بہتر زندگی والا انسان آپ علیہ کی ذات طیب ہے۔ ابنمونہ کے لیے احوالِ ماضیہ میں سب سے زیادہ کامیاب اور بہتر زندگی والا انسان آپ علیہ کے ہے جسے اللہ پاک نے خود فرمایا ﴿ لَقَدُ کَانَ لَکُمُ فِی دَسُولِ اللهِ اُسُوةٌ حَسَنَةٌ ﴾ میں اب آپ علیہ احوال تو حدیث ہے معلوم ہونگے لہذا حدیث کا معلوم ہونا ضروری ہوا۔

دلیلِ عاشر: مخلوق اور خالق میں کوئی نسبت نہیں ہے، اسلئے دونوں میں کوئی واسط ہونا چا ہے جس کی ایک جانب خالق سے ملی ہوئی ہوتو دوسری جانب مخلوق سے ۔ اور وہ انبیاء کیم السلام کی جماعت ہے اور ان میں سب سے بہتر خاتم النبین محمد الله تعالیٰ سے فیض حاصل کرنے کے لیے حضور علیہ کا واسط ضروری ہوا اسکے بغیر استفادہ نہ ہوگا۔ اس سے معلوم ہوا کہ نبی کے اندر کچھ صفات تمام انسانوں سے زیادہ ہوتی ہیں جنگی بنا پرلوگ ان کو بشریت سے نکالنا شروع کر دیتے ہیں اور بیفلو ہے۔ انبیاء کی دو حالتیں ہوتی ہیں بھی شانِ عروبی میں اور بھی شانِ برو کی میں اور بھی شانِ نرو کی میں ، انسانوں کی طرح اسوقت ہوتے ہیں جب شان نرولی میں ہوتے ہیں اور بھی شان عروبی میں ہوتے ہیں اور بھی شان عروبی میں ہوتے ہیں اس و لا یسعنی فیہ نبی مرسل و لا اس سے انسان دھوکہ کھالیتے ہیں۔ آپ عیاد کی کارشاد ہے ((لی مع اللہ وقت لا یسعنی فیہ نبی مرسل و لا

فضائلِ علمِ حديث

الاول: مديث بإك مين آتا ہے ((نضر الله إمرأ(عبدا) سمع مقالتي فوعا ها وادّاها))اوكما

ل يُوره ١٥ سورة ألحل أو يعت ١٩٠٠ ع يورة ١٩ سورة القيامة أو يعت ١٩ سع بإرواع سورة ١٩زاب أو يعت ١٩

قال علیہ تو آپ اللہ کی حدیث پڑھنے پڑھانے والوں کے لیے بیدعاہے ل

اهل الحديث وجوههم بدعاء النبي منضرة اعمارهم طويلة وارزاقهم متكثرة

الثانى:روایت ابن عباس ہے ((اللهم ارحم خلفائی قلنا ومن خلفائک یا رسول اللّه قال الذین یأتون من بعدی یروون احادیثی ویعلمونها الناس)) خ

الثالث: روایت ابن معود به (ان اولی الناس بی یوم القیامة اکثرهم علی صلوة)ی

المر ابع:انسان کی دوخر ورتیں ہیں ا۔ دینی ۲۔ دنیاوی۔ ظاہر بات ہے کہ دینی خروریات دنیاوی خروریات ہے بڑھ کر ہیں اور دینی خروریات عقائد صححۂ اعمالِ صالحۂ اخلاقِ کا ملہ اور معاملات صححہ ہیں اس خرورت کو پورا کرنے والاعلم علم حدیث ہے اس لیے اسمیس لگنے والا اس کو پڑھنے پڑھانے والا افضل ہوگا۔

الحنامس: دلیل بھی ہے اور ایک بحث بھی تفسیر کے علاوہ باقی تمام علوم سے تو بالا تفاق علم حدیث افضل ہے۔ لیکن علم تفسیر سے بھی افضل ہے یانہیں؟ اسمیں اختلاف ہے۔

جمهور " اس كے قائل بيں كه علم تفيير سے بھى انضل ہے اس ليے كه افضليت علم موتوف ہے افضليت م موضوع پر علم جديث كا موضوع ذات النبى علي الله هي اور علم تفيير كا موضوع الفاظ قرآن بيں جو لكھ پڑھنے بيس آتے بيں اور الفاظ مخلوق بيں جبكه آپ الله المخلوقات بيں _لہذاعلم حديث، اشرف العلوم ہوا۔

طائفة قليله: سسسته كہتا ہے كالم تفسى رافعنل ہے وجدا فضليت سے بل سي تجھ ليس كدا يك ہے كلام لفظى اورايك ہے كلام فظى دال ہے اور كلام فظى دال ہے داور كلام فسى مدلول ہے۔ اس كے بعد ہم كہتے ہيں كہ تفسير كاموضوع كلام فسى ہے اور يہ قطاق كلام فسى ہے اور آپ علاق تحلق ملاق ہيں اور سے مخلوق سے افضل ہيں اور سے مخلوق ہے۔ منافع ہيں اور سے مخلوق ہے۔ منافع ہيں ہور ہے۔ مخلوق ہیں ہے۔

جواب: جمہور کتے ہیں کہ بیاستدلال صحیح نہیں ہے کیونکہ علم تفسیر میں بحث تو کلام لفظی ہی ہے ہے بیا گرچہ کلام نفسی پردال ہے گرمین کلام فسی نہیں ہے اور دال مدلول ایک نہیں ہوا کرتے ورنہ تو فساء عظیم لازم آئے گاس لیے کہ ساراعالم تو دال ہے ذات باری پر ہتو لازم آئے گا کہ ساراعالم اور ذات باری ایک ہوں بیتو ٹھیک نہیں اور بیتو بہت بڑا فساد ہے۔ تنبیہ: بیا در کھیں کہ مقابلہ خالص علم تفسیر کا ہے جس میں اسر ائیلیات اور عقلی دلائل نہ ہوں مخلوط علم تفسیر بھی بھی مقابلے میں نہیں آسکا۔

ا مشكوة المسابح صده، او جزالمسالك جما ص ه سم مجمع الزوائد (كتاب العلم) باب في فضل العلماء ومجلستهم جراص ١٣٦، او جزالمسالك ص بالفاظ مختلفه باختلاف يسرس ترزى باب ماجاء في فضل الصلوة على الني تطابقته جما ص ١١٠ اوجزالمسالك جما ص

﴿حجيتِ حديث﴾

نصف صدی پہلے اس مسئلہ میں کوئی قابل ذکراختلاف اور شک نہیں تھا اگر چہا نکار صدیث تو صدراوّل سے ہی شروع ہو چکا تھلا تمام علاء وائمہ اسلام کے نزویک اختلاف رکھنے والوں کوکوئی اہمیت نہیں دی جاتی تھی اس لئے جیت حدیث پر اس قد رتفصیل سے روشن بھی نہیں ڈالی جاتی تھی اور آج کل منگرین حدیث کا فتنہ زوروں پر ہے اس لئے اس پر بحث ضروری ہے۔ یاور کھئے دلائل شرع چاریں۔

علاء نے مختلف طریقوں سے جمیت حدیث کے دلائل پیش کئے۔ ہرایک کا طریقہ اجتہادی ہوتا ہے کین دلائل ایک جیسے ہی ہوتے ہیں۔ زیر بحث دلائل کا حاصل یہ ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن پاک میں حضور علی کے بشار شانیں بیان کی ہیں ان شانوں کا تقاضا یہ ہے کہ حضور علی کے حدیث کو جمت شلیم کیا جائے گر حضور علی کی حدیث کی حدیث کی حدیث کو جمت شدیم کیا جائے گر حضور علی کے کہ حدیث کو بیس مانتا وہ قرآن جمت نہ ہوتو قرآن پاک کی بیان کر دہ شانوں کا انکار لازم آئے گائے تو جو خص صفور علی کے کہ حدیث کو بیس مانتا وہ قرآن پاک کا انکار پاک کی طرف سے بیان کر دہ حضور علی کے کہ شانوں کو بیس مانتا، البندا مشرین حدیث کی طرف سے قرآن پاک کا انکار لازم آئے۔ اب ہم ایک ایک شانوں گئے رہیں گے اور اس پر دلائل پیش کرتے رہیں گے اور ہرشان مستقل دلیل ہوگی۔

الشان الاول: نبی ومرسل هونے کی شان: الله تعالی خصور علی و بی ومرسل بنا کر بھیجا ہے۔ اس شان کا تقاضا یہ ہے کہ آپ علی کے قول وقعل کو جمت قرار دیا جائے کیونکہ نبی قوم کواحکام سکھا تا ہے اگراسکی بات ہی جمت نہیں تو یہ تقاضا کیسے پورا ہوگا؟

الثانى:مطاع هونى كى شان: اسكا تقاضا بهى يه بكدان كقول وفعل كوجمت مانا جائد

- (١): ﴿ قُلُ اَطِيُعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ﴾ ٢
- (٢):.....﴿ مَنُ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدُ اَطَاعَ اللَّهَ ﴾ ي
- (m):..... ﴿ يَا آَيُّهَا الَّذِيْنَ امْنُوا اَطِيْعُو االلَّهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُولَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ﴾ ت

(٣): ﴿ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَكُمُ عَنُهُ فَانْتَهُوا ﴾ [

(٥):﴿ وَمَاۤ اَرُسَلُنَا مِنُ رَّسُولِ إِلَّالِيُطَاعَ بِإِذُنِ اللَّهِ ﴾ ع

الثالث: شارح هونے کی شان الله تعالی خصور الله کوتر آن پاک کاشار ح بنا کر بھیجا ہے ارشاد ربائی ہے ﴿وَاَنُولُنَا إِلَيْكَ اللّهُ تُحَوَلُتُهُ بِي لِلنَّاسِ ﴾ س اگر قرآن کوشلیم کرنا ہے قوشارح کی شرح کو بھی تعلیم کرنا پڑے گاکیونکہ خود الله تعالی نے کروائی ہے ﴿فُمْ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴾ س کا کیونکہ خود الله تعالی نے کروائی ہے ﴿فُمْ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴾ س الموابع: شاد ع هونے کی شان. الله تعالی نے حضور علیہ کی ایک شان یہ بھی بیان کی ہے کہ آ پہالیہ شریعت کا حکم متعین کرنے والے ہیں ارشاور بانی ہے۔

ا: ﴿ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيُّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ النَّحَبَآئِثَ ﴾ و

٢: ﴿ هَا التُّكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمُ عَنْهُ فَانْتَهُوا ﴾ ٢

النحامس: حَكِم هوني كَى شان. قرآن پاك نے حضور الله کا ايك شان هم (فيصل) هونے كى الله شان هم (فيصل) هونے ك مجلى بيان كى ہے ارشا دربانى ہے۔

ا: ﴿ فَلا وَرَبِّكَ لا يُؤُمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمُ ﴾ ي

٢: ﴿ إِنَّا ٱنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ ١٨

٣: ﴿ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنِ وَلَا مُؤْمِنَةِ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُه الْمُرا اَنُ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنُ اَمُوهِمُ ﴾ ٤ السادس: عظمت كى شان: ﴿ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزَّرُوهُ وَتُوَ فَرُوهُ ﴾ ٤

تا کہتم اللہ اوراُس کے رسول پر ایمان لا و اور اس کی مدو کرواور اس کی تعظیم کرو۔ اس آیت پاک میں آپ میں آپ آلیا کی تعظیم یہ کرنے کا حکم دیا گیا ہے اور و بھی بات مانی کی تعظیم کی بات کو بھی دیا گیا ہے اور و بھی بات مانی جاتی ہے جو جت ہو لہذا آپ آلیا کی کہ بات یعنی صدیث جت ہوگی۔ پھر دوسری آیت ہے ﴿ لَا تَرُ فَعُوْرُ اَصُو اَسَكُمُ

فَوُقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَاتَجُهَرُوا لَه بِالْقَوْلِ كَجَهُرِ بَعُضِكُمُ لِبَعْضٍ ﴾

ع پاره ۵ سورة النساء آیت ۱۹۳ سم پاره ۲۹ سورة القیامه آیت ۱۹ لا پاره ۲۸ سورة الحشر آیت ک کم پاره ۵ سورة النساء آیت ۱۰۵ می پاره ۲۷ سورة الفتی آیت ۱۰۵ لے پارہ ۲۸ سورۃ الحشرآیت کے
سے پارہ ۱۸ سورۃ الحل آیت ۲۸
هے پارہ ۹ سورۃ الاعراف آیت ۱۵۵
کے پارہ ۵ سورۃ النساء آیت ۲۵
الے پارہ ۲۲ سورۃ الاحزاب آیت ۳۲
الے پارہ ۲۲ سورۃ الحجرات آیت ۳۲

السابع: محبت كى شان ـ يعنى ايمان والول كے ليے حضور عليه كى ان سے مجت كى شان ـ قرآن ميں ہے ﴿ النّبِيُّ اَوُلِي بِالْمُوْمِنِينَ مِنُ اَنْفُسِهِم ﴾ يعنى مومنوں كوا پنى جانوں سے اتن محبت نہيں ہوتى جتنى نبيوں كو امتى و الله عند كى الله عند كى الله عند كى الله كا الله عند كى الله كا الله ك

| بديع | الفعال | فی | ذلک | ان | حبه | ظهر | رانت ت | سول ر | ى الرا | تعص |
|------|--------|-----|-------|----|----------|-----|--------|-------|--------|-----|
| مطيع | يحب | لمن | المحب | ان | طُعْتَهُ | Ý | صادقا | محبأ | کنت | ان |

الثامن :الله تعالى كى محبت كاواسطه هون كى شان ﴿ قُلُ إِنْ كُنتُمُ تُحِبُّونَ اللهُ فَاتَبعُونِي يُحُببُكُمُ اللّهُ ﴾ ي اوريواسط، آب عَلي كَن كُنتُمُ

التاسع: عصمت كى شان الله تعالى نة تمام انبياء كوشانِ عصمت عطافر ما كى بتو نى خطاس بيتا بهذا نى كى اقتداء ضرورى موكى انبياء كى جماعت كى بارے ميں ارشاد ب إنَّهُمُ عِنْدَنَالَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ اللهُ عُياد (لاَي) ع

العاشر: موحى اليه هوني كى شان ا. وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَى 0 إِنْ هُوَ إِلَّا وَحُى يُوْطِى ﴾ ٢. ﴿ قُلُ إِنَّهُ مُثُلُكُمُ يُوطِى إِلَى ﴾ والله وحي الله والله والله

الحادى عشر: مومن به هونے كى شان ﴿لِتُومِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ ﴾ وه ايمان كيا اللهِ وَرَسُولِهِ ﴾ وه ايمان الله و الله و

الثالث عشر: معلِّم هوني كي شان. ﴿ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكُمَةَ ﴿ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكُمَةَ ﴾

الرابع عشر: مَتَّبَع هوني كي شان . ﴿ قُلُ إِنْ كُنتُمْ تُحِبُّوُنَ اللَّهَ فَاتَبِعُونِي ﴾ و

الخامس عشر: مبلغ هونے كى شان ﴿ يَا أَيُّهَ الرَّسُولُ بَلِّعُ مَا أُنْزِلَ الِّيكَ ﴾ ل آب

علاقة تبليغ كرتے ہيں اور بتلاتے ہيں كه بيقر آن كى آيت ہے كيونكه بيبتلا نائجى حديث ہے لہذا حديث ججت ہوكى۔

السادس عشر: معلم حكمت هوني كي شان . جي طريق الله تعالى في كتاب

لے پارہ ۲۱ سورۃ الاتزاب آیت ۲ کے پارہ ۳ سورۃ آل محران آیت ۳۱ سے پارہ ۲۳ سورۃ ص آیت ۲۵ می پارہ ۲۷ سورۃ البخم آیت کے پارہ ۲۲ سورۃ تم مجدہ آیت ۲ کے پارہ ۲۷ سورۃ کی آیت ۹ کے پارہ ۲۹سورۃ القلم آیت ۸ کی پارہ ۲۸سورۃ الجمعدآیت ۲ فی پارہ ۳ سورۃ آل عران آیت ۳ میلیارہ ۲ سورۃ المائدہ آیت ۲۷ نازل فرمائی ہے اس طرح حکمت بھی نازل فرمائی ہے 1: ﴿ وَاذْ کُرُوا نِعُمَتَ اللهِ عَلَيْکُمْ وَمَا آنُوَلَ عَلَيْکُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِکْمَةَ ﴾ یا اور حکمت سنت ہے، امام شافعی کا الْکِتَابِ وَالْحِکْمَةَ ﴾ یا اور حکمت سنت ہے، امام شافعی کا فرمان ہے الحکمة هی السنة ی جس طرح کتاب کو مانے بغیر ایمان کمل نہیں ہوتا اسی طرح حکمت جو کہ حدیث ہے اس کو مانے بغیر بھی ایمان کمل نہیں ہوتا۔

خلاصة دلائل: نى عَلِينَة كِ تَين حَق بِين احقِ عظمت احقِ اطاعت الحقِ محبت ـ ان تينون كا تقاضا يه ب كه آپ علينة كول وفعل اورتقر بركو جمت قرار ديا جائه ـ

﴿حفاظت حديث﴾

حفاظت کے دوطریقے ہیں۔

الاولى: ضطِ كابت يعنى حفظ الحديث بالكتابة.

الثانیه: ضبطِ صدر یعنی حفظ المحدیث فی الذهن بغیر کتابة ابتداء میں انحصار ضبطِ صدر پڑھا پھر کھ زمانہ گزرنے کے بعد ضبط کتابت کو بھی مدار بنایا گیا تو حفاظتِ حدیث کا ابتدائی دور ضبطِ صدر کا ہے صحابہ اور تابعین ً کے زمانہ میں زیادہ انجھار ضبطِ صدر پر مااس کی چندوجوہ ہیں۔

الموجه الاول: حفظ (یعنی یاد کرنا) طبع عرب ہے اور لکھنا لکھانا عرب کی طبعیت نہیں ہے۔(۱) عرب کا بدوکتا ہوا فقرہ تھا۔ حرف فی تامود ک خیر من عشرة فی کتبک (دل میں ایک حرف کا محفوظ رہنا کتابوں کی دس باتوں سے بہتر ہے) ع

(٢) عرب كامشهورشاعر كهتاب- في

| ما العلم الا ما حوى الصدرا | ليس بعلم ما حوى القمطرا. |
|--|--|
| نہیں ہے علم کیکن صرف وہی جوسینے میں محفوظ ہو | علم وہ نہیں جو کتابوں میں درج ہے |
| وبئس مستودع العلم قراطيس | استودع العلم قرطاساً فضيعه |
| علم کے بدرین مدن کاغذ ہیں | جس نے علم کو کاغذ کے سرد کیااس نے اسے ضائع کیا |

| بطنى وعاء له لابطن صندوق | علمی معی حیث ما یممت احمله |
|--|---|
| میراباطن اس علم کا محافظ ہے نہ کہ شکم صندوق | مراكم مرساته بجل جاله فالله فالمستحدث |
| اذا كنت في السوق كان العلم في السوق | ان كنت في البيت كان العلم فيه معى |
| جب بازارمیں موتاموں قومیر اعلم بھی بازار میں ہوتا ہے | اگر گھر میں رہتا ہوں تو علم میرے ساتھ رہتا ہے |

الوجه المثانى:اهتمام حفظ ورسرى وبرخفظ وديث كاابتمام ب(۱) حضرت معاوية بروايت به نتذاكر كتاب الله وسنة نبيه عَلَيْت الله وسنة الله وسنة الله وسنة الله وسنة الله عكومة للحديث سع حفرت عرميًا في تعليم القرآن والسن المن عباس يضع الكيل في رجلي على تعليم القرآن والسن المن عباس يضع الكيل في رجلي على تعليم القرآن والسن المن عباس على مربي وكل عمل قرآن اور حديث كي تعليم وين الكيل في رجلي على تعليم القرآن والسعيد خدري فرات بين تذاكروا الحديث فان حباته مذاكرته ، باربار حديث كو وبرات ربوك والمنافرة والمحديث فان حباته مذاكرته ، باربار حديث كو وبرات ربوك والمنافرة المنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة المنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة والمنافرة بين كرات والمنافرة والمنافرة

الوجه الثالث: قوة الحفظ. الله تعالى ن السامت كواورخاص طور برعرب كوبهت حافظ ديا حضرت قمادة قرمات بي اعطى الله هذه الامة من الحفظ ما لم يعط احداً من الامم خاصّة خصهم بها وكرامة اكرمهم بها ال

(۱) خود قادہ کا واقعہ ہے کہ انکا پیالہ کم ہو گیا دس سال کے بعد فقیر آیا اُسنے آواز لگائی تو آپ نے فر مایا اسکو پکڑلو پھر فر مایا دس سال پہلے پیالہ چوری ہوا تو یہی آواز تھی چنانچہ دہی فقیر پیالے کا جرانے والا ٹکلا سے

لے متدرک عالم ص۹۹ می مسلم شریف ص۹۰ تذکرہ الحفاظ ص۹۰ میدوین حدیث ۵۸۸ یدوین حدیث ۸۹ می متدرک ص۹۵ بے جامع تدوین ص۱۰۱ج ۱ کے داری ص فی بخاری ص۱۱ و مشکوہ جا اص۱۱۱ لا تدوین حدیث ص۹۸ ،زرقانی ج۵ ص۳۹۵ می فید العرب ص ۳۱

- (۲) امام ابوزرعد رازی محدث گررے ہیں کی نے ایکے بارے ہیں تم کھالی کا گراکوایک لا کھ حدیثیں یا دنہ ہوں تو میری ہوی کو طلاق پھر کچھ گھبرا گیا اور امام ابوزرع آئے پاس گیا اور پوچھا تو امام ابوزرع آنے فرمایا تمسک بامر اتک اِ (۳) امام زہری جو کہ اول مدون ہیں انکو یادکر نے کیلے کر ارکی ضرورت نہیں پر تی تھی ہے این شھاب زہری خود فرماتے ہیں کہ ایک دفعہ من کے بعد آج تک دوبارہ پھراسی حدیث کے متعلق دریافت کرنے کی ضرورت مجھے بھی پیش نہیں آئی انکا استحان کرنے کی ضرورت مجھے بھی پیش نہیں آئی انکا استحان کرنے کے لیے بادشاہ وقت عمر بن عبد العزیز نے کہا کہ میرے بیٹے کو پچھا ھادیث کھوا دو آپ نے کھوا دیں سال کو رہے بعد بادشاہ نے کہا وہ مجموعہ آگے ہیتھے ہوگیا ہے ذراد وبارہ کھوا دوافعوں نے کھوا تا شروع کیا اور بادشاہ نے پس پردہ اسکود کھنا شروع کر دیا جو مجموعہ پہلے کھوایا تھا تو امام زہری نے وہی چارسوا حادیث اسی ترتیب سے کھوادیں۔
- (٣) امام بخاری کی جب شہرت ہوئی بغدادتشریف لائے تو محدثین نے انکاامتحان لینا چاہا، چنا نچہ دس محدثین نے دس دس محدثین نے دس محدثین نے دس محدثین نتخب کیں پھرسندومتن میں پھرتغیر و تبدل کیا پھرائے پاس آئے اور کہا کہ پھوا حادیث کا خدا کر ما کرنا چاہتے ہیں پہلے نے اپنی دس احادیث پڑھیں آپ فرمایا لااعرف پھر دوسرے نے پڑھیں پھرتیسرے نے اسل حردس نے دس نے اپنی اپنی احادیث سناویں اور آپ لااعرف کہتے رہے محدثین نے کہا اسکوتو کھی ہیں آتا ملطی پکڑ ہی نہیں سکتا جب سب نے ختم کردیں تو فرمایا الاول قوء ھکذا والصحیح ھکذا والثانی قوء ھکذا والصحیح ھکذا والشانی قوء ھکذا والصحیح ھکذا والشانی قوء ھکذا والصحیح ھکذا اللح
- (۵) امام بخاری کے رفیق درس حاشد بن اساعیل کا بیان ہے کہ امام بخاری ہمارے ساتھ ایک حلقہ درس میں شریک تھے ہمارا طریقہ تو یہ تھا کہ استاد حدیثیں بیان کرتا جاتا اور ہم لوگ لکھتے جاتے لیکن بخاری کو ہم نے دیکھا کہ چپ چاپ بیٹھے سنتے رہتے اور لکھتے نہیں تو مماتھیوں نے انکو کہنا شروع کیا کہتم وفت ضائع کرتے ہو۔امام بخاری کچھ جو امام بخاری کچھ جو ابام بخاری کہ تو ابالاؤتم جو اب نہ دیتے حاشد کہتے ہیں کہ ترایک دن لوگوں نے جب انکو بہت تک کیا تو امام بخاری کو عصر آگیا فرمایالاؤتم نے کیا لکھا ہے اسکولیکر بیٹھ جاوئیں سب کو زبانی سنا دیتا ہوں۔حاشد کا بیان ہے کہ پندرہ ہزار سے زیادہ حدیثیں اس بندہ خدانے زبانی سنا ڈالیس سے
- (۲) امام ترفدی اپنا استاد کے پاس پڑھنے کے لیے گئے استاد نے کاغذ قلم لانے کو کہاا تکو ملائہیں تو و یسے ہی کاغذ پر انگی چیر نی شروع کر دی محدث نے چالیس احادیث بیان کرنے کے بعد معلوم ہونے پر کہ ویسے ہی انگلی چیر رہا ہے کہا کہ سنا وَاس کئے کہانہوں نے چالیس احادیث جس ترتیب کہ سنا وَاس کئے کہانہوں نے چالیس احادیث جس ترتیب سنادیں۔
 سے استاد نے پڑھائی تھیں ویسے ہی سنادیں۔

ل تذكرة الحفاظ ج م ص ١١٦ تدوين حديث ص ٩٠ م تدوين حديث ص ٩٥ م الهام الحاري وهيحد ص ١١١ م تذكرة الحفاظ ج م ص ١٢١ مدوين حديث ٥٠ م

الوجه الرابع:حصول اجر تبليغ، المتمام حفظ بهم الله اليحقار

ا _ جب وقدعبدقيس آياتو آپ عليه في العلم احفظوهن والحبروابهن من ورائكم ل

٢- آپيلي فرمايا بلغوا عني ولو آية ي

سر الجة الوداع كموقع رفر مايا فليبلغ الشاهد الغائب

الله عبدا سمع مقالتی فی وعابش ہے نضر الله عبدا سمع مقالتی فحفظها ووعاها وادّاها فرب حامل فقه غیر فقیه ورب حامل فقه الی من هو افقه منه ع

الوجه الحامس: ضرورتِ حفظ علامه ابن جَرُّ نے فتح الباری کے مقدمہ میں لکھا ہے کہ ضبطِ صدر کی اسوقت ضرورت تھی کیونکہ عام کا تبنیس ملتے تصاور ضبط بالکتابت کے اسباب بھی نہ تھے۔

الوجه السادس: عدم کفایتِ کتابت حفاظت حدیث کے لیے صرف کتابت کافی نہیں اگر کتابت کافی نہیں اگر کتابت کافی ہوتی تو حفظ کی ضرورت ہی ندر ہتی کیونکہ جوتو میں صرف کتابت پر انحصار کرتی ہیں انکی تیسری نسل تک عموماً وہ چیز باتی نہیں رہتی اور اس کے بعد کسی اشاعت میں ایک لفظ بھی اگر غلط چھپ گیایا کسی کا تب سے غلطی ہوگئ تو کون سیح کریگا اگر کوئی حوّ مُوسیٰ صَعِقاً کی جگہ خرّ عِیُسیٰ صَعِقاً پڑھ دے کہ خر(گدھا) توعیش کا تھانہ کہ موی کا تو کون صحیح کریگا ؟ ہے

الوجه السابع: محبة النبي مَلَاليَّهُ . صحابه وتا بعين كوحضور وَاللَّهُ هـ بِياه محبت هي تو قاعده بكه كلام المحبوب محبوب الكلام ، من احب شيئاً اكثر ذكره -

سوال: سوال بوتا ہے کہ جب ضبط صدرسب حفاظت ہے تو ضبط کتابت کو کیوں افتیار کیا گیا؟

جواب : دین میں کچھ مقاصد ہیں کچھ وسائل ہیں، وسائل زمانے کی تبدیلی کے ساتھ تبدیل ہوجاتے ہیں بشرطیکہ کسی و سلے کوا ختیار کرنے پرشریعت میں پابندی نہ ہواگر پابندی ہوتو پھراسکواستعال نہیں کرسکتے مقصود حفاظتِ دین ہے ضبطِ کتابت سے ہوتو اسکواختیار کرینگے اورا گرضبطِ صدر سے ہوتو اسکواختیار کرینگے جیسے مقاصد میں سے ایک مقصد حصولِ علم ہے پہلے درسوں کی شکل میں تھا اب مدرسوں کی شکل میں ہے۔ درسوں کی شکل میں ایسے کہ ایک آ دی

ل بخارى شريف ج ا ص ١١ ٢ مشكوة شريف ج ا ص ٣١

سع متدرك حاكم جا ص٨٨، الخيرالساري ٣٤٥ جابات ول النبي النائي رب بطغ اوي من سامع

س ابوداؤدج من 109 بسن كبري ج اص ١١٨ ، ابن ماجه ص ٢١ ، الجامع الصغيرج م ص ١٨ ، مشكوة شريف ج اص ٣٥

هے تدوین حدیث ۲۰۱

﴿ حفاظتِ حديث بصورتِ كتابت ﴾

حفاظتِ حدیث بصورتِ کتابت حضور الله کے دور ہی سے شروع ہوگئ تھی کین زیادہ تر مدارضطِ صدرتھا کین اس کا یہ مطلب نہیں کہ کتابت ہی نہیں ہوتی تھی۔حفاظتِ حدیث بصورت کتابت کے مختلف ادوار ہیں ۔تقسیم اول میں دودور ہیں ا . بصورتِ صحف ورسائل ۲ . بصورتِ کتب

﴿حفاظت بصورتِ صحف ورسائل﴾

یہ حضور علیقہ کے دور مبارک سے ہی شروع ہوگئ تھی چنا چہامام بخاریؒ نے باب باندھا" کتابہ العلم'' انمیں چاراحادیث کتابت حدیث کے متعلق ہیں۔

الرواية الاولى: حضرت على عن الوجيف في بوجها هل عندكم كتاب قال لا الا كتاب الله او فهم اعطيه رجل مسلم او ما في هذه الصحيفة (الحديث) ع

الرواية الثانية: حضرت ابو بريرة سے روايت بى كە ججة الوداع كے موقعه پر حضور علي في في كھ مساكل بيان كے فجاء رجل من اهل اليمن فقال اكتب لى يا رسول الله فقال اكتبو الابى فلان (اى لابى شاه) س

لے پارہ ۲۲ سورۃ الاِنزاب آیت ۳۹ مع بخاری شریف منی اص ۲۱ باب ۱۸ملاحظ فرما کمی (مرتب) سے بخاری شیف نا مس الرواية الثالثة: بي بحى حفرت الو بريرة سے بے يقول ما من اصحاب النبى عَلَيْكُ احد اكثر حديثا عنه منى الا ماكان من عبد الله بن عمر و فانه كان يكتب ولا اكتب ل يا در كھے كہ يہ شروع زمانے كى بات بے بعد ميں تو خود ابو بريرة بحى لكھتے تھے۔

الرواية الرابعة:اى طرح مرض الوفات مي فرمايا ((ائتونى بكتاب اكتب لكم كتابا لا تضلوا بعده))

الرواية الخامسة:ناكى شريقميس روايت بآب عليه في يمن كيطرف صحائف كهواكر بيهج جسميس فرائض، صدقات اورديات معلق احكام تصران رسول الله عليه كتب الى اهل اليمن بكتاب فيه الفرائض والسنن والديات) (الحديث) ع

الرواية السادسة: دارقطن مين بكروالي بحرين كوبهي احكام لكهوا كربيج.

الرواية السابعة: طبقات ابن سعديس ب جهال بهي اسلام يقيلا وبال احكام تكهوا كربيعيد

الروایة الثامنة:ابوداؤد کی روایت بی که عبدالله بن عمر و حضو رعیک کی احادیث لکھتے تھے صحابہ نے اعتراض کیا کہ ہر بات ندکھا کروکہ بھی آپ اللہ غضب کی حالت میں ہوتے ہیں اور بھی خوشی کی حالت میں حضور علیہ کے است کی بیدہ مایخرج منه الا العق م

الرواية المتاسعة: وارى ميں روايت ب جس معلوم ہوتا ہے كمآ پ علي ان فرمات تو صحابه كرامً لكما كرتے تقے الميس الفاظ بين بينما نحن حول رسول الله علي الله الله الله الله الله علي الله الله علي الله عليه الله علي الله على الله ع

لے ایضا کے ایضا سے ایشا سے سائی شریف ج۲ ص ا۲۵ قد کی کتب خاند کراچی۔ قدوین صدیث ۲۵ کی روایت ہے کہ عمرو بن حزیم کو جب آنخضر سے میکانی نے کیمن کا حاکم بنا کر جمیع اتو ایک تحریر جمی کھوا کران کے حوالے فرمائی جس میں فرائنس مصدقات اور دیات کے متعلق بہت کی ہدایا سے تھیں۔ سم ابوداؤوشریف سی ۱۵ ن کا کے سنن داری سی ۱۸ کے بخاری شریف جا ص ۲۲،۲۱ سے بخاری شریف ج اس ۲۲،۲۱

الرواية الحادية عشر: مجمع الزوائد مل رافع بن خدى كروايت بكر صحابة في عرض كيا انا نسمع منك اشياء افنكتبها قال اكتبوا و لاحرج

الرواية الثانية عشر: حضرت الس عدوايت عقال قال دسول الله قيدوا العلم بالكتاب، معلوم بواكه جمل حضاظت كاذر يعضب ط صدر عال الكتاب،

المرو اید الثالث عشر: ابو بریرهٔ اپ شاگردول کوکسوایا کرت سے اُکے ایک شاگردهام بن مُنبہ بیل انکا ایک صحیفہ ہے جہ کا نام محیفہ ہا من مُنبہ بیل انکا ایک محیفہ ہے جہ کا نام محیفہ ہا من مُنبہ ہے۔ وہ صحابہ کرام جنکے ہال قرآن پاک پڑھا جاتا تھا کھا جاتا تھا وہ سب بی قلم، دوات سے واقف سے، اور پھر حضور علیہ کی شریعت کی حقاظت ابنافیریف سمجھتے تھے اسکے متعلق کیسے گمان کیا جاسکتا ہے کہ انہوں نے حفاظت مدین میں مدین میں مدین مورد میں ستر وکا تب تھے۔

﴿ضبط كتابت بصورت كتب﴾

پهلادور: إمام ما لك ،علامه سيوطي اور حافظ ابن حجر في الكها ب كه خليفه عا دل عمر بن عبد العزيز في ابن شهاب زهري كوكها كه حضور عليلة كي احاديث مختلف اور منتشر افراد كي پاس بين _ابحي صحابه كا دور باقى ہے۔ تقدلوگ موجود بين كوشش كركان احاديث كوكتابي شكل بين جمع كرلين _ تو خليفه عادل كے تكم پر ابن شهاب زهري في جمع كركين _ تو خليفه عادل كے تكم پر ابن شهاب زهري في جمع كركين _ تو خليفه عادل كے تكم پر ابن شهاب زهري في جمع كركين _ تو خليفه عادل كے تكم پر ابن شهاب زهري في جمع كركين _ في جمع كوك بين اليا م

الشكال: مقدمه موطاامام محر كاندرايك روايت بكه حضرت عمر بن عبدالعزيز في ابو بكر بن حزم كوحديث رسول الله الله المعني كالتم فرماياتها تواول مدون مين اختلاف مو كياس

جو اب: حفرت شخ الحديث في نظيق اسطرح دى ہے كەكى ايك كۈنيى كہا تھا بلكہ جو بھى اسكے الل تھسبكو كہالكن جنكى محنت كامياب ہوئى وہ يہ دوحفرات ہيں اور جنكى زيادہ شہرت ہوئى وہ ابن شہاب زہرى ہيں يہ بہلى صدى كا خيراوردوسرى صدى كے شروع كى بات ہے يہ حفاظت حديث بصورت كتب كا پبلا دور ہے۔ ابن شہاب زہرى كى وفات ١٢٥ ھيں ہے۔ ابو بكر بن جزم كى ٢٠ ھيں اور حكم دينے والے عمر بن عبد العزيز كى وفات ا ١ اھيں ہے۔

ل بخاری شریف ج اص ۲۲،۲۱ ، جامع بیان العلم وفضله ج اص ۱۹ می مقدمه الدر المنضو وعلی منن افی واؤد ص ۱۵ س مقدمه و طالبام محمدٌ ص ۱۲

دوسر ادور: جب بیاحادیث بغیر کسی قید کاور بغیر کسی قیم کی پابندی کے جمع ہو گئیں تو بنیاد پڑگئی اور یہی مشکل تھا تو دور ثانی میں مصنفین نے احکام کے لحاظ سے باب بندی کی۔ اس صدی میں تصنیف کرنے والے بید صرات ہیں۔

٢-حماد بن سلمه كِصره مين وفات ١١٧ه

ا ـ ربيع بن مبيح بصره مين وفات ١٦٠ هـ

هم يسعيد بن عروبيه مين موره مين وفات ١٥١ه

٣ ـ ما لكُ بن انسُّ مدينه منوره مين وفات ١٤٩هـ

۵ _ابن جریج عبدالملک بن عبدالعزیز مکه مکرمه میں وفات ۱۵۰هه _امام اوزاعیٌ شام میں وفات ۱۵۷ه

۸ عبدالله بن مبارك خراسان مين وفات ۸ اه ي

۷ ـ سفیان تورگ گوفه میں وفات ۲۱ اھ

یہ حفاظت حدیث بصورت کتب کا دوسرا دور ہے جو دوسری صدی کا نصف اخیر ہے نصف اول میں مجموعے تیار ہوئے اور نصف اول میں مجموعے تیار ہوئے اور نصف ثانی میں احکام وابواب کے لحاظ سے قدوین ہوئی۔اعبداللہ بن مبارک سیامام ابو صنیف آئے شاگر د میں۔امیر المومنین فی الحدیث افکالقب ہے کہتے ہیں کہ انکی احادیث کواگر ذخیرہ حدیث سے نکال دیا جائے تو احادیث بہت کم رہ جائیں۔

دور ثالث: تیسرادورتیسری صدی سے شروع ہوتا ہے اسکومسانید کا دور کہتے ہیں کہ اسمیں مصنفین ؓ نے ایک شخ کی طرف نسبت کر کے پابندی سے احادیث کھیں مسانید میں سے کچھ رہے ہیں۔

ا : مندِ عبدالله بن موی مید اول مَن صنف المسند بین وفات ۲۱۳ه ۲: مندِ نعیم بن حمادُ وفات ۲۲۸ ه ۳: مندِعثان بن الی شیبهٌ وفات ۲۳۹ه

۵ مسند امام احمد بن منبلٌ وفات ۲۴۲ هـ ـ

یتیسری صدی کانصف اول ہے اور تیسرادور ہے۔

چوتھا دور: یصاح کا دور ہے یہ تیسری صدی کے آخر میں ہے اول مَن صنف الصحیح المجرد الامام البحاری وفات ۲۵۲ه میں ہے، امام ابن الامام البحاری وفات ۲۵۲ه میں ہے، امام ابن المجدد مرکب کے وفات ۲۵۳ میں ہے۔ امام ترزی کی وفات ۲۵۳ میں ہے اور امام نسائی کی وفات ۳۰۳ میں ہے تو یہ صحاح کا دور ہوا۔

خلاصه : فطر كتابت كا خلاصه يه ب كدكت مديث مين حفور علي كذرانه كى تاريخ درج ب كوياكه

له متدمه اوجزاله سر لك شن المقدمة وطالها مجراس ال

صدیث پاک میں حضور علی کے احوال مغازی اقوال وافعال درج ہیں تعجب ہے ان لوگوں پر جوتاریخ کو ججت مانے ہیں اور صدیث کو جحت مانے ہیں اور صدیث کو جحت نہیں مانے حالا نکہ صدیث پاک کا مجموعہ تاریخ سے بھی چند وجوہ سے افضل ہے نیز صدیث اور تاریخ میں چند وجوہ سے امتیازات ہیں اگرتاریخ کو جحت مانے ہوتو صدیث کو بھی جحت مانو۔

﴿ حدیث پاک اورتاریخ میں امتیاز ﴾

حدیث پاک اور تاریخ میں متعدد وجوہ سے امتیاز ہے۔

الاول:وحدةِ ذات: حديث لكھنے والے كاتعلق ايك بى ذات سے ہے ايك بى ذات كے اقوال وافعال المحصر ني جب كه تاريخ لكھنے والوں كاتعلق مختلف ذاتوں سے ہوتا ہے ظاہر ہے كہ وہ بات زيادہ قابل وثوق ہوگی جسكاتعلق ايك بى ذات سے ہو۔

الثانى:حصولِ اجر: حدیث لکھنے والا جو حدیث لکھ رہا ہے وہ اس نیت سے لکھ رہا ہے کہ اس پراجر حاصل کرے۔ ظاہر ہے کہ جو خص حصول اجر کیلئے کام کرتا ہے وہ آئیس غلطی کرنے سے بچتا ہے بخلاف مؤرخ کے کہ اس کا مقصود تو شہرت ہے۔

الثالث: تعلق مشاهده: حدیث پاک کے لکھنے والوں اور بیان کرنے والوں کا تعلق گویا مشاہرہ کا ہوتا ہے کیونکہ جس سے لے رہا ہے وہ آخر کارواسط درواسط صحابہ کرام تک پہنچتا ہے۔

الرابع:وعید علی البکذب: جموئی مدیث بیان کرنے والے کیلئے وعید آئی ہے۔ مدیث پاک ہے من کذب علی متعمداً فلیتبوا مقعاً من النار اس کے پیش نظر محدث سیح بات بیان کرے گا۔

الخامس:ذمه دارئ تبليغ: محدث جوبيان كرتا اورلكهتا ہے اسكى تبليغ بھى محدث كى ذمدوارى ہے اس ذمه دارى كا تقاضا بيہ كرجيب اسنا ہے ويبا ہى بيان كرے۔

السادس:عهدِ اطاعت: حديث نقل كرنے والے وہ لوگ ہوتے ہيں جنكاعبدِ اطاعت ہوتا ہے اس ذات كي مناتھ جسكى احاديث نقل كررہے ہيں اسكا نقاضا بھى يہى ہے كہ تھے حالات اور حديث پيش كريں۔

السابع:تعلقِ محبت: جس ذات كاقوال وافعال محدث نقل كرر ہا ہے اسكے ساتھ محبت كاتعلق ہے اسكا نقاضا بھی یہی ہے كہ نہ بھلائے اور نہ ہى كمى بيشى كرے۔

الثامن:عظمت جس ذات كى حديث قول وفعل قل كرر باب اسكيساته عظمت كاتعلق باسكا تقاضا بهي

یہ ہے کہ کی بیشی نہو لے

التاسع: پرمحدث بيكام الله تعالى سے اجر لينے كے لئے كرتا ہے ﴿ إِنْ اَجُوِى إِلَّا عَلَى اللَّهِ ﴾ خ

القصة الاولى:الوب ختيائى جنكا ذكر بكثرت حديثوں كى سندوں ميں آتا ہے اور حفاظ حديث كے مشاہير ميں سے بيں ان كے متعلق علامہ ذہبى نے لكھا ہے كہ بنى اميه كا خليفه يزيد بن وليد جس زمانه ميں خليفه نه تھا الوب ميں اور اسميس گرے دوستانہ تعلقات تھے جس دن خلافت كے لئے اسكانتاب ہواتو ابشہرت كا خطرہ ہواتو لكھا ہے كہ ہاتھ اٹھا كرايوب ميرى يادخليفه كول سے بھلادے) يدوعا كردہ تھے اللهم انسه ذكرى سے (اے الله ميرى يادخليفه كول سے بھلادے)

القصة الثانية:زكريًا نام كايك دوس عدث كزرے بين جوصاح كراويوں ميں سے بين،ايك مرتبدائل آئكھوں بين تكليف بوئى ايك خص سرمه كير حاضر بوابوچھا كه كياتم بھى ان لوگوں ميں سے بوجو مجھ سے حديث سنة بين اسنے كہا جى ہاں ذكريًا نے كہا تب مين تم سے سرمه كيے لے سكتا بون؟ كيونكه بيده ديث سنانے كا معاوضه بوجائيگا ي

القصة الثالثة:معر بن كدامٌ ايك بزرگ گزرے بين كها كرتے تھ من صبر على الحل والبقل لم يستعبد جوسركداورسالن يرصبركركوه غلام نہيں بنايا جاسكتا ه

القصة الرابعة:نفربن علی ایک محدث گزرے ہیں بیسفیان بن عینی کے شاگرد ہیں اور صحاح کے راویوں میں سے ہیں انکو حکومت کا عہدہ پیش کیا گیا فرمانے گے استخارہ کر کے جواب دونگا گھر آئے دور کعت نماز پڑھی سنا گیا کہ دعا کررہ سے سے اللهم ان کان لی عندک خیر فاقبضنی الیک پروردگارا گرمیزے لیے خیر اور بھلائی تیرے پاس ہے تو جھے اٹھالے۔ دعا کر کے سوگئے جگانے والا جب جگانے آیا تو دیکھا کہ واقعی اٹھالئے گئے ہیں یعنی وفات ہو چکی تھی۔ نے

القصة الخامسة:ايك اور محدث بين جن كانام جماد بن سلمة ب انكاايك شاكرد برا تاجر بن كيا يجه تخفي القصة الخامسة والمركز من المائيل من المركز من

ع پاره ۱۲ سورة هود آیت ۲۹ هم ندوین مدیث ص ۱۲، تذکره الحفاظ جاص ۳۵۸ بع ندوین مدیث ص ۱۲۲ بجواله تذکرة الحفاظ ص ۹۲ ج لے بقروین حدیث ۱۲۲۵۸

س تدوین حدیث ص۱۲۲

هے تدوین حدیث ص۱۲۳۔

کرلینا ہوں لیکن پھرتمہیں حدیث نہیں پڑھاؤنگا اور اگر چاہتے ہوکہ تمہیں حدیث پڑھاؤں تو پھرتخذ قبول نہیں کرونگا ا القصة الساد سنة مولانا مناظر احس گیلائی نے حالات محدثین میں ایک جگہ لکھا ہے کہ ایک محدث حدیث پڑھانے کیلئے آرہے تھے تو راستہ میں گر گئے ۔ طلباء نے سنجالا وجہ دریافت کی پہلے تو ٹالتے رہے طلباء کے اصرار پر فرمایا کہ دو تین دن سے فاقہ ہے انکے ایک ٹاگر دسعد بن نفر سمتے وہ کھانا لائے تو انہوں نے فرمایا میں معذور ہوں وہ شاگر دیجھدار تھے واپس چلے گئے تھوڑی دیر بعد پھر لیکر آگئے پہلے اشراف تھا اب اشراف نہیں تھا اسکواللہ تعالی میں کہ نہیں تھا اسکواللہ تعالی میں بھی کہ محدث کی محت جو بے مزدوری ہودہ تھے اور ججت ہوگی۔

عزیز طلباء! بحداللہ جنگی سند میں آپ شامل ہورہے ہیں وہ بھی ایسے ہی تھے۔علامہ شبیراحمد عثاثی کی گھروالی ٹو پیاں بنتی تھیں اسی پرگز اراکرتے تھے تخواہ نہیں لیتے تھے۔علامہ انورشاہ کشمیری پڑھاتے تھے تو تخواہ نہیں لیتے تھے۔ جتنے ہارے دیوبند کے بڑے برے بروے علاء گزرے ہیں کسی کا اپنامکان نہیں تھا۔

منکرین حدیث کے شبھات اور انکے جوابات

الشبهة الأولى: حضور على في نقط في توصيت لكف منع فرمايا تها لاتكتبوا عنى غير القرآن ومَن كتب عنى غير القرآن فليمحه (الحديث) و تو پرآپ كيد كت بين كه مديث اس زماني مين كسى كن تى لهذا جب اس زماني مين بين كسى كن توجت نهوى -

جواب: حدیث کھنے اور منع کرنے کے بارے میں احادیث میں تعارض ہے۔ بعض میں منع اور بعض میں حکم ہے آئمیں تطبیق مختلف وجوہ سے بیان کی جاتی ہے۔

التوجيه الاول: ينى اس زمانے سے متعلق ہے جب قرآن پاک لکھا جارہاتھا اسوقت اسلئے منع کيا گيا تھا تا كقرآن كا متياز باقى رہے اور خلط لازم نه آئے۔

التوجیهالثانی: منع فرمانالغیره تھا تا که ضبط صدر میں کی نہ کریں توضیط صدر کی اہمیت دلانے کی غرض سے منع فرمایا کہ پہلے ضبط کر او پر کھی بھی لینا نیز صحابہ کے زمانے میں ضبط صدر ہی تھا۔

التوجیهالثالث: ٹھیک ہے شروع میں لکھنے ہے منع فرمایا تھااور صحابہ کرام میں لکھنے کے منعلق اختلاف بھی رہالیکن بعد میں کتابتِ حدیث کے جواز پر اجماع ہوگیا حتی کہ تمام امت کے محدثین ؓ نے لکھا، پڑھا، پڑھایا آ گے پہنچایا ایک زمانہ لکھتے لکھاتے گزرگیا۔ التوجيه الرابع: يمنع الكي ليقاجوني طرح لكهنائبين جانة تصح كهين كوئي غلطي نه وجائ اورجولكهنا مانتے تھا کے لئے اجازت تھی۔

التوجيه الحامس: لكض منع كرناعدم جميت كى دليل نهيل عدم جميت كى دليل توتب بنتي جبكه لكهف، ياد كرنے اور آ كے پہنچانے ہے منع كيا ہوتا۔ حالانكہ بيتيوں تھم ثابت ہيں۔

التوجیه السادس: آ یعرم جیب مدیث کومدیث ہے ہی ثابت کررہے ہیں گویا آ پ نے مدیث کوخود ہی جحت مان لیاورنہ آپ عدم کتابت والی حدیث بھی چھوڑ ویں۔

الشبهة الثانية: احاديث من صحح روايات بهي بين ضعيف بهي اورموضوع بهي بين الهذا مجموع احاديث قابل جحت نہیں؟

جواب ا: يسوال توصحاح سته كدور سے يہلے موسكا تھا جبكه احادیث میں امتیاز ندتھا اب تو امتیاز موچكار جواب ٢: يالزام بي كرضعاف خلط موكى مين امتياز نبين موسكتاس لي كمحدثين في احاديث كي روايت میں جواحتیاط برتی ہے آئی شرا کط اوراحتیاط کی بناء پریسوال ہی وار ذہیں ہوسکتا کہ کوئی راوی شیعہ کا ذب متهم بالکذب يا فاسق سندمين آركيا هو_

جواب ٣: ضِعاف كاشمول إلى بات كى دليل نهيل ہے كه تمام احاديث كوعدم جمت قرار ديا جائے كوئى بھى عاقل اسكا قائل نہيں ہوسكتا كيونكه اسكى مثال تو اس سوناو جاندى كى سے جسميں كھوٹ ملا ہوا ہو اسے بھينك نہيں ديا جاتا بلکہ اسکوصاف کیاجا تاہے۔

الشبهة الثالثة: آپ ك ذمة و صرف تبليغ قرآن هي مجمنا سمجمانا تو خاطبين كا كام ب (نعوذ بالله) بيد لوگ مثال دیتے ہیں کہ جیسے ایک ڈا کیہ ہوتا ہے اسکا کا م تو صرف خط پہنچانا ہوتا ہے خط کو سمجھانا اس کی ذ مہ داری نہیں اس طرح قرآن کو بھنا امت کا اپنا کام ہے پھر بطور دلیل بہآیات پڑھتے ہیں ﴿إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاعْ ﴾ يا ﴿ وَإِنْ تَوَلُّوا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاعَ ﴾ ي

جواب: حفر دوشم يرب احسر اضافى ٢ حسر حقيق يهال صراضا في بحقيق نبيل -

حصر اضافی: اے کہتے ہیں کہ صربعض ماعدا کے لحاظ ہے ہو۔

حصر حقیقی : ده بوتام جوجت ماعداک لحاظ سے ہو۔

اب اگریہاں حصر حقیقی مان لیں تو آیات میں تعارض پیدا ہوجائیگا، اس لئے کہ پیچھے جوشانیں بیان کی تھیں جنکے ذریعے حدیث کی جیت ثابت ہورہی تھی وہ بھی تمام آیات قرآنیہ سے ثابت ہیں، اور اس حصر حقیقی کے اعتبار سے لازم آرہا ہے کہ منوانا آپ اللہ کے ذمہ نیں۔

الشبہة الر ابعة: حضور علی تو صرف اسکے مامور مے کر آن کی اتباع کریں اسلے ہم بھی صرف قرآن بی کے اتباع کے مامور میں اس لئے حدیث کی ضرورت نہیں کیونکہ قرآن پاک میں ہے ﴿وَاتَّبِعُ مَا يُو خَی اِلْدُکَ مِنْ دُرِّاتُ مِنْ دُرِّاتُ مِنْ دُرِّاتُ مِنْ دُرّاتُک ﴾ ا

جواب: حديث بحى ﴿ مَا يُوحَى اِلَيْكَ مِنْ رَّبُكَ ﴾ يُل ثال جال لي كروى كى دوقتميس بيل -(١) جلى (٢) فنى ارثا دربانى ب ﴿ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى َ إِنْ هُوَ اِلَّا وَحَى يُّوُحٰى ﴾ ، ﴿ وَاَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابُ وَالْحِكْمَةَ ﴾ ي ﴿ وَيُعِلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ ﴾ ي

الشبهة المخامسة: حضور علی ایک مرتبه حضرت زینب کے گرشهد فی لیادوسری ازواج مطهرات کوناپندیدگی ہوئی کہ آپ علی کا رجمان اس کی طرف ہوجائے گا چنانچہ ازواج مطهرات نے عض کیا آپ مغافی کوناپندیدگی ہوئی کہ آپ علی کا رجمان اس کی طرف ہوجائے گا چنانچہ ازواج مطهرات نے عض کیا آپ مغافی کی استان کے دائی ہوئی ہوئی کہ انگاہ کہ اس کونہ بتانا تا کہ اس کی ول محتی نہ ہوتو اللہ تعالی کی طرف سے وی آئی ﴿ یَا یُنها النّبی لِمَ تُحرّمُ مَا اَحَلُ اللّهُ لَکَ کُونہ یعنی آپ کورام طال میں والی نہیں۔ اسطر ح ایک دوسری جگہ تعبیہ ہوئی ﴿ عَبَسَ وَتَوَلِّی اَنْ جَاءَهُ اللّهُ عَلَى کَ فَدِید کی حَوام طال میں والی نہیں۔ اسطر ح ایک دوسری جگہ تعبیہ ہوئی ﴿ عَبَسَ وَتَوَلِّی اَنْ جَاءَهُ اللّهُ عَلَى کَ فَدید کی کے فدید کی کے فدید کی کے جائے چنانچہ الکّ عَلی کی فیدید کی کے فدید کی کے خوار دیا جائے چنانچہ آپ علی کوئی کی دوسری کی کہ فدید کی کے قول وقعل جوت نہیں ورند آپ علی کو تعبیدنہ ہوتی۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ بی عقی کے قول وقعل جوت نہیں ورند آپ علی کو تعبیدنہ ہوتی۔

جو اب ا : جس کوآپ دلیل عدم جمیت بنارے ہیں بیتو دلیلِ جمیت ہے کیونکہ تین باتیں منشاء خداوندی کے خلاف ہو کیا ہیں مطابق خلاف ہو کہ اس کے علاوہ جتنا بھی ذخیرہ ہے وہ جمت ہے منشاءِ خداوندی کے مطابق

ع پاره ۲۷ سورة النجم آیت آ سی پاره ۲ سورة النقره آیت ۱۵ که پاره ۲۸ سورة النقریم آیت ۱ که پاره ۱۰ سورة الانفال آیت ۲۷

لے پارہ ۲۱ سورة احزاب آیت ۲۱ سطے یارہ ۵ سورة النساء آیت ۱۱۳

ع پاره ۵ خورة النساء ایت ۱۱۲ ۵ مدارد القی آن ۸۶۰ ص ۸۹۸

۵ معارف القرآن ج۸ ص ۴۹۸

کے پارہ ۳۰ سورہ عیس آیت ا،۲

ہے ورندسارا قرآن تنبیہات سے بھراہوتا۔

جواب ۲: یدلیلِ عصمت ہے، الله تعالی ان تنبیهات کے ذریعے اپنے نبی کومعصوم رکھنا جا ہتے ہیں اور عصمت تو دلیل جمت ہے۔

الشبهة السادسة:اكثر روايات بالمعنى بين اورمعنى بيان كرفي مين غلطى بهى بوجاتى ہے ابكيا اعتبار هي كيك كي من فلطى بهى بوجاتى ہے ابكيا اعتبار عبد كي كي كي كي من اور معنى بيان كئے بين ياغلط كيونكه جب الفاظ محفوظ نہيں تو كي كها جا اسكا ہے كه انكامعنى مدلول محفوظ ہے۔ جو اب: يغلط ہے كه كثر روايات بالمعنى بين كيونكه حديث تو نام ہے حضور علي اور يمن اور احوال اور احوال اور احوال اور احوال اور احوال اور احوال ميں تو روايت باللفظ ہوئى نہيں سكى تو لا محاله روايت بالمعنى ہى ہوگى اور يمن حال تقاريكا ہاتى جواحاد يث قول بين تو ان ميں دعا ميں مذكور بين اور اس طرح احاد يث قدسيه اور احاد يث جوامع الكلم يسب تو روايت باللفظ بين باتى ذخيرہ احاد يث تحديد و محمد الكل يعتقلاء اور حكماء كامتفقد اصول ہا سكا تقاضا يہ باللفظ بين باتى ذخيرہ احد بين تو سب معنر ہو جب وہ حضر ات عربی محاورات سے اور حالات سے بخبر موں حالانكہ محابہ كرام تو عرب العرباء بين وہ سب محاورات كو بحصة بين ان سي غلطى كيے ہو كئى ہے؟

الشبهة السابعة: اكثر احاديث مين تعارض باور قاعده بكراذا تعارضا تساقطا.

جواب: یہ بات غلط ہے کہ اکثر احادیث میں تعارض ہے۔ احادیث ماری تعالیٰ میں تعارض نہیں۔ علی طذا احادیثِ اخلاق اور احادیثِ عقائد اور احادیثِ ادعیۃ اور احادیثِ احوال جنت وجہنم ان میں بھی کوئی تعارض نہیں صرف چندا حادیثِ احکام میں تعارض ہے وہ بھی صرف صوری تعارض ہے حقیق تعارض نہیں۔ کی بھی محقق نے یہ نہیں کہا کہ تعارض کی وجہ سے بیر حدیثیں ساقط ہو گئیں سب کا تعارض مرفوع ہے اگر ظاہری تعارض سبب بن جائے سقوط اور عدم جمیت کا توبیصوری تعارض تو قرآن پاک میں بھی موجود ہے تو کیا قرآن پاک کوچھوڑ دیا جائے گا؟ مثلا ایک میں بھی موجود ہے تو کیا قرآن پاک کوچھوڑ دیا جائے گا؟ مثلا ایک آیت میں ہے ﴿ کِتَابا مُّتَشَابِها ﴾ ی اور تیسری جگہ ہے ﴿ وَسِل میں ہے ﴿ کِتَابا مُّتَشَابِها ﴾ ی اور تیسری جگہ ہے ﴿ وَسِلُ اللّٰ مُحکّمتُ ایلُه وَارِی کُوجہ سے تساقط ہوجائے تو آن کا چھوڑ نالازم آئے گا اور بیسے کہنیں ہے معلوم ہوا کہ تعارض صوری تساقط کوجہنیں بن سکتا بلکہ خارجی اولہ کے ذریعے ترجے یا تطبیق ہوگی لہٰذا اس شبہ کی بناء پرعدم ججیب حدیث پراستدلال قائم نہیں کیا جاسکتا۔ اور خہکورہ بالا متعارض ذریعے ترجے یا تطبیق ہوگی لہٰذا اس شبہ کی بناء پرعدم ججیب حدیث پراستدلال قائم نہیں کیا جاسکتا۔ اور خہکورہ بالا متعارض ذریعے ترجے یا تطبیق ہوگی لہٰذا اس شبہ کی بناء پرعدم جیب حدیث پراستدلال قائم نہیں کیا جاسکتا۔ اور خہکورہ بالا متعارض خریعے ترجے یا تعلی خور نالان م آئیگا اور میں کیا عبر عدم جیب معلوم ہوا کہتوں کیا جاسکتا۔ اور خہکورہ بالا متعارض

ا پاره ااسورة حود آیت ا ع پاره ۲۳ سورة الزم آیت ۲۳ ع پاره ۳ سورة آل عمران آیت ک

آیات کاحل یہ ہے کہ جس آیت میں سب کومی کہا ہے اس سے مراد محکم عن النقص والزوال ہے جس میں اتا ہے کہ مثابہات ہیں اس سے مرادیہ ہے کہ مضامین ملتے بطئے ہیں اور یہ کہ ایک آیت دوسری آیت کی تغییر کرتی ہے اور جس میں بعض کو محکم اور بعض کو متثابہ کہا اسکا مطلب یہ ہے کہ بعض کا حکم واضح ہے اور بعض کا واضح نہیں ہے۔ الشبہة الثامنة: اکثر احادیث اخبار احاد ہیں اور خبر واحد دلیلِ ظنی ہے اور ظنی چیز کا دین وشریعت میں اعتبار نہیں نیز قرآن یاک میں آتا ہے کہ طن کو چھوڑ دو ہوا خین بوا کشیر المین الظن کے ا

جواب اول: اس شہد میں مغالط دینے کی کوشش کی گئے ہے کیونکہ جمہور نے خود جو خیر واحد کوظن کہا ہے اس کا مطلب اور ہے اور قر آن نے جس ظن کی فرمت کی ہے اس سے مراداور ہے جمہور نے جوظن کہا ہے بیظن قریب من الیقین ہوتا ہے اور جس ظن کو چھوڑ نے کا تھم ہے اس سے مرادائکل ہے۔

جواب ثانی: جن محدثین نے اخبار آ حاد کو طن قرار دیا ہے انہوں نے جت بھی تو قرار دیا ہے انکی ایک بات تو مان کی اور دوسری چھوڑ دی تو محدثین کے اس مذہب سے معلوم ہوا کے خبر واحد ہونا جیت کے خلاف نہیں ہے۔

خبوِ واحد کی حجیت: خرواحد کی جیت مسلمدامر ہے قرآن سے بھی ثابت ہے حدیث سے بھی ثابت ہے حدیث سے بھی ثابت ہے فابت ہے محلی ثابت ہے محلی ثابت ہے وار انبیاء سابقین سے بھی ثابت ہے تی کہ اس کی مشہور قسول کی جیت بھی قرآن سے ثابت ہے۔

خبرِ و احد کی تعریف: خبرِ واحد متوار کے مقابلے میں ہے یعنی جو حدِ توار ترکونہ پنچے وہ خبرِ واحد ہے اور خبر واحد کی بھر چندا قسام ہیں۔

- (۱) كى ورجه ميس رواة تين ره جائين توائي تواسيم بين (٢) الكره جائية توغريب (٣) دوره جائين توعزيز كهلاتى بـ-اثبات الحجيت من القر آن:
- (۱) سورة يس مي إذ أرسلنا اليهم اثنين في اب اكردوكي بات جُت نبيل هي تودوكو كيول بهيجا؟
- (٢) ﴿فَعَزُّزُ نَا بِفَالِثِ ﴾ عقوت دى جم نے تيرے سے ساتھ۔ جب ايكى بات جمت نہيں تو قوت كيے ماصل ہوگئ؟
- (٣) مرداورعورت ك تنازع كوحل كرنے كيلئے قانون بتلايا ﴿فَابْعَثُواْ حَكُماً مِّنُ اَهْلِهِ وَحَكُماً مِّنُ

ل پاره ۲۷ سورة الحرات آیت ۱۱ ع پاره۲۲سورةیس آیت ۱۸ س اینا

اَهُلِهَا ﴾ اب اگرایک کی بات جحت ہی نہ ہوگی تو دونوں میں فیصلہ کیے ہو پائیگا اور اس فیصلہ کی خبر باقی کیسے مانیں گے؟ (٣) نیز ہرزمانہ میں ایک ہی نبی آیا اور ایک ہی فرشته خبر لایا۔

اثبات الحجيت من الحديث: خبر واحد آپ علي كزديك بهى جمت ب چنانچ جب سلاطين كوخط لكصور كبين ايك آدى بهجااور كبين دوآدى بهجد

اثبات الحجيت من الانبياء السابقين:

- (۱) ﴿ وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنُ اَقْصَىٰ الْمَدِينَةِ يَسُعَى قَالَ يَمُوسَى إِنَّ الْمَلَا يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخُرُجُ (اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ
 - (٢) ﴿ قَالَتُ إِنَّ أَبِي يَدُعُوكَ ﴾ والكورت في جردي اورموى عليه السلام تشريف لي كئه
 - (m) الله تعالى في موى عليه السلام اور مارون عليه السلام كوبليغ كے ليے بھيجا حالانكه صرف ذوآ دمي بين _

اثبات الحجيت من الصحابه:

- (۱) صحابه کرام بیت المقدل کیطرف منه کرے فجر کی نماز پڑھ رہے تھا یک شخص نے آ کرآ وازلگائی ((الا ان القبلة قد حولت)) س اور سب نے منه پھیرلیا حالا نکه صرف ایک آ دمی نے خبردی۔
- (۲) شراب پی رہے تھادراعلان ہوا ((الا ان الحمر قد حرمت)) وصحابہ کرام نے بین کر مظکور دیے۔ اثبات الحجیت من العقل: عقلاً بھی خبر واحد کی جیت ثابت ہے ایک سچا آ دی خبر دیتا ہے اور وہ خبر عالی بھی نہیں تو آ کے نزدیک وجہ تکذیب کیا ہے؟ کیوں جمٹلاتے ہیں کوئی دلیل تو آ کے پاس نہیں ہے لہذا خبر واحد کو ججت مانا جا ہے۔

اثبات الحجیت من العوف:عرفا بھی ثابت ہے پورے عالم کا نظام خرِ واحد پرچل رہا ہے عدالتوں میں دوگواہ شرط ہیں اس پر فیصلے ہوتے ہیں حتی کہا اللہ اللہ کا فام خر واحد پر ہے ایک آ دمی کے اشارے پرتمام فوج نقل ﴿ وَاَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِنْكُمْ ﴾ المحکون کا نظام خر واحد پر ہے ایک آ دمی کے اشارے پرتمام فوج نقل

ا پارہ ۵سورة النساء آیت۳۵ علی میں استورة النساء آیت ۳۰ سورة القصص آیت ۲۰ سورة القصص آیت ۲۰ سیارہ ۲۰ سورة القصص آیت ۲۰۰ سیارہ ۲۰ سورة القصص آیت ۱۳۳ ہے مسلم شریف ج۲ ص ۱۷۳، ونی النسائی بخیر لیسر ۲۶ ص ۱۳۳ ونی البخاری ایضا ۲۶ ص ۸۳۹ کیارہ ۲۸ سورة الطلاق آیت۲

وحركت مين آجاتى ہاورمحدثين نے تو مجھشرا لط بھي لگائي بين اورتم تو كوئي شرط بھي نہيں لگاتے۔

الشبهة التاسعة: اكثر احاديث خلاف عقل بي مثلاً پيثاب كهان سے كيا اور وضوء ميں كن اعضاء كو وصونے كا عضاء كو وصونے كا عضاء كو وصونے كا على اللہ وصوبے كا اللہ وصوبے كيا اللہ وصوبے كا تعلق كا اللہ وصوبے كا اللہ وصوبے كا تعلق كا اللہ وصوبے كا تعلق كا اللہ وصوبے كا تعلق كا ت

حکمت معلوم نہیں تو آپ بیہیں کہ سکتے کہ اسمیں حکمت ہی نہیں ہے۔
جو اب ثالث:احادیث موافق عقل ہیں اور عقل ان کا ادراک کرتی ہے لیکن سوال یہ ہوتا ہے کہ کسی عقل ؟ زید کی عمر دکی ، غلام احمد پرویز کی یا آ بکی عقل؟ آپ اپنی عقل کو کسے معیار کلی قرار دیدیا؟ آپ پہلے اپنی عقل کے معیار کلی ہونے پردلائل قائم کریں۔ آ بکی عقل کی مثال تو ایک گڑوی کی ہے اور انبیاء یہ ہم السلام کی عقل ایک سمندر کی مانند ہے۔ اب جتنا پانی آ بکی گڑوی میں آجائے وہ تو پانی ہے باتی نہیں کیا آپ پورے سمندر میں پانی کے موجود ہونے کی نی کردیئے؟

الشبهة العاشرة: قرآن الني بارب ش كهتائ ﴿ تِبْيَاناً لَكُلِّ شَنِّي ﴾ يا تواب الرآب اس آيت كو مانة بيل تو حديث كى ضرورت مانة بيل تو كويا آية ﴿ تِبْيَاناً لَكُلِ شَنْي ﴾ كونيل مانا وريكل بعى استفراقى مع؟

جوابِ اول: يُكُل استغراقِ حقيقى برمحول نبيل كيونكه اكر استغراقِ حقيقى برمحول موتا توكوئى بات بحى قرآن المقام صديث ص١٠١٠١٠ ٢ باره ١٠٠ مورة الخل آيد ٨٩٠ ے خارج نہیں ہونی چاہے تھی بلکہ یکل استغراق عُرفی پر محمول ہے جیسے قوم عاد پر عذاب کے بارے میں آیاتک مّرُ کُلَّ شَنْی بِاَمُورَ بِّهَا الله مِر چز کوتو رُبھوڑر بی تھی تو گویا آسان وزمین بھی ٹوٹ بھوٹ گئے ع

جواب ثانى: آپ عَلِيْ فَصَلَى الكواسَعْراقِ حَقِقَى بِحُولُ نَبِيلَ كَيَا خِيْ حَفْرت مَعَادُ كُوعالَ بنا كربيجا توفر ما يا ((كيف تقضى اذاعرض لك قضاء ،قال اقضى بكتاب الله قال فان لم تجد فى كتاب الله قال فبسنة رسول الله)) ع الى سے ثابت ، واكه حديث جحت ہے۔

جوابِ ثالث: مان لیا که استفراق ہے اور حقیق ہے لیکن جزیات کو بیان کرنے کے لیے نہیں بلکہ کلیات کے لیے ایک کلیہ من لیج ایک روایت میں ((عن عبدالله ابن مسعود قال لعن الله الواشمات والمستوشمات للحسن المغیرات خلق الله فجآء ته امراة (ام یعقوب) فقالت انه بلغنی انک لعنت کیت و کیت فقال ما لی لا العن من لعن رسول الله مَلْ الله مَلْ الله فقالت لقد قرات مابین اللوحین فما وجدتهقال لئن کنت قراتیه لقد وجدتیه اماقرات ﴿ مَا اَنَا كُمُ الرُّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَا كُمُ عَنْهُ فَانْتَهُوا ﴾) علی المناس آیت سے بی جی جیت مذیت ابت ہوئی۔

جواب رابع:، م نے سب مان لیا کہ کلیات اور جزئیات سب اسکا ندر ہیں لیکن ہم پوچھے ہیں کہ بلا واسطۃ ﴿ تِبْیاناً لَکُلِّ هَنَیْءِ ﴾ ہے یا رسول اللہ عَلَیْ کے بیان کے واسطہ سے کیونکہ خود قرآن نے کہا ہے ﴿ وَاللهٰ اللهٰ عَلَیْنا بَیَانَهُ ﴾ دام معظم فرماتے ہیں ﴿ وَالْذِلْنَا إِلَیْکَ اللّه عُمْ إِنَّ عَلَیْنا بَیَانَهُ ﴾ دام معظم فرماتے ہیں لولاالسنة لما فهم احد منا القرآن (امام الوصیفہ لوسب ہی امام اعظم مانے ہیں عوام کی بات نہیں عبداللہ بن مبارک نے پیلقب استعال کیا تومشہورہو گیا اورخودعبداللہ بن مبارک کا لقب امیر المؤمنین فی الحدیث ہے) ایک اور قول ہے جمیع ماتقول الائمة شرح السنة وجمیع السنة شرح القرآن امام احمد بن شبل فرماتے ہیں ان السنة تفسر القرآن امام احمد بن شبل فرماتے ہیں ان السنة تفسر القرآن امام احمد بن شبل فرماتے ہیں الکتاب علامہ ابن کی السنة من السنة الی الکتاب علامہ ابن کی السنة تفسر القرآن امام اوزاعی فرماتے ہیں الکتاب احوج الی السنة من السنة الی الکتاب علامہ ابن کی خود اللہ السنة من السنة الی الکتاب علامہ ابن کی ا

ل ياره٢٦ سورة الاحقاف آيت ٢٥

عُ مِقَامِ صديث عن ٩٣٠

س مقلوة شريف عن ٣٢٣ ،اودادُو جا ص ١٣٩ ،تر خرى شريف خا ص ١٥٩ ،دارى ٢٥ ص ١٩ ،منداحد خ۵ ص ٢٣٠ بغيرابن كثير جا ص٣

س بغاری ومسلم منقلوة شریف ج۲ م ۱۸۸ سطر

هي بارومها منورة أتحل آيت مهم

لي بأره ٢٩ مورة القياسة يت19

ن اعلام الموقعين على تقريبا ورسومواقع اليد ذكر كي بين كرصحاب كرام وضى الله تعالى عنهم اجمعين عرب بون ك با وجود قرآن كونه بحده سكيا وربيان رسول المحلفة كعتاج بوئة واتى بات طيمونى كه دخنور المحلفة كبيان كى ضرورت باب الرآب على المحلور بوق عمان كرت بين قبيان تائيد كبلا يكااورا كركونى قصة فقر طور برقرآن مل بيان بوااور آ بي المحلفة في الموكوني تعمير على المحلفة في الموكوني تعمير على المحلفة في المح

﴿حکم منکرینِ حدیث﴾

قالی ظہیریہ میں لکھا ہے کہ حدیث کی تین قسمیں ہیں ا متواقر ۲ مشھور ۳ خبو واحد متواتر کامکر بالا جماع کافرہے۔ خبرواحد کامنکر فاس ہے اور حدیث کا استہزاء کرنے والا بھی کافرہے چنانچہ ملاعلی قاریؓ نے لکھا ہے کہ کی کوحدیث سنائی گئی اس نے بطوراستخفاف کے سے کہا کہ بہت حدیثیں سنی ہیں تو وہ کافر ہوگیا۔

﴿بيانِ اصطلاحاتِ حديث﴾

ابتداءٔ مدیث دو تم پرئے (ا) ضعیف اور (۲) صحیح. پھر ضعیف دو تم پرہے (۱) متصل (۲) غیر متصل پھر غیر تصل کی چار قسمیں ہیں۔ ۱. منقطع ۲. مُعلّق ۳. معضل ۸. مرسل منقطع: وہ روایت ہے جسکی سند تصل نہ ہو کہیں سے راوی گراہوا ہو۔ مُعلّق: جسكى سند ك شروع سے داوى گر بے ہو ہے ہوں۔

معضل: جسکی سند کے درمیان سے داوی گرے ہوئے ہوں یا ایک سے ذائد راوی پے در پے گرے ہوئے ہوں۔ مر مسل: جسکی سند کے آخر سے کوئی راوی گراہوا ہو۔

اورمتصل كى يا في قسمين بين الشاذ ٢. منكر ١٠ مدلس ٨٠ مضطرب ٥ معلل

شاذ: وه حدیث ہے جسکا راوی خودتو ثقه ہو گر ایس جماعت کثیره کی مخالفت کرے جو اس سے زیادہ ثقه میں۔اسکے مقابل کومحفوظ کہتے میں۔

منكر: وه حديث بجه كاراوى باوجود ضعيف مونے ك نقات كے خالف روايت كرے اسكے مقاتل كومعروف كہتے ہيں۔

مدلس: وه حديث بجيكراوى كواين شخ كانام ياشخ كشخ كانام چميانى كا عادت بو

مضطرب: وه مديث بجسكى سنديامتن مين ايبااختلاف موكه أمين ترجيح ياتطيق نه موسك_

معلل: وه حدیث ہے جس میں ایس کوئی علة خفیہ ہو جو صحب حدیث میں نقصان دیتی ہوا سکومعلوم کرنا ماہر فن کا کام ہے ہر خص کا کامنہیں۔

دومری قتم یعی صحیح کی اقسام جو که پهلی تقسیم کے اعتبار سے دومری قتم ہاں کی صفات دادی کے لخاظ سے چار قتمیں ہیں۔ ۱. صحیح لذاته ۲. حسن لذاته ۳. صحیح لغیره ۴. حسن لغیره

صحیح لذاته: وه حدیث ب جسکے تمام راوی عادل ، کامل الفیط موں اور اسکی سند متصل مواور وه معلل و شاذ مونے سے محفوظ مو۔

حسن لذاته: وه مديث بي جيك راوي مي صرف ضبط ناقص بوباتى تمام شرا لط سيح لذاته كي موجود بول ـ

صحيح لغير ٥: اس مديث حسن لذاته كوكها جاتا بجسكى سندي متعدد مول

حسن لغيرة:اس مديث ضعف كوكهاجا تلب جسك طرق متعدد مول-

ا مولانا فیره نظر می کوفیرالاصول می برفیرواحدی پوتی قسم کے تحت ذکر کیا ہے کہ فیرواحد سقوط وعدم سقوط داوی کے اعتبار سے سات قسم پر ہے (۱) متصل (۲) مند (۳) مند (۳) مند (۳) منتظم (۳) معطل (۲) مرسل (۷) مرسل الموقع علی المفتود عنه وابو حنیفة وطائفة من اصحابهما وغیر هم من المعة العلماء کا حمد فی القول المشهور عنه انه صحیح متحج به بل حکی ابن جو یو اجماع التابعین باسوهم علی قبوله وانه لم یأت عنهم انکار و لا عن واحد من الائمة بعد الی رأس المائین النج (نخیة الفر حاشیده مسسم می و المختاد فی التفصیل قبول موسل المصحابی اجماعاً ومرسل اهل القون الثانی والثالث عندنا (ای الحنفیة وعند مالک مطلقاً وعند الشافعی باحد امور خصین کے بعد کے لوگول کی بوتو مطلقاً متبول کرتے ہیں اورا کرتے تابعین کے بعد کے لوگول کی مولة ثقر اور کی مطلقاً اور دومرول کی حقیق واعماد کے بعد بھی تول کرتے ہیں (حمائی میں ۱۷)

راويون كى تعداد كے كاظ سے صحيح كى دوسميں بين الخبر واحد ٢. خبر متواتر

خبو و احد: وه حدیث ب جسکراوی اس قدرکیرنه بول که ایکی مجموث پراتفاق کرنے کو عقل سلیم محال سمجے اسکی پھر تین قسم میں ا . مشھور ۲ . عزیز ۳ . غریب

ا مشهور: وه حديث ب جسكراوي كي زماني مين تين سيم كمين ندمول ـ

٢. عزيز: وه مديث بي جسكراوي كى زمانى مين دوسيم كمبين ندبول ـ

۳. غویب: وه حدیث ب جسكاراوی كهی نهین ایك بور

خبو هتو اتو: وه حدیث ہے جسکے رادی ہر زمانے میں اس قدر کیر ہوں کہ ان سب کے جموث پر اتفاق کر لینے کو عقل سلیم محال سمجے ۔ (خرالاسل) فالمتو اتر قد یفید العلم بمحض کثر قدواة و ناقلیه وقد یکون لکل من الکثرة و او صاف الرواة او القرائن المتصلة مدخل فی افادة العلم ا

اس خبر متواتر کی پھرچا و شمیں ہیں ا . تو اتر اسنادی ۲ . تو اتر طبقاتی ۳ . تو اتر تعاملی ۴ . تو اتر معنوی

ا . تو اتو اسنادى: جس كوابندا سانتهاء تك الى جماعت روايت كري جن كا اجماع على الكذب محال مو

٢. تواتر قرنى يا طبقاتى: جوقرن بقرن چلى آرى بو

س. تواتر تعاملي: جسميل اكثر عمل كرتية ئے مول اور بعض كا اختلاف مور

۷. تو اتو معنوی: الفاظ کے لحاظ سے تو شمر واحد ہولیکن معنی کے لحاظ سے تو اتر کو پینی ہوئی ہوتو اتر معنوی کا دوسرا نام تو اتر قدر مشترک ہے ہے پہلی شم کی مثال ایک یا دو حدیثیں ہیں ا۔ ((انما الاعمال بالنیات)) ۲. ((البینة علی المدعی والیمین علی من انکو)) دوسری شم کی مثال جیسے صلوات الخمسہ ،عددر کعات اور مقادیر زکوۃ اور قرآن مجید تیسری شم کی مثال رکعات تراوی مسواک فی الوضوء چوتھی شم کی مثال جیسے مجردہ۔

آداب علم حدیث

تعریف ادب: ا. ما یحمد من القول والفعل ۲. علامه سیوطی فرمات بی الاخذ بمکارم الاخلاق ۳. التعظیم لمن فوقک والرحم لمن تحتک بیم تنبط به ایک مدیث سه ((لیس منا من لم یرحم صغیرنا ولم یؤقر کبیرنا)) ع

ضرورت ادب: كسب فيض اوركسب علم من ادب بهت ضرورى باسك كدادب كى انواع من ايك

ا (مقدمه فتح المعلم ص۵) ع فيض الباري ص عن المقدمه في الملهم ص ١ سر (ترخدي ص١٠٢)

تعظیم بھی ہے جب کوئی شخص ادب اختیار کر کے تعظیم کرتا ہے تو یقینا تواضع کریگا تواس سے انفعالیت پیدا ہوگی جب انفعالیت پیدا ہوگی تواٹر کو قبول کریگا بغیر انفعالیت کے اثر نہیں ہوتا اور تعلم بھی ایک اثر ہے۔

تعریفِ تعلیم: سسفعل یترتب علیه العلم غالبا تویفل تب اثر کریگا جبکه دوسری طرف سے بھی انفعالیت ہو چنانچہ شل مشہور ہے الحرمة خیر من الطاعة آدی ترک طاعت سے کافرنہیں ہوتا ترک حرمت سے کافر ہوجاتا ہے مثلاً ایک شخص روزہ نہیں رکھتا تو اسکے ذمہ قضاء میں ایک ہی روزہ ہوگا اور اگر بغیر عذر کے تو ٹاتا ہے ہو ساٹھ روزے رکھنے پڑیں گے اور ایسے ہی ایک شخص کلم نہیں پڑھتا تو کافر ہے اسکے تل کا حکم نہیں اور اگر پڑھ کر چوٹ ساٹھ روزے رکھنے پڑیں گے اور ایسے ہی ایک شخص کلم نہیں پڑھتا تو کافر ہے اسکے تل کا حکم نہیں اور اگر پڑھ کر چوٹ تا ہے تو اسکی سزاقل ہے کیونکہ یہ تو بین ہے من توک السنة تھاونا فقد کفو علام عینی سے توک غلطی ہوگئی یا قلمی لغزش ہوگئی کہ سنة قذر قائدہ یا صفح بنا کرنہیں لکھنا چا ہے تھا سنة متعلقة بالقذرة لکھنا چا ہے تھا اسبر ملاعلی قاری فرماتے ہیں لو لا جلالة قدرہ لکفرناہ کہتے ہیں ما وصل من وصل الا بالحرمة وما سقط من سقط الا بترک الحرمة.

الادب الاول: تصحیح نیت: اگرنیت می نه به وئی تو حدیث کی تو بین بوجائیگی کیونکه اگرکوئی مخص سونے کی وَ لیم بین الله الله معدیث کی قیمت تو رضائے الله به به ای طرح حدیث کی قیمت تو رضائے الله به به اوراس نے چند کے لئے چنانچ مقدمه او جزالمسالک ۹۸ پرابودا و داورا بن ماجه کے حوالے سے حضرت ابو بریرہ سے روایت ہم فوعاً ((من تعلم علماً مما یستغی به وجه الله لا یتعلمه الا لیصیب به عرضا من الدنیا لم یجد عرف الجنة یوم القیامة یعنی ریحها)) ب

الادب الثاني:ادب الاستاد: اسكى مخلف صورتين بين الطاعت ٢. حدمت ٣. عظمت من عدم استنكاف على التاديب.

ا . طاعت: اسكامفهوم توواضح ب_

۲ خدمت: سسلی استاذ کوراحت پنجانے کا انظام کرے صحابہ کرام سے بھی خدمت ثابت ہے حضرت استاد صاحب مدخلہ نے اپنا واقعہ سنایا کہ میں نے مولا تا خیر محمد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں عرض کیا کہ کچھ خدمت نہیں ہو پار ہی تو فر مایا کہ میں تو سیمجھاتھا کہ تو عالم بن گیا ہے لیکن تو تو ابھی تک جابل ہے پھرفر مایا کہ خدمت کام

کرنے کا نامنہیں بلکہ خدمت تواستاذ کی منشاء کے مطابق زندگی گزارنے کا نام ہے۔

المعظمت: اسکی مختلف انواع بین اراستادی طرف پاؤل پھیلا کرندلیٹا جائے اور نہ پاؤل پھیلا کر بیٹا جائے اور نہ پاؤل پھیلا کر بیٹا جائے اور نہ باؤل پھیلا کر بیٹا جائے اور نہ باخل جائے اور نہ باخل جائے اور نہ باخل بات نہ کرے نہ بیٹے ۵۔معارضہ کی صورت بین بات نہ کرے نہ بیٹے ۵۔معارضہ کی حاصری کا اہتمام کرے پھر حاضری بھی دونوں تم کی یعنی جسمانی بھی اور روحانی بھی۔

م. عدم استنكاف على المتأديب: سن استاذى تأديب برنا گوارى كاظهارندكر يكونكه اسكانشاء كرم الماشاء كونكه اسكانشاء كرم الماشاء كرم الماستان المرب الماسكان المرب المسكر المرب المسكر المرب المسكر المرب ال

فعلی تأدیب کی مثال:ایک مرتبه حضور علی ایک صحابی کوس نی کانکشتری پہنے ہوئے دیکھا آپ علی تأدیب کی مثال: اسلام کی مقال اسلام کی مقال اسلام کی مقال کی مقال

قولی تأدیب کی مثال:ای طرح ایک مرجد حضور علی کے ایک صحابی کا قبرد یکهادوسرے وقت میں وہ صحابی ماضر خدمت ہوئے اور سلام عرض کیا لیکن حضور علیہ نے جواب نددیا ان صحابی نے خیال کیا کہ شاید توجہ ند ہوئی ہوگی دوبارہ سلام کیا آپ علیہ نے نے جربھی اعراض کیا تو آئیس بتلایا گیا کہ تہارا قبرد یکھا تجاوہ صحابی فوراً گئے اور وہ قبہ گرادیا بیتا ویب قولی ہوگئ۔

حضرت استادمولانا محمد عبدالله صاحب رحمة الله عليه فرمايا كه استادشا گردكو پيد ربا به اوراس طالب علم ك دېن ميس يې بات كى كىلم بور باب تويين ان بات به درباب تا بات كى كىلم بورباب تويين ان بات ان بات كى كىلم بورباب تويين ان بات به درباب بات بات بات كى كىلىم بورباب تويين ان بات عدم النوم فى اثناء الله رسى: دوران سبتى نه سوك دوت شوق كيما تحد مستعد موكر سن غفلت نه كر د دالا صطفاف صف بندى بونى چا بيسبتى مين انتشارى ساته نه بين د

الادب الثالث:ادب محتاب على ندلگائے، ليك كرنه بردها كى طرف بشت نه كرے مختلف فنون كى كتب مول او ترتيب كالحاظ ركھ

الادب الرابع: ادب مدرسه مركمان ك بادر ين شكايت ندمو، رولي يكاف والاور بإنى مجرف والكاور بإنى

الادب المحامس: عظمت استاد: استاذ واین لی باعث رحمت و برکت سمجے، اضل تو جس کو چاہے سمجھے کی استاد کے بارے میں اتا ہوکہ میرے لیے حضور اللہ کے علم کے حصول کا ذریعہ اور داستہ یہی ہیں۔ الادب المسادس: سسالادب بالانمة المفقهاء: یعنی احادیث پڑھتے ہوئے اگرکوئی حدیث کسی امام کے خلاف پڑجائے اور اسپر مطلع کردیا جائے تو اس امام کی سوءاد بی نہوائی شمان کے خلاف کوئی جملہ ذبان سے نہ نگلے۔ الادب المسابع: سدوروو شریف کی کثر ت رکھے صحابہ کرائم کے نام پرضی اللہ تعالی عنہ اور تا بعین و تبع تا بعین کے نام پردھمۃ اللہ تعالی عنہ اور تا بعین و تبع تا بعین کے نام پردھمۃ اللہ تعالی علیہ کے۔

الادب الثامن: استعانت من الله يعنى انبان افي قوت پر بروسه نه كرے بلكه الله عنى انبان افي قوت پر بروسه نه كرے بلكه الله عنى الله عنى

الادب التاسع: كتب مديث كوبا وضوء يره هاجائـ

الادب العاشر: استكبارنه و، امام بخاري في فرمايا كمستى اور مسكر علم يحروم ربت بير-

﴿ترجمة المؤلَّف﴾

ترجمة المولَّف: مولَّف سے مرادی ہے اسکے تعارف سے پہلے تب صدیث کا تعارف ضروری ہے جب کتب مدیث کا تعارف مروری ہے جب کتب مدیث کی متعددا قسام ہیں چندمشہوریہ ہیں ا . جامع ۲ . سنن ۳ . مسند ۲ . معجم ۵ . جزء ۲ . مفرد ک . غریب ۸ . مستخرج ۹ . مستدرک اللہ مسلسلات ۱۱ . مراسیل ۱۲ . اربعینیات ۱۳ . تعلیقات

جامع:وه كتاب ہے جس ميں تفيير ،عقائد، آ داب، احكام ،منا قب،سير فتن ،علامات قيامت وغيرها برقتم كے مسائل كى احاديث مندرج ہوں _ كما قيل

سیر آداب و تفسیر و عقائد فتن احکام و اشراط و مناقب جیے بخاری اور تر ندی ـ

مسنن: وه كتاب بي جس مين احكام كى احاديث الوابِ فقد كى ترتيب كے موافق بيان ہوں، جيسے سنن الى داؤد، سنن نسائى، سنن ابن ماجه۔

مسند: مده کتاب ہے جسمیں صحابہ کرام کی ترتیب رہی یا ترتیب حروف ہجایا تقدم وتأخر اسلامی کے لحاظ سے احادیث ندکور ہوں جیسے مسند احمد۔

معجم: وه كتاب ہے جسكے اندر وضع احادیث میں تربیب اساتذه كالحاظ ركھا گیا مواور تربیب كی وہی تین قسمیں اوپروالی ہیں جیسے جم طبرانی۔

جزء:وه كتاب ب جسمين صرف ايك بى مسلدكى احاديث يك جا جمع كردى كئى بول جيسے جزءُ القرا ة وجزءُ رفع اليدين للبخارى.

مفود:وه کتاب ہے جسمیں صرف ایک شخص کی کل مرویات مذکور ہوں۔

غریب: وہ کتاب ہے جسمیں صرف ایک محدث کے متفر دات جو کسی شخ سے ہیں وہ مذکور ہوں۔

هستخوج: وه کتاب ہے جسمیں دوسری کتاب کی حدیثوں کی زائد سندوں کا استخراج کیا گیا ہو جیسے مستخرج ابوعوائے۔

هستلار ک:وه کتاب ہے جسمیں دوسری کتاب کی شرط کے موافق اسکی رہی ہوئی حدیثوں کو پورا کر دیا گیا ہوجیے متدرک حاکم ۔

مسلسلات: وه كتب بين جن مين صرف احاديثِ مسلسله كوجع كيا گيا بواور حديث مسلسل اس حديث كو كيم بين جسكى سند كتم ام روات جوكسى وصف مين شريك بول يا متفق بول _

مر اسيل: وه كتب جن مين صرف مرسل احاديث كوجع كيا كياموجه مراسل الي داؤدً

اربعین: جن کت میں چالیس احادیث کوجمع کیا گیا ہوجے ہمارے ہاں چہل حدیث کہتے ہیں۔

تعليقات: وه كتب جن مين روايات كو بلا سند ذكر كيا جائے خواه صحابی مذكور مويانه موجيے مصابيح النة اور مشكوةِ المصابح۔

اب ہم کہتے ہیں کہ بخاری شریف اور ترندی شریف جامع ہے البتہ مسلم شریف کے جامع ہونے میں اختلاف ہے لیکن رائح یہی ہے اختلاف ہے لیکن رائح یہی ہے کہ بیجا معنہیں ہے کیونکہ کتاب النفیر بہت مختصر ہے پھرسب سے زیادہ مقبول صحاح ستہیں جوزیردرس ہیں۔

﴿بخارى،مسلم،ابوداؤد،نسائى،ترمذى،ابن ماجة

﴿مراتبِ صحاحِ سته ﴾

اس سے پہلے اصحاب صحاح ستہ کی شرا کط معلوم ہونی جائیں۔راویوں کی اجمالی طور پریانچ قسمیں ہیں۔

الاول: كامل الضبط والاتقان وكثير الملازمة لشيوخهم.

الثاني: كامل الضبط وقليل الملازمة.

الثالث:ناقص الضبط وكثير الملازمة .

الرابع:ناقص الضبط وقليل الملازمة .

الخامس:ناقص الضبط وقليل الملازمة مع الجرح.

اب ہم کہتے ہیں کہ!

ا . امام بخاری :..... پہلی تم کراویوں کی احادیث بالاستیعاب لیتے ہیں اور دوسری قتم سے انتخاب کرتے ہیں۔

٢ . اهام مسلم : بهلى دوقسمول سے بالاستیعاب لیتے ہیں اورتیسری قسم سے انتخاب کرتے ہیں۔

٣. امام نسائي : بهلى تين قسمول سے بالاستيعاب ليتے بين اور چوشى قسم سے انتخاب كرتے بين ـ

سم. اهام ابوداؤر : بهلى عارقهمول سے بالاستیعاب لینے بین اور یانچویں شم سے انتخاب کرتے ہیں۔

۵. امام ترمذی اور امام ابن ماجه : سبتم کی روایتی لیتے بیں لیکن فرق یہ ہے کہ امام

تر فدی درج عدیث بیان کردیت میں کہ بیمدیث کس فتم کی ہے لیکن امام ابن ماجة بیان نہیں کرتے۔

تو معلوم ہوا کہ پہلا مرتبہ بخاری شریف کا ہے دوسرامسلم شریف کا ہے تیسرا نسائی شریف کا ہے اور چوتھا ابوداؤد کا اور پانچواں ترفدی شریف کا اور چھٹا ابن ماجہ کا ہے۔

﴿اقسام محدثين﴾

محدثينً پانچفتم پر ہیں۔

(1) طالب: على الكابود بجوحديث حاصل كرني مين لكابور

(۲) **شیخ**: شیخ کواستاداورمحدث بھی بولتے ہیںاور بعض محققین کی رائے میہ ہے کہ محدث یا شیخ الحدیث اس

وقت تک ہو ہی نہیں سکتا جب تک کہاس کو بیس ہزاراحادیث مع سندومتن یا د نہ ہوں۔

(سم) حافظ: عافظ وه بجس كوايك لا كها حاديث مع سندوالفاظمتن يادمول

(٣) حجة: وه محدث جس كاعلم تين لا كها حاديث برمحيط مور

(۵) **حاکم**: وہ ہے کہ جتنی احادیث میسر آ سکتی ہیں اس کومع سندومتن ومع حالاتِ رواۃ یا دہوں۔

﴿مقاصدِ اصحابِ صحاح سته﴾

- ا مام بخاری: حدیثوں سے مسائل استباط کرتے ہیں اور اجتہادی تعلیم دیتے ہیں چنانچہ ایک ایک مدیث سے کئی کی مسائل متبط کرتے ہیں۔
- ٢. امام مسلم: اماديث كى تائد كى ليك كرت ساناد وكركرت بين تاكدهد يف صعيب مديث حن تك اور مديث حديث حديث حديث تك اور مديث حديث الغير وتك ين جائد
 - ٣. امام ترمذی : ندابب بیان کرتے ہیں اور انواع حدیث بھی بیان کرتے ہیں۔
 - م. امام ابو داؤ د : ائم مجهدین کے دلائل جمع کرتے ہیں۔
 - ۵. امام نسائی:عللِ مدیث بیان کرتے ہیں۔
- ۲. امام ابن ماجه : سب كى احاديث لات بين حلى كه خِعاف بهى لات بين تاكرسب قتم كى احاديث معلوم بوجائين -

تنبیہ: حضرات اساتذہ کے ہاں رائ ترتیب ہی ہے کہ پہلے تر ندی شریف پڑھائی جائے تا کہ فدا ہب معلوم ہوجائے ہیں پھر بخاری شریف تا کہ طرقِ استباط کا پہ پیل ہوجائے ہیں بھر بخاری شریف تا کہ طرقِ استباط کا پہ پیل جائے پھر سلم شریف تا کہ احادیث کی علل سامنے جائے پھر سلم شریف، تا کہ احادیث کی علل سامنے آ جائیں پھر ابن ماجہ شریف تا کہ نوادرات کا بھی علم ہوجائے پھر موطا امام مالک تا کہ آ ثار سے بھی تا ئید ہوجائے اور احناف کے لیے ان سے پہلے موطا امام محمد اور طحاوی شریف کا پڑھنا بھی ضروری ہے بلکہ آ ثار السنن اور اعلاء اسن بھی مصرونی جا ہے یا کہ مصحفر ہونی جا ہے یا

﴿مذاهبِ اصحابِ صحاح سته﴾

امام بخاری مجتمد ہیں بعض نے کہا شافعی المسلک ہیں لیکن راج یہی ہے کہ مجتبد ہیں البته ان کے بیان کردہ بہت سارے مسائل شافعی ہیں، امام سلم شافعی ہیں، امام ابن مسائل شافعی ہیں، امام سلم شافعی ہیں، امام ابن ملک شافعی ہیں، امام ابوداؤڈ کے متعلق راجے یہی ہے کہ خبلی ہیں (خرااسوں)

مراتب بخاری و مسلم: اساس میں بحث ہوئی ہے کہ افضل کوئی کتاب ہے، جمہور ائمہ ومحد ثین ہو جماری شریف کو بہلا درجہ دیے ہیں کین بعض حضرات نے مسلم شریف کو افضل کہا ہے چنا نچہ ابوعلی نمیٹا پوری کہتے ہیں ما تحت ادیم السماء اصح من کتاب مسلم تو جمہورا سکے جواب میں کہتے ہیں کہ اس سے زیادہ سے زیادہ بخاری شریف کی تقدیم کی نفی ہوتی ہے مسلم شریف کی تقدیم فابت نہیں ہوتی اسطر ح مسلم بن قاسم قرطبی کا قول بخاری شریف کی فوقیت معلوم ہوتی ہے اسکا جواب ہے کہ بیقول بھی جمہور ہے کہ میقول بھی جمہور کے لیم یصع احدم شلم اس سے بھی مسلم شریف کی فوقیت معلوم ہوتی ہے اسکا جواب ہے کہ بیقول بھی جمہور کے قول کے معارض نہیں ہے کیونکہ جمہور جو پہلا مرتبہ بیان کرتے ہیں وہ صحت کے لحاظ سے ہے اور مسلم بن قاسم کی کا قول حسن صناعت کے لحاظ سے ہے فلا تعارض ، چنا نچہ حافظ عبدالرحن بن علی ربیع یمنی شافعی فرماتے ہیں۔

| يقدم | ذين | ای | وقالوا | لدى | 4 | ع قوم في البخاري ومسلم | تناز |
|------|---------|-----|---------|-------|---|------------------------|------|
| مسلم | الصناعة | فسن | اق في - | كما ف | | ، لقد فاق البخاري صحة | فقلت |

اى طرح ايك اورمقوله ب قال فالمسلم افضل قلت فالبخارى اعلى قال التكرار فيه قلت التكرار الله قلت التكرار احلى ـ الحاصل: اصح الكتب بعد كتاب الله البخارى

سوال:اندازہ ہوتا ہے کہ فقہ حنی کا مدار سیح احادیث پڑئیں ہے کیونکہ صحاح ستہ میں ایکے دلائل بہت کم ہیں تو فقہ حنی کامدار ضِعاف پر ہوا؟

جوابِ اول: یہ بات توضیح ہے کہ صحاح ستہ میں اکثر احادیث صیحے ہیں لیکن یہ دعوٰ ی صیحے نہیں کہ صحاح انہی میں مخصر ہیں اگر دلائل انمیں نہ ہوں تو یہ دلائل کے عدم صحت کی علامت نہیں بن سکتی۔

جوابِ ثانی:علامه ابن حجر گرماتے ہیں کہ بہت ساری ضعاف مِحتف بالقرائن ہونے کی وجہ سے صحاح سے دارجے ہوجاتی ہیں تو ہوسکتا ہے کہ فقہ فقی کا مدار ایسی احادیث پر ہوجو کہ مِحتف بالقر ائن ہوں۔

جوابِ ثالث: يضروري نهيل كه برضيح حديث قابلِ استدلال بهي بوكيونكه منسوخ بهي تو بوسكتي باورامام

اعظم ك بارك من آتا به اعلم من الناس بالناسخ والمنسوخ البذا احاد يث صحاح سے استدلال ندكرنا قابل اعتراض بات نبیں۔

جواب رابع: صحت اورضعف اجتهادی چیز ہے کی صدیث کی صحت اورضعف کے بارے میں محدث کا بنااجتها وہوتا ہے اور ایک محدث کا اجتمادہ وہ تا ہے اور ایک محدث کا اجتمادہ وہ تا ہے اور ایک محدث کا اجتمادہ وہ تا ہے وہ اس کے دلیار نہیں ہے ماص کر جبکہ امام صاحب کا زمانہ حضور علی ہے دیارہ قریب بھی ہے اور ایک بارے میں تابعی ہونے کا قول بھی ہے لہذا صحاح ستہ میں دائل کا کم ہونا نہ بہ خق سے ضعف کی دلیل نہیں ہے۔ جو اب خاصس: سسن فقہ فقی پر احتراض کہ صحاح ستہ میں اسکے دلائل نہیں جی قرین قیاس بی نہیں کے دکہ فقہ فق تواصحاب صحاح کے دور سے بہلے بی مدون ہو چکی تھی اور یہ بعد میں مدون ہوئیں۔

﴿ترجمة المولَّف ﴾

آ يكانام محر، والدكانام اساعيل ،كنيت ابوعبدالله بسلسلينب الطرح با

المحمد بن اسماعيل بن ابراهيم بن مغيرة بن بردزبه جعفي بخاري

بو د زبد: بود زبد بیفاری لغت کالفظ ہاسکامنی ہوتا ہے کاشکار۔اسکے متعلق تقری ہے کہ بیمسلمان ہیں ہوئے سے جوی فرب پرفوت ہوئے چر مغیرہ بیما ن جعفی (جو کہ بخارا شہر کے والی سے) کے ہاتھ پرمسلمان ہوئے اس لیے امام بخاری کو جھی کہا جاتا ہے لینی حضرت یمان بعظی کے مولائے موالا قبیں (جس کے ہاتھ پرکوئی کافرمسلمان ہوجائے اوران دونوں میں عقدموالا قاہوجائے کرزندگی میں ایک دوسرے کی مدوکر یکھے اور مرنے کے بعد وارث بن جا کیں گے وان دونوں کو ایک دوسرے کا مولائے موالا قاکمتے ہیں) امام بخاری کا اپنا قبیلہ جعلی نہیں ہے۔

امام بخاری کے داداحفرت ابراہیم کے متعلق حافظ ابن جموع تقلائی افرماتے ہیں وا ماولدہ (ای ولد المعیرة) ابراہیم ہن المعیرة فلم نقف علی شنی من احبارہ امام بخاری کے دالداسا عیل استح علاء میں تصابات نے کاب الثقات میں اٹکا ذکر کیا ہے چنانچ فرمایا اسماعیل بن ابراهیم والد البخاری یروی عن حماد بن زیدو مالک ادرامام بخاری نے تاریخ کیر میں ذکر کیا ہے اسماعیل بن ابراهیم بن المعیرة سمع من مالک و حماد بن زید و صحب ابن المعبار ک ادر صرت اساعیل کے تقلی کا بیمال تھا کہ اپنی وفات کے دقت فرمایا لااعلم فی جمیع مالی در هما من شبهة.

﴿ولادت و وفات ﴾

امام بخاری کی ولادت عدة المبارك كردن الثوال ١٩٨٥ ه جعد كي نماز كے بعد بخارا ميں موئی _اوروفات

خرشک جوسم قند کے مضافات میں ایک گاؤں ہے شنبہ کی رات جو کہ عید الفطر کی بھی شب تھی ۲۵ میں ہوئی کل عمر ۱۲ سال ہے امام بخاریؓ کی ولا دت ادروفات کی تاریخ اور کل عمریا دکرنے کے لیے بید وشعر کافی ہیں۔

| التحرير | مكمل | الصحيح | جمع | ومحدثا | حافظا | البخارى | کان |
|---------|-------|--------|------|--------|-------|---------|--------|
| فی نور | انقضى | حميد و | فيها | عمره | ومدة | صدق | ميلاده |

ائے والد ماجد بچپن میں ہی فوت ہو گئے تھے انکا آبائی وطن بخاراہے اور امام بخاری کی بینائی بچپن میں جاتی رہی والدہ محترمہ بہت روروکران کے لیے دعاکرتی تھیں ایک مرتبہ خواب میں سیدنا ابراہیم کی زیارت ہوئی فرمایا اللہ تعالی نے تیری دعاکی وجہ سے تیرہ بے بچے کی آئکھیں واپس فرمادی ہیں صبح اٹھکرد یکھا تو آئکھیں درست تھیں بینائی واپس آپکی تھی۔

﴿طلبِ علم﴾

ابوجعفرور ال نے امام بخاری سے سوال کیا کیف کان بدہ امو ک جواب میں فرمایا کہ جب میں کمتب میں جا تا تھا ای وقت مجھے حفظ حدیث کا الہام کیا گیا اسوقت میری عمروں سال تھی یا پچھ کم ، سولہ سال کی عمر میں ابن مبارک، وکیج "اور اصحاب الرّائے کی کتابیں یاد کرلیں تھیں۔ ۲۱ھ جبکہ امام بخاری گی عمر سولہ برس کی ہوئی تواپنے والہ ماجد کی پاک کمائی سے اپنے بھائی احمد اور اپنی والہ ہ کے ہمراہ آج گوتشریف لے گئے پھر اساتذہ بجاز سے حدیث حاصل کرنے میں تا خیرواقع ہوئی ای لیے آپی والہ ہ محتر مداور بھائی صاحب واپس آگئے اور آپ بغرض تعلیم و بین تھم رکئے۔ جس جگہ آپ پڑھتے تھے وہاں کھانے کا انتظام نہیں تھا طلبہ باری باری مز دوری کرتے اور ملکر کھاتے ایک دن امام صاحب نے فر مایا جس دن مزدوری کی باری ہوئی ہوں کا انتظام نہیں تھا طلبہ باری باری مزوری کرتے اور ملکر کھاتے ایک دن امام صاحب نے کہا پھر کھانا بھی نہیں سے گا، چنا نچ کی دن ہو کے رہاں وقت کے طیفہ کوخواب میں حضور علیق کی کڑیا دسر سے طلباء نے کہا بھر کھانا بھی نہیں ، وہ خلیفہ بہت پریثان بھو کے رہایا کہ وفلاں جگہ طالب علم پڑھتے ہیں وہاں پیتہ کرلوں تفشیش کی تو پیتہ چلا کہ محمہ بن اساعیل بھو کے ہیں چنا نچہ خلیفہ وقت نے سب طلباء کا وظیفہ مقرر کر دیا۔

آب نے ایک ہزاراتی (۱۰۸۰) اساتذہ سے علم حاصل کیاان میں ایک بھی ایبانہ تھا جو محدث نہو۔

﴿تلامذه

علامهابن حجرٌ نے فقل کیا ہے کہ آ کیے تلانہ ہ کی تعداد تقریبانوے ہزار (۹۰،۰۰۰) ہے۔

﴿تصانیف﴾

الهاره سال كي عمر مين ايك كتاب (١)قضايا الصحابة والتابعين تصنيف فرمائي (٢)اسك بعدتاريخ كبير

تعنيف فرمال اورجمي كح تصانيف بين ٣٠ جزء رفع اليلين في الصلاة ٨٠ جزء القراءة خلف الامام ٥٠ الادب المفرد ٢. كتاب الصعفاء وغيره اورسب عياجم كتاب ، بحارى شريف بيركتاب وليرال مين كمل بوئي ١١٥٥ ه میں شروع ہوئی اور مہم و میں ختم ہوئی۔عام طور سے بخاری شریف کے متعلق دوشم کی روایات ملتی ہیں اول یہ کے ریاض الجنہ میں عسل كرككهي دومرى روايت بين كحطيم مل كمى بحردومرى طرف بيآتا عك كسوله سال مين تعنيف كمل موكى اورسوله سال تو مكه كرمداور مدينه منوره مين قيام البت نبيس ان روايات مين تطبيق اس طرح ب كدر اجم توسار ي كيسار ي ايك بي مرتبه ردضة مطبره على صاحبها الصلوة والتحية مين بيزكر ككصاس كے بعد جتني احاديث ملتي رہيں الكو جھانث جھانث كركھتے رہے۔ باقی رہا حطیم والامعاملہ تو خودام بخاری فرماتے ہیں کہ میں نے بخاری شریف تین بارتصنیف کی دراصل مصنفین کا قاعدہ ہے کہ جب کوئی تصنیف مہتم بالثان ہوتوبار باراسین نظر ہوتی ہے توممکن ہے کہ ایک مرتبہ نظر ثانی خطیم میں کی ہوبعض کہتے ہیں کہ ابواب سلے لکھاوراحادیث بعدیں تلاش کیں اور بعض کہتے ہیں کہ احادیث پہلے متی تھیں پھر ابواب قائم کرتے تھے ، ابتلاء اول: بخارا کے امیر خالد بن زہری نے امام بخاری کے پاس پیغام بھیجا کہ میرے بیج آ میکے ماس حدیث بر هنا جاہے ہیں کی وقت آ کرا کو حدیث پڑھادیا کریں۔امام صاحب نے جوابا کہلا بھیجا کہ میں نے حدیث پاک وذلیل نہیں کرنا جس نے پڑھنا ہومیرے یاس آ کر پڑھ لے۔ امیر نے اس کو منظور کرلیا ادرکہا کہ میں بچوں کے ہمراہ ضرور حاضر ہونگا لیکن شرط بیہے کہ اس وقت دوسرے لوگ وہاں تعلیم کے لیے موجود نہ ہول صرف میرے *اڑے و*ہاں تعلیم حاصل کرینگے۔ امام صاحب ؓ نے اسکوسی منظور نہیں فرمایا اور کہاسب بچے پڑھنے میں برابر ہیں امیر کواس بات برغصر آگیا اور اس نے امام صاحب کو بخارات نكل جانے كاتھم ديديا، چنانچ امام بخارى ككل كئے اور نكلتے وقت دعاكى اے اللہ جس طرح اس امير نے مجھ كونكالا بت مجى اس كوذليل كركاس شهرسے نكال دے چنانچيايك ماہ سے پہلے ہى اس امير سے كوئى حاكم املى سى غلطى كى بناء ير ناراض ہوگیااوراسکومعزول کردیاور حکم دیا کہاس معزول امیرکوکالامنہ کر کے گدھے برسوار کرا کر پورے شہر میں چکر لگواؤ پھر شہر بدر کردو سی ابتلاء ثاني: دوسراابتلاءيه واكمسكفل قرآن من امام حدّ كيابتلاء بين آياته الم احدّ فرماياتها كلام الله غیر محلوق توانبیں کوڑے کھانے بڑے لیکن امام حمدے ٹاگردوں نے غلوکیااور کہنے لگے کہ قرآن یاک کے بیکاغذاور گتے بعى قديم بين احرام بخاري فتوى ديد يالفظى بالقرآن مخلوق لعنى يجوبم زبان عقرآن يرصح بين يالفاظ تعلوق ہیں البت قدیم مفت باری ہاس لیے حنابلدان کے خالف ہو گئے ان کوگالیاں دیتے تھے بہر حال قصد یہ ہوا کہ جب بخارا ے نکلے توسم قند کا ارادہ کیارات میں خرتک مقام پر رمضان کی وجہ سے تھم رکئے وہاں آپ کو خبر پینجی کے سم قند میں حالات آپ كموافق نبيل بي الروت آپ في وعاكى اللهم ضافت على الارض بما رحبت فاقبضني اليك بيدعا آپ في اخیری عشره میں فرمائی اور بیقبول بھی ہوگئی اور عبد الفطر کی رات میں دفات ہوئی اور کانی عرصہ تک قبرے خوشبوآتی رہی ی

ل تقرير بخاري ج اص ٣٦ م مقدمه في الباري ١٥٨٥ سيدس بخاري م عرج ا

﴿ امام بخاري كي قوتِ ياداشت ﴾

یا مقدمه فتح الباری س ۱۹۳ می تقریر بخاری س ۳۷

صدیث ہوں نہیں بلکہ ہوں ہے یہ کہ کراسے سے طرح صدیث پڑھ کرسنادی اور جوسند جس متن کے ساتھ تھی اسکوای کے ساتھ ذکر کیا المی طرح دسول حدیثیں ای ترتیب کے ساتھ جس ترتیب سے اسے سنائی تھی ایک ایک کر کے سنایا اور ہر ہر صدیث میں اسکی غلطی بتا کر ساری حدیثیں تھے سنداور سے متن جوڑ کر سنادیں پھر دوسر شے خص کی طرف متوجہ ہوئے اس کے ساتھ بھی بہی معالمہ کیا تی کہ دسوں آ ومیوں کے ساتھ اس طرح معالمہ کیا اس پرسپ علاء بھر ثین اور مشائخ ونگ رہ گئے او رام صاحب کا بڑا کا رنامہ صرف ہیں رامام صاحب کا بڑا کا رنامہ صرف ہیں نہیں کہ انہوں نے بدلی ہوئی حدیثوں کو سے کھو حدیث سے کہ سوحدیثیں ایک بی مجلس میں صرف ایک بارسکر ایس محفوظ کر لیس کہ نہ سندوں اور نہ متنوں میں فرق آیا اور نہ ترتیب میں ﴿ ذٰلِک فَضُلُ اللّٰهِ مُن یَشَادَه ﴾ یا اور سام صاحب کی وہ مجھی جب آ کی داڑھی کا ایک بال بھی سفید نہا۔

﴿وجهِ تاليف،

امام بخاری کوخواب میں حضور علیہ کی زیارت ہوئی خواب میں دیکھا کہ میں حضور علیہ کے سامنے کھڑا ہوں اور پیکھے کے ذریعے آپ علیہ کے بدن مبارک سے کھیاں اڑا رہا ہوں اپنے استاد آئی بن را ہویہ سے ذکر کیا تو انہوں نے دریا کا کہ کسی وقت حضور علیہ کی احادیث کے ذخیرہ سے ضعیف اور موضوع احادیث کو علیحدہ کروگے۔ چنانچہ اسکے بعد امام بخاری نے اپنی میں کتاب 'بخاری شریف' تالیف فرمائی یہ ای خواب کی مناسبت سے حضرت مولانا محمد یوسف صاحب بنوری کا خواب بھی من لیس فرمایا کہ میں نے خواب میں دیکھا کہ حضور علیہ نے کی کی اور میں اس سے کھانے کے ذرات چن رہا ہوں چرچودہ سال بعد جب' معارف اسن 'کھی تو تعبیر سجھ میں آئی۔

﴿عددِ احادیث بخاری شریف﴾

امام بخاری نے چھ لاکھ احادیث سے انتخاب کر کے بخاری شریف کھی اب منتخب روایات کی تعداد میں اختلاف ہے امام نووی فرماتے ہیں کہ کل روایات، مکررات کو شار کر کے سات ہزار دوسو چھتر (2120) ہیں اور مکررات کو حذف کو حذف کر کے ساڑھے تین ہزار ہیں اور علامدا بن ججر فرماتے ہیں کہ کل احادیث نو ہزار بیاس ہیں اور مکررات کو حذف کر کے صرف ڈھائی ہزار رہ جاتی ہیں ،امام بخاری نے ایک ایک حدیث پر پندرہ پندرہ سولہ سولہ ابواب قائم کئے ہیں سے محرار تو عبث ہوتا ہے اس لیے محرار نہیں ہونا جا ہے تھا؟

جو اب: ایک تکرار حقیق موتا ہے اور ایک تکرار صوری موتا ہے تکرار حقیق کہتے ہیں جو تکرار بلافائدہ مواور جو تکرار تاکیدیا تاسیس کے لیے مووہ تکرام صوری موتا ہے تکرار حقیق تو ممنوع ہے تکرام صوری ممنوع نہیں موتا یہاں تکرام صوری ہے اور میمنوع نہیں ہے۔

ل باره ۲۷ سورة الحديد آيت ۲۱ مورس بخاري س سر بخاري جاري خاص ۴۷ مالا مام البخاري وهيحد ١٨٠ سي تقرير بخاري حاص ۴۴ مالا مام البخاري وهيجد س ١٨٦

﴿ثلاثياتِ بخارىً﴾

ا بنات ، بخاری کی وہ روایات ہیں جن میں امام بخاری اور حضور علی کے درمیان صرف تین واسطے ہیں ایک نتیج تابعی اورایک صحائی۔ بخاری شریف میں بیٹلا ثیات کل بائیس ہیں۔

| | -0:0:0 | ىيەنا ئىلادرانىيە خابخارق كىرىقىت.ش ئىدىلا خات | 10.00 |
|--------------------|--------------------------|---|-------------|
| صفحة ثلاثيات بخاري | راوی | باب | نمبرشار |
| ri. | كى بن ابرا بيمٌ | اثم من كذب على النبي غلطية | f |
| 41 | كى بن ابرا بيمٌ | قدر كم ينبغي ان يكون بين المصلى والسترة | ۲ |
| 4 | كمي بن ابرا ميمٌ | الصلواة الى الاسطوانة | ۳ |
| ۷٩ | كى بن ابرا ہيمٌ | وقت المغرب | ٠, ١ |
| TOL | ابوعاصم الضحاك بن مخلد | اذا نوی بالنهار صوماً | ۵ |
| ۲۲۸. | کمی بن ابراہیم | صوم عاشوراء | Υ |
| r +0 | کی بن ابراہیمؒ | اذااحال دين الميت على رجل جاز | ۷ . |
| ٣٠٦ | ابوعاضم الضحاك بن مخلدٌ | من تكفل عن ميت دينا فلس له أن يرجع | A |
| ٣٣٦ | ابوعاصم الضحاك بن مخلدٌ | هل تكسر الدنان التي فيها الخمر وتخرق الزقاق | 9 |
| 727 | محمر بن عبدالله انصاري | الصلح في الدية | |
| MID | کی بن ابراہیم | البيعة في الحرب على ان لايفروا | JI . |
| ٣٢ | سمى بن ابراميم | من رأى العدو فنادى بأعلى صوته ياصباحاه | II" |
| 0.1 | عصام بن خالدٌ | صفة النبي عُلِينًا الله | I m |
| Y+0 = | تمی بن ابراہیم | غزوه خيبو | الد |
| 411 | ابوعاصم الضحاك بن مخلدٌ | بعث النبي مُلْكُ السامة الخ | 10 |
| יין אורץ | محد بن عبدالله انصاري | يَاايُّهَاالَّذِيْنَ امَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ الآية | -14 |
| APY | محی بن ابراہیم | آنية المجوس والميتة | 14 |
| ۸۳۵ | ابوعاصم أكضحاك بن مخلدٌ | مايوكل من لحوم الاضاحي وما يتزودمنها | JA |
| 1+14 | كى بن ابراجيمٌ | اذا قتل نفسه فلادية له | 19 |
| 1+1/ | مجمه بن عبدالله انصاري | السن بالسن | Y• • |
| 1.4. | ابوعاصم الضحاك بن مخللةً | من بایع مرتین | 1 1 |
| 11+14 | خلاد بن کیجی | وكان عرشه على المآء | |
| | 121. | 7 | |

خلاصه: بخاری شریف میں فدکور بائیس ثلاثیات میں سے امام بخاریؒ نے کی بن ابرائیم التوفی ۲۱۵ ہے گیارہ روایات لی بیں جو کہ بالتر تیب فدکور بیں (۱) ص ۲۱۸، (۲) ص ۱۵، (۵) ص ۲۵، (۵) ص ۲۵، (۵) ص ۲۵، (۵) ص ۲۵، (۵) ص ۲۰۵، (۹) ص ۲۰۵، (۱) ص ۲۰۵، (۱) ص ۲۰۵، (۱) ص ۲۰۵، (۱) ص ۲۰۵، اور ابوعاصم الضحاك بن مخلد (التوفی ۲۱۲ه) سے چوروایات ذكر کی بیں جو کہ بالتر تیب فدکور

یں۔(۱)ص۸۵،(۲)ص ۲۰۰،(۳)ص ۲۰۰،(۳)ص ۳۳، (۳)ص ۱۱۲، (۵)ص ۸۳۵، (۲)ص ۲۵، اور محد بن عبدالله انصاری (التوفی ۲۱۵ه) سے تین روایات لی بیں جو کہ بالتر تیب فرکور بیں۔(۱)ص ۳۷۲، (۲)ص ۲۲۲، (۳)ص ۱۰۱ دفرکورہ بالا تینوں راوی حنفی بیں پس احناف نے قبل کردہ ثلاثیات کی تعداد بیس ہوئی، جب کے عصام بن خالد سے صرف ایک روایت جو کہ ثلاثیات میں سے تیر ہویں (ص۲۰۵)روایت سے اور خلاد بن کی (اله توفی ۲۱۳ هه) سے بھی صرف ایک روایت جو کہ ثلاثیات میں سے آخری روایت (ص۱۰۰) منال کی ہے۔

﴿بيس ثلاثيات ميں حنفی اساتذہ﴾

امام بخاری کی ثلاثیات میں ہے ہیں میں اساتذہ کرام حفی ہیں جن کی تفصیل ہے۔

(١) الضحاك بن مخلدابو عاصم النبيلُ (التوفي ٢١٢هـ):.....روى عنه البخاري سنصروايات من الثلاثيات.

(٢) مكى بن ابراهيم البلخيّ (التوفي ٢١٥هـ):اخرج عنه البخاريّ احد عشرة روايات من الثلاثيات.

(س) محمد بن عبد الله بن المهندى الانصارى (التونى ١٥٥هـ):قلت اخرج عنه البخارى ثلاث روايات من الثلاثيات ل بيس ميس تو اسا تذه حنى بيس باتى وو كے متعلق بي نبيس كها جاسكتا اميد ہے وہ بھى حنى موسئے ليكن چونكه حنفيہ نے درايت يرزياد ہ توجہ دى ہے اس ليے محدث نبيس كہلائے۔

رواۃ ملا ثیات کے علاوہ بھی امام بخاری کے بے شاراسا تذہ اور اسا تذہ الاسا تذہ خفی ہیں جن میں سے چند کے

اساءگرامی درج ذیل ہیں۔

| كيفيه | باب | وفات | راوى كانام | نمبرثثار |
|--|---------------------------------------|---------------|---------------------------|------------|
| فيخالثن | باب المسح على الخفين | التوفى الماه | عبدالله بن مبارك أ | 1 |
| نتخ | باب بيع النخل قبل ان يبدو صلاحها | التوفى االاه | معلى بن منصور | ٠, |
| | باب في فضل استقبال القبلة | التوفى ٢٢٨ ه | نعيم بن حمادً | ۳. |
| فيخالثغ | باب في عمرة القضاء | التوفى٢١٦ھ | حسين بن ابراجيمٌ | اب |
| ا الله الله الله الله الله الله الله ال | باب المضمضمة والاستنشاق في الجنابة | التبوفى ٢٢٢ه | عمر بن حفص بن غياثٌ | ۵. |
| فيخ الثيخ | السوال باسماء الله والاستعادة بها | التوفى ١٨١ه | فضيل بن عياضٌ | ۲ |
| فخ | باب في مناقب الحسن والحسين | التوفى ٢٣٣ه | يجي بن معين " | 4 |
| شيخ الثيخ | باب المضمضمة والاستنشاق في الجنابة | التوفى ١٩١٨ | حفص بن غياتٌ | ٨ |
| فيخ الثيخ | باب قوله وَيَسْأَلُونكَ عَنِ الرُّوُح | التوفى الااھ | زائده بن قدامة | 9 |
| فيخالثن | باب قصة وفدطي | التوفى ١٤١١ه | ز ہیر بن معاویی | : • • |
| هيخ الثين ع | باب الأذان بعد ذهاب الوقت | التوفي ٩٥ اه. | محمه بن فضيلٌ | 11 |
| فيخ الثيخ | باب التبرز في البيوت | التوفي ٢٠٧ه | יֵי <i>אַ</i> יִשׁ אְרפּט | |
| | | | | |

ل مقدمه لامع الدراري سمطبوعه ايكيا يمسعيد كميني

الله ثيات برستقل كتابين كلهين او رستقل شروحات (مثلا: انعام المنعم البارى بشرح الله ثيات البخارى مطبوعه انصار السنة المحمدية بمعر عابدين ، مؤلفه مولا ناعبدالصبور رحمة الله عليه) اورتراجم كلهيه جب الله ثيات كابيرحال بي قنائيات كاورجه تواس سي بعلى بزا بوگا اورفقه خفى كامدارى ثنائيات يرب توفقه خفى كتنى مضبوط فقه بوكى ؟ ل

﴿قال بعض الناس﴾

اس سے اکثر امام بخاری امام صاحب ومراولیتے بیں اور احناف پر اعتراضات کرتے بیں ان اعتراضات کی وجہ سے بعض لوگ بیتا ثر دیتے بیں کہ امام بخاری امام اعظم کے متعلق اچھا گمان نہیں رکھتے تھے اس لیے نام نہیں لیتے کیونکہ قال بعض الناس تو تقیم شان کے لیے ہوتا ہے لیکن بیغلط ہے کیونکہ امام بخاری فایت تقوی کی وجہ سے نام نہیں لیتے بااس وجہ سے کہ امام اعظم کے سے نام نہیں لیتے بااس وجہ سے کہ امام اعظم کے ساتھ تو چالیس آ دمیوں کی جماعت تھی ہرا کیکانام لینامشکل تھا توقال بعض الناس کہدیا۔

سوال:امام ابوطنف گاتی تروید کول کرتے ہیں؟

جواب: يهمى غايت تقلى كى بناء پر ہے كہ جب كوئى بات پنجى اور دين كے خلاف نظر آئى تو فورا تر ديدكر دى ليكن آگے چل كر پنة چل جائيگا كه يا توضيح مذہب نہيں بہنچا تھا اورا گرضيح پہنچا تھا تو اسكو سمجھ نہيں۔

﴿نسخ بخاری﴾

امام بخاریؓ کے نوے (۹۰) ہزار تلانہ ہیں جنہوں نے بخاری شریف کی ساعت کی۔ بخاری شریف کے سنخ انیس کے قریب ہیں جس میں سے مشہور نننخ مندرجہ ذیل احباب کے ہیں۔

(۱) محمدٌ بن یوسف فر بری (۲) ابراہیمٌ بن معقل نستی (۳) حمادٌ بن شاکر (۴) بزدوی (۵) حافظ شرف الدینٌ یو نمینی (۲) الاصلی (۷) کریمة بنت احمدٌ ـ زیاده مشهور اور متداول پبلانسخه ہے انگا پورا نام محمدٌ بن یوسف بن مطربن صالح فر بری کہلاتے ہیں ۔ فر بری طرف منسوب ہونے کی وجہ سے فر بری کہلاتے ہیں ۔ فر بر بخارا سے ۲۵،۲۰ میل دور ایک گاؤں کا نام ہے انکی ولادت ۱۳۳ ھی ہے اور وفات ۳۲۰ ھی ہے آخری عمر ہیں دومر تبہ بخاری شریف سنی ایک مرتبہ ۲۵۲ ھیں پور ۲۵۶ ھیں اور چونسٹھ سال خود بخاری شریف پڑھائی اس لیے یہی نسخہ مشہور اور متداول ہے س

﴿شروح بخاری﴾

بخاری شریف کی متعدد شروح لکھی گئی ہیں جن میں سے چند درج ذیل ہیں۔ عمد ۃ القاری المعروف بعینی از علامہ بدرالدین عینیؓ ۔

- ۲ " فق البارى" ازعلامه ابن مجرعسقلا في
- ٣ " "شرح قسطلاني" ازعلامه شهاب الدين احمر بن محمرً
 - ۴ . . . د فيض البارئ از علامه انورشاه تشميري -
- ۵۔ "مقدمة بسير القارئ ازمولا نانور الحق صاحب يشخ عبدالحق محدث دالوي كصاحبزاد يوسي يقريماري النام من -
- ٢ " لامع الدرارى على جامع البخارى" از حضرت مولانا رشيد احد كنگورئ بيرحاشيه ب اسكو حضرت مولانا يجي
 - صاحب نے جمع کیااور شیخ الحدیث مولا نامحمرز کریاصاحب نے اسکی تعیم اور تشریح کی ہے۔

﴿حكم البخارى الشرعي علماً وعملا ﴾

اگر کی جگہ صرف بخاری ہوتو اسکا پڑھنا واجب عین ہے اور اگر دوسری کتب بھی موجود ہول تو اسکا پڑھنا واجب کفایہ ہے۔اسپرعمل کرنا واجب ہے جبکہ اسکے معارض کوئی روایت یا آیت نہ ہوجب کہ ہم اسکی بعض روایات پر جوئل نہیں کرتے ایکے معارض روایات موجود ہونے کی وجہ سے ل

﴿اسم البخارى﴾

(الجامع المسندالصحيح المختصر من اموررسول الله عليه وسننه وايامه ٢٠٠٠)

﴿اشاعة الحديث في البلاد الاسلامية

دوصد ہوں تک تو حدیث کی نشر واشاعت کے تذکر ہے جاز مقد سیں ہوتے رہے اسکے بعد تیسر کی اور چوتھی صدی تک کوفہ اور عراق علم حدیث کا مرکز ہے رہے اسکے بعد خراسان ،سمر قند ، اور بخار اوغیرہ کا علاقہ علم حدیث کا مرکز بنار ہا اور چھٹی صدی تک یہی علاقہ مرکز رہا پھر فقہ تا تار کے بعد مسلمانوں کوزوال آگیا کتب فانے جلادئے گئے چھ علاء ہجرت کر کے شام چلے گئے پھر نویں صدی تک شام میں علم حدیث کا چرچا رہا لیکن ہندوستان میں اس دوران صدی کی نشر واشاعت کا کوئی عام معمول نہیں تھا علاء زیادہ ترمنطق ، فلفہ اور فقہ خفی پڑھاتے تھے دسویں صدی میں ہندوستان کے چھا عام سلمہ شاکع نہ ہوسکا میں ہندوستان کے پچھا عام سلمہ شاکع نہ ہوسکا میں ہندوستان کے پچھا اے نے بلا واسلامیہ میں جا کرعلم حدیث حاصل کرنے کی کوشش کی لیکن عام سلمہ شاکع نہ ہوسکا میں ہندوستان کے پچھا اے نے بلا واسلامیہ میں جا کرعلم حدیث حاصل کرنے کی کوشش کی لیکن عام سلمہ شاکع نہ ہوسکا

اس زمانے کے بڑے بڑے علاء یہ ہیں شیخ علی اُمتّی ؓ (متوفی ۹۷۹ ھ)صاحب کنز العمال، شیخ عبدالا ول ؓ جو نیوری، شیخ محمد طاہرٌ صاحب (متوفی ۷ ۷۹ه) مجمع البحاراس طریقے سے ان بڑے علماء میں شیخ عبدالحق محدث دہلوی (متوفی ۵۲۰اھ) بھی ہیں انکے زمانے میں چونکہ مدیث کی کتابوں میں مشکوۃ شریف کہیں کہیں میڑھائی جاتی تھی اس لیے انہوں نے اسکی دوشرحين تصنيف فرمائين ايك عربي مين يعني لمعات التفقيح اورايك فارسي مين يعني افعة الممعات النكي غلاوه اورعلاء بهي بين جبیا کیشنع عبدالحق محدث دہلوی کےصاحبزادے نورالحق صاحب (متوفی ۲۵۰۱ه) ای طرح ایکے بیلے شیخ الاسلام عبدالسلام صاحب ليكن ان علماء حضرات كالعليم وتعلم كاسلسله كوئي بإضابط طور يرنبيس تفاجسكي بناء بربيس لسله چل ندسكا ۔ دسویں صدی الی ہے کہ دوسرے بلاویس سیسلسلہ کم ہو گیا کیونکہ اس دور میں انگریز کا تسلط ہور ہاتھا اسلامی حکومتیں ٹوٹ رہی تھیں بار ہویں صدی میں شاہ عبدالرحیمٌ صاحب کے گھر میں ایک بیٹا پیدا ہوا جسکا نام احمداور لقب ولی اللہ تھا (متوفی ۱ کااھ) اللہ تعالی نے انکواس کام کے لیے منتخب فرمایا۔ سولہ سال کی عمر میں جازِ مقدس کا سفر کیا شیخ ابوالطا ہر ّ كردى شافعى ہے حدیث برحی شخ شافعی المسلك تنھا در شاہ دلی اللہ حنفی المسلک تنھان كا ارادہ شافعی ہونے كا ہوا تو چونکہ شخ معتدل اور منصف مزاج تھے انہوں نے شاہ صاحب کوشافعی ہونے سے منع کر دیا اور فرمایا کہ اگر تمہیں شبہ ہوتو مجھے بتاؤ میں تہہیں اسکا جواب دونگا۔حضرت شاہ صاحبؓ کی باوجود حنی ہونے کے محققانہ شان تھی بعض جگہ فقہ حنی کیخلاف بھی لکھ دیتے ہیں۔ یہی شان اسکے بوتے شاہ اساعیل شہیدگی ہے حضرت شاہ صاحب نے شیخ ابوالطا ہڑ سے اجازت کیکرصحاح سنه پیرهانی شروع کیس اورموطا امام ما لک کوجھی درس وند رلیس میں شامل کیا اور اسکا حاشیہ بھی لکھا حضرت شاہ صاحب کے مشہور تلامٰہ مندرجہ ذیل ہیں۔

ا۔قاضی ثناءاللہ صاحب یانی ہی جنہوں نے تفسیر مظہری لکھی ہے۔

٢ ـ شخ محمرامين تشميريّ ـ

٣-شخ باشمٌ-

۴ _سيدمرتضى صاحب بلگرائ _

۵ حضرت كے صاحبز ادے شاہ عبدالعزيز صاحب (متونی ٢٣٩هـ)

ان كے بعد حديث كى خدمت شاہ محرا الحق صاحب د بلوى (متوفى ١٣٦٢ه)كرتے رہاورا نكے بعد شاہ عبد الخى مجددى (متوفى ١٣٩١ه)

کے دومتاز شاگرد حضرت مولانا رشید اجمد صاحب کنگونی (متونی ۱۳۲۳ه) اور حضرت مولانا محمد قاسم صاحب "نانوتوی (متونی ۱۲۹ه) و دومتاز شاگرد حضرت مالانا محمد قاسم صاحب "نانوتوی نے دیوبند (متونی ۱۲۹ه می ۱۲۹ می ۱۶ میران دونو ن حضرات نے مشورے سے ایک مدرسه کی بنیا در کھی انگریز کا تسلط ہو چکا تھادی مدرسة قائم کیا جو سے مدرسة قائم کرنا ایک انتخاب کیا اور وہاں مدرسة قائم کیا جو بعد میں دار المعلوم و یوبند کے نام سے مشہور ہوا ا

 والوں سے فتوی لیا اور اسکا نام حسام الحرمین رکھا اور انگریز کے سہارے سے بیفتوی ہندوستان میں خوب مشہور ہوا۔ حضرت مولا ناظیل احمد صاحب نے عربی میں علاء دیو بند کے عقائد ہوا۔ حضرت مولا ناظیل احمد صاحب نے عربی میں علاء دیو بند کے عقائد کی محتا کہ معلوم ہو کہ علاء دیو بند کے حقائد سے بیت اور اسکانا م' المہند علی المفند' رکھا پھر علاء حرمین سے فتوی لیا اور انھوں نے فتوی دیا کہ بیلوگ مسلمان ہیں تو اب دیو بندیوں اور بر بلویوں کا سلسلہ چل پڑا اب کشاکش شروع ہوئی تو بید ومسلک بن گئے پھراس نے طول پکڑا تو مسائل میں بھی اختلاف ہو گیا اور انگریز اپنی مہم میں کا میاب ہو گیا۔

﴿طريقه تدريس حديث﴾

ابتداء میں طریقِ تدریس بہت مخضر تھا لمبی چوڑی تقاریز ہیں ہوا کرتی تھیں مخضر تقریر ہوا کرتی تھی کین نہایت جائع اور پرمغز ہوتی تھی، چونکہ ہندوستان میں غیر مقلدوں نے نقہ حفی کے خلاف آیک بہت بڑی سازش کی اور پرو پیگنڈا کیا کہ فقہ حفی حدیث کے خلاف ہے۔ اس لیے ضرورت پیش آئی کہ علاء جمہتدین کے دلائل پیش کر کے فقہ حفی کو جی گئیڈا کیا کہ فقہ حفی حدیث میں میطریق مولا نا انور شاہ صاحب تشمیری کا ہے کہ ہر مسئلہ میں آئم اربعہ کے ندا ہب، دلائل اور جوابات فریق مخالف ذکر کیے جائیں تو فقہ حفی کی ترجے کا طریق اکا بردیو بند کا ہوال

وضرورة اجتهاد وتقليد

اس برفتن دو رمیں اجتہاد و فقہ کی ضرورت ہے۔ غیر مقلدین اجتہاد کے منکر ہیں حقیقت میں تو وہ بھی اجتہاد کرتے ہیں ا اجتہاد کرتے ہیں اپنے اجتہاد کو حدیث پرعمل کہتے ہیں کسی غیر مقلدسے پوچھئے کہ نانی کہاں سے حرام ہوئی تو کہے گا کہ قرآن میں توامّیہ تکم آیا ہے تو یہاں ام الام کوام پر قیاس کیا گیا ہے۔

﴿تعريف اجتهاد ﴾

لغتاً: اجتهاد، جهد عليا كياب اى صرف الهمة وبذل الجهد.

اصطلاحا:صرف الهمة في الكتاب والسنة الستنباط المسائل، اجتمادكا ثبوت قرآن سي بهي به اورمديث سي بهي اورمديث سي بهي اورمديث سي بهي اورمديث المراجماع سي بهي ـ

لِ تقریر بخاری ج۱ ص ۲۲، مقدمه فیض الباری ص ۲۲

ثبوت الاجتهاد من القرآن والحديث

- (١)قرآن پاک کي آيت ۽ ﴿فَاعْتَبِرُوا يَآأُولِي الْاَبْصَارِ ﴾ ١
 - عبرت كہتے ہيں ايك نظير كودوسرى نظير پر قياس كرنا اور تحكم لگانا۔
- (۲)﴿ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسُتَنبُطُونَهُ مِنهُم ﴿ والبته جان ليت اس كوده لوگ جوان ميں سے اس كى تحقيق كرليا كرتے _معلوم ہواكہ كچھلوگ اجتہاد كے قابل ہيں اور كچھنيس ہيں۔
 - ثبوت الاجتهاد من الحديث:
- (۱)جہینہ قبیلہ کی ایک عورت حضور عظیمی کے پاس آئی اورعرض کیا کہ میری والدہ نے ج کرنے کی نذر مانی تھی پس ج نہیں کیا تھا کہ مرگئ کیا میں اس کی طرف سے ج کر، پس ج نہیں کیا تھا کہ مرگئ کیا میں اس کی طرف سے ج کر سکتی ہوں؟ آپ علی تھے نے فر مایا کہ اسکی طرف سے ج کر، تیرا کیا خیال ہے کہ اگر تیری والدہ پر قرضہ ہوتا تو اسکی ادائیگی کرتی اللہ کا قرضہ ادا کر پس اللہ تعالی تو ادائیگی کے زیادہ ا قابل ہے، تو اب بندے کے قرضے پر اللہ کے قرضے کو قیاس کر کے مسئلہ سمجھایا ع
 - (۲)طلق بن علیؓ کی روایت ہے کہ کی نے آپ علیہ ہے مسِ ذکر سے انتقاضِ وضوء کے بارے میں پوچھا تو فرمایا هل هو الابضعة منه م یہاں بھی ایک عضو کو باتی اعضاء پر قیاس کیا
 - (٣)حضرت معاذ بن جبل سے روایت ہے کہ جب حضور الله فیال فیمن کی طرف بھیجا تو فر مایا ((کیف تقضی اذا عرض لک قضاء قال اقضی بکتاب الله قال فان لم تجد فی کتاب الله قال فیسنة رسول الله قال اجتهد رائی و لاالو)) اس پرحضور علیہ نے دسول الله قال اجتهد رائی و لاالو)) اس پرحضور علیہ نے حضرت معاد کے سینے پر ہاتھ مار آاور فر مایا ((الحمد الله الذی و فق رسول رسول الله لما یوضی به رسول الله)) معلوم ہوا کہ محالی بھی اجتہاد کرسکتا ہے
- (٣) حضرت عبدالله بن مسعود ہے ہو چھا گیا کہ ایک عورت کا بغیر مہر مقرر کئے نکاح ہوا، اور خاوند جماع سے پہلے ہی فوت ہوگیا اب کیا تھم ہے ایک ماہ بعد تقریبا آپنے جواب دیا اور فرمایا میں اپنی رائے سے فیصلہ کر رہا ہوں اگر ذرست ہوتو اللہ کی طرف سے ہے در نہ میری طرف سے اور شیطان کی طرف سے ۔ وہ یہ کہ اس کے ذمہ مہر مثل ہوگانہ اس سے کم اور نہ زیادہ اور اس کے بعد میراث ہوگی اور عدت لازم ہوگی پھر معقل بن سنان نے گواہی دی کہ بے شک

یا یاره ۲۸ سورة الحشر آیت اللی پاره دسورة النساء آیت ۸۳ سی بخاری جاس ۲۵ سی ترزنی جاس ۴۵ می ترزی ،ابوداؤد،داری ، محکوق س ۳۲۳

رسول الله علي في بروع بنت واشق كے بارے فيصله كيا جيسا كرآب نے فيصله كيا ہے ل

وثبوت الاجتهادمن الأجماع

فقہاءامت نے اجتہاد کیا اور کس محدث وعالم نے اس پر کلیز نہیں گی۔ الحاصل: اجتہاد کا ثبوت قرآن سے بھی ہے اور حدیث سے بھی اور اجماع سے بھی۔

﴿اشكالات على الاجتهاد ﴾

ا شكال نمبر ا: قرآن پاك مين آتا ب ﴿ تِبْيَانًا لَكُلَّ شَنِي ﴾ ي تو پهراجتهاد كى كيا ضرورت ب؟ جواب نمبر ا: تبيان اصول كا بندك جزئيات كا ـ

جواب نمبو ٢: تسليم ہے كة رآن ﴿ تِبْيَانًا لَكُلِّ شَنِي ﴾ ہے كيكن يتبيان بھى دلالة بوتا ہے بھى عبارة كسى اقتضاء اور بھى اشارة جو تبيان دلالة اور اشارة بواسكو بتلانے كانام اجتہاد ہے كونكه بركو فى تواشارة نہيں بجور نكا۔ الشكال نمبو ٢: قرآن ياك مين آتا ہے ﴿ فَإِنْ تَنَازَعْتُمُ فِى شَيْءٍ فَرُدُّوهُ اِلَى اللّهِ وَالرَّسُولِ ﴾ ياسكال نمبو ٢: قرآن ياك مين آتا ہے ﴿ فَإِنْ تَنَازَعْتُمُ فِى شَيْءٍ فَرُدُّوهُ اِلَى اللّهِ وَالرَّسُولِ ﴾ ياسكال نمبو مواكد جمت صرف حديث ہے ندكہ اجتہاد؟

جواب: به آیت تودلیل اجتهاد ہے نہ که اجتهاد کے مخالف کیونکہ جو چیز کتاب وسنت میں صراحنا نہ کور ہے اسمیں تو تنازع نہیں ہوسکتا تنازع تو ایسی چیز میں ہوگا جو کتاب وسنت میں نہیں ہے تو اب اجتهاد کر کے اسکوقر آن وصدیث کے اصولوں یم منطبق کیا جائے گا اور کتاب وسنت کی طرف راجع کیا جائے گا۔

اشکال نمبو ۳: سب قیاس کرناسنت ابلیس ہو جو قیاس کرتا ہوہ طریق ابلیس کو اختیار کرتا ہے چنا چہ غیر مقلد

کہتے ہیں کہ سب سے اول قیاس کرنے والا ابلیس ہے اور وہ قیاس ہیہ کہ جب ابلیس کو آدم علیہ السلام کو تجدہ کرنے

کا حکم دیا گیا تو اسنے کہا کہ ہیں آدم علیہ السلام ہے بہتر ہوں تو میں کیوں سجدہ کروں کیونکہ میں آگ سے بیدا ہوا ہوں

اور آدم می سے، اور آگ می سے افضل ہے لہذا آگ سے بیدا ہونے والا بھی می سے بیدا ہونے والے سے افضل

ہوگالہذا میں افضل ہوا پھر مین غیر مقلد ہمیں الزام دیتے ہیں کہتم بھی اسی طرح اپنے قیاس کو حدیث کے مقابلے میں

لاتے ہواس ابلیس کے قیاس کا جواب ہے ہے کہ ہم اس بات کو ہی تسلیم ہیں کرتے کہ آگ مٹی سے افضل ہے، بلکہ می ہی خیافی ہیں چنا نچے می کے گئے منافع ہیں چنا نچے مٹی کے گئے منافع ہیں اور آگ کے گئے منافع ہیں چنا نچے مٹی کے گئے منافع ہیں چنا نچے مٹی کے گئے منافع ہیں چنا نچے مٹی کے گئے منافع ہیں اور آگ کے گئے منافع ہیں چنا نچے مٹی کے گئے منافع ہیں چنا نچے مٹی کے گئے منافع ہیں چنا نے مٹی کے گئے منافع ہیں جنافع ہیں

ل نسانی شریف ت ت س ۸۸ مردواؤد ج اس ۴۹۵ ع باره ۱۲ سورة الحل آیت ۸۹ ع باره ۵ سورة النساء آیت ۵۹

منافع آ گ کے منافع سے زیادہ ہیں اسطر ح مٹی کے نقصانات آ گ کے نقصانات سے کم ہیں تو مٹی افضل ہوئی نہ كرة ك اب بم اصل اشكال كے جواب كى طرف متوجه ہوتے ہيں۔

جواب ا: قیاس دوسم بر ہایک وہ قیاس ہوتا ہے جومعارضِ نص ہو۔ دوم وہ قیاس ہے جوہنی برنص ہولینی منصوص پرغیرمنصوص کو قیاس کرنا تمام آئمہ مجتهدین کا تفاق ہے کہ قیاس معارض نص جائز نہیں ہے اور ہنی برنص جائز ہے تمام فقہاء کا قیاس منی برنص ہے اور اہلیس کا قیاس معارض نص ہے۔

جواب ٢: آپ تو تياس ك قائل نہيں پر آپ تياس كيوں كررہے ہيں؟ آپ فقہاء مجتبدين كے تياس كو ابلیس کے قیاس پر قیاس کر کے مردود قرار دیتے ہیں جب ہر قیاس مردود ہے تو آپیا قیاس بھی مردود ہوا۔

اشكال نمبر ٣ : جبآپ اجتهادكة قائل مين تو پهرآ پكوآج بهى اجتهادكرنا جا ہے تو پھرآپ تقليد

جواب: برخص مجتهد نبین بوسکتاس لیے که اجتهادی کچھ شرائط بین اور صفات بین ملاجیون نے انکا تذکرہ کیا ہے۔ (۱) آیاتِ احکام واحادیثِ احکام تمام کی تمام ایک ہی وقت میں متحضر ہوں آیات تقریبا پانچ سوہیں اور احادیث تنین ہزار ہیں!

- (٢) دوسراييك لفت عربيه، صرف بخووغيره ميل ماهر مو
 - (m)....قیاس کی تمام انواع کا جاننے والا ہو۔
 - (٣)اقوال صحابةً وفا قاوخلافا كاواقف مويه
 - (۵)ناسخ ومنسوخ سے واقف ہو۔
 - (۲) مجتبد کے لئے ضروری ہے کہ تقی بھی ہو۔

كيونكه اكراس مين تقلي نه بهوتو خوا مشات نفساني داخل بهوجا نمينكي اوروه ابيها اجتهادكر يكاجوخوا بش مين مضرنه ہواورنفسانی خواہش پرز دنہ پڑے اورایی شرا کط کا پایا جانا عرفا محال ہے توبیہ وہ شرا کط ہیں جنگی وجہ ہے ہم تقلید کرتے ہیں نہ کہ اجتہاد کیونکہ ہم میں بیشرا نطنبیں ہیں۔

موال: سلف صالحین میں بہت سارے مجتمد تصفی مرآئم اربعه میں سے سی ایک کی تقلید کو کیوں ضروری قرار دیے ہیں؟ **جواب**: تقلید کے لیے پچھٹرائط ہیں جس میں وہ یائی جائینگی اسکی تقلید کی جائیگی۔

(۱)جس کی تقلید کی جائے اسکا ند ہب مدون ہونا چاہیے، اور بیداللہ تعالی کی طرف سے قبولیت ہے جسکا ند ہب

مباديات

مدون ہوجائے۔ائمہاز بعہ کے شاگردوں نے اٹکا ندہب مدون کر دیاجب کہ دیگرائمہ کا ندہب مدون نہیں ہوالہٰ ذاان کی اتباع بھی نہیں کی جائے گی۔

- (۲)جس امام کی تقلید کی جائے اسکی تمام شرا نط کولمحوظ رکھا جائے۔
- (٣)....تقليد ينقض قضاءِ قاضى لازم نه آئے مثلا قاضى شافعى المسلك بے يوكسى اختلافى مسله ميں قضاءِ قاضى في مطابق كام كرنا ب نه كه امام ابو حنيفة كى رائے كے مطابق _
- (٣) جونكه نداب مين اختلاف موتا بي توايك بي كي تقليد كي جائے تلفيق بدكي جائے تلفيق بالا جماع حرام ہے كيونكما سطرح بيريانجوال مذهب بن جائيگا۔

تلفیق کہتے ہیں کہ دو مذہب ملا کڑمل کیا جائے یعنی بھی ایک مذہب پر عمل کرے اور بھی دوسرے مذہب پر عمل کرے،اس ہے آ دمی انتاع ہوئی کا شکار ہوجا تا ہے مثلا ذکرکو ہاتھ لگے تو کیے گا کہ فقہ خفی میں وضو نہیں ٹو نما اوراگر تكسير پھوٹ كئ تو كہے گا كەمذىب شافعى ميں وضو نہيں ٹو شاللېدا دنوں صورتوں ميں وضونہيں كرے گا۔

﴿ اثبات تقليد من القرآن ﴾

- (١) ﴿ فَاسْنَلُوا اَهُلَ الذِّكُو إِنْ كُنتُهُ لَاتَعُلَمُونَ ﴾ في ذكر يس مرادافرادمائل جزئير عيه بين اور اهل کی اضافت اختصاص کے لیے ہے،معنی یہ ہوئے کہ جولوگ تمام مسائل جزئیہ شرعیہ کوقر آن وحدیث سے اخذ کر سکتے ہیں ان سے دریافت کر کے ممل کیا کرواوروہ آئمہ مجہدین ہیں۔المذ کو میں علم بھی واخل ہے۔ آج کل اصطلاحات کا بھی خون ہونے لگاہے جبیبا کہ ملم کوذ کر ہے ہی نکال دیا گیا۔اصل بات بیہے کہ مشکل کا م کرنہیں سکتے تو علم کوذکر ہے ہی نکال دیا تا کہ ماننے والوں کوشبہ نہ گز رے اس کوقر آن وحدیث تو آتانہیں بیر کیسے بزرگ ہو گیا؟ حضرت شیخ الحديث مولا تا محمد زكريًا كے بارے ميں آتا ہے كه يوميدتين، تين، جار، جارجا دريں حديث كے مطالعه كي مشغولي كي وجہ سے پسینے میں بھیگ جاتی تھیں ایک گیلی ہوتی اسکوسو کھنے کے لیے ڈال دیتے دوسری بہن لیتے۔
- (٢) ﴿ وَاتَّبِعُ سَبِيلٌ مَنُ أَنَابَ إِلَى ﴾ م جوالله تعالى كى طرف جيكاس كى اتباع كرو،اس مطلق تقليد ثابت ہوئی اور مطلق من حیث الفرد ہی پایا جاتا ہے۔

اب سوال یہ بیدا ہوتا ہے کہ تقلید کن افراد کی کرنی ہے؟ تو دوسری تیسری صدی کے علماء نے جنگی تقلید کو سیح

ا پاره کامورة الانمیار آیت که ع پاره ۲۱ مورو لقمان آیت ۱۵

قرار دیا ہے وہ امام ابوصنیفہ امام مالک ،امام شافعی ،امام احمد بن صنبل ہیں جنکو جسکا تلمذمیسر ہوائلی تقلید کریں ہم کسی کی تقلید کو باطل قرار نہیں دیتے لیکن اپنے لئے راج امام ابوصنیفہ کی تقلید کو مجھتے ہیں۔ (اسکانام تقلید شخص ہے)

﴿وجوهِ ترجيح فقه حنفي﴾

الاول:امام صاحب کاطریقة اجتها درائ ج، اس لیے کدامام شافع اُ ای الب کور نے دیے ہیں اور باقی روایتوں کی توجید یا نظیق کی صورت اختیار کرتے ہیں ای لیے شافعیہ نے صحت مدیث پرزیادہ محنت کی ہے ہی وجہ ہے کہ ذیادہ محد ثین شافعی المسلک نظر آتے ہیں امام مالک تعاملِ اہل مدینہ کو مدار بناتے ہیں باتحوں کی توجید اور نظیق کرتے ہیں اپنی اپنی شاخی المسلک نظر آتے ہیں امام احد ملا ایک تعاملِ اہل مدینہ کی مدار بناتے ہیں باقوا ہر کی موافقت ہیں آجاتے ہیں اس لیے زیادہ تر اصحاب ظواہر ہیں وہ آجاتے ہیں اس لیے اننی فقد میں تعارض بھی ہوگا کہ جہاں جسی مدیث کی ویساعل کرایا اور ایک اصحاب ظواہر ہیں وہ سرے سے اجتہادی فقد میں تعارض بھی ہوگا کہ جہاں جسی مدیث کی ویساعل کرایا اور ایک اصحاب ظواہر ہیں وہ سرے سے اجتہادی فقد میں تو بیٹ کہ ماءِ دائم یا باغوار کر ہیں تو بیشاب نہ کرولیکن اگر کنار سے پر کیا اور بہہ کر الماء المدانیم ہے کہا ترائی مرح نہیں ، اور امام اعظم ابو صنیفہ اُ بتداء مدیث پاک کو تر آن کے مطابق کر کے مل کر نیکی کوشش کرتے ہیں گھر مدیث کو کہی تو ایسا کہ کہا تھی کہر دونوں پر عمل ہوجائے ورنہ قرآن پاک کو تر نیج دیے ہیں گھر مدیث کو لیے ہیں گھر ایسا کہ کو تر تیج دیت ہیں گھر صدیث کو لیے ہیں گھر ایسا کو کھر قول صحابی کی باری آتی ہے اور تا ابعین کول کے مقابلے میں اجتہاد کرتے ہیں تو فقہ خفی ایسی فقہ ہے جسمیں قرآن اور مدیث دونوں معمول بہ ہوجائے ہیں۔

الثانی، قیام شوری: سندوین فقه فق کے لیے الم صاحب نے ایک شوری قائم کی تھی جس میں انہوں نے ایک شوری قائم کی تھی جس میں انہوں نے این اصحاب و تلاندہ میں سے جالیس اصحاب کا انتخاب کیا تھا وہ سب کے سب اجتماد کا درجہ رکھتے تھے جن میں بڑے بڑے محدث مضر الغوی ، عالم تاریخ اور عالم مغازی تھے ایک ایک مسئلہ پر گھنٹوں اور بعض مرتبہ ہفتوں بحثیں ہوتیں ، جس مسئلہ پر بحث پوری ہوجاتی اسکولکھ لیاجاتا ہے۔

اوريه بهى ايك مديث بطراني من حضرت على عد (قال قلت يا رسول الله ان ينزل بنا امر ليس فيه بيان

لے بخاری شریف جا س۳۷ ع انوارالباری جا ص۱۵۵

امر ولانهی فماتامرنی؟قال تشاورواالفقهاء والعابدین ولاتمضوا فیه رأی خاصة)) له الثالث، تدوین بونی وه فقد فقی عن ظاهر می کداول کو الثالث، تدوین بونی وه فقد فقی عن ظاهر می کداول کو اور بنیادر کھنے والے کور جی بوتی ہے اور بعد میں آنے والے اسکود کی کر چلتے ہیں امام شافعیؓ نے فرمایا الناس عیال علی ابی حنیفة فی الفقه بے

الر ابع ، جلالة شانه: اما م اعظم كى جلالة شان خود متقاضى ہے كہ فقہ فى كى تقليد كى جائے اما م ابو صنيف ئے چار ہزار اسا تذہ سے علم حاصل كيا ہے اور آ کي تلافدہ ميں سے بے شار محد ثين پيدا ہوئے ہے جن ميں عبدالله بن مبارك بھى ہيں جن كوامير المونين فى الحديث كہا جاتا ہے ذخيرہ احاديث ميں اكلى ہيں ہزار احاديث ہيں هـ صحاح سنہ والوں كے اكثر اسا تذہ اما م اعظم كے شاگرد ہيں لكھا ہے كہ اگر صحاح سنہ سے آ پكے تلافدہ كى احاديث نكال ديجائيں تو صحاح سنہ تے آ پكے تلافدہ كى احاديث نكال ديجائيں تو صحاح سنہ كا بہت كم حصہ باقى رہ جائے اور اما م صاحب كى تعريف ميں مستقل طور پر تقريبا ستائيس كتابيں كل يو كئيں جن ميں شافعى ، ماكى اور صبلى مصنفين بھى ہيں اور ١٧ سے زائد كتابوں ميں خمنى تذكرہ ہے سب سے پہلے مضرت عبدالله بن مبارك نے امام صاحب كو جلالت شان كى بنا پر امام اعظم كہا ۔ امام شافتى فر ماتے ہيں كہ نحن عبدالله بن مبارك نے امام صاحب كو جلالت شان كى بنا پر امام اعظم كہا ۔ امام شافتى فر ماتے ہيں كہ نحن عبدالله بن مبارك نے امام صاحب كو جلالت شان كى بنا پر امام اعظم كہا ۔ امام شافتى فر ماتے ہيں كہ نحن

الحامس ،تقدم ذاتی: حفرت امام اعظم کو باتی ائمه مجتدین سے نقدم ذاتی حاصل ہے اور امام صاحب کی سند میں واسط بہت کم آتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ جس میں واسطے کم ہوں وہ بہت تو ی حدیث ہوگی اور اس حدیث پر جوفقہ مرتب ہوگی وہ بھی زیادہ تو ی ہوگی۔

ا ما م عظم ؓ کے بارے میں بہت ساروں کا تابعی ہونے کا قول ہے خصوصاً علامہ ابن حجر عسقلانیؒ اور علامہ ابن حجر کلؒ ہر دونوں شافعی حضراتؓ نے ان کوتا بعی تنلیم کیا ہے۔

السادس، فقاهتِ ذاتبی: حضرت امام اعظم الله ور پر فقیه سے چناچه اکی فقاہت کی شہادت بڑے برے اللہ کرے آئمہ مجتمدین نے دی ہے۔ حضرت ابن مبارک کہتے ہیں کان افقه الناس، حضرت ابن راہو یہ کہتے ہیں کہ اللہ تعالی نے امام صاحب جیسا کوئی فقیہ پیدائہیں کیا۔

امام ابو حنیفۂ کی فقاھت کے چند قصے

القصة الاولى:ايك مخص آكر كهن لكابواو او بواؤين حفرت المصاحب في فرمايابواؤين اس في

ل انوارالباری خاص ۱۵۵ بحوالہ طبرانی اوسط ۲ انوارالباری خاص ۱۵۷ شبیض الصحیفه ص۱۹۳ انوارالباری خاص ۱۵۵ بیپیض الصحیفه ص ۲۱ سم انوارالباری خاص ۱۵۷ هے انوارالباری خاص ۱۷۲

وعادی، کہا بارک الله فیک کما بارک فی لا ولا، اسکے جانیکے بعد حاضرین نے حیران ہوکر دریافت کیا توآپ نے فرمایا کہاس نے التحیات کے بارے میں سوال کیا تھا کہ شہدابن عباس راجے ہے یا تشہدابن مسعود تو میں نے جواب دیا کہ بو اوین یعنی تشہدابن مسعود ، راجح ہے۔ اس براس محض نے دعادی کراللہ یاک آپ کا فیض مشرق ومغرب مين پنجائي جيسا كقرآن ياكى آيت مباركه به ﴿ اللَّهُ نُورُ السَّمُواتِ وَالْارُضِ مَعْلُ نُورِهِ كَمِشُكُوةٍ فِيُهَامِصْبَاحٌ ٱلْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ٱلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَاكُوكَبُّدُرِّيٌ يُوْقَدُمِنُ شَجَرَةٍ مُّبْزُكَةٍ زَيُتُوْنَةٍ لَّاشَرُقِيَّةٍ وَّلَاغَرُبيَّةٍ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْلَمُ تَمْسَسُهُ نَارٌ نُورٌ عَلَى نُور يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنُ يَّشَاءُ وَيَضُرِبُ اللَّهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿ لَ كُس قَدْرَامام صاحب كى فقابت معلوم بوكى کہ دوسرے حاضرین نہ مجھ سکے۔

القصة الثانية:ايك فخص آكر كم كا قول ما قالت النصارى واقول ما قالت اليهود حضرت الم صاحبؒ نے شاگردوں سے یو چھا کہ اس مخص کے بارے میں کیا کہتے ہوانہوں نے عرض کیا کہ پیخض کافر ہے حضرت امام صاحبٌ نے فرمایا پہلے اس سے یوچھو کہ اس کی مراد کیا ہے؟ یو چھے بغیر فتری مت لگا واس کو بلایا گیا یو چھا تواس نے کہا قالَتِ الْيَهُولُدُ لَيْسَتِ النَّصَارِي عَلَى شَنْنَى وَقَالَتِ النَّصَارِي لَيُسَتِ الْيَهُولُدُ عَلَى شَنْي واقول كما قالوا چِنانچِياس كي مراد جان کرسب نے امام صاحب می فقاہت کی داددی۔

فائدہ : اس قصہ ہے معلوم ہوا کہ جتنا نقصان دین کودین والوں نے دیا ہے اتنا دوسروں نے دین کونہیں دیا،جیسا کہ ندکورہ قصہ میں ایک جماعت کہتی ہے وہ جماعت کچھنہیں، دوسری جماعت کہتی ہے وہ کچھنہیں، اسی طرح بے دین آ کر کھے گادونون جماعتیں چھہیں۔

ا یک شخص حضرت مولا تا عطاءاللد شاه صاحبٌ کو گالی دیا کرتا تھا۔وہ مولوی تھا وہ تو کسی کبیر ہ میں مبتلا ہوگیا کسی نے آ کرشاہ جی سے کہا۔حضرت شاہ بی نے فر مایا خاموش خاموش۔ برادری بدنام ہوگی کیونکہ لوگ تو دیکھیں گے کے فلاں مولوی صاحب یا فلاں دین دار نے ایسے کیا جو کہ سبب سنے گادین داروں کے بدنام ہونے کا۔ القصة الثالثة: حضرت امام صاحبٌ كزمانه كي بات عب كدو بهنول اور دو بها تيول كا نكاح بيك وقت ہوار خصتی کے وقت معاملہ برعکس ہوگیا یعن ایک بھائی کی منکوحہ دوسرے بھائی کے ہاں چلی گئ تو اس مسلم کے حل کے ليے تمام فقہاءِ قوم انتھے ہو گئے اور کہا کہ دونوں حرام ہو گئیں۔حلال ہونیکی صورت پوچھی گئی تو انکار کر دیا کہ سی صورت میں بھی حلال نہیں ہوں گی لیکن حضرت امام صاحبؓ نے فر مایا کہ ایک صورت ہے حلال ہونیکی اور وہ بیہ کہ اگر ہر خخص اپی منکوحہ کوطلاق دیدے اور موطور کونکاح میں لے لے تو ابھی مسئلہ حل ہوجائیگا، چنانچہ ایسا ہی کیا گیا لکھا ہے کہ اُعجبو ہ امام صاحبؓ نے فقہاء کو تعجب میں ڈالدیا اور انکوا مام صاحب کی فقاہت پر تعجب ہوالے

القصة الموابعة: اسطرح ایک قصه لکھا ہے کہ ایک عورت آکر کہنے گی میرے فاوند نے قسم کھالی ہے کہ ساری رات تجھ سے نہ بولوں تو تجھے طلاق ہے آپ نے ساری رات تجھ سے نہ بولوں تو تجھے طلاق ہے آپ نے فرمایا جاؤگھر جاکر آ رام کرومسئلہ مل ہوجائیگا میج صبح اذان ہوئی تو خاوند نے کہا کہ جاچلی جا تجھے طلاق ہو بھی ہوہ عورت گھر ائی ہوئی امام صاحب کے پاس آئی کہنے گئی آپنے کوئی حل نہیں فرمایا اس نے تو مجھے گھر سے نکال دیا ہے، تو امام صاحب نے اسکے خاوند کو بلایا اور فرمایا طلاق نہیں ہوئی اس لیے کہ وقت سے پہلے اذان میں نے دی تھی اور تو نے رات کے اندر ہی کلام کرلی اس لیے طلاق نہوئی ہے۔

القصة المخامسة: اسطرح ایک قصد یہ بھی ہے کہ ایک دفعہ ایک گھر میں چور آگئے چوروں نے بھی فقہ پڑھی ہوئی تھی چوروں نے گھر والوں کو پکڑلیا اور قتم کیکر کہا کہتم کسی کوئیس بتلائے گرنہ تہاری عورتوں کو تین تین طلاقیں ہے ہوئی تو بہت پریشان ہوئے کہ اگر نہیں بتلاتے تو مال گیا اگر بتلاتے ہیں تو بیویاں گئیں ۔ تو وہ لوگ امام صاحب کے پاس گئے امام صاحب نے فرمایا گھراؤ نہیں عدالت میں جاکر یہ انتظام کرواؤ کہ مجد میں قاضی اور امام صاحب کو بٹھلا دیا جائے درواز ہے پرگھر والوں کو مجلے والوں کو بلا کر مجد میں واخل کرتے جاؤجس نے چوری نہ کی ہو کہ دینا کہ یہ نہیں ہے اور جنہوں نے چوری کی ہوائے بارے میں خاموش رہنا ہم خود ہی بہچان لیس کے بیہ ہو ہو تہ بہرجوامام صاحب نے اپنی فقاہت کی بنا پرانکو بتلائی اور کامیاب ثابت ہوئی۔

القصة السادسة:ايكورت پياله ميں پي پانى ليكرآئى خاوند نے اسے كہااگريه پانى ميں پيوَں تو تجھے طلاق اگرتو پانى ميں پيوَں تو تجھے طلاق اگرتو پيئو تھے علاق اگرتو پيئو تھے اللہ تا اگرتو پيئو تھے اللہ تا تا اللہ تا تھی بوری ہو جائے گئے ختے طلاق بھی نہيں بڑے گی۔

القصة السبابعة:اى طرح ايك محص في تم كهائى كه مين اليى عبادت كرونگا كه اسوقت كوئى بھى عبادت نه كرر با ہو۔ تو حضرت امام صاحب في تدبير بيه بتلائى كه قاضى سے جاكر عرض كروكه بچھ وقت كے لئے مطاف خالى كرواد ہاورتم جاكر طواف كر لوكيونكه اس طواف كرنے كے وقت كوئى بھى طواف نبيس كرد با۔

السابع، موافقتِ حديث:ان كى فقداوفق بالحديث باس ليے كدامام صاحب الني اصول ميں

لے عقودالجنان ص ۵۵ مے عقودالجنان ص ۲۹۹

کوشش کرتے ہیں کہ کوئی مدیث عمل سے ندرہ جائے یہاں تک کہ مدیث سے قرآن کے شنح کوبھی جائز کہتے ہیں حدیث مرسل کو ججت قرار دیتے ہیں حدیثِ ضعیف وقولِ صحابی کو قیاس پرتر جیج دیتے ہیں۔ رفع یدین کے طریقہ میں اختلاف، پھرائمیں تطبیق،ای طرح وضع یدین کے طریقہ میں اختلاف،اور پھرائمیں تطبیق سے صاف پتہ چلتا ہے کہ امام صاحب کی فقداوفق بالحدیث بے حضرت انورشاه صاحبٌ کا قول ہے کہیں سال تک محنت کی فقد فقی کو صدیث پر منطبق كرنے كے ليكين كوئى قول فقة فى كاحديث كے خلاف نبيس يايا۔

رفع يدين كى روايات اور انمين تطبيق:اس سلسله مين روايات تين قتم كى بين ا-ايك روایت کےمطابق کندھوں کے برابر ہاتھوں کا اٹھانا ہے۔ ((عن الزهری عن سالم عن ابیه قال رأیت رسول الله عُلْنَا الله عَلَيْنَ السيفتح الصلوة رفع يديه حتى يحاذى منكبيه فروسرى مديث كمطابق كانول كي لوتك بإتمون كوالمُمانا بـ عن عبدالجبار بن وائل عن ابيه قال رأيت رسول الله عَلَيْكُ يرفع ابهاميه في الصلوة الى شحمة اذنيه)) ي تيسرى مديث كمطابق كانول سي بهي اوير باتهول كوامهانا ثابت ب- ((عن مالك بن الحويرث عن رسول الله عُلَيْكُ مثله الا انه قال حتى يحاذي بهما فوق اذنيه)) عاب دیکھیں روایات تین قتم کی ہیں لیکن ایساطر یقدا ختیار فرمایا جس میں تنیوں روایات پڑمل ہوجا تا ہے۔ فرمایا کہ ہاتھوں کی ہتھیلیاں کندھوں کے برابر، ابہامین کا نوں کی لوتک، انگلیوں کو کا نوں سے او پر رکھا جائے، تو اس طریقہ پر تینوں قتم کی روایات بر مل موجاتا ہے۔ اس تطبق سے صاف پہ جاتا ہے کہ امام صاحب کی فقداوفت بالحدیث ہے۔ وضع یدین کی روایات اور آن میں تطبیق: جس طرح رفع یدین کی روایات مختلف تھیں آئ طرح وضع یدین کی روایات بھی مختلف ہیں۔

(۱)....اكدروايت من مطلقافزاياكم يديمني كويد يرى پرركهنا بـعن وائل بن حجو انه داى النبي الني رفع يديه ثم وضع يدة اليمنى على اليسرى. ت

(٢) سيكين ساته بى دوسرى روايت كے مطابق فرمايا كددائيں ہاتھ كى تھيلى كو بائيں ہاتھ كى كلائى پرركھنا ہے عن سهل بن سعد قال كأن الناس يومرون أن يضع الرجل اليد اليمني على زراعه اليسري في الصلوة ه

(m).... تيسرى مَدُّيْتُ مِعْمُوم بوتا ہے كەكف كوكف يرركهنا ہے جيبا كەفرمايا وعن على ومن السنة فى الصلوة وصلع الاتحف على الاتحف تلحت السرة ي

روایات پڑمل ہوجاتا ہے وہ یہ کہ ان یضع الکف الیمنی علی الکف الیسوی ویحلق الابھام والحنصر علی الرسغ ویسط الاصابع الثلث ابروایات میں تطبق اس طرح فرمائی کہ دائیں ہاتھ کی تھیلی کو ہائیں ہاتھ کی تھیلی کو ہائیں ہاتھ کی تھیلی کو ہائیں ہاتھ کی تھیلی پررکھ کرا بھام اور خضر سے حلقہ بنا لے اور باقی تین انگلیاں بائیں ہاتھ پررکھ لے تواس طرح تینوں روایات پر عمل ہوجائیگا۔ آپ اندازہ لگائیں کہ س طرح وقیق تطبیق فرمائی معلوم ہوا کہ امام صاحب کی فقد اوفق بالحدیث ہے۔ اس لیے بھی امام صاحب کی فقد اوفق بالحدیث ہے۔ اس لیے بھی امام صاحب کی فقد راجے معلوم ہوتی ہے۔

حضرت شاہ صاحب کا قول:فرماتے ہیں کہ نقہ حنی کوحدیث سے منطبق کرنے کے لیے ہیں مال محنت کی لیکن کوئی قول نقہ حنی کا حدیث کے خلاف نہیں پایا ہے۔ غیر مقلدین کا نقہ حنی پراعتراض کرنا چارا ندھوں کا ہاتھ و کیفنے کی مثال ہے۔ چاراند سے ہاتھی دیکھنے کے لیے ایک جگہ گئے۔ ایک اند سے کا ہاتھ سونڈ پر پڑ گیا، دوسرے کا ہاتھ پیٹ پر پڑ گیا، تیسرے کا ہاتھ انگ پر پڑ گیا، اسکے بعد چو تھے کا ہاتھ اس طرح کسی اور چیز پر پڑ گیا۔ اسکے بعد تبصرہ کرنے گئے جسکا ہاتھ سونڈ پر پڑ اتھا اسنے مجھا اور کہا کہ ہاتھی ایسا ہوتا ہے جیسے سانپ، جس کا ہاتھ پیٹ پرلگا اسنے کہا کہ ہاتھی ایسا ہوتا ہے جیسے ستون، اس طرح چو تھے نے ہاتھی ایسا ہوتا ہے جیسے ستون، اس طرح چو تھے نے ہتھی ایسا ہوتا ہے جیسے ستون، اس طرح چو تھے نے ہتھی ایسا ہوتا ہے جیسے شون، اس طرح چو تھے نے ہتھی ایسا ہوتا ہے جیسے شاندین کا حال ہے جیسے چا ہے ہیں ایسا ہوتا کہ ایسا ہوتا کی براعتراض کر دیتے ہیں۔

التاسع : عقبولیتِ عامه: فقه فی کوئن جانب الله قبولیت ملی ہے۔ ملاعلی قاری ؓ نے لکھا ہے کہ ہر دور میں دوثلث مسلمان حنی رہے ہیں۔

خلیفہ واثق باللہ خلیفہ عباس نے جا ہا کہ سرسکندری کا حال معلوم کرے۔ چنا نچیاس نے اسکے تفحص (تلاش)

اِ انوارالباری نی اس ۲۴۷ مشکوهٔ شریف ن ۲ س ۸۷۸

کے لیے ۲۲۸ھ میں سلام نامی شخص کو جو چند زبانوں کا واقف تھا پچاس آ دمیوں کے ساتھ سامانِ وفد ویکر روانہ کیا۔ بالآخر تلاش کرتے کرتے وہاں پنچے جہاں سدِ سکندری تھی اگر چدا سکے قریب بستیاں کم تھیں مگر صحراء اور متفرق مکانات بہت تھے سدِ فدکور کے محافظ جواسِ جگہ تھے وہ سب مسلمان تھے اورا نکافہ بہ خفی تھازبان عربی وفاری ہولتے تھے۔ توجہاں بادشاہوں کی بادشاہوں کے محافظ جواس فقد خفی پہنچ چکھی ل

العاشر ، وسعتِ عامه: حضرت امام صاحبٌ كتلامله في بهت محنت كى به اسكے بعد برزمانديں فقها عِرضانديں افتها عِرضانديں افتها عِرضانديں افتها عِرضانديں افتها عِرضانديں افتها عِرضانديں افتها عَرضانديں افتها عَرضانديں افتها عَرضانديں افتها علم جواقعات بطور فرض اور تقذير كے مضا تكامم بھى لكه ديا تو كويا اسكواكر قانونى طور پرنافذكيا جائے تو اسكاندراستعداد ہے۔

الحادى عشر،قانون بننے كى صلاحيت:

اکثر زانوں میں فقہ حقی نافذرہی ہے۔امام صاحب کے شاگرہ،امام ابو یوسف قاضی القضاۃ سے جتناعلاقہ اسلامی قلمرو میں تعاوباں فقہ حقی نافذرہی اور بی فلیفہ ہارون الرشید کا زمانہ تعاجبی حکومت برما ہے لیکر افغانستان تک تھی ہندوستان میں جن بادشاہوں نے اسلامی قانون نافذ کی انہوں نے فقہ حقی نافذک عامیری علماء ہندوستان میں جن بادشاہوں نے اسلامی قانون نافذ کی انہوں نے فقہ حقی نافذک عامیری علماء سے مرتب کروایا اس کوفاو کی ہندیہ تھی کہتے ہیں اور عالمگیر نے پچاس سال تک حکومت کی توبیاوفی بالفوذ بھی ہے۔
المثانی عشر ، بیشار ت فبو می: …… حضرت علامہ سیوطی نے امام صاحب کے مناقب میں ایک کاب کھی ہے جب کا نام ہے تعین العمید فی مناقب ابی صنیفہ آنہوں نے لکھا ہے کہ بدروایت لو کان العلم بالمثریا لتناوله رجال من ابناء فارس اس سے مرادام ابو صنیفہ ہیں ۔ متنقل طور پر ۲۷ کا ہیں امام صاحب کے مناقب ہیں کہوں کا گئیں اور تقریبا کا کا کور مبارک ہے ۔ حضرت شاہ ولی اللہ صاحب فرمات میں مرادام مراد کے گئان میں بیسی ہے کہ فی المحنفیة طریقة انبقة ، ہیں کہوہ علوم کا مناء پر ہم فقہ فی کور جے دیے ہیں۔

الثالث عشر ،علاقائى ترجيع: پر چونكه يهال حنى بين فقه فى مارے ملك ميں مدون ہے فاؤى اسكے مطابق بين تواس ليے بھى مم اسكور جي ديتے ہيں۔

تدوین فقه کا طوزِ خاص: ۱۱۰۰۰۰۱ ما صاحب نے جس طرز پر تدوین فقه کا کام کیا در حقیقت وه رسول

اع انوارالیاری ج اص ۱۵۷

یداللہ علی الجماعة ع ہے مؤیدتھا نیز ہرزمانہ میں مقبول خاص وعام رہااوراس لئے امام مالک جیسے امام وجمعد انکی جماعت کے تام مالک جیسے امام وجمعد انکی جماعت کے تدوین کردہ ند ہب سے مستفید ہوئے تھے۔

﴿الامورالمتعلقه بسندالحديث

سندالحدیث بیان کرنے سے قبل اسکے متعلق چندا صطلاحات کا جاننا ضروری ہے۔

الاسناد: فهو الحكاية عن طويق المتن ع يعنى سندبيان كراء

السند: الطريق الموصل الى من الحديث ي يعن ان رواة كانام ب بحكومحدث مديث بيان كرن من يهل ذكر كرتا ب-

المتن:هو الفاظ الحديث التي يتقدم منها السند في جومديث بيان كى جاتى باسكومتن مديث كتي بي ح:سند مديث بيان كرت موري كم ح آجاتى باس مقصود محدث كاتحويل موتا بكراب سند بدلنے كى ح : ...سند مديث بيان كرت موري كي مار قبل بين في ح كى شرح ميں جارتول بين في

- (۱) بير صح سے خفف ہے كذا سطريقه سے بھی صحیح ہے
- (٢)انه ماحو ذ من التحويل كر تحويل سے ماخوذ و مخفف ہے۔
 - (m)الحائل سے مخفف ہے۔
- (۷) سالحدیث سے کفف ہے کہ اب حدیث دوس مطریقہ سے شروع کرتے ہیں۔۔
 - الابن: كبھى ابن كالفظ ذكركرك بابكانام ذكركردية بير_

قاعدہ: اگر بیلفظ ابن دو علمین مناسلین کے درمیان ہوتو اسکا ہمزہ نہ لکھنے میں آتا ہے نہ پڑتھنے میں لینی اگر واقعہ بھی ایبا ہے کہ ماقبل بیٹا اور مابعد باپ ہوتو اس صورت میں پہلے کی صفت ہوتا ہے اور بعد والے کی طرف مضاف ہوتا ہے اگر شروع سطر میں آجائے اور ہو بھی علمین مناسلین کے درمیان تو نفظ ابن کا الف کھنے میں آئیگا پڑھنے میں نہ

ل انوارالباري خاص ۱۵۵ بحواله طبراني عرز ندى سوس تا مقدماو جزالمها لك جاص ۱۸ مع مقدمه او جزالمها لك خياص ۱۷ هـ الينه له مقدمه او جزالمها لك خاص الم

آیگا۔ اگر غیر متناملین کے درمیان ہوتو لکھنے میں آئے گا اور پڑھنے میں بھی آئے گا۔ اس وقت میصفت نہیں سے گا

بلکہ ماقبل کے لیے بدل سے گاجیسے امجمہ بن پزید ابن ماجہ آ۔ عبداللہ بن عمر وابن ام مکتوم سے اسحاق بن ابراھیم ابن

راہویہ سے اسماعیل بن ابراھیم ابن علیّہ ۵۔ مقد او بن عمر وابن الاسود ۲۔ عبداللہ بن مالک ابن بحین المدے عبداللہ

بن الی این سلول (ان مذکورہ اعلام میں دوسرے ابن کا الف ککھنے میں بھی آئے گا اور پڑھنے میں بھی)

بیانِ سند میں محدث بھی علم ذکر کرتا ہے بھی لقب اور بھی کنیت اور بھی نسبت ذکر کرتا ہے۔ اس لیے سند ذکر کرنے سے قبل ان چیز وں کا ذکر کرتا بھی ضروری ہے۔

العَلم: جوذات معين يردلالت كر___

لقب: و واسم ہے جوذات معین پر ولالت کرے معصف و دحہ یا ذامہ کے جیسے اعمش جمعنی اندھا انفش جمعنی پردوالت کرے معصف و دحہ یا ذامہ کے جیسے اعمش جمعنی اندھا انفش جمعنی پندھا۔ فرز دق جمعنی گول جمیا۔

کنیت: جوابن اوراب کی صفت کے ساتھ ذکر کی جائے بھی بیاضافت حقیقت پر بنی ہوتی ہے اور بھی مجاز پر بنی ہوتی ہے اور بھی مجاز پر بنی ہوتی ہے جیسے این عرصفت حقیق ہے اور صفت مجازی ابو ہر بر اور ابوتر اب ہے۔ قیم یا ابا تو اب! حضور علی نے حضرت علی سے فرمایا تھا اور بھی بیاضافت برکت کے لیے ہوتی ہے جیسے ابوالفتح اور ابوالبرکات۔

نسبت: سیائی الله کی جاتی ہے علاقہ یا قبیلہ کی طرف نسبت کر کے جیے مدینة النبی علی کی طرف نسبت ہوتو مدنی ہوتو مدنی ہوتو مدنی ہوتو مدنی ہوتو مدنی کہا جاتا ہے۔

العرف: جونام كى كاتعيين كے ليمشهور بوجاتا ہے۔

المتخلص: اس مختصرنام كوكمتي بين جوشاعرا ين كلام كوختم كرت وقت استعال كرتا بيخلص بمعنى جان چهرانا-

فائدہ: سنبت پہلے علم کی صفت بے گی جیسے یجیٰ بن وقاص اللیثی ۔ اللیثی ، یجیٰ کی صفت ہے نہ کہ وقاص کی ۔ بیتو سند کی بات ہورہی ہوتو جسکے ساتھ ذکر کیا جائے وہ نسبت کی ۔ بیتو سند کی بات ہورہی ہوتو جسکے ساتھ ذکر کیا جائے وہ نسبت اس کی صفت ہوگی ۔

حدثنا و اخبرنا: حدثنا كالخفف ثنا بادراحبرنا كالمخفف أنا ب

الفوق بین التحدیث و الا خباد: حضرات متقدین بین امام زبری اوراکشرابل مجاز اورامام ابو حنیفه کا یمی قول ہے کدان میں کوئی فرق نہیں ہے البتہ متاخرین کے نزدیک فرق ہے اگر شاگر و پڑھے اوراستاه صاحب سیں تو اکیلے ہوئی صورت میں احبونی آورزیادہ ہونے کی صورت میں احبونا استعال کیا جاتا ہے اگر استاد پڑھے اور شاگر دینے حدثنا و حدثنا . جوحضرات اسمیں فرق کرتے ہیں ان کواسمیں بحث کرنا پڑتی ہے کہ کونیا اضل ہے کیونکہ اس صورت میں تلمیذ تیقظ سے بیٹھتا ہے ۔ بعض حضرات فضل ہے بعض حضرات فرماتے ہیں کہ احباد افضل ہے کیونکہ اس صورت میں تلمیذ تیقظ سے بیٹھتا ہے ۔ بعض حضرات فرماتے ہیں کہ تحدید کے ساف صالحین اور صحاب و تا بعین کا طریقہ ہے۔

قرأةً عليه: يه ياتو مصدر منى للفاعل بي يامنى للمفعول ب قارياً عليه يا مقرو اعليه: يا مفعول مطلق بي يقرأقراء قُعليه يا قرء قراء قُعليه يه الله وقت بولا جاتا ب جب جماعت يس ايك پر صف والا موباتى سنف والله وباتى سنف والله وباتى منفوال به والله وباتى سنف والله و

وبه قال: بهر جب سند پڑھی جاتی ہے تو شروع میں وبہ قال کے کلمات کیے جاتے ہیں بی مخفف ہے وبالسند المتصل من القادی الی المصنف قال . قال کا فاعل مصنف ہے یعنی سند متصل کے ساتھ ہم کہتے ہیں کہ مصنف نے کہا۔

«سلسله اسناد»

سند کے تین جھے ہیں۔

الخيرالساري

- (۱)....خطرت شاه ولی الله صاحبٌ تک۔
- (٢)....حضرت شاه ولى الله صاحبٌ يسيم صنف كتاب تك _
- (۳) مصنف کتاب سے حضور علیق تک _ آخری حصہ ندکور ہوتا ہے اور دوسرا حصہ شاہ ولی اللہ سے مصنف کتاب تک بعض کتاب مصنف کتاب تک بعض کتابوں میں نہیلے تک بعض کتابوں میں مطبوعہ میں جاتا ہے ۔ اس مقام میں پہلے اور دوسرے حصے کی تفصیل ذکر کی جار ہی ہے۔

فائده: اولاً سندالحديث واجازة كاعلس ديا جاربائ جوحفرت مولانا خير محمد صاحب نورالله مرقدهٔ اپن شاگردول كوعنايت فرمايا كرتے تقے اور ثانيا اس سندالحديث واجازية كاعلس ديا جاربائے جواستاؤمحتر م تدريس ميس مصروف تلا غذہ وعلاء كوعظا فرماتے ہيں۔ بسم الله الرجلى الرجم حلك نواترت الانمعلى الانسان - ور فع درج بناربيريد الاحسان - واقر عبن عسانيد الفضل الامتنان والصلاة والسلام على سينا وجيب الحمل الذي امتازت امتنه بحفظ السند مدى الازمان وعلى الدامي المجمى بعهم من ثمة الدين في الرواية والروية وعلى المجتهدين منصوستمامي قال المالة بون القويدمن الله تا الدين في الرواية والروية وعلى المجتهدين

السند ملى كالازمان وعلى الراصحاب من بعهم من منه الدين عالقواية والروية وعط بجهاب منهم مسيما من قال الرابي القوليم من الله يبا الديمية ،

امتا بعلى فيقول العبالواي المن حريب كومن حبيم مع كابن لهى بخش غفها دوالعرش ال لاخري المرين المولوي حبيت مرح عنى الاستوكار وقالله سلاد العلم العلى في الاستوكار وقالله سلاد العلم العبل في المرين المهامين الهامين المهامين المنامين المامين الموامين القراري والتحريم من المريد والتمال والتعريم التي المنابق والمريد والتمال والتعريم المنابق المنابق المنابق والمنابق والمنابق والمنابق والمنابق المنابق والمنابق والمنا

الشيخ آجرعلى سبا مغودى عن الشيخ المنه فه الافاق الشيخ عن التحال المتحكوة وصول المهادة عن قطب الافتاب عن فيوض لوخن حفظ مولينا في المنظر المنظر

المعرفة واليقان العاف الله حضرة مولننا محمل المعرف المعرب المتعرب في الرين المولوى محمد من المولوى محمد المولى ال

من الفقة على فده بله لا ماراهما المحنب فترد و آن يجبل نفو عالله تعالى نصب عينيه خانفًا عن القيام بوم المحشوبين بدير وان المرض على لهذا المرتبية ولل القاد صافًا انفاس عرو الغزيز في طاعتراس تعاودك في في عُدواتها وروحاتها قان لاينساني ومشامح الكوام عن الدعوات التسالحة في جلواتها وخلواتها وصلى الله

تعالى على خيرخ لقبرس ونا ومولنا عيره على البرصيم بسلم

اله بلسانه وم فر ببنانرالعبدالكيب فرس فرس عفل ولوالديرولمشانت الووف لاحل به المادم العلم المائت الووف لاحل بالم خادم الطلبتر بالمكت العربيتر خير لملادس بمُلتان في ١١ جادي الرحري سلاسانر جوي لمقتتن - المرابع المربع المر



بسم الله الرمس الرميم **سَعَدُ الْحَدِيْثِ وَإِجَازَتُهُ**

مرن

الشيخ محمد صديق بن حاجى شيخ الحديث بجامعة خير المدارس ملتان باكستان

حمدًا لمن تواترت آلاتُه على الإنسان، ورفع درجته بمزيد الاحسان واقر عينة بمسانيد الفضل والامتنان، والصلاة والسلام على سيدنا وحبيبنا محمد الذي امتازت أمّتة بحفظ الاسانيد مدى الأزمان وعلى آله وأصحابه ومن تبعهم من أثمة الدين في الرواية والروية وعلى المجتهدين منهم لا سيّما من نال الذين القويم من الثريا الدّرية.

قال النبي عَلَيْكُم: "نضّرالله عبداً سمع مقالتي فحفظها ووعاها وأدّاها كما سمع فربّ حامل فقه غير فقيه ورب حامل فقه إلى من هوافقه منه."

أمابعد، فيقول العبد الراجى الى رحمة ربه الرحيم محمد صديق بن حاجى غفرله ولوالديه ولمائحه أن الأخ في الدين الشيخ

رزقه الله تعالى سدادالعلم والعمل استجازني بحسن ظنّه سندى من المشائخ لرواية الحديث الشريف. فأجزته متوكّلاً على الله ثقةً بالله.

السندالأول: ما أقرأنى وأجازنى الشيخ خيرمحمد مؤسس جامعة خيرالمدارس بملتان و رئيس المدرسين وشيخ الحديث سابقًا قال حدثنى الشيخ المعظم الشيخ محمد يسين السّرهندى صاحب الاهتمام وشيخ الحديث سابقًا فى المدرسة الدّينيّة الموسومة باشاعة العلوم ببلدة بريلى، قال حدثنا شيخ شيوخ الزمن الحافظ للصحيح والحسن العارف بالله الشيخ محمودالحسن الديوبندى عن شمس الاسلام قاسم العلوم والحكم الشيخ محمد قاسم النانوتوى وصاحب الرشد والهداية مولانا رشيد أحمنًا جنجوهى كلاهما عن المحدث العارف بالله الغنيّ الشاه عبدالغنيّ المجددي الدهلوى وعن مظهر الخفيّ والجليّ

الشيخ أحمد على السهارنبورى كلاهما عن الشيخ المشتهر في الأفاق الشيخ محمد اسخق الدهلوى ح وحصل له الاجازة عن قطب الأقطاب مخزن فيوض الرحمٰن الشيخ فضل الرحمٰن الجنج مرادابادى كلاهما عن قدوة الأنام حجة الإسلام الفائق بالفضل والتمييز الشيخ الشاه عبدالعزيز الدهلوى عن أبيه العارف بالله محب أهل الله الشيخ الشاه ولى الله الدهلوى رحمهم الله تعالى.

السند المشانى: ما أقرأنى وأجازنى الشيخ خيرمحمد الموصوف اولاً عن العارف بالله مجددالملة حكيم الامة حضرة الشيخ الشاه أشرف على التهانوى عن جامع الشريعة والطريقة شيخ المشائخ فضيلة الشيخ محمد يعقوب النانوتوى عن الامام النحرير المحدث الكبير الشيخ الشاه عبدالغني المذكور الى آخره.

السند الثالث: ما أجازنى الشيخ خيرمحمد غفرلة عن إمام الأئمة في المنقول والمعقول مركز دوائر الفروع والأصول عديم النظير في الأعصار شيخ الأخيار والأبرار الشيخ السيد محمد أنور الشانة الكشميرى ثم الديوبندى عن إمام أهل المعرفة واليقين الشيخ محمودالحسن الديوبندى الخ.

السندالرابع: ما أقرأنى وأجازنى رئيس المدرسين بمظاهر العلوم سهار نفور ثم بجامعة حير المدارس في ملتان الشيخ عبدالرحمٰنُ الكاملبورى عن الشيخ حليل أحمدُ السهار نبورى صاحب بذل المجهود شارح أبي داؤد عن الشيخ محمد مظهر النانوتوى والشاه عبدالغني كلاهما عن الشيخ الشاه محمد اسحق.

السندالخامس: ما أقرأني وأجازني الشيخ عبدالشكور الكاملبوري مدرس بجامعة خير المدارس بسند الشيخ عبدالرحمٰن الكاملبوري المذكور الخ.

السند السادس: ما أقرأنى وأجازنى المفتى محمد عبدالله الديروى رئيس المدرسين بجامعة حير المدارس عن شيخ الإسلام الشيخ السيد حسين أحمد المدنى رئيس المدرسين سابقا بدار العلوم ديوبند في الهند عن شيخ الهند محمو دالحسن.

السندالسابع ، ما أجازنى الشيخ محمد شريف الكشميرى عن شمس العلماء الشيخ السيد شمس الحق الافغانى عن الشيخ السيد محمد أنور شاة الكشميرى عن شيخ الهند محمودالحسن .

السند الشاه ولى الله الدهلوى مسندالهند. ما أجازني المفتى محمد عبدالله الديروى عن الشيخ محمد يوسف البنورى صاحب معارف السنن في شرح جامع الترمذي بجميع أسانيده، كما حصل له الإجازة عن الشيخ المحدث المفسر الشيخ عبدالرحمٰن الامروهي وحصل له الاجازة عن الحسن بن المحسن وحصل له الاجازة عن الشيخ فضل الرحمٰن الجنج مرادابادي أنه قرأ على الشيخ الشاه عبدالعزيز عن الشاه ولى الله الدهلوى مسندالهند.

السند التاسع: ما أجازني الشيخ القارى محمد طيب مدير دار العلوم ديوبند سابقا عن السيد محمد أنور الشاة عن الشيخ محمودالحسن.

أما أسانيد شاه ولى الله مسند الهند فمذكورة فى القول الجميل وكذلك أسانيده الى أصحاب السنن ومصنفى كتب الحديث فى ثبته وكذا فى اوائل الصحاح الستة واليانع الجني فى أسانيد الشيخ عبدالغنى ونذكر ههنا سندًا واحدًا الذى اتصل به الطريق بواسطة المحدثين المذكورين إلى الجامع الصحيح للبخاري ثم إلى رسول الله عليه الذى سمّى قوله وفعله وتقريره حديثا.

قال الشيخ ولى الله أخبرنى الشيخ أبوطاهر محمد بن إبراهيم الكردى المدنى قال أخبرنا والدى الشيخ ابراهيم الكردى المدنى قال قرأت على الشيخ أحمد القشاشى قال أخبرنا أحمد بن عبدالقدوس أبوالمواهب الشناوى قال أخبرنا الشيخ شمس الدين محمد بن أحمد بن أحمد بن محمد الرملى عن الشيخ أحمد زكريا بن محمد أبى يحيل الأنصارى قال قرأت على الشيخ الحافظ أبى الفضل شهاب الدين أحمد بن على بن حجر العسقلانى عن ابراهيم بن أحمد التنوخى عن أبى العباس أحمد بن أبى طالب الحجار عن السراج الحسين بن المبارك الزبيدى عن الشيخ أبى الوقت عبدالأول بن عيسى بن شعيب السنجرى الهروى عن الشيخ أبى الحسن عبدالرحمن بن مظفرالداؤدى عن أبى محمد عبدالله بن أحمد السرخسي عن ابى عبدالله محمد بن يوسف بن مَطَر بن الصالح بِشُر عن أبى محمد عبدالله بن أحمد السرخسي عن ابى عبدالله محمد بن يوسف بن مَطَر بن الصالح بِشُر الفربري عن مؤلفه أمير المؤمنين في الحديث الشيخ أبى عبدالله محمد بن إسمعيل بن ابراهيم البخاري.

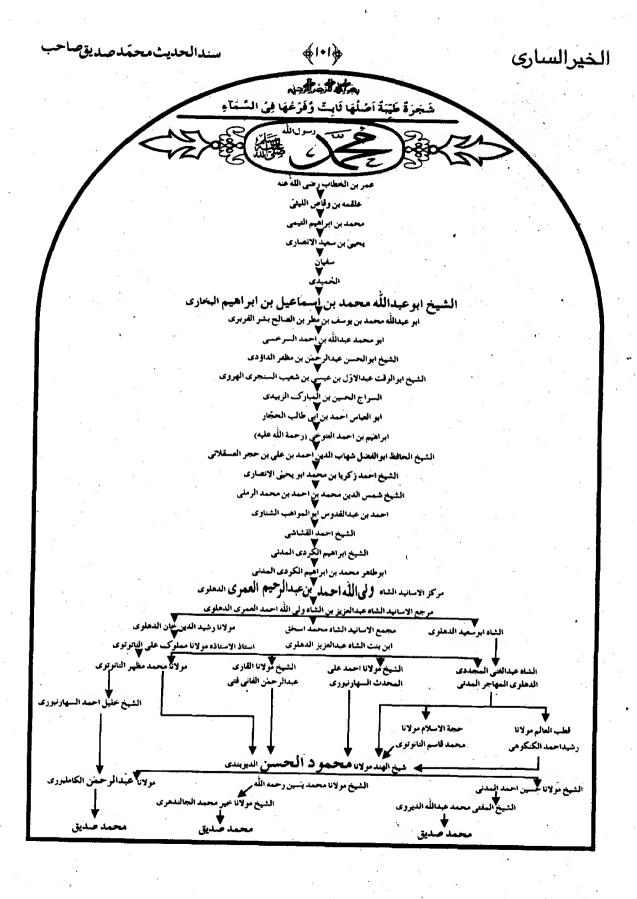
السندالعاش : ما أجازني محمد يسين بن محمد عيسى الفاداني المكي شيخ الحديث والاسناد بدار العلوم الدينية مكة زادها الله شرفًا وكرامة سائر أسانيده المذكورة في الرسالة المسماة

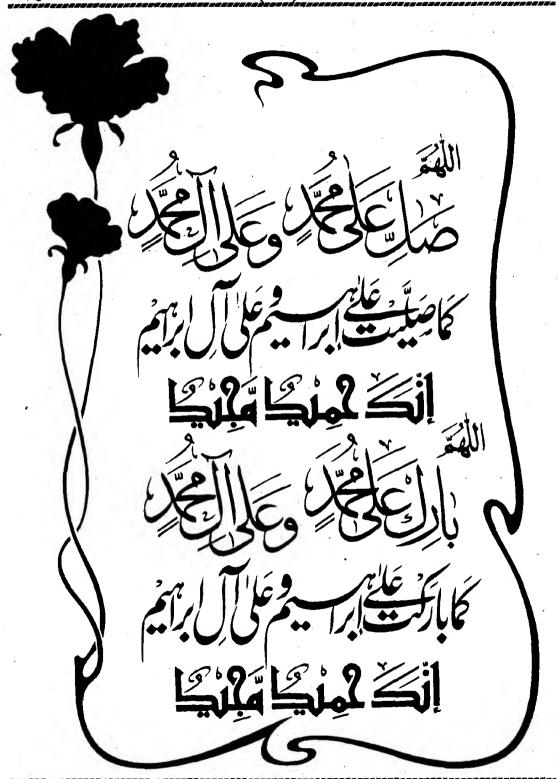
بالعقد الفريد من جواهر الأسانيد، ونذكر منها سندًا واحدًا عاليًا بالرجال المعمرين إلى أمير المؤمنين في الحديث الإمام الشيخ أبي عبدالله محد بن اسمعيل البخاري.

قال أرويه عاليًا عن المعمر الداعى إلى الله السيد على بن عبدالرحمٰن الحبشى الكويتانى الجاكرتاوى عن المعمر فوق المائة الشيخ الحاج عبدالحميد زكريا بن عبدالجليل بن عمر الصيني الأصل الكويتانى الجاكرتاوى عن الامام القطب السيد شيخ بن أحمد بن عبدالله آبن شيخ بن عبدالله بن على بافقيه محدث سرابايا عن المعمر السيد على بن عبدالبر الونائى المصرى نزيل مكة عن المعمر مائة وثلاثين سنة السيد عبدالقادر بن محمد بن أحمد الأندلسي عن المعمر مائتين وخمسًا وسبعين سنة يوسف الطولوني عن القاضى زكريا بن محمد الأنصارى عن الحافظ ابن حجر العسقلاني وهو عن البرهان ابراهيم بن صديق الدمشقى الشهير بالرسام عن المعمر مائة وأربعين سنة عبدالرحيم بن عبدالأول الأوالي عن المعمر ثلاثمائة سنة محمد بن عبدالرحمٰن بن شاذ بخت الفرغاني عن المعمر مائة وثلاثا وأربعين سنة يحيى بن عمار بن شاهان الختلاني عن محمد بن يوسف الفربري عن الإمام البخارى. فيكون بين الونائي والبخارى تسعة شيوخ وأغلى مَا رواه البخارى ثلاثة فتقع للونائي ثلاثياته بنلاثة عشر، وهذا سند عال جدًا.

وأوصى نفسى والأخ فى الدين المؤملى إليه بتقوى الله فى السرّ والعلن وترك الفواحش ما ظهر منها وما بطن عاضًا بالنواجذ على ما كان عليه الاسلاف الصالحون والمة السنة والجماعة المعتصمون بالكتاب والسنة المجتنبون عن طرق البدعة والضلالة، وأن يجعل أنفاس عمره فى نشر العلم لا سيّما فى علم الحديث الشريف، وأن لا ينخلع من تقليد أحد من الأثمة الأربعة المتبوعين لا سيّما للحنفى أن يقتنى من الفقه على مذهب الامام الهمام ابى حنيفة، لأن ترك التقليد اتباع غير سبيل المؤمنين، وأن لا يجعل الدنيا أكبر همّه أو مبلغ علمه، وأن يصرف عمرة فى طاعة الله وذكره فى غداوته وروحاته، وأن لا ينسانى ومشائخى من الدعوات الصالحة فى جلواته وخلواته.

وصلى الله تعالى على خير خلقه سيدنا ومولانا محمد وعلى آله وصحبه وسلم.





過激性

حضرت امام بخاری نے اپنی عظیم کتاب کوہم اللہ سے شروع فرمایا کیونکہ صدیث شریف میں آتا ہے ((کل امر ذی بال لا يبدأفيه بذكر الله وببسم الله الرحمن الرحيم فهو اقطع » ل

سوال: حفرت مصنف ناسميدوالى حديث كى بناء پرائي كتاب كوبسم الله سيشروع فرمايا حالا نكد حديث پاك يوس ال المديد الله عبدا الله يد الفيده بالحمداقطع) يا يك اور حديث من ال طرح ب ((كل كلام الميداء فيه بحمدالله فهو اجذم) يا لهذا الله حديث كتحت ان كوهم بارى تعالى ذكر كرنى چا بيت مي يعن شميدوالى حديث بركل كيا اور الحمد لله والى حديث مباركه يركمل كيون نبيل كيا؟

فائله : سوال: بهم الله عن شروع كرن برنبيس بلكه ال بره كهمد بارى سے كتاب كا آغاز كيون نبيل فرمايا؟ الله كا متعدد جوابات ديئے گئے ہيں۔

الجواب الاول:ضعف حدیث: حفرت امام بخاری نے تحمید والی حدیث کوضعف سمجھائ اس لیے اس کو نہیں کیا۔ یہ جواب کمز ورہے کہ ضعیف سمجھائ اس لیے اس کی وجہ سے پر کل نہیں کیا۔ یہ جواب کمز ورہے کہ ضعیف ہونے کی وجہ سے کتاب میں درج نہیں کی تو ٹھیک ہے لیکن یہ انکی شان عظیم کے خلاف ہے کہ حدیث کے ضعیف ہونی کی وجہ سے مل چھوڑ دیں جمل کی لائن میں ضعیف پر بھی عمل کیا جاتا ہے اور پھر وہ امام بخاری جو ہر باب کے شروع میں خسل کرتے ہیں دو رکعت نقل بڑھتے ہیں۔ ہ

الجو اب الثانى:عدم الامر بالكتابة: تحميداس لينبير لكسى كمديث مين لم يكتب كالفاظنين بكد المجو اب الثاني بيكتب كالفاظنين بكد لم يبدأ كالفاظ بين بوسكتا ب كمشروع كرنے تقبل يرصل بوت

سم عمدة القارى ج1 ص1ا هے مقدمہ لامع الدرارى ص٣٦ معلم علام علام ص1ا ا معارف السنن من مس عمدة القارى جما حساا ع ابن ما بيض ١٣٥ مطبع مجتبانى لامور، ع الوداؤد من ٢ ص ١٣٤ الدادية ما تان الجو اب الثالث: حدیث پاک دوطرح سے مروی ہے بسم اللہ سے اور بالحمد سے اور جو کتاب کسی جاتی ہوتی ہیں ا دخط اور رسالے کی حیثیت ۲ د فطبی کی حیثیت بہم اللہ کی حدیث خطوط کے بارے میں ہے جبکہ تحمید والی حدیث خطبات کے لئے ہے۔ گویا امام بخاریؓ نے اپنی کتاب کو ایک خط کی حیثیت دی ہے کہ امت کی طرف ایک خط ہے اس لیے الجمد للہ سے کتاب کا آغاز نہیں فرمایا یا

الحواب الرابع: قرآن پاک کر یپ نزولی پر قیاس کیا ہے کوئکہ جب قرآن پاک نازل ہونا شروع ہواتو ہم اللہ بھی ہرسورت کے شروع میں فاصلے کے لیے نازل ہوتی تھی تو قرآن پاک کی تر یپ نزولی کا اعتبار کیا یعنی تاکی بالقرآن ہے، اس لیے کہ سب سے پہلی آیت ﴿ إِقُ سِ أَ بِسائسم رَبِّک ﴾ اور سب سے پہلی سورت ، سورت مرث ہوئی ہے ان دونول کے شروع میں الحمد اللہ نہیں ہے ی

الجواب الخامس:هضماً لنفسه: حضرت الم بخاريٌ نا بي كتاب كوذى بال بي نهيس مجهااس لي خطب نهيس مجهااس لي خطب نهيس كون يرك محاب الله خطب نهيس كون د كتاب الله كون دى بالنهيس هيء عنه كتاب الله كيون دى بالنهيس هيء ع

الجواب السادس: سنعارض الحديثين: روايتي متعارض تعين كي جگه بم الله عيشروع كرني كاظم قاكسى جگه الحمد لله عيشروع كرني كاظم بوتو تعارض كيوجه عينا قابل عمل تعين اس لي عمل نبين كياليكن به جواب كمزور به في اس ليے كه تعارض دور بوسكتا به كه ايك كوابتداء هيتى پرمحمول كرلوجو كه تمام ماعدا سے مقدم بوتا به اور دوسرے كوابتداء اضافي پرمحمول كرلوجو كه بعض ماعداء سے مقدم بوتا به ياعرفي پرجوكه مقصد سے مقدم بوتا بيد

الجواب السابع: مقصودتوذكرالله باورتحميد وتسميد دونون كامصداق ذكرالله بالهذاا يك دوسر يركفايت كرف في المسابع الم

ھے فیض الباری جا ص ایر فتح الباری جا صھ بے طبقات علامہ کی جا ص9 مرقات جا ص

لے ایساح البخاری جماع ص ۳۹ عمدة القاری جماع ص۱۲

ع ِ تَقْرِیرِ بَخَارِی جَا ص ۲۴ ،عِمه ة القاری جَا ص ۱۳،۱۳۲ ، فَتَحَ الباری جَا بِس۵ سو تَقْرِیرِ بَخَارِی جَا ص ۲۲

س تقریر بخاری جا ص ۲۳ فون از م

المجو اب المتاسع: ایک جواب حضرت شی ناکسا به حضرت مولانا محمد یوسف صاحب کے خت اصرار پر یہ ناکارہ ۱۳۸۳ ہیں تج وزیارت کے لیے گیا تھا وہاں مدیند منورہ میں ایک خواب دیکھا کہ بیناکارہ مجد نبوی میں بخاری شریف پڑھانے پر مامور ہوا مجھے بہت ہی فکر سہم لائن ہوئی اورا پی ٹا قابلیت کا استحضار ہوا۔ بار بارعذر معذرت بر میں نے کہا کہ میں کتابیں وغیرہ ساتھ نہیں لایا کہ بوقت منرورت مراجعت کر سکوں، حضرت امام بخاری نے فرمایا کہ میں باس بیشار ہونگا اور مذود بتار ہونگا۔ سبق شروع ہوگیا میں نے شروع میں خطبہ ند ہونے کے متعلق توجیہات جو ہم کیا کرتے ہیں، شروع کیں امام بخاری ساتھ سے انہوں نے فرمایا کہ جتنی توجیہات تم نے کی ہیں انہیں سے ایک وجہ بھی نہیں ہوئی بلکہ میں نے ابھی بڑے بڑے کہا تھا تھا ابھی تک نہیں ہوئی بلکہ میں نے ابھی بڑے بڑے کہا تھا تھا ابھی تک تر تیب نہیں دی تھی کہ میری وفات ہوگی اس لیے شروع میں خطبہ وغیرہ کی جوز تیب ہوتی ہا سے میں افتیار نہ کر سکا المجو اب المعاشو: ایک جو اب علام عینی نے دیا ہے کہا م بخاری نے اس جو اب سے بخاری المجو اب المعاشو: سے بخاری کے نین نہیں فر مایا اس لیے کہ ساقط ہوگی۔ یکین اس جو اب کھا تھا ہوگی ابوگا۔

کے نیخ پر اعتادا تھ جائے کا کہ جمر ساقط ہوگئی۔ ہو تو اور بھی بہت کے مساقط ہوگیا ہوگا۔

کے نیخ پر اعتادا تھ جائے کا کہ جمر ساقط ہوگئی۔ ہو تو اور بھی بہت کے مساقط ہوگیا ہوگا۔

اعتراضِ عقلی: حدیث (کل امو ذی بال لم یبدافیه بذکرالله و ببسم الله الرحمن الرحیم فهو اقطع)) آس بگل نیس بوسکا کیونکه اس بگل کر تاسخر م حال ہے اور سخر م حال خود کال بوتا ہے لہذا اس مدیث پر عمل کرنا کال ہے۔ حدیث سے معلوم ہوا کہ ہر ذی بال امر کو لیم اللہ سے شروع کرنا چاہیے ۔ ہم سوال کرتے ہیں کہ لیم اللہ خود امر ذی بال ہے یا نہیں؟ ظاہر ہے کہ امر ذی بال ہی ہے تو اس ہم اللہ سے تیل بھی ہم اللہ ہونی چاہئے اور وہ خود امر ذی بال ہوگی تو اس سے تل اور ہم اللہ ہونی چاہیے ہلہ م جرا پی تسلسل لازم آئے گا اور تسلسل کال ہے؟

جواب: بعض کلیے ایے ہوتے ہیں جن میں استناء عقلی ہوتا ہے یعنی اس کلیے سے بعض جزئیات مستنیٰ ہوتی

سم پارها سورةالبقرة آيت٢٠

ل تقریر بخاری جا ص۱۲

مع عدة القارى جي صسا

س عمدة القارى جا صرا

ہیں جیسے ﴿إِنَّ اللهُ عَلَى مُحُلِّ شَيْءٍ قَدَيُو﴾ "بِشكالله برچز برقادرہے" عن تواللہ پاك اپناشر يك پيدا كرنے پر بھی قادر ہواليكن بيد انہيں كريں گے؟ مانا پڑے كاكہ يرجالات عقلاً متثنى ہوتے ہیں كيونكہ تحت القدرة ممكن ہوتا ہے نہ كہ عال اس طرح چونكہ مبد أور مبدأ منہ ميں تغاير ہوتا ہے تو جب مبدأ منہ ہم اللہ ہے تو يعقلى طور پراس حكم سے متثنى ہوگ ۔
عول اس طرح چونكہ مبدأ اور مبدأ منہ ميں تغاير ہوتا ہے تو جب مبدأ منہ ہم اللہ ہے تو يعقلى طور پراس حكم سے متثنى ہوگ ۔
تو كيب : سب بسم اللہ جار مجرور ہے اسكام تعلق يا تو اسم ہوگا (على فد ہب بھريين) يافعل (على فد ہب کوئين)، پھر متعلق مقدم ہوگا ياء وَخر۔

رائمے اول: بعض حضرات ُفرماتے ہیں اسم مقدم محذوف ہوگا ، مَبْدا بَمعَیٰ شروع کرنا۔ یا اَبْتَدِاً فعل محذوف ہوگا پھر بیغاص فعل ہوگا یاعام ۔خاص فعل سے مراد ہرکام کے وقت مناسب فعل نکالا جائے ، یاعام فعل ہوجیسے اَبْتَدِاً یا اَشُوع ُ۔ اس میں دورائیں ہیں اے خاص فعل نکالا جائے ۲۔عام فعل نکالا جائے۔

رائسے شانسی: دوسری رائے بیہ کہ و خرہو۔ راج بیہ کہ و خرمانا جائے معنی یوں کیے جائیں گاللہ ہی کے نام سے شروع کرتا ہوں جو برا امہر بان اور نہایت رحم کرنے والا ہے۔

و جه تو جیعے: یاس لیے رائے ہے کہ ہم الله مشرکین کے ردین نازل ہوئی اورائی ہم اللہ یوں تھی ہسم الله والات و السعنوی ،ردتب ہی ہوسکتا ہے جب مؤخر مانا جائے کیونکہ قاعدہ ہے التقدیم ما حقہ التاخیو یفید المحصو .اوراگر مقدم ما نیس تو ترجمہ یوں ہوگا اللہ کے نام سے شروع کرتا ہوں جو کہ بڑا مہر بان ہے نہایت رحم کرنے والا ہے ۔اس تقریر سے یہ اشکال بھی رفع ہوگیا کہ ہم اللہ میں اللہ کی دوصفتیں کیوں لائی تی ہیں؟ وجہ اس کی یہ ہے کہ شرکین لفظ اللہ کے بعددو بتوں کا ذکر کیا کرتے تھے۔ مشرکین لفظ اللہ کے بعددو بتوں کا ذکر کیا کرتے تھے۔ الشکال: لفظ اللہ کے ساتھا نہی دوصفتوں (الرحمٰن الرحم) کو کیوں لائے ؟

الجو اب: سسانسان كين ادواري المابتدا ٢ مابقا ٣ مانتها ابتداء من صفت ربوبيت جابيك اورلفظ الشهدات كرتاب ابتداء من الناده بادرلفظ حمل بقاءوالى صفت بردال ب الله با المرحن والى رحمت و نياك لا ظاست بادر رحم والى رحمت آخرت ك لحاظ سے ب

الفرق بین الرّحمٰن و الرّحیم: رحٰن میں الفاظ زیادہ ہیں بنبت رحیم کے اور قاعدہ ہے: زیادہ المسانسی تدل علی زیادہ المعانی: تو معانی بھی رحمٰن میں زیادہ ہو نگے معلوم ہوا کہ رحمٰن کی رحمت سے مرحوم ہونے والے کم ہیں کیونکہ رحمٰن کی رحمت سے مرحوم کا فربھی ہیں ہونے والے کم ہیں کیونکہ رحمٰن کی رحمت سے مرحوم کا فربھی ہیں

مسلمان بھی الیکن صفت رحیم سے مرحوم صرف مسلمان ہیں شیخ سعدیؓ نے فر مایا۔

اديم زمين سفره عام او ست چه دشمن برين خوان يغماچه دوست ل

یدجب ہے جبکہ مبالغہ فی الکم ہواگر مبالغہ فی الکیف لیاجائے تو مفہوم برعکس ہوجائے گارمن میں مبالغہ ہے بیآ خرت کی صفت بن جائے گی اور دیم دنیا کی صفت ہوگی یعنی دحمن الآخوۃ و دحیم الدنیا ہے مس رحمتیں زیادہ کھا ہے کہ مبالغہ فی الکم کے کاظ ہے بھی دحمن الآخوۃ و دحیم الدنیا ہے کیونکہ آخرت میں رحمتیں زیادہ بیں اور الی رحمتیں کہ نہ آج کی انسان نے دیکھیں نہ نی کسی انسان کے دل پر انکا کھڑکا گزرا ہے جیسا کہ آپ علی ہے نے فرمایا ((ما لا عین رأت و لا اذن سمعت و لا خطر علی قلب بشر)) یہ جب فرشتہ جنتی کے سامنے پھل لا پیگاجتی کھا بھی کھا ایم کھا یا ہے فرشتہ کے گا ((اللون لون واحد والطعم طعم آحور))
اعتو اص : سرحمٰن اور دیم رحمت سے شتق ہیں رحمت کہتے ہیں رقب قلب کو واللہ تعالی کے لیے بیصفات نہیں اعتو اص : سے دیمن اور دیم رحمت سے شتق ہیں رحمت کہتے ہیں رقب قلب کو واللہ تعالی کے لیے بیصفات نہیں

اعتراض: رحمن اور جم رحمت مشتق بین رحت کہتے ہیں رقب قلب کوتو الله تعالی کے لیے بیصفات ہیں ذکر ہونی جا ہیں کیونکہ اللہ تعالی کے لیے بیصفات ہیں اللہ تعالی جوارح سے پاک ہیں نیز بیانفعالیت ہے جس سے اللہ تعالی پاک ہیں؟

جواب ا: بیا یک عام جواب ہے کہ رحمت کا ایک مبدا کہ وتا ہے اور ایک انتہا وعایت ہوتی ہے۔ مبداً رقبِ
قلب ہے اور غایت احسان وجود ہے تو اللہ تعالی پر رحمٰن ورحیم کا اطلاق انتہا وغایت کے اعتبار سے ہے۔
فسائلہ ہ: اللہ تعالی پر رحمت کا اطلاق مجاز أہے اور مخلوق پر حقیقتا۔ افسوس ہے ایسے محققین پر کہ اپنی شان کے لیے
جومنہ میں آئے کہ دڑا لیتے ہیں اللہ تعالیٰ نے سو حصے رحمت میں سے ایک حصہ مخلوق کو دیا اسکوتو حقیق کہ دیا اور نتا نو سے
صے اللہ تعالیٰ کے یاس ہیں اسکی رحمت کو مجاز اُ کہ دیا۔

جواب ٢ صيح جواب يه بي كررمت كي دوسمين بين (١) صفت مخلوق (٢) صفتِ خالق ـ

یتعریف اُس رحت کی ہے جوصف مخلوق ہے اور نفی اُس رحت کی ہے جوصف خالق ہے اور خالتی کی جو صفت ِخالق ہے اور خالتی کی جو صفت ِ حالتی ہو صفت رحت ہے اسکی تعریف ہے 'الاحسان والحود'' تو اللہ تعالی پر رحت کا اطلاق حقیقتا ہے نہ کہ بجاز آ۔

الاسم : …… لفظ اسم کے بارے میں کو فیوں اور بھر یوں کا اختلاف ہوگیا ہے یعنی اصل میں وسم تھایا سمق یعنی فاکلمہ محذوف ہے یالام کلمہ تو کو فیوں کا خیال ہے ہے کہ فاکلمہ محذوف ہے عندالبھرین لام کلمہ محذوف ہے یعنی اصل سمؤ تھا۔

لے. بوستان ص۲

ع بخاری ش ۲۰ ۲ ش

ان اساءكو محذوفة الاعجاز كتي بير

و جه تسمیة: اسم کواسم اس لیے کہتے ہیں کداسکامعنی ہوتا ہے بلندی اوراسم سمی کے لیے بلندی اور شہرت کا باعث بنآ ہوات ہے۔ باعث بنآ ہے اور اسم بھی اینے قسیمین (حرف بغل) پر مقدم ہوتا ہے۔

تعلیل: سمق سے سم کیے بناتو کثر ت استعال چونکہ تخفیف کا تقاضا کرتی ہےتواس لیے آخر سے واوکو حذف کر دیا تو دوحرف باتی رہ گئے جن میں سے پہلا متحرک اور دوسراسا کن ہے جب ساکن کوحرکت دی گئی تو پہلاحرف جومتحرک ہے اس کوساکن کر دیا اور ابتداء بالسکون محال ہے اس لیے ہمزہ وصلی کمسور شروع میں لائے توسمق سے اسم ہوگیا ل

ر اجع : فرمایا که وسم اورسمویس راج سمو بنکه وسم

لغت آخو:دوسرى لغت مى بھى آتى ہے جيسا كەشعرىس ندكور ہــ

والله اسماك سمى مساركا آثسرك الله بسه ايشاركا ع

تو جمه: "الله تعالى نے تيرابابركت نام ركھاالله تعالى نے تير ام كور جي دى تجھے اس نام كى در يع جس طرح تو ترجيح ديتا ہے يا تير مثل ترجيح دينے كـ "-

اس شعرے مقصود یہ ہے کہ اسم کی ایک لغت کی بھی آتی ہے اور''ایشاد کا" کا مطلب یہ ہے کہ جیسے تو اپنے استحصا خلاق کو ترجیح دی۔ استحصا خلاق کو ترجیح دی۔

الله: لفظ الله عربی زبان کالفظ ہے یا مجمی ، رائح یہ ہے کہ یہ عربی زبان کالفظ ہے پھراختلاف ہے کہ علم بو اسه ہے اور جنھوں نے مشتق کہا ہے ان میں اختلاف ہوا ہے کہ الله سے مشتق کہا ہے ان میں اختلاف ہوا ہے کہ اِلله سے مشتق ہے یاؤ کہ سے ع

تعليل: لفظ الله وراصل الاله تها بمزه وصلى كوحذف كرك لام تعريف كولام اصل مين مرغم كرديا تو الله بوكيا ـ الرّحمن الرّحيم: اسمان بنياللمبالغة ع

ل بيضاوى شريف نس

٢ العشا

سے بینیادی شریف ص۵، کتب خاندر شید بیده مل

هم الصنا

(۱) ﴿ باب كيف كان بدؤ الوحي الى رسول الله صلى الله عليه وسلم ﴾ سروركا نات عليه پرزول وى كابتداء كول كرمونى ـ

وقول الله عن وجل ﴿ إِنَّا اَوْحَيُنَا إِلَيْكَ كَمَا اَوْحَيُنَا إِلَيْ يُوْحِ وَالنَّبِيِّيْنَ مِنْ مِ اَعْدِهِ ﴾ لـ اورالله تعالى كفران الله عنداور يغيرون كيال الله عنداور يغيرون كيال المحميدى قال حلثنا يحيى بن سعيد الانصارى الم عيان كيا حميدى نه كها الم عيد الفادى نه الم عيان كيا حميدى نه كها الم عيد الفادى نه قال اخبرنى محمد بن ابراهيم التيمى انسه سمع عملقمة بن وقاص الليشى كها مجمد كو خردى محمد بن ابراهيم التيمى انسه سمع عملقمة بن وقاص الليشى عيال المنبويقول سمعت عمر بن المحطاب رضى الله عنه على المنبويقول سمعت رسول الله على المنبويقول سمعت رسول الله على الله عنه على المنبويقول سمعت رسول الله على الله عنه على المنبويقول سمعت رسول الله على الله عنه على المنبويقول سمعت وسول الله على المنبويقول المحمد وي المحمد وي

فرماتے تھے جتنے (ثواب کے) کام ہیں وہ نیت سے ٹھیک ہوتے ہیں اور ہرآ دمی کووہی ملے گا جونیت کرے۔

فمن كانت هجرته الى دنيا يصيبها او الى امرأة ينكحها فهجرته الى ما هاجره اليه

پھرجس نے دنیا کمانے یا کوئی عورت بیاہنے کے لیے ججرت کی (دیس چھوڑا)اس کی چھڑت اس کام کے لیے ہوگی۔

راوی حدیث حضرت عمر گے مختصر حالات: سسطفی ۱۳۰ پر ملاحظ فرما کیں۔ گاتحقیق و تشریح کا

حضرت امام بخاریؓ نے اپنی کتاب میں جوابواب قائم کئے ہیں ان کے بعد اپنی طرف سے کوئی عبارت پیش کرتے ہیں یا کوئی مسئلہ بیان کرتے ہیں تو باب کالفظ لکھ کر جوعبارت لاتے ہیں اس کو تو جمہ الباب سمجتے ہیں اور امام بخاریؓ نے جوتر اجم قائم کئے ہیں ان کی مختلف قسمیں ہیں۔

ل ياره لا سورة النساء آيت ١٦٣ عرة القارى ج اص ١١ ، الظراء ٢٥٠ ، ١٥٠٩ ، ١٨٩٠ ، ١٩٥٠ ، ١٩٥٩ ، ١٩٥٩

بخاری شریف کے تواجم کا اجمالی تعارف: تراجم کا ابتدائی طور پردوشمیں ہیں الترائم مجردہ ۲۔ تراجم غیر مجردہ

تسواجم غيو مجوده: ان راجم كوكت بين جن كذيل مين دليل مديثِ مندم فوع لات بين اوراكثر وبيشتر اليه بى ب يهرتر المع غير مجرده مين ابواب قائم كرنے مين بهي باب مع ترجمه لاتے بين اور بهي باب بلاتر جمد لاتے بين سوال: باب بلاتر جمد كون لاتے بين؟

جواب:اس کی متعددوجوه ہیں۔

الوجه الاول: بي پهلے باب كي فصل اور تمه بوتا ہے كه آنے والى حديث كاتعلق سابقه باب كے ساتھ ہے۔ الوجه الثاني: تبھى امام بخارى كامقصد شخيذ اذبان طلبه بوتا ہے۔

الوجه الثالث: تبھی امام بخاری گامقصد تکثیر فوائد ہوتا ہے کہ جرخص اپنے ذہن کے مطابق ترجمہ قائم کرسکے۔ ف اللہ: باب مع ترجمہ میں حضرت امام بخاری صدیث مندلاتے ہیں۔ تو ترجمہ دعوی ہوتا ہے اور صدیث مند دلیل

ہوتی ہے صدیث ترجمہ پردلالت کرتی ہے خواہ صراحنا ہو یا تضمنا ہو یا التزاما ہو یا اشارة ہو۔اور بھی حدیث مطلق ہوتی ہے اور جمہ میں اسکی تشریح کردیتے ہیں۔ اور جمہ میں اسکی تشریح کردیتے ہیں۔

اور بھی حدیث خاص ہوتی ہے ترجمہ میں تعیم کردیتے ہیں۔ تفصیل تراہم غیرمجردہ کے بارے میں ہے۔

تر اجم مجوده: باب كساته ترجمه فدكور بو گرحديث مند فدكور نه بوتوايي تراجم كور الم مجرده كميت بيل ان كي آگے بھر دوشميں بيں ارتراجم مجرده محضه ۲ رتراجم مجرده غير محضه

تر اجم مجر ده غير محضة: وه راجم بين كه حديث مندتو بطور دليل نيين لاتي كين كوئى قرآنى آتى الميت يا حديث ياكوئى قرآنى آتى الميت الميت

مجرده محضه صورية: كرتمة البابككوئى دليل ذكر بين كريني كريني تين آيت قرآنى يا قولِ سلف وغيره بلكر ترجمة الباب بى قرآن ياك كالفاظ موت بين (التى جعلت فيها الآيات القرآنية ترجمة) ع

إ (مصنفة في المعندص ١٨) ع (الا بواب والتراجم في الصندص ١٥) سي (الا بواب والتراجم ص ١٩ الي ايم سعيد كراجي)

مجرده محضه حقیقیة: وه تراجم بین که ترجمه حضرت امام بخاری کی اپی عبارت بوتی به بیتمام

بخارى مين صرف آثه ، نوجگه بيل

سوال: رُّاجِم مجرده لا نیکی کیاوجہ ہے؟

جو آب:....اس کی متعددوجوه بیان کی جاتی ہیں۔

الوجه الاوّل: امام بخاريٌ باب قائم كردية بين كه اس كى دليل حديث مندكهين كُرْر چكى موتى ہے كو ياطلبه كے علم يراعمّا دكر كے چھوڑ دية بين۔

الحاصل: اعتماداً على فهم الطلبة تركروية بير.

الوجه الثاني: تكرارے بچنے كے ليے۔

الوجه الثالث: طلبك امتحان اور تيقظ ك ليح كم يحمة مجى اين حافظ يرز ورو يكر دليل لاؤ

الوجه الرابع: حضرت امام بخاریؒ نے ابواب پہلے لکھ دیئے تھے پھرامام بخاریؒ کواپنی شرطوں کے موافق اس باب کے تحت کوئی حدیث نہلی تو وہ باب مجردہ رہ گیالئین میدوجہ ہر جگہ منطبق نہیں ہوتی۔

باب فی الباب: امام بخاری کی ایک اصطلاح یہ بھی ہے اسکی حقیقت یہ ہے کہ بھی کسی باب کی دلیل ذکر کرتے ہیں تو جو حدیث ذکر فرماتے ہیں اس سے ترجمت الباب بھی ثابت ہوتا ہے اور وہ حدیث کسی اہم مسئلہ پر بھی دال ہوتی ہے تو امام بخاری اس اہم مسئلہ پر متنبہ کرنے کے لیے ایک اور باب قائم کردیتے ہیں اور اس کے بعد پھر سابقہ باب کی دلیل لاتے ہیں اسکو باب فی الباب کہتے ہیں۔ ایس صورت کو نسجھنے سے دومشکلیں پیدا ہوجاتی ہیں۔

باب: سنتن طرح سے پڑھا گیاہے ا۔ مرفوع مع التنوین، تقدیری عبارت ہے ھذا باب " ۲۔باب بغیر تنوین اور بغیر اعراب کے جیے اسائے معدودہ میں ہوتا ہے کہ وقف کے ساتھ پڑھا جاتا ہے سے اضافت کے ساتھ پڑھا جائے جیے بائ کیف کان ع

اعتسر اض: یاضافت سیح نہیں ہے کیونکہ باب کی جملہ کی طرف اضافت ہے اور باب ان الفاظ میں سے نہیں ہے۔ دن کی جملہ کی طرف اضافت کو جائز قرار دیا جائے؟

^{](}الايوابوالتراجم ص ١٩) على قالقارى حا ص ١٥ تقرير بخاري حا ص ١٣ بكر ماني جا ص ١٣٠

بدؤالوحي

جواب: اس اعتراض كروجواب دي كئي بين (١) اضافت اس وقت ناجائز موتى ب جب اضافت من حيث المعنى مواكر لفظ محض مرادليا جائة وجائز موتى بيل ٢) اصل اضافت كيف كان بدء الوحى كى طرف نهيس ے بلکہ مضاف الیم محذوف ہے باب فی جو اب قول القائل کیف کان بذالوحی .

تعلیل: باب اصل می بوب تھا قال والے قاعدے (وامتحرک ماقبل مفتوح موتو واوکوالف سے بدل دیتے میں) کی وجہ سے باب ہو گیا نے

مسوال: مسدحفرت امام بخاريٌ نے ديگر مصنفين كى طرح اپنى كتاب كوكتاب كعنوان سے شروع كيول نہيں كيا؟ باب كيون سے كيون شروع كيا؟ ي

جواب:اس كتين جواب ہيں۔

(جواب آ) محدثین کے زو یک کتاب سے مرادوہ مجموعہ جوتا ہے جو ختلفة الانواع مسائل برمشمل مواور باب وہاں قائم کرتے ہیں جہاں مسائل معفقة الانواع اور مختلفة الا صناف ہوں ضابطہ ہے کہنوع پر جب قیدیں زیادہ لگ جا کیں تو فصل بن جاتی ہے تو چونکہ اس باب کے تحت مختلف انواع نہیں تھیں ایک ہی نوع کے مسائل تھاس لیے باب کا نام دیا۔ (جواب۲) بعض حضراتٌ نے بیہ جواب دیا کہ اصل میں کتاب شروع ہی نہیں ہو گی وہ تو کتاب الایمان سے شروع ہوگی بیتو مقد مے اور دیاہے کے طور پر ہے۔اس لحاظ سے باب سے تعبیر کر دیا۔

(جواب ٣)اصل میں حضرت امام بخاری کامقصود مقسم کو بیان کرنا ہے اسکوبطور مقسم کے ذکر کیا ہے اور آ گے کتاب الایمان ہے اسکی قسمیں ہیں اگر اسکو بھی کتاب کے عنوان سے شروع کرتے تو آ گے قسمیں بنانا صحح نہ ہوتا۔ السوال على الامام البخاري : تمام صنفين ابني كتاب كوشروع كرتے بين كتاب الايمان يا كتاب الطبارت سے بیکن امام بخاری نے سب سے الگ ترتیب اختیار فرمائی ہے اسکی کیا وجہ ہے؟

البجواب: قارئین کوبتلا ناچاہتے ہیں کہ دین وہ معتبر ہے جومتندالی الوحی ہو کیونکہ مدار دین وی ہے جا ہے وی جلی ہوجا ہے فعی تو یہ باب قائم کر کے اشارہ کر گئے کہ میں نے جواحادیث جمع کی ہیں سب متندالی الوحی ہیں۔

فسائسده: اس معلوم مواكه كوئى مكاهفه اورواردات قلبى معتبرنهين ب جب تك كهوه متندالى الوحى نه ہو۔حضرت مولا ناعطاء الله شاه صاحب بخاری حضرت مولا ناخیر محمد صاحب کواستاد کہا کرتے تھاس کی دووجہیں تھیں

> ٣ عدة القارى جا ص١١ مطبوعه دار الفكر یم ایضاح البخاری جا ص پھ

ا درس بخاری ص۲۲

ع عدة القارى ج ا ص١١ ، تقرير بخارى ص١٢٠

کیف: امام بخاری نے کف ہے میں باب شروع فرمائے ہیں بیں جلداق میں اوردس جلد ثانی میں بیے یہ بہلا ہے۔ مسوال: مصنف نے ترجمۃ الباب میں کیف استعال فرمایا ہے اس استفہام کا منشاء کیا ہے؟ جواب: محدثین شراح نے متعدد توجیہات کی ہیں کہ س موقع پر باب میں کیف لاتے ہیں۔

(۱) بهی مصداق می اختلاف بوتا بهاس لیے کیف سے ترجمہ الباب شروع کرتے ہیں تا کہ علوم بوجائے کہ اختلافی چیز ہے۔

(٢)اور مجمى اس وجه سے كەمصداق ميس ترود موتا ہے تو فيصله قارى پرچھوڑ ديتے ہيں۔

(٣) بهي استفهام مع مقصور تعظيم اورخيم موتى بي جيسياس مقام پرمعني موكا كريسي شان والي هي ابتداءوي -

(٨) بهى ترددوغير وتونهيس موتا بلكة تاريخ بيسوال موتاب جيساس مقام برمعنى موكا كدابنداءوي كي كيفيات كياتفيس؟

تو كيب: اگركيف جمله پرداخل بوتو حال بوتا بوگرنة خير مقدم - جيسے كيف جاء زيد مقصود حالت ب اوراگركيف زيد بوتو خير مقدم - كيف استفهاميصدارت كلام كوچا بتا ب-

سسوال: آپنو کف کومضاف الیه بنایا ہے باب کا تو کیف کومضاف الیه بنانے سے کیف کی صدارت تو ٹوٹ گئی؟ واضح رہے کہ اعتراض صرف ایک ترکیب پر ہے نہ کہ باقی دوتر کیبوں پر۔

جواب: صیح یہ بے کہ کیف صدارت کلام کو چا ہتا ہے گراس کلام کی کہ جس کا جزء ہو۔اصل کلام تو کیف کان بدؤ الوحی ہے اوراس میں مقدم ہے ع

تىركىب كان: اگركان كوناقصە بنايا جائة بىدۇ الوحى اسم بوگا اوركىف اسكى خرمقدم بوگ - اگركان تامە بوتوكىف بمز لەحال كے بوگا اور بىدۇ الوحى فاعل -

بدو : بدء کالفظ مهموز بے یا ناقص بعض نے بدء بالهمزه پڑھا ہے بمعنی ابتداء اور بعض نے بُدُو پڑھا ہے بہ بُدُو سے لیا گیا ہے بمعنی ظهور، لہذا دومعنی ہو گئے اسکیے تھی ابتداء وی کی ۲۔ اور کیسے تھا ظهوروی کا، ران قیدء بالهمزه ل باره ۱۱ سودة مریم آیت ۱۷ سے تقریب خاری کاب اعلم ۳۳ سے تقریب خاری ۱۵ ہے کیونکہ حضرت امام بخاریؓ کے دوسر نے شخوں میں بھی یہی ملتا ہے ادرروایتوں سے بھی یہی پیتہ چلتا ہے لے اللوحی اللغوی: وحی کے نغوی معنی بہت سارے ہیں۔

(۱)الاعلام فى خفاء (۲)رسالدكوبهي وى كتب بيده اى كتب (۳)اشاره ير (۳)رسالدكوبهي وى كتب بير من يغام (۵)خفيد كلام كوبهي وى كتب بير يدن القاء فى الروع (۲)خفيد كلام كوبهي وى كتب بير دي القاء فى الروع (۲)خفيد كلام كوبهي وى كتب بير دي الله تعالى نه (۵) كُلُ منا المقيتَه اللي غيرك الله كاظ سے شيطان كے وسوسے كوبهي وى كها جاساتا ہے جيسے الله تعالى نے فرمایا ﴿وَلَا تَا أَكُدُ لُواْ مِمَّا لَمُ يُذُكُو اللهُ مَا لَلْهِ عَلَيْهِ وَإِنَّه اللهِ عَلَيْهِ وَإِنْ اللهُ عَلَيْهِ وَإِنْ اللهُ عَلَيْهِ وَإِنْ اللهُ عَلَيْهِ وَإِنَّه اللهِ عَلَيْهِ وَإِنَّه اللهِ عَلَيْهِ وَإِنْ اللهُ عَلَيْهِ وَإِنْ اللهِ عَلَيْهِ وَإِنْ اللهُ عَلَيْهِ وَالْ اللهُ عَلَيْهِ وَالْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَالْهُ اللهِ عَلَيْهِ وَالْهُ اللهِ عَلَيْهِ وَالْهُ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهُ اللهِ عَلَيْهِ وَالْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللهُ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهُ اللهُ الل

(۸).....کتاب سے

الوحى الاصطلاحى: كلام الله المنزل على نبى من الانبياء خفياً كان او جليًا متلواً كان او غير متلوً اقسيام وحى: مشهورسات شميس بين عندالبعض آئه بين وعندالبعض چهياليس شميس بين تفصيل خدا بى جانے ـ استدلال ان كائى مدیث ہے ہے ((رؤ یا المؤمن جزء من ستة واربعین عن النبوة)) در اسكی تفصيل یوں بیان كی گئے ہے كہ نبوت ۲۳ سال ربی اور نبوت ہے بل چھے مہینے سے خواب آتے رہے اور چھے مہینے ۲۳ سال كا چھياليسوال حصہ ہے۔

علامہ بیکی نے سات قسمیں کھی ہیں گوخفقین علائے نے اسکا بھی اختصار کر کے چارفشمیں بنادی ہیں۔

الاول: وحی منامی کہ اللہ تعالی خواب میں کوئی بات دکھلائے ،حضرت عاکثہ سے روایت ہے کہ سب سے پہلے

آپ علیہ کو سیچ خواب آئے نے

الثانى:مثلُ صلصلة الجرس، مَن كن واز ي جيسة ج كل ملى كرام

الشالث: الله تعالى پرده كے پیچھے سے كلام كريں نبى كوعلم حضورى سے معلوم ہوجا تا ہے كه بيضداكى آواز ہے جيسے ليلة المعراج ميں باتيں ہوتى رہيں يا جيسے حضرت موئى عليه السلام نے كوہ طور پر سنا۔

ل فیض الباری جا سی سطرا علی معرفی القاری جا صری اسطر کا سی بارہ ۸ سورۃ الانعام آیت ۱۳۳ سی بخاری شریف جا سی حاشیہ القاری جا ص۱۵ ہے تقریر بخاری جا س۲۷ کے بخاری شریف حدیث آ سے بخاری شریف جا سی حاشیہ

الرابع:القاء فی الروع: جیما که صدیث شریف میں ہے ((ان روح القدس نفث فی روعی)) یہ بہد ، اگرنی کے لیے ہوتو ہ کی دوعی)) یہ بہد

الخامس: حضرت جريلًا إني اصل شكل مين نظرة كين اور نبي عليه السلام ع كلام كرين -

السادس: فرشة انساني شكل مين آكر باتين كرن ك، جيس عديث جريل عليه السلام-

السسابع: وى اسرافيلى يعنى فرشته جريل عليه السلام نه مول بلك فيرشته اسرافيل عليه السلام مول اليكن محققين آخرى چارقسمون كوايك بى فتىم مانت مين بي يعنى وحى بواسطة ملك -

الشامن: يعنى وحى سكوتى كه نبي كوئى كام كريس اور الله تعالى اسكى اصلاح نفر ما ئيس اوراس سے ندروكيس تو وحى سكوتى موگ ـ

وی کامجازی معنی تغیر ہے جیسے ﴿واَوْ حَی رَبُّکَ اِلَی النَّحٰلِ ﴾ سے میں یہی معنی مراد ہے۔ بھی وی کااطلاق موتی (الفاظ) پر بھی ہوتا ہے گویات میۃ المفعول باسم المصدر ہے۔ انبیاء علیهم السلام والی وی جو کہ اصطلاحی وی ہے وہ بند ہوگئ ہے۔ نوٹ : مرز لے مین نے وی کے لغوی معنی لے کرمغالطے دیتے ہیں۔

﴿ضرورتِ وحي﴾

اجمالی دلیل: جودلائل ضرورت مدیث کے تحت بیان کئے ہیں وہ ضرورت وی کے بھی ہیں بیایک اجمالی دلیل ہے۔

تفصيلي دلائل

دلیسل اول: انسان کوخلافت علم کی بنیاد پر ملی ہے۔ معلوم ہوا کہ خلافت انسانی کا مدارعلم ہے۔ وسائلِ علم انسان کے پاس چار ہیں اوقی ۲۔ کشف سے عقل وحواس سے الہام۔ وحی کے علاوہ باقی وسائلِ علم ناقص ہیں اس لیے ان سے حاصل کر دوعلم مدارِ خلافت نہیں بن سکتا۔

تقصان عقل کے دلائل

(1):وی کے علاوہ باقی سب وسائل علم کے ناقص ہونے کی ایک مشترک دلیل بیہ ہے کہ ان میں تعارض ہے لینی الہام، الہام سے متعارض ہے، کشف، کشف سے متعارض ہے اور عقل کسی نتیج پرنہیں بینچ پاتی کیونکہ عقل والوں کی عقلیں متعارض ہیں یونانیوں کی عقلیں اور آج کل کے سائنس دانوں کی عقلیں متعارض ہیں مثلاً فلاسفہ پہلے کہتے کے مقامین متعارض ہیں کہتے ہیں کہ آسان نہیں ہے۔

مائل ہوجاتی ہے۔

(سا): حواس جس طریقے سے محدود ہیں ای طریقے سے بسااوقات غلطی بھی کر لیتے ہیں اس لیے عقل کاعلم سیح نہیں ہوسکتا جیسے کہ گاڑی میں سوار ہونے والے باہر دیکھیں تو درخت بھا گتے ہوئے نظر آتے ہیں۔ برقان والے کو ہر چیز پہلی پہلی نظر آتی ہے۔ سڑک پرچلیں تو آ گے تھوڑے فاصلے پر سڑک بندنظر آتی ہے۔ ای طرح تھوڑی دور سے آسان زمین سے ملاہوانظر آتا ہے۔

(۷): مبدأ اور معاد كے بارے ميں عقل نے آج تك انسان كى كوئى رہنمائى نہيں كى كدانسان كى ابتداء كہاں سے تھى اور انتقاء كہاں ہے۔كوئى ہيو لى اور صورت ميں الجھا ہوا ہے اوركوئى نظرية ارتقاء ميں الجھا ہوا ہے جيے سائنس دان ڈارون وغيرہ كا نظريہ يعنى نباتات نے ترقی كر كے حيوانات كى صورت افتياركرلى أميس سب سے زيادہ ترقی كرنے والا بندر ہے اس نے زيادہ ترقی كى توانسان بن كيا۔

فلفی کو بحث میں خداماتا نہیں اور کو سلحما رہا ہے مگر سرا ماتا نہیں

المحاصل: وی کے علاوہ علم کے تمام دسائل تا تھی ہوئے اورانسان اللہ تعالی کا فلیفہ ہے اوراس خلافت کا مدار علم ہے اوراس خلافت کا مدار علم ہے اور خلافت انسان کے لیے خروری تھا کہ جس کا خلیفہ بنا ہے اسکی طرف سے علوم نازل کیے جا کیں۔

دلیسلِ ثانی: انسان مرکب ہے جہم اور روح ہے اسکی بقاء کے لیے غذاء کی خرورت ہے جہم چونکہ خاکی ہے اس لیے اسکی بقاء کا انتظام زمین سے کیا گیا اور ورح چونکہ لطیف ہے اس لیے اس کی غذاء کی خرورت ہے اور الیے ہی روح ہمی بیار دلیس اسکی بھاری کے لئے دواکی ضرورت ہے اور الیے ہی روح ہمی بیار موجاتا ہے جیسے اسکے علاج کے لئے دواکی ضرورت ہے اور الیے ہی روح ہمی بیار موجاتا ہے جیسے اسکے علاج کے لئے دواکی ضرورت ہو انسان کو اللہ تعالی نے جسمانی کیا ظلاج ہے اسکے علاج کے لئے والی کے انسان کو اللہ تعالی نے جسمانی کیا ظلاج ہے ہو اور ایک کیا دور اکیاں بنا ناشہد کی کھی سے سیکھا کہ خلف پھولوں کو جمع کر کے شہد بناتی ہے۔

دلیسل کر ابوری انسانیت نہیں بنا سکتی اور دواکیاں بنا ناشہد کی کھی سے سیکھا کہ خلف پھولوں کو جمع کر کے شہد بناتی ہے۔

دلیسل دین بھی ہوتا ہے اور لین وین جن چیز وں میں ہوگا وہ سب اللہ تعالی کی پیدا کر دہ ہیں تو اللہ تعالی اپنی اشیاء کے لین دین بھی ہوتا ہے اور لین وین جن چیز وں میں ہوگا وہ سب اللہ تعالی کی پیدا کر دہ ہیں تو اللہ تعالی بنا ہوگی دیا کے اندر چین سکون دین کے طور پر اینے کی احازت ہے نہ کہ غصب کے طور پر ، اس طرح لین دین کی کا قانون جب تک اسلام کے مطابق نہیں ہوگا و نیا کے اندر چین سکون نویے نہ کہ غصب کے طور پر ، اس طرح لین دین کا قانون جب تک اسلام کے مطابق نہیں ہوگا و نیا کے اندر چین سکون نویے۔ نہیں ہوگا و

﴿صداقتِ وحي﴾

وی کا صدق وکذب بنی ہے مخبر کے صدق وکذب پر ایسنی اگر اسکے حالات میں صدق وامانت نہیں تو وی میں جموٹ ہوگامخر جب خبر دیتا ہے تو دونوں کا اخمال ہوتا ہے جب خصوصیت حاصیتین ملحوظ ہوتو کذب کا اخمال منقطع ہوجا تاہے۔وی کا انکار کرنے والوں نے بھی آپ علی کے صدق کا انکارنہیں کیا تو معلوم ہوا کہوی صادق ہے خصوصیت حاصیتین سے مراد متکلم اور واقعہ ہے جسکا بھی صدق آپکومعلوم ہو جائےگا تو آپ کذب کا احمال ختم كردي كيآب علي التي مدق كي دليل يدبيان فرمائي "كمين تبهار اندراك زمانه تك مرابون تمن مجے جمونانہیں پایا پہلے آپ علی نے ان سے بوچھا کہ اگر میں کہوں کہ اس بہاڑ کے پیچے ایک شکر ہے تو تعمدیق كروكيسب في بيك زبان موكركها منيس كاكر جدماري ألكميس د مكوري بي كدوني فكرميس بـ" القصة: حضرت مولا نالال حسين صاحب سنده من قاديا نيول سي مناظر يرك لي تشريف لي مح مولا ناموصوف نے مناظرے کاموضوع پیرکھا کہ مرزا کے صدق و کذب پر بحث ہوگی اس پر قادیانی مناظر نے کہا کہ پر محمد علی کے صدق وکذب بر بھی بحث ہوگی اس پر ایک شخص حاجی ما تک صاحب کو جوش آیا اس نے یہ کہنے والے قادیانی کوتل کردیا۔ پھرجس انگلی سے اشارہ کر کے کہاتھاوہ انگلی کائی پھرجس زبان سے پیلفظ ہولے تھےوہ زبان کائی۔ حکومت نے قبل کامقدمہ چلایا دکیل نے کہا کہ کوئی گواہ تو ہے نہیں ایک مرتبدا نکار کردو پھانی نہیں لگے گی اس شخص نے کہا شفاعت حاصل کرنے کے لیے بیسارا کام کیا تھاا نکار کیسے کردوں۔ چنانچے مولانا محمطی جالندھریؓ نے مقدمہ کی پیروی کی اورمؤقف بیاختیار کیا که نبی کامتی نبی پرفریفته موتا ہے اگر کوئی اس کی تو بین کرے تو امتی ہرگز برداشت نہیں كرسكتايس نتجه كے طور برصرف جارسال كى قىد ہوئى۔

﴿حفاظتِ وحى﴾

اس پراشکال ہوسکتا ہے کہ مانا کہ وی تی ہے کیا معلوم کہ محفوظ بھی رہی ہے یانہیں؟ اس لیے دلاکل حفاظت ضروری ہیں۔ دلیلِ اول: اللہ تعالی نے خود ارشاد فر مایا ﴿ إِنَّا نَهُ مُنُ نَزَّ لَنَا اللّهُ مُحَرَّوَ إِنَّالَهُ كَحَافِظُون ﴾ یہ ذات باری خود بی محافظ ہے اس لیے کوئی اشکال نہیں ہوسکتا۔

الخارى شريف م ٢٠٠٨ ع پاره ١١ سورة الحجر أيت ٩

دلیلِ ثانی: وی روح کائنات ہاورکائنات کی تفاظت کرنے والی وی ذات ہے جووی کی تفاظت کرنے والی وی ذات ہے جووی کی تفاظت کرنے والی ہے اور وی بی تفاظت کا نات کی تفاظت کے لیے بھی ضروری ہے کہ جب تک اسکو باقی رکھنا ہے وی کی تفاظت کی تفاظت کی جائے قرآن مجید میں آیا ہے و کی لذایک اُو حَیْدُنا اِلَیْکُ رُوْ حَامِنُ اَمْرِنَا یہاں پر اکثر مفسرینؓ کے زدیک روح سے مراوقرآن مجید ہے۔

دليل ثالث: بردوراور برعلاقه مين تلسل كماته كثرت حفظ دليل حفاظت بـ

دليلِ رابع: آپيليك فاتم الانبياء بين آ كى نبوت قيامت تك ركى للذا حفاظتِ وحى بعى قيامت تك ركى للذا حفاظتِ وحى بعى قيامت تك ضرورى ہے۔

الحاصل: ختم نبوت بھی دلیلِ مفاظت ہے۔ پھرالفاظ بھی محفوظ ہیں کیفیات بھی محفوظ ہیں اور لہج بھی محفوظ ہیں۔ مدینہ منورہ میں کی استاد کے سامنے کی مجمی نے قرآن پڑھا مجمی لیجے کا اثر تھا استاد صاحب نے کہا کہ والله ما انزل ھی کا القرآن.

حفاظت وحی پر چند قصے

القصة الاولى : ايك قصه به كقرآن پاك چها پئے سے پہلے جو كرائے كى حافظ كے پاس كا اور حافظ فرآن كوكها كدآ پ ذراقرآن پاك پڑھيں ہم تھے كرليں كة حافظ صاحب نے كها قرآن پڑھنے كى كيا ضرورت بح ميں صرف حركات و مكنات سناتا جاتا ہوں آپ و كھتے جائيں۔ايسے بھى پيدا ہوئے جنہوں نے تين دن ميں قرآن ياك بادكرليا اورايسے بھى پيدا ہوئے كہ پيدا ہوئے قرآن ياك كے حافظ تھے۔

المقصة الثانية: ايك شيعه ليدُريهان آيا ايك طالب علم في السيكها جبتم مسلمانون كقر آن ونبين مانة بلكة تحريف كالم بوقو بمرمسلمان كيون كهلات بوداس في كها كهاريان مين جاكرد يكهو بهارك بهي ايس قر آن جهية بين تو قر آن كي حفاظت كاخداف خود ذمه ليا اوركيس كيسا انظام فرمائ كه لوگ ايئ آپومسلمان كهلواف كي حقوق قر آن ياك جهاية بين -

القصة الشالشة: ايك صوفى صاحب في ايك بچه سه كها كه سورة تست سناؤ، بچ في تسبّ بدا بفتح التا پر هاصوفى صاحب في مساكم التا پر هاصوفى صاحب في مساكم التا پر هاصوفى صاحب في مساكم به تبت يدا بالكسر پر ها بيكسر بخر ها اصرار بواتو صوفى صاحب في كها كه ميں بحق د كھا تا بول - اس في تصرف كيا تو بچ كوقر آن ميں بالكسر نظر آياليكن بچ في كها قر آن ميں غلط لكھا به ميرے استاد في مجھے ايسے نہيں پر هاياصوفى صاحب في كها كه لوح محفوظ ميں دكھلا دول تصرف كيا تو بچ كو بالكسر نظر

آ یا تو بچے نے کہا کہ اچھامعلوم ہوتا ہے کفلطی وہیں سے چلی ہے۔

﴿عظمتِ وحي﴾

سی چیزی عظمت اسمی نسبت سے معلوم ہوتی ہے وحی کی عظمت بھی اسکے وسائط کے لحاظ سے ہوگی۔ جھیجنے والے اللہ تعالی، لانے والے حضرت جریل ہیں جو کہ افضل الملائکہ ہیں۔ منسزل عملیہ محمد علیا البشر ہیں تو معلوم ہوا کہ وحی سب سے زیادہ عظمت والی چیز ہے۔

﴿اعجازٌ وحي﴾

وی مجرزہ ہے اسکا اعجازیہ ہے کہ پوری دنیا اسکا مقابلہ کرنے سے عاجز ہے اللہ تعالی نے قرآن کا اعجاز ابت کرنے کے لیے تین مرتبہ قسحہ دئی فرمائی لیتن مقابلے کی دعوت دی اسب سے پہلے فرمایا اس قرآن حساقر آن اور کے لیے تین مرتبہ قسے کے فرمایا ﴿فَاتُوبِسُورَ فِي اللّٰهِ مِنْ مِنْلِه ﴾ له چھوٹی سے چھوٹی سورت لے آؤ کو فرمایا ﴿فَاتُوبِسُورَ فِي اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ

بعض معجز ہے تو قتی تھے دل کا نکالناوغیرہ اب میعجز نے ہیں رہے لیکن قرآن پاک کا بیا عجاز تا قیامت رہیگا۔ سوال: اگر کوئی کے کہ ہوسکتا ہے مقابلے میں کوئی سورۃ بنی ہولیکن ہمیں معلوم نہ ہواہو؟

جواب: آپ فورکریں کہ ہرزمانہ میں قرآن پاک کے مانے والے صور درہے ہیں پھر پڑھنے والے اور حفظ کرنے والے کتے ہیں اتی قلیل مقدار نے قرآن کو ہر جگہ پہنچاد یا مخفی نہیں ہوا تو جوزیادہ مقدار میں ہیں اور ہر گھڑی اسکے دریے ہیں کہ کوئی الیں سورة مقابلے میں طرقہ کیسے چھی رہ سکتی ہے۔ ایک فصیح بلیغ عرب نے کہا کہ جھے فرصت نہیں وگرنہ میں بنا کرلاؤں کی نے پوچھا کہ فرصت کیوں نہیں کہا کہ کسب معاش کی وجہ نے فرصت نہیں تو لوگوں نے نہیں وگرنہ میں بنا لوگ اس نے کہا کہ ایک سال میں لوگوں نے کہا ایک سال کا خرچہ ہمارے ذمہ ہے تو ایک سال نگا کہ بنا نے ایک سال کے بعد لوگوں نے کہا تھا والسنساء ذات المفروج تو لوگوں نے کہا سال نگا کہ بنا لے ایک سال کے بعد لوگوں نے پوچھا تو اس نے سنایا والسنساء ذات المفروج تو لوگوں نے کہا تف لک اِحسان ایک اور نے کہا ہوگیا جھے خرچہ دو میں یہ کام کرتا ہوں اس نے سورة فیل کے مقابلے میں سورة بنائی المفیل و منا ادر اک منا الفیل له ذنب صغیر و خوطوم طویل لوگوں نے کہا احسان اینا لا یعوف له ذنب صغیر و حوطوم طویل.

رمسول: انسان بعده الله لتبليغ الاحكام مع كتاب وشريعة اورني عام بحيابين كابنى شريبت بوياب مہلی کتاب وشریعت کے تابع مو۔ نی عام ہے رسول خاص ہے رسولوں کی تعداد ۱۳۳ ہے انبیاء کی تعداد بہت زیادہ ہے ایک لاکھ چویس بزارے (عمق القاری ج اس ارد سول کی تعریف اس طرح درج بے الرسول مو النبی المذی معد کتاب: مرتب) تحقيق لفظ نبى: نبى نبوت بياناً سـ الرنبأ سي المام من نبى تما بمعنى خردي والا بعل كوزن يراس كاس كونى كت بي كدوه الله تعالى كاطرف ساحكام كاخرديتا بالرنسوس بعن بلندى كے بے چونكه نى ائى قوم مىں بلندمر تبہوتا ہاس ليے اسكونى كہتے ہيں اس وقت نى كى اصل مَبيق ہوگى يا نہى جمعنى راسته عمأ خوذ بولاجاتاب الاسصلوا على النبي معنى بوكا كراسته يرنمازنه يرمو چونكه ني الله تعالى كاراسته دكهاتا ہاں لئے اس کو نبی کہتے ہیں بعض الفاظ غیر معروف معنی میں استعال ہوتے ہیں جس سے سامع کومغالط ہوتا ہے جبیرا كرماوره بهى بجي النارفي الشتاء خير من الله ورسوله من قميه بمعنى بوگا الداوراس كرسول كاشم_ فوق: ببرحال نبی اور رسول میں فرق میہ ہے کہ نبی کے لیے صاحب شریعتِ جدیدہ ہونا ضروری نہیں۔رسول صاحب شريعت جديده بوتاب رسول المله بيعام لفظ بالله كبررسول كوثال براطافت بحى بمع عبد خارجي كيعي بوا كرتى بے جبيا كنو كاندرير و يك موريهال بھى اضافت عبد خارجى بالبنداس سے بمار برسول الله مراويس صلى الله عليه و بسلم: علاء نے کھاہے کہ جہاں کی محالی کاذکر آئے وہاں رضی اللہ تعالی عند کہنا جاہیے خواہ کسی کتاب میں اکھا ہویا نہ ای طرح جہال حضوریا کے اللہ کانامنا می آئے وہاں درود پڑھنا جا ہے خواہ کتاب میں نہ ہو۔درودشریف کا خلاصہ بیہ کراللہ تعالی رحمت اور سلامتی بھیج۔ صلواۃ کے معنی یہاں پر رحت کے ہیں۔جب اللہ تعالی کی طرف صلوا کی نسبت ہوتومعنی رحت کے ہوتے ہیں فرشتوں کی طرف نسبت ہوتومعنی استغفار ،اگر بندوں کی طرف نسبت ہوتو دعاء رحمت ، صلہ کے بد لنے اور قائل اور فاعل کے بد لنے سے معنی بدل جاتے ہیں۔ واِنَّ السلسه وَمَلْتِكَتَه ويُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيّ ﴾ ل كياالله تعالى اوراس كفرشة اللهم صلِّ على رد صة بين ياالمصلوة والسلام عليك يا رسول الله يرص بين البين، بلكرحت واستغفار مراد بـــ

اصل بداختلاف ایک اوراختلاف پرخی ہوہ یہ کہ اللہ تعالی کے ارشاد ﴿ اِلْمَا اللّٰهِ اللّم اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰلِهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰلِي اللّٰهُ اللّٰلِلْمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰلِلْمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الل

پھرجس مجلس میں نام آئے اس مجلس میں ایک مرتبہ پڑھناوا جب ہے آ پھالیے کا ارشاد مبارک ہے کہ جس مخص کے سامنے میرانام آئے اور وہ درود نہ پڑھے تو اس کے لیے ہلاکت ہے۔ صلوا علیہ فرضیت پردال ہے دندگی میں ایک مرتبہ پڑھنا فرض ہے۔ ایک ہی مجلس میں بار بار ذکر آئے تو ہر بار پڑھنا مستحب ہے جب محبت کا اللہ موٹ کی محبت ہے کا اللہ ہونے کی وجہ سے ۔ محد ثین نے بھی بھی درود نہیں چھوڑا، کا غذاور وقت کی بین کیے تنہیں کی

اشکال: صلّی اوردعائم معنی ہیں اور صلی علیہ کامعنی رحت کی دعا کے ہیں تو دُعا علیہ کا بھی ہی معنی ہونے عائمی سال لیے کہ آپ ان دونوں کے ہم معنی ہونے کے قائل ہیں حالانکہ دُعا علیہ کے معنی بددعا کے آتے ہیں۔ جو اب: متر ادفین کا ہر چیز میں برابر ہونا ضروری نہیں ہوتا کہ جو دُعا کا معنی ہے وہی صلّی کا بھی ہو۔ وقول الله عزو جل: جرکے ساتھ پڑھاجائے گایار فع کے ساتھ ہے، جرکے ساتھ پڑھاجائے تو ترجمۃ الباب کا جزء ہوگا اور لفظ باب آگی طرف مضاف ہوگا۔ اگر مرفوع پڑھاجائے تو ترجمۃ الباب کی دلیل ہوگا ، اگر جزء ترجمۃ الباب نہ ہوتو یہ خودد کیل ہوگا یا بعض اوقات بطور ترک ادنی اس دفت شبت ہوگا دلیل دومری تلاش کرنی ہوگا۔ اگر جزء ترجمۃ الباب نہ ہوتو یہ خودد کیل ہوگا یا بعض اوقات بطور ترک ادنی است کی وجہ سے ذکر کردیے ہیں۔

فائده: حضرت امام بخاريًا كى عادت مباركه بكرته الباب من آيت بقول محابى يا تعليقات كوذكركرتي بيرالشكلل اول: ترجمة الباب بويادليل بو بردونول مورتول مين اشكال برجز عِرته الباب بوتواشكال بيه بهدونول بين الشكال المال بير عدم مناسبت معلوم بوتى باس لي كه جزءاول مين بدء كاذكر بهدونول جزء في جاري بين جبكه يهال برعدم مناسبت معلوم بوتى باس لي كه جزءاول مين بدء كاذكر بهدونول جزء في مناسبت به كورتون قريدة الوى باوردليل مين اسكاذكر نبين؟ اورجزء فانى مين مطلق وى كاءاوراً كردليل مين اسكاذكر نبين؟

ل باره ۲۲ سورة الاحزاب آیت ۵۲ س باره ۱ سورة البقره آیت ۳۳ سط محمدة القاری المعروف بلعینی جما ص ۱۵

جواب:دونوں اشکالوں کا جواب یہ ہے کہ بدوالوقی سے غرض کیا ہے؟ غرضِ باب میں مختلف تقریریں کی گئیں ہیں۔ تقریرِ اول: حضرت علامہ سندھی کا جواب یہ ہے کہ بدءِ الوحی کی اضافت، اضافتِ بیانیہ ہے بدوالوحی کا معنی وحی کا بیان ہوا تو آیت کے اندر بھی وحی کا بیان ہے۔ فلااشکال فیہ

تقریرِ ثانی: غرض معنوی عظمتِ وی کابیان ہے اس آیت میں بھی عظمتِ وی کابیان ہے وہ اس طرح کہ جملہ اسمیدلائے پھر اللہ تعالی نے نبست اپنی طرف کی ﴿ إِنَّ الْوَحَیْدَ اَ ﴾ پھر جمع تھے ہے اللہ اس کے اللہ کے اللہ کے اللہ کا دی کے ساتھ وی پھر دوسرے انبیاء بھی السلام کی وی کا بھی ذکر کیا اس کے بعد آیت میں شہادت کا ذکر ہے پاسلام کی وی کے ساتھ وی پردلالت کی۔ آیت میں شہادت کا ذکر ہے پھرمئرین کے لیے جہنی ہو نیکا ذکر ہے ان سارے قرآئن نے عظمتِ وی پردلالت کی۔ تقریرِ ثالث: غرض معنوی صداقتِ وی ہے دلیل میبیان کی کہ آپ آلین کی وی کونوح علیه السلام کی وی لیکر اخیر تک تمام انبیاء بھی السلام کی وی سے شبید دی اور بید لیل صداقت ہے کیونکہ وی تھیجے والا تمام کی طرف ایک ہی ہے۔ الشکال ثانی: ترجمۃ الباب ہے کیف کان بدؤ الوحی اور باب کے تحت جوا حادیث لاتے ہیں ان میں سوائے صلصلۃ الجرس والی روایت کے وئی بھی ترجمۃ الباب کے ساتھ مطابقت نہیں رکھتی؟

جسواب اول: باب کی غرض، بیانِ وحی ہے، عام ہے کہ تملوہ ویاغیر مملوہ و بہر حال اس باب میں وحی کا ذکر ہے یہ جواب علامہ سندھی کے جواب کے مطابق ہے۔

جوابِ ثانی: دست حضرت علامه سید محدانور شاه صاحب شمیری سے منقول ہے کہ بدئی محق انتہاء کے مقابلے میں آتا ہے اور بھی عدم کے مقابلے میں ہے توبدوالوحی کا مطلب وجودوحی ہوگیا اور آگے روایات میں کہیں وحی کا ذکر ہے لہذا مناسبت ہوگئی۔

جوابِ شالث: معرت اقدى شخ الحديث قدى سره مع معقول بى كدىد و بمقابله انتهاك بهاورانتها سے مرادم ض الوفات والى وى ساس سے پہلے والى وى سارى بدؤ الوحى ميں داخل بے خواہ متلوم و ياغير متلو

جو آب ر ابع: مصرت شاه ولى الله رحمة الله عليه منقول به كمقصود وسائل وى بين كه بيجغ والاكون بي الله في الله وي الله وي الله وي الله وي الله وي الله و الكون بي الله و الكون بي الله و الكون بي الله و الكون بي الله و الله

جوابِ سادس: سلاس العض محدثين سے يہ منقول ہے كد بدءِ عام ہے زمانے كے لحاظ سے ہو يامكان كے لحاظ سے ہو يامكان كے لحاظ سے دوالے كے لحاظ سے والے کے لائے کے لئے ک

كَـمَااًوْحَيْنَاالَى نُوْح: آيت مين حضور پاك عَلَيْكُ كى وى كو، حضرت نوح عليه السلام اورديگرانبياعلى نيناويسم السلام كى وى كومن السلام كى وى كيساتھ تشبيدى گئى ہے۔ فدكورہ كلام پرئى اشكالات كئے گئے ہیں۔

اشكالِ اول: ابتداءِ وى كوحفرت نوح عليه السلام كى وى كساتھ تشبيه دى، كياس يقبل وى نهيں اترتى مقى ؟ تو حفرت نوح عليه السلام كى وى كساتھ تشبيه دينے كى كيا وجہ ہے؟

جسواب اول: وی دوسم پر ب اروی تکوین ۱ روی تشریعی روی تکوین اس وی کو کہتے ہیں جسمیں ایسے احکامات بتائے جائیں جنکا قرب درضا کے ساتھ کوئی تعلق نہیں ہوتا تو حضرت و معلیہ السلام سے حضرت نوح علیہ السلام تک غالب وی تکوین تھی کچھا خلاقی احکامات بھی آئے تھے اور حضرت نوح علیہ السلام سے حضور علیہ تک غالب وی تشریعی تھی اس کے حضرت نوح علیہ السلام کے ساتھ تشبید دی ا

جواب ثانی: وی دوسم پرے اجس کے منکر پرعذاب آئے خواہ عذاب دنیا میں ہویا آخرت میں۔ ۲۔جس کے منکر پرعذاب نہ آئے۔ حضرت نوح علیہ السلام سے پہلے وی الی تھی کہ اس کے منکر پرعذاب نہ آتا تھا۔ تو یہ منکر کے معذب ہونیکے اعتبار سے تثبیہ ہے کہ نبی پاک علیہ کے وی نوح علیہ السلام کی وی کی طرح ہے کہ اس کا انکار دنیا و آخرت کے عذاب کا سبب ہے تا تا ہے اض مدیق ص ۲۸ ان

جوابِ شالت: يتشيه مبرك اعتبارے كه جيے رسولوں ميں حضرت نوح عليه السلام في وى ميں تكاليف برداشت كيں۔ تكاليف برداشت كيں ايسے بى آپ عليه السلام في بھى بہت ى تكاليف برداشت كيں۔

جواب رابع: اولمو االعزم بونے كا عتبار سے تثبيه بكر سولوں ميں جيے حضرت نوح عليه السلام بھى اولوالعزم بين -

جواب خامس: حضرت نوح عليه السلام يقبل جوانسانيت جلى آرى تقى وه عذاب كى وجهة موكى تقى ده عذاب كى وجهة موكى تقى ده ختم موكى محتات على دوايات بين كدات تقى دهزت نوح عليه السلام كوآدم فانى كهاجاتا بيس كما التي عند سي حضرت نوح عليه السلام كوآدم فانى كهاجاتا بيس ع

له فیض الباری جا ص۳ اعمدة القاری جا ص۱۶ سیام صدیق ص۸۳ جا سیناح البخاری جا ص۵۰ بحواله عمدة القاری المعروف بالعینی

جواب سادس: حفرت نوح عليه السلام كزمان مين بهى شيوع كفرتها اى طرح آپ عليه السلام ك زمان مين بهى شيوع كفر كاشيوع تفا- توريعى وج تشبيه به وكي -

اشكالِ ثانى: اس تثبيه بردوسرااعتراض بيدارد بوتا بكتشبية مسادات كوچا متى به جَبَدا ب عَلَيْكُ كَ وَى مِنْ تَمْ نبوت بهادر تَكُملِ وَين ﴿ الْيَوْمَ الْحُمَلُتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعُمَتِي ﴾ يادر حضرت نوح عليد السلام كى وى مين بيرين بين بين مين -

جسواب:مفیداورمشدید میں تمام چیزوں میں مساوات ضروری نہیں بلکہ مکر کے معدَّب ہونے کے اعتبار سے مساوات تثبید کے لیے کافی ہے۔

الشكالِ ثالث: حضرت نوح عليه السلام كى وى كومشه به بنانادليل عظمتِ وى نوح بيكونكه مشه به اصل بوتا ب حدو اب اول: مشه به كے ليے اشهرا وراعرف بونا شرط بے افضل بونا شرط نبيس تو حضرت نوح عليه السلام كى وى اشهرا وراعرف ہے۔

جواب نانى: تشيه مين تمام امور مين مشابهت ضروري نهين بلكه وجرشه جوبهي متعين كرلى جائه ويهان چونكه مقصو و بيان كيفيت وى تقا كيونكه حضرت نوح عليه السلام ساز سعي نوسوسال رج اور وى آتى ربى توكيفيات وى اس مين زياده بين بنسبت حضور عليه السلام كرة بيرجزوى فضليت بهوئى اس سي كل فضليت ثابت نهين بهوتى - الشكال: حضرت امام بخاري في فضائل قرآن مين بهى باب باندها اول مانزل اس باب مين اور فضائل قرآن والي باندها اول مانزل اس باب مين اور فضائل قرآن والي باندها اول مانزل اس باب مين اور فضائل قرآن والي باب مين كرار معلوم بوتا ب

جوابِ اول: يهان مقصود وكى سابتدائى حالت بيان كرنائيس بلكه طلق احوال بيان كرنامقصود بجبكه فضائل قرآن ميں ابتدائى احوال كوبيان كرنا ہے۔

جوابِ ثانی: وہ باب فضائلِ وی کے لیے ہیں بلکہ فضائلِ قرآن کے لیے ہے۔

جواب ثالث: يهال موى اليه ت ترض ب و بالنبيل -

جواب رابع: يهان بروى عام م حضور الله كى طرف كاذكر بويا اورانبياء يمهم السلام كى طرف جبكه فضائلِ قرآن ميں خاص اس وى كاذكر بے جو حضور علي كى طرف بو۔

ل ياره ٢ سورة المائده آيت

الخيرالساري (١٢٥) بدؤالوحي وَ النَّبِيِّينَ مِنْ بَعُدِه: ان الفاظ عاشاره كرديا كرا كي وى اتى عظمت والى م كرتمام انبياء ك وی کے لیے جامع ہے تو گویا جامعیت کی طرف اشارہ ہے۔ حسن یوسف دم عسی یو بیضا داری آنچه خوبان مه دارند تو تنها داری جيے شاعر نے ظاہري صفات ميں جامع قرار ديا ہے ايے بى آئى دى بھى تمام خصوصيات كوشال اور جامع ہے۔اس سے رہمی معلوم ہوا کہ انبیاء میسم السلام کی جملہ انواع وحی حضور پاک مطابقہ کی طرف ناڈل کیس گئیں ہیں۔ تعارف رواة حدثنا الحميدي: حيدى معرت الم بخاري كاستاد محرم بن حيدى دادا كالمرف نبت بانكا نام نام عبدالله بن زبير به ١١٩ هين وفات مونى بيد سعيد ميدي بهي معروف بين اوربيكي بين -مسفیان: سندول میں عام طور پردوسفیان ہوتے ہیں اسفیان اوری ۲ سفیان بن عیبیّہ جب مطلق سغیان ذکر كرين قومرادسفيان بن عيديني و تي جو نكد دونول ثقة بين اس ليدابهام معزبين بيدي تابعي بين متوفى ١٩٨هـ يحي بن مسعيد الانصاري المدني: مشهورتابي بير-آئم ملمين بير سے بير مين منورہ کے قاضی رہے۔متوفی (۱۴۳ه) محمدبن ابر اهيم التيمي: تيم قريش كالتبله باس كى طرف نبت بوفات ١٢٠ هي ب. علقمه بن وقاص الليثي: تابي بي بعض في مابيت كاقول بمي كيا بـ توفى بالمدينة ايام عبدالملك بن مروان 1 عمر بن الخطاب: نام مر، لقب فاروق ب صحابين عمرنام كواحد عالى عيري سب سي يلة آپ امیر المؤمنین کے لقب سے مشہور ہوئے۔آپ کی موافقات ١٩ بیں ٢٦ ذي الحجه٣ حكونماز برهارے تقایك جوي غلام ابولؤلؤ في خخر سے داركيا جس سے شہيد مو كئے سے ف ائده: بعض سندول مين كهولطاكف قدرتي طورير پيدا موجاتے بين اور بعض دفعه محدث خود پيدا كرتا ہے حدیث ندکور کی سند میں بھی متعدد لطا نف میں جودرج ذیل ہیں۔ الاولني: شروع سندي ہے جس ميں حيدي اور سفيان بيں جو كدكى بيں اور دوسرى حديث امام الك كى ذكر فرمائى جومدنی ہیں تواس سے اشارہ کیا کہ وحی کی ابتداء مکہ مرمہ سے ہوئی اوراس کا بھیلا وَمدیدہ منورہ میں ہوا۔

ا عمدة القارى نا ص١٨ ٣ الاصابه ج٢ ص١٩٥٥ (تفصيل مالات مفكوة المصابع كيّة خريس ١٠٧ يرد يكيه جاسكة بين) ع اليناس عمدة القارى خا ص١٨

الثالثة: جب ایک بی مفت کے گیراوی سند کے اندر آجائیں تو یہ بھی لطا نف سند میں شار ہوتا ہے اور باعث حسن ہوتا ہے بہال پر حمیدی کے سواء جارتا بعی د حمیم الله تعالى بیں۔

على المنبو: سب بي حديث حفرت عرض في مجدنوى كم نبر پرسائل محدثينٌ فرماتي بين ك تعجب كه حفرت على الممنبو: سب بي حديث تفل كرنے عرض ايك حفرت علقمه بن وقاص بين اوران سے نقل كرنے والے جو اللہ عمر اللہ عمر اللہ على ال

السر ابعه : كەپبلى مدىپ غرىب لائ تاكەم علوم ہوجائے كەغرىب مدىپ بھى تىچى اور قابلِ استدلال ئے۔غىر مقلد كهدديا كرتے ہیں كەجى ارب بەتوغرىبردى (غرىب بى) مديث ہے۔

انما الاعمال بالنيات: يه عديث شريف مختف الفاظ كساته منقول ب الاعمال بالنيات العمال بالنيات العمل بالنية م انما الاعمال بالنية م الاعمال بالنية الماكم وحرب العمل بالنية الماكم وحرب العمل بالنية الماكم وونون قول بين جوكم بين كدم كبه بالن كا دليل بيب كدانً حرف مشبه بالفعل اور ما "نافيه يا ذاكره بالبتاس براجاع بكدي كلم وحرب -

دلیلِ ثانی: انما کے کلم مدحر ہونے پراجماع ہے جیسے ((انسما المعاء من المعاء)) میں اس حدیث مبارکہ سے بعض صحابہ کرام ہوئے۔ استدلال کیا ہے کہ اِکسال سے خسل واجب نہیں ہوگا۔ اِکسال کہتے ہیں کہ دخول ہو پھرکسل ہوجائے اور لینی ستی ہوجائے اور بغیر انزال کے جدا ہوجا کیں۔ جوحضرات بغیر انزال کے خسل کے قائل نہیں انہوں نے اس حدیث سے استدلال کیا ہے پھر جن صحابہ شنے اسکا جواب دیاان میں سے کسی نے بینہیں کہا کہ انما کلمۂ حصر نہیں ہے تو صحابہ کرام کھی اس کی کی خصر ہونے پراجماع ہوگیا۔

ا فیض الباری جا ص ۵ سے یارہ کے سورة المائدہ آیت ۹۹ سے پارہ اسورة الحل آیت ۸۲ سے ترخدی شریف جا ص ۳۱

الاعمال: عملى جع باس كمقابل مين فعل ب

الخيرالساري

اشكال: افعال كون بين فرمايا، اعمال كالفظ كون استعال كيا؟

جو اب: یہاں عمل کا لفظ ہی مناسب ہے کیونک عمل اور فعل میں متعدد وجوہ سے فرق ہے یا

الفوق الاول: عمل خاص اورفعل عام بي برمل فعل بوكاليكن برفعل ومل نبيس كهديكة عمل مين نيت شرط بفعل مين نبير

الفوق الثاني: برفعل اختياري نبيل بوتا برمل اختياري بوتابي

الفرق الثالث: عمل ك ليددوام شرط بندك فعل ك ليد

المفوق المرابع عمل كے ليصحت بهي طحوظ هوتي ہے نه كفل كے ليے مثلا ايك شخص بے وضوء نماز بر هتا ہے یہ فعل تو ہو گالیکن عمل نہیں ہوا۔

بالنِيَّات: نيات نيت كى جمع ب، لغوى معنى توجه القلب نحو الفعل يعنى قصد كرتا، اصطلاح شرع مين قصد العمل لوجه الله تعالى.

نيت اور اراده ميس فرق: ييه كداراده ين اين غرض داخل نبين بوتى خواه غرض بويانه بواورنيت میں نیت کنندہ کی اپی غرض ہوتی ہے اس لیے اللہ تعالی کے لئے نیت کا لفظ استعمال نہیں ہوتا ارادہ کا اطلاق آتا ہے۔ نیت کی اقسام: نیت تین قسموں پر ہے۔

الاول: تمييز العبادة عن العبادة: ايك آدى فرض بهي پر هتائي فل بهي - يدكيے پية طيح كاكه يوض ب ینفل یعن نیت سے فرق ہوگا ای طرح حج اور عمرہ کہ لبیک تو دونوں کے لیے ایک ہے لیکن نیت سے فرق ہوگا۔

الثاني: تمييز العبادة عن العادة: يعنى كهاني، ييغ وغيره من سنت اورعبادت كي نيت كراينا

الثالث: تسميسة السمعمول لها عن المعمول لها: ايك شخص كهتاب كمين الله تعالى كے لي نماز يرصما ہوں دوسرا کہتا ہے کہ میں لات وغزی کے لیے پڑھتا ہوں ،ای طرح شہرت وغیرہ کے لیے ایسے ہی ایک شخص ہجرت كرتا إلى الله تعالى كى رضا كے حصول كى غرض سے اسكے دين كو پہنچانے كے ليے دوسرا آ دى ہجرت كرتا ہے عورت كو حاصل کرنے کے لیے۔

> انما لكل امرءٍ ما نوى: ب شک ہرانسان کے لیے وہ ہے جواس نے نیت کی۔

> > ا فیض الباری ص ۵ رقر۱ مطبوع تجازی

مسوال:انماالاعمال پہلے کہددیا سے بعدیہ جملہ لائے بیرتو تکرارہ اس لیے کردونوں کا مطلب ایک ہے؟ جواب: محدثین رحمهم الله تعالی کا اختلاف ہوا ہے کہ یہ جملہ پہلے کی تاکید ہے یا تاسیس ہعض کے زدیک تاکید ہے جمہور دعزات رحمهم الله تعالی کہتے ہیں کہ بیتاسیس ہے محدثین نے اسکے اور پہلے والے جملہ کے درمیان متعدد وجووفرق بیان کی ہیں۔

المفوق الاول: بمى اليابوتا بكرايك جمله عرفى بول دياجا تا بها سكه بعد شرى بيان بوتا به بهلا جمله عرفى دومرا جمله شرى بوتا به يستخط كا باك ارشاد به (لمكل امة امين وامين هذه الامة ابوعبيدة بن الجراح. وقال لكل شنى زينة وزينة القرآن سورة ياسين) ع

الفرق الثاني: يهلّ جمله مين على كاذكر بدوسر عجله مين عاملين كاذكر بـ

الفرق الثالث: برش كي ليمتعدد الله بواكرتي بين على ادبيه شهور بين الدي بين على معصورى بين الفرق الثالث: برش كي ليمتعدد الله بهار المرعائي جيده و ياني جو كور سياستعال كياجائي ليها المركمة و كور كي مورت المراعلي فود كور على على المرائد و المركمة المركمة و المرائد و المركمة و المرائد و

انما الاعمال بالنيات:اس سے دواہم بحثي متعلق ہيں۔

البحث الاول: عديث پاك كاير جملة عموم رونى بي ياخصوص پر بظا برعموم برمعلوم بوتا به اورالف لام استغراقی بي يعنى تمام اعمال كادارومدارنيتوں پر بي يعنى اسكا تواب نيت پر موقوف بيكن محققين كيتے بيل كوالف لام عهدى ماننا پريكا

ا باره ۳۰ سورة عس آیت ۳۲ ع باره ۲ سورةالنساء آیت ۱۷ ع باره ۱۱ سورة مریم آیت ۱۸ ع مسلم شریف ۲۵ م ۱۸۳۳

کونکہ اعمال تین قتم پر ہیں افرائض دواجبات، یعنی عبادات، امباحات ہم معاصی، پہلی دونوں قسموں میں و اب نیت پر موقوف ہے تیسری قتم میں نیت پر موقوف نہیں ہے دوسری قتم مباحات میں اگر آپ سنت کی نیت کرلی تو ثواب ہے مثلاً کپڑے میں ستر ڈھا تکنے کی نیت کرلی تو ثواب ہے وگر نہیں۔ اور نیت ثواب کی وہاں ہو سکتی ہے جہاں خبر کا پہلو ہو اور معاصی میں خبر نہیں ہو اس خبر کی اللہ اور رسول اللہ اور رسول اللہ اور معاصی میں خبر نہیں ہے اس لیے کہ اگر معاصی میں خبر ہوتی تو معام می نے قرار دیئے جاتے۔ جسمیں اللہ اور رسول اللہ اللہ کی نافر مانی ہو وہاں آپ خبر کی نیت کیسے کر سکتے ہیں ایک شخص چوری کرتا ہے کہ امیر وں سے کیر غریبوں کو دونگا۔ ایسے بی ایک شخص کبر کرتا ہوں تو یہاں نیت درست نہیں ہو سکتی۔ ایک شخص کبر نا کرتا ہوں تو یہاں نیت درست نہیں ہو سکتی۔

البحث الثانی: فقہاءً کے زدیک بیصدیث اپنے ظاہر پرمحول نہیں ہے کیونکہ ظاہر سے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ بغیر نیت کے ملوں کا وجود ہی نہیں ہے اور یہ ظاہر البطلان ہے اس لیے تاویل کرنی پڑے گ۔ تاویل کرنے میں فقہائے کے دوگروہ ہوگئے ہیں۔

- (۱)..... تَمَد ثلاثُهُ فرمات بين كديها لصحت كالفظ محذوف ہے۔ اى صحة الاعمال بالنيات _
 - (٢) فقهاء حفية كہتے ہيں كەلفظ تواب محذوف ہے كەمملوں كا تواب نيتوں پرموتوف ہے۔
 - (m) بعض حفرات كمت بي كه حكم الاعمال بالنيات _

عم عام ہے صحت کو بھی محمل ہے تو اب کو بھی ۔ تھم صحت اور تھم تو اب لہذا مقابلہ تو پہلے دو کے درمیان ہی ہوا۔ تو جمہور صحت کا لفظ انکال کر کہتے ہیں کہ ہم ل کے تیجے ہونے کے لیے نیت شرط ہے جا ہم صحت کا لفظ انکال کر کہتے ہیں کہ ہم ل کے تیجے ہونے کے لیے نیت شرط ہے۔ لیکن لہذا جس طرح نماز کے تیجے ہونے کے لیے نیت شرط ہے۔ لیکن معزات فقہاء حنفی قرماتے ہیں کہ تو اب کے لئے نیت شرط ہے کہ لیے نیت شرط ہیں ہے۔ سے معزات فقہاء حنفی قرماتے ہیں کہ تو اب کے لئے نیت شرط ہے کہ لیے نیت شرط ہیں ہے۔

و شمرة الاحتلاف تظهر في الوضوء: كا كر بغيرنيت كوضوكرليا تو عندالاحناف وضوبوجائيًا اورعندالجمه ر وضوبين مولاً

مبنی الاختلاف: یافتلاف اصل میں ایک اور اختلاف برینی ہے کہ وضوء عبادت ہے یافظافت۔جمہور حضرات فرماتے ہیں کہ فظافت ہے اور نماز کے لیے وسیلہ ہے اگر ریمبادت ہونا ثابت ہوجائے تو حفیہ بھی نیت کی ضرورت کے قائل ہوجا سینے اور دوسری صورت میں شافعیہ تعدم نیت کے قائل ہوجا سین گے۔

دلیل جمهور علی ارشاد به که جب متوضی وضوکرتا بو گناه ساقط به وجاتے ہیں۔ معلوم بواکہ وضو عبادت بے کونکہ گنا بول کا ساقط بونا عبادت ہے بہوتا ہے جمعہ الگلے جمعہ تک کے گنا بول کو معاف کراتا ہے۔ عبادت ہے کیونکہ گنا بول کا ساقط بونا عبادت سے بوتا ہے جمعہ الگلے جمعہ تک کے گنا بول کو معاف کراتا ہے۔ دلیل حنفیہ: سسم مفتاح الصلوة الطهور ل اور وسلے کے لیے نیت ضروری نہیں ہے جیسے چٹائی و کپڑے وغیرہ کو دھوتے وقت نیت شرط نہیں۔

سوال: آپ کہتے ہیں کہ نیت شرطنہیں ہا ورصحت کالفظ محذوف نہیں مانے تو پھر نماز میں نیت کو ضروری قرار کیوں دیتے ہو؟ معلوم ہوا کہ وضوء کے بارے میں ثواب کالفظ اور نماز کے بارے میں صحت کالفظ محذوف مانے ہو۔ تو جب نماز کے بارے میں قائل ہو گئے ہو وضوء کے بارے میں بھی قائل ہوجاؤ؟

جوابِ ثانی: نماز کے بارے میں بھی اس حدیث سے استدلال ہے اور ثواب کا لفظ ہی محذوف مانے ہیں اس طرح کہ نماز سے مقصود ہی ثواب ہے جب نماز میں نیت نہیں کر یگا تو ثواب نہیں ملے گا جب کوئی شکی اپنے مقصد سے خالی ہوتو وہ باطل ہوتی لیے جیسا کہ انتفاءِ لازم سے انتفاءِ ملزوم ہوجا تا ہے ایسے ہی انتفاءِ مقصد سے انتفاءِ شکی ہوجا تا ہے۔

فائده: يسارى بحث فقهائ كى طرز پرچلائى گئى ہورند حفرت العلامه محد في وقت مولانا محمد انورشاه صاحب كشميرى فرماتے ہيں كه يہ تو يهال بيان مقصود مى نہيں كه لفظ ثواب محذوف ہے يا لفظ صحة بلكه مقصود حديث پاك ہے اعمال منويّه كا تكم بيان كرنا ہے لينى الاعمال بالنيات ان حيرا فحير وان شرا فشر جيے نيت ہوگى و يہ تى مراد يو حضرت شاه صاحب قدس سره نے تو اسكوفقهائى بحث ہے ہى نكال ديا نيت كى جو تين تشميں ہيں انكافا كده ابھى معلوم ہوگا كه فقهاء نے اس كو تسميل المعمول لها والى اصطلاح ميں داخل كرديا ہے۔
تمييز المعمول لها عن المعمول لها والى اصطلاح ميں داخل كرديا ہے۔

فمن کانت هجرته الی الله و رسوله: جرت دوتم پر ب اظاهری ۲-باطنی ـ

هجوت ظاهوى: دارالفساد يدارالامن كي طرف يادارالحرب يدارالاسلام كي طرف ججرت كرنار

هجرت باطنی: یہ کہ المهاجر من هجر ما نهی الله عنه اورایک روایت میں ہے (والمهاجر من هجر ما نهی الله عنه اورایک روایت میں ہے (والمهاجر من هجر الخطاباو الذنوب) توجس نے سب منائی کوترک کیاوہ کامل مہا جراور جس نے بعض کوچھوڑ ا تودہ ناقص مہاجر ہے۔

ل ترمذى شريف عا س ٢٠ ع ياره ٢٠ سورة البينة آيت ٥ س متكوة شريف ص١٥ بحواله شعب الايمان

الى دنيا: "دنيا" دُنُوِّ عا خوذ به يادَنَاءَ قصد (١) دُنُوِّ عشق بوتواصل مين دُنُوى تها بمعنى نزد كي والى، چونكد دنيا ترت كے مقابلے مين نزد كي والى ، چونكد دنيا ترت كے مقابلے مين نزد كي والى ، چونكد دنيا تا ہے ، چونكد دنيا بوتواس صورت مين اصل كے اندر دُنُے تقاكيونكه مهموز اللام مين قاعده ہے كہ بھى بمزه ياسے بدل جاتا ہے، چونكد دنيا ترت كے مقابلے مين كمينى ہے اس ليے اسكود نيا كہاجاتا ہے پس طالب دنيا كمينى شكى كا طالب بوا۔ دنيا بروزن فعلى اسم نفضيل ہے اور ازوم تانيث كى بناء پرغير منصرف ہے۔

امرأة ينكحها:سوال: جبدونيامين عورت بهي داخل ب يهر إمرأة كهدر تخصيص كى كياوجه ؟

جواب اول: يخصيص بعد التعميم بكونكردنيا مين زياده ترفساد ورت كيوبرس موتا باورزياده

میلان عورت کی طرف ہوتا ہے کیونکہ بیمرد کی جنس سے ہےاور میلان طبعی ہم جنس ہی کی طرف ہوتا ہے۔

جواب شانسی: جواب سے پہلے ایک ضابطہ بطور فائدہ کے بجھ لیس۔ جیسے آیات مبارکہ کاشانِ نزول ہوتا ہے ایسے ہی احاد بیث مبارکہ کاشانِ ورود ہوتا ہے آگر کی واقعہ کے بعد آیت نازل ہوتو وہ واقعہ ایس آیت کاشانِ نزول ہوتا ہے ای طرح آگر کی واقعہ کے بعد آیت نازل ہوتو وہ واقعہ ایس آیت کاشانِ ورود کہ لاتا ہے۔ ای طرح آگر کی واقعہ کے بعد یا کی واقعہ پر آپ علی اس مدیثِ مبارکہ کاشانِ ورود ہیہ کہ ایک آدی نے امقیس نامی ورت کی طرف نکاح کا بینام بھیجا نہوں نے کہ لا بھیجا کہ ایس شرط پر نکاح کر سکتی ہوں کتم جرت کر لوچنا نچواں شخص نے اس عورت الی دنیا کہ کی وجہ سے جرت کر لی اس وجہ سے اسکومہا جرام قیس کہنے گئے ، تو اسپر آپ تا اللہ نے فرمایا و من کانت ھجو ته الی دنیا

يصيبها او الى امرأة ينكحها فهجرته الى ما هاجر اليه. خلاصه ير تخصيص شان ورود كاعتبار عهـ

ماهاجر اليه:

سوال دوسر جملے میں فه جوته الی الله ورسوله صراحناً بولا ہے جبکہ یہاں پر فه جوته الی ما هاجر الیه فرماکرابہام کردیااس ابہام کی کیا وجہ ہے؟

جواب اول: بیان حقارت کے لیے کہ دنیا وعورت اس قابل نہیں کہ انکوبار بار ذکر کیا جائے۔

جوابِ ثانی: یدونوں مستهجن بین اور مستهجن چیزوں میں ابہام اچھا ہوتا ہے، مستهجن ان چیزوں کو کہا جاتا ہے جنکا ذکر اچھانہیں ہوتا۔

اشک کال: واقعی اگریمی بات ہے جوآپ نے بیان فرمائی تو پھر قرآن پاک میں بار بارعیسی بن مریم کا ذکر کیوں کیا گیا ہے؟ صرف عیسیٰ عدر سدر کانام ہی ذکر فرمادیتے؟

جواب: يطر زكلام ال بات پرمتنبكر نے كے ليے ہے كه آپ يعن عيلى بغير باپ كے پيدا ہوئے۔ سوال: حفرت امام بخاري نے حديث ميں اختصار كيوں كيا؟ اور پہلا جملہ ف من كانت هجرته الى الله ورسوله الح كيوں ترك كرديا؟

جواب ا: یان کاساتذه کرام کاخصارے چنانچیام بخارگ نے بھی ایہ ای کردیا۔

جواب ٢: حضرت امام بخاري في تواضعاً اليه كياتا كدوى نه پاياجائ كرييم المل بهت زياده اخلاص برين بـ بيد دنول جواب كرور بين اس ليه كريه حديث چهموقعول برذكرى كي بهاور پورى بھى ذكرى باكرتواضعاً اختصاركيا بيدونول جو برجگدا خصار بونا جا بيد .

جواب سا: ایک ہے جلب منفعت اور ایک ہے دفع مضرت دفع مضرت ، جلب منفعت سے مقدم ہوتی ہے۔ ای طرح ایک ہے مسن نیت اور ایک ہے بدنیتی سے بچنا، تو امام بخاریؒ نے پہلا جملہ حذف کر دیا اس بات پر متوجہ کرنے کے لیے کہ مسن نیت اگر متحضر نہ ہوتو بدنیتی سے ضرور بچنا جا ہے۔

جواب ۲:ا کال تین تم پر ہیں الطاعات ۲ عبادات ۳ قربات ان میں طاعات کے لیے تعجے نیت شرط نہیں اور نہ ہی معرفت کیونکہ طاعات جیسے تعجے عقیدہ وغیرہ اس میں ابھی تو وہ معرفت کی کوشش کررہائے۔معرفت ہوگاتو نیت ہوگا۔الحاصل طاعات بغیر حسن نیت کے بھی ہوسکتی ہیں۔لیکن قربات میں معرفت شرط ہے نیت شرط نہیں جیسے قرآن و تلاوت حدیث میں کوئی نیت نہ ہوتو بھی ثواب ملے گا اگر نیت غلط ہوگی تو ثواب نہیں ملے گا۔تیسری قتم عبادات ہیں ان کے لیے نیت بھی شرط ہاور معرفت بھی۔ حضرت امام بخاری اختصار کرکے یہ بتلانا جا ہے ہیں کہ حسن نیت ہونہ ہو بد نیتی سے بہر حال بچنا جا ہے۔

سوال:اس مديث پاك كاباب كماته كياربط م؟

جواب: محدثین نے اس کے کئی جوابات دیے ہیں ا

صورت اول: بیصدیث دراصل امام بخاری فی ترجمة البابی دلیل مین ذکر بی نہیں کی که اسکی باب کے ساتھ مناسبت تلاش کی جائے اس کوتو بطور خطبہ کے ذکر کیا ہے چند وجوہ کی بنا پر۔

الوجه الاول: طالب علم كوچائ كمشن نيت نه وتو بهى كم ازكم بدنيتى سيتو يح

الوجه الثاني: تحديث بالنعمة كيطور برلائج بين كمالله تعالى كافضل بي كد كسى اورغرض سي شروع نبيس كرر با الوجه الثالث: جرت كاذكركر كاشاره كردياكه نوع من الهجوة طلب علم كے ليے كرنى ير مجل _

الوجه الوابع: يبتلانا عاج بن كه طالب آخرت مونا عاب ندكه طالب دنيا-

صورت ثانی: یہے کمناسبت ہو پھر مناسبت مختلف وجوہ سے محدثین بیان کرتے ہیں۔

الثوجه الاول: وي في مقعود احكام واعمال بين تووى مبدأ احكام باورنيت مبدأ اعمال توتهمة الباب میں مبدأعلوم كاذكر ہے اور حديث میں مبدأ اعمال كاتو مبدأ مبدأ میں مناسبت ہوگئ۔

الوجه الثاني: كَمُرْمه مِن وَي كَابْدَاء هُولَ اور جب آپ عَلِيلَةُ مدينهُ مِن آئِ تُوسب سے يہلے بيد حدیث بیان فر مائی تو بھرت کے بعد پہلی حدیث بیے اس لحاظ سے ابتداءوی سے مناسبت ہوگئ ۔

الموجه الثالث: ايك إبتداء وى ايك يظهوروى ، تومدينه مين ظهوروى مواريها نظهوروى كي طرف اشارہ ہے اس صورت میں ترجمۃ الباب سے مقصود ظہور وحی ہے۔

الوجه الرابع: غرض احوال وي بين يجي وي كقسول مين ايك تتم بخواه وي جلي موياوي في -الوجه الحامس: يهال عظمت وي كابيان بي كه اتى عظمت والى وى بي كماس يغرض دنيا ياعورت نہیں ہوسکتی یہ کیوں نہ عظمت والی ہو کہ کتنی اخلاص والی شخصیت پر نازل ہوئی۔اور کتنی عظمت والی ہے کہ اللہ تعالی کی

الوجه السادس: بدنو الوحى بمقالمه انتهاء الوحى بادرانتا عمرادمرض الوقات كي وي ب تواس صديث ميں اس سے پہلے كى وحى بے تو مناسبت يائى گئ ۔

(٢) حدثنا عبداللهبن يوسف قال اخبرنا مالك عن هشام بن عروة عن ابيه عبدالله بن پوسف نے ہم سے بیان کیا کہ امام مالک نے ہشام بن عروہ سے ہمیں روایت بیان کی انھوں نے اپنے باپ سے عن عبائشةام المعرّمنين رضى الله عنها انّ الحارث بن هشام سأل رسول الله عُلِيلِهِ انہوں نے ام المؤمنین حضرت عائشہ یہ بیان کیا کہ حارث بن ہشامؓ نے رسول اللہ علیہ ہے دریافت کیا فقال يا رسول الله كيف يأتيك الوحي فقال رسول الله عَلَيْكَ أحيانا يأتيني مثل صلصلة الجرس عرض كيايار ول الله السي الله على إلى وي كل طرح آتى بي رسول اكرم الله على قوير بي المتحنى كي آواز كاطرح آتى ب وهو اشده على في في في ما المال وعيت عنه ما الحال الاربيان المال وي المال وي المربيان المال وي المربيان المال وي المال المال وي المال المال

وتحقيق وتشريح

حلقنا عبدالله بن يوسف (التينسى): نسبة الى تينس بكسرالتاء والنون المكسورة المشددة بلدة بمصرساحل البحرواليوم حراب ان كى وفات ١٨٨ هكى بهور آرام كام مريس بام بخاريً كما تذه يس يرس ع

اخبر نا مالک:مشہورامام الک مرادین انکی وفات ۱۹ کاری ہور آخری آرام گاہ جنت البقیع میں ہے۔
هشام بن عروة: بشام حضرت عائش گی بہن حضرت اساء کے بوتے ہیں۔ ان کی وفات ۱۳۵ کی ہے۔
عن ابیہ: مرادعروہ بن زبیر ہیں، فقہائے مدینہ میں سے ایک ہیں، ان کی وفات ۹۳ ھیں ہے۔
فائدہ: حضرت عبداللہ بن یوسف کے علاوہ باقی سب راوی مدنی ہیں یہ مسات سند میں سے ہے۔
عن عائش ہیں۔ حضرت عائش حضور علی کے کہ بوی، رفیقہ حیات ہیں۔ حضرت ابو بحرصد بی کی صاحبز ادی
ہیں۔ حضور علی ہوی ہونے کی وجہ سے ام المؤمنین کہلاتی ہیں، بعظیما واد بانہ کہ نسبا، بعض احکام میں ماں ہیں بعض میں نہیں۔
میں نہیں۔

 سوال: جب تعظیمی داد بی مال ہیں تو نکاح کیوں جا ترنہیں ہے؟

جواب: برى وجية صريح نص بحقول تعالى: ﴿ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا ازْوَاجَه ، مِنْ بَعْدِهِ اَبَدَا ﴾ ل ووسرى وبتظيم ہے کے عظمت کی وجہ سے امت کے لیے نکاح کونا جائز قرار دیا گیا منٹاء عظمت نبی علیہ ہے یاعظمت امہات المؤمنین۔ جم سال کی عمر میں ان کا زکاح ہوا۔ ۱۸سال عمر تھی کہ جب حضور علیہ تھے کا وصال ہوا۔

حارث بن هشام: حارث ابوجهل کے بھائی ہیں فتح کمد کے وقت مسلمان ہوئے۔

سوال:يندمتصل بيامرسل صحابي ب

جو اب: هارث بن بشامٌ حضور علي سيجس وقت بيسوال كرر ب بين حضرت عاكثه ياس موجود بين يأنبيس ،اگر پاس ہیں تو بیصدیث متصل ہے اگر حضور علیہ نے حضرت عائشہ کوسنائی تو بھی متصل ہوگی ،اگر دونوں باتیں نہیں تو مرسل صحابی ہوگی کیسی صحابی ہے نی ہے۔مرسل صحابی بالا جماع ججت ہے اور مرسل تابعی میں اختلاف ہے عند انجمہور جحت ہے بخلاف امام شافعیؓ کے کہوہ اسمیں اختلاف فرماتے ہیں۔

قسال يسا رسول الله: حضور عَلِي ما منه بون تو يارسول الله كهني مين كوئى حرج نهيس بيكن اگر حضور علیہ سامنے نہ ہوں تو اس وقت کہنا کیساہے؟ اس میں تفصیل یہ ہے کہ کہنے والے کی تین حالتیں ہیں دوحالتوں میں جائز ہے ایک حالت میں ناجائز۔

ا: یک کہنے والے کے دل میں بیہ ہو کہ جب بیرمیرا کلام پہنچاتو اس وقت میں خطاب کرتا ہول جیسے خط میں السلام عليكم بسيغه خطاب لكصة بيل.

دوسری حالت سے کہانے آپکوحضور علیہ کے سامنے یا حضور علیہ کواینے سامنے تصور کرکے کم الصلوة والسلام عليك يا رسول الله ان دونول صورتول مين جائز بـ

تيسرى صورت يه بے كه حاضر دفاضر كاعقيده ركھتے ہوئے كه جہاں درودشريف پڑھاجا تا ہے دہاں آ پھا موجود ہوتے ہیں اس صورت میں ناجائز ہے چونکہ کثرت سے ناجائز کا التزام شروع ہوگیا ہے تواس تشبہ سے بیخے کے لیے ترک ضروری ہے البتہ تنہائی میں پڑھ سکتے ہیں۔

مثل صلصلة الجرس:

(۱)زنجيركوكسى چنان ير مارا جائة واس سے جوسلسل آواز پيدا ہوتى ہے اس كوصلصلة الجرس كہتے ہيں إصلصلة اس آ وازکو کہتے ہیں جودولوہوں کے مگرانے سے پیداہوتی ہے کین بعد میں ہر جھنکارکوصلصلہ کہنے لگے۔

لي باره ۲۲ سورة الاحزاب آيت ۲۵ (ايضال النخاري ص ۲۸)

(٢) جانور كے گلے ميں گھنٹي كي آواز كوصلصله كهرسكتے ہيں إ

(۳)ای طرح گاڑی کی آواز کو بھی کہد سکتے ہیں۔ الجرس جانور کے گلے میں گھنٹی کو کہتے ہیں۔ بعض روایات میں کاندہ سلسلة علی صفوان ہے ع

(٣).....الصوت المتدارك الذي لايفهم اول وهلة ـ ٣

هو اشده على:زياده شديد بونيكي دووجه بين _

ا: اول یہ کہ حواسِ بشریہ کے قطل کی وجہ سے آ پکو تکلیف ہوتی تھی۔

۲ دوسری وجہ یہ کو آگر جریل علیہ السلام اپنی اصلی شکل میں آکر کلام فرما کیں تو اس آواز سے قرآن پاک کا اخذ کرنا بڑا مشکل ہے برنبست اس کے کہ حضرت جریل علیہ السلام انسانی شکل میں آکر کلام فرما کیں ،ان دو وجہ سے حضور علی ہے کہ جب زیادہ شدت معلوم ہوتی تھی ہے۔ اس کا تخل نبی ہی کرسکتا ہے اس کے بارے میں قرآن پاک میں ہے جو اِنّا سَنُلُقِی عَلَیْکَ قَوْلا تُقِیلا ﴾ وقال تعالی ﴿لُو اَنْوَلْنَا هذا الْقُورْآنَ عَلی جَبَلٍ لَّوا أَیْتَه وَالْ اللّه اللّ

· سوال: آخريك چيزكي آواز ي؟

جواب: اس مين متعددا قوال بير_

(۱) مصوت كلام فسي به كلام فسي كي صوت بلاكيف ب، جيس شيخ عطار ف فرمايا

ﷺ کس در ملک اوا نبازنے قول اورالحن نے آوازنے

- (٢)تيزى سےفرشته سفركرك آتا سے قوق واز بيدا موتى سے يعنى سوعت سيو مَلَك كى آواز ہے۔
 - (m) حضرت جريل كي پرول كي آواز ہے۔
- (۷) جب الله تعالى وى نازل فرماتے ہيں تو فرشے عظمت كى وجہ سے پرَ مارتے ہيں۔ يه فرشتوں كے پروں كى پوركى كير پراہث كى آ واز ہے۔
- (۵).....حضرت شاہ ولی اللّٰہ ﷺ منقول ہے کہ حضور علیہ کواس وحی میں شانِ بشری سے نکال کر عالم قدس سے ملاویا

ا عدة القاري نما ص ٣١ م. اينا ص عدة القارى نما ص ٣٠ م (بخارى نما ص ٢٠ يرموانا الحد كلي سيار نيوري في حاشيره يرتك المعنائي مشل صلصلة المجرس الشكل من الفهم من كلام الرجل كذا في المكومانى ، علام اين نم الفهم من كلام الرجل كذا في المكومانى ، علام اين تجرّ عمل في المبارى في المبارى في المراك في الم

جاتا تھا اور جب شانِ بشری سے نکال کر عالم قدس کی طرف طاتے ہیں تو حواسِ بشریہ عطل ہوجاتے ہیں کو یا بیدواسِ بشریہ کے تعطل کی آ واز ہے جیسے کا نوں میں اٹکلیاں ڈالیں تو ایک آ وازی پیدا ہوجاتی ہے۔

سوال: وي كي يتم آپ علي پرمشكل كيون تي؟

جواب: كيونك فرشت الرانساني شكل مين آجائية بات كرنا آسان جاور آواز عكام جمعنى برات ويد شكل بـ

يتمثل لى الملك رجلاً:رجلاً كمنصوب بونے كى جارد جبيں بوكتى بير۔

ا مفعول مطلق ہونیکی وجہ سے منصوب ہے ای متحصل لی السملک تسمثل رجل : مضاف کوحذف کرک اعراب مضاف الدکودید سے گئے۔

٢....منصوب بنزع الخافض لين باء محدوف باى يتمثل لى الملك برجل ٢

السسال ہونیکی بنا پر منعوب ہے ای حال کو نه رجلاً.

منصبه على انه تميز ، اكثر شراح في يجى فرمايا ب

مسوال: ندکوره بالاتقریر سے دحی کی متعدداقسام معلوم ہوئیں جب کدروایت میں صرف دواقسام کا ذکر ہے اور قرآن پاک میں صرف تین اقسام کا ذکر ہے دو فدکورہ فی الروایت اور تیسری قتم من ورآ والحجاب، تو تعارض ہوااس تعارض کے حل کی کیاصورت ہے؟

الفرق الاول: وى نبوت من رؤيت ملك ضرورى بخلاف وى ولايت ك.

الفرق الثانى: وى ولايت من امرونى نبيس موتا بخلاف وى نبوت كـ امرونى كاخطاب صرف نى كوموتا ب- الفرق الثانى التنفى مثل صلصلة الحرس: مديث من ياتينى كافاعل عاملٍ وى فرشته --

قالت عائشة:اس من دواحال بين

ا: بسدسابق ہوتو بیصدیث مرسل بن جائیگی۔ ۲: اگرسندسابق کے ساتھ نہ ہوتو تعلیق ہوگی۔

حکم تعلیقاتِ بخاری: اگرمیذمعروف کے ساتھ ذکر کری تو حکمامتصل ہوگی اگرمیند مجبول کے

ل بندنامه ص مع اليناح البخاري عاص ١٨٠ مع عمدة القاري جاص ١٨٠ مع باره ٢٢ مورة الاحزاب آيت ٢٣

ساتھ ذکر کریں تو اتصال میں احمال کی وجہ ہے متصل کے تھم میں تو نہیں ہوگی البتہ قابل احتجاج ہوگی دوسرے دلائل کے مقابلے میں مرجوح ہوگی۔

ربطِ حديث:

ااس حدیث میں عظمت وجی کابیان ہے۔ لیتفصد عرقاً سے عظمت وجی معلوم ہوتی ہے۔

٢اس حديث كاندرا حوال وحي بهي بير _

سا ترجمة الباب ميں قرآن ياك كى جمآيت ہاں ميں وحى كاذكر ہے تو وحى وحى ميں مناسبت ہوگئ _

مهموسائل وحی کا ذکر ہے۔

۵ای حدیث میں وحی سے مرادوفات سے پہلے کی وحی ہے۔

(٣) حدثنا يحيلي بن بكير قال اخبرنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب ہم سے تحیی بن بکیر نے حدیث بیان کی کہا ہمیں لیٹ نے خبر دی عقیل (ابن خالد) سے اور انھوں نے ابن شہاب زہری سے عن عروة بن الزبير عن عائشة ام المؤمنين رضى الله عنها انها قالت اول انہوں نے عروہ بن زبیر ﷺ انہوں نے ام المؤمنین حضرت عائشہ سے بیردوایت نقل کی کہ انھوں نے بیفر مایا کہ پہلی چیز مابدئ بسبه رسول الله عَلَيْكُم من الوحي الرؤيا الصالحة في النوم جس نے آنحضور علیہ پر وحی کی ابتداء ہوئی،رؤیاءِ صالحہ تھے،جنہیں آپ علیہ نیند میں و سکھتے تھے۔ فكان لايرى رؤيا الا جأء ت مثل فلق الصبح ثم حبب اليه الخلاء وكان يخلو بغار حرآء چنانچ جوخواب بھی دیکھتے وہ سے کی سفیدی کی طرح سامنے جاتا بھرخلوت گزی آ پے کے زو کی محبوب کردی گی اور عاد حراء میں خلوت گزی فرمات فيتحنث فيسه وهو التعبدا لاليالي ذوات العدد قبل ان ينزع الي اهله اوں میں عبات کرتے اور تحنث بمعنی تعبد ہے (یعنی) اپنے ال کی طرف اُستیاق سے پہلے کی رات تک اس میں عبادت فرماتے تھے ويتسزود لمذلك ثمم يسرجمع السي حمديمجة فيتسزو دلمشلهسا اوراس کے ملیسمان خوردونوش ساتھ لے جاتے، پھر حضرت خدیجہ کے پاس واپس آشریف لاتے اور آئی ہی راتوں کے لیے پھرسامان لےجاتے حتى جماء ٥ المحق وهو في غار حراء فجاء ٥ الملك فقال اقر أفقال يبانك كدفق آ گياجب آپ غار راءيس تھ چنانچ فرشة آپ الله كال يا اوراس نے كہا قراء (بڑھے) آپ نے فرمايا كه

لمت ما انا بقارى فاخدنسي فعطني حتى بلغ منى الجهد میں نے کہا کہ میں پڑھا ہوانہیں ہوں (آپ نے فرمایا کہ) فرشتہ نے مجھے پکڑا اور دبایا یہاں تک کدمیری طاقت انتہاء کو پہنچ گئ ثم ارسلنسي فقال اقرأ فقلت مأانا بقارئ فاخذنبي فغطنبي الثانية پھراس نے مجھے چھوڑ دیااور کہااقراء (پڑھیے) پھر میں نے کہامیں پڑھا ہوائییں ہوں پھراس نے مجھے پکڑااور دوسری مرتبد دبوجا حتى بلغ منى الجهد ثم ارسلنى فقال اقراً فقلت ما انا بقارئ یہاں تک کدمیری طاقت انتہاء کو پینچ گئی چھراس نے مجھے چھوڑ دیا اور کہا اقراء (پڑھیے) میں نے کہا کہ میں پڑھا ہوانہیں ہول فاخذني فغطني الثالثة ثم ارسلني فقال ﴿ إِقُرَأُ بِاسُم رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ، خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَق پھرال نے مجھے بکڑا اور تیسری مرتبہ دبوچا پھر مجھے چھوڑ دیا اور کہا اپنے پروردگار کے نام سے پڑھیے جس نے انسان کو جے ہوئے ذون سے پیدا کیا اِقُواً وَرَبُّكَ الْأَكُومُ ﴾ فرجع بها رسول الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله على حديجة يرُ هيآ ڀ کا پروردگار برا کريم ہے بيآيات لے کررسول التفاقية واپس ہوئے اورآ ڀ کا دل کانپ رہاتھا، چنانچيآ پُ حفزت خديجُّ، بنت حويلاً فقسال زمّلونسي زملونسي، فرملوه حتى ذهب عنه الروع بنت خویلد کے پائ شریف اے اور فرملیا مجھے کمبل اُڑھادو، مجھے کمبل اُڑھادو اوگول نے آپ کمبل اُڑھلیا، یہال تک کمآپ کا خوف ختم ہوگیا، فقال لنحديجة واخسرهاالخسر لقدخشيت على نفسى پھرآپ نے اس کیفیت کو حضرت خدیجہ ہے بیان فرمایا اور پورے واقعہ کی اطلاع دی (اور فرمایا) مجھے اپنی جان کا خطرہ پیدا ہو گیا تھا فقالت حديجة كلاواللهما يخزيك الله ابدأ انك لتصل الرحم حفزت خدیج ﷺ فرمایا که برگزاییانبیس بوسکتا خداکی شم خداوند قدوس بھی آپ کورسوانبیں کرے گا، بلاشبہ آپ صلدحی فرماتے ہیں وتحمل الكل وتكسب المعدوم وتقرى الضيف وتعين على نوائب الحق فانطلقت بهه حديجة حتمي اتت به ورقة بن نوفل بن اسد بن عبد العزي پھر حفزت خدیجة الکبری آپ کوساتھ لیکر چلیں اور ورقہ بن نوفل کے پاس پہونچیں جواسد بن عبدالعزیٰ کے بیٹے ابن عم حديجة وكان امرأ تنصر في الجاهلية وكان يكتب الكتاب العبراني ورخد بجة الكبريٌّ كے چیازاد بھائی تصاور ہورقہ ایسے دی تصروحالمیت کے مان میں دینا ضرائبیت اختیار کر حکے تصاورہ برانی خط کے کا تب تص

فيكتب من الانجيل بالعبرانية ماشآء اللهان يكتب وكان شيخا كبيراً قدعمي وہ آئیل میں سے عبرانی زبان میں سے جوخدا کومنظور تھا لکھا کرتے تھے وہ بہت عمررسیدہ آ دمی تھے جن کی بصارت بھی جاتی رہی تھی فقالت له خليجة ياابن عم اسمع من ابن اخيك فقال له ورقة ياابن اخي إماذاترى؟ ان سے حضرت خدیج ہُنے فرملیا سے میرے چھاکے بیٹے الیے بھینچی بات سنوچنا نچے ورقدنے آپ سے کہااے میرے بھینچتم کیاد کیمیتے ہو؟ اخبره رسول الله مَلْمِنْ حبرهارأى فقال له ورقة هذا الناموس الذى بھر رسول الشعائق نے ان کووہ تمام واقعات سنائے جن کامشام و فرمایا تھا ورقہ نے کہاریتو وہی راز دان ہیں جن کو نسنزل الله عسلسي مسوسسي ليسساليتسنسي فيهسسا جسذعسسا اللہ تعالیٰ نے مویٰ کی طرف بھیجا کاش 'میں تمہاری نبوت کے زمانے میں نوجوان ہوتا ياليتنسى اكون حياً اذيخرجك قومك، فقال رسول الله عُلَيْكُ اومخرجي هم كاش مين ال وقت تك ذنده ربتا جب كي قوم آپ و نكاكى مرسول التعليف في ملاكمياده (ميرى قوم كالوگ محمونكال وي كي؟ ال نسعسم السم يسأت رجيل قسط بسمشيل مساجعت بسبه الاعبودي ورقد نے کہاہاں اجمعی کوئی شخص اس قتم کی دعوت لے کرنہیں آیا جس طرحتم لائے ہو گرید کرلوگوں نے اس کے ساتھ و شنی کابرتا و کیا وان يملر كنسي يومك انصرك نصراً مؤزراً مثم لم ينشب ورقة ان توفي وفترالوحي. اوراگر میں ان ذول تک زندہ رہاتو آپ کی مضبوط مدد کروں گا، پھرتھوڑے ہی زمانہ کے بعدورقہ کا انتقال ہو گیا اور وحی بھی مرتوف ہوگئ قال ابن شهاب و اخبرني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان جابر بن عبدالله الانصارى ابن شہاب ؓ نے کہا کہ اور مجھے ابوسلمہ بن عبد الرحمٰن ؓ نے خبر دی کہ حضرت جابر بن عبد اللہ انصاری قال وهو يحدث عن فترة الوحي فقال في حديثه بينا انا امشى وحی کے موقوف ہوجانے کے لیام کی حدیث بیان فرمار ہے تھے کد سول التعلیق نے بیعدیث بیان کرتے ہوئے فرمایا کہ میں ایک مرتبہ جارہا تھا اذسمعت صوتا من السمآء فرفعت بصرى فاذا الملك الذي جاء ني بحراء کہ اچا تک میں نے آسان میں ایک آوازشی ،میں نے اپنی نگاہ اٹھا کر دی**کھا تو** اچا تک وہی فرشتہ جومیرے باس حراء میں آیا تھا جالس على كرسى بين السمآء والارض فرعبت منه فرجعت فقلت زملوني آسان اورزمین کےدرمیان کری بچھائے بیٹھا ہے، ہیں اس سے خوف زدہ ہو کروایس ہوااور میں نے کہا مجھے کمبل اڑھادو

زملونسی فسانسزل الله تعسالسی ﴿ يَسَالَيُّهَا اللهُ قَمُ فَانُهُ لِهُ وَ اللهُ تَعَسَالُسِی ﴿ يَسَالَيُّهَا اللهُ مَدُونُ وَلاَئِهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ تَعْمَالُ اللهُ اللهُل

اس کے بعد وحی گرم ہوگئ اور پے در پے آنے لگی

تسابعه عبدالله بسن يوسف وابوصالح وتسابعه هلال بسن رداد الم بخاري في فرمايا كرعبدالله بسن يوسف وابوصالح في يكي بن بكير كل متابعت كل ما وعقيل كل متابعت بلال بن رداد ف في المستوحين المستوحين المستوحين المستوحين المستوحين المستوحين المستوحين المستوحين وقيسال يسونده في والده كل جديس وحيف المستوحين ا

﴿تحقيق وتشريح

حدثنا یحیلی بن بکیر : بگیرداداین والدکانام عبدالله بکنیت ابوزکریا ہے امام بخاری کے اساتذہ بیں سے ہیں۔وفات: ۲۳۱ھی ہے۔

ليث بن سعد : تابي بي ع

عُقَيْل بن خاللاً:وفات ١٣١١هم هـ مــ

ابس شہاب زہری : سیدون اول ہیں ان کانام محمد بن سلم ہے شہاب ان کے والد نہیں بلکہ ان کے جد اعلی ہیں۔
کیت: ابو بکر ہے نہ ہر فتبیلہ کی طرف منسوب ہیں۔ ان کانسب ہوں ہے ابو بکر محمد بن سلم بن عبیداللہ بن عبداللہ بن شھاب زہری۔
سوال: سب جس وقت کی حضرت عائشہ بات فر مار ہی ہیں اس وقت تو آپ پیدا ہی نہیں ہو کی تھیں۔
جسواب: سب محد ثین فرماتے ہیں کہ حضرت عائشہ جب حضور علی ہے کے از دواج میں آگئیں تو ممکن ہے کہ حضور علی ہے ہو گاتا ہے میں ار بتار ہی ہونگی تو یہ روایت مسل صحابی ہے سار اواقعہ سنا ہوتو یہ تصل ہے کین سننے کا ذکر نہیں کیا۔ یا کسی صحابی سے سی کر بتار ہی ہونگی تو یہ روایت مرسل صحابیہ کے بیل سے ہوگی تو گابیسند مصل یا مرسل ہے۔

ل عمدة القاري بن السهم مطبور وار الفكر اليفاح النخاري بن الس 19 فعصمي بفتح الحاء وكسو المبيم معناه كنونو وله من قولهم حميت النار والشمس اى كنوت حوارتها. يه حديث الام بخاري تريف من 7 بارات بين رقوم الاحاديث الله ٣٩٥٠، ٣٩٥٠، ١٩٥٥، ١٩٥٨، ١٩٨٢ م عمدة القاري بن الس

اول ما بدئ به رسول الله عَلَيْ من الوحی الرؤیا الصالحة: پہلے جودی شروع مولی وہ رؤیا الصالحة: پہلے جودی شروع مولی وہ رؤیا وہ رؤیا مسالحة الله عَلَیْ ہوتا ہے اس لیے دی کے ساتھ تعبیر فرمایا لیکن بی تول صحیح نہیں ہے اس لیے دی کے ساتھ تعبیر فرمایا لیکن بی تول صحیح نہیں ہے۔ جواب اس کا بیہ کردی کا لغوی معنی ہے المقاء فی المروع اوراس معنی کے اعتبار سے دی نی کو بھی ہو سکتی ہے ولی کو بھی۔

رؤیا صالحه و صادقه میں فوق: یہ کہ خواب میں جائی ہی ہو بھلائی بھی ہوتو یہ دویاء صالحہ ہو اور میں جائی ہی ہو بھلائی بھی ہوتو یہ دویاء صالحہ ہو اور صادقہ میں جائی کا ہونا مشلا میں اور صادقہ میں جائی کا ہونا مشلا کی کا ہونا مشلا حضور اور کی جارہی ہے اسکی تعبیر احد میں شکست ہے تو صادقہ ہے نہ کہ صالحہ بھر جلدی ظہور بھی ضروری نہیں جیسے حضرت یوسف علیہ السلام کا خواب کہ انہیں جائد ہورج اور ستاروں نے بحدہ کیا اس کی تعبیر نبوت کے بعد ظاہر ہوئی ۔ پھر تعبیر میں فرق بھی ہوسکتا ہے جیسے آ ب اللہ اللہ میں کہ اس کے جو اب دیکھا کہ احرام باندھ کر عمرہ کررہے ہیں۔ اسکی تعبیر آ ب اللہ اللہ اللہ بھی صالانکہ تھا انگلہ سے قبل جے مہینے آ ب اللہ تھا تھے۔ کو خواب آتے رہے یہ مقدمہ وی تھے۔

مثل فلق الصبح: يتثبيه عامون من على على الصبح: يتثبيه عامون من على الله المالية على الله على الله المالية على المالية الما

شم حبب الیه الحلاء و کان یخلو ابغار حر آء: حرآء بقعہ کی تاویل میں ہوکرمؤنث بن جاتی ہے تو غیر منصرف پڑھتے ہیں۔ فلوت اس لیے اختیار فرماتے کہ جلوت میں یکسوئی نہیں ہوتی فلوت میں توجہ ایک طرف کرنا آسان ہوجا تا ہے۔ چونکہ اللہ تعالی کی محبت دل میں ڈالدی گئی تھی اس لیے فلوت کی محبت بھی ہوگئی اور فلوت کی محبت بغیرہ ہوا کہ یکسوئی پیدا کرنے کے لیے چند دن کی فلوت اختیار کرنا جائز ہے۔ تو مشائخ کا فلوت اختیار کرنا جائز ہے۔ تو مشائخ کا فلوت اختیار کرنا جائز ہے۔ تو مشائخ کا فلوت اختیار کرنا رہا نیے نہیں جو کہ منوع ہے بلکہ یکسوئی حاصل کرنے کے لیے ہے جو کہ مطلوب ہے۔

سوال: آپ الله نظام نظام کا تخاب کیوں کیا؟

جو اب:اس کی چندوجوه ہیں۔

الوجه الاول: جيئة ب الله كالمبته كونهائى كامبت هى اليه بى آب الله كوبيت الله كازيارت كى بهى جابت تقى توات الله يرجم نظرير في رب ـــ منظم الله الله يرجم نظرير في رب ــ

الوجه الثانى: آپ كى حدا مجد بھى يہاں پر خلوت اختيار كرتے تھاس كي بھى آپ كا كور جگہ پيند تھى۔ الوجه الثالث: موزونيت كى وجہ سے، كيونكه اس ميں كھڑ ہے ہوكر بغير تكليف كے عبادت ہو سكتی تھى جبكہ غار تۇرميں كھڑے ہوكرعبادت نہيں ہو سكتى تھى۔

إ الينا آ البخاري ج1 ص47

فیت حنّ فیه و هو التعبد: سست تحنت بمعنی تعبد براوی تغیر کرد ہا ہے اصل میں حنْث گناه کو کہتے ہیں یہاں سلب ما خذے یعنی ترکِ گناه کو کہتے ہیں یہاں سلب ما خذے یعنی ترکِ گناه کیونکہ تحنت باب تفعیل ہے اور سلب ما خذباب تفعیل کا خاصہ ہے یا اللیالی خوات العدد، اللیالی تاکید ہے بعض روایات میں آتا ہے کہ ایک او تک غار میں رہتے ہے سوال: سب جب وَّی نازل نہیں ہوئی تھی تو عبادت کی طریقے پر کرتے تھے؟

جواب ا: ملتِ ابرائی کے کچھ متوارث طریقے ابھی تک باقی تصان کے مطابق عیادت کرتے تھے۔ جواب ۲: بعض نے کہا کہ موٹ کے طریقے پر عبادت کرتے تصاور بعض نے کہا کہ عیسی کے طریقے پر ع جسواب ۳: بعض نے کہا کہ نی نبوت ملنے سے پہلے ولی ہوتا ہے تو جوطریقہ الہام ہوتا ہے اس طریقے پر عادت کرتا ہے ہ

فیتزود لمثلها: اشکال: بعض روایتول مین آتا ہے کہ حضرت خدیجة اینی النداروایات میں تعارض ہوا۔ جو اب: کوئی تعارض نہیں بھی آپ آلین کے جاتے تھا ور بھی حضرت خدیجة کے ایک تھیں۔ شان بیت حدیجہ : کہتے ہیں کہ حم پاک میں سب سے افضل گر اماں خدیجة کا ہے کیونکد آپ آلین وہاں زیادہ گھر کے ہیں، غارح آءاور مکہ مرمہ کے فاصلے کا پتہ طلق معلوم ہو کہ تنی بڑی قربانی ہے۔

جآء الحق: اس عراد وي ي ٢

فقال اقرأ: سوال (1): فرشته كهدم إج اقرأ اور حضور علي في فرمار ج بين ما انا بقارئ توكيا حضور علي في الم علي علي بين جانة تصير كيون فرمايا ما انها بقارئ بلكه يون فرمانا جاجي تقا ما اقرأ كيا پر هون جبكة بعلي الله تو پر صنے سے انكار فرمار ہے بين؟

سوال (۲): جبآپ علی فرمارے ہیں کہ میں ہیں پڑھ سکتا تو جریل کیوں اصرار کررہے ہیں؟ بیتو تکلیف مالابطاق ہے اور پھرد بابھی رہے ہیں؟

جواب (۲): اس كہنى مثال ايسى بى بے جسے استاذ بچكوكہتا ہے كه پڑھ الف، با، تا تو حضور علي كايہ في الله كايہ في مانا كه ميں پڑھا ہوانہيں ہول سيح ہے اور جريل كايہ كہنا كه پڑھ، يہ بھی سيح ہے كيونكہ يہ كہنا سكھ لانے كے ليے ہے ٥

ی تقریر بخاری خااص ۱۸ تر تر بخاری خااص ۱۹، بحدة الخاری ۱۳ سور الغاری خااص ۱۱ س اینیا هی تقریر بخاری خااص ۱۸ می تخالباری خاا ۱۱ شرخ کرمانی خااص ۱۳ سے فتح الباری بحواله سرت اصطفی خاص ۱۲۷ می فیض الباری خاص ۱۳ بقریر بخاری خاص ۱۸۳

جسواب (۳):بعض شرائ نے یہ بحث ہی ختم کردی اور دہ اس طرح کہ حضور تھے کو قرشتے کا تعارف تو ہوہی چکا تھا۔
کیونکہ نی کو پہلے ہی یقین ہوجاتا ہے کہ فرشتہ ہے جب ہی تو وہی پریقین ہوگا اور یہ خوابوں کے ذریعے ہوتا ہے قواق سرا کا مطلب ہے کہ آپ تھے پر ذمہ داری ڈالی جارہی ہے اور آپ تھے یہ فرمارہ ہیں کہ میں یہ ذمہ داری نہیں اٹھا سکتا تو یہ دباناصل میں توجہ ڈالنا ہے تا کہ آپ تھے میں اس ذمہ داری کے لکی قوت بیدا ہوجائے قماانا بقاری کا مطلب ہے کہ جھے میں اس ذمہ داری کے لکی قوت بیدا ہوجائے قماانا بقاری کا مطلب ہے کہ جھے میں اس ذمہ داری کے برداشت کی طاقت نہیں ہے ا

سوال: فرشتے کے ایک مرتبدد بانے سے ساری دنیاختم ہوجائے اور یہاں تو فرشتے نے پوری توت سے دبایا ہے آپ تھے کے

جنواب: فرشتہ جب انسانی شکل میں آتا ہے تواسکی طاقت بھی انسان کی طاقت کی طرح ہوجاتی ہے جیسے جن اس لیے فرشتے کے دبانے سے آپکونقصان نہیں ہواج

فائده: متن حدیث میں احتلاف: تیسر القاری من فقال کے کے بعد فقلت نہیں ہاور عدة القاری میں فقال نہیں ہے الفاظ ہیں۔ میں فقال نہیں ہے بلکہ قلت کے الفاظ ہیں۔

ضمنی بحث صوفیاء کرام جوملکات پیدا کرنے کے لیے بیخ دیے ہیں اسکاما خذہمی یہی ہے اور یہی ضغطر جر مل ہے۔

شخم ید پرجوتوجه دالا ہاکی چارتسیں ہیں (ا) توجہ الفکاک (۲) توجہ القائی (۳) توجہ اصلاح (۴) توجہ اتحادی سے توجہ الفکاک (۲) توجہ الفکاک (۳) توجہ الفکاک اللہ ہونے گئے ہیں ہوجہ انسعکاسی:مریدا پنادل شخشے کی طرح صاف کر لیتا ہے شخ کے اقوال واعمال ظاہر ہونے لگتے ہیں جیسے شخ پہنتا ہے چاتا پھر تاہے ویسے ہی مرید کرنے لگتا ہے لیکن بدیوی کمزور توجہ ہے کیونکہ جب تک شیشہ سورج کے سامنے رہتا ہے روثنی رہتی ہے اور جب دور ہوجاتا ہے تو روثنی ختم ہوجاتی ہے ایسے ہی جب تک مرید شخ کے سامنے

رہتا ہو ملکات باتی رہتے ہیں اور جب شخ ہے دور ہوجاتا ہو وہ ملکات ذائل ہوجاتے ہیں۔
توجہ القائی: شخ این مرید کی طرف متوجہ رہتا ہا اور اس کے دل کوتوی کرتار ہتا ہے جکی وجہ سے اسکو دل
میں نیکی کا داعیہ پیدا ہوتار ہتا ہے اسکی مثال چراغ کی طرح ہے کہ چراغ جل رہا ہے اور کوئی اس میں تیل ڈال رہا ہے
جتنا تیل زیادہ ہوگا آئی ہی روثنی زیادہ ہوگی لیکن اسکے بھی ختم ہونے کا خطرہ ہوتا ہے کہ جب توجہ ہے گی تو آ ہت آ ہت نیکی
کا داعیہ بھی ختم ہوجائیگا جیسے چراغ بیاس وقت تک جلتا ہے جب تک اس میں تیل ڈالا جاتار ہے ورنہ بجھ جاتا ہے۔

ا مدة القارق خال سياه ع شرح كرماني خال سهم تقرير بغاري خال سه مع اليناح البغاري خال سام

توجة اصلاحی: مریدسبنین کے لیا پندل اور دماغ کوگنا ہوں سے بچانے اور نیکی سے روش کرنے کاکوشش کرتا ہے اور اس بات کی کوشش کرتا ہے اور اس بات کی کوشش کرتا رہتا ہے کہ شخ میری طرف متوجہ رہے اور اسپند ول کوشنخ کی طرف متوجہ کئے رہتا ہے تو جب شخ متوجہ ہوتا ہے تو معصیت کا اثر کمزور پڑجا تا ہے اسکی مثال ایسے ہے کہ نہر کے پاس کھال کھود دیا جائے اب صرف اتنی بات رہ جاتی ہے کہ نہر تو کر سلسلہ جوڑ دیا جائے بتو اسی طرح توجہ اصلاحی میں حب ضرورت کا ال شخ کے ذریعے آ ب بات کے انواروبر کات حاصل ہوتے رہتے ہیں تو یہ کالی، اصل اور مفید طریقہ ہے اس کا نام ہے جوڑ چونکہ جوڑ اصل ہے لہذا جوڑ رہنا جا ہے۔

فافدہ: ایک طالب علم دین پڑھ کرسکول ٹیچر ہوگیا اسکا ہم سے جوڑ نہیں رہائیکن اگرکوئی طالب علم کسی مدر سے میں دین پڑھانے بیٹھ گیا تو اس کا ہم سے جوڑ ہے۔

توجهٔ اتحادی: شخ مرید پراتی توجه دیتا ہے کہ اعمال کیساتھ ساتھ علم وہم میں بھی اتحاد پیدا ہوجا تا ہے تی کہ بساا وقات صورت وشکل پر بھی اثر انداز ہوتا ہے کہ مرید کی شکل بھی شخ کی شکل کی طرح ہوجاتی ہے اسکونسب اتحادی کہتے ہیں حضرت ابو بکر صدین کو حضور ﷺ سے نبست اتحادی حاصل تھی کہ جو آپ ﷺ بیان کرتے وہی حضرت ابو بکر سے بیان کرتے مثلاً ''اساری بدر' کے بارے میں جورائے آپ ﷺ کی تھی وہی رائے حضرت ابو بکر کی تھی۔ اسی لیے خلافت کا حق نبست اتحادی کی وجہ سے حضرت ابو بکر گا تھا اگر اس میں خلل ہوجاتا تو برا افساد بریا ہوجاتا

سوال: حضور علی کی مجلس میں تشریف فرما ہوتے اور صحابہ کرام بھی وہیں بیٹے ہوئے ہوتے اور ایسے بیٹے ہوتے کانما علی دؤسهم الطیر توجب کوئی باہر سے آنے والا آتا تواسکو پتدنہ چلتا کہ حضور علیہ کونے ہیں تووہ سوال کرتا کہ ایکم محمد (تم میں محملیہ کون ہیں؟) توجواب دیاجاتا کہ یہ جوٹیک لگائے بیٹے ہیں۔

اب سوال یہ ہے کہ یہ پہتہ کیوں نہیں چلتا تھا حالانکہ نبی کے چبرے پر ممتاز نور ہوا کرتا ہے اور حضور علیہ ہے۔ تو سب سے زیادہ حسین تھے؟

جواب ا: صحابرام وصورت من سيب اتحادى عاصل بوچكى قى ال وجه السال وصورت من سب ايك جيانظرة ترقيق -

جو اب ۲: حضور ﷺ جب صحابہ کرام پر توجہ فرماتے تو صحابہ کرام پر بھی حضور ﷺ کے انوار متر شح ہوتے جسکی وجہ سے صحابہ کرام گی آپ ﷺ سے مشابہت ہوجاتی جس کی وجہ سے آنے والا امتیاز نہ کریا تا۔

. جو اب سا: اندهر سے آنے والا جبروشی میں پنچتا ہے تو اسکی انکھیں چندھیاجاتی ہیں اسے کچھ نظر نہیں آتا تو حضور ﷺ کی مجلس میں انوار وبر کات کی روشنی اور باہر ساری ظلمت ہی ظلمت تو وہ آدمی جب ظلمت سے حضور ﷺ کی مجلس میں پنچتا تو انواروبرکات کی روشی ہے اسکی آئکھیں چندھیا جا تیں اور اسے پچھ نظر نہ آتا تو اس وجہ ہے وہ صحابہ کرام اور حضور علیقی میں امتیاز نہ کرسکتا اور یو چھتا ایک محمد ؟

سوال: ال حدیث کی روی و حضرت جریل کاحضور علی کاستاد ہونا ثابت ہوگیا اوراس طریقے سے حدیث جریل میں آپ علی کا قول حضرت جریل کا معلم ہونا میں آپ علی کا قول حضرت جریل کا معلم ہونا علی میں آپ علی کا قول حضرت جریل کا معلم ہونا ثابت ہوا اور معلم معلم سے افضل ہوا کرتا ہے و حضرت جریل کا حضور علیہ سے افضل ہونا ثابت ہوا اور یہ قبال ہوں جسے السل کی مثال تو واسطے کی ہے معلم تو خود باری تعالی ہیں جسے قلم ، کاغذ اور مختی واسطہ ہیں ، اور واسطے ذی واسطہ ہیں ہونا کرتا۔

اقس أباسم: يه جوآيات مباركه آپ الله كوپرُ هائى كى بين ان مين دلائلِ خل بين كه آپ قارى موسكة بين يعنى اس نبوت والے بوجه كو برداشت كرسكة بين _

ربک: برب جوآ ہستہ ہستہ تربیت کرتا ہے اور کمال تک پہنچا تا ہے تو کیا وہ قرآن شریف پڑھنا نہیں سکھا سکتا؟ خلق: جس نے تہمیں پیدا کیا وہ تہمیں سکھانہیں سکتا یعنی کیا وہ اس امانت کے برداشت کرنے کی قوت پیدائہیں کرسکتا۔ فائدہ: اصطلاح میں ان جیسے قضایا کو قضایا قیاساتھا معھا کہتے ہیں۔

اول وحسى و تطبیق: اول وی میں اختلاف ہے۔ بعض نے ای کواول وی قرار دیا ہے بعض نے (یا آیکھا الٰک مُدَّدُّونُ کی یا اور بعض نے سورة فاتحکو۔ بہر کیف ان تینوں کے درمیان علاء نے پیطبیق دی ہے کہ اولیت هیقیہ تو سورة علق کی ابتدائی پانچ آیات کو حاصل ہے کیونکہ اس حدیث سے تو صاف پنہ چاتا ہے کہ یہی سب سے پہلے نازل ہوئی۔ اور پوری سورة جوسب سے پہلے نازل ہوئی وہ سورہ فاتحہ ہے تو گویا اس کی اولیت اس حیثیت سے ہے کہ بیسب سے پہلے کامل سورة نازل ہوئی۔ اور چونکہ اقراء کی ان آیات کے نزول کے بعد فتر ۃ الوجی واقع ہوگی تھی یعنی وجی بند ہوگی تھی بعض روایات کے مطابق تین سال مدۃ فترۃ وجی ہاں کے بعد سورۃ مرثر نازل ہوئی تو اس حیثیت سے سورۃ مدثر کواولیت حاصل ہے سے مطابق تین سال مدۃ فترۃ وجی ہے اس کے بعد سورۃ مدثر نازل ہوئی تو اس حیثیت سے سورۃ مدثر کواولیت حاصل ہے سے مور جف فؤ ادہ: یعنی دل کا نے رہا تھا۔

فواد اورقلب میں فوق: فواد، وہ گوشت کا لوتھڑ اے جولرز تا ہے اور اس میں ایک کل ادراک ہے اسکو قلب کہتے ہیں ان کا ایک دوسرے پراطلاق ہوتار ہتا ہے۔

قال یونس و معمر بو ادر ٥: اوربعض روایات میں فؤده کی بجائے بو ادره کالفظ ہے ج اس کامعنی ہے گردن اور کندھے کا درمیانی حصہ۔

لِ مشكوة شريف من السل على بأره ٢٩ مورة المدثر أيت السل عمرة القارى من السلام سل بخارى شريف من السلام

ز ملونی: تزمیل اور ترکامغی ایک بی ہے یعنی کیڑ ااوڑ ھانا۔

سوال: كبلى بات يه كه ليتفصد عرقا پر زملوني زملوني اشكال بوتا جاس ليك م تفصد عرق کا تقاضایہ ہے کہ حضورﷺ کوگری محسوس ہوتی تھی اور ذ ملونی کا تقاضایہ ہے کہ سردی محسوس ہوتی تھی اس لیے كه جب كسى كوسر دى گتى ہے تولخاف أوڑھاتے ہيں؟

جمواب: حضور علی کوگری مین نزول کے وقت معلوم ہوتی تھی جبیبا کردوایات ہے معلوم ہوتا ہے کہ حضور علیہ پروی نازل ہور ہی ہوتی تھی تو پسینہ بیشانی مبارک سے عیک رہا ہوتا تھا اس کے بعد جب آثار ختم ہوجاتے تو آپ علیہ پینے صاف کر لیتے ،اس کے بعد سردی گئی تھی جس کی وجہ یہ ہے کہ پینے آنے کے بعد جب ہواگئی ہے تو سردی محسوس ہوتی ہے۔

الشكال: دوسراا شكال يه كم كم كم تعاوية في زملوني كيون فرمايا ، زمليني فرمانا جابية تما؟

جسواب:ايسے موقع برمحاورات ميں تذكيروتانيك كافرق نبيل كياجاتا چنانچ كمرجاكرعام طور پربيوى سے كها جاتا ہے کہ کھانالاؤ۔ یہی جواب راج ہے م

فزملو ٥: ضمير حفرت خديج يُل طرف لوئي ہے اور جمع اعزازاً وتفحيماً لائے بين جيسے حضرت موى عليه السلام كى حكايت نقل كرتے موت الله تعالى فرمايا ﴿ إِذْرَأَى نَارًا فَقَالَ لِا هَلِهِ امْكُثُو النِّي انسَتُ نَارًا ﴾ ٢ لقد خشيت على نفسى: حضورت كوكيا خوف تفااسكى كى تشريحات ذكركى كى بيل-

الاول: حضرت كنگون فرماتے ہيں آپ تا كوخوف اس وجدہے ہوا كہ عباء نبوت كاتحل ہوسكے كايانہيں سے

المشانى: چونكەحفرت جريل نے دبوچاتھااس ليے آپ ﷺ كوية خوف مونے لگا كەكىبىل دوباره دبوچاتوموت واقع نہ ہوجائے ان دونوں صورتوں میں ماضی کوستقبل کے معنی میں کیا گیا ہے ہم .

النالث: حشبت كوماضى يرمحول كياجائة مطلب يهوگاكة ماضى كاخوف ابھي تك محسوس كرد بابول " المر أبع: ملحدول في الك غلط عنى بيان كياب كرآب الله كوخوف ترددكي وجد عقا كرآف والاجن ياشيطان ونهيس؟ يا ید کمیں رسول ہوگیا ہوں یانہیں؟ حالانکہ جیسے انسان کوایے انسان ہونے کاعلم حضوری ہوتاہے ایسے ہی نبی کوایے نبی ہونے کا علم حضوری ہوتا ہے۔اور ہرنی کواپنی نبوت پرایمان لا ناایسے ضروری ہے جیسے کہاس کی امت کواسپر ایمان لا ناضروری ہے۔ تحمل الكل: ترجمه نادارول كوبو جهائفوات بير يعنى جولوگ عاجز كمزور بين كمائي نبيس كريكة ان كى مدوكرتے بير _

ل تقریر بخاری س۸۸ ج۱ م پاره ۱۷ سورة طه آیت ۱۰ س تقریر بخاری س۸۸ ج۱ س تقریر بخاری ص۸۹ ج۱

ت کسب ال معدوم و کرواتے ہیں ایون و کام کاج نہیں کر سے انہیں آ پی کا کام پر گلواتے ہیں یا جودوسر نہیں میں معنی ایدہ و کام کرواتے ہیں اودوسر نہیں کر سکتے آئیں آ پی کام پر لگواتے ہیں یا جودوسر نہیں کر سکتے آ پ وہ کام کرواتے ہیں (مدد کرتے ہیں) ۔ ضرب یعنر ب سے ہونیکی صورت میں ترجمہ ہوگا کہ آپ معدوم کو کماتے ہیں یعنی جو مال والانہیں ہوتا اس کو کماتے ہیں یا لیعنی مال دیتے ہیں (۲) مکارم اخلاق اور نفائس عطا کرتے ہیں۔ نو ائب الحق: سن نو ائب، نائبة کی جمع ہو ھی الحادثة و النازلة حیر ااو شوا سے پہلے سب کلموں کا اجمال ہو ائب الحق کی قیدلگا کراشارہ کردیا کہ جو '' حوادثات واقعی'' نازل ہونے والے ہیں اس سے مرادآ فات ساویہ ہیں جیسے کثرت باراں کے سب مکانات کا منہدم ہوجانا وغیرہ ۔ بعض علائے نے لکھا ہے کہ حق کی قیدلگا کر باطل سے احر از کرلیا گیا سے ایک مطلب یہ بھی ہوسکتا ہے کہ وہ حوادثات جو حق پر قائم رہنے سے انسان کو در چیش ہوتے ہیں ان حتر از کرلیا گیا سے ایک مطلب یہ بھی ہوسکتا ہے کہ وہ حوادثات جو حق پر قائم رہنے سے انسان کو در چیش ہوتے ہیں ان

المعبر انيه: بعض جگه عربی کالفظ ہے حاصل ہیہ کہ بعض کوعربی بعض کوعبرانی میں لکھ کر دیتا تھا کیونکہ انجیل سریانی زبان میں تھی۔

فائله: حفرت آدم علياللهم يانى ،حفرت ابرائيم على يارعد الله عبرانى اورحفرت اساعيل على يوعد مدم عربي بولتے تھے س ابن عم حديجة: حقيقت يرمحمول ہے۔

ابن اخیی: عرب کے عاروے میں چھوٹے کو جھتجا کہتے ہیں بیجاز ہے جو میا نوالی اور بھکر کے علاقے میں بھی چلتا ہے۔ السنساموں سن:اس کا لغوی معنی ہے صاحب سر (بھیدی) ۔ جاسوس بھی راز دان کو کہتے ہیں لیکن اچھائی معلوم کر کے پہنچانے والے کو ناموں کہتے ہیں۔اور اس کے برعکس کو جاسوس۔ یہاں مراو فرشتہ یعنی حضرت جریل علیہ السلام یا حضرت اسرافیل علیہ السلام ہیں۔

نزل الله على موسى: سوال:ورقد بن نوفل خود عيمائى تصة الكوكل موى كى بجائع كاليميان كه با يعلى عيم كهنا جا بي قا جبه بعض روايات ميس توعيسى بى آربا بهاس بركوئى اشكال نهيس، اشكال تواس روايت پر بي؟ النكتة للفار لا للقآر جواب ا: چونكه حضرت موى عليه السلام كى نبوت پر دونوں يعنى يبودى وعيسائى منفق تصاس ليے انكانام ليا ه جواب ا: شهرت كى بناء يرحضرت موى عليه السلام كانام ليا۔

جواب ٣: تخصيص بالذكرشدائدى بناء برى كئ ب چونكدان بربهت ختيال آئيل-

جــو ا ب سم:حضرت عیسی علیه السلام کی وحی میں نشص اور امثال زیادہ تھے جبکہ اوامر ومنہیات کم ،کین حضرت موسی علیه السلام کی وحی میں اوامر ونو اہی زیادہ تھے بہ نسبت نشص اور امثال کے اور چونکہ حضور ﷺ کی وحی میں بھی ایسے

لِ تقریر بخاری نا ص ۸۹ ع مینی خا ص ۵۱ س تقریر بخاری خا ص ۸۹ س عمدة القاری خ۱ ص ۵۹ هے تقریر بخاری خا ص ۹۱

ہی ہے اس کئے تشبید دی۔

جواب ۵: تثبيه دراصل وي كي جامعيت مل ہے۔

جواب Y: بعض جگه علی عیسی کا ذکرہاس سے معلوم ہوا کتخصیص نہیں بلکہ تشبید کا ذکرہ۔

اَوَ مَحْور جَى هُم :توراة وانجيل مِن جِيئ پين كَا بَعْت كا ذكر تقاايي بى آ پين كے حالات بى ندكور تھے تى كہ خالف الله على الله وَ رَقَا جِيها كر آن پاك مِن ہے ﴿ ذَٰلِكَ مَشَلُهُ مُ فِي اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ مُ فِي الْإِنْجِيْلِ ﴾ 1

سوال:او مخرجي معلوم مواكرة ب الاتجب مور باب كيكن يتعجب مواكور؟

جواب ا:آپ قوتجب ہوااس لیے کہ آپ ان خیال فرمایا نہ کورہ اوصاف جس میں ہوں کیااس کوبھی تکالدیں گے؟

جواب ٢:ياس وجه الم كماب تك اتن محبوبيت والى زندگى گزارى ہے توكيا جيء آج صادق الامين كہتے ہيں أكر وكال دير كري الله عن الله عن الله عن كري الله

و فتر الوحی:تین سال تک یا ایے ہوتار ہا پختگی ہوتی رہی کہ واقعی آپ سے رسول ہیں وی نہ آئی۔ حدیث الباب کاتر جمہ سے ربط: اللہ الاعظمت وی کاذکر ہے۔ (۲) احوال وی کاذکر ہے اور فتر ت ایک حال ہے۔ رویائے صالح وی کی ایک شم ہے۔ آپ تھا کی نہ کورہ اوصاف سے ہمیں بہت سے فوائد و مسائل حاصل ہوئے۔ مسائل مستنبطہ:

- (۱)الله تعالی کے لیے خلوت اختیار کرنا جائز ہے (۲)رؤیا صالحہ نبوت کے حصوں میں سے ایک حصہ ہے۔
- (m)سفر میں زادراہ رکھنا تو کل کے خلاف نہیں (۴) وی کی اصلاح کے لیے توجہ باطنی بھی ثابت ہے۔
 - (۵) سفیر مانوس چیز کود کی کرڈر جانا شان نبوت کے منافی نہیں۔ بی تقاضائے بشریت ہے۔ "
 - (٢)....كوئى نامناسب واقعه پیش آجائے تو گھر والوں كوبتلا ناجائز ہے
- (2)گھبراہٹ بڑھانے کی بجائے تملی دینا جاہیے (۸)ندکورہ کلام سے ایک بات سیجی معلوم ہوئی کہ باقی انبیاءتو دعوت کے بعد مصدق یا مکذب ہوئے لیکن آپ علیہ جاتھ دعوت سے بل ہی مصدق ہوگئے۔
- (۹)مکارم اخلاق والے کو اللہ تعالی ضائع نہیں کرتے (اس پر حضرت الاستادی الحدیث صاحب یکھم نے فرمایا) آپ بھی بھی بیدل میں مت لانا کہ ہم پورے دین پر چل رہے ہیں ورندد مکیرلیں بیہ جینے مکارم اخلاق بیان کئے لے پارد ۲۷ سورۃ اللّق آیت ۲۹ سے تقریبخاری جا ص۹۴

بی کیابیسب آپ میں بیں؟ مصمل الکل و تکسب المعدوم وغیرہ۔ یہی سیاست ہے جو کہ تمام انبیاء فر مایا کرتے تھے۔ اور علماء انبیاء کے وارث بیں جو سیائ نہیں وہ وارث انبیاء نہیں، صدیث شریف میں آتا ہے ((کانت بسو اسو ائیل تسو سهم الانبیاء) کے لیکن افرنگ کی سیاست نہیں کرنی کیونکہ یہ جھوٹ، دھوکہ پربئی ہے، غداری کا نام سیاست نہیں ہے۔ جب کہ فرنگ سیاست کا منشاء لڑاؤاور حکومت کروہے۔

اصلِ سياست:سياست كالفظ ليا گيا مهماس الفرس يعنى گور كرداني پانى كاخيال كرنااس كيد كور كردان كومياس كيت بيس انبياء كى سياست السنطام كور كرد والي كومياس كيت بيس انبياء كى سياست السنطام المصالح لاداء حقوق المحالق و المحلوق. ليمن خالق ومخلوق كرفتوق اداء كرن كرفتون كافر وقائم كرنا فرضيك ايساسياس برايك كونبنا مي جوشخص ايساسياس بيس وه وارث انبيان بيس و

اشکال: ورقد بن نوفل نے کہا کہ اگرزندہ رہوں گاتو مدد کرونگا، اس سے معلوم ہوا کہ وہ مسلمان ہو گئے تھے لیکن مشہور یہ ہے کہ مردول میں اول اسلمین حضرت ابو بکر صدیتی ہیں۔ بچوں میں حضرت علی اورعورتوں میں حضرت خدیجہ، ورقد کا کوئی نام بی نہیں لیتا۔ اختلاف ہوا ہے کہ ورقہ مسلمان ہوئے کہ نہیں؟ (۱) بعض حضرات کا کہنا ہے کہ وہ مسلمان نہیں ہوئے کیونکہ وہ بیان کررہے ہیں درجۂ معرفت اوراس سے انسان مسلمان نہیں ہوجا تا۔ جیسا کہ قرآن پاک میں فرمایا ہوئے کوئکہ وہ بیان کررہے ہیں درجۂ معرفت اوراس سے انسان مسلمان نہیں ہوئے (تھے) قرآن پاک میں فرمایا ہوئے کوئکہ وہ مسلمان ہوئے تھے تواس فد جب پراشکال ہوگا کہ پھریداول المسلمین کیون نہیں کہلائے؟

جواب ا : سی پفترت دی کازمانہ ہے ابھی آپ سے کو نبوت ملی ہے دعوت دینے کا حکم نہیں ملا، دعوت کا حکم تو آپ سے کو ایک آٹی المُمُدَثِّر ﴾ کے نازل ہونے پرملا ہے، نہمانے والا کا فراور مانے والا مسلمان دعوت کے بعد ہوتا ہے ہے اوروہ دعوت سے قبل ہی فوت ہوگئے تھاس سے انکااسلام لانا ثابت نہیں ہوتا۔

جسواب ۲: سنحضرت شاہ صاحب فرماتے ہیں کدان کے مؤمن ہونے پرتوا تفاق ہے کہ آپ علیہ کے تھے کے زمانے میں مؤمن ہونے پرتوا تفاق ہے کہ آپ علیہ کے تھے ہے زمانے میں مؤمن تھے کی نقال کر گئے تھے ہے حاصل میں مؤمن تھے کا اسلام لا نامختلف فیہ ہے اس لیے انکواول المسلمین سے شار کرنے میں مشکل ہے کیونکہ بعض نے ان کا اسلام شلیم نہیں کیااس لیے کہ اسلام لانے کے لیے دوسرے فد جب سے تیمری بھی ضروری ہے۔

ل بخاری شریف ج۲ ص ۱۳۹ س پاره ۲ سورة البقره آیت ۱۳۲ س عمدة القاری ج اص ۹۳ س سی کذایفیم کن درس بخاری ص ۱۸ لعلامه شیراحمد عثاثی هی فیض الباری را ص ۳۳

بدؤالوحي

حکمتِ فتوتِ وحی: چونکهاس کے بعد دعوت والی وی آ پیتالیہ پرنازل کرنی تھی تو پچتگی پیرا کرنے کے لیے پچھ عرصہ دحی کو رو کے رکھا تھبراہٹ کو زائل کرنے کے لیے یا مانوب کرنے کے لیے یا دعوت کی استعداد پیداکرنے کے لیے۔

يَا ايُّهَا الْمُدَثِّرُ: (كلته) ما محرنهين كها بلكه جوحالت هي اس حالت كوبيان كريخاطب كياس مين اشاره كياكه مبلغ كوآرام كاطالب بيس مونا جاہيے، كيڑااوڑ هكرليث جانامبلغ اور داعى كا كام نہيں يا

قم:قمفرمایا بلغ نبیس فرمایا اورنه بی ارسل کها، قیام سے اس میں ہمت باند صفاور چست ہونیکی طرف اشارہ ہے۔

فَ أَنْذِرُ:انذاراس دُرانِ كُوكِتِ بِي جس مِن رعوت وتبليغ كساته ساته آنوالے خطرات في درايا جائے، چونکه اللدار، تبشیر سے زیاده مفیر موتا ہے اس لیے ابتداء وی میں اللدار کولائے۔ تبشیر کی فی نہیں۔

وَرَبَكَ فَكُبِّر:اى فعظم ،ايخ ربك عظمت بيان ميجيّع ،ايخ دل مين اوراوگول كول مين ايخ رب کی عظمت ڈالئے ۔ گویا داعی کورغیب ہے کہ اس راہ میں بڑی بڑی رکا وٹیس آئیں گی اگر غیر اللہ کا رعب اور اس کی بڑائی دل میں آگئی تو دعوت نہیں چل سکے گی اس لیے سی کو بار خاطر میں نہ لا ہے۔

كا حفرت حذيفه والعد الله على المات المرى كالمات المرات كي الم المات المرات كي الم المات المرات كالمرات المران كالمران كالمران المران كالمران ك لقمه گر گیا تو دوسرے ساتھی نے آ ہت ہے کہا'' نوالہ نہ اٹھا کیں بیلوگ براجا نیں گے''انہوں نے زور سے فرمایا کیاان بيوتو فول كى وجه سے اپنے حبیب علیہ كىسنت چھوڑ دوں۔

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرُ:ان كَرِّ عِ إِلَ رَكِيْ - يَجِعُ نهُ لَهَا كَسُوءادب ب يَعْفَ في يرزجمه كيا كداب آ ب كوكنا مول سے پاك ركھيئے م يوداعى كا ظاہر باطن پاك مونا چاہئے معلوم مواكه علوم نبوت كوسينے ميں لينے اور سمجھنے کے لیے تقویٰ وطہارت شرط ہے اور نیت بھی پاک ہونی چاہیے۔

له درس بخاری ص ۲۰ ع بداریج اص ۱۰ مفوة التفاسیر ج۱۶ ص ۲۸ سیصفوة التفاسیر ج۱۹ص ۲۸، ۲۵ سیمعارف القرآن بحواله تغییر مظهری ج ۸ص ۱۱۱

وَالْورُجُورُ فَاهُجُورُ:يام بھی دوام كے ليے بى ہے كہ بتوں كوچھوڑے د كھے يا ،رجز كامعنى گناہ بھى آتا ہے كمانا بول كوچھوڑے د كھے ي

قبال ابن مشھاب تے: سسیدسابق کے ساتھ ہے یائی سند کے ساتھ؟ اگر سند سابق کے ساتھ ہوتو سند متصل ہوگی اور اگر سند سابق کے ساتھ ہوتو سند متصل ہوگی اور اگر سند سابق کے ساتھ ہیں ہوتا ہوں ہے تعلق نہیں ہے تحویل کی دوقتمیں ہیں۔

(۱) کشر الوقوع (۲) نادرالوقوعکثر الوقوع یہ ہے کہ شروع میں دوطریق ہوں آخر میں ایک ہوجائے اور نادرالوقوع یہ ہے کہ شروع میں تو ایک ہی طریق ہواور آخر میں دو ہوجائیں یہاں یہی نادرالوقوع والی صورت ہے۔ جینانچہ پہلی سند میں ابن شہاب کے بعد عروہ بن زبیرعن عائشہ ہے جبکہ اس سند میں ابن شہاب کے بعد ابوسلمہ بن عبدالرحمٰن بواسطہ جابر بن عبداللہ الانصاری ہے۔ سہیل کے لیے سند نادرالوقوع کا نقشہ درج ذیل ہے۔ ابوسلمہ بن عبدالرحمٰن بواسطہ جابر بن عبداللہ الانصاری ہے۔ سہیل کے لیے سند نادرالوقوع کا نقشہ درج ذیل ہے۔ سند المری ہیں کے ابن جینان کی گئی ہیں بکیر سیال کے ایک سند ابن شہاب سے آگے دوطریق اس طرح ہیں۔

(۱) 🌣 ابن شهابعروه بن زبيرٌعا نَشْرٌرسول الله عليه

(٢) ١٦٠ ابن شهابٌابوسلمه بن عبدالرحمٰنُجابر بن عبدالله الله الله الله عليه عليه عليه الله عليه الله

تابعه عبدالله بن يوسفُّ:خمير منعوب كامرجع يحيُّ بن بكرُّ بين ه

و تابعه هلال بن د داد:اس مین ضمیر کامرجع عقبل بین از مرجع کاعلم راویوں کے طبقات کے ذریعہ ہوتا ہے مثلا عبداللہ بن یوسف اور ابوصالح بید ونوں کی بن بکیر کے ہم عصر وہم طبقہ بین اس لیے متابعت اولی میں مرجع یحیی بن مگیر ہوئگے۔اسی طرح متابعت ثانیہ میں ہلال بن رداد، عقبل کے ہم طبقہ بین توعقبل مرجع ہوئگے۔

متابعت:ایک راوی جس سند سے جومتن بیان کرے دوسرارادی اسکی موافقت کرے اسے متابعت کہتے ہیں۔ متابعت کی تقسیم سے قبل اس سے متعلقہ اصطلاحات کی توضیح کی جاتی ہے۔

لے معارف القرآن بحوالہ تھانویؓ جی مصلام کے معارف القرآن روایہ عن این عباسؓ جی مصلال سے راویوں کے حالات عمدة القاری جی اص ۱۸ پر ملاحظہ فرما میں امام بخاریؓ اس حدیث کو بخاری شریف میں 9 بارلائے ہیں رقوم الاحادیث: ۴، ۳۲۳۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ ، ۳۹۲۸ میں ۱۲ کے عمدة القاری جاس ۲۸

متابعت میں چار چیزیں ہوتی ہیں۔(۱) متابع (بکسرالباء) وہ راوی جود وسرے کے موافق روایت کرے۔
(۲) متابع (بفتح الباء) جو متابعت میں مفعول ہے (جسکے موافق روایت بیان کی گئی)۔(۳) متابع عنہ جو متابع اور متابع وونوں کا استاد ہے۔(۴) متابع علیہ وہ روایت ہے جس پر متابعت ہور ہی ہے جو متابع اور متابع روایت کررہے ہیں۔
اب ہم کہتے ہیں کہ متابعت کی دو تسمیں ہیں (۱) متابعت تامہ (۲) متابعت ناقصہ۔اگر متابع تمام سند میں متابعت کرے تو متابعت تامہ ہے اور اگر تمام راویوں میں متابعت نہیں تو متابعت ناقصہ ہے۔ پھر تامہ اور ناقصہ میں ہے ہرایک دو تسم پر ہے اگر متابع عنہ فرکور ہوتو ہے سم اول ہے اور اگر متابع عنہ فرکور نہ ہوتو ہے ہم فانی ہے تو چار تسمیں ہوگئیں۔متابع عنہ فرکور کی متابعت دو حال ہوگئیں۔متابعت تامہ ہو، متابع عنہ فرکور ہو یا غیر فرکور ہو یا غیر فرکور متابعت دو حال ہوگئیں۔متابعت تامہ ہو، متابع عنہ فرکور پھر متابعت دو حال ہے خالی نہیں۔الفاظ میں موافقت ہوگی یا نہ ہوگی۔اول متابعت فظی ہو اور ثانی متابعت معنوی ہے

امام بخاری اس مقام پر جمله اقسام کے جوازی طرف اشارہ فرمارہ ہیں۔ چنانچہ تسابعہ عبداللہ بن یوسف یہ مثال ہے متابعہ تامہ کی کہ جس میں متابع عند مذکور نہ ہواور تابعہ ھلال بن رداد عن المزهری یہ مثال متابعہ تامہ کی کہ جس میں متابعہ متابعہ متابعہ تامہ کی ہے کیونکہ موافقت وسط والے راوی سے ہے۔ اور اس میں متابع عند مذکور ہے اور وہ زہری ہے۔ وقال یہ ونس و معمر یہ متابعہ ناقصہ ہے اور معنوی ہے کیونکہ لفظوں میں اختلاف ہے بعض لوگ متابعہ فی المعنی بھی جائز ہے۔ فی المعنی بھی جائز ہے۔ سوال: سب ہوتا ہے کہ اسکو بھی تابعہ کی صف میں داخل کردیتے قال سے کیوں تعبیر فرمایا؟ جو اب: سناختلاف نوع کی طرف اشارہ ہے ل

\$\\\\$\\\\$\\\\$\\\\$\\\\$\\\\$\\\\$\\\\$

 $(^{lpha})$ حدثناموسی بن اسماعیل قال اخبرناابوعوانةقال حدثنا موسی بن ابی عائشة قال مم سے بیان کیا موی بن اساعیل نے کہا ہمیں ابوعوانہ نے خبر دی کہا ہم سے بیان کیا موی بن ابو عائشہ نے کہا حدثنا سعيد بن جبير عن ابن عباس رضي الله عنهما في قوله تعالىٰ ﴿لا تُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَكَ ہم سے بیان کیاسعید بن جبیر نے انھوں نے ساابن عباس سے اس آیت کی تفسیر میں (اے پیغمبر) جلدی سے وحی کو لِتَعُجَلَ بِهِ ﴾ قال كان رسول الله عُلِي عالج من التنزيل شدة وكان مما یاد کر لینے کے لیے اپنی زبان کونہ ہلایا کرو،ابن عباسؓ نے کہا آنخضرت اللہ پر قرآن انرنے سے (بہت) بختی ہوتی تھی اورآ پاکثر يحرك شفتيه فقال ابن عباس رضى الله عنهما فانا احركهما لك كما ا پنے ہونٹ ہلاتے تھے (یادکرنے کے لیے) ابن عباسؓ نے (سعیدسے) کہامیں تجھ کو بتاتا ہوں ہونٹ ہلا کر جیسے كان رسول الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ مِن كهما وقال سعيد انا احركهما كما رأيت ابن عباس رضى الله عنهما يحركهما فحرك شفتيه فانزل الله تعالى کو ہلاتے دیکھا، پھرسعید نے اینے دونوں ہونٹ ہلائے ،ابن مباس نے کہا تب اللہ تعالی نے یہ آیت اتاری ﴿لاتُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ إِنَّ عَلَيْنَا جَمُعَه وَقُوْانَه ﴾ وی کو یادکرنے کے لیے اپنی زبان نہ ہلایا کرو، قرآن کا تجھ کویاد کرا دینا اور پڑھا دینا مارا کام ہے قال جمعه لك في صدرك وتقرأه، ﴿فَاذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعُ قُرُانَهُ ﴾ این عباس ً نے کہالیتن تیرے دل میں جمادینااور پڑھادینا(پریہ جواللہ نے زمایا) جب ہم پڑھ چکیس اس وقت تو ہمارے پڑھنے کی پیروی کر قال فاستمع له وانصت ﴿ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَه ثَهُ أَن علينا ان تقرأه ابن عباس ف كهاسف ك لئ كان دهراور حيب ره (مريوزيد) جمارا كام ب كداس كابيان كردينا لعني جمارا كام ب تحميكو يراهادينا صلى لله عَلَّ صلم عَلَّ ذلک اذا اتاه جبرئيل بعد الله فكان رسول پھر ان آیوں کے اترنے کے بعد آنخضرت علیہ ایا کرتے (کہ)جب جریل آپ کے پاس آتے استمع فاذا انطلق جبرئيل قرأه النبى عَلَيْكُم كما قرأه توآب (چیکے) سنتے رہتے، جب وہ چلے جاتے تو آنخضرت الله ای طرح قرآن پڑھ دیتے جیسے حفرت جریل نے پڑھاتھا

وتحقيق وتشريح

حدثنا موسى بن اسماعيل:امام بخاريٌ كاستاذين متوفى ٢٢٣ه ل

ابوعوانه :...ان كانام وضاح بن عبدالله منوفى ١٩٦ه ع

موسى بن ابى عائشة:ابوالحن كوفى بمدانى آلِ جعده كے مولى بيں۔

سعید بن جبیو :اجلہ تابعین میں سے ہیں۔ جاج بن یوسف نے ان کوظلم آئل کیا اس لیے کہ انہوں نے اسکی رائے کے خلاف فتو کی دیا تھا۔

ابن عباس ": صغیرالس مفسر ہیں بلکہ رئیس المفسرین ہیں حضور اللہ کی وفات کے وقت انکی عمر تیرہ سال تھی تا ابن عباس کی کل مرویات ۱۲۹۰ ہیں ہے۔ ابن عباس ہے آیت کی یہ نفیر روایتِ متصل ہے یا مرسل؟ اگر حضور اللہ ہے سے نی ہے تو متصل ورنہ مرسل صحابہ میں سے ہے ہے

يعالج: يعالج معالجه عاجم اورمعالجمل من مشقت برداشت كرنان

ممایحوک:ای رہما یحوک کے لا تُحَرِّک بِهِ لِسَانک ۵ اس آیت کا ربط مشکلات میں سے قرار دیا گیا ہے اس لیے کہ اس کے بعد بھی۔اس ظاہری بربطی کواچھال کر طحدوں نے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے دوراس کے اس کے دوراس کے اس کے دیا ہیں۔ اس تعدید میں مفسرین کے مختلف اقوال ہیں۔

القول الاول:امام فقال مروزی شافعی نفر مایا که ﴿ لا تُحَرِّکُ بِه لِسَانَکَ ﴾ بھی آخرت ہی سے متعلق ہے بدارشاد صرف آپ علی ہے متعلق نہیں ہے بلکہ قیامت کے دن جب اعمال نامہ طے گا اور پڑھے والا اسے پڑھے گا اور زبان تیزی ہے ہلائے گا تواسے کہا جائے گا کہ آرام ہے آ ہتہ آ ہتہ پڑھ الیکن یہ جواب شان نرول سے خلاف ہے نیز مابعد ﴿ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَه ' وَقُولُ الله ' ﴾ کے بھی خلاف ہے۔

 تو کہیں گے افسوں یہ کیسی کتاب ہے کہ اس نے کوئی بڑی چھوٹی چیز چھوڑی ہی نہیں سب لے لی ﴿ وَ وَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِوا ﴾ یعنی سب کیا ہوا سامنے ہوگا اور آپ کارب کسی پرظلم نہیں کریگا۔ یہ کتاب اکتال ہے اسکے بعد آ دم علیہ السلام کا قصد مناسبت سے ذکر کیا اس کے بعد فرمایا ﴿ وَلَقَدُ صَرَّفُنَا لِلنَّاسِ فِی هٰذَا الْقُرُانِ مِنْ کُلِّ بعد آ دم علیہ السلام کا قصد مناسبت سے ذکر کیا اس قرآن میں بیان کردی ہیں مگر وہ بہت ہی جوادل ہیں' یہ دوسری کتاب یعنی قرآن کا بیان ہوا تو دیکھو یہاں دونوں کتابوں کا ذکر کیا کیونکہ دونوں میں مناسبت ہے اس لیے کہ دوسری کتاب یعنی قرآن کا بیان ہوا تو دیکھو یہاں دونوں کتابوں کا ذکر کیا کیونکہ دونوں میں مناسبت ہے اس لیے کہ سے مشرکا ترتب اس کتاب (قرآن) پر ہے (المی ان قال) اس طرح سورة قیامہ میں بھی کہی کیا کہ پہلے کتاب اعلیٰ کا ذکر کیا اور بعد میں کتاب احکام (قرآن) کا ذکر کیا۔ ابن کثیر کہتے ہیں کہ اتی مناسبت تناسب آیات کے لیے کا فی ہے۔ یہ تفیر نسبۂ آچھی ہے یہ

القول الثالث: سسامام رازیؒ نے فرمایا کہ جب بیآیات (عربۃ قید) نازل ہوئی ہونگی تو حضور علی ہے بڑھنے نے پڑھنے میں تنبیہ کردی گئ توبہ جملہ معترضہ ہے جس سے مقصود تنبیہ ہے، ماقبل و مابعد سے اس کا ربط نہیں ہے سے

القول الرابع:سيدانورشاه صاحب كي تقرير كا حاصل بجهنے سے پہلے ایک مقدمة بجھ او كه متكلم كى مرادي كبھى دو موتى بيں اول: ماسيق له الكلام د ثانى: ما يفهم مع قطع النظر عن تسلسل الكلام بجى خواه ماسيق له الكلام مویاند حضرت شاه صاحب فرماتے ہيں كه ماسيق له الكلام ہى مراد اولى ہے يعنی اولا و بالقصد و ہى مراد موتا ہے ۔ اور جو چيز سلسل عبارت اور قصد متكلم سے صرف نظر كر كے خارج سے بجھ آئے وه مراد ثانوى ہے۔

ال مقدمہ کے بعد یول مجھوکہ یہال بھی دومرادیں ہیں۔اولی: جوظم قرآن سے بچھآرہی ہے، ٹانوی: جو صدیث سے بچھآرہی ہے، ٹانوی مرادیہاں ظاہر ہے جوابن عباس سے مروی ہے مگر جب سلسل کلام دیکھیں تو وہاں اس جیز کاذکر نہیں۔اس لیے مراواولی میر سے نزدیک سے ہے کہ جب معاند ﴿اَیَّانَ یَوُمُ الْقِیَامَةِ ﴾ یہ کالفاظ سے استہزاء کرتا تھا کیونکہ عادت کفاریقی کہ آ پکودق کرنے کے لیے سوال کیا کرتے تھے کہ کیوں جناب! کب آ کیگی؟ کس دُن آ کے گی؟ جوابات بھی دے ہیں تو حضوری نے نے فر مایا۔ آئے گی تو ضرور مگر تعیین وقت چنانچے قرآن نے جا بجا انجاء کہ تا کہ تا کہ تا کہ تا کہ اللّٰہ کا کام ہے، یہاں جب فر مایا کہ قیامت آ کیگی تو انہوں نے بوچھا کہ آ کیگی؟ ﴿ایَّانَ یَوُمُ الْقِیَامَةِ ﴾ تو اس کا پکھ جواب دیا اور علامات بتا کیں ﴿فِاذَا بَرِقَ الْبَصَرُ سالی سیمِمَا قَدَّمَ وَاَخْرَ ﴾ کے نو مکن تھا کہ جب جواب کھول کرنہیں دیا تو حضوری کے جی بھیل فرماتے اور جواب دینا چا ہے اس لیے فرمایا ﴿ لَا تُحَرِّکُ بِهِ لِسَانَکَ لِتَعْجَلَ بِه ﴾ د

ل بارد ۱۵ سورة بی اسرائل آیت ۸۹ س درس بخاری ص ۷۵،۷۸ س ایشا س پاره ۲۹ سورة القیاب آیت ۲ فی باره ۲۹ سورة القیام

لین جتناہم نے بتلادیا تاہی کہدو۔ جتناہم مناسب ہم جس گازل کرینگے ﴿ اِنَّ عَلَیْنَا جَمْعَهُ وَفُرُ آفَهُ ﴾ اِقراف کے پڑھنا، حفظ کرنا ، جمع کرنا جیسا مناسب ہوگاہم ویباہی کریں گے ای قدرنازل کرینگے جس قدرمناسب ہوگا تو پیراداولی ہے کونکہ سلس عبارت بتلا تا ہے کہ تھم آئیس اشیاء ہے متعلق ہاوراس مراداولی کے اعتبار سے دبط واضح ہاور جوحدیث میں آیا ہے بیمراد نانوی ہے جس کے لحاظ ہے دبط ضروری نہیں مگر چونکہ حدیث میں آگیا ہے تو بیمراد نانوی ہے تا القول الحجامس: سند حضرت مولانا خیر محمد حب نے فرمایا کہ یہ کام اقبیل رَدّ النظیر علی النظیر ہے۔ تو ضیح اسکی بیہ ہے کہ باری تعالی نے اولا قیامت کا ذکر فرمایا پھر قوع ی قیامت پر استدلال کیا کہ قیامت کا حاصل یہی ہے کہ عظام نخوہ واجزاء منتشرہ کو جمع کیا جارگا۔ اے منکرین قیامت! اس میں کوئی استجاذ نہیں اس لیے کہ جورب متفری حروف والفائل کو آیت بنا کر مستشرہ کو جمع کرستا ہے وہ منظری مرکز اول کی مطابق قرآن مراد نانوی ہوگا ہے۔ حاصل تطبیق: سسیہ ہے کہ احوال قیامت مراد اول ہے اور شان بڑول کے مطابق قرآن قرآن مراد نانوی ہوگا ہے۔ حاصل تطبیق: سسیہ ہے کہ احوال قیامت مراد اول ہے اور شان بڑول کے مطابق قرآن قرآن مراد نانوی ہوگا ہے۔ فاصل تطبیق نے جی رہنا۔ فاست مع نے جی رہنا۔

ثم ان علینا بیانه:ای ثم ان علیناان تقرأه :ان تقرأه بیبیانه کی تغییر بینی اسکاپڑھانا ہمارے دمہ بے مطلب یہ بیک کہ آپ اسے پڑھیں یہ بھی ہمارے ہی ذمہ ہے اسکے بارے میں بعض شرائ کی رائے یہ ہے کہ یہاں راوی سے کچھ تقدیم وتا خیر ہوگئ ہے یہ وہم راوی ہے یہ فیسر بیانه کی نہیں بلکہ قرانه کی ہے اور بیانه سے مراوی ہے اس کشف والینا جے یعنی اسکاوضوح ونبیین بھی ہمارے ذمہ ہے۔

دوسری رائے یہ ہے کہ یہ بیانہ ہی کی تفسیر ہے کہ ہم آپ کو سمجھائیں گے اور آپ آگے اور لوگوں کو سمجھائیں گے اور آپ آگے اور لوگوں کو سمجھائی کے اور آپ کا لوگوں سے قرآن بیان کرنا اور تبلغ بھی ہمارے ذمہ ہے تقو اُہ یعنی تقو اُہ علی الناس لوگوں کو سمجھانا ہے جمعہ لگ صدر کی اسینہ جمع کریگا یہ اسنا دمجاز ا جمعہ لگ صدر ک : سسآپ ایک اسینہ جمع کریگا یہ اسنا دمجازی ہے۔ جمع کی نسبت صدر کی طرف مجاز ا ہے اور بعض روایتوں میں (رجمعہ لک فی صدر ک)) ہے اس صورت میں کوئی اشکال نہیں ہے

(۵) حدثناعبدان قال اخبرنا عبدالله قال اخبرنا یونس عن الزهری الم اخبرنا یونس عن الزهری الم صحیح بیان کیا عبدان نے کہا ہم کو فر دی عبدالله (ابن مبارک) نے کہا ہم کو فر دی یونس نے زہری کے واسطے حو وحد ثنا بشربن محمد قال حدثناعبدالله قال اخبرنا یونس ومعمر تحویل (دوری مدری مدری اور ہم سے بشرین گھر نے بیان کیا عبدالله بن مبارک نے کہا ہم کو فر دی یونس اور معمر نے یا دو ۲۹ موری الله بن مبارک نے کہا ہم کو فر دی یونس اور معمر نے یا دو ۲۹ موری الله بن مبارک نے کہا ہم کو فر دی یونس اور معمر نے یا دو ۲۹ موری الله بن مبارک بیان کیا کہا ہم یا مان مدیق مردی بنادی مردی ب

لے پارہ ۲۹ مورۃ القیامہ آیت کا ح درس بخاری ص۸۸،قین الباری جا ص۳۹،۳۵ سے بیاض صدیقی ص۵۱،۵ درس بخاری ص۸۱،۸۰ سے بیاض صدیقی ص ۵۶ بی فیض الباری جا ص۳۳ ، عمدۃ القاری جا صالح بی درس بخاری ص۵۷ سے عمدۃ القاری جا ص۲۷

﴿تحقيق وتشريح ﴾

اس حدیث کی سندمیں آٹھ راوی ہیں ان کے تفصیلی حالات جانے کے کیے عمر ۃ القاری جامی ۲ کملاحظ فرمائیں۔ حد ثنا عبد ان : بیرحدیث بھی مرسل صحابی ہے اگر ابن عباسؓ نے حضور قابی ہے خود نہیں سا۔

عن الزهری آج و حلفنا: مسوال ندار تحویل عبدالله بهاد اتحویل عبدالله سیمونی عابی تھی ند که زبری سے؟ جو اب: یہ تحویل کی تم اول ہے اس میں مدار تحویل عبدالله کوئیس بنایا کیونکه عبدان کی روایت میں صرف یوئس راوی ہے جو کہ زبری کا شاگر د ہے اس سے روایت کرتا ہے جبکہ بشرین محد کی روایت میں معمر اور یوئس دونوں زبری سے روایت کرتا ہے جبکہ بشرین محد کی روایت میں معمر اور یوئس دونوں زبری سے روایت کرتا ہے جبکہ باللہ کی بجائے زبری کو بنا دیا ج

سوال:نحوه عن الزهرى مين نحوه كالضافه كيول فرمايا؟

جو اب:نحوہ کالفظ اس طرف اشارہ کرنے کے لیے لائے کہ الفاظ روایت یونس کے ہیں معمر صرف اس معنی کوروایت کرتا ہے الفاظ اس کے ہیں معمر صرف اس معنی کوروایت کرتا ہے الفاظ اس کے ہیں سع

ح:اے مفرد (مخفف) پڑھنے کازیادہ رواج ہے اور اس کے بعد قال محذوف ہوتا ہے ہیں۔ کان اجو د مایکون فی رمضان:اس کی ترکیب مختف طرق سے بیان کی جاتی ہیں۔

اجود: مرنوع ہے یامنصوب، اگر مرفوع ہوتو تین تر کیبیں ہوگی۔

اول:اجودكان كاسم موكا اور فى رمضان حال موكا جوخر محذوف كے قائم مقام ہے: حاصل ترجمه 'كان اجود اكو انه حاصلا حال كونه فى رمضان " ه

ا مدة التأري من المسلم بخاري بيعديث بخاري شريف من قبارالائي رقوم الاحاديث! ٢ ، ١٩٠٣ ، ٣٥٥٠ ، ٣٩٩٧ مطبور دار السلام للنشرو التوزيع الرياض ؟ ع بياض سداتي س 21 مند منطية البخاري عن ص سيحاشيه بخاري ص ٣ سيم بياض صديقي ص٥٦ هي كذافي ماين السطور بخاري ص٣ عمرة القاري عن ص٤٥

ثانی: کان میں خمیرشان اسم ہوا، اجود مبتدا فی رمضان خبر۔ حاصل ترجمہ "شان بیہے کہ اجود اکو ان رسول الله علیلیہ حاصل فی رمضان اس وقت مبتدا ، خبر ال کر کان کی خبر بنیں گے ا

ثالث:ما یکون سے پہلے وقت کالفظ محذوف ہے: حاصل ترجمہ کان اجود اوقاته وقت کونه فی رمضان اجود اوقاته وقت کونه فی رمضان اجود اوقاته کان کات کے خبر ہے۔

اوراگراجودکومنصوب پڑھیں تو ما یکون سے پہلے مدۃ کالفظ محذوف ہوگا اورلفظ اجودکان کی خبر ہوگا اور کان کا اسم (ھو) ضمیر ہوگا ای کان رسول الله علی متصفا بالاجو دیة مدۃ کونه فی رمضان تو مایکون فی رمضان ہوئی ہے سے رمضان بحذف مضاف اجود کے لیے ظرف ہوگا کاروایت کے اعتبار سے دفع پڑھنا اولی ہے سے

الفرق بین الجود و السخاء:جود کتے بین اعطاء ما ینبغی لمن ینبغی سخاوت تسیم بال کانام ہے ۵ پھر خاوت بین کی غرض ہوتی ہے اللہ کو جوادتی کی اللہ نہیں کہ سکتے کے جیسے نیت اور ارادے میں فرق ہے کہ نیت میں اپنی غرض ضرور ہوتی ہے اور ارادہ میں نہیں ای لیے نوی اللہ نہیں کہ سکتے۔

عين يلقاه جبر نيل :اس مديث مين حضور علي كتين جودول وعلى سبيل الترقى بيان كيا بيد.

جوداول: تواجود الناس معلوم مواكرة باول توسب بى لوگول مين زياده في تھے۔

جود أنى: جب رمضان آ جا تا توجود ميں اضافه بوجا تاحی که ماه رمضان ميں قرض لے کر بھی لوگوں کو کھاا يا کر تے کيونکہ قاعدہ ہے کہ جب مسرت ہوتی ہے تو آ دمی خوب خرج کرتا ہے۔ حضور اللہ کورمضان ميں زيادہ خوشی اور مسرت ہوتی تھ۔ جود فالت: حين يلقاه جبوئيل سے معلوم ہوا کہ رمضان المبارک ميں جب آ پ اللہ کی ملاقات جريل عليہ السلام سے ہوتی اور ہررات قرآن پاک کا وور ہوتا تو اس وقت کی جود کا حال نہ پوچھواس وقت مفت جود اور برح جاتی کے مسوال نہ سے جود وسی تا تو جا ہتا ہے کہ کی کے پاس بہت مال ہو جبکہ حضور علاء کہ پاس تو مال تھا ہی نہيں حضرت عائشہ مسوال نہ سے ہود وسی تا تو جا ہتا ہے کہ کی کے پاس بہت مال ہو جبکہ حضور علاء کہ پاس تو مال تھا ہی نہيں حضرت عائشہ

فرماتی بین كدوودوماه كزرجات تصاور بهارك چولى مين آ كنهيں جلتى تھى؟

جواب:حضور ﷺ پرجوقرض تھا اسكاسب بھى آپ ﷺ كاجود وسخاتھا حضرت بلال ہے ذہبے تھا كہ جب كوئى سائل آئے تو خصرت ﷺ كے پاس جو پھھ آتا فوراً خرج فرماد ہے اس ليے گھر پچھ باقى نہ رہتا جيسا كدروايات كثيرہ سے بيمضمون معلوم ہوتا ہے ٨

فیدار سه القر آن:دارسة کامعنی دورکرنا ہے یہاں القرآن کالفظ ہے جیسے اس کا اطلاق پور سے قرآن پر ہوتا ہے ایسے بی بعض قرآن پر بھی ہوتا ہے۔ پس مطلب یہ ہے کہ جتنا اتر چکا ہوتا تھا اسکا دورکرتے تھے اور قرآن سے

[ً] لے پیاش صدیقی سے 2 مع التواکیب الاوبعة للبیاض الصدیقی صے 20 مع فیض الباری قاص۳۱ مع درس بخاری ص۸۳ هے انوارالباری جاس ۵۸ مع بیاش صدیقی صے ۵۵ فیض الباری جام ۳۲۰ بے تقریر بخاری جام ۱۳۸۰ فیقریر بخاری جام ۱۸

پہلے لفظِ بعض محذوف ماننے کی ضرورت نہیں۔ بعض کی رائے یہ کہ سارے قرآن کا دور ہر رمضان میں فرماتے تھے ۔ لیکن یہ مرجوح مہے قولِ اول راج ہے ورنہ حضور ﷺ مسئلہ اقک میں پریشان نہ ہوتے ای طرح دیگر سوالات کے جواب میں خاموش نہ ہوتے مثلا ﴿وَيَسْئَلُونَكَ عَنِ الْرُوحَ ﴾ اوغیرہ ع

مسئله: سلاعلی قاری نے اس لفظ مدارسة سے مسئلہ نکالا ہے کہ پورے سال میں ایک قرآن تو ضرور کمل ہوجانا چاہیئے شرح نقابی میں لکھتے ہیں کہ' قرآن باک کا ایک ختم مسنون ہے' کیونکہ ہرسال جتنا قرآن اتر چکا ہوتا اسکادور فرما لیتے اور آخری رمضان میں دودور کئے۔اور صحابہ کے ممل سے توختم قرآن یاک بالکل واضح ہے سے

اجود بالحیو من الریح الموسلة:مرسلة سے مرادوہ ہوائیں جولوگوں کونفع پہنچانے کے لیے بھی جاتی ہیں، گرمی دورکرتی ہیں، پھل پکاتی ہیں اس لیے کشر سے خیرکوری مرسلہ سے تشبید دی یعنی ہوا جوان کی نفت وی کا بب ہے حضور علی اس سے بھی زیادہ اجود ہیں اور خیرکی سخاوت کرنے والے ہیں ہم نیز جیسے ہوا سے تمام مخلوق کوفیض پہنچنا ہے، اور بےروک وٹوک سب کو پہنچنا ہے اسی طرح بلکہ اس سے بھی زیادہ حضور علی کارمضان میں فیض ہوتا تھا ہے ربط انسلام حضرات کی رائے ہے کہ واجود مایکون فی درمضان میں لفظ درمضان میں کیفیت بدؤ ہے کیونکہ تم نورالانوار میں پڑھ چکے ہوکہ قرآن پاک ساءِ دنیا پر رمضان میں نازل ہوا۔ تو اس لفظ رمضان میں کیفیت بدؤ الوحی کی طرف اشارہ ہے اس لیے کہ سب سے پہلے وی کے نزول کی جو کیفیت ہوہ ہے کہ رمضان میں پورا پورا لوح محفوظ سے ساء دنیا پر نازل ہوا یعنی بدء زمانی کی طرف اشارہ ہے اس

ربط ۲: بعض حفرات کی رائے یہ ہے کہ ترجمہ یلقاۃ سے ثابت ہوتا ہے کیونکہ لقاء اپنے عموم کی وجہ سے لقاءِ بوقتِ ابتداء وی کوبھی شامل ہے۔ نیز وحی اس وقت شروع ہوتی جبر بل سے ملاقات ہوتی تو ملاقات سے ابتداء ثابت ہوگئ۔ ربط سا: سخضور اقدس علیقہ اور جریل علیہ السلام وسائط وحی ہیں اور مبادئ وحی ہیں اور ترجمۃ الباب کے ظاہری مقاصد میں سے مبادئ وحی بھی کا ذکر کر نا بھی ہے کے

ربط ٧:د ضرت شخ الهند كى رائے كے مطابق باب كامقصود عظمتِ وى كابيان ہے قاس لحاظ سے بھى مناسبت ہے كہ كسى عظمت والى وى ہے جس كادور حضرت جبريل عليه السلام حضور تشت كے ساتھ كرتے تصاور بررمضان ميں كرتے تھے۔ ربط ٥: باب كى غرض ان صفاتِ عاليه كاذكر ہے جونزول وى كے ليے سبب بيں اور ان ميں سے جود ہے حديث ميں اسكے تين مراتب بيان ہوئے ہيں ك

ر بط ۲:اورجن کے نزدیک ترجمه کی غرض بدءِ امریعنی امردین کی ابتداء بیان کرنی ہے انکی رائے پر بھی کوئی اشکال نہیں اس لئے کہ اس روایت میں ابتداءِ امر کا تذکر وموجود ہے۔

ا پاره ۱۵ سورة بن اسرا نکل آیت ۸۵ ع تقریر بخاری جانس ۱۹۷۷ ورس بخاری ص ۸۳ سع تقریر بخاری جام ۹۸،۹۷ هے ورس بخاری ص ۸۵ کی تقریر بخاری بن اس ۹۸ کے بیاض مدیق س۸۵ می تقریر بخاری جانس ۹۸

(٢) حدثنا ابواليمان الحكم بن نافع قال اخبرنا شعيب عن الزهرى قال اخبرني عبيدالله بن ہم سے بیان کیاابو یمان حکم بن تافع نے کہا ہم کوخبر دی شعیب نے انھوں نے زہری سے کہا خبر دی مجھ کوعبیدالله بن عبدالله بن عتبة بن مسعود ان عبدالله بن عباس اخبره ان اباسفیان بن حرب اخبره ان هرقل عبدالله بن عتب بن مسعود نے کہان سے عبداللہ بن عباس نے بیان کیاان سے ابوسفیان بن حرب نے کہا کہ ہرقل (روم کے بادشاہ) ارسل اليه في ركب من قريش وكانوا تجارا بالشام نے انکو قریش کے اور کی سواروں کے ساتھ بلا بھیجااور پیقریش کے لوگ اس وقت شام کے ملک میں سوداگری کے لیے گئے تتھے في المدة التي كان رسول الله عُلِيلية مادّ فيها اباسفيان وكفار قريش اس زمانہ میں کہ جس میں آنخضرت علقہ نے ابوسفیان اور قریش کے کافروں کو (صلح کرکے)ایک مدت دی تھی بإيلياء فدعاهم في مجلسه فاتوه وهم غرض بیلوگ اس کے پاس پہنچے جب وہ(ہرقل اور اس کے ساتھی) ایلیاء میں تھے، ہرقل نے ان کو اپنے دربار میں بلایا اور حوله عظماء الروم ثم دعاهم ودعاترجمانه فقال ايكم اقرب نسبأبهذا الرجل الذي يزعم انه نبي ،قال ابوسفيان فقلت انا اقربهم نسبا فقال ادنوه مني جوایے آپ ویغیر کہتا ہے ابوسفیان نے کہا ہومیں نے کہا کہ میں اس شخص کا قریب کارشتددار ہوں بتب ہرقل نے کہا اسکومیرے پاس لاؤ وقربوا اصحابه فاجعلوهم عند ظهره،ثم قال لترجمانه قل لهم اني سائل هذا اوراس کے ساتھیوں کو بھی (اسکے) نزویک رکھواس کے پیٹھ پر، پھراہیے مترجم سے کہنے لگان لوگوں سے کہیں اس (ابوسفیان) سے فكذبوه فوالله كذبني الرجل فان هذا الشخف كالبغيم رصاحب كا) كجه حال بوچها مول ،اگريه مجه سے جموت بوليو تم كهدينا جمونا ہے، ابوسفيان نے كم اسم خداكى لولاالحياء من ان يأثروا على كذبا لكذبت عنه،ثم كان اول ماسألني عنه اگر مجھا دیشرم نہ دتی کہ پیلوگ مجھا وجھوٹا کہیں گے قومیس آپ ﷺ کے بارے میں جھوٹ کہد یتا، خیر پہلی بات جواسے مجھ سے پوچھی ان قال كيف نسبه فيكم قلت هو فينا ذونسب قال فهل و میتی که استخف کاتم میں خاندان کیساہے؟ میں نے کہا کہ وہ بمار سے اندر بڑے خاندان والاہے کہنے لگا کہ پھریہ بات (کہ یں پینبر ہوں)

قال هذاالقول منكم احد قط قبله ،قلت لا،قال فهل كان من ابآئه من ملك اس سے پہلےتم لوگوں میں کسی نے کہی تھی؟ میں نے کہانہیں ، کہنے لگا اس کے بزرگوں میں کوئی بادشاہ گذراہے؟ قلت لا،قال فاشراف الناس اتبعوه ام ضعفاؤ هم ،قلت بل ضعفاؤ هم میں نے کہانہیں، کہنے لگابڑے آ دمی (امیرلوگ) آسکی پیروی کررہے ہیں یاغریب لوگ؟ میں نے کہانہیں بلکہ غریب لوگ قال أيزيدون ام · ينقصون ،قلت بل يزيدون، قال کہنے لگا سکے تابعدارلوگ (روز بروز) بڑھتے جاتے ہیں یا گھٹتے جاتے ہیں؟ میں نے کہانہیں بلکہ بڑھتے جاتے ہیں، کہنے لگا فهل يرتد احدمنهم سخطة لدينه بعد ان يدخل فيه،قلت لا،قال چرکوئی ان میں سے ایمان لاکر اس کے دین کو براسمجھ کر پھر جاتاہے؟ میں نے کہا نہیں ، کہنے لگا فهل كنتم تتهمونه بالكذب قبل ان يقول ما قال،قلت لا،قال فهل يغدر یہ بات جوال نے کہی (یں پنیرہوں) اس سے پہلے بھی تم نے اس وجھوٹ بولتے دیکھا؟ میں نے کہانہیں، کہندگا اچھاوہ عہد شکنی کرتا ہے؟ قلت لا،ونحن منه في مدة لاندرى ماهو فاعل فيهاقال ولم تمكنّي كلمة میں نے کہانہیں اب ہماری اس سے (منتلج کی) ایک مدت تھری ہے معلونہیں اس میں وہ کیا کرتا ہے ابوسفیان نے کہا مجھ کو اور کوئی بات ادخل فيها شيئاً غير هذه الكلمة قال فهل قاتلتموه،قلت نعم اس میں شریک کرنے کا موقع نہیں ملا بجزاں بات کے، کہنے لگا اچھاتم اس سے (مجھی) لڑے؟ میں نے کہاہاں! کہنے لگا قال فكيف كان قتالكم اياه،قلت الحرب بيننا وبينه سجال ينال منا پھرتمہاری اس کی لڑائی کیسے ہوتی ہے؟ میں نے کہا ہم میں اور اس میں لڑائی ڈولوں کی طرح ہے،وہ ہمارانقصان کرتا ہے وننال منه، قَالَأُ ماذا يأمركم ،قلت يقول اعبدوا الله وحده و اورہم اس کا نقصان کرتے ہیں، کہنے لگا اچھا وہ تم کو کیا حکم کرتا ہے؟ میں نے کہا وہ کہتا ہے بس اسلیے اللہ ہی کو بوجو اور لا تشركوابه شيأ واتركوا مايقول ابآؤ كم ويأمرنا بالصلوة والصدق اس کے ساتھ کسی چیز کوشریک نہ بنا وَاورا پنے باپ دادا کی (شرک کی) با تیں چھوڑ دو،اور ہم کونماز پڑھنے ، سچ بو لنے والعفاف والصلة، فقال للترجمان قل له سألتك عن نسبه فذكرت (حرام کاری) سے بچنے اورنا تاجوڑنے کا تھم دیتا ہے تب ہرال نے مترجم ہے کہاں شخص سے کہ میں نے تجھ سے اسکاخاندان یوچھا تو تو نے کہا

انه فیکم ذو نسب ،و کذلک الرسل تبعث فی نسب قومها،وسألتک وہ ہم میں عالی خاندان ہےادر پینمبر (ہمیشہ)اپی قوم میں سے عالی خاندان میں ہی بھیج جاتے ہیں،اورمیں نے تھ سے بوچھا هل قال احدمنكم هذا القول فذكرت ان لا قلت لوكان احد یہ بات تم لوگوں میں اس سے پہلے کسی نے کہی تھی؟ تو تونے کہانہیں،اس سے میرامطلب بیتھا کہ اگراس سے پہلے دوسرے نے بھی قال هذاالقول قبله لقلت رجل يأتسى بقول قيل قبله، وسألتك هل كان من ابآئه بدبات کہی ہوتی (پنیسری کادوی کیا ہوتا) تب میں بیکہتا شخص اگلی بات کی پیردی کرتا ہے۔ اور میں نے تجھ سے بوچھا اسکے بزرگول میں من ملك فذكرت ان لا ،فقلت فلوكان من ابآئه من ملك قلت رجل كوئى بادشاه گزرائة تونے كہانہيں،اس ميرامطلب بيتھا كەاگراسكے بزرگوں ميںكوئى بادشاه گزرائے توبيہ بجھلوں كدوہ خض يطلب ملك ابيه وسألتك هل كتم تتهمونه بالكذب قبل ان يقول ما قال فذكرت ان لا، ا ہے اپ کی بادشاہت لینا چاہتا ہے اور میں نے تجھے یہ پوچھا کہ اس بات کے کہنے سے پہلےتم نے بھی اس کوچھوٹ بولتے دیکھا تو تو نے کہانہیں فقد اعرف انه لم یکن لیذرالکذب علی الناس ویکذب علی الله، تواب میں نے تمجھ لیا کہ ایسا بھی نہیں ہوسکتا کہ وہ لوگوں پر تو جھوٹ باندھنے سے پر ہیز کرے اور اللہ پر جھوٹ باندھے وسألتك اشراف الناس اتبعوه ام ضعفاؤ هم فذكرت ان ضعفاؤ هم اتبعوه اور میں نے تجھ سے بوچھا کیابڑے (امیر) آ دمیوں نے آگی پیروی کی یاغریبوں نے ؟ تو تونے کہا کیفریب لوگوں نے اس کی پیروی کی ہے وهم اتباع الرسل، وسألتك ايزيدون ام ينقصون اور پغیمروں کے تابعدار (اکثر)غریب ہی ہوتے ہیں ،اور میں نے تجھ سے پوچھاوہ بڑھ رہے ہیں یا گھٹ رہے ہیں؟ فذكرت انهم يزيدون وكذلك امرالايمان حتى يتم،وسألتك تو تونے کہا وہ برھ رہے ہیں ،اور ایمان کا بہی حال رہتاہے جب تک وہ پورانہ ہو،اور میں نے تجھ سے پوچھا ايرتد احد سخطة لدينه بعد ان يدخل فيه فذكرت ان لا، وكذلك الايمان کوئی اس کے دین میں آ کراس کو براسمجھ کراس سے پھرجاتا ہے؟ تو تونے کہانہیں،اورایمان کا یہی حال ہوتا ہے حين تخالط بشاشته القلوب،وسألتك هل يغدر فذكرت ان لا، ب اسکی خوشی دل میں سا جاتی ہے (تو پھرنہیں نکلتی)اور میں نے تجھ سے یو چھا وہ عہد شکنی کرتا ہے؟ تو تو نے کہانہیں ،

وكذلك الرسل لاتغدر، وسألتك بما يأمركم فذكرت انه يأمركم اور پیغمبرالینے ہی ہوتے ہیں،وہ عہد نہیں توڑتے ،اور میں نے تجھ سے پوچھاوہ تم کوکیا حکم دیتا ہے؟ تو تو نے کہاوہ تم کو بیٹ کم دیتا ہے ان تعبدواالله ولاتشركوا به شيئا وينهاكم عن عبادة الاوثان ويأمركم بالصلوة والصدق کہ اللہ کو بوجو او راس کے ساتھ کسی کو شریک نہ بناؤ اور بت برسی سے تم کومنع کرتاہے اور نماز اور سچائی کا والعفاف، فان كان ماتقول حقا فسيملك موضع قدمي هاتين اور ام کاری سے نیچر ہے کا مم یتاہے بھرتو جوتو کہتا ہے اگر بچے ہے وہ عنقریب س جگہ کامالک ہوجائے گاجہل میرے یوفوں یاؤں ہیں وقد كنت اعلم انه خارج ولم اكن اظن انه منكم، فلو اني اعلم اني (یین ایس کسیہ) اور تحقیق میں جانتا تھا کہ یہ پغیرا نے والا ہے لیکن میں نہیں سمجھتا تھا کہوہتم میں سے ہوگا، پھراگر میں جان اوں کہ میں اخلص اليه لتجشمت لقاء ه ولو كنت عنده لغسلت عن قدميه، اں تک پہنچ جاؤں گا تو اس سے ملنے کی ضرور کوشش کروں گا۔اورا گرمیں اس کے پاس (مدینہ میں) ہوتا تو اس کے پاؤں دھوتا ثم دعا بكتاب رسول الله الله الله الذي بعث به مع دحية الكلبي الى عظيم بصرى، (خدمت كرتا) چراس نے آنخضرت الله كاده خطم منگوليا جوآت نے دحيك بئ كودے كر (١٥ هيس) يُصري كے حاكم كي طرف كو بھيجا تھا فدفعه عظيم بُصرى الى هرقل فقرأه فاذا فيه بسم الله الرحمن الرحيم اس نے وہ خط برقل کے پاس بھیج دیا تھا، ہول نے اس کورٹر صااس میں ریکھا تھا: شروع اللہ کے نام سے جو بہت مہر بان ہے تم والا ہے من محمد عبدالله ورسوله الى هرقل عظيم الروم سَلامٌ عَلَى مَن اتَّبَعَ الْهُدَى محمداللہ کے بندے اور اس کے رسول کی طرف سے ہرقل روم کے رئیس کی طرف سلام اس شخص پر جس نے ہدایت کی پیروی کی اما بعد فانى ادعوك بدعاية الاسلام اسلم تسلم اس كے بعد بحوكوا سلام كے كلمه (لا اله الا الله محمد رسول الله كى طرف بلاتا ہوں، مسلمان ہوجاتو تو بچار ہے گا يؤتك اللهاجرك مرتين،فان توليت فان عليك اثم اليريسيين، الله تجھ کو دوہرا ثواب دیگا، پھر اگرتوبہ بات نہ مانے تو تیری رعایا کا (بھی) گناہ تجھ ہی پر ہوگا و﴿ يَااَهُلَ الْكِتَابِ تَعَالُوا اللِّي كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ اَنُ لَّا نَعْبُدَالَّااللهَ وَلانُشُوكَ به شَيْئًا (اربیانی ایک می کتاب والواس بات پر آ جا وجوجم میں اورتم میں کیسال ہے کہ اللہ کے سوااور کسی کونہ بوجیس اور اسکاشر کیک سی کو خطہ رائیں

وَلَايَتَّخِذَ بَعُضَنَا بَعُضاً ، أَرْبَاباً مِنْ دُون اللهِ فَإِنْ تَوَلُّو الْقُولُو ا اوراللدکوچھوڑ کرہم میں سے دوسر ہے کوخدانہ بنالیں، پھراگروہ (اس بات کو)نہ مانیں تو (اےمسلمانو)تم ان سے کہد و اشهَدُو ابانًا مُسُلِمُونَ ﴾قال ابو سفيان فلما قال ماقال وفرغ من قرآء ة الكتاب گواہ رہنا ہم تو (ایک خدا کے) تابعدار ہیں۔ابوسفیان نے کہا جب ہرقل کوجو کہنا تھا وہ کہہ چکا اور خط پڑھ چکا تو كثر عنده الصخب فارتفعت الاصوات وأخرجنا فقلت لا صحابي حين اس کے پاس بہت شور مجااور آوازیں بلند ہوئیں اور ہم باہر نکال دیئے گئے ، میں نے اپنے ساتھیوں ہے کہاجب اخرجنا لقد امر امر ابن ابي كبشة انه يخافه ملك بني الاصفر فمازلت موقنا ہم باہر نکا لے گئے ابو کبشہ کے بیٹے کا تو برا درجہ ہو گیا،اس سے رومیوں کا بادشاہ ڈرتا ہے (اس روز سے) مجھ کو برابریقین رہا انه سيظهر حتى ادخل الله علَى الاسلام وكان ابن الناطور صاحب ايلياء كه آنخضرت علي في الب مول كے يهال تك كه الله في محمد كومسلمان كرديا، (زهرى في كها) ابن ناطور جوامليا كا حاكم وهرقل سقف على نصارى الشام يحدث ان هرقل حين قدم ايليآء اور ہرقل کا مصاحب اور شام کے نصاریٰ کا پیریا وری تھاوہ بیان کرتا تھا کہ ہرقل جب ایلیاء (بیت المقدس) میں آیا اصبح يوماخبيث النفس فقال بعض بطارقته قد استنكرنا هيأتك توایک روز مبح کورنجیدہ اٹھا،اس کے بعضے مصاحب کہنے لگے (کیوں خیرتا ہے) ہم تیری صورت کواوپر امحسوس کرتے ہیں قال ابن الناطور وكان هرقل حزآء ينظر في النجوم فقال لهم ابن ناطورنے کہااور ہرقل نجومی تھااس کوستاروں کاعلم تھا، جب لوگوں نے اس سے بوج پھا (تو کیوں رنجیدہ ہے) تو کہنے لگا حين سألوه اني رأيت الليلة حين نظرت في النجوم ملك الحتان قد ظهر میں نے آج کی رات ستاروں پر نظر کی (توالیا معلوم ہواکہ) ختنہ کرنے والوں کا بادشاہ غالب ہوا فمن يختتن من هذه الامة قالوا ليس يختتن الا اليهود تو اس زمانے والوں میں کون لوگ ختنه کرتے ہیں؟ اس سے مصاحب کہنے لگے یہود یوں سے سوا کوئی ختنه نہیں کرتا فلا يهمنك شانهم واكتب الى مدآئن ملكك فليقتلوا من فيهم من اليهود توان کی کچھ کرنہ کراورا پنے علاقہ کے شہروں میں (وہاں کے حاکموں کو)لکھ بھیج جتنے یہودی وہاں ہوں ان کو مارڈ الیں،

فبينا هم على امرهم اتي هرقل برجل ارسل به ملك غسان وہ لوگ ہیا تیں کررہے تھاتنے میں ہرقل کے سامنے ایک مخص لایا گیاجس کوغسان کے باوشاہ (عارث بن ابیشر) 'نے بھجوایا تھا خبر عن خبررسلول الله عُلَيْكُ فلما استخبر ه هرقل قال اذهبوا فانظروا وہ آنخضرت علیق کا حال بیان کرتا تھا، جب ہرقل نے سب خبراس سے من لی تو (اپ نوگوں سے) کہنے لگاذ راجا کرا س مخف کودیکھو أمختتن هو ام لا،فنظروا اليه فحدثوه انه مختتن وسأله اں کا ختنہ ہوا ہے انہیں؟ اُنھوں نے جا کراں کودیکھااور جا کر ہرقل سے بیان کیا کہاں کا ختنہ ہوا ہےاور ہرقل نے استخص سے پوچھا عن العرب فقال هم يختتنون فقال هرقل هذا ملك هذه الامة کیا عرب ختنه کرتے ہیں؟اس نے کہاہال ختنه کرتے ہیں،تب ہرقل نے کہا یہی شخص (پیغیبر علیقہ)اس امت کے بادشاہ ہیں قد ظهر ثم كتب هرقل الى صاحب له برومية وكان نظيره في العلم وسار هرقل الى حمص کہ جوغالب ہوئے ہیں، پھر ہرقل نے اپنے ایک دوست (ضغاطر) کورومیہ میں لکھا، وہ ہرقل کی مثل تقاعلم میں،اور ہرقل خوجمص چلا گیا فلم يرم حمص حتى اتاه كتاب من صاحبه يوافق رأى هرقل على خروج النبي عَلَيْكُمْ ابھی حمص سے نہ نکا اتھا کہ اس کے دوست (صغاطر) کا خط اسکو پہنچا ،اس کی بھی رائے آنخضرت اللے کے خاہر ہونے میں ہرقل کے موافق تھی وانه نبى فاذن هرقل لعظماء الروم فى دسكرة له بحمص یعنی آنخصرت الله سے پغیر ہیں، آخر ہرقل نے روم کے سرداروں کوایے جمص والے کی میں آنے کی اجازت دی ثم امر بابوابها فغلقت ثم اطلع فقال يامعشر الروم هل لكم في الفلاح والرشد (جب دہ آگئے)تو درواز ول کو بند کروادیا، پھراو پر بالا خانے میں برآ مد ہوااور کہنے لگاروم کےلوگو! کیاتم اپنی کامیابی اور بھلائی وان يثبت ملككم فتبايعوا هذاالنبي فحاصوا حيصة حمر الوحش اورا پی بادشاہت پر قائم رہنا چاہتے ہو؟اگراہیا ہے تواس (عرب کے) پیغیبر سے بیعت کرلو، پیسنتے ہی وہ پہلے جنگلی گدھوں الى الابواب فوجدوها قد غلقت فلما رأى هوقل نفرتهم کی طرح دروازوں کی طرف لیکے ،دیکھا تو وہ بند ہیں،جب ہرقل نے دیکھا ان کی نفرت کو وأيس من الايمان قال ردوهم عليّ وقال اني قلت مقالتي انفا ادرایمان لانے سے ناامید ہوگیاتو کہنے لگاان سردارول کو پھرے میرے پاس لاؤ (جبوہ آئے)تو کہنے لگامیں نے جوبات ابھی تم ہے کہی اختبر بهاشدتکم علی دینکم فقد رأیت فسجدوا له، ورضوا عنه وه تباری آزمانے کو کا تبسب نے اس کو تجده کیاادراس سے راضی ہوگئے فکان ذلک اخو شان هرقل ل

یہ ہرقل کا آخری حال ہوا۔

قال ابو عبد اللهرواه صالح بن کیسان ویونس و معمر عن الزهری امام بخاریؓ نے کہااس مدیث کوصالح بن کیسان اور یوس اور معمر نے بھی (شعیب کی طرح) زہری سے روایت کیا ہے

﴿ تحقيق وتشريح ﴾

حدثثاابو اليمان: سساس مديث كانام مديث برقل باس مديث سي متعلق تين يحثين بير ______ پهلى بحث : ابوسفيان اور برقل كى ملاقات دوسرى بحث : شرح الفاظ -تيسرى بحث: مناسبة بترجمة الباب اور مسائل مستنط -

البحث الاول

سو ال : اس حدیث میں ابوسفیان اور ہرقل کی بیت المقدس میں ملاقات کا ذکرہے ابوسفیان مکہ کارہنے والا اور ہرقل روم کا بادشاہ تھا، اور اس کا دار الخلافہ فیسطنطنیہ تھا تو پھر ان کا بیت المقدس میں اجتماع کیے ہوا؟ جو اب :روم اور فارس کی آپس میں لڑائی ہوئی فارس والے عالب آگئ (فارس کے بادشاہ کا لقب کسرای عالب آگیاتو مشرکوں ہے، روم کے بادشاہ کالقب قیصر مصر کے بادشاہ کالقب فرعون) روم وفارس کی جنگ میں کسرای عالب آگیاتو مشرکوں نے خوشی منائی کہ جیے وہاں اہل کتاب ہار گئے ایسے ہی یہاں بھی یہ نبی جواہل کتاب ہے ہارجائیگا۔ انہوں نے طعنے دئ مضرت ابو بکرصد بی نے کہ دیا کو تقریب روم عالب آجائیگائی کا ذکر قرآن کی ان ایات ﴿ آلَم عُلِبَتِ الرُّومُ ﴿ ﴾ خضرت ابو بکرصد بی نے کہ دیا کہ قرآن پاک کے وعدہ کے مطابق میں ہے۔ ادھرقیم روم نے منت مانی کہ اگر عالب آجاؤں تو پیدل حج کروں گا، چنانچ قرآن پاک کے وعدہ کے مطابق (بعد کی جنگ میں) اہلِ فارس مغلوب ہو گئے اور رومی عالب آگئے تو اسکے شکرانہ میں شاہ ہرقل بیت المقدس آیا ہوا تھا کہ حضور عیا ہے۔ کے مساتھ لڑائیوں میں گھرے رہے جھے اور کہیں سفروغیر ونہیں مضور عیا ہے۔ کے مساتھ لڑائیوں میں گھرے رہے جھے اور کہیں سفروغیر ونہیں مضور عیا ہے۔

ل عدة القارى جا ص٥٨ ،علامه يمثّى في نشان دى فرمائى كدامام بخارى بير عديث پاك بخارى شريف يس 14 بارلائے بين ،علام كرمائى في 10 مقامات كى نشان دى فرمائى رتوم الاحادیث: ٧ ، ١٥ ، ٢٠٨١ ، ٢٠٨٠ ، ٢٩٨١ ، ٢٩٧٨ ، ٣٥٥٣ ، ٣٥٥٣ ، ١٢٢٠ ، ١٢١٧ ، ١٩١٧ ، ١٥٨٧ (دار المسلام للنشر و المتوزيع الرياض) اخرج مسلم فى المغازى ،ايوواؤونى الادب،الترفدى فى الاستيذان ،النسائى فى النفير مرتب مسلم فى المغازى ،ايوواؤونى الادب،الترفدى فى الاستيذان ،النسائى فى النفير مرتب

کر سکتے تھے جب صلح حدیدیہ ہوگئ تو وہ بھی سفر کے لیے نکلے ان میں ابوسفیان کا قافلہ انہی ایام میں جب کہ ہرقل وہال موجودتھا بغرض تجارت شام پہنچا ہواتھا جب والا نامہ ہرقل کو ملاتو اس نے ان لوگوں کو اپنے سامنے بلایا اور ابوسفیان کو آگے ، باقی اسکے ساتھیوں کوان کے پیچھے بٹھادیا ہے

آھ میں سلح حدیبیہ ہوئی اسکے بعد حضور ﷺ کواہل مکہ سے جب امن ملاتو آپ ﷺ دوسروں کی طرف متوجہ ہوئے سب سے پہلے ان یہود کو نکالا جنہوں نے حضور ﷺ کے خلاف غزوہ بدرواحزاب میں کفار کی مدد کی تھی اور طرح کی ایذائیں پہنچائیں تھیں اسی طرح محرم کے ہے کا ندر غزوہ خیبر واقع ہوا۔ اسی زمانے میں آپ ﷺ نے اقطار ارض (اطراف زمین) میں مختلف بادشا ہوں کے پاس بلیغی والا نامہ جات بھیج، انہی میں سے ایک والا نامہ قیصر روم کے نام تھا جسکو حضور ﷺ نے حضرت دحیہ کبی گی معرفت اخیر ذی الحجہ میں بھیجا تھا جسکو حضرت دحیہ ابتداء محرم میں لیکر پنیجے تھاس حدیث کے اندراسی خط کا تذکرہ ہے تا

البحث الثانى

ہوقل: یہ لفظ دوطرح پڑھا گیاہے۔ ا ،ہِرَقُل بکسر الھاء وفتح الواء وسکون القاف ۲ ،ہِرُقِل بکسر الھاء وسکون الواء وکسر القِاف مشہور پہلاہے آسان دوسراہے۔بیروم کے باوشاہ کانام ہے۔

مَادَّ: (بَشد يدالدال من باب الفاعلم مما درة) اسكا مجر درة بي يعنى مدت مقرركي يقال ماد الفريقان اذا اتفقا على اجل معين س قليل وكثرسب يربولاجا تا ب-

وهم بايلياء : سساى هرقل واصحابه ايلياء بيت المقدل كوكت بين ايل بمعنى الله اورياء بمعنى شهريعنى الله كاشهريعنى الله كالمربيد بين مي بمعنى الله كالمحرب

اقرب نسبا:ابوسفیان اور حضور علی کے دادایا نجویں پشت میں ایک ہوجاتے ہیں ابوسفیان کاسلسلہ نسب یوں ہے۔ ابوسفیان بن حرب بن امیہ بن عبد شمس بن عبد مناف ۔

اورحضور عليظ كاسلسلەنىب يوں ہے۔

﴿ محمد عبد الله بن عبد الله بن عبد المطلب بن هاشم بن عبد مناف ﴾ عبد مناف الله عبد الله ع

هذاالرجل: السعمرادآب على بيل

جواب:هذا كااستعال عقی تو محسوس مصرى طرف اشاره بى بے ليكن مجى مجاز امعقول كى طرف اشارے كے ليے بھى استعال موتا ہے تنزيلا للمعقول بمنزلة المحسوس چونكد آپ تائل كى نبوت كا چرچا عام تمااس ليے معبود فى الذبىن كى طرف اشاره ہے۔

﴿ آپ کوجب بید بات معلوم بوگئ تو بهت برا مسئل معلوم بوگیا که هذا کالفظ حاضر ناظر کے لیے نفس نہیں ہے۔ مسوال: ماتقول فی هذا الرجل ، منکر نکیروالی حدیث میں جووارد ہے، اس سے پھولوگوں نے حاضر ناظر بونے پراستدلال کیا ہے کیا بیا تکا استدلال درست ہے؟

جواب ا: حقد مين في (جبكه ديوبندى وبريلوى اختلاف نه تها) يفرمايا كم آنخضرت على كاجم مثالي بيش كياجا تاب يعني صورت وكها كرسوال كياجا تا ب-

جواب ٢:آپ تي کا مفات بيان کر كسوال كياجاتا ہے كدايے اليفض كے بارے ميں كيا خيال ہے؟ علاء كدونوں قول ہيں۔

جواب ۳: فظ هذا حاضرناظر ہونے میں نص بی نہیں ہے پس اس سے مدی فابت نہیں ہوسکتا۔ خصوصاً عقیدہ تو ایک فابت نہیں ہوسکتا۔ خصوصاً عقیدہ تو بالکل بی فابت نہیں ہوسکتا۔

، جو اب 6:قیل یکشف للمیت حتی یوی النبی مَلَطِیْ وهی بشری عظیمة للمؤمن ان صح ذلک اِ

لو لاالحیاء من ان یاثر و اعلی کذ با: اگر حیاء نه بوق که لوگ مجھے جمونا کہیں گے تو میں ضرور جموث

بولی معلوم ہوا کہ عرب ہر ہم کے جیوب کے باوجود جموث نہ بولتے تھے یہاں سے اندازہ ہوسکتا ہے کہ جموث کتنا ہوا گناہ

ہے بکلہ نہ پڑھنے کا بھی یہی منشاء تھا جب پڑھا تو علی الاعلان پڑھا نہیں پڑھا تو نہیں ، لیکن اظہار خلاف مافی
الضمیر نہیں کیا یہی وجہ ہے کہ خالص عربوں میں کوئی بھی منافی نہیں سلے گا۔

اشواف الناس: اشراف مرادشراف و ندى ، سطوت وغلبه بشرافت فله ب اورشرافت نسى مراديس بورندكيا الوبروعروغيرة جواس يقبل مسلمان موجك تصاشراف نديه؟ ٣

مسخطة للينه:ايك إلى الدوروغيره كالملي من دين كوتهو ثناايا تو موايكن دين اسلام بى كومعيوب بمحمد كوئى السي تهوي المحمد كوئى السي تهوي المحمد الموريخ اليام وسكن المراكب كورين اسلام عيوب من الورمعرى معيوب عن أيس المراكب المراكب المراكب الكالوتود ومران ذكال سكولزائى كوايسة ول كرماته تشييدى ه

ا بخاری جا ص۱۸۸ حاشیما سے کرمائی جا ص۵۵ سے بیٹی جا ص۸۵ سے عمرة القاری جا ص۸۵ هے اینا

مسوال: بعرى كوماكم في جب ابوسفيان كي جوابات كي وضاحت كي واس من قال كي وضاحت كيون بيس كي؟ جواب: بعرى كم فالكرنيس باركيس وضاحت كى باسمقام براكر چاس كاذكرنيس بيكن ا بخاری شریف م ۱۵۳ ج۲ کی روایت میں اس کی وضاحت موجود ہے اس مقام پر راوی نے اختصار کر دیا۔ لاتشو كوابه شيئًا:شيئًا كروتحة أهى واقع بيعنى كى بعي شم كاثرك مت كرو معلوم بواكر شرك كى مى تتمين بين ـ (۱) شرك في الذات (۲) شرك في الصفات (٣) شرك في العبادت (٣) شرك في الطاعت (٥) شرك في العادت. شرك في الذات: يه كالله كماته كي كوشريك كياجائ كددوالله بي ايك نيكي كو پيدا كر شوالا دوسرا بدی کو پیدا کر نیوالا ، یا ایک اکیلا کا منہیں کرسکتا بلکہ مریم اورعیسی بھی ساتھ مل کر کام کرتے ہیں۔ شرك في الصفات: صفات خاصه والله كعلاوه كي كي اليثابت كرنا شرك في الصفات بـ شوک فی العبادت: جوعبادت بجده ، ركوع وغیره الله نه این لیے خاص كی ہے اكلوغیر الله کے لیے عبادت كی نیت سے كرنا شرک فی العبادت ہے۔ایک ہے تعظیم کی نیت ہے کرنا ،غیراللہ کو بحدہ کرنا حرام ہے تفرنبیں اس لیے کہ تعظیما بحدہ کر نیوالا اور کروانیوالا کسی کی نیت بہیں ہوتی کہ میں عابدیا معبود ہوں الی صورت میں بیرما جدوم ہور ہیں عابد ومعبود نہیں مبود ومعبود میں بڑافرق ہے بجد وتعظیمی اگر کفر ہوتا تو بھی بھی کی کے لیے بھی جائز نہ ہوتا حالا نکہ حضرت بوسف علیہ السلام کوکروایا گیا۔حضرت آ دم علیہ السلام کوفرشتوں نے کیا۔ شوك في لطاعت: كسى غيرالله كساته ايبامعالمه كرناجييا مشرك كرتي بي مثلا غيرالله كؤر م محلل جاننا، كيجيه الله في حرام كيافلان شي كوياحلال كياليس بى فلان فخص في حرام كرديايا حلال كردياء يشرك في الطاعت بياك برسول المتعققة كا محرم وحلل بونا تووه الله بى كى طرف سے ب ووَمَا يَسْطِقُ عَنِ الْهَوى كَانَ هُوَالًا وَحَى يُؤخى كه له فقباء استنباط كر كاحكام الله بى کی طرف منسوب کرتے ہیں ای طرف منسوب نہیں کرتے (یین جر) پیشنے درہ یامال کا بیشن کا انتخاری و نتہا مدائل سے کوسلم کرے ہیں بنتاتے ہیں) شوك في العادت: دوسرايستام ركهنا جوموجم الى الشرك بين يركروة تح يي بـــ فائده: يتمام اقسام شرك جلى كى بين شرك خفى رياء بــــ مع دحية الكلبي رفي الله الله الله عفرت وحيك الكاكوكيون خاص كيا؟

جواب ا:بادشاہوں کے پاس جو خطوط بھیج جاتے تھے تو بادشاہ اسکے خط کی طرف زیادہ متوجہ ہوتے تھے جو خوبصورت ہوتا تھا،اور حضرت دحیہ اُنہا کی خوبصورت تھے کے

جواب ۲: حضرت جریل علیه السلام جب انسانی شکل میں عاضر ہوتے تو حضرت دحیہ گی شکل میں ہوتے تصفو دحیہ گئی شکل میں ہوتے تصفو دحیہ کی گئی کا میں ہوتے تصفو دحیہ کی گئی کا دحی لانے والے سے مناسبت ہوگئی س

ل پاره ۲۷ سورة النجم آيت ٢٦٣ ع كرماني ج اس ١٠ ٣ اينا

الى عظيم بُصولى: سو ال: براه راست برقل كوكيوں نه بھيجاعظيم بھرىٰ كے واسطے سے كيوں بھيجا؟ جو اب: برقل اپنے آپ كو بر البحقاقاتو جو خط براه راست آتا اسے قبول نه كرتا اس ليے ظيم بھرىٰ كے واسطے سے بھيجا۔ و ذلك لان كل احد لايمكن له التو صل الى الملوك إ

آداب خط: ارپہلے بسم الله الرحمن الرحيم لكھنا ٢ ـ پھركاتب اپنانام لكھے كەس كى طرف سے به سر پھر كمتوب اليه كانام لكھا اور اسكے بعد عبد الله ورسوله اپنانام لكھا اور اسكے بعد عبد الله اور پھر رسوله كھواياس سے معلوم ہواكدا بن حيثيت كوواضح كرنے كے ساتھ ساتھ تواضع كو برقر ارركھنا چا ہيے۔

الى هرقل عظيم الروم: كافركونط لكين كاصول يه بى السلام عليكم كى بجائے سلام على على بجائے سلام على من اتبع الهدى لكھ جائيں جينا كه على من اتبع الهدى لكھ جائيں جينا كه حضورة الله في الله الله على من الله على الله الله على الله الله على الله على

مسوال: حضور على في بنم الله بهل كلي اورنام بعد مين جبكه حضرت سليمان عليه السلام كى حكايت قرآن كريم مين ہے اسمين نام بہلے ہے اور بسم الله بعد مين؟

جواب ا: برنى كى شريعت جب الك عدة واب خط بحى الك موسكة بير-

جو اب ۲: حضرت سلیمان علیه السلام کواندیشه تھا کہ نہیں بلقیس خط کھولتے ہی گالی نہ دے اس لیے انہوں نے اپنا نام پہلے لکھا تا کہ خدانخواستدا گروہ گالی دے تو مجھے دے اللہ کے نام کونہ دے ہے

جواب عان السلام كخط الما الله المرابي المرابي المرابية من المكن المرابية والتوني مسلمان عليه السلام كخط كاعوان بين به بلكه خط تو فقط راب المرابية المرابية المرابية المرابية المرابية المرابية والتوني مسلكه المرابية المرابية والمرابية وا

اجوك مرتين: سسايك اجرعيسائيت كوقبول كرنے كا اور دوسرااسلام قبول كرنے كا و

اثم اليريسيين:اسكوچارطرح برها گيانه (۱) ريسين (۲) اريسين (۳) ريسين (۴) اريسين - يه اختلاف واحد كي تفاه و ني وجه سے - چارول صورتوں ميں اس كامعنى ہے كاشتكار و

ا الائم الدراری جا م ۵۳۷ م عدة القاری جا م ۱۹۹ م تقریر بخاری جا م ۱۰۹ م بیاض صدیقی ص ۲۰ ه م مینی جا م ۹۹ ،اسم اعظم (مؤلفه حضرت مولا با خورشید احمد صاحب تو نسوی مدرس جامعه خیر المدارس ملتان) که پاره ۱۰۹ سورة الممل آیت ۳۰ بی تقریر بخاری جام ۱۰۵ می بیاض صدیقی ص ۲۰ و متح الباری جام ۳۲ می عمدة القاری جا م ۸۲ ماشیه بخاری ص ۱۵ورمتن حدیث پر خور کرنے سے چارصور تیں بنتی میں (مرتب)

فائلہ : مستعنوانِ اجمالی اختیار کرنا جائز ہے جب کہ فتنے کاخوف ہومٹلا یوں کہنا کے اللہ کے مقابلہ میں تمام مخلوق کوایک مینگنی کے برابر بھی نسبت نہیں تو جائز ہے لیکن اگرنام لے لے کر تفصیل شروع کردی تو انبیاء کے معاملہ میں کافر ہوجائیگا مثلا یوں کیے کہ فلاں نبی کواللہ کے مقابلے میں ذرہ بھر نسبت نہیں (العیاذ باللہ)

سوال: بو ﴿ وَ لَا تَوْدُو الْدِرَةُ وَ ذُرَا الْحُوى ﴾ كفلاف بككافرتو كاشتكارر بين اور گناه بادشاه كويمي بو؟ جو اب: بهي اثم ارتكاب معصيت كي وجه به وتا به اور بهي معصيت كاسب بنخ كي وجه به چونكه بادشاه كا كفر پرمتمرر بنارعايا كفر پرمتمرد بخكاسب به كيونكه ضابط به (الناس على دين ملو كهم) اس لئم بادشاه كو سبيت كا گناه بوگا ﴿ لا تَوْدُ وَ اوْدَ وَ وَدُرَ الْحُوى ﴾ كفلاف تب بوتا جب رعايا كوگناه نه بوتا صرف بادشاه كو بوتا ع الى كلمة سو آء:سواء بمعن مستوية به ع

سوال: عيسائى عيسى عليه السلام كوابن الله كتبع بين ، يهودى عزير عليه السلام كوابن الله كتبع بين تو ﴿ كَلِمَةٍ سَوَ آءِ .بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ﴾ ي كيب يحيح بوا؟

جواب: مساوی حقیقی ندهب من الله کے اعتبارے ہے نہ کہ یہود ونصاری کے محرف دین کے لحاظ سے قرآن، انجل، تورات تینوں تو حید ہی کی تعلیم دیتے ہیں۔

بانا مسلمون: سسوال: اس سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ سلمان صرف ہم ہی ہیں؟ جبکة رآن کريم کی بعض آيات سے معلوم ہوتا ہے کہ سلمان تھے جیسے حضرت یعقوب علیه السلام کے بیول نے کہا ﴿ وَنَحُنُ لَهُ مُسُلِمُونَ ﴾ و

جواب ا : ایک ہے لغوی طور پر سلمان ہونا اس لحاظ سے ہردین حق والا مسلمان ہے کیونکہ اسلام کامعنی فرمانبرداری کرنا ہے۔ توعیسانی اپنے زمانے میں مسلمان سے، یہودی اپنے وقت میں مسلمان سے کیکن پر لفظ مسلم بطور لقب امت مجمد یعلی صاحبا الف تحیة وسلام کے ساتھ خاص ہے بعض مرتبہ ایک وصف بہت ساروں میں ہوتی ہے کیکن لقب کسی ایک کے ساتھ خاص ہوتا ہے جیسے حافظ الحدیث بہت سارے گزرے ہیں مثلاً ابن قیم ابن تیمیے ابن وقیق العید کیکن حافظ کالقب صرف حافظ ابن محرف حضرت مولاناز کریا صاحب کو ملا۔

جواب ۲: مسلمان وہ ہوتا ہے جو کسی نبی کا انکار نہ کرے۔تمام انبیاء کو مانے اور بیتب ہی ہوسکتا ہے جب سرکار دو عالم ﷺ کو مانے ۔جوآپ ﷺ کو مانے والانبیں وہ مسلمان نبیں۔اولا دیعقوب وغیرہ پہلے گذر گئے ان کورسول اللہ ﷺ پرایمان لانے کاموقع ہی نہ ملالیں وہ اینے زمانے کے لحاظ سے مسلمان بیں توجس نے حضور ﷺ کو مان لیااس

ا پار ۲۶ سورة فاطر آیت ۱۸ س من الباری جاس سر الرمانی جامی ۱۲ سم پاره سورة آل عران آیت ۱۳ ه پاره اسورة البقر و آیت ۱۳۳ فی درس بخاری ص ۱۰۳

نے پہلے تمام انبیاء کو مان لیالہذاوہ مسلمان ہو گیا۔

ابن ابی کبشة:ابن ابی کبشه برادآپ آن بین مینام دینے کی چندوجوه ہیں۔

الوجه الاول: الى كبث بى خزاعه سے تھا، يدوه پېلافخص ہے جس نے بت برتی چھوڑ كرتو حيدا ختيارى اس ليے جو بھى موحد ہواسے ابن الى كبشه كهدد سے بيں۔

الوجه الثاني: يآب كَناناكى كنيت هي الوكبية تواسكي كي طرف نبيت كرك ابن ابي كبيت كهار

الوجه الثالث: بعض نے کہا کہ طلمہ سعدیہ خوصور تھے کی رضاعی والدہ ہیں ان کے خاوند کی کنیت ابو کبشہ تھی یہ حضور تھے کے دضاعی والد ہیں الہذاان کی طرف نبت ہے

الوجه الرابع: بعض نے کہا کہ ابو کبشہ طیمہ سعدیہ کے دادا کی کنیت تھی۔وقیل ابو کبشہ عم والد . حلیمة مرضعته مرابط ابو کبشہ عم والد . حلیمة مرضعته مرابط ابو کبشہ عم

لیخافہ ملک بنی الاصفر: رومیوں کالقب یا کنیت ہے اس وجہ سے کہ ان کارنگ زردتھایا اس وجہ سے کہ ان کے اجداد میں ایک عورت تھی جس کوسونا زیادہ پہنایا گیا تھا۔ بعض نے کہا کدرومی منسوب ہیں اصفر بن روم بن عیصو بن آئی بن ابراہیم علیہ السلام کی طرف سے

کان ابن الناطور: راج یمی ہے کہ بیز ہری تک سندسابق کے ساتھ ہے لیکن واسط ابوسفیان کانہیں بلکہ اسکا قائل زہری ہے ہے

ا الوجود الثلاث من في انتخارى بن المسهم مع كرمانى من المسهم من كرمانى من المسهم و بنارى ص ۵ ماشية الدين من الم ذوية ابو اهيم وليس بصحيح وقد فصلته في عقيدة الاسلام "مع سرت مسلق مولانا دريس كانتطوى ج ص ١١٨٢١١٣ هي في البارى ص ٢٣ فيض البارى س ٢٨ فيض البارى س ٢٨ فيض البارى س ٢٨ فيض البارى س ٢٨ فيض البارى س ٢٠٠٠ فيض البارى

اشکال: ہوتا ہے کرز ہری کی وفات تو ۱۲۵ھ یاس سے ایک دوسال قبل ہے تو وہ کیسے ابن ناطور سے ہیان کرتے ہیں؟ جواب: بیرے کدابونعیم نے دلائل النبوۃ میں لکھا ہے کہ زاہری کہتے ہیں کہ 'میں ابن نا طور سے دمشق میں عبدالملك كے زمانے ميں ملا مول ' أيان تا طورطويل العرفقا عمرضي الله تعالى عند كے دور ميں اسكام الايا تقات يد ابن ناطور کا قصہ جوآ گے بیان ہور ہاہے ابوسفیان کے واقعہ سے پہلے کا ہے اگر چیہ یہاں روایت فیس ابوسفیان کا قصہ پہلے مذکور ہے اور ابن ناطور کا بعد میں ہے۔ راجج یہی ہے گیکس کا احمال بھی ہے۔

صاحب ایلیاء:ایلیاءکا گورزاور برقل کادوست،

مسقف: پوپ، بڑا یا دری مرفوع ہوتو خبر ہے مبتداء محذوف ''ھو'' کی،اورا گرمنصوب ہوتو کان کی خبر ہے كان ابن الناطور مقفاً درميان ميس صاحب ايلياء وبرقل بيابن ناطور كي صفت بهوگي اورابن ناطور كان كااسم بين بعض نے کہا یہ سُقِف ماضی مجہول کا صیغہ ہے ہے

ينظر في النجوم: مسئله تاثير نجوم

تا ٹیرِ نجوم دومتم پر ہے۔ ا۔ایک جوطبعی طور پر اللہ تعالی نے نجوم میں رکھی ہے ان میں نسبت کرنا جائز ہے ۲ دوسری قشم وه ہے جولز وی اور طبعی نہیں اسمیس نسبت بھی جائز نہیں۔

یہا قسم کی مثال جیسے حرارت ، برودت ،صیف وشتاءاور دن رات کا جھوٹا بڑا ہونا بیتا ثیرلزومی اور قطعی ہے اس کا انکارنہیں کیا جاسکتا،ان تا ثیرات کی نبست نجوم کی طرف جائز ہے اور حدیث ہے بھی ٹابت ہے حضور علی کا ارشاد ہے ((اذاطلع النجم ارتفعت العاهة او كما قال) ير رتجمه)جب ثرياستاره پر صجاتا يه تو كيلول سيآ فت الله جاتی ہے ، یہ ایسے ہی ہے جیسے کہتے میں فلال حکیم کی دوا سے صحت مل گئی پس یہ جائز ہے۔ اور جو تا ثیرات درجہ لزوم وقطعيت كنهيس بينجي ان مين نسبت جائز نهيس مثلاخوش بخت يامنحوس مونا ،خوشحالي ،بدحالي ، تندرتي ، بياري ، قحط ، بارش كامونا يانه وناايسے امور كى نسبت جائز نہيں گونی الجمله بياسباب بنتے ہيں ليكن چونكه درجه لزوم ميں نہيں اس ليے نسبت جائز نہيں حديث مين اس عيم انعت وارد عفرمايا ((و امامن قال مطرنا بنوء كذا فكفربي و آمن بالكواكب)) ع اتبی هو قل بو جل: بیرجل حفرت عدی بن حاتم تصان کومکک غسان کے یاس بھیجا تھا ملک غسان نے ہول کے یاس بھیج دیا م

أمنحتتن هو: يسنت ابراجيي ب چونك عرب ملت ابراجيي يرتضاس ليے بيسنت ان ميں باقي تھي۔

ا مرة القارى جما ص ٩٣ م فتح النارى ص ٢٣ س تقرير بخارى جما ص ١٠٠ س يينى جما ص٩٣ ه تقرير بخارى جما ص ١٠٠ لے کے فیض الباری جا صسم کے کذا جم من فخ الباری جا ص

فائدہ: ابراہیم علیہ السلام کے بارے میں وارد ہے اول من احتین بالقدوم افدوم ہمعنی بیشہ یا جگہ کا نام ہے ڈاکٹر غلام احمہ جیلانی برق اس حدیث کو لے کر براغوغہ کرتا ہے وہ اختین کا ترجمہ کرتا ہے ختنہ کروایا اور پھر کہتا ہے راوی نے بینہ بتایا کہ پورے ای سال تک اس مبارک کام میں کون ہی رکاوٹ حاکل رہی جو وفات سے بین پہلے دور ہوئی اور آپ بحالت ضعف و پیروی جام کے سامنے جا بیٹھے۔ ختنہ کامقصد صفائی ، صحت اور جنسی لذتوں میں اضافہ ہے اسی برس کے بعد بیہ مقاصد حاصل نہیں ہو سکتے تو پھر ختنہ سے کیا فائدہ حالانکہ (ابراہیم نے خودختنہ کیا تھا کسی سے نہیں کروایا ی صاحب لہ بو و مید : ساس کانام ضغاطر تھا سے جب برقل کا خط ان کے نام پہنچا تو یہ اسکو پڑھ کرمسلمان ہوگئے کین ابکی قوم نے ان کو و بی قبل کردیا ہی

دسكرة: ومحل جس كاردگردمكانات (خدام وغيره كے ليے) مول ٥

اخوشان هوقل:اس سے باب کے تم کے طرف بھی اشارہ ہے لا ۔نیز جب اس نہلک کے لیے اس وقت انکار کردیا تو خاتمہ بھی ایمان پڑئیں ہوا کے امام بخاری کا یہی فیصلہ ہے۔

البحث الثالث:مناسبت الحديث بترجمة الباب

- (۱)اس حدیث میں موحی الیہ کے حالات بیان ہیں اور ترجمہ میں کیفیت وحی کا ذکر ہے تو موحی الیہ کے حالات بطور تکملہ ذکر فرمائے ک
 - (٢) برقل كيسوالات كي جوابات سابتداءوجي مين حضور الله كيان موئ و
- (٣) حضرت شخ الهند كنز ديك غرض الباب عظمت وحى كابيان ہے حديث برقل ميں حضور عليك كاوصاف عاليه كابيان ہے حديث برقل ميں حضور عليك كاوصاف عاليه كابيان ہے جس سے آپ عظمت معلوم ہوتی ہے اور موحی اليه كی عظمت سے وحی كی عظمت ظاہر ہے ول
 - (م)وسائطِ وحى اوروسائل وحى كابيان ہے۔

المسائل المستنبطة:

(۱)اسلام میں دعوت اہم رکن ہے حضور ﷺ نے تمام بادشاہوں کی طرف دعوت اسلام کے خطوط لکھے، قاصد بھیج ای طرح اہلِ اسلام کو بھی دعوت دیتے رہنا چاہیئے ال

(٢) سنمام انبياء شريف النب تھ، شرافت نسبى كوتر جي ہے ال

ا مشکوچس ۱۰ ۵۰ ۲ بفظ دو ساخ کول تا نداخم کر گختابای عاص ۳ سی تقریر نفای عاص ۱۹ هے کر بلی پی ۱۹۰۰ می کردان عاص س ۱۱ کے بغلزی کہ بین اسطور کے بینی عاص کے تقریر نفادی کا او بینی ص ۷ سے تقریر نفادی ع کسا اللہ بینی عاص ۱۳ بین

- (m)....کذب فتبج لعینہ ہے جامل بھی اس سے نفرت کرتا ہے۔
- (4)صرف معرفت سے ایمان مکمل نہیں ہوتا جب تک تصدیق نہ پائی جائے۔قال تعالی ﴿ يَعُرِفُونَه ، كَمَا يَعُرفُونَه ، كَمَا يَعُرفُونَه ، كَمَا
 - (۵)ابندا وخط میں بسم الله لکھنامستحب ہے کا
 - (٢)خط ميں اپنانام پہلے لکھے اور مکتوب اليه کا بعد ميں سم
 - (۷) المال حرب، كفاركے ياس ضرورت كے تحت قرآن كے پچھالفاظ يا آيات لے جانا جائز ہے سم

الشکال: کافرتوجنی ہوتا ہے پھراہل حرب تو ضرورتو ہین کریں گے۔جبکہ جمہورعلاء کھتے ہیں کہ جہادیں اگرتو ہین کا اندیشہ ہوتو قرآن ساتھ نہ لایا جائے ، شوکت وقوت کی وجہ سے اطمینان ہوتو کوئی حرج نہیں۔ اور حضور تلاق قرآن کی آیات لکھ کر بھیجا۔

کر بھیج رہے ہیں ۔ تو دوسکے علاء نے اسکے خلاف کھے ہیں ایک جنبی کا قرآن کو ہاتھ لگانا، دومرااہل حرب کے پاس بھیجا۔

جو اب ا: سیکلمات حضور بھے نے اپی طرف سے لکھے تھے، آیت کی صورت میں ابھی تک نازل نہیں ہوئے تھے انہیں آیات قرآن یہ جو حضور بھاتھ نے لکھا بعد میں جا سی نازل انہیں آیات قرآن یہ جو اب مرجوح ہے اس لیے کہ آگے کتاب الجہاد میں امام بخاری عنوان قائم کریں گے کہ ارض عدو میں قرآن لے جانا جائز ہے یہ جو اب مرجوح ہے اس لیے کہ آگے کتاب الجہاد میں امام بخاری عنوان قائم کریں گے کہ ارض عدو میں قرآن لے جانا جائز ہے یہ بیس ؟ تو وہاں دلیل جواز کے طور پرائی روایت کوذکر فرما کیں گے ہے

جواب ۲: نازل شده ما نے کی صورت میں متعدد جواب ہیں ایک بیکہ اھون البلیتیں پرمحمول ہے، یہاں بلیتین ہیں ایک بلیة ترک دعوت اسلام، دوسرا بلیة ترک احترام قرآن، بیچھوٹا بلیه ہے للمذابری مصیبت سے نیچنے کے لیے اس کو اختیار کرلیا گیا۔

جواب سانیت کے بدلنے سے احکام بدل جاتے ہیں قرآن کو قرآن کی نیت سے پڑھا جائے تو اوراحکام ہیں،
دعا اور جھاڑ پھونک کی نیت سے پڑھا جائے تو اوراحکام ہیں، یہاں قرآن دعوتی خط کی حیثیت سے بھیجا جارہا ہے۔
جو اب ہم:عظمت قرآن کے لحاظ سے جو مسئلہ لکھا گیا ہے یہ جملہ قرآن یا اکثر اجزاءِ قرآن کے بارے میں
ہےا یک آدھ آیت ان احکام سے مشنی ہے جیے جنبی کے بارے میں آپ نے پڑھاکہ تھوڑ اتھوڑ اکر کے پڑھ سکتا ہے۔



وتحقيق وتشريح

کتاب مصدر بمعنی مکتوب ہے اور کتب سے لیا گیاہے ، الکتب بمعنی الجمع بقال کتب یکتب کتابة و کتابا ومادة کتب دالة علی الجمع و الضم و منها الکتيبة بمعنی شکر اس ليے كه شكر ميں بہت سے افراد (شاہسوار) جمع موتے ہیں۔ (كتاب) كوكتاب اس لئے كہتے ہیں كه الميس بہت سے مضامین جمع ہوتے ہیں۔

تركيب: كما بالايمان المجلم عن تمن كيس بين (۱) كتاب الايمان يه جله خرب مبتداء محذوف كى اى هذا كتاب الايمان (۲) و يجوز العكس (۳) يمنصوب بي اى هاك كتاب الايمان او خذه له ايها الطالب اقرأكتاب الايمان.

ر بط: كتاب الا يمان سے قبل باب بدؤ الوحى تھا اسے مقدے كے طور پر بيان كيا اب مقدمہ كے بعد مقصودكو شروع فرماتے ہيں اور اصل مقصود ميں سب سے مقدم ايمان ہے لانه ملاك الامر كله اذالباقى مبنى عليه مشروط به وبه النجاة في الدارين. ع

الایمان: لغوی معنی: ایمان به امن سے مشتق ہے جا کماور دفی الحدیث ((المومن من امنه الناس علی دمائهم) جا بمان مصدر کا استعال دوطرح ہے اللازی ۲ متعدی لازی استعال ہوتو اس وقت ہمزہ صرورة کے لیے ہے صدور ته ذا امن و آمنت ای صوت ذا امن و سکون. ه

استعال ہوتو وثوق کامعنی لازم ہے یا

اصطلاحی معنی: سسالتصدیق بجمیع ماجاء به النبی عَلَیْتُ بالضرورة تمام وه اعمال وعقا کد جو حضور عَلِیْتُ بالضرورة تابت میں انگی تقدیق کرنا ع

تصدیق: تصدیق اذعانِ نسبت کو کہتے ہیں ان کان اذعانا للنسبة فتصدیق بھر اختلاف ہواعلامہ ہروگ فرماتے ہیں کہ تصدیق ، لواحقاتِ ادراک سے ہاور جمہور کہتے ہیں کہ ادراک ہے، راج اول ندہب ہے سے در جاتِ تصدیق: تصدیق کین درجے ہیں۔(۱) یقین (۲) ظن (۳) وہم۔

تصدیق پائے جانے کے لیے نسبت کا شوت ہوتا جا ہے جونسا درجہ بھی ہو۔

تصدیق کی اقسام: پھرتصدیق دوشم پر ہے الغوی ۲۔اصطلاحی۔ان دونوں کے درمیان تین فرق ہیں۔
(۱)تصدیق لغوی کے لیے اختیار شرطنہیں بغیرا ختیار کے بھی تصدیق صادق آتی ہے می چونکہ تصدیق اصطلاحی کے لیے ادادہ داختیار شرط ہے، اس لیے کفارِ مکہ سلمان شار نہ ہوئے کیونکہ انکو اِذعان وتصدیق تو حاصل تھی لیکن بلا ارادہ داختیار۔ یہی حال یہود کا تھا کہ انکواذ عان وتصدیق حال یہود کا تھا کہ انکواذ عان وتصدیق حاصل تھی لیکن بلا ارادہ داختیار۔

(۲) ۔۔۔۔ تقدیق بغوی کے لیے متعلق بالنبی ہونا ضروری نہیں ہے جبکہ تقدیق اصطلاحی کے لیے متعلق بالنبی ہونا شرط ہے۔ (۳) ۔۔۔۔ تقیدیق بغوی کے لیے یقینی ہونا ضروری نہیں غیریقینی بھی تقیدیق ہوسکتی ہے، جبکہ تقیدیق اصطلاحی کے لیے پیچی ضروری ہے، منطق میں آپ پڑھاآئے کی شک، وہم سب تقیدیق ہیں۔

مسوال:، آپ نے کہا کہ ایمان کے لیے تصدیق اختیاری ضروری ہے تو بیتحریف نائم ، مجنون ، مخشی علیہ پر ٹوٹ گئی کیونکہ اختیار نہیں یایا جارہا؟

جواب: یہاں دو چیزیں ہیں ا۔ تقدیق کا اختیاری ہونا ۲۔ تقدیق اختیاری کامتحضر ہونا۔ نائم کا اختیار باقی ہے۔ اور مقتلی اختیاری پائی جاتی اختیار باقی ہے۔ کیونکہ وہ تھی اختیاری پائی جاتی ہے، البتہ استحضار تقیدیت ہیں ہے اور وہ شرط بھی نہیں یہ ایسے ہے جیسے بسااوقات امام قرائت کرتا ہے کیان ہمیں استحضار نہیں ہوتا ہو ہے بھی نہیں ہوتا ہے ایمان کے لیے شرط نہیں ہے۔ نہیں ہوتا ہے ایمان کے لیے شرط نہیں ہے۔

سوال:ایمان تصدیق کانام ہے، یہ تعریف اس شخص پرٹوٹ گئی جس کوتصدیق اختیاری حاصل ہے لیکن اگر اسے کہا جائے کہ کلمہ پڑھواوروہ انکار کردی تو پی شخص کا فر ہے حالا نکہ تعریف ایمان اس پرصادق ہے پس تعریف دخول غیر سے مانع نہیں؟

لِ عمدة القارى خ الص ١٠١ مع فتح الملهم ج المص ١٥٥، وفتح البارى ج الص ٣٩، روح المعانى ج مص ١٥١ سع بياض صديقى ص٦٢

جواب تقدیق کے معتر ہونے کے لیے اقراد عند المطالبه شرط ہے، اذا فات الشوط فات المشروط اللہ مسوال ثالث: تم کتے ہوا کیان تقدیق اختیاری کا نام ہے، ایک شخص کہتا ہے کہ میں مانتا ہوں اقرار بھی کرتا ہوں اسکے باوجود (معاذ اللہ) قرآن مجید کو گندگی میں پھینکتا ہے تو وہ بالا جماع کا فر ہے، جبکہ تعریف اس پر بھی صادق ہے ہی تعریف ایک بیاری مانع نہیں؟

جواب: تقدیق تب معتر ہوگی جب کوئی علامت مکذبہ نہ ہواور قرآن کو گندگی میں پھینکنا علامت مکذبہ ہے لہذااسکا ایمان معترنہیں ع

نوك:ايان كى مناسبت ساسلام كى تحقيق بيان كى جاتى بــ

لفظ اسلام كا ماده اشتقاق: اسلام، سلم عشتن باكامعنى كرنا بي اسلام سلامى عه ب عديث من المسلم من سلم المسلون من لسانه ويده)) ع

تعريفِ اسلام: هو تصديق بالجنان واقرار باللِّسان وعمل بالاركان.

اسلام کے لغوی اور اصطلاحی معنی میں مناسبت: اسلام کے لغوی واصطلاحی معنی میں مناسبت یہ کہ اسلام کا لغوی معنی ہے انقیاد العبد الله تعالیٰ عیااسلام سلامی سے چونکہ بندہ اسلام کا لغوی معنی ہے انقیاد العبد الله تعالیٰ عیااسلام سلامی ہے ہیں۔ بندہ اسلام کی وجہ سے ونیا میں جزیر وقال سے اور آخرت میں عذاب سے سلامی میں متعدد طرق سے نبتیں بیان کی جاتی ہیں۔ ایمان اور اسلام کے در میان نسبت: ایمان اور اسلام میں متعدد طرق سے نبتیں بیان کی جاتی ہیں۔ النسبة الاولی: سست تعریف کے بدلے سے نبیت بدل جاتی ہے اور جوتعریفیں مسطور ہوئیں اسکے لحاظ سے ان دونوں میں موسور موسمطلق کی نسبت ہے۔ ایمان اعم مطلق ہے اور اسلام اخص مطلق ہے وجو ظاہر ہے فحد جوز الغذالی ہے بھی النسب الثلاث باعتبارات مختلفة غیر العموم من وجه)

النسبة الشانية: ايمان انقياد باطنی (تقديق بالجنان) ہے اور اسلام انقياد ظاہری (عمل بالاركان) ہے اس تعريف كے مطابق ان ميں نبست عموم وخصوص من وجد كی ہے جہال پرعموم وخصوص من وجد كی نبست موو ہال تين مادے ہوتے ہيں، دوافتر اتى ايك اجتماعى، اگركسى ميں انقياد ظاہرى بھى ہے اور باطنى بھى توبيہ مادہ اجتماعى ہے كسى ميں انقياد باطنى تو ہے مگر انقياد ظاہرى نہيں توبيہ مادہ افتر اتى ہے ليكن ايمان ہے اسلام نہيں ہے اور اگر كسى ميں صرف انقياد ظاہرى ہوتو يہ بھى مادہ افتر اتى ہے ايمان نہيں ہے حقق دوائى اسى كے قائل ہيں۔

النسبة الثالثه:علامه مرتضى زبيدي شرح احياء العلوم مي فرمات بي كدايمان اور اسلام مي تساوى

ل ورز بغاری حسرت شانی سره الله علی فیش الباری جا سره ۱۳۰۰ می مقلود شریف صدا ، بغاری شریف جا سرا ۱۳۰۰ میلی مینی جا مراه میش الباری شر ۱۸۸

اورتلازم کی نسبت ہے۔مصداق میں اتحاد ہے مفہوم میں تغایر ہے۔ کہ ایمان تصدیق قلبی بشرط انقیادِ ظاہری اور اسلام انقیادِ ظاہری بشرط تصدیقِ قلبی کو کہتے ہیں فرق ہے ہے کہ ایمان میں تصدیقِ باطنی کی طرف اوّلاً نظر ہوتی ہے اور انقیادِ ظاہری کی طرف ٹانیا اور اسلام میں اسکے برعکس انقیاد ظاہری اولاً ملحوظ ہوتا ہے تصدیقِ باطنی ٹانیا لے

یہ تول زیادہ رائے معلوم ہوتا ہے کیونکہ اسکے مطابق تمام روایات منطبق ہوجاتی ہیں کہ جن روایات سے اسایم اور ایمان میں فرق معلوم ہوتا ہے تو وہ نظر اولی کے اعتبار سے ہے باطن کی طرف نظر اولی کرتے ہوئے ایمان کہہ دیا اور جس جگہ اتحاد معلوم ہوتا ہے وہ مصداتی کے اعتبار سے ہے۔ دیا اور ظاہر کی طرف نظر کرتے ہوئے اسلام کہد یا اور جس جگہ اتحاد معلوم ہوتا ہے وہ مصداتی کے اعتبار سے ہوتو اسکی ضد الا یممان و الاسلام: … ایمان، امن سے ہے اسکی ضد خوف ہے اور اگر امانت سے ہوتو اسکی ضد خیانت ہے۔ اسلام کا لغوی معنی معنی مسلم بمعنی سلم بمعنی سلم بمعنی سلم بمعنی سلم بمعنی سلم بمعنی ہوتو ناشکری اسکی ضد بدامنی ہے۔ ایمان اصطلاحی کی ضد کفر ہے، کفر کا لغوی معنی ''چھپاٹا'' ہے، اور اگر کفر ان سے ہوتو ناشکری ، چونکہ کا فرحق کو چھپا تا ہے اس لیے اسے کا فرکتے ہیں یا نعتوں کی ناشکری کرتا ہے اس لیے کا فرکتے ہیں۔ چونکہ کفر کا معنی چھپا تا ہے تال اللہ تعالی ﴿ حَمَالُو فِی کُورُ مِینَ میں چھپا تا ہے تال اللہ تعالی ﴿ حَمَالُو عَمَالُو کُھی کا فرکتے ہیں کو تعدوں کی ناشکری کرتا ہے اس لیے کا ان اللہ تعالی ﴿ حَمَالُو کُھی کا فرکتے ہیں کو تعدوں کی ناشکری کرتا ہے اس کے کا فرکتے ہیں کے کہ ان کو تھی کا فرکتے ہیں کے کو بین میں چھپا تا ہے تال اللہ تعالی ﴿ حَمَالُو کُھی کا فرکتے ہیں کو تعدوں کی ناشکری کرتا ہے اس کے کہ ان کو گھی کا فرکتے ہیں کو تعدوں کو بیات کو بھی کا فرکتے ہیں کے کہ کہ کہ تھی کے کہ نام کرتے ہیں کے کہ کہ کہ تا کہ کہ جب الزراع نباتہ اس کیے رات کو بھی کا فرکتے ہیں کے وکی کہ دات ہیں جہ بیں کے کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ ہو ہے۔ اس کے کہ کہ کو جھیا دیں ہے۔

| صابر | كلاالحالين | | فی | انی | ♦ | تطل | اولا | طل | الليل | ياايها |
|------|------------|----|----|-----|---|------|------|-----|-------|--------|
| كافر | الليل | ان | صح | ان | | جاهد | ۸ | اجز | فیک | لى |

پھرتوسعاً ہرسیاہ چیز کوبھی کا فرکہد دیتے ہیں۔ پھراگر کسی سفید چہرے پر کالاتل ہوتو اس (تل) کوبھی کا فرکہہ دیتے ہیں اس لیے کہ وہ چہرے کی سفیدی کو چھیالیتا ہے۔

کفر: سسانکار ماجاء به النبی عَلَیْتُهٔ یہاں جمیع کالفظ نہیں بولا کیونکہ ایک بھی قطعی بات کا انکارکرنا کفر ہے جبکہ ایمان کے لیے جمیع کی تصدیق ضروری ہے۔

اقسام کفر: (۱) مخفرِ انکار: اسدل، زبان دونوں سے انکار ہو (دل سے اعتقادنہ ہو) جیسے مشرکین مکہ کا کفر۔ (۲) کفرِ عناد: سددل سے یقین بھی ہے زبان سے اعتراف اور اظہار بھی ہے لیکن قبول نہیں کرتا (مانتانہیں ۔ اور دین کو اختیار نہیں کرتا) جیسے خواجہ ابوطالب کا کفر۔

(٣) كفرِ جحود:دل يوق مونى كايقين بي كيكن زبان ساقرار نبيل كرتا جيسے يهوداور الليس كاكفر

لِ بياض صداقي ص ١٥ تل ياره ١٧ سورة الحديد آيت ٢٠

قال تعالى ﴿ فَلَمَّا جَآءَ هُمُ مَاعَرَفُوا كَفَوُوا بِهِ ﴾ ل اى اليهود.

(٣) كفر نفاق : ازبان الماقرار مواوردل سا تكارمور

فائده : ايمان اوراسلام مع متعلق تين اجزاء بين _(١) تصديق (٢) اقرار (٣) اعمال _

تينوں كى حيثيت: ايمان اور اسلام ميں افاد طلكس حيثيت سے ہاسے تين بحثوں ميں بيان كياجا تاہے۔

البحث الاول

التصديق

- (۱)فقہاء کرائمؒ فرماتے ہیں کہ تصدیق وہی معتبر ہے جومقرون بالاقرار ہو جوتصدیق مقرون بالاقرار نہ ہووہ معتبر نہیں اسے ایمان نہیں قرار دیا جاسکتا کتصدیق کفار مکھ ج
- (۲)علامہ صدرالشریعی قرماتے ہیں کہ تصدیق وہ معتبر ہے جواختیاری ہو، کفار کوغیراختیاری تصدیق حاصل تھی اسے ایمان نہ کہا جائیگا۔
 - (٣)....علامه سعد الدين تفتاز الى فرماتے ہيں تصديق و معتبر ہے جو مقرون بعلامات الكفونه و س

نفس تقدیق سب کے نزدیک ضروری ہے جنہوں نے احکام دنیا کا اعتبار کیا انہوں نے مقرون بالاقرار ہونے کی شرط لگادی ،اور جنہوں نے اس بات کا خیال کیا کہ نفس تقدیق تو کفارکو بھی حاصل ہے انھوں نے اختیاری ہونے کی شرط لگادی اور جنہوں نے اس بات کا خیال کیا کہ ایک آ دمی تقدیق بھی کرتا ہے لیکن قرآن کریم کو گندگی میں بھی چھینگا ہے تو انہوں نے شرط لگادی کہ مقرون بعلامات الکفونہ ہو۔

البجث الثاني

اقرار:

- (۱)مر جید کہتے ہیں کہ اقرار نہ شرطِ ایمان ہے نہ شطرِ ایمان ،صرف تقدیق قبی کا نام ایمان ہے ع
 - (٢)کراميد کتے بين کدايمان فقط افراري کانام ب_
- (٣)جمهورابل سنت والجماعت اورمعتز له كنز ديك اقرار شطر ب، علامه ابن بهام جمي اقرار كوركن زائد كادرجه دية بين ٥
 - (٣)اَ حناف كنو الله سوادهم فرماتے بين كراقرار شرط بـ

جوحفرات شطر قراردیتے ہیں وہ بھی شطرز ائد ہونے کے قائل ہیں یعنی ایساشطرجسکے مفقود ہونے سے کل مفقود نہو۔

ا پدوا سوة الله و آرسته ۱ ع متر بنان س ، فيض لبان منا ص الع بياض مداتي س٧٠ ، البياطوم ع مع مع مع مع مع من المبل منا ص٥٠٠ المبياطوم ع من المعلم المبل منا ص٥٠٠ المبياطوم ع

البحث الثالث

اعمال:اعمال کے بارے میں اختلاف ہے ایمان کا جزء ہیں یانہیں؟عندالبعض جزء ہیں ،عندالبعض نہیں۔اس اختلاف پر دومسّلےمتفرع ہوتے ہیں۔

(۱)ایمان بسیط ہے یا مرکب؟ جو جزئیت اعمال کے قائل ہیں وہ مرکب کہتے ہیں اور جو جزئیت اعمال کے قائل نہیں ہیں وہ بساطتِ ایمان کے قائل ہیں۔

(۲) سلم الایمان یزید وینقص ام لا بجو بساطتِ ایمان کقائل بین وه کیتے بین لایزید و لاینقص اور جوز کیب ایمان کے ایمان کے ایمان کے ایمان کے تاکل بین وہ کہتے بین یزید وینقص ایمان کے لیما ایمان کی جزئیت وعدم جزئیت کے سلسلے میں اختلاف سے بی فرقوں کا اجمالی تعارف ضروری ہے۔

الاختلاف الاول: حضور عظی نازندگی میں پیشین گوئی فرمائی تھی کہتم یہود کے نقش قدم پرچلو کے بیسے ان میں سب ناری ہیں صرف ایک جنتی ہے اور وہ ((ماانا کے بیسے ان میں فرقے ہوئے ان میں سب ناری ہیں صرف ایک جنتی ہے اور وہ ((ماانا علیه و اصحابی)) ہے۔ چنانچے حضور علی کے بعد صحابہ کے بعد صحابہ کے دور اول میں کوئی فرقہ نہ تھا ہر صحابی اپنے اجتہاد کے مطابق جو بتا تالوگ اس پر عمل کرتے صحابہ کے اخیر زمانہ میں ، حضرت علی کے زمانہ میں مشاجرات شروع ہوئے اس وقت اہل اسلام کے تین گروہ ہوگئے۔

الاول:ايك فرقه كهتاتها كدماراقصور حفرت على كرم الله وجهدكا بهدير درييت خووج عن طاعة الامام كي وجدت خارجي كبلائ _

الثانى: دوسرافرقه وه تها جنهول نے صحابہؓ کے فیصلول کو چھوڑ ااور اہل بیتؓ اور حفرت علیؓ کی محبت کا دم جرنے لگے بیرافضی کہلائلانهم رفضو اجماعة الصحابة ای ترکوا.

الثالث: تيسرى وه جماعت هى جو حدِ اعتدال پر قائم ربى ،الصحابة محلهم عدول كى قائل، كسى صحابى كو مور دِالزام ندُهْبرايا بيدالل سنت والجماعت كهلائي -

اهل سنت و الجماعت كى وجه تسميه: او پر صديث گررى ب جس كة خريس حضور عليه الحضاف الحق المحضور عليه التحق الم عليه عمراد سنت ب واصحابى سمراد الما عليه سعمراد سنت م واصحابى ارشاد فرمائى ب ماانا عليه سعمراد سنت والجماعة اى جماعت سحاب بعنى اجماع صحابة والجماعة المحماعة المحمود السنة وجماعة الصحابة .

ا ترمذي حمل الميان باب وجا في افتراق حد والامة جي اص ٩٣٠٠ ، مفكوة شريف ج الص ٢٠٠٠

الاختلاف الثاني: جب كوئى نيافرقد بنتائة وه اين نظريات عليحده قائم كرتائي بعران كے ليے ولائل مبیا کرتا ہے بینن فرقے توابتداء اسلام میں تھے پھر جبر وقدر کے لحاظ سے اسلام میں دوفرقے اور پیدا ہوئے۔ انسان مختار مطلق هر یا مجبور محض؟: جنبوں نے عقل کوغالب کیا اور اختیار مانا انہوں نے متنا مطلق کہددیا بیقدریہ کہلائے ، دوسرافرقہ اسکی ضدمیں پیدا ہواانہوں نے کہا کہانسان مجبورمحض ہے تقدیر میں جو کچھ کھودیا گیا ہے وہی ہوتا ہے انسان کچھنہیں کرسکتا بلکہ انسان تو کالمیت بید العسال ہے بیفرقہ جربہ کہلایا۔ اہل سنت والجماعت بین الجبر والقدر ہیں کہ اعمال کا کاسب بندہ ہے خالق الله تعالی ہیں اگر کسب پر بھی اختیار نہ ہوتو مکلّف كييم موكا؟ اورا كرخالق اعمال بهي خود عي موتو پھر بخر كيون لاحق موتاہے؟

و اقعه: ایک جری عقید ے والا باغ میں چلا گیا انگورتو ژکر کھانے شروع کردیے مالی نے منع کیاتو کہنے لگا خدا کا باغ ہے خدا کا بندہ ہے خدا ہی کھلا رہا ہے مالی مجھ گیا کہ جبری ہے اس نے کہا کہ تیراد ماغ ابھی درست کرتا ہوں و ند الیااور پنائی شروع کردی جبری کہنے لگایہ کیا؟ مالی نے کہا خدا کا بندہ، خدا کا وندا، خدابی چلار ہاہے۔معتز لدکاعقیدہ مجھی قدر یہ والا ہے۔

الاختلاف الثالث: اعمال كوايمان كاجزء قرار دين نددينے كے اعتبار سے مشہور كروہ تين بيں ا (١) قدرية معتزله خارجيه (٢) كرامية مرجه (٣) الل النة والجماعة

ايك فرقه : كهتا ب كها عال ايمان كاجزء بي للهذا الركبيره كاارتكاب كرليايا ايكمل بهي جيوز ديا توايمان ندر ہے گابیمسلک قدریہ معتزلداور خارجیکا ہے۔

دوسرا فرقه:ان كمقابل من كراميه اورمرجنه ين مرجنه كم بن كدايمان كر ليقديق محض کافی ہے کمل کی کوئی ضرورت نہیں اور چونکہ اقرار بھی کمل ہے لہٰذااسکی بھی ضرورت نہیں۔

کرامیہ نے کہا کہ ایمان فقط اقرار ہے اعمال کی کوئی ضرورت نہیں اور تصدیق بھی ایک عمل ہے، اسکی بھی کوئی ضرورت تہیں۔

الحاصل: كرامياورمرجه بيدونون فرق المال كوضروري نهيل سجهة

مذهب اهل سنت والجماعت : الله سنت والجماعت كمت بين كداعال كرك سے بنده مستحق نارمو گااورا جھےاعمال کرنیوالا بفصلِ خداسیدھاجنت میں جائرگا۔

مختصر تعبیر: آسانی کے لیے یوں بھولیں کے جزئیت اعمال کے لاسے تین گروہ ہیں۔

ل الابواب والتر اتبم للمولا نامحمود حسن ويوبندي حس

ا .مفرطین ۲.مفرطین ۳.عادلین

(١)مفوطين: جزئية إعمال مين افراط كرنيوالي

(۲) مفرّ طین: جزیمیتِ اعمال میں تفریط کر نیوالے۔مفرّ طین کے دوگروہ ہیں۔ (۱) معتزلہ (۲) خارجیہ

(٣) عادلين: جزئيت إعمال مين اعتدال سي كام لين والي

(ا)مذهب معتزله : معتزله كت بين كمتارك اعمال ايمان سيخارج بالبته كفريس والخلنبيل بلكه بين الاسلام والكفو ب-

مفوّ طین: کے بھی دوگروہ ہیں امرجہ ۲ کرامیہ

مذھبِ متر جنہ : سس مرجہکہتے ہیں کہ صرف تصدیق مؤمن ہونے کے لیے کافی ہے عمل کی کوئی ضرورت نہیں اور چونکہ اقرار بھی ایک عمل ہے البذا اسکی بھی ضرورت نہیں۔

مذھبِ کو امیہ: کرامیہکہتے ہیں کہ ایمان کے لیے محض اقر ارکافی ہے اعمال کی کوئی ضرورت نہیں اور چونکہ تصدیق بھی ایک عمل ہے لہذا اسکی بھی ضرورت نہیں۔

مذهبعادلین:عادلینکے بھی دوگروہ ہیں۔ا۔جمہور تحدثین وجمہور ائمکرائ ۲۔امام اعظم وجمہور مستکلمین ۔ مذهب جمهور : جمہور کہتے ہیں کہ اعمال ایمان کا جزء ہیں لیکن تارک اعمال ایمان سے خارج نہیں ہوگا

بلكه فاسق ہوگا۔

مذهب جمهور مت کلمین اور اهام اعظم است ادام اعظم اورجه و متکلمین قرماتے ہیں کے اعمال ایمان کا جزنہیں لے البت اعمال دخول اولی کے لیے ضروری ہیں تارک اعمال سی ادروف عادلین ہیں المل سنت والجماعت ہیں ان میں اختلاف محض تعمیر وعنوان کا ہے کیونکہ جمہور ؓ سے جب ان کے قول کی تشریح پوچیس کہ آیا تارک اعمال خارج عن الایمان ہے انہیں ؟ تو کہیں گے کہ بہت ضرورت ہے۔ کہیں ای طرح اگر امام عظم ؓ سے پوچھا جائے کہ آیا اعمال کی کوئی ضرورت ہے یا ہیں ؟ تو کہیں گے کہ بہت ضرورت ہے۔ کہیں ای طرح اگر امام عظم ؓ سے پوچھا جائے کہ آیا اعمال کی کوئی ضرورت ہے یا ہیں ؟ تو کہیں گے کہ بہت ضرورت ہے۔ خلاصہ : سب سے کہ آیک ہے نفس ایمان اور آیک ہے کمالی ایمان ۔ اعمال نفس ایمان کا جزنہ ہیں کمالی ایمان فوت ہوجا تا ہے جیسے درخت کہ اگر اسکے ہیں ۔ پس اعمال کے فوت ہونے سے نفس ایمان فوت نہیں ہوتا کمالی ایمان فوت ہوجا تا ہے جیسے درخت کہ اگر اسکے بھول ، پنتے ، شاخیس ہوں تو کامل ہے اور اگر انکو کا دیا تو بھر بھی درخت تو ہے لیکن ناقص ہوا در انسان جس کے ہاتھ پاؤں ناک ، کان وغیرہ کاٹ دیے جا کیں تو بھی انسان ہے لیکن ناقص ، کامل تب ہوگا جب یہ اعضاء موجود و سالم ہوں۔ پاؤں ناک ، کان وغیرہ کاٹ دیے جا کیں تو بھی انسان ہے لیکن ناقص ، کامل تب ہوگا جب یہ اعضاء موجود و سالم ہوں۔ پاؤں ناک ، کان وغیرہ کاٹ دیے جا کیں تو بھی انسان ہے لیکن ناقص ، کامل تب ہوگا جب یہ اعضاء موجود و سالم ہوں۔

لے درس بخاری ص**۱۲۰**

الغرض اعمال نفس ایمان میں داخل نہیں بلکہ دخیل ہیں یعنی کمال ایمان پیدا کرنے کے لیے اور دخول اوبی کے لیے دخیل ہیں۔ معمو ال: تعبیر وعنوان کا اختلاف کیوں ہوا جبکہ حقیقت میں اختلاف نہیں؟

جواب: تعبیروعنوان کایداختلاف زمانے کے اختلاف کی وجہ سے ہام صاحبؓ کے دور میں اہل سنت والجماعت کے مقابل خوارج تھے جو کہتے تھے کہ اعمال چھوڑنے سے آدمی کافر ہوجا تا ہے تواس ارتداد سے امت کو بچانے کے لیے امام صاحبؓ نے فرمایا کہ ترک اعمال سے کفرلازم نہیں آتاس لیے ایمان کے لیے صرف تقدیق قبی کافی ہے۔

اورجہور عدثین گازمانہ مؤخر ہے ان کامقابلہ کرامیاور مرجنہ کے ساتھ تھا جو کہتے تھے کہ اعمال کی ضرورت ہی نہیں فقط
اقراریاتھ دیتی کافی ہے تو محدثین نے خیال کیا کہا یسے ولوگ اعمال کوچھوڑ دیں گے اس لیے عدثین نے جزئیتِ اعمال کا قول کیا۔
الغرض جمہور محدثین نے لوگوں کے اعمال بچانے کے لیے یتعبیر اختیار کی اور امام صاحب نے لوگوں کا
ایمان بچانے کے لیے اوپروالی تعبیر اختیار کی ورنہ دونوں تھدیق کو اصلِ ایمان اور اعمال کو مکملات ایمان قرار دَیے
ہیں۔اگریہ بات نہ ہوتی تو احتاف اعمال چھوڑ دیتے جبکہ سب سے زیادہ کیے اعمال میں احتاف ہی ہیں کتنے اولیاء
ہیں۔ جنہوں نے ساری زندگی سنت پڑمل کرنے میں گذار دی حالا نکہ وہ حنی ہیں ورنہ تو احتاف نظے سڑکوں پر بیٹھے رہے
ہیں جنہوں نے ساری زندگی سنت پڑمل کرنے میں گذار دی حالا نکہ وہ حنی ہیں ورنہ تو احتاف نظے سڑکوں پر بیٹھے رہے
کہال کی ضرورت نہیں اور کپڑ ایہنا ایک عمل ہے لہذا اس کی بھی ضرورت نہیں۔

دلائل احناف

دلائل کا استقصاءتو پورے قرآن وحدیث کوفل کر دیناہے جوموجب طوالت ہے اس لیے یہاں اصولی دلائل بیان ہو نگے۔

دلیلِ اصولی اول:ام صاحب کا متدل وه آیات وروایات ہیں جن میں ایمان کوقلب کی طرف منسوب کیا گیا ہے۔اگر ایمان میں اعمالِ جوارح واخل ہوتے تو صرف قلب کوملِ ایمان کیوں کہتے جبکہ بکثرت آیات میں کل ایمان قلب کو بتایا ہے یہ مثلا

- (۱) ﴿ قَالُهُ مُطُمَئِنٌ بَالْإِيْمَانِ ﴾ ٢ امام صاحب نے ايمان كاتعلق صرف قلب سے قرار ديا ہے چنا نجة اگر زبان سے كلم كفر بھى كہد دے (بحالت اكراه) ليكن دل مطمئن ہوتو كافر نہيں ، معلوم ہواكدا يمان كاتعلق صرف قلب سے ہے۔ (۲) ابرا بيم عليه السلام نے عرض كيا ﴿ كَيْفَ تُحْيِى الْمَوْتَى ﴾ الله تعالى نے فرما يا ﴿ اَوَلَهُ تُومِنُ ﴾ عرض كيا ﴿ بَلَىٰ وَلَكِنُ لَيُطُمَئِنَ قَلْبَى ﴾ ٢
 - (٣) ﴿ كُتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ ٱلْإِيْمَانِ ﴾ ع

إ ورس بخاري نس شااع پارومها سورة الحل أيت ١٠٩ س پاره ٣ سورة البقره آيت ٢٧٠ س پاره ٢٨ سورة المجادلة آيت ٢٢ هي پاره٢٠ سورة المجرات آيت ٢

- (٣) ﴿ وَلَكِنَّ اللهُ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنه وفي قُلُوبِكُمْ ﴿ وَعَلَم مِواكرا يمان كاتعلق صرف ول ع إلا يمان اللهُ عَبَّ اللهُ عَلَي اللهُ عَبْدَ اللهُ عَلَي اللهُ عَبْدَ اللهُ عَلَي عَلَي اللهُ عَلَي عَلَي اللهُ عَلَي عَلَي اللهُ عَلَي اللهُ عَلَي اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَي عَلَي عَلَي عَلَي اللهُ عَلَي اللهُ عَلَي عَلَي عَلَي اللهُ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهِ عَلِيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَل
 - (٥).....﴿ وَلَمَّا يَدُخُلِ الْإِيْمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ﴾ ٤
 - (٢).....﴿قَالُوا آمَنَّا بِالْهُوَ اهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنُ قُلُوبُهُمْ ﴾ ع
- (2) سحدیث میں ہے ((من کان فی قلبه مثقال حبة من خودل من الایمان)) ع بیدلیل نہیں صرف نوع من الدائل ہے۔

دلميلِ ثانى اصولى: وقا يات وروايات بين جن مين اعمال صالحكوايمان پربطورعطف ذكركيا كياب اس ليك كعطف مغايرت كى دليل جا كرا عمال جزوايمان بوت وعطف سے كيول بيان كرتے ـ اور به كهنا كه جزء كاكل پر عطف سے كيول بيان كرتے ـ اور به كهنا كه جزء كاكل پر عطف سے حيح نبين ،اول تواس ليے كه بيشائع نبين _ دوم اس ليے كه عطف بين اصل مغايرت ہے مثلا ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوا وَعَمِلُوا آمَنُوا وَعَمِلُوا آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتُ لَهُمْ جَنْتُ الْفِرُ دَوْسِ نُزُلًا ﴾ وه دومرى جگه فرمايا ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَحْعَلُ الصَّالِحَاتِ سَيَحْعَلُ الصَّالِحَاتِ سَيَحْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ﴾ يه لو حَمنُ وُدَّانَ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَحْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا الصَّالِحَاتِ سَيَحْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا الْهَالِحَاتِ سَيَحْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا الْهِي

دلیلِ ثالث اصولی:وه آیات وروایات ہیں جن میں ایمان والوں کو توبہ اور تقوی کا حکم دیا گیاہے معلوم ہوا کہ اکالِ صالحہ کے زائل ہونے کے باوجودایمان باقی ہے جبی تو امنوا کے لفظ سے تعبیر کیا جارہا ہے مثلا ﴿ يَا آيُنُهَا الَّذِيْنَ امَنُوا تُوبُوا إِلَى اللهِ تَوْبُهُ نَصُوحًا ﴾ ٨

دلیل رابع اصولی: وه روایات جن میں صرف کلمه پر صنے پر وخول جنت کی بثارت ہے مثلا حضرت ابوذررضی اللہ تعالی عند کی روایت (مامن عبد قال لاالله الا الله ثم مات علی ذلک الا دخل الحنه) عرض کیا ((وان زنی وان سرق)) تین بار کرار ہوا و

اى طرح ايك حديث من بخرمايا (يخرج من النار من قال لااله الا الله وفى قلبه وزن شعيرة من خير آ) واى ايمان كما صرح به فى رواية اخرى، نيز ال من ايمان كاكل قلب كو بتايا به له من خير آ) واى ايمان كما صرح به فى رواية اخرى، نيز ال من ايمان كاكل قلب كو بتايا به الحديث كراتم وهومومن كى قيدلكائى به آرممل بزء كليل خامس اصولى: وه آيات بن ميمل صالح كما ته وهومومن كى قيدلكائى به آرممل بزء موتا تويدقيد كيول لكات يه يميم مثر به كمل ايمان سے عليمده شكى به مثلا ﴿ وَمَنْ يَعُمَلُ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُو مُؤْمِنينَ ﴾ يا اور فرمايا ﴿ وَاَطِيعُوا اللهُ وَرَسُولَه وَان كُنتُهُ مُؤْمِنينَ ﴾ يا اور فرمايا ﴿ وَاطِيعُوا اللهُ وَرَسُولَه وَان كُنتُهُ مُؤْمِنِينَ ﴾ يا

ا باره ۲۷ مورة الحجرات آیت ۱۲ ع باره سورة المائده آیت ۱۵ ۳ بخاری شریف ص ۸ تا مع درس بخاری ص ۱۵ در ۱۹ سورة الکهف آیت ۱۰۵ باره ۱۵ سورة الکهف آیت ۳۰ بے بایده ۱۷ سورة مریم آیت ۹۱ می باره ۲۸ سورة التحریم آیت ۸ فی مشکوة شریف تما ص ۱۲ و بخاری شریف تما ص ۱۱ ال باره ۱۹ سورة بلا آیت ۱۱۳ مل باره ۹ سورة الانفال آیت ۱

دليل سادس اصولى: وه آيات وروايات مين جن مين باوجودعصيان كايمان كااطلاق مواج جيك ﴿ وَإِنْ طِآتِفَتُن مِنَ الْمُؤْمِنِيُنَ اقْتَتَلُوا فَأَصُلِحُوا بَيْنَهُمَافِإِنْ بَعَثُ الْحَلَاهُمَا عَلَى الْأَخُراي فَقَاتِلُوا الْتِي تَبْغِي حَتَّى عِ تَفِيءَ إِلَى أَمُو اللهِ ﴾ إلى توباوجود يكه باغي كروه الله كامرت بثابوا إلى ومؤمن كها كيا ب-دلائل جمهور

- (١)....((بني الاسلام على خمس)) ع
- (٢).....((الايمان بضع وستون شعبة)) ح
 - (m)....((الحياء شعبة من الايمان)) س
- (٣)((لايومن احدكم حتى يحب لاخيه ما يحب لنفسه)) ه

امام بخاری نے کتاب الا یمان میں آخرتک جینے تراجم قائم کیے ہیں ان سب کے تحت جمہور کے متدلات ذكرفرمائ بين-اكثر سے يهى معلوم بوتا بكدا يمان مجموع كانام ب-

دلائل معتزله وخارجيه

وہروایات وآیات جن میں ترک اعمال سے ایمان کی نفی کی گئی ہے یا تارک کو کا فرکہا گیا ہے مثلاً

- (۱).....((لاايمان لمن لاامانة له ولا دين لمن لاعهد له)) ت
 - (٢).....((من ترك الصلواة متعمداً فقد كفر)) ك
- (٣)..... ﴿ مَنْ يَقُتُلُ مُؤْمِنًا مُتَعَمَّدًا فَجَزَآءُ ٥ ' جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيُهَا ﴾ ٨

دلائل كراميه و مرجئه

وہ احادیث جن میں نفسِ تصدیق یانفسِ اقر ارکوایمان قر اردیا گیاہے اور نجات کی بشارت دی گئی ہے مثلا

- (١).....((من قال لااله الا الله دخل الجنة))
- (٢).....((امرت أن أقاتل الناسمحتى يشهدوا أن لا أله الا الله فأذا فعلوا ذلك فقد عصموا منى دمائهم واموالهم الابحق الاسلام)) و

زیاده تر جوابات کارخ جمهورمحد ثین کی طرف ہے ساتھ ساتھ کرامیہ مرجمہ معتز لداور خارجیہ کا جواب بھی ہوجائیگا۔ جواب اول اصولی: احناف کی طرف سے جواب یہ ہے کہ ایک ہے فس ایمان ایک ہے کمالی ایمان، ایمان ایک ہے کمالی ایمان، ایمان مورد البیاری بیا سرد میں ایمان ایمان کی بارد ۵ مورد البیاری بیا سرد کا مورد البیاری بیا سرد کا مورد البیاری بیا سرد کا مورد البیاری بیان سرد کی بارد ۵ مورد البیاری بیان سرد کی بارد ۵ مورد البیاری بیان سرد کی بارد ۵ مورد البیاری بیان سرد کی بارد کی مورد البیاری بیان سرد کی بارد کی سرد دانسان میں البیاری بیان سرد کی بارد کی بارد کی بارد کی بارد کی سرد کی بارد کی بارد

نفس ایمان تقمدیق کانام ہے اور وہ بسیط ہے، کمال ایمان کے لیے اعمالِ صالح ضروری ہیں۔ مثال جیسے ذات انسان اور اعضاء ذاکدہ کیا گوات ہے اور اعضاء ذاکدہ کیا جیسے تھا اور اعضاء ذاکدہ ہیں جیسے کھل، کھول، شاخیس وغیرہ اسی طرح نفسِ ایمان اور کمالِ ایمان ہے۔ کہ جیسے تفاور دوسری چیز اجز اء ذاکدہ ہیں جیسے کھل، کھول، شاخیس وغیرہ اسی طرح نفسِ ایمان اور کمالِ ایمان ہے۔ کہ جن آیات میں ایمان کا محلِ قلب کو قرار دیا گیا ہے وہ نفسِ ایمان کے لحاظ سے ہے اور جن آیات وروایات میں شعب ایمان کا ذکر ہے یا یہ ذکر ہے کہ ایمان مجموعے کانام ہے تو وہ کمالِ ایمان پرمحول ہیں کیونکہ اعمال کمالِ ایمان کے اجزاء ہیں۔ اور من توک المصلوم جیسی احادیث تشبیہ و تغلیظ پرمحول ہیں۔

جواب ثانی اصولی:ایک ہے نفس ایمان اور ایک ہے نورِ ایمان نفسِ ایمان تقدیق سے حاصل موجاتا ہے البتنورِ ایمان اعمال سے حاصل ہوتا ہے ہیں اعمال نورِ ایمان کا ج

جوابِ ثالث اصولی:ایک ہایمانِ قالی اور ایک ہایمانِ قالی افس تصدیق سے حقق موجاتا ہے ایمانِ حالی معصیت کے ساتھ جمع نہیں ہوتانہ ہی بغیر اعمال کے حقق ہوتا ہے۔ ((لایونی الزائی حین یونی و هو مومن)) سے یہی مراد ہے کہ اسکی حالت ایمان والی نہیں۔

جواب رابع اصولی:ایک بنفسِ ایمان ایک بحقوت ایمان بفسِ ایمان تصدیق سے حاصل موجوات بخوت ایمان اعمال سے پیدا ہوتی ہے واللہ موجواتا بخوت ایمان اعمال سے پیدا ہوتی ہے تو اب خامس اصولی:ایمان دوسم پر بے ایک ایمان منجی مطلقاً "اسکوایمان فطری بھی کہد

جو ہے مصامیس مصولی مسلم این دوسم پر ہے ایک اینمان مِنجی مطلقا مساسوایمانِ وظری میں اہد سکتے ہیں دوسرا''ایسمان منجی او لا'' دوسری تعبیراس طرح ہے کہ دخول جنت دوسم پر ہے ایک دخولِ اولی دوسرا دخولِ مطلق جن آیات وروایات میں بغیر ممل کے دخول جنت کا ذکر ہے ان سے مطلق دخول جنت مراد ہے اور جن میں اعمال کی شرط لگائی ہے وہاں دخول اولی مراد ہے تو اعمال دخولِ اولی کے لیے شرط اور جزء ہیں۔

خلاصہ: اصل جواب ایک ہی ہے تعبیرات مختلف ہیں۔ جس کا ایمان کامل ہوگیا اس کونور ایمان بھی حاصل ہوگیا اسکو دخول اولی بھی حاصل ہوگیا جسکا ایمان کامل ہوگیا اسکو دخول اولی بھی حاصل ہوگیا جسکا ایمان کامل ہوگیا اسکو قوت ایمان بھی حاصل ہوگی اسکو حلاوت ایمان بھی حاصل ہوگئی اسکو حلاوت ایمان بھی حاصل ہوگئی ۔ امام صاحب کی اس تشریح کے بعد کوئی آیت کوئی روایت آیس میں متعارض ندر ہی اور امام صاحب کا خدہب کسی آیت وروایت کے خلاف بھی ندر ہا۔

ایک حدیث میں ہے کہ دوزخ پرایک وقت ایسا آ جائیگا کہ اللہ تعالی فرمائیں گے کہ نبیوں نے ، ولیوں نے ، حافظوں نے سب نے شفاعت کرلی۔ پھر جنتیوں سے کہا جائیگا کہ دیکھو تہارا کوئی ایمان والاجہنم میں تو نہیں چنانچہ جنت والے نکالیں گے پھر اللہ تعالی فرمائیں گے اب میری باری ہے تو اللہ تعالی تین لییں (چُلّو) نکالیں گے۔ بعض نے کہا کہ اللہ تعالیٰ کی ایک لپ اتنی بڑی ہوگی کہ کوئی دوزخ میں ندر ہے گا۔

حضرت مدنی کامقولہ ہے کہ ایمان کے ساتھ اللہ تعالی دوزخ میں کیسے بھیجیں عے جبکہ اسکے خلاف دلائل قوی ہیں،ایمان تو صفت رحمت کی بچلی ہے مجھے پیمسکا سمجھ نہیں آتا تھا تو فرمایا کہ جب مجھے جیل میں بھینے کا حکم ہوا تو کہا کہ کیڑے اتار دواور جیل کے کیڑے پہن لوتو فرمایا کداس وقت بیمسکلہ بھی سمجھ آ گیا۔

اعمال کی جزئیت پردومسلے متفرع ہوتے ہیں۔

مسئله اولى: ايمان بيط بي مركب؟ جوجزيب اعمال ك قائل بي وه كهت بي كمركب بامام صاحبٌ فرماتے ہیں کہ بسیط ہے۔ دلائل وجوابات ص١٨١ پرگز رہے ہیں۔

مسئله ثانيه: هل الايمان يزيد وينقص ام لا؟ الرسنت والجماعت كاس بار عين تين مسلك بير -الاول: امام شافعي وجمهور محدثين قائل بين كه يزيد وينقص . إ

الثاني:امام الكُ فرماتي بين كم يزيد و لاينقص. ع

الثالث:ام أعظمٌ فرمات مي الايزيد والاينقص. ع

الأمام (ابوحنيفة) هذاالبحث لفظى لان المراد بالايمان ان كان هوالتصديق فلايقبلهماوان كانت الطاعات فيقبلهماثم قال الطاعات مكملات للتصديق.

دلائل جمهور محدثين

امام بخاری چونکہ جمہور محدثین کے ساتھ ہیں اس لیے الایمان یزید وینقص کے دلائل لائے ہیں جو بخاری شریف میں مذکور ہیں۔

دلائل امام مالک :امام مالك فرمات بين كه تمام آيات وروايات جوجم ورمحد ثينٌ ذكركرت بين ال سب میں الایمان یزید کا ذکرتو علین ینقص کا ذکرنہیں ہے پس الایمان یزید ولاینقص کیکن نہ بات سرسری ہے کیونکہ زیادتی وکی آپس میں متقابلین ہیں پہلے کی تھی اسی لئے تو زیادتی ہوئی۔

جواب اول: يكى بيشى ايمان كے لحاظ ہے نہيں بلكہ مومَن به كے لحاظ ہے ہے مثلا دس آيتيں نازل ہوئیں ان برایمان لے آئے بھر دس اور اتریں ان پر بھی ایمان لے آئے تو اس طرح ایمان بڑھ گیا۔ جواب ثانى: زيادتى اجمال وتفصيل كے لحاظ سے ہے كہ جب ايمان لانا ہے تو اجمالاً بجميع ما

ل فيض البارى ج اص ١٠ بيطرم نيزم عدا مكتبه تجازى قامره مع الينا س فيض البارى ج اص ٥٩ مع عدة القارى ج اص ١٠٨

جاء به النهی ملیلی پرایمان لا نا ہے اور جب تفصیل معلوم ہوگی تو تفصیل کے لحاظ سے زیادتی ہوگی اجمال کے اعتبار سے کوئی زیادتی نہ ہوگی۔

جوابِ ثالث: سسایمان منجی مطلقاً اور ایمان فطری میں کوئی زیادت ونقصان نہیں اور وہ ایمان جو وخول اولی کا سبب ہے دیعن کمال ایمان) اس میں کمی زیادتی ہو کتی ہے۔

جواب رابع: تقديق كرودرج بين (١) نفس تقديق (٢) كيفيت تقديق

نفسِ تصدیق کے اعتبارے الایمان لایزید و لاینقص ہے اور کیفیت ِتصدیق کے لحاظ سے الایمان یزید وینقص جیسے زیرو کابلب اور سوواٹ کابلب نفس ضوء میں برابر ہیں کیفیت ضوء میں متفاوت ہیں۔

جواب خامس: کی بیشی ایمان محقّق میں آتی ہے ایمان مقلد میں نہیں محقق اسے کہتے ہیں جوتقدیق کرتا ہے باستحضار دلائل ہو کیونکہ ایمانِ مقلک کامحمل ہے بخلاف ایمان مقلد بھلک کامحمل ہے بخلاف ایمان محقق کے مشکک کامحمل ہے بخلاف ایمان محقق کے ، کہ وہ تشکیک مشکک سے زائل نہیں ہوتا۔

لطیفہ: کہاجاتا ہے کہ ایمانِ مقلد معتبر نہیں تو ارکا مطلب بنہیں کہ ایمانِ غیر مقلد معتبر ہے۔ مقلد کے مقابلہ میں غیر مقلد کی اصطلاح معلوم نہ ہونے کی وجہ نے غیر میں مقلد بمقابلہ محقق ہے اصطلاح معلوم نہ ہونے کی وجہ نے غیر مقلد بن جاتا ہے۔ ایسے بی ﴿إِنَّ اللهُ عَلٰی خُلِّ شَنّی ءِ قَدِیْرٌ ﴾ تو کیا اللہ تعالی اپنی ہلاکت پر بھی قادر ہے؟ مقلد بن جاتا ہے۔ ایسے بی ﴿إِنَّ اللهُ عَلٰی خُلِّ شَنّی ءِ قَدِیْرٌ ﴾ تو کیا اللہ تعالی اپنی ہلاکت پر بھی قادر ہے؟

جواب: سسیایک عیب ہو هو تعالی منزه عن العیوب ایسے ہی اپناشریک بنانا بھی عیب ہواللہ تعالی میر عن ذلک ایسے ہی کوئی کے کہ کذب ثانِ نبوت کے خلاف نہیں تو جائل سنے والا کے گا'' بادب گتاخ کا فرہوگیا'' کیونکہ جائل کے ذہن میں کذب کا ایک ہی معنی ہے حالانکہ مجاز ، کنایہ تشبیہ استعارہ سب کذب کی اقسام بیں ادران کا استعال شان نبوی کے خلاف نہیں۔

فائدہ:ام شافعیؒ کے زدیک کل ایمان دل ہے، اور امام اعظم ابوطنیف ؒ کے زدیک کل ایمان دماغ ہے یا

, **(3) (3) (3) (3) (3) (3) (3) (3)**

(۲)

﴿ بابُ قول النبي عَلَاسِلام على خَمْسُ الاسلام على خمس وهو قول وفعل ويزيد وينقص ﴿ الْحَمْسِ وَهُو قُولُ وَفَعَلَ وَيزيد وينقص ﴾ آخفرت عَلَيْ كَيْرُوا فِي كَيَانَ مِن كَامِلام كَامَارَت بِالْحَالِيُ فِيرُول بِالْعَالَى كَيْ بِي ادره وبرهمتا هِ مُمْتَا مِ ادرا يمان قول فعل و كمة بين ادره وبرهمتا هم مُمْتا مِ ادرا يمان قول فعل و كمة بين ادره وبرهمتا هم مُمْتا مِ

تعالىٰ لِيَزُدَادُوا إِيْمَانًا إيمانهم قال الله تعالی نے (سورہ فتح آیت م) فرمایا تا کہ (ان کے پہلے)ایمان کے ساتھ اور ایمان زیادہ مو،اور (سورہ کہف آیت ۱۳) وَزَدُنَهُمُ هُدًى. وَيَزِيُدُ اللَّهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوُا هُدًى. وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوُا ہم نے انکواورزیادہ ہدایت دی اور (سورہ مریم آیت ۷۷)جولوگ سید مصداہ پر ہیں،اور (سورہ قال میں)جولوگ راہ پر ہیں هُدًى وَّاتَهُمُ تَقُواهُمُ وَيَزُدَادَ الَّذِيْنَ امَنُواايُمَانًا اعوالله تعالى اورزياده مدايت دى،اوراعكو يربيز گارى عطاء فرمائى،اور (سورهٔ مدثر آيت ٣١) جولوگ ايماندار بين انكاايمان اورزياده موا وقوله عزوجل أَيُّكُمُ زَادَتُهُ هَاذِهِ إِيْمَانًا ۚ فَأَمَّا ٱلَّذِيْنَ امْنُوا فَزَادَتُهُمُ إِيْمَانًا اور (سورہ براءة آيت ١٢٣) فرماياس سورت نے تم ميں سے كس كا ايمان برهايا جولوگ ايمان لائے ان كا ايمان برهايا فَاخُشُوْهُمُ ﴿ فَزَادَهُمُ انكانا وقوله اور (سورہ آلعمران آیت ۱۲) فرمایا (لوگوں نے مسلمانوں ہے کہا) تم کافروں سے ڈرتے رہنا تو ان کا ایمان اور بڑھ گیا وَّتُسُلِيمًا ٳڵؖٳؽؘۣؗڡؘٳڹؙٳ زَادَهُمُ اور (سورهٔ احزاب آیت۴۲)فرمایا انکا کچھ نہیں بڑھا گر ایمان اور اطاعت کا شیوہ والحب في الله والبغض في الله من الايمان (اور حدیث کی رو سے) اللہ کی راہ میں محبت رکھنا اور اللہ کی راہ میں وشمنی رکھنا ایمان میں واخل ہے و كتب عمربن عبدالعزيز الى عدى بن عدى ان للايمان فرائض وشرائع وحدودا اور عمر بن عبدالعزیر (خلیفه) نے عدی بن عدی یا کولکھا کہ ایمان میں فرض ہیں اور عقیدے اور حرام باتیں

[،] بيه وصل كَ ورزر بياوران كَ وفات ١٢٠ هديس بوكَ عَيني ج1 ص١١١٠

وسننا فمن استكملها استكمل الايمان ومن لم يستكملها اورمستحب اورمسنون باتیں پھر جوکوئی ان کو پوراادا کرے اس نے اپناایمان پورا کرلیا اور جوکوئی ان کو پوراادا نہ کرے لم يستكمل الايمان فان اعش فسأبينها لكم حتى تعملوا بها اس نے اپناایمان پورانہیں کیا، پھراگر (آئندہ) میں جیتار ہاتو ان سب باتوں کوان پڑمل کرنے کے لیےتم سے بیان کردوں گا وان امت فماانا على صحبتكم بحريص وقال ابراهيم عليه السلام وَلكِنُ اور اگر میں مرگیا تو مجھ کوتمہاری صحبت میں رہنے کی مجھ ہوئ نہیں ہے ،اورابراہیم علیہ السلام نے کہا لیکن لِيَطُمَئِنَّ قَلُبيُ ،وقال معاذ اجلس بنا نؤمن ساعة میں چاہتا ہوں کے میرے دل کوسلی ہوجائے۔اور معاد نے (اسود بن ہلال سے) کہاہمارے پاس بیٹھاکی گھڑی ایمان کی باتیں کریں وقال ابن مسعود اليقين الايمان كله وقال ابن عمر لايبلغ العبد حقيقة التقواي حتى ابن مسعودً نے کہالفین بوراایمان ہے،اورابن عمرؓ نے کہابندہ تقوی کی اصل حقیقت (لیعنی کند) کوہیں بچھے سکتااس وقت تک کہ يدع ماحاك في الصدر وقال مجاهد شَرَعَ لَكُمُ مِّنَ الدِّيُن جوبات دل میں کھنگے اس کوچھوڑ دے،اورمجابد نے کہااس آیت کی تفسیر میں (اس نے تمہارے) لئے دین کاوہی رشتہ تھہرایا مَاوَضَّى به نُوُحاً اوصيناک يا محمد واياه ديناواحداوقال ابن عباس جس كانوح كوتكم دياتها) ممن تجھ كوا محمداورنوح كوايك ہى دين كاتحكم ديا۔اورابن عباس في كہا (اس آيت كي تفسير ميس) وَّمِنُهَاجاً سبيلا وسنة ودعاؤكم ايمانكم شوعة ومنهاجا لینی راسته او رطریقه اور (سورهٔ فرقان کی اس آیت کی تغییر میں کہا) دعاؤ کم لینی ایمانکم

وتحقيق وتشريح

تر جمة الباب کی غوض:ام بخاری کامقصوداس باب سے ترکیب ایمان ثابت کرنا ہے لئیز مرجه کی تر دید مقصود ہے جو محض تصدیق کوایمان قرار دیتے ہیں۔ بعض نے کہا کہ امام اعظم کی تر دید مقصود ہے کیونکہ وہ بھی صرف تصدیق قبلی کوایمان کہتے ہیں لیکن میر سی خینہیں ہے کیونکہ امام صاحب کا اختلاف صرف تعبیر وعنوان میں ہے معنون میں نہیں سی

ا فیض الباری خاصیا که تقریر بخاری جاص ۱۱۳ تر تقریر بخاری خاص۱۱۱۳

بنی الاسلام علی خمس:بایک حدیث کا قطعہ ہاں حدیث میں اسلام کو ایک خیمہ کے ساتھ تشبیہ دی گئی ہے جیسے اسکے پانچ ستون ہوتے ہیں ایسے ہی اسلام کے بھی پانچ ستون ہیں ایک درمیان میں اور چار کونوں میں پھر جس طرح بناء کے اجزاء ہوتے ہیں اس طرح اسلام کے بھی اجزاء ہیں تو تشبیہ کی وجہ سے اسلام کا مرکب ہونا معلوم ہوا ل

اشکال اول:اس مدیث سے ثابت ہوا کہ اسلام کے اجزاء صرف پانچ ہیں حالانکہ روایات سے اور بھی ثابت ہیں چنانچ بعض روایات میں سبع و سبعون کالفظ ہے تو یہ تعارض ہوا؟

جواب ا: حمس كذكر تقديد مقصونهين بلكصرف تركيب ثابت كرنامقصود بـ

جواب ٢:اس جگهان اجزاء کابیان کرنامقصود ہے جوہتم بالشان ہیں اور اسلام کے ہتم بالشان اجزاء پانچ ہیں۔
الشکالِ ثانمی:ام بخاری کابیاستدلال ناقص ہے کیونکہ اس میں ہے بنی الاسلام علی حمس اسلام
بن ہے اور حمس بنی علیہ ہے اور قاعدہ ہے کہ کی اور بنی علیہ میں تغایر ہوتا ہے پس اس حدیث سے تو اسلام اور تمس میں
تغایر ثابت ہوانہ کہ ترکیب جبکہ غرض بخاری ترکیب کو ثابت کرنا ہے۔

جواب: حروف جارہ ایک دوسرے کے معنی میں استعال ہوتے رہتے ہیں یہاں پر علی بمعنی من ہے ای بنی الاسلام من حمس اب تغایر ندر ہا کیونکہ اعتراض کا مبنی علیہ ہی ندر ہا ج

اشکالِ قالت: سام بخاریؒ نے بیصدیث رکیب ایمان ثابت کرنے کے لیے ذکری ہے حالانکہ اسے ترکیب ایمان ثابت بہر ہے۔ لیے ذکری ہے حالانکہ اسے ترکیب ایمان ثابت بھی ہورہی کیونکہ قول النبی علاق بنی الایمان نہیں ہے بلکہ بنی الاسلام ہے، پس صدیث باب کے مطابق نہیں؟ جو اب: سام بخاریؒ کی اصطلاح میں ایمان ، اسلام ، ہدایت (حدی) تقویٰ ، دین اور بر ، بیسب شکی واحد ہیں ۔ پس بنی الاسلام کامعنی بنی الایمان ہے اس طرح آئندہ آیات وروایات میں امام بخاریؒ کی مرادیہ ہے کہ بیسب مصداق کے اعتبار سے متحد ہیں اور معمور کے اعتبار سے متخابر اور بیم از نہیں کہ ایمان تقویٰ وغیرہ مترادف ہیں فانہ باطل ہے۔

وهو قول وفعل: هو ضمير كامرجع ايمان ب چونكه امام بخاري كنز ديك ايمان واسلام ميس ترادف باس كيشِ نظرا گراسلام كي طرف لونا كيس تو بهي كوئي مضا نقت بيس ع

سوال: امام بخاری ُ تراجم میں قرآن کریم کی آیت یا الفاظِ حدیث یا قول سلف نقل کیا کرتے ہیں اپنا قول ذکر نہیں کرتے یہاں اس کے خلاف اپنا قول نقل کیا ہے کیوں؟

جواب: حقیقت میں قول سلف ہی نقل کررہے ہیں لیکن اختصار کی وجہ سے معلوم نہیں ہوتا کہ قول سلف ہے اور

ا تقریر بخاری نا سه ۱۱ س ایناً س فیض الباری خاص ۲۵ س عدة القاری خ اص ۱۱۱ ک

وه تولِ سلف جس كو خضر كياوه بيه جه الايمان هو اعتقادو قول وعمل. امام بخاريٌ في ايك اختصارتوبيكيا كه اعتقاد كوحذف كرديا اوردوسرى تبديلي لي فرمائى كمل كى جكه فعل كهدديا ـ

اعتراض: یاخصارتو کل بالمراد ہے کیونکہ اس سلام آتا ہے کہ اعتقادادرتقد بق ایمان کے لیے ضروری نہیں؟ جو اب ا : چونکہ اعتقاد وتقد بق کا اسلام کے لیے ضروری ہونا ایک مسلم امر ہے اس لیے یہ مفروغ عن البحث ہے۔ کیونکہ یقطعی اور بقینی تھا اس لیے ذکر نہیں کیا ل

جواب ۲: ۱۰۰۰۰۰۱ مام بخاری نے اختصار کیا ہے کیونکہ قول سے مراد عام ہے ظاہری ہو یاباطنی ، جب قول کوعموم پر محمول کر لیا تو اعتقاد کو بھی شامل ہوجاتا ہے کیونکہ قال کی نسبت جب دل کی طرف کریں تو اعتقاد کے معنی میں ہوتا ہے، جب پاؤں کی طرف کریں تو اشارہ کے معنی میں آتا ہے۔

تغير ثانى: عمل كى جُدُفل كوذ كرفر ماياسكى كياوجه،

جو اَب: دوسرے محدثین عمل اور فعل میں فرق کرتے ہیں اور امام بخاری ان میں فرق نہیں کرتے ،اس لئے امام بخاری نے قول و فعل کہہ کر الاسلام میں الاسلام میں فرایا۔امام بخاری نے قول و فعل کہہ کر الاسلام میں فرادے ، تو حدیث سے ترکیب ایمان معلوم ہوئی اور یہی ترکیب قول سلف سے بھی معلوم ہور ہی ہے۔

سوال:ائم حفية ولسلف كيون قائل نبين؟

جواب: قولِ سلف كى شرح تشريحات كعنوان سے درج ذيل ہے جو حنفية كے خلاف نہيں۔

تشریح اول: اجزاء دو تم کے ہوتے ہیں ا۔ اجزاء اصلیہ ۲۔ اجزاء کمال۔ اجزاء اصلیہ وہ ہیں جوشی کے لیے مقوم ہوں اور ان کے فوت ہوجانے سے شی فوت ہوجاتی ہو۔

اجزاء کمال وہ ہیں جن کے فوت ہوجانے سے شئے فوت نہوں یہ اجزاء، اجزاء کمال ہیں اجزاء اصلیہ نہیں ہیں فلا تعاد ض تشریح ثانی: اجزاء دوقتم کے ہیں ا۔ اجزاءِ حقیق ۲۔ اجزاءِ عرفی۔ اجزاءِ حقیق کے فوت ہوجانے سے شئے فوت ہوجائے اور اجزاءِ عرفی اسکے برعکس۔ یہ اجزاءِ عرفی ہیں۔

تشریح ثالث: شکی کی ایک بیئت اصلیہ ہاورایک بیمتِ محسنہ۔یہ اجزاء بیمتِ اصلیہ اور بیئت محسنہ دونوں کے بیں۔سلف بیمتِ محسنہ کوذکر کرتے ہیں، بیمتِ محسنہ جیسے ناک ہے داڑھی ہے یہ بیمتِ محسنہ کے اجزاء بیں داڑھی کا حسن شرقی ہے علاء نے کھا ہے کہ داڑھی جراً کا شخ سے نصف دیت واجب ہوتی ہے، جیسے کان کا شخ سے داڑھی کسن کے بھڑنے کی وجہ سے اسکاا حساس نہیں کہ داڑھی حسن سے بھڑنے کی وجہ سے اسکاا حساس نہیں کہ داڑھی حسن سے اوراسکا منڈوانا برصورتی ہے۔اس کو بجھنے کے لیے ایک واقعہ کھا جاتا ہے۔

لے کرمانی جا ص-2

و اقعه: ایک بادشاه کا واقعہ ہے کہ اس کے ملک میں جوعورت جرم کرتی اسکی ناک کو ادیتا اور ایک علیحدہ بستی بنا رکھی تھی جس عورت کی ناک کا شا اسے اس بستی میں بھیج دیتا۔ ایک مرتبہ بادشاه کی بیوی کو خیال ہوا کہ وہ تو بہت برصورت نظر آتی ہوگی چنا نچہ ان کو و یکھنے کے لیے ان کی بستی میں گئی جب مکٹیوں نے دیکھا تو شور مچا دیا، ناکو آگئ ! ناکو آگئ! اس نے اپناناک چھپایا اور چلی آئی۔ آج ڈاڑھی والوں، مولویوں کی یہی حالت ہے۔

تشویح رابع:ایک ہفس ایمان اور ایک ہے مظیر ایمان ۔ تو امام صاحب نفس ایمان کوذکرکتے ہیں اور سلف مظاہر ایمان کوذکرکرتے ہیں ایمان تو نفس تصدیق ہے اس کے مظاہر مختلف ہیں جب اسکا مظہر دل ہوتو اسے تصدیق کہتے ہیں جب اسکا مظہر ہم ہوتو اعمال وجود میں آتے ہیں اور جب اسکا مظہر زبان ہوتو اسے اقر ارکہتے ہیں۔ تشدیح خامس:ایک ہی چیز ہے اسکے مواطن بدلنے سے نام بدل جاتے ہیں تو یہ اختلاف الاسامی باختلاف المواطن ہے جب ایمان کا موطن دل ہوتو اسکانام تصدیق، زبان ہوتو اقر ار، اعضاء ہوں تو اعمال۔

تشریح مسادس: قولِ سلف میں بیان ترتیب ہے نہ کہ بیان ترکیب۔ کہ پہلے ایمان دل میں آتا ہے پھر جب زبان پر آتا ہے تو تقدیق کہتے جب زبان پر آتا ہے تو تقدیق کہتے ہیں پھر پھوٹ پھوٹ کیوٹ کراعمال کی صورت میں جسم پر بیں پھر پھوٹ پھوٹ کراعمال کی صورت میں جسم پر ظاہر ہوتا ہے تو آدی ہجدہ دریز ہوجا تا ہے۔

آٹھ آیاتِ مبار کہ : امام بخارگ نے یزید وینقص ثابت کرنے کے لیے آٹھ آیت و کرکیں ہیں اتن آیات اور کہیں ذکر نہیں فرما کیں۔ اس مسئلہ پر بڑا زور دیا ہے لیکن بی آیات احتاف کے خلاف نہیں اس لیے کہ ایک ہے نفس تقمد این وہ تو کم وہیش نہیں ہوتی اور ایک ہے ٹمراتِ ایمان ، صلاوتِ ایمان ، درجاتِ ایمان ، طماعیتِ ایمان ، تو ایمان ، تو ایمان ، تو ایمان ، تو ایمان ، تقصیلِ ایمان ، یاموئن بدان کے لحاظ سے ایمان بیں زیادتی ، کی ہوتی رہتی ہے۔ والحب فی اللہ و البغض فی الله من الایمان : اس سے ترکیب ایمان پر استدلال کیا ہے کہ من تعیقیہ ہے متی یہ ہوا کہ اللہ کے لیے عب کرنا اور بغض رکھنا ایمان کا بڑے ہے تو من بعیقیہ سے ایمان کی بڑئیت ثابت ہوئی ا نیز عبت کی بیٹی ہوگی۔ نیز عبت کی مشکل ہے کم زیادہ ہوتی ہوا دیا گان کا بڑے ہے تو جب بڑے میں کی بیٹی ہوتی ہوتی کی بیٹی ہوگی۔ عذل العواذل حول قلبی التانه کی وہوی الاحبة منه فی سودانه عذل العواذل حول قلبی التانه کی وہوی الاحبة منه فی سودانه

اس شعر میں کلی مشکک کو ثابت کیا ہے کہ آخری محبت وہ ہے جوسوداء قلب تک پہنچی ہے باتی محبیس با ہر رہتی ہیں۔ و نحن نقول انھاللابتداء و الاتصال کمافی قوله عُلِیسِی (انت منی بمنزل ھارون من موسیٰ)) انیس الباری جا ص فلايدل على الجزئية فالمعنى ان الحب في الله انمايبتدي من الايمان ا

قصہ، راہ چلتے کی محبت: ایک عورت جارہی تھی۔ایک مرد کی نظر پڑی پیچھے چل پڑا۔عورت نے پوچھا کیابات ہے؟ اس نے کہا کہتم سے محبت ہوگئ ہے۔عورت نے کہا ارے بے بچھ! یہ پیچھے تو دیکھے مجھ سے بھی زیادہ خوبصورت عورت آ رہی ہے اس نے پیچھے مڑکردیکھا،عورت نے ایک تھپٹررسید کیااورکہا یہی محبت ہے؟

قصه، اصلی محبت: حضور علیه کے سات آٹھ صحابہ تید ہوگئے ۔ کفارنے کہا محمد (علیہ) کا ساتھ جھوڑ دو تمہارااکرام کریں گے۔انکاریر پٹائی کی۔واقعہ کی تفصیل اس طرح ہے کہ ابن اٹیرے کامل (کتاب) میں عبداللہ بن حذاف سہم کا واقعد الله والمائل كالمراوق كودوخلافت من بيامير الشكربن كرروميول كمقابله من الرف كي لي كراة القا قامغلوب موكر قید ہوگئے۔بادشاہ نے ان سے کہا ہم تمہارے مرتبہ سے واتف ہیں تم اگر ہماری بات مان لواور اپنادین چھوڑ کر عیسائی ندہب قبول کرلوتونه صرف بیک ہم تہمیں چھوڑ دیں گے بلکتم کواچھاعہدہ دیں گےاور شاہی خاندان میں شادی بھی کردیں گے وغیرہ حضرت عبدالله بن حذافة في في حقارت كي ساته مينيش كش محكرادي توافيس مع ساتعيول كي قيد كرديا اور كهانا ياني بندكردياحي كه جان بربن آئی اورمخصه کی حالت کو پہنچ گئے تو خزیر کا گوشت اور شراب پیش کی گئی فرمایا کہ ہرچند کہاس وقت مخصہ کی حالت ہے اور الی حالت مں شریعت جان بچانے کے لیے اس کی اجازت ویت ہے گرمیری غیرت ایمانی اسے قبول نہیں کرتی ہے میں اسے نہ کھاؤں گا، صاف انکارکردیااوردیگرتمام صحابکرام نے بھی انکارکردیا۔ پھراس نے بیتد بیراختیاری کدایک بوے کڑھاؤیس تیل گرم کرایااوران كے سامنے ايك مسلمان مجاہد كواس ميں ڈالوادياذرادير ميں وہ جل كر كباب ہو گئے (الله كي ہزار رحمتيں ہوں ان ير، امين) پھران كى طرف بخاطب ہوکر بولاتمہارے ساتھ بھی بہی معاملہ کرنے والا ہوں مگر ایک بار اور موقع دیتا ہوں اور پھر کہتا ہوں کہ میری بات مان لواس کے بعد بھی انھوں نے انکار ہی میں جواب دیا۔ تب اس نے جل کر تھم دیا کہ ان کو بھی اس کڑھاؤ میں ڈال دو۔ جب لوگ ان کولیکر چلےتوان کی آنکھوں میں آنسوآ گئے۔بادشاہ کواطلاع دی گئی کہ دہ رورہے ہیں تھم ہوا کہ لوٹالاؤ۔لائے گئے تو بولاشا بیعقل آ گئی ہے موت نے ہوش ٹھیک کردیے۔حفرت عبداللہ بن حذافہ مین کر ہنے اور فرمایامیرے آنسووں سے تھے دھوکالگاخدا کی شم میں موت کے ڈرسے نہیں رویا بلکداس وقت دل میں بیرسرت اور تمنا پیدا ہوئی کدافسوں میرے یاس صرف ایک جان ہے جواس وقت پیش کرد باہوں۔کاش میرے یاس ہزار جانیں ہوتیں تو آئیں بھی ای طرح اللہ کی راہ میں قربان کردیتا۔بس بیمنا آنسوں بن کرٹیک بڑی اور جھ کوخیال ہوا کہ میں موت سے ڈرگیا۔ بادشاہ اس جذبہ جن سے مرعوب ہو گیا اور کہنے لگا کہ میں تھے چھوڑ دوں گا بشرطیکتم میری پیشانی کوایک بوسددے دوسوچ کر بولے تنہا مجھے چھوڑ دے گایامیرے سب ساتھیوں کو بھی؟ بادشاہ نے جواب دیا،سب کو بفر مایا منظور ہے۔ بادشاہ نے در بار سجایا اور انہوں نے اس کی پیشانی کو بوسد دیا اور سب کو چھڑ الائے۔ (کیافہم تھی صحابہ ا ا فیض الباری جا ص ۲۸ فہم تھی صحابہ کی ، سوان اللہ) جب بید یہ منورہ پنچ اور امیر المؤمنین کو واقعہ کی اطلاع ملی تو دربار سجایا اور فرمایا کہ اس جانباز کا حق ہے کہ آج مرفض اس کی پیشانی کو بوسہ دے چنانچ سب مسلمانوں نے بوسہ دیا اور خود امیر المؤمنین نے بھی ابوسہ دیا۔ حلیث اول کا جو اب ا : …… کی بیشی کمال ایمان میں ہے اور محبت و بعض فی اللہ ای الیمان میں من الایمان میں من تعیضیہ نہیں ہے بلکہ ابتدائیہ ہے۔

جو اب ٣: يرحديث ابوداؤدكى با كرسارى حديث قل كى جائة وحفيدكى دليل بنتى باوروه يول ب- اخرج ابو داؤد مِن حديث ابى امامة ((ان رسول الله عَلَيْكُ قال من احب الله و ابغض الله و اعطى الله و منع الله فقد استكمل الايمان) ٢ اب اس مين الحب فى الله من الايمان كلفظ بى تهين مين الى طرح ديكرروايات مين بحى يرفظ من الايمان تهين مين الى المراح ديكرروايات مين بحى يرفظ من الايمان تهين -

و کتب عمر بن عبدالعزیز ت :عربن عبدالعزیز نے مسئلہ پوچھنے کے طور پر لکھا، فرائفل سے مراد اعتقادات ہیں، شرائع سے اعمال مراد ہیں، حدود سے منہیات مراد ہیں اور سنن سے مستجات و مندوبات مراد ہیں ہے کہ اس سے بھی ترکیب ایمان اور ایمان میں کی بیشی کو ثابت کررہے ہیں۔ جہاں انھوں نے ترکیب اور زیادت و نقصان کو ثابت کر نے کسعی فرمائی ہے وہاں حفیہ کو بھی موقع ویدیا کیونکہ فقد است کمل الاہمان فرمایا ہے حتی کہ حافظ این جر نے بھی کہ دیا فالمواد انھا من المکملات کہ یہ ایمان کے اجزاء تھیلیہ ہیں ہے۔ پس معلوم ہوا کہ امام بخاری یہ دلئل حنفیہ کی ردمیں نہیں بیش کررہے بلکہ مرجہ کے خلاف بیش فرمارہے ہیں۔

فائده: سسکتب عمر الخ يتعليقات بخارى عيد

وقال ابراهيم ٤ لِيَطُمَئِنَّ قَلْبِي:

الشكال: قول ابراہيم عليه السلام قرآن پاك ہے قوماسبق ميں مذكورآيات كے ساتھ ذكر كرنا چاہيے تھا؟ جو اب ا: بعض نے يہ جواب ديا ہے كہ چونكہ بيقولِ ابراہيم عليه السلام ہے اس ليے يہاں عليحدہ ذكر كرديا ليك جر صحيح نبيد كرى جر قرق مر مر ن سرة قرير مر ن

لیکن یہ جواب بھے نہیں ہے کیونکہ جب قرآن میں ندکور ہے تو قرآن ہے خواہ جسکا بھی قول ہو دے ۔ حدال ۲: گذری ہوئی آئیر آلہ تا میں زیادیۃ رائمان صراحةً اندکورتھی اور اس آستہ

جواب ۲: گذری ہوئی آٹھ آیات میں زیادت ایمان صراحناً ندکور تھی اور اس آیت سے زیادتی استنباطاً معلوم ہوتی تھی ای فرق کو بتانے کے لیے فصل کیا و

فائدہ:اس آیت کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ ابراہیم علیہ السلام کے ایمان میں پھی کی تھی اس لیے زیادتی کا

سوال کیاانام بخاری بھی اس جماعت میں شامل ہیں یا لیکن یہ بات سرسری ہے اگر غور کیا جائے تو وہی بات سامنے آتی ہے جو ابن ہام نے فرمائی کہ ابراہیم علیہ السلام کا یقین انتہاء کو پہنچا ہوا تھا کیونکہ جب سی چیز کا یقین انتہاء کو پہنچا ہوا تھا کیونکہ جب سی چیز کا یقین انتہاء کو پہنچا ہوا تھا کیونکہ جب سی چیز کا یقین انتہاء کو پہنچا ہوا تا ہے کہ ابراہیم علیہ اللہ تعالی کو سوری اللہ کے بابرارے پاس بیٹھا کے وقال معاذی اجلس بنا نؤ من ساعة: است اور معادّ نے اسود بن ہلال سے کہا ہمارے پاس بیٹھا کے گھڑی ایمان کی باتیں کرتے ہیں یعنی ایمان زیادہ کرتے ہیں۔

وقال ابن مسعود عالیقین الایمان کله: اورابن معودٌ فرمایا که یقین بوراایمان جامام بخاریؒ فظوکل سے استدلال کیا ہے اس لیے کہ لفظ کل سے ذواجزاء (اجزاء والی چیز) کی تاکیدلائی جاتی ہے۔ جو اب: کمال ایمان ذواجزاء نے فس ایمان نہیں۔ ع

وقال ابن عمر ه لا يبلغ العبد حقيقة التقوى:يعن تميك تميك اور بورى طرح تقوى كاتحقق اس وقت تك نهيس موتا جب تك شك كى چيز نه چهوڙ دے _ تقوى كى انتهاء كوذكر كيا جار باہے اسكے ابتدائى درجات بھى تو ہوئك لہذااس ہے كى بيشى ثابت ہوگئ _

جو اب: کمال ایمان میں کی بیشی ہے اس لیے کہ تقوی کے مراتب ہیں۔

وقال مجاهد برشَرَع لَكُمْ مِنَ اللِّينِ مَاوَصَّى بِه نُوحاً: عَابِرٌ ناس كَافْسِرا سُطر حَفر اللّه وقال مجاهد برشَرَع لَكُمْ مِنَ اللّهِ يُنِ مَاوَصَّى بِه نُو حَاً بَسَان وريا الرائى الله المتول كالموري المحمد واياه دينا واحدا دونول كوين كوايك بى قرار ديا حالانكه الكران ودين اورائى المتول كالمان ودين مِن كرار على فرمايا اللّهُ وَ اكْمَلُتُ لَكُمْ دِينَكُمُ تُورَكِيب وجزئيت البت بَوكل المان ووي محتلفة بين جو اب الله عنه حزئية الاعمال والحواب من كل المستدلات ان المراد منه كمال الايمان وهو مركب فلا ضير كي قوله اوصيناك يامحمد واياه دينا واحدا

امام بخاریؓ کی بیان کرد ہفتیر وتشریح برعلامہ بلقینی شافعیؓ التوفی ۲۲۷ھ کے نے اعتراض کیا ہے۔

اعتراض: سسی تصحیف ہے اور درست او صیناک یامحمد و انبیآء ہے واور قاعدہ عربیہ سے معلوم ہوتا ہے تھے تفسیر یہی ہے کیونکہ عمومی قاعدہ ہے کہ صیغہ غائب کی تفسیر غائب سے کی جاتی ہے نیز ایاہ کی ضمیر کونوح علیہ السلام کی طرف رائح کرنا تھے نہیں کیونکہ اس سے ماقبل اور انبیاء بھی مذکور ہیں چونکہ امام بخاری مجاہد سے نقل کررہ ہیں البذااس پر ذمہ داری ہوگی۔ عبد بن حمید، فربی، طبری، ابن منذر نے ای تفسیر کوذکر کیا ہے۔

جواب:علامه ابن مجرعسقلائی نے جواب دیا۔ (۱) ایاہ کی خمیر حضرت نوح علیه السلام کی طرف لوئی ہے اس لیے کہ حضرت نوح علیه السلام اسلسلہ میں اصل ہیں تواصل کا ذکر کافی سمجھا گیا توایاہ کی خمیر سے مراد خاص نہیں بلکہ سب ہی مراد ہیں۔ (۲) روایت نقل دوئتم پر ہے باللفظ وبالمعنی توعار ف عربیت کے لیے روایت بالمعنی جائز ہے تو انام بخاری نے روایت بالمعنی کی ہے۔ علامہ عینی نے اس کے جواب میں فرمایا کہ یہ تھیف نہیں ہے بلکہ سمجھ ہوئے کو آئی آیت مبارکہ میں الگ ذکر فرمایا اور باقی انبیا عمولو ٹے کے ذکر پرعطف کیا کیونکہ جس چیزی وصیت حضرت نوٹ کوکی گئی تمام انبیاء اس میں شریک ہیں ان میں سے ایک کوذکر کرنا باقیوں سے بے نیاز کردیتا ہے۔ مذکرین میں سے نوٹ قرب ہے لہذا اولی یہ ہے کہ میرکواس کی طرف لوٹا یا جائے یا

وقال ابن عباس : شرعة ومنهاجا سبيلا وسنة لف ونشرغير مرتب بي سبيلا منهاجا كي تفير به اورسنة شرعة كي منهاجا براراست، شرعة حجوثار است، تومنهاجا ساصول مرادين اور شوعة سفروع ـ

استدلال ان طرح ہے کہ شرعة و منهاجادین کی تغییر ہے اوردین مرکب ہے تو ایمان کامرکب ہونا بھی ثابت ہوگیا۔ جو اب: کلام لفظ ایمان میں ہے اور اس کے ہم معنی چار (ایمان ، تقوی ، ہدی ، بر) لفظ مانے تھے جن میں شرعة کالفظ نہیں ہے ہیں یہ مانحن فیدسے خارج ہے۔

دعاء کم ایمانکم:یعنی فسرابن عباسٌ قوله تعالیٰ ﴿قُلُ مَایَعُبُو بُکُمُ رَبِّیُ لَوُلَادُعَآءُ کُمُ ﴾ فقال المرادمن الدعآء الایمان . س اسسترکیباس طرح ثابت ہوئی کہ دعاء کم کی تفییر ایمان سے کی عالم میں الدعآء الایمان بین کی بیشی ہوگی نیزتر کیب بھی ثابت ہوگی۔ استدلال بخاری کا جو اب:اس اطلاق کے جواز کا کوئی مئز نہیں وہ جائز بلکہ واقع ہے انکار تونش ایمان میں کی بیشی ہونے کا ہے، وهو لم یثبت بعد س (اوروہ ابھی تک ثابت نہیں ہوا)

(ے) حدثناعبیداللہ بن موسی قال انا حنظلہ بن ابی سفیان عن عکرمہ بن خالد ہم سے بیان کیا عبیداللہ بن موسی نے کہا، ہم کو خر دی حظلہ بن ابوسفیان نے انھوں نے ساعکرمہ بن خالد سے عن ابن عمر قال قال رسول اللہ علی خمس شہادہ ان انھوں نے ابن عمر قال قال رسول الله علی خمس شہادہ ان انھوں نے ابن عمر سے کہ تخصر شیالیہ نے فرمایا،اسلام کی عارت بالی چیزوں پراٹھائی گئے ہے، گواہی دینا اس بات کی کہ لاالہ اللہ وان محمدار سول اللہ واقام الصلواۃ وایتاء الزکواۃ اللہ کے سواکوئی سے خدانہیں اور محملیہ اللہ کے بھیج ہوئے ہیں اور نماز کو دری سے ادا کرنا ،اورز کوۃ دینا اللہ کے سواکوئی سے خدانہیں اور محملیہ اللہ کے بھیج ہوئے ہیں اور نماز کو دری سے ادا کرنا ،اورز کوۃ دینا

الخيرالساري

والحج وصوم رمضان. ا

اور حج کرنا ،اوررمضان کےروز نےرکھنا۔

﴿تحقيق وتشريح

سند كى خوبى:اس مى تحديث،إخباراورعنعند تيول ميل

حدثنا عبیدالله بن موسی ا: اسام کوت بیدی گئی ہے خیمہ کے ساتھ ، یا ستعارہ ہے۔ استعارہ مجازی ایک فتم ہے۔ حقیقت اور مجاز کے لیے علاقے کی ضرورت ہوتی ہے اگر علاقہ تثبیہ کا ہوتو اساستعارہ کہتے ہیں۔ اگر الفاظ تشبیہ ملفوظ یا مقدر ، ہوں تو تشبیہ کہاجا تا ہے ، اور اگر نہ ملفوظ ہوں اور نہ مقدر ہوں تو استعارہ کہتے ہیں۔ اگر مشبہ بہ بول کر مشبہ بدیر اولیا جائے تو استعارہ با کہنا یہ مرادلیا جائے تو استعارہ با کہنا یہ ہوار اگر مشبہ بدک لواز مات مراد لیے جائیں تو استعارہ تحییلیہ ہے۔ اور اگر مشبہ بول کر مشبہ بدک لواز مات مراد لیے جائیں تو استعارہ تحییلیہ ہے۔ اور اگر مشبہ بول کر مشبہ بدک لواز مات مراد ہے جائیں تو استعارہ تو سیحیہ ہے تا میں تو سیحیہ ہے تا میں تو سیحیہ ہول کر مشبہ بول کر مش

واذا المنية انشبت اظفارها ۞ الفيت كل تميمة لاتنفع

توہنی الاسلام علی حمس میں استعارہ ترشیبہ بھی ہے ، تخیلیہ بھی ہے اور استعارہ بالکنایہ بھی ہے۔ اسلام کو خیمہ کے ساتھ تشبیہ دی گئی ہے یہ استعارہ بالکنایہ ہے اور بناء کا ذکر کرنا یہ استعارہ تخیلیہ ہے۔ اور حسس دعائم (یانچ ستون) کوٹابت کرنایہ استعارہ ترشیجیہ ہے

شهادة: مجرور بوتو بدل ہے خس سے منصوب ہوتو اعنی کا مفعول بہ ہے اور مرفوع ہوتو مبتدا ، محذوف کی خبر سے والو اجح هو الاول۔

سوال:اسلام كان يانج كعلاوه اورجهي اركان بين ان كوكيون ذكرنه كيا؟

جو آب أ:يه عديث بل از مشروعيت كى هم "واغرب ابن بطال فزعم أن هذالحديث كان أول الاسلام قبل فرض الجهاد " س لا يحفى مافيه.

جواب ٢: فرض عين كوذ كركر نامقصود باورجها دفرض عين ندتها-

جو اب س: مقصودتحد پزئیں ہے بلکہ صرف فرائض مہمہ کا ذکر ہے۔ ایک میں میں میں میں میں میں ایک کا میں میں ایک کیا ہے۔

سوال: فرائض مهمه كاذكر مقصود ہے توان یانچ كى تخصیص كيوں فرمائى؟

هی امام بنارگی اس مدیث کو حمرتبدائے میں دومری بار آب الخیر میں ایے مرة القاری نتا حسمال علی کان عالمابالقر آن رأسا فید توفی بالاسکدریة سنة ثلث عشرة اوار بع عشرة و ماتبین عمرة القاری نا حسماله ۱۹۹۱ دومر سراوی حظلمنوفی افراه هج تمیر سراوی عکومه بن ابی خالد مات بسکة بعد عطاء و مات عضاء سنة او بع عشرة اور خسس عشرة و مائة فی تحصراوی عبدالقد ن تا مشهرت الله می مشتر العالی منا عشرة القاری نتا اس الله منافق می الله می الله می الله می الله الله می الله می تعدادی می الله م

جواب ا: شراح مدیث نے فرمایا کہ ایمان دو حال سے خالی نہیں اعتقاد سے متعلق ہوگا یا اعمال سے ظاہر ہے اعتقاد کے بغیر تو ایمان ہوتا ہی نہیں اسکے بڑے ستون شہادتین ہیں اس لیے ان کوذ کر فرمایا۔رہ گئے اعمال سووہ تین تم پر ہیں۔ (۱) بدنی (۲) مالی (۳) ان دونوں کا مجموعہ

اعمال بدنی جیسے نماز اور روزہ عملِ مالی جیسے زکو ۃ عملِ مرکب جیسے جج۔ جو اب ۲: بعض نے اس طرح بیان کیا کہ اعمال قولی ہوئے یافعلی بقولی شہاد تین ہیں۔ فعلی دوشم پر ہیں۔ ا

۲: وہ جن میں مجوبیت کی شان ہے۔ نماز اور زکوۃ میں صاکیت کی شان ہے۔ اور روزہ اور جے میں مجوبیت کی شان ہے۔ اور روزہ اور جے میں مجوبیت کی شان ہے۔ اب آپکو بینکت ہوں اقامة صلوۃ اور ایتاء زکوۃ کواکشا کیوں ذکر کیا گیا۔ مناسبۃ بتر جمۃ الباب یہ ہوگئ سے ترکیب اسلام ثابت ہوئی۔ مناسبۃ بتر جمۃ الباب یہ ہوگئ سے ترکیب اسلام ثابت ہوئی۔ مسائل مستنبطہ: سن (۱) ساقر ارباللمان ضروری ہے۔ (۲) سارکانِ اسلام کی اطلاع ہوگئ (۳) سلفظ مصائل مستنبطہ: ترآن میں مرکب بولنا چاہیاں لیے ۔ قرآن میں مرکب مرکب بولنا چاہیاں لیے ۔ قرآن میں مرکب فرد ہوادران کا متدل روایت بالا ہے۔ فرکور ہے اور نام مرکب ہوگئ بیں ہے تھی فرہب جہور کا ہوادران کا متدل روایت بالا ہے۔

(س) ﴿ باب امورِ الایمان ﴾ یہ باب ایمان کے امور کے بیان میں ہے

وُقُولُ الله عزوجل لَيُسَ الْبِرَّ اَنُ تُولُّواُ وُجُوهَكُمُ قِبَلَ الْمَشُرِقِ وَالْمَغُوبِ اور الله تعالى كے اس قول میں نیکی بہی نہیں ہے کہ (نماز میں) اپنا منہ پورب یا پیچم کی طرف کرلو، وَلَكِنَّ الْبِهَ وَلَكُمْ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰمِلْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰ

وتحقيق وتشريح،

ربط اول: ۱۰۰۰۰ اس باب كاما قبل سے داط بیہ کہ پہلے باب میں تھابنی الاسلام علی حمس اس سے وہم پیدا ہوتا تھا کہ ایمان، اسلام علی حمس اس سے وہم پیدا ہوتا تھا کہ ایمان، اسلام کے صرف پانچ ہی اجزاء ہیں امام بخارگ نے اس وہم کودور کرنے کے لیے امور الایمان کاباب قائم فرمایا سے ربط ثانمی نے دوسرار بط بیان کیا ہے کہ ایمان کے اجزاء دوشم پر ہیں اراجزاء ھیقیہ ۲۔ اجزا، محند باب بیس صرف اجزاء محبنہ کاذکر ہے۔ باب بیس صرف اجزاء محبنہ کاذکر ہے۔

ل باره ٣ سورة البقره أيت عندا ع باره ٨ سورة النومنون آيت السع تقرير خارى عال س

عنوان کے بعددوآ بیتی ذکر فرمائیں ذکر آ بیتین سے مقصوداستدلال ہے پس بیآ بیتی دعویٰ نہیں بلکہ دلیل ہیں اللہ مسوال :ان دوآ بیوں کو کیوں خاص کیا؟

جواب:اس ليے كمان ميں بسط اور تفصيل سے امور ايمان مذكور ہيں ت

کیس البو ان تولوا و جو هکم: یه یت یهوداورنساری کردین نازل هوئی جب تحویل قبله کاهم نازل هواتو یهوداورنساری نے اعتراض کیا که اس نبی کا کچھ په ہی نہیں چلنا بھی کہتا ہے بیت الله کی طرف منه کر واور کھی کہتا ہے بیت المقدس کی طرف، الله تعالی نے فرمایا که نیکی یہی نہیں ہے کہ شرق یا مغرب کی طرف منه کر کے نماز پڑھلی جائے نیکی تواطاعت اورایمان ہے جس جہت کا بھی تھم ہوجائے۔

نحوى اشكال: البرَّ: مصدرے اور مَنُ امَنَ ذات بِيرِ ممل مُعيك بمين؟

جواب ا: بر كى جانب يس مضاف محذوف مان او اى ولكن صاحب البراو ولكن ذاالبر.

جواب ٢: مَنْ امَنَ كَى جانب مِن مضاف محذوف مان لواى لَكِنَّ الْبِرَّ برُّمَنُ المن. ع

جو اب سا: مجازلغوی ہے بر مجمعنی بار مبالغہ کے لئے، زیرعدل کے بیل سے ہے۔

قد افلح المو منون:قال البعض "ويحتمل ان يكون تفسيراً لِقوله المتقون هم الموصوفون بقوله ﴿قَدُ اَفُلَحَ الْمُوْمِنُونَ ﴾ الخ "قلت لايصح هذا ايضاً في الراجح انه اية مستقلة اس آيت من بحي آخر تك صفات مؤين كابيان بهاس عملوم بواكه ايمان بسيط بيس بلكم كب بهاس ليركه باب امور الايمان مين اصافت بيانيه كدوه امور جوبعنه ايمان بين ان كاذكر بهام بخاري كااثاره إدبر بحى به كديا براء إيمان بين من المام بخاري كي استدلال كاجواب: جسمعني مين ان كا اجزاء بونا ثابت بوتا بهاس كم مشربيس كونكه بم أخيس فروع كمة بين اور چا بموتوا براء بحى كه سكة بوسرا يسا براء بين كدان مين سه كى برء ك مشربين كونكه بم أخيس فروع كمة بين اور چا بموتوا براء بحى كه سكة بوسرا يسا براء بين كدان مين سه كى برء ك نه و نه سايمان كا انقاء بوجائ ق

(۸) حدثناعبدالله بن محمد ، الجعفى قال ثنا ابوعامر العقدى قال ثناسليمان بن بلال بم سع بيان كياعبدالله بن محمد ، الجعفى قال ثنا ابوعامر عقد كُن ني كها بم سع بيان كيا ابوعام عقد كله بم سع بيان كيا البيان كي سائم اور كه اور شاخيل بيل الورياء ايمان كي سائم اور كه اور شاخيل بيل اور حياء ايمان كي سائم اور كه اور شاخيل بيل اور حياء ايمان كي ايك شاخ به

وتحقيق وتشريح

للناس هم ولى همان ۞ فقد الجراب وقتل عثمان

عن ابى هويرة هي : سوال: برية ، برة كي تفغير به اور ابوكا مضاف اليه به تواسي التاء كيول برجة بين بكسر التاء يؤهنا عابي؟

جواب: يغير مصرف ہے۔

فائدہ: آپ کہیں گے کہ بیمر کب اضافی ہے منع صرف تونہیں ہے پھر غیر منصرف کیے ہوا؟ تو اس کا جواب بیہ ہے کہ کٹر ت استعال کی وجہ سے اسکو کم بنادیا گیا۔

الایمان بضع و ستون شعبة:اس مدیث می ایمان کو مرے بھرے درخت سے تشبید دی یہ استعاره بالکنایہ ہادر شعبة کاذکر استعاره تخیلیہ ہے اور عدد کاذکر استعاره ترشی یہ ہے۔

سوال: بظاہر بیحدیث اس دوسری حدیث کے معارض معلوم ہوتی ہے کہ جس میں بضع و سبعون ندکورہے؟ جو اب ا: عدوقلیل کثیر کے منافی نہیں کیونکہ عدد کثیر عددقلیل ہی ہے معثی وزائد۔

ل اخبه مسلم، الترخدي في الايمان النسائي في الايمان وابن ماجة في السنة بيني جها ص١٢٥ ترعمة القاري جها ص١٢٣ س اييناً س عيني جها ص١٢١٠

جواب ٢: حضور عليه كوشعب الايمان كا تعليم تدريجاً دى كئي مكن برجب بضع وستون فرماياس وقت استن بى تعليم كئے محتے مول _

جواب ۳: بعض شعبول میں فرق بہت کم ہے تو جن رواۃ نے فرق کو طحوظ رکھا ہے انہوں نے ہر شعبہ کو علیحدہ علیحدہ شار کیا تو تعداد کم ہوگئ تو صرف لفظی علیحدہ شار کیا تو تعداد کم ہوگئ تو صرف لفظی فرق ہیں۔ فرق ہیں۔

فائده: علماء نے ان شعبوں کو جمع کرنے کی کوشش کی ہے اس سلسلے میں سب سے زیادہ جامع کتاب دشعب الایمان للبیہ قی "ہے۔

الحیاء شعبة من الایمان: اس روایت ش اختصار بعض روایات ش اعلی اورادنی کا بھی ذکر ہے اعلی درجہ شہادت قول (لااله الالله) ہاورادنی ((اماطة الاذی عن الطویق)) ہے ل

حضرات صوفیاء کرام فرماتے ہیں کہ ادنی سے مرادکم درجہ ہیں بلکہ ادنی بمعنی اقرب ہے اور اذکی سے مرادش اور اسکی شہوات ہیں اور مطلب یہ ہے کہ طریق تزکیہ کے لئے نفس کو درمیان سے ہٹادیا اقوب الی الایمان ہے۔ مسوال:اس روایت میں حیاء کو خصوصیت سے ذکر فرمایا حالا تکہ یہ درمیان والا شعبہ ہے اس پر سوال ہے کہ اعلیٰ اور ادنیٰ کا ذکر توضیح ہوسکتا ہے کیان وسطانی کوذکر کرتا می نفسی کیونکہ وسط میں اور بھی شعبے ہیں اسکے ذکر کی کیا خصوصیت ہے؟ محق متحضر ہونے چامییں۔ (۱)انقباض النفس عن القبائح جواب ا: جواب جانے سے پہلے حیاء کے معنی متحضر ہونے چامییں۔ (۱)انقباض النفس عن القبائح وترکہا لذاک (۲)التجنب عن الاذی (۳)ترک الفعل لخوف الملامة اور ترک مایلام علیه.

توحیاء ایک ایک صفت ہے جس کو بی حاصل ہوجائے وہ بہت سارے قبائے کو چھوڑ دیتا ہے تو چونکہ بیبت سے امور کا مدارہ اس لئے اس کو خصوصیت سے ذکر کیا اور مشہور جملہ ہے ((اذا فاتک الحیاء فافعل ماشنت))اور حدیث یاک ہے اذا لم تستحیی فاصنع ما شنت ع

جواب ٢: حياء كوخصوص بالذكراس لئے فرمايا كه اسكے بارے ميں شبہ بوسكتا تھا كه شايد ميشعب ايمان سے نه موقاس شبہ كازالد كے ليے فرمايا ((الحياء شعبة من الايمان))۔

سوال: دوسرے جواب سے ایک سوال پیدا ہوتا ہے کہ حیاء ایک فطری اور طبعی امر ہے اور ایمان کسی، پس حیاء ایمان کا شعبہ کیسے بنا؟

المسلم شريف ج اص ٢٠٠ ع بخاري شريف ج ٢٠٥٠ ١٠٠

جوابِ اول:ایک بے نفس حیاء (حیاء کا پایا جانا) بدام فطری ہے اور ایک ہے حیاء کے شرات اور اس پر مرتب ہونیوالے نتائج مثلا بمقتصائے حیاء کوئی کام کرنا یانہ کرنا ، یہ شمرہ حیاء اختیاری اور کسی ہے۔ اور صدیث میں (کسی) شمرہ ہی مراد ہے۔ فالحیاء شعبة من الایمان۔

جوابِ ثانی: حیاءابتدا بنظری امر بیکن انتهاء کسی موجاتی ہے۔

جو ابِ ثالث: حیاء کی دونتمیں ہیں (۱) طبعی (۲) عقلی ۔ پس جس حیاء کوشعب ایمان قر اردیا وہ عقلی ہے اور وہ کسی بھی ہے مطلب بیہوا کہ ایک تو حیاء طبعی ہے جو اللہ تعالی کی طرف سے عطاء کی گئی ہے بیروہبی ہے اور ایک ہے کہ اس حیاء کے مقتصیٰ پڑمل کرنالہذا ہتقاضائے حیاء جو کام کیا جائیگا وہ حیاء عقلی ہوگا یا

بعض نے حیاء کے بین شعبے بیان کئے ہیں

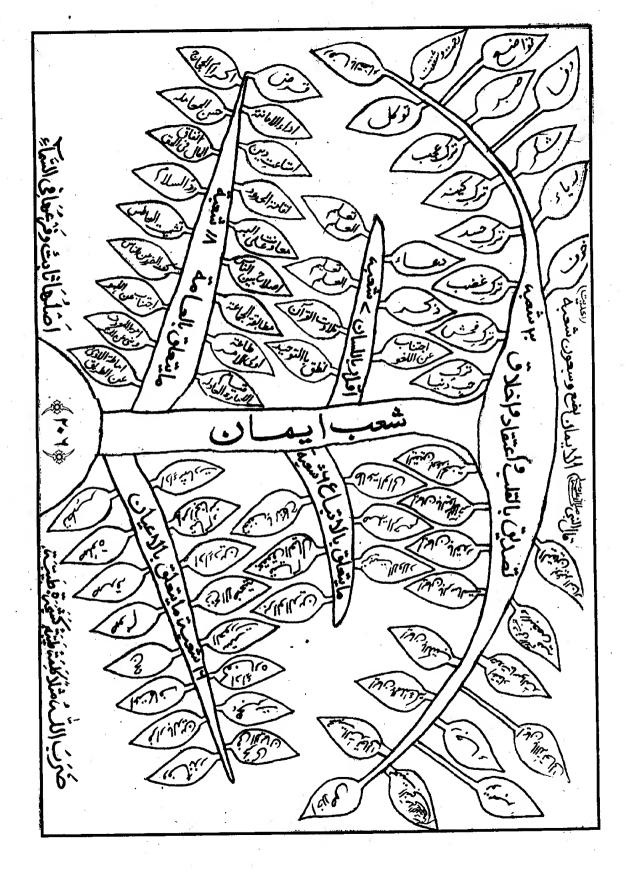
(۱) حياء عرفي:عرف جس كوتيج سمجها سيرّك كرنا جيه لقمه گر جائے تواثما كركھانا ـ

(٢) حياءِ عقلي:عقل جس كونتيج قرارد ك المنترك كرنا

(٣) حياء بشرعى: شريعت جس كوتيح قرارد التركرنا مديث مين حياء شرى مراد بندكم في وعقل ع

ترذى من الله على الل

مناسبة بترجمة الباب:اس مديث كى ترجمة الباب سے مناسبت ظاہر بے كونكه اس مديث ميں فرمايا كه ايمان كي الله على فرمايا كه ايمان كابت بوگيا۔



(مم)

المسلم من سلم المسلون من لسانه ويده المسلون من لسانه ويده مله ملم المسلون من لسانه ويده المسلون من لسانه ويده المسلون من لسانه ويده المسلم الم

(۹) حدثناآدم بن ابی ایاس قال حدثنا شعبة عن عبدالله بن ابی السفر واسماعیل بم سے بیان کیا آدم بن ابوایا س نے کہا ہم سے بیان کیا شعبی عن عبدالله بن عمرو عن النبی علیہ الله قال المسلم من انھوں نے (عام) شعبی عن عبدالله بن عمرو عن النبی علیہ قال المسلم من انھوں نے (عام) شعبی سے مانھوں نے عبدالله بن عمرو عن النبی علیہ سلم المسلمون من السانه ویده والمهاجر من هجر مانهی الله عنه لے مسلم المسلمون من لسانه ویده والمهاجر من هجر مانهی الله عنه لے جس کی زبان اور ہاتھ سے مسلمان نیچر ہیں۔ اور مہاجرہ م ہے وان چروں کوچھوڑ دے جن سے اللہ تعالی نے منع کیا اور کہا اور کہا اور کہا اور معاویة ثنا داؤ دبن ابی هندعن عامر قال سمعت عبدالله وقال ابو معاویة ثنا داؤ دبن انھوں نے عامر (شعبی) ہے ، کہا کہ میں نے نا عبدالله بن عمر ویعحدث عن النبی علیہ وقال عبدالاعلی عن داؤ د عبدالله بن عمر ویعحدث عن النبی علیہ کی مدیث بیان کی اور عبدالله بن اس کوروایت کیاداؤد سے عامر عن عبدالله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ عن عبدالله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ عن عبدالله عن النبی علیہ الله عن عامر عن عبدالله عن عن عبدالله عن عامر عن عبدالله عن عبدالله عن النبی علیہ الله عن عن عبدالله عن النبی علیہ الله عن النبی علیہ الله عن عبدالله عن عامر عن عبدالله عن النبی علیہ الله عبدالله عن النبی علیہ الله عن عبدالله عن عبدالله عن عبدالله عن النبی علیہ الله عبدالله عن عبدالله عبدالله عن عبدالله عن النبیہ عبدالله عبدالله

وتحقيق وتشريح

اس مدیث کی سند میں چھراوی ہیں، چھے راوی عبداللہ بن عمر وہیں، باپ سے پہلے مسلمان ہوئے، کان غزیر العلم مجتهدافی العبادة و کان اکثر حدیثامن اِبی هریرة ". ع

ترجمة الباب:اس باب میں حدیث ہی کے ایک مکڑے کو ترجمۃ الباب بنایا ہے اس لیے ترجمۃ الباب کی حدیث کے ساتھ مناسبت واضح ہے۔

ربط: وہی ہے جوباب سابق میں بیان ہوااور آئندہ بھی یہی ربط ہوگا جو کہ تین طرح ہے۔

المسلم من سلم المسلمون:مبتدااور خبر دونول معرف بین بظاهر حصر بوگامعنی بیهو نگے که سلمان وای بی که دوسرے سلمان الح

منوال اول: بیر حصر درست نہیں ہے کیونکہ اس سے تو بیر معلوم ہوتا ہے کہ اگر کوئی مسلمان دوسر مے مسلمان کو امام بناری بیدیث بناری شریف میں دورات نے قومالا خایث (۱۰ م ۱۳۸۳، داراللام للنشر دانوز کے الریاض) ع فیش الباری جو سام می بی جا سامی ستائے تو سیستانے والا کا فرہوجا تا ہے حالا نکداییانہیں ہے؟

جواب: اسكى تين توجهيں ہيں۔

التوجيه الاول:الف لام عهدى إلمسلم عمرادكالل ملمان ي-

التو جیه الثانی: یه حرمبالغه کے لیے ہے کہ ایک مسلمان سے دوسرے مسلمان کا سلامت رہنا اتا ضرور ک ہے کہ اگر ایسانہ ہواتو گویاوہ مسلمان ہی نہیں ہے۔

التوجيه الثالث:تنزيل الناقص بمنزلة المعدوم

سوال ثانى: المسلم من سلم المسلمون مين مسلمون ندكركا صيغه باس سے معلوم ہوا كه عورتول كورتول كورتول كورتول كورتول كالله كورتول كالله كالله

جواب: قرآن وحدیث کے بے ثاراحکام ایسے ہیں جن میں ذکر کے صینے استعال ہوئے اور مؤثات تبعاً شامل ہیں۔ یہاں ایسا ہی ہے۔ شامل ہیں۔ یہاں ایسا ہی ہے۔

من لسانه ويده:سوال اول: المان اوريدى تخصيص كيوسى؟

جواب: سیخصیص احر ازی نہیں بلکہ اغلبی ہے کہ عام طور پرانسان ہاتھ اور زبان سے ایذاء پہنچاتا ہے غرض کی ہے کہ عام عرب کے اس کے در است کے سکو تکلیف نہ پہنچائے۔

سوال ثاني: يداوراسان مين مين اسان كومقدم كول كيا؟

جو ابِ او ل: لسان سے جو تکایف بینیچی ہے وہ جاہ کی ہے اور ہاتھ سے جو تکلیف بینیجی ہے وہ ال اور جان کی۔

شرح آئی یہ ہے کہ انسان جودوسر کے ونقصان پہنچاتا ہے وہ تین قتم پرہے انقصانِ جاہی ۲۔ نقصانِ مالی ۳۔ نقصانِ جانی۔ اور جاہ کا نقصان سب سے بڑا نقصان ہے اور وہ زبان سے ہوتا ہے اس لیے اسان کومقدم کیا۔

ب جو اب ثانی:ایک نقصان دائی ہوتا ہے دوسراعارضی ، جاہ کا نقصان دائی ہے مال وجان کا عارضی اور جاہ کا

نقنسان جو کہ دائی ہے وہ زبان سے ہوتا ہے اس کیے لسان کومقدم کیا۔

جراحات السنان لهاالتئام 🤀 ولايلتام ماجرح اللسان

پنجانی میں اس کاتر جمہے۔

الموارال دیے پھٹ مل جاندے اللہ الولال دے پھٹ کیں ملدے الہری کا، تیر کا، تلوار کا گھاؤ کھرا کے اللہ جو زخم زبان کا رہا ہمیشہ ہرا

جواب قالت: سلان سے ماضی ، حال ، سنقبل تمام کے لحاظ سے نقصان پہنچ سکتا ہے تو اسان کی ایذ آورسانی مام ہے بناوف ہاتھ سے اللہ اگر ہاتھ سے لکھ دے لکھ دے تو یہ بھی زبان کے برابر ہے بلکہ بیتو ہیں اشد ہے لے

ا(يوش سهر يني شر۸۴)

سوال ثالث: لمان كها كلام كول نه كها؟

جواب أول: لمان كلام كا آله باس لي بطور ماز آلة كلام ذكركر ككلام مرادليا

جو آبِ ثانی: بعض اوقات انسان بولتانہیں بلکہ زبان سے اشارہ کر کے دوسر کے و تکلیف پہنچا دیتا ہے۔ اشکال: پوری حدیث کے مضمون سے متعلق ایک اشکال ہے وہ یہ کہ جب اسلام میں ایک مسلمان کے لیے دوسرے مسلمان سے سلامتی ضروری قرار دی گئی تو اس سے لازم آتا ہے کہ کسی مسلمان کو حدایا قصاصاً بھی قل نہ کیا

جائے کیونکہ بیسلامتی کے خلاف ہے؟

جواب: سلامتی دوشم کی ہے۔ اے سلامتی افراد ۲۔ سلامتی جماعت

مسلمان وہ ہے جس ہے مسلمان جاعت کی سلامتی وابسۃ رہ بعض لوگ ایبا جرم کرتے ہیں جس ہے مسلم معاشرے کی سلامتی متاثر ہوجاتی ہے تو مطلوب سلامتی معاشرہ ہے۔ معاشرہ کی سلامتی کی خاطر اس کو ماراجائے گا کیونکہ سلامتی معاشرہ سلامتی افراد سے مقدم ہے جیسے بدن پرکوئی ایبانا سورہوجائے کہ باتی بدن کے خراب ہونے کا اندیشہ ہوتو اس کا طن دیاجائے گا کہ باتی بدن سلامت رہے۔ تو حدوغیرہ سلامتی کے خلاف نہیں ایک وفاقی وزیرنے کہا کہ اسلامی حدوظلم ہیں سب سے پہلے یہ جملہ مودودی نے کہا کھر پرویز نے کہا (العیاذ باللہ من ذکر کی) اب تو اس جس ترمیم کی کوششیں ہورہی ہیں۔ الممھاجو من ھجو مانھی اللہ عنه:اس میں حضور علیات نے مہاجر کامل کی تعریف فرمائی ہے۔ بجرت کی دوشمیں ہیں۔ (۱) ہجرتے ظاہری۔ وارالفساد سے دارالا مان کی طرف یا دارالکفر سے دارالا سلام کی طرف قبل مکانی (۲) منہیات کوچوڑ تا۔ آپ بھیات کوچوڑ دے۔ طرف قبل مکانی (۲) منہیات کوچوڑ تا۔ آپ بھیات کے جو گان ہوں کو بھی جو گرا ہوں کو بھی جو گرد ہے۔ کا ابو عبداللہ:ام بخاری گی گئیت ہے بھی اپنے آپ کوائی گئیت ہے دکر فرمائے ہیں اور بھی جم بن اسامیل کہ کرا معام با بن کے کھی میں ہے ہیواضع کے طور پرغائب کے صیف ہے ذکر کرتے ہیں کی کہ قلت اور قلنا میں دوئی اورتعلی ہے۔ کو قال ابو عبداللہ یہ ہے۔ بھی ایک ہور تعلیقیں ذکر فرمائی ہیں ایکے چند فوائد ہیں یا

و میں جو مصوری ، بہلی سند جو ذکر ہوئی اس میں عندند ہے بیعلق اس کیفقل کی تا کہ عنعند میں جوعدم لقاء کا

اخمال ہے وہ رفع ہوجائے۔

فائده ثانيه: قال عبدالاعلى والى تعلق من داؤد مطلق م يهل تعلق ذكر كرك بتاويا كه دوسرى تعلق

مین دا ؤ دابن ابی ہندمراد ہیں۔

فائدہ ثالثہ: دوسری تعلق میں عبداللہ مطلق ذکر ہے اور محدثین کا قاعدہ ہے کہ جب عبداللہ مطلق ذکر کے اور محدثین کا قاعدہ ہے کہ جب عبداللہ مطلق ذکر کیا جائے تو حضرت عبداللہ بن مسعود مراد ہوتے ہیں جبکہ یہاں پر مراد عبداللہ بن عمر و بیں محلق سے بیدا ہوئے والا غلط وہم بھی پہل تعلق سے دفع ہوگیا۔

إعمرة القاري ج اص١٣٣

سوال: پہلی روایت میں شعبی کاذکر ہے دوسری روایت میں شعبی کاذکر نہیں ہے تو متالع کیے ہوا؟ جواب: یادر کھنا چاہیے کہ عامر شعبی ہی کانام ہے بیا جلہ تابعین میں سے ہیں بہت سے صحابہ مجمی ان کے شاگر دہیں بیام ابو حنیفہ کے بھی شخ اور استاد کہیں۔

ره المرورة المرورة (۵) الأسلام افضل المرورة المرورة (۵) المرورة المرو

(۱۰) حدثناسعید بن یحیی بن سعید الاموی القرشی قال ثنا ابی قال ثنا ابوبرده بم سے بیان کیا والد نے ،کہا ہم سے بیان کیا والد نے ،کہا ہم سے بیان کیا ابوبرده ابن عبدالله بن ابی بر دة عن ابی موسیٰ قال قالوا یارسول الله! بن عبدالله بن ابی بر دة عن ابی موسیٰ قال قالوا یارسول الله! بن عبدالله بن ابی ورده نے ،انھوں نے ابوبردہ سے ،انھوں نے ابوبردہ سے ،انھوں نے ابوبردہ سے ،انھوں نے ابوبردہ سے ،انھوں نے ابوبردہ نے ویدہ یا الاسلام افضل؟قال :من سلم المسلمون من لسانه ویده یا کون یا ایام افضل ہے؟ آپ علیہ نے فرمایا :جس کے ہتھ اورزبان سے مسلمان نے رئیں

﴿تحقيق وتشريح ﴾

اس باب کونابت کرنے کے لیے حضرت ابوموی اشعری کی روایت نقل کی روایت الباب سے رجمۃ الباب کا تعلق واضح ہے۔ مسو ال: سوال وجواب میں مطابقت نہیں ، سوال خصلت اسلام سے متعلق ہے اور جواب میں وات کا ذکر ہے؟ جو اب: سوال وجواب میں دوطرح سے مطابقت ہے۔

تطبيقِ اول: سوال كى جانب مضاف محذوف مان لواى ذى حصلة الاسلام افضل يا جواب كى طرف مضاف محذوف مان لو اى حصلة من سلم المسلمون ل

تطبیقِ ثانی: سسیہ جوار علی اسلوب انکیم ہے کہ سائل کے سوال سے زائد جواب دیا جائے جس زائد کا معلوم ہونا سائل کے لیے ضروری تھا یا سائل کا سوال ناقص ہواور جواب کامل دیدیا جائے یہاں سوال خصلت کے متعلق تھا، آ ہے اللہ نے خصلت اور ذی خصلت دونوں کے متعلق بتادیا۔

سوالِ ثانی:اس مدیث میں صحابہ فی سوال کیا ((ای الاسلام افضل؟)) جواباً فرمایا ((من سلم المسلمون من لسانه ویده)) دورری روایت میں ہے ای الاعمال احب ؟ جواب میں فرمایا الایمان بالله بعض روایات میں ہے ((ای الاسلام افضل؟)) جواب میں فرمایا ((تطعم الطعام وتقوء السلام)) ایک روایت میں ہے ((ای الاسلام افضل؟)) جواب میں فرمایا ((الصلوة لمیقاتها)) توان سب میں تعارض ہے؟ روایت میں ہے اورکی وقت کی ملکی فضیلت ہوتی ہے اورکی وقت کی ملکی ، جہاد کی ضرورت کے وقت جہاد کی ، قط کے وقت اطعام الطعام کی، وعلی هذا القیاس

جو اب ٢: اختلاف في الجواب مع الاتحاد في السوال بوجه اختلافِ احوالِ سائلين كهم مثلااً كر سائل مين شان سلامتى كى كمي م تواسم من سلم المسلمون الخجواب ديا اورا كرسائل تجون بهوتواس تطعم الطعام النح جواب دياع شاه اسخن صاحب كامقوله م كه دنيا مين سب سن زياده عجيب بات بيه كملاخي بوء شيخ سعدي قرمات بين -

چشم مور وپائے مار ونان مُلّا کس ندید

جواب سا: احتلاف فی الجواب اختلاف فی السوال کی وجہ ہے ہے بھی السلام حیر ہے موال کیااور بھی ای الاسلام افضل سے ۔ افضل فضائل ازمہ ہے ہوتا ہے جسے علم وغیرہ اور خیر فضائل متعدیہ کے اعتبار ہے ہوتا ہے ۔ اس لیے ای الاسلام حیر کا جواب تطعم الطعام سے دیا ۔ ای الاسلام افضل کا جواب من سلم المسلمون ہے دیا کہیں ای الاعمال احب ہے ہوا رکا جواب المصلوة لوقتھا ہے دیا ہی کمال بلاغت ہے کہ ہرموقع پرالفاظ کفر تی کو بھی کرا سکے مطابق جواب دیا ج

ل مدة القارى ج اص ١٣٩ ع فيض البارى ج السينا

جو اب ، فضل الاعمال ایک نوع ہے اسکے مختلف افراد ہیں بھی کسی فرد کاذکر فرمایا بھی کسی فرد کا تو ایک کا فضل ہونا دوسرے کے فضل ہونے کے منافی نہیں۔ یہ جواب مع تفصیل زائد امام طحاویؓ سے منقول ہے۔

کے حضرت تھانوی فرماتے ہیں کہ لوگ اعمال کی تحکمت ہیں کہ فجر میں دور کعتیں کیوں فرض ہوئیں اور ظہر میں چار کیوں؟ وغیرہ دغیرہ میں ایک سب سے بڑی حکمت بتا تاہوں کہ اللہ کی مرضی ہے کیونکہ ہم مل اللہ کی رضاء کے لیے ہوتا ہے۔

یے حکم شرع آب خوردن خطا است 🏖 گر بفتوی خون ریزی روااست

حاصل باب: أن باب من ايك توفرقه مرجه كارد تقاد وسرح قوق العباد كي رعايت كي ترغيب تقى -



(۱۱) حدثناعمروبن خالد قال ثنا اللیث عن یزید عن ابی الخیر آم ہے بیان کیا عمروبن خالد قال ثنا اللیث عن یزید عن ابی الخیر آم ہم ہے بیان کیا عمرو بن خالد نے ، کہا بیان کیا ہم ہے لیٹ نے ،انھوں نے بزید ہے انھوں نے ابوخیر ہے عن عبداللہ بن عمرو ان رجلا سأل رسول اللہ علیہ ای الاسلام خیر نہوں نے عبداللہ بن عمرو آسے ایک مردنے آنخضرت علیہ ہے بوچھا،اسلام کی کون می خصلت بہتر ہے؟

وتحقيق وتشريح

سوال: جب يموقع حذف ان كمواقع مين فيس موتوكي محذوف مان لين؟

جواب:ایک اُنُ ناصبه (مصدریه) ہے اور ایک اُن مصدریه وہ ہے جو کفتل کونصب نہیں ویتالیکن مصدر کے معنی میں کرتا ہے جیسے تسمع بالمعیدی الناس کو اس طرح بھی تعبیر کیا جاسکتا ہے (تا کہ نحوی چیتان نه بن جائے) اُنُ مصدریہ جب این مواقع خذف میں حذف ہوتو نصب ویتا ہے جب غیرمواقع حذف میں حذف ہوتو نصب نہیں ویتا ہے جس غیرمواقع حذف میں ع

بظاہران دونوں میں تعارض معلوم ہوتا ہے۔

تطبیق اول: دورری مدیث مین افضلیت کابیان به فلاتعارض.

تطبیق ثانی: طعام دوسم کا ب_(1) طُعام ضرورت (۲) طعام دعوت و حدیث کا مطلب به بوگا که طعام ضرورت برضرورت مند کو کھلائے۔

ل المام بفارك يوحديث بخارى يس تين بايرال في الآيمال حاديث المام اله الم ١٢٣٦ اخوجه مسلم في الايمان النسائي في الايمان وابو داؤ دفي الادب وابن ماجة في الاطعمة مع بياض صد التي ص٨٦، شرح جاى ص١٨٩ مس مسلم ج٢٥ مد٢٣٧ ترفي شريف ج٣٠ ١٥٠٠

وتقر أالسلام :.....

سوال: بہاں بھی تطعم الطعام کی طرح تسلم السلام فرمادیے تو کلام میں روائل پیدا ہوجاتی؟
جواب: جواب کا بیانداز اختیار فرمایا تا کہ زبان کے ذریعے سلام ہویا تحریکے ذریعے، ہردوکوشامل ہوجائے ل
ملاقات کے وقت سلام کا بیتخفہ پیش کرنا ای امت کو ملا اور کسی امت کو نہ ملا لیکن ہم ناشکری کرتے ہیں۔ سلام
سنت اور اس کا جواب واجب ہے لیکن بیالی سنت ہے جسکا تواب واجب سے زیادہ ہے۔ اسکی کئی خصوصیات ہیں۔ دعا
ہمی ہے، پیغام سلامتی بھی ہے، بشارت بھی ہے یعنی مخاطب کوسلامتی کی دعا بھی دیدی اس کو مطمئن کردیا کہ میری طرف
سے کوئی تکلیف نہ ہوگی تو پیغام امن بھی ہوا اور بشارت بھی ہے عرب کے بدوجس کوسلام کرلیں یا اس کے سلام کا جواب دیدی اس کونیس لوٹے۔

یے عبادت بھی ہے، کیکن ہے عبادت تب بنے گاجب صدیث کے تعلیم فرمودہ طریقہ پر کرہے۔ علی من عرفت و من لم تعرف:اگر کسی کو پہچان کر سلام کرتے ہوتو سے سلام مواجبت ہے یا سلام رشوت، اگر صرف مسلمان دیکھ کر سلام کیا تو سلام عبادت ہے۔

حاصلِ باب:يفهم من هذا الباب :مكارم الاخلاق وفيه اشارة الى عبادة المالى والبدنى وبان لهما دخلٌ في الايمان. ٣

(ک)
﴿ باب من الایمان ان یحب لاخیه مایحب لنفسه ﴾ ایمان کی بات یہ کہ جوابے لیے چاہوں کی اپنے بھائی (مسلمان) کے لیے چاہے

(۱۲) حدثنامسدد قال حدثنا یحیی عن شعبة عن قتادة عن انس ایم سیان کیا مسدد نی ایم سیان کیا مسدد نی ایم سیان کیا تحقی نی ایم سیان کیا تحقی نی انس عن النبی علاقت و عن حسین المعلم قال ثنا قتادة انهوں نے آخضرت المعلم قال ثنا قتادة نهوں نے آخضرت المعلم سے بیان کیا قادہ نے انهوں نے آخضرت النبی علاقت قال الایؤ من احد کم حتی یحب الاحیه مایحب لنفسه استروایت کی الن سے مافوں نے آخضرت علی اسلام سے برایا کہوئی تم میں سے اس وقت تک مومن نہیں ہوتا استروایت کی الن سے مافوں نے آخضرت علی اسلام سے بھائی (مسلمان) کے لیے جا ہے۔

ا تقر ریخاری خاا ص۱۲۱ ت<u>ا</u> درس بخاری ص۱۹۳ <u>سی بیا</u>ض صد کیتی ص۸۳

﴿تحقيق وتشريح

مدیث کی سند میں چورادی ہیں، چھے انس بن مالک میں جنگی کنیت ابو حزہ ہے، نبی پاک مقالت کی دس سال خدمت کی ہے۔ آ کی کل مرویات ۲۲۸ ہیں ا

وعن حسین المعلم: واؤعاطفه ہاورعطف شعبه پرہے که شعبداور حسین دونوں قادہ سے قل کرتے ہیں امام بخاریؓ نے دوسندیں اس لئے ذکر فرمائیں کہ ان کے استاد نے ایسے ہی ذکر کی تھیں سے

ترجمة الباب كى غوض: حديث الباب سرتمة الباب مراحنًا ثابت م تقصوديه كراجزاء ايمان من سيايك يكي على المراحد كالمركز من الباب مربط كي تين تقريري بهلي باب امود الايمان كي تحت كذر يكي بيل باب امود الايمان كي تحت كذر يكي بيل باب امود الايمان كي تحت كذر يكي بيل بيل المعدوم ع المعدوم ع

هفهو ه حدیث: بظاہر بیر حدیث نا قابل عمل معلوم ہوتی ہے بینی بظاہر بیمعلوم ہوتا ہے کہ انسان کو کسی چیز کے استعال پر استقر از ہیں اور وہ کوئی چیز استعال نہیں کرسکا کیونکہ مفہوم حدیث یہی ہے کہ اپنے بھائی کے لیے وہی پندکرے وہلم جو اے مثلا ایک جگہ آپ نے اسکو پندند کرے وہلم جو اے مثلا ایک جگہ آپ نے بھائی کے لیے اسکو پندند کرے وہلم جو اے مثلا ایک جگہ آپ نے بھائی کے لیے اسکو پندند کر کے جہ مثلا ایک جگہ آپ کا لی مومن نہیں اور وہ دومر استیر سے کے اور تیسر ا چوتھ کے لیے بائد نہیں اور وہ دومرا تیسر سے کے اور تیسرا چوتھ کے لیے بائی خیرالنہا ہے۔ آپ کے گھر والوں نے آپ کے لیے بہترین دشتہ تلاش کیا آپ موکن نہیں ہوسکتے جب تک اپنے بھائی کے لیے بید شد پھی پڑھا تھائی کی مومن نہیں پڑھا تھائی کا کرونکہ حدیث پر بھی تو ممل کرنا ہے۔ نیز اس حدیث پر کسی نبی نہ نبی کیا مثلاً سلیمان نے کہا رَبٌ هَبُ لَی مُلْکُالًا یَدُبُونی لِلاَ حَدِ مِنُ بَعُدِی اور قرآن میں اللہ یاک نے نیک بندوں کی دعا کے بارے میں فرمایا وَ اَجْعَلْنَا لِلْمُتَّفِیْنَ اِمَا مَا اور صوفاً اللہ نے فرمایا دعوا لی الوسیلة .

جو اب ا: بیرحدیث استعال اشیاء یا ترجیح مناصب پرمجمول نہیں ہے بلکہ بیرحدیث معاملات پرمجمول ہے ایک دوسرے کے ساتھ معاملات، رہن مہن، لین دین، ان میں اپنے بھائی کے لیے وہ پسند کرے جواپنے لیے پسند کرتا ہے مثلاً خودکوچیٹم بیش، بردہ بوشی پسند ہے تو دوسرے کے لیے بھی یہی پسند کرے۔

جو اب ۲ : بیر مدیث مشاورت پرمحمول ہے کہ کوئی آپ سے کی معاملہ میں مشورہ طلب کرے تو آپ اسکو وہی مشورہ دیں جواپنے لیے پسند کریں۔

جواب ٣: بيحديث معاقبت برمحول بكراكركوئي مجرم بونے كى حيثيت سے بيش موتو اسكے ساتھ ايسا

سلوك كرے جيسا كەاپىيے موقع پراپنے لئے پندكرتا تھا۔

جواب ، برحدیث ایار ، مواثرت پرمحمول ہے کہ اپنی ضروریات پر دوسرے کی ضروریات کوتر جیج دے مثلاً پیاس کی ہے تو دوسرے بھائی کو پہلے پلائے۔ بزرگوں نے لکھا ہے کہ اگر اسی ایک حدیث پرعمل ہوجائے تو سارے جھڑے دفسادات مث جائیں۔اس حدیث پراولی بالعمل علاء کرام ہیں۔

جواب ٥: يوديث مقاسمت برمحول ہے كہ چيزوں كي تقسيم ميں اينے يردوسروں كورج دو_

فائدہ:اسلام جوتعلیم دیتا ہے وہ بیہ ہے کہ ادائیگی حقوق میں عجلت کرے اور مطالبہ جھوق میں صبر کرے۔ سارے اسلامی اخلاق انہی دوچیزوں کے اردگر دگھومتے ہیں۔

خلاصه:اس مديث كامقعدادا كيگي حقوق ب_

ایک مرتبہ آپ ملیف کے کو تقدیم فرمارہ سے کہ کس نے کہا کہ آپ اپ اقرباء کو ترجے دیے ہیں آپ ملیف نے فرمایا کہ اگر میں انصاف نہیں کروں گاتو پھر کون انصاف کرے گا۔ آپ ملیف نے فرمایا میں نے اثرت کو اختیار نہیں کیا میر ب بعد اثرت ہوگی، صحابہ میں نے عرض کیا یا رسول اللہ پھر کیا تھم ہے؟ فرمایا صبر کروا اپنے حقوق کا مطالبہ نہ کروعزیز طلبا آپ میں نہیں ہے۔

(^) هباب حب الرسول عَلَيْسَهُم من الايمان المنظم ا

(۱۳) حدثناابوالیمان قال ثنا شعیب قال ثنا ابوالزناد عن الاعرج بم سے بیان کیا ابویان نے ،کہا ہم سے بیان کیا ابوزناڈ نے ،افعوں نے اعربی سے بیان کیا ابوزناڈ نے ،افعوں نے اعربی سے بیان کیا ابوزناڈ نے ،افعوں نے اعربی عین ابعی هریو او الله علایہ الله علی بیدہ افعوں نے ابوہری اسے کہ آنحم میں میری جان ہواں ہے لایؤمن احد کم حتی اکون احب الیه من والدہ وولدہ بری میں سے کوئی فض (پورا) مؤمن ہیں ہوسکی یہاں تک کہیں اس کے زدید اسکے باپ اوراولا و سے ذیادہ مجبوب نہ وہاؤں ایک کہیں اس کے زدید اسکے باپ اوراولا و سے ذیادہ مجبوب نہ وہاؤں ایک کہیں اس کے زدید اسکے باپ اوراولا و سے ذیادہ مجبوب نہ وہاؤں ایک کہیں اس کے زدید اسکے باپ اوراولا و سے ذیادہ مجبوب نہ وہاؤں

(۱۴) حدثنایعقوب بن ابراهیم قال ثنا ابن علیة عن عبدالعزیز بن صهیب آم سے بیان کیا یعقوب بن ابراہیم نے ،کہا ہم سے بیان کیا ابن علیہ نے ،انھوں نے عبدالعزیز بن صہیب سے عن انس عن النبی علیہ سے میان کیا ابن علیہ نے ،انھوں نے النبی علیہ سے میان کیا ادم بن ابی ایاس قال انھوں نے انس سے ،انھوں نے آخضرت علیہ سے بیان کیا آدم ابن ابوایاس نے ،کہا ثنا شعبة عن قتادة عن انس قال قال رسول الله علیہ انس می سے بیان کیا شعبہ نے ،انھوں نے قادہ سے ،انھوں نے انس سے ،کہا کہ آخضرت علیہ نے فرمایا لایو من احد کم حتی اکون احب الیه من والدہ وولدہ والناس اجمعین . کوئی خص اس وقت تک (پورا) مؤمن نہیں ہوتا جب الیه من والدہ وولدہ والناس اجمعین .

وتحقيق وتشريح،

ترجمة الباب كى غوض:اامام بخارى كى غرض ترعمة الباب سے اثبات تركيب ہے كه آپ الله عليه المان كا جزء ہے۔ كى محبت بھى ايمان كا جزء ہے۔

حدیث کا مفہوم: مفہوم حدیثیہ ہے کہ کوئی بھی اس وقت تک مؤمن نہیں ہوسکتا جب تک کہ میں اس کے زد یک ذکورہ فی الحدیث چیزوں سے زیادہ مجوب نہ ہوجاؤں۔

سوال:من والده وولده والناس اجمعين تين چيزون كاذكر فرمايا والده اس مين تمام اصول داخل بين-ولده : اس مين تمام فروع آگئے اور والناس اجمعين مين تمام لوگ آگئے كين اپني جان (من نفسه) كاذكر نبين فرمايا كه اسكى اپنى جان سے بھى آپ عليہ في ناده محبوب بهون حالانكم ايمان كلمل كرنے كے ليے يہ بھى ضرورى ہے؟ جو اب : اس حديث كوجامع كرنے كے ليے توجيهات كى كئى بين -

التوجیه الاول: انسان کی اپنی جان والداور ولد کے شمن میں آگئی۔ جب حضور علیہ والداور ولد سے بھی زیادہ محبوب ہونگے کیونکہ ان پرآ دمی اپنی جان سے بھی زیادہ محبوب ہونگے کیونکہ ان پرآ دمی اپنی جان تربان کردیتا ہے۔

التوجیه الثانی:انیان کی اپی جان کاذکر و الناس اجمعین میں ہے کیونکہ یہ جھی ناس میں وافل ہے۔
التوجیه الثالث:اپی جان سے زیادہ مجبوب ہونے کاذکر دوسری حدیث میں ہے۔ بخاری شریف میں روایت ہے کہ جھزت عمرضی اللہ تعالی عند نے عرض کیایارسول اللہ آپ اللہ مجھے سب چیزوں سے زیادہ مجبوب ہیں لیکن پسلیوں کے اندر جو جان ہے اس سے نیادہ محبوب نہیں معلوم ہوتے ، آپ علی نے ارشادفر مایا کہ تمرابات نہیں سے گی جب تک کہ بسلیوں میں جو جان ہے اس سے بھی زیادہ محبوب نہ ہوجاؤں۔ حضرت عمر نے عرض کیا اب آپ اپی جان سے بھی

زياده مجبوب بين تو آپ الله في في الله في الآن ياعمر) كا

سوال ثانی: بعض اوقات بال بچوں اور بیوی کی محبت اور یا دستاتی ہے کیکن حضور علیہ کے یا دنہیں ستاتی تو پھر بدآ دی مؤمن کیسے ہوا؟

جو اب او ل: محبت دوشم کی ہے ا....ایک محبت طبعی ۲.....دوسری محبت عقلی ₋

محبت طبعی: جومجت طبعیت کے تقاضے سے ہوجاتی ہے۔

محبت عقلی: جوانسان سوچ سمجه کراین اختیار سے مجت لگا تا ہے۔ یا یوں تعبیر کرلو کہ غیر اختیاری اور اختیاری ۔ حدیث میں محبت اختیاری مراد ہے۔ تقابل سے امتحان ہوجا تا ہے۔ اگر کسی کی بیوی حضور اللہ کے کہ شان میں تو بین آمیز الفاظ استعال کرتی ہے اور بیصبر کرجا تا ہے تو بیہ مؤمن نہیں ۔ لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ بچوں اور بیوی کی ایسی بات کوامتی ہرگز برداشت نہیں کرتا یہی محبت مع الرسول اللہ ہے۔

جواب ثانی: سسبعض محدثین ؓ نے دوسرا جواب دیا ہے۔ لیکن تجیر کا ہی فرق ہے کہ ، ایک حبطبی ہے اورایک حب ایمانی ، حب طبعی سے زائداوراس پرغالب ہوتی ہے ی

و اقعه ۱ : چنانچ دهرت ضائه کاخاوند، بیٹااور بھائی تینوں شہید ہوگئے جبان سے کہا گیا کہ آپ کافلاں بیٹا شہید ہوگئے ہ بان سے کہا گیا کہ آپ بحداللہ محفوظ ہوگئے ہ کاخال سناؤ، جواب ملا کہ آپ بحداللہ محفوظ بیں، کہنے گئیں مجھے دکھلا دو، جول ہی دیدار سے مشرف ہوئیں بولیں کل مصیبة بعد ک جلل (ای حقیر) بی و اقعه ۲ : عبداللہ بن زیدا ہے کھیت یا باغ میں تھے کہ نجھ اللہ کی وفات کی اطلاع پینچی آتو انہوں نے نور آدعا مانگی کہ یااللہ میری بینائی سلب کر لے میں اپنی آئکھ سے اپنے محبوب اللہ کے بعد کی اور کونہیں دیکھنا چا ہتا چنا نچھ انگی یہ دعا قبول ہوئی اور بینائی جاتی ہانی جاتی ہے۔

واقعه سل است حضرت ثمامه بن ا ثال قيدى موكرآئ أسام لان كا بعد فرمات بي كه يارسول الله اسلام سه يهلي آپ اورآپ كاشم سب دياده معوض تهااب آپ اورآپ كاشم سب سن دياده مجوب ب

مجنوں کہتا ہے۔

| الجدار | وذا | جدار | ذا ال | اقبل | ليلى | ديار | الديار | على | امو |
|--------|-----|------|-------|------|------|------|--------|-----|-----|
| | | | | | | | حب | | |

اس محبت طبعی کومحبت عشقی بھی کہتے ہیں لیکن بدانتهائی ناپندیدہ لفظ ہے قرآن وحدیث نے اس لفظ کو

ل بخاری شریف ت س ۹۸۱ ع درس بخاری ص ۱۲۱ سے ایساً سے درس بخاری ص ۱۲۱

استعال نہیں کیا بجو صرف ایک جگہ کے اور وہ بھی فدمت کے طور پر ذکر کیا ہے۔ فرمایا ایا کم ولحون اہل العشق لے عن آلاعو ج:اس سے مراد ابودا کو وعبد الرحمٰن بن ہر مز ہے ، امام مالک اس سے بالواسط روایت کرتے ہیں۔ ایک دوسر ے عبد اللہ بن یزید بن ہر مزین اس سے بلا وسط روایت کرتے ہیں اور اس سے فقہ بھی حاصل کی ہے تو جہاں بھی امام مالک کی سند میں ابن ہر مزآئے گا وہاں عبد اللہ بن یزید بن ہر مزبی مراد ہو نگے۔

(9)
﴿ باب حلاوة الايمان ﴾
سيباب ايمان كى مشاس كے بيان يس ب

وتحقيق وتشريح،

علامہ نودی فرماتے ہیں کہ حلاوت سے حلاوت معنوی مراد ہے کہ دین کے لیے مشقتوں کا برداشت کرنا آسان ہوجائے اللہ کی محبت کی وجہ سے آپ الله کی محبت کی وجہ سے آپ الله کی محبت کی وجہ سے آپ الله کی کا تباع کرتا ہو خلاصہ یہ کہ انتمال کے وقت طبعیت میں ہو جو ، گھٹن بیدا نہ ہواور مشقتیں برذاشت کرنے کے لیے تیار ہوجائے۔

۲ یعض محد ثین ؓ نے فرمایا کہ حلاوت معنوی کے ساتھ ساتھ حلاوت حسی بھی مراد ہو کتی ہے کہ انسان ذکر ، طاعت سے مشھاس ، لذت محسوس کرے ، یبعض اشخاص کے لحاظ سے ہے۔

لے مشکلوہ شریف س ۱۹۱ مام بخاری سریف بین بخاری شریف میں 4 باراہ کے (رقوم الاحادیث: ۱۲ ، ۲۱ ، ۲۱ ، ۲۹ ، ۲۹ ، ۲۹ مطبوعه دارالیسبلام لملنشروالتوزیع الریاض)

ذوق ایں بادہ نه دانی بخدا تا نه چشی

کیکن ذوقیات مجھائیں نہیں جاسکتیں۔

اذا لم تر الهلال فسلم الاناس راؤه بالابصار

مثلا آپ کو بھوک لگتی ہے کسی دوسرے کو بھوک نہیں لگتی آپ اسکو سمجھانہیں سکتے۔ آم کا مزہ کسی نے چکھانہ ہوآ یا ہے سمجھانہیں سکتے۔

لطیفہ:ایک نابینے سے بو چھا گیا کہ بھر کھاؤ کے کہنے لگا کھیرکیسی ہوتی ہے بتایا گیا کہ سفید ہوتی ہے، کہنے لگا سفید کیسا ہوتا ہے، جواب ملا بنگلے کی طرح بو چھنے لگا کہ بلاکیسا ہوتا ہے اس نے ہاتھ بنگلے کی طرح ٹیٹر ھاکیا اور نابینے کا ہاتھ او پر پھروایا، اندھے نے ہاتھ پھیر کر کہاری تو بروی ٹیڑھی کھیر ہے جھے سے نہیں کھائی جائے گی۔

د و سو الطیفه: حضرت هانوی کے ملفوظات میں ہے کہ ایک نابینے کوشادی کاشوق دلایا گیا، لوگوں نے کہا شادی بڑی لندت والی ہوتی ہے کہہ کہلا کر اسکی شادی کردی اس نے سمجھا کوئی کھانے کی چیز ہوگی دوسرے دن اس سے پوچھا گیا کوئی لذت نہیں آئی۔

مماسو اهما: اس میں حضور علی اور اللہ تعالی کو ایک ہی خمیر میں جمع کردیا جس سے ان دونوں کا مساوی ہونا معلوم ہوتا ہے حالا نکہ ابوداؤد کی ایک روایت ہے کہ آپ علی کے قریب ہی ایک خطیب خطید ہے رہا تھا اس نے کہامن یطع اللہ ورسولہ و من یعصمهما آپ علی کے فرمایا: ((بنس الخطیب انت)) کے کونکہ ایک ہی خمیر میں دونوں کو جمع کردیا جو کی اور کا کہ کہ کہ کہ کہ کہ کا دیا جو کی اور کا دیا تو کا دیا تو کا دیا تو کا دیا تو کہ کہ کہ کہ کا دیا جو کی اور کا دیا تو کا دیا کہ کا دیا تھا کہ کا دیا تھا کہ کا دیا تو کہ کہ کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تھا کہ کہ کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تھا کہ کا دیا تو کا دیا تو کا دو کا دیا تھا کہ کی دیا تو کا دیا تھا کہ کا دیا تھا تھا کہ کا دیا تھا ت

جواب ا:ان کلام میں آپ ایک خود متعلم ہیں اگر غیر کا کلام ہو، غیر ذکر کر ہے تو شرک کا شبہ ہوسکتا ہے اگر آپ ایک خود کریں تو محمل شرک نہیں ہے۔ ی

جو اب ۲: آپ آلیک کی کیرابتدائی زماند پر محمول ہے کیونکہ ابھی تو حیدرائے نہیں ہوئی تھی اس لیے شرک کے شہوا کے سے بھی احر از کیا اور جس وقت آپ آلیک نے بیکلام فرمایا اس وقت تو حیدراسخ ہو چکی تھی۔

جواب سا: خطبہ بیان تو حید کا مقام ہے وہاں ایسا موہم شرک لفظ بولنا درست نہیں جبکہ آپ علی کے کلام کاموقع ایسانہیں ہے۔

جواب ؟ : خطبات میں ایضاح وتفصیل مقصود ہوتی ہے ایسے موقع پر ایبا موہم لفظ بولنا مناسب نہیں تو آپ متابعہ کے مطلب کے بنس المحطیب فرمانے کا مقصد رہے کے خطیب آ دابِ خطابت سے ناواقف ہے۔

الموراؤد من ۱۲۵ نا ع عظم الشتات من ۲۵

جواب 6: آ پِنَافِظَ كَكَلَام مِن جَلَا لَكُنِين بِن (ان يكون الله ورسوله احب اليه مما سواهما) النها كلام به الله و الله من جلول كالك الك بون كي وجه علام عنى كاوبم پيرابوگيا (مَنْ يطع الله و رسوله فقدر شد، و من يعصهما فقد غوى)

جواب ٢:يرّپ عَلِيْكُ كَيْ صُوصِيت ٢-

جو آب : آخر مین آپ علی نے نیصلہ دیدیا۔ اس ستلہ میں نفس جوازی طرف اشارہ کرنے کے لیے ایسافر مایا۔ لا یحبه الااللہ: محبت کسی اور غرض کے لیے نہ ہو کیونکہ جو کسی غرض کے لیے ہووہ ٹوٹ جاتی ہے اور جواللہ کے لیے ہوتو چونکہ اللہ دائی ہے اس لیے وہ محبت بھی باتی رہتی ہے۔

وان یکره ان یعود:سوال: لفظ یعود سے معلوم ہوتا ہے کہ بیرحدیث فاص ہان لوگوں کے ساتھ جو کفر سے اسلام میں داخل ہوئے کیونکہ عود حالت اولی کی طرف لوشنے کو کہتے ہیں؟

جواب:يعو د يصير كمعن من من تا بـمعناه هنامعنى الصيرورة ل قال تعالى ومايكون لنا ان نعود فيها.

كما يكره أن يقذف في النار:اس كتحت المعظم وحضرت عبدالله بن حذافة مبى رض الله تعالى عنه كاواقع جود كاب الايمان الحب في الله والبغض في الله من الأيمان "كتحت كذرا-

(۱۰)

﴿باب علامة الايمان حب الانصار ﴿
انسار سيحت ركهناا يمان كن ثنانى ب

(۱۲) حدثنا ابو الوليد قال ثنا شعبة قال اخبرنى عبدالله بن عبدالله بن جبر قال هم عبدالله بن عبدالله بن جبر قال هم عبيان كيا ابو وليد في الله بم عبيان كيا شعبة في اكبا محكوفر وى عبدالله بن عبدالله بن جرز في الانصار سمعت انس بن مالك عن النبى عليه قال اية الايمان حب الانصار عبد في من في النبى عليه المنافق بن ما لك عن النبى عبد المنافق بن ما لك عن الانصار المنافق بن الانصار المنافق بن الانصار المنافق بن الانصار المنافق الانصار المنافق الانصار المنافق المنافق الانصار المنافق المن

اورنفاق کی نشانی انشارسے بیر (بغض) رکھنا ہے۔

لِ عَدِةِ القَارِى جَا صِ ١٣٩ مِ انظر (٣٤٨ه في فضائل الانصار)

وتحقيق وتشريح

ربط:لمافرغ عن الحب مطلقاو كان عاما اردفه بذكر محبة الطائفة وانتحب منهاالانصار! يعنى پهلے الله اوراسكے رسول الله الله كا كرتھا اب باب قائم فرمایا كرمجوب كى محبت والوں اوراسكے انصار كى ساتھ محبت كرنے والے تقے حضور علي كا كرتھا ان كے ساتھ محبت كرنے والے تقے حضور علي كان كے ساتھ محبت تھى۔ ہم انصار سے مجبت كريں حضو علي كا كى مجبت كى وجہ ہے۔

مسوال: تمام صحابة مين انصار كي خصيص كيون فرماني؟

جواب:اس لیے کہ انصار میں محبت ابتداء ہی ہے تھی۔اور دین کے زیادہ مددگار انصار ہی ہوئے ،مہاجرین کی مدد بھی انصار ہی ہوئے ،مہاجرین کی مدد بھی انصار ہی نوانصار ہے محبت حضو علیہ ہی کی محبت کی وجہ سے ہاور حضو علیہ کی محبت ایمان کا حصہ ہے۔ انصار: لفظ انصار کے زیادہ تر مصداق اوس وخزرج کے دو قبیلے ہیں۔



فاجرہ علی الله ومن اصاب من ذلک شیئا فعوقب فی الدنیا اس کا ثواب اللہ پر ہے، اور جوکوئی ان (گناہوں) میں سے پچھ کر بیٹے اس کو دنیا میں اس کی سزا دی جائے گ فھو کفارۃ له ومن اصاب من ذلک شیئا ثم سترہ الله (حدیث بیٹے پھر اللہ (دنیا میں) اس کو چھیائے رکھے (حدیث بیٹے پھر اللہ (دنیا میں) اس کو چھیائے رکھے فھو الی الله ان شاء عفا عنه وان شاء عاقبه فبایعنا ہ علی ذلک یا تووہ للہ کولہ ہا گرچاہے (آخرت میں گی) اس کو معافی کو ساتھ با میں اس کو بھر اللہ ان شاء عنا کو ان شاء عاقبہ فبایعنا ہ علی ذلک یا تووہ للہ کے دوہ للہ کا بار ہو ان شاء عاقبہ فبایعنا ہ علی ذلک یا تووہ للہ کے دوہ للہ کولہ ہا گرچاہے (آخرت میں گی) اس کو مواف کو ساتھ اللہ کی بار اور پر آخرت میں گئی اس کو مواف کو ساتھ کولہ کے میں اس کو مواف کو ساتھ کولہ کی دوہ للہ کے دوہ للہ کولہ ہا گرچاہے (آخرت میں گئی) کی مواف کو ساتھ کولہ کے دوہ للہ کے دوہ للہ کے دوہ للہ کولہ ہا گرچاہے (آخرت میں گئی) اس کو مواف کو ساتھ کولہ کے دوہ للہ کے دوہ للہ کولہ ہے گئی دوہ للہ کولہ ہے گئی کولہ کے دوہ للہ کولہ ہے گئی کولہ کے دوہ للہ کولہ ہے گئی کولہ کے دوہ للہ کولہ کے دوہ للہ کولہ کولہ کے دوہ للہ کولہ کولہ کے دوہ للہ کولہ کے دوہ للہ کولہ کی دوہ کی دوہ کر بیٹھ کی دوہ کی دوہ کی دوہ کی دوہ کی دی کولہ کے دوہ کی دوہ کولہ کی دوہ کی دوہ کی دوہ کی دوہ کر بیٹھ کی دوہ کی دوہ کی دوہ کی دی دوہ کی دوہ

وتحقيق وتشريح

ال من ولى الله من يا في راوى بين، يا ني ي من ولى عباده الله بين كل مرويات المابين اول من ولى قضاء فلسطين، توفى الربع و ثلثين، واعلم ان عبادة بن صامت فرد فى الصحابة في وفيهم عبادة بدون ابن الصامت اثنى عشر نفسا ع

کان شھد بدر ا: چونکہ بدریوں کامقام دوسرے صحابہ سے فائق تھااس لیے بیان فضیلت کی غرض سے سے الفاظ بولے اس طرح سی موقع پر وھو البدری بولا جاتا ہے۔

احد المنقباء:نقبآء: نقيب كى جمع ہے۔نقيب اسے كہتے ہيں جوكسى قوم كے احوال كى تفتيش كرے اور بيان كرے۔ در بيان كرے۔ جنہوں نے ليلة العقبہ ميں آپ عليہ في سے بيعت كى تھى ان ميں سے ہرا كيكو آپ عليہ في نقيب قرار ديا تھا تاكہ وہ جاكر قوم كو تبليغ كريں اور دين پہنچا كيں۔

سوال:ليلة العقبة على امرادع؟

جواب:لیلة العقبہ سے مرادوہ رات ہے جس رات حضور علی میں ایک گھائی کے پاس مدینہ منورہ سے آنوالوں کی بیعت فرمائی۔ ۲ یا کیا آری تھے اور اسلام میں داخل کیا اسکوبیعت عقبہ بھی کہتے ہیں۔

اختلاف:بعت عقبہ کے بارے میں اختلاف ہے کہ دومرتبہ ہوئی یا تین مرتبہ بعض کے نزد یک دومرتبہ اور بعض کے نزد یک دومرتبہ اور بعض کے نزد یک دومرتبہ اور بعض کے نزد یک موسم میں مدینه منوره والول نے بعض کے نزد یک ہے کہ تین مرتبہ ہوئی پہلی مرتبہ س اانبوی کو جی کے موسم میں مدینه منوره والول نے ساکہ مکہ مکرمہ میں محمد علی ہے نبوت کا وعوی کیا ہے، سوچا ان سے دین سمجھنا چاہیے اس سال ۲،۷ یا ۱۸ آدی آئ

ل امام بخارتی آب حدیث ثریف کو بخاری میں 12 مرتبدلائے رقوم الاحایث: ۱۸، ۳۸۹۳، ۳۸۹۳، ۳۹۹۹، ۳۸۹۳، ۲۷۸۴، ۲۸۵۳، ۲۰۵۳، ۲۸۵۳، ۲۰۵۳، ۲۸۵۳، ۲۸۵۳، ۲۸۳۰، ۲۰۰۰،

آ پ علی این کودین سمجھایا تو انہوں نے تبول کرلیا اور چلے گئے ان میں ایک اسعد بن زرار ہ بھی تھے۔ا گلے سال سن انہوں کو بارہ یا چودہ آ دمی آئے ان میں عبادہ بن صامت بھی تھے انہوں نے اسلام قبول کیا۔ سن ۱۳ نبوی کو میں انہوں کو بارہ یا چودہ آ دمی آئے ان میں عبادہ بن صامت بھی تھے انہوں نے اسلام قبول کیا۔ سن ۱۳ نبوی کو میں بنتر بف لانے کی دعوت دی۔ تو یہاں بیعت عقبہ اولی مراد ہے یا ثانیہ بمشہوریہ ہے کہ بی نقباء بیعت عقبہ ثانیہ میں سے ہیں بعض نے اولی کے نقباء میں شار کیا ہے یا بعض ننے میں باب کا لفظ نہیں ہے تو بیصدیث پہلے باب کے تحت ہوگی اس صورت میں دونوں حدیثوں کے درمیان ربط بیان کرنا ہوگا جودہ طریقوں سے بیان کیا گیا ہے۔

ر بط اول: بیلی حدیث میں حب الانصار کوعلامت ایمان قرار دیا دوسری حدیث میں اسکی دلیل بیان کی گئ که کیوں ملامت ایمان ہے

ربط ثانى: دوسرى مديث مين انصاركوانصاركينيك وجهبيان فرمائى ٢

جن شخوں میں باب بلاتر جمہ ہے تو اسکی وجو ہات بیان کرنا ضروری ہے۔ سواسکی چندوجوہ ہیں۔

بلاترجمه باب ذكر كرنے كى وجوهات

الموجه الاول:اگر باب بلاترجمہ ہوتو دراصل پہلے باب کی فصل ہوتی ہے تو اسکاربط پہلے باب کے ساتھ ہوتا ہے جوابھی معلوم ہوچکا س

الموجه الثانى: دوسرى وجش الهند كم منقول بقيزاذ بان كمطالبعلم النيخ و بمن يرد باؤد الحاورسو به كراس بركيا ترجمة قائم بوسكة بير و (ا) باب من الايمان توك الكبائر (۲) باب من الايمان دوام الطاعة (۳) باب في علة حب الانصار من الايمان، وعلى هذا القياس الكبائر (۲) باب من الايمان دوام الطاعة (۳) باب في علة حب الانصار من الايمان، وعلى هذا القياس الوجه المثالث: تكثير فوا كدراك ترجمة قائم كرنے سے طالبعلم كاذبن اك ترجمة من مخصر بوجا تا ب كرس يكي ترجمة قابت بوا۔

بایعونی: بیت کروتم میری مین مجھ سے عہدِ اطاعت کرو، یہ تج سے ہاسکامعنی بیچنایا بک جانا ہے۔ چونکہ بیعت کرنے والا اپنے جذبات وخواہشات کومقد اکے حوالے کردیتا ہے اس کیے اسکو بیعت کہتے ہیں۔

اقسام بيعت:بيت كي والتمين في

ا: بیعت اسلام: کی کے ہاتھ پراسلام تبول کرنا۔

٢: بيعت خلافت : كسى كوامير المؤمنين سليم كرنا اورعبد اطاعت كرنا

ا تغریب بناری نا ص ۱۲۷ می عمدة القاری نا ص ۱۵۲ سے فتح الباری بنا ص ۵۴ سے تقریب بخاری بنا ص ۱۲۵ هے بیاض صدیقی ص ۸۷

سا:بیعت جهاد: امیر شکرای اسکریوں سے جہاد کے لیے بیعت لے صلح مدیبی من صور علی نے لی۔ م : بیعت طریقت: گنامول کوچوڑ نے اور نیکول پر پابندی کے لیے کی صالح کے ہاتھ پر بیعت کرنا۔ آپ الله سے بیعت کی چاروں قسمیں ثابت ہیں۔ بیعت اسلام عقبداولی وثانیہ میں تھی میعت طاعت سب محابیات حضور علی اللہ کے ہاتھ برکی سیعب جہاد بیعب رضوان ہے بیعب طریقت بھی عبادہ بن صامت کی دوسری روایت سے ((بایعونی))اب جب کرده بیعت اسلام کر <u>یکے تھے</u> جہاد کا بھی اس وتت ارادہ نہ تھا تو یہ بیعت طریقت ہی تھی۔

سوال: یہاں کون ی بیعت مرادہے؟ `

جواب:اس مين علاء كي دوراكين بين-

الاول: كَبْلِي رائي يه كدير بيعت اسلام ب، قريداس بروهو احد النقباء ليلة العقبة كالفظ ب كونك لیلة عقبہ میں جوحاضر ہوئے تھے انہوں نے آپ علیہ کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا تھالہذا ریبیت اسلام ہوئی نیز لفظ ﴿ أَنْ لَا تُشُوكُوا إِللَّهِ شَيْنًا ﴾ بمى اى كامؤيه بـ

الثانى: دوسرى رائے يہ ہے كه يه يعن طريقت بيعن اسلام نيس بے كوئكه يه واقد فق كمد كے بعدموسم ج كاب، رباحد النقباء كالفظاتوده محض تعارف كي بي ب، حافظ ابن جر كي رائ يبي بـ

والراجح هوالاول: قريديب كالفظ حوله عصابة من اصحابه به الرفتح كمك بعدكا واقتم ہوتا تولا کھوں کی جماعت ہوتی چھوٹی سی جماعت نہوتی۔

فالله: بعض اوك يعب طريقت كوبدعت كتي بين يهال جب جارون من كي بيعت ثابت بوكني اومعلوم مواكه بدعت نبيس ب ہارے ملک میں اور بیرون میں بھی بیعت طریقت کے مشہور جارسلسلے ہیں۔

ا چشتی ۲ - قادری سونتشبندی ۱۴ سبروردی -

میخ عبدالقادر جیلائی کےسلسلے کو قادری کہتے ہیں۔حضرت میخ شہاب الدین سپروردی کےسلسلے کوسپروردی کتے ہیں۔حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیریؓ کے سلسلے کوچشتی کہتے ہیں۔حضرت خواجہ محمد بہا والدین نقشبندؓ کے سلسله كونقشبندى كبتے بيں۔

مسئله: بيعت متحب بيكن ال برنجات موقوف نبيل ب چونكدية صول مدايت ميل معاون موتى باس لیمستحب ہے مقصودِ اصلی احکام کو بجالا نا، گناہوں سے بچنا ہے۔ اگر کوئی مخص کسی سے یو چھ پوچھ کر طاعت کرتارہے اور گناہوں سے بچنار ہے تو بیعت کوئی ضروری نہیں۔آپ نہ بدعت کہیں نہ واجب۔ دونوں بدعت میں دونوں غلو

بين ايديكم وارجلكم اسجلك كأقفيري بي-

التفسير الاول:بين ايديكم وارجلكم كاتعلق لاتأتوات بكرسا من مت لاؤ-ايك ب يس پشت عيب لگانا اورايك ب الكار وي عيب لگانا اورايك ب سامن منه پرعيب لگانا يه بهت بيشرى كى بات بى الكماقاله الحطابي آ-اگلاآ دى حيران بريثان موجاتا به انكار بهي نهيس كرسكا-

الثانى:اس جمله سے مرادیہ ہے کہ شرمگاہ کاعیب مت لگاؤ کیونکہ شرمگاہ پاؤں اور ہاتھوں کے درمیان ہے۔ اس لئے بین ایدیکم وار جلکم سے تعیر کیااس سے خصوصیت کے ساتھ منع کرنا اس لیے ہے کہ یہ زیادہ بعزتی کاباعث بنتا ہے کیونکہ اس سے مرادزنا ہوتا ہے۔

الثالث:بین ایدیکم وارجلکم سے مراد دل ہے لین اپن طرف سے گھڑ کرعیب مت لگا وَاور دل بین ایدیکم وارجلکم ع

الرابع: بین ایدیکم وارجلکم کنایے وات کیونکداکٹر کام انہی سے ہوتے ہیں۔ افعۃ اللمعات میں ہے نیارید دروغے راکه بیدامی کنید اور امیان دستہائے خود و پائہاے خود یعنی از ذاتہائے خود

ل فتح الباري ج اص ۵۸ م فتح الباري ج اص۵۵

الخامس: دراصل برلفظ عورتوں کی بیعت کے وقت کہا گیا ہے کیونکہ عورت کا بچہ جوبین االایدی والارجل زنا کی وجہ سے پیدا ہوتا ہے اسکوز وج کی طرف نبت کرنے سے منع فرمایا تو بیلفظ اصل بیعت نساء میں تھا پھر بیعت رجال میں بھی استعال کیا گیالہذا معن بھی بدل گئے ل

عورتس ایا کیا کرتی تھیں کہ کی سے زنا کیا اور بچہ خاوند کے نام لگا دیا یازناکس سے کیا اور معلوم ہونے پرنام دوس کا لے دیاتواں سے مع کیا گیا جیے جریج تی اسرائیل میں ایک راہب گزرے ہیں ایک مرجد بینماز پڑھ رہے تھے كدوالده في آوازدى اس في كهااللهم صلوتى وامى تين بارايسينى بوامال في بدعاء كردى كد تقيم موت ندآت جب تک سی زانید کے مندند لگے۔ایک زانید نے سی چرواہے سے بدکاری کی بچہ پیداہوا۔ادھراس راہب کے مجھ حاسد کسی الی بات کی تلاش میں ہی تھے جس سے ان کی بدنا می ہوجب انہیں اس کے بیٹے کا پہتہ چلا تو انہوں نے اس عورت سے کہا کہ بیالزام اس راہب کے سرتھوپ دیا، چنانچہ جب لوگوں نے اس عورت سے بوجھا کہ کس سے زنا کیا ہے ؟اس نے راہب جریج کا نام لے دیا۔ لوگوں نے آ کر پٹائی شروع کردی ہے کہتے رہے کہ مجھے بتاؤ توسی میراقصور کیا ہے؟ آخراوگوں نے بتایا کرتونے زنا کیا ہے انہوں نے کہا میں نے زنانہیں کیا ،میری بات پراعماد کرتے ہو یا بچہ گواہی دے؟ لوگوں نے کہا بچے گواہی دی قو خدا تعالی نے بیچے کوقوت کو یائی دی اس نے کہا میں فلاں چرواہے کا بیٹا ہوں ہے و لا تعصوا في معروف:معروف كي قيدالله اوررسول كلحاظ عدواتي ماورون كلحاظ ساحر ازى م فاجره على الله : على لزوم ك ليرة تاب اس معزل في استدلال كياب كالله يرنيك آوى كو اجرديناواجب بالسنت والجماعت كاعقيده بيبكه لايجب على الله شنى كيونكهس يركوني چيز واجب مووه مكلف ہوتا ہے اللہ تعالی مكلف نہيں ہے اگر سزادي توبيا تكاعدل ہے اور جزادين توفضل ہے معتزلہ كے استدلال كا جواب: وجوب دوتم برے اوجوب استحقاقی کسی کاحق کسی کے ذمہ ہو ۲۔ وجوب تفصلی بطور ضل کا بے اور کسی چیز کولازم کر لے علی سے متفاد وجوب استحقاقی نہیں تفصلی ہے۔ سوال: جب عمل كيا توجزاء كاستحق كيون نبيس؟ حالا نكه اجرعوض عمل ب؟

جواب ا:بند می طرف سے کوئی مل می نہیں پایا گیا جس پروہ اجرکا مطالبہ کرے اس لیے کہ بندہ کی کوئی چیزا پی نہیں ہے اور مل محق فضل البی ہے فضل پراجرکا مطالبہ کی پہنونے الّذِینَ امّنُوا وَعَمِلُوا الصّلِحتِ مِنْ فَضَلِهِ ٣ بِهِ اللّهِ عَلَى فضل کی اجرکا مطالبہ کی پہنونے الّذِینَ امّنُوا وَعَمِلُوا الصّلِحتِ مِنْ فَضَلِهِ ٣ بِهِ اللّهِ مَعْرَتْ مَا اللّهِ عَلَى اللّهِ مَا لَكُ لَا اللّهِ مَا لَكُ اللّهِ مَا لَكُ لَا اللّهِ مَا لَكُ اللّهِ مَاللّهُ مَا لَكُ اللّهُ اللّهُ مَرْدور کھوں کا اور کا اور کا اور کا اللّه مردور کھوں کا موسم آیا تو مردور کھوں کا اور کرا مجرکر لے آیا مالک

ل فخ البارى جام ٥٥ م بخارى شريف جام ١٧١ م ياره ٢١ سورة روم آيت٢١٠٠

نے انعام دیدیا تو در حقیقت بیمزدور کسی انعام کامستحق نہیں ہے۔اس لیے کہ مزدوری اسکوملتی ہے باتی سب چیزیں مالک کی ہیں مالک خوش ہوکر انعام دیدیتا ہے کہ چلو ایک صورت بنادی اعمال صالحہ کی مثال ایسے ہی ہے کہ جسم وصلاحیتیں خدا کی طرف سے عنایت ہے وقت اور تو فیق خدا کی طرف سے عطافر مودہ۔

جواب ۲:ان اعمال کی اجرت بنده پیشگی وصول کرچکا ہے لہذا جواجر ملے وہ خالص فضل ہی فضل ہے۔ واعظوں سے سنا کدایک شخص حساب کے لیے پیش ہوگا پانچ سوسال عمر ہوگی ساری عمر عبات میں گذار دی ہوگی اللہ تعالی فرما کیں گے جامیر نے فضل ہی جامیر نے فضل سے جنت میں داخل ہوجا، وہ کہے گایا اللہ! ساری زندگی تو عبادت میں گذار دی اب بھی تیر نے فضل ہی سے جنت میں جارہ ہوں؟ اللہ تعالی فرما کیں گے (بیکوئی حسابی آدی معلوم ہوتا ہے) اس سے حساب کر وحساب کر حساب کر وحساب کر وگا۔ ابن عطاء اسکندری کا ملفوظ ہے لاکھیر ق عندالفضل و لاصغیر ق عندالعدل. پنجابی میں محاورہ ہے کہ شاہاں نال حساب کر و گے تے کے دینائی بیٹے گا (بیعنی با دشاہوں کے ساتھ حساب کر و گے تو کچھ دینائی پڑے گا)

فهو كفارة له: ﴿ مسئله "حدود" كفارات هي يا نهين؟ ﴾

جمهور ائمة: كتي بين كم مدود كفارات بير-

احناف : كامسلك يه ب كه صدود زواجر بين كفارات نبيس يا يبعض اوقات متحن يو چه ليتا ب كه المحدود زواجر ام سواتر ؟ زواجر كامعنى ب كه آئنده روكنه والى بين گناه جس پر حداكى معاف نبيس بوگا يجمهور كهته بين كه سواتر بين گناه كوصاف كرنيوالى بين _

دليل جمهور: مديث باب عدفهو كفارة له.

ائمہ حنفیہ کہتے ہیں کہ کبیرہ کی معانی کے دوطریقے ہیں ایتوبہ ۲فضل الهی اورصغیرہ کی معانی کے تین طریقے ہیں دواوپر والے اور تیسرا نیک عمل لیکن حقوق کی تخصیص ہے کہ وہ صرف تو بہ سے معاف نہیں ہوتے بلکہ اٹکی تلافی بھی شرط ہے۔

جمہور کی معافی کا ایک سبب اجراءِ حد بھی قرار دیتے ہیں اسطرح جمہور کے نزویک کبیرہ کی معافی کے بھی تین طریقے ہیں۔

دلائل احناف كثر الله سوادهم: آئه حفيه كت بين كه الله تعالى نے جهال كهيں حدود كاذكركيا به وہال آخر ميں تو به كو بھى ذكركيا بے چنانچ المرو السَّارِقْ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُو الْيُدِ يَهُمَا لهى عد ﴿ فَمَنُ تَابَ مِنُ بَعُدِظُلُمِهِ وَاصلَحَ ﴾ مِن ذَكر ب ١-آيت ﴿ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِيْنَ يُحَارِبُونَ الله ﴾ كآخري بَا بَرُ قَبُلِ اَن تَقُدِرُوا عَلَيْهِم ﴾ ٣-وفي كآخري به فقال ان تَقُدِرُوا عَلَيْهِم ﴾ ٣-وفي الطحاوى ((انه عليه السلام التي بلص واعترف اعترافا ولم يوجد معه المتاع فقال له النبي عَلَيْكُ ما اخالك سرقت قال بلي يارسول الله فامربه فقطع ثم جتى به فقال النبي عَلَيْكُ استغفر الله وتب اليه ثم قال عليه السلام اللهم تب عليه) ٢

سمرایک روایت حفرت ابو ہریرہ سے متدرک عاکم میں محشی نے نقل کی ہے لااَدُدِی الحدود کفارات ام لا (صححه علی شرط الشیخین)

۵۔ حدِ قذ ف کو بیان کرنے کے بعد بھی فرمایا ﴿ إِلَّا الَّذِينُ تَابُوا مِنْ بِمَعْدِ ذَلِكَ وَاَصْلَحُوا ﴾ ان تمام دلائل کی وجہ سے حنفیہ حدیث الباب کی توجیہات کرتے ہیں۔ چند توجیہات درج ذیل ہیں۔

التوجیه الاول: گناه کی معانی کا ایک سبب قریب ہے اور ایک سبب بعید توبسبب قریب ہے حداور عقوبت بھارہ ہیں۔ عقوبت سبب بعید چونکہ حداور عقوبت کفارہ ہیں۔

التوجیه الثانی: حدیث الباب می عقوبت سے مراد صدود نیس بلکہ مصائب اویہ بیں کوئی مصیبت آدی پر آتی ہے تو وہ کفارہ بن جاتی ہے اس لئے کہ آپ علی ہے نے ارشاد فر ایامایصیب المسلم من نصب ولا وصب ولا هم ولا حزن ولا اذی ولا غم حتی الشو کة یشا کھا الا کفرا لله بھا من خطایاہ بر تکلیف جوبندہ پر پر بی تی ہے اس سے بندے کے گناہ معاف ہوتے ہیں۔

سوال: مصیبت اگر کفاره ہو سکتی ہے تو حد کو بھی کفارہ ہونا جا ہے یہ بھی اللہ بی کی طرف سے مقرر کردہ ہے اسکا نزول بھی تو آسانوں سے بی ہے؟

جواب: حداور مصیبت میں دوفرق ہیں امصائب میں اسباب تعین نہیں ہوتے کہ یہ مصیبت کس گناہ کی سزا ہے سزا اللہ نے دین ہے دنیا میں دے یا آخرت میں یا معاف فرمادیں کیکن حدود میں اسباب تعین ہوتے ہیں کہ فلاں حدفلال معصیت کی وجہ سے ہے۔

۲۔مصائب میں کسب عبد کودخل نہیں، جبکہ حد میں کسب عبد کودخل ہے گویا بیخودائیے آپ کوسز ادے رہا ہے جیسے کوئی ابنا خود ہاتھ کا نے لے لہٰذا حد کومصیبت پر قیاس نہیں کیا جاسکتا۔

التوجيه الثالث: حدود جاري مونے كے بعدلوگ تين قتم پر موتے ہيں۔

امحدود تائب: جومد لكنے كے بعد قوبركر لے۔

ل ياره 1 سورة المائده آيت ٣٣ تعظيم الاشتات جا ص٢٥٨ مشكؤة ص١٣٣٠

٢محدو دِمنز جو: جوحد لكنے كے بعدرك جائے۔

سا محدود معنت: جوحد لگنے کے باوجودار تکاب معصیت میں مبتلا ہواور حدکی وجہ سے معصیت سے نہ رکتو پہلی دو تسموں میں حنفیہ بھی جمہور کے ساتھ ہیں، تیسری تنم میں جمہور کو بھی حنفیہ کے ساتھ ہونا چاہیے۔
التو جید الرابع: یہاں ایک سلح کی بات بھی ہے کہ احناف ؓ کے نزدیک حدود ابتداءً زواج ہیں اور انتہاءً سواتر ہیں۔ جمہور ؓ کے نزدیک برکس ہے آخر میں دونوں اسم جمہو گئے احناف ؓ پہلے قرآن کودیکھتے ہیں قرآن کی منشاء یہ کہ کہ دونو یہ کہ کہ دونو یہ کہ کہ کہ دونو یہ کہ کا مطالبہ کرتا ہے تو بہ ہی سے معاف ہوگا۔

(۱۲) بابنتے ہے بھا گناد پنداری ہے کے بیان میں ہے

وتحقيق وتشريح

حدیث کی سند میں پانچ راوی ہیں، پانچوی ابوسعید خدری ہیں جن کانام سعد بن مالک ہے اور بعض نے عبداللہ بن نقلبہ بتایا اور بعض نے سنان بن مالک، کل مرویات، کاا ہیں، متوفی ۱۳۰ ھیا ۲۸ھ یا ۲۸ھ یا تو جمعة الله الله بن نقلبہ بتایا اور بعض نے سنان بن مالک، کل مرویات، کاا ہیں، متوفی اسلام الله کی عوض : سسال سے امام بخاری کا مقصود یہ ہے کہ جیسے اعمال صالح کرنا اجزاء وین امام بخاری کی معمد وی بیار اللہ اللہ الریاض ۱۹۰۰، ۳۲۰۰، ۱۳۹۵، ۱۳۹۵، ۱۳۹۵ میں المحدود اللہ اللہ الریاض ۱۹۰۰، ۳۲۰۰، ۱۳۹۵، ۱۳۹۵، ۱۳۹۵ میں المحدود اللہ بادراؤدوائداؤدوائداؤی علی عمدة القاری جا محدة القاری جا محدة القاری جا محدة القاری جا محدة القاری جا محدود المحدود اللہ بادراؤدوائداؤی جا محدود اللہ بادراؤدوائداؤی جا محدود اللہ بادراؤد اللہ بادراؤدوائداؤی جا محدود اللہ بادراؤد کی جا محدود کی کا محدود کی جا محدود کی جا محدود کی جا محدود کی جا محدود کی کا محدود کی جا محدود کی جا

میں سے ہے اس طرح معاصی سے بچنا، گناہ چھوڑ نا بھی اجزاءِ دین میں سے ہے۔امام بخاری نے من مجیفیہ سے استدلال کیا ہے۔

جواب استدلال:نقول من جانب الحنفية انها (من) ابتدائية . ل

فتن:اس سے مراد عرف میں بیر ہے کہ دینی امور کی مخالفت عام ہوجائے اور دین کی حفاظت مشکل ہوجائے اوراسباب وذرائع مفقو دہوجا ئیں تو کمزوروں کواجازت ہے کہ وہ حفاظت دین کی خاطر لکل بھا کیس س

غنم: مخضر مال مرادب بكريوں ميں انھارنہيں ہے۔

یفر بدینه: باء سیت کے لیے ہے۔ معن بیروگادین کی خاطرفتوں سے بھا گے بینی دین کی حفاظت کی خاطر یا باء معیت کے لیے ہے۔ معنی بیروگافتوں سے دین کو لے کر بھا گے جیسے حضرت موی علیہ السلام کے واقعہ میں ففو المحجوب بو به کے معنی بیں وہ پھر کیڑے لے کر بھاگ گیاسے

سوال:علامہ نووی فرماتے ہیں کہ روایت الباب سے ترجمۃ الباب ثابت نہیں ہوتا کیونکہ ترجمۃ الباب ہے من المدین الفرار من الفتن ، کہ میں فرار من الفتن جزودین ہے جبکہ روایت الباب سے بیٹابت ہوتا ہے کہ فرار من الفتن صیانت دین ہے روایت الباب سے بیٹابت نہیں ہوتا کہ فرار من الفتن جزودین ہے؟

جو اب: صیانة وین بحی تو دین بی بروایت سے ثابت بواکہ فراد من الفتن میانت دین براور میانت دین براور میانت دین براور میانت دین براور می الفتن دین بروه والصواب سی

سوال:اس مديث من التوربانية كالعليم وى جارى بجبكه دوسرى جگفرايا ((لارهبانية في الاسلام)) جواب: تعليم ربانية بين به التعليم ميانتودين باورنى وبال بجرال ربانية كوى دين جولياجات

مسئله:..... **صحبت انضل هی یاعزلت**؟ ه

آدی دوحال سے خالی ہیں اسے مزاحت پر قدرت ہوگی یا ہیں۔ مزاحت پر قدرت ہوتو پھر دوحال سے خالی ہیں القدرت بافعل ہو یا بحسب المال ہو یا بحسب المال ہم تقدیرات کے لیے محبت داجب ہادر داجب بالعین ہے۔ ۲۔ یا نی الحال تو قدرت نہیں ہے لیکن امید ہے کہ قدرت حاصل ہوجائے گی تو الی صورت میں محبت داجب بالکفاریہ ہے، عزلت ان تمام کے لیے جائز تہیں ہے۔

دوسری صورت بدہے کفتن کی مزاحت پر قدرت ندموتواس میں تین فدجب ہیں۔

ا فیش الباری جا ص۹۰ ۲ درس بغاری جا ص۱۸۱ ۳ بغادی شریف جام ۱۳۳۱ فتح الباری جهم پیمش طبح انساری دول هے فیش الباری بحالدالاحیاء بچا ص۹۲

المدهب الاول: جمهور كت بين كرصحت بهتر به كيونك تعليم وتعلم ،حضور جنائز ،حضور جمعه،حضور جماعات تكثير سواد المسلمين ،عيادة المرضى ،افشاء سلام ،امر بالمعروف اوراعانت محتاج وغيره طاعات كاموقع صحبت بى ميس ميسر بالمغروف المراعات محتاج المحت المنظل بها المعروف ا

الممذهب الثاني:علامه كرمائي فرمايا كه ماري اس زمانه بين طوت بى افضل به اس ليه كه مجالس كم معاصى سے خالى موقى بين ميں معاصى سے خالى موقى بين ميں تعلق مع الله بين بين اضافه موتا ہے۔ الرمان لا يجلب الاالم شرود " بي اور نيز خلوت ميں تعلق مع الله مين بين اضافه موتا ہے۔

المدهب الثالث: بعض حفرات تفصیل کے قائل ہیں کہ وہ فقیہہ جوخطرہ میں ہے اور مقاومت نہیں کرسکتا اسکے لیے عزلت افضل ہے اور وہ مجاہد جو باطل کو پہچان کراس سے اجتناب کرسکتا ہے اور حق کو پہچان کراس پڑمل کرسکتا ہے اور حق کو پہچان کراس پڑمل کرسکتا ہے اور حق کو پہچان کراس کے لیے بہر صورت صحبت ہی افضل ہے یہ تنہائی میں جا کر کیا کر ہے گا۔ الغرض مزاج اور المجمعیتیں مختلف ہوتی ہیں۔

من عادتي حب الديار الاهلها الله وللناس فيما يعشقون مذاهب

جالس الحسن او ابن سیرین: چاہنانوتوگ کی ہم شینی اختیار کرچاہے گنگو، تی کی ، مدفی کا ہم نشین بن خواہ تھانوگ کا ہم نشین بن خواہ تھانوگ کا ہم نشین بن خواہ تھانوگ کا کہ کہ کہ مست کھوست ٹھیک ہے بیم راجول کا اختلاف ہے۔ ہر گل رارنگ و بوئے دیگر است.

آ پ عمر فاروق رضی اللہ تعالی عند کی بہادر یوں اور خالد بن ولید گی شجاعتوں کے قصے اور واقعات سنتے ہیں کبھی آ پ غے حسان بن ثابت رضی اللہ تعالی عند کی بہادری کے قصے بھی سنے؟ حالا تکد آ پ ایک نے فرمایا کہ حسان کا شعر تیرکی طرح لگتا ہے۔ مزاج اور شانیں الگ الگ ہیں تو کیا ان میں سے سی کی تو ہین کرو گے؟ نعو ذبالله من ذلک.

(111)

﴿ باب قول النبي مَلَا الله الله وان المعرفة فعل القلب لله وان المعرفة فعل القلب لقول الله تعالى وَلَكِنُ يُوَّاخِذُكُمُ بِمَا كَسَبَتُ قُلُو بُكُمُ ﴾

یہ باب آنخضرت اللہ کے فرمان کہ میں تم سے زیادہ اللہ کا جانے والا ہوں اور معرفت (یفین) دل کافعل ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ نے (سور ہترویں) فرمایا (لیکن ان قسموں پڑتم کو پکڑے گاجوتہ ہارے دلوں نے (جان ہو جرکہ) کھا کیں) کے بیان میں

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض: امام بخارى كامقعوداس بابت الايمان يزيد وينقص ثابت كرنا بيام بخارى في في عرض المسترين بزءذكر كي بيل -

ا ـ انا اعلمكم بالله ٢ ـ وان المعرفة فعل القلب ٣ ـ وَلَكِنُ يُوَّاخِذُكُمُ بِمَا كَسَبَتُ قُلُوبُكُمُ الجزء الاول:انا اعلمكم بالله

سوال: كتاب الايمان كاعزان بهل رباب، مقصود الايمان يزيد وينقص ثابت كرناب انا اعلمكم بالله كاتعلق اس كيابوا؟ يرترجم توكتاب العلم سي متعلق بالله كاتعلق من ذكر كرنا جا بيرة العلم من ذكر كرنا جا بيرة العلم من قراح في كربين شراح في يهدد يا يد باب در هيقت كتاب العلم من تماس وكا تب ك وجد سديبال درج بوكيا ليكن يد جواب غلط محض اعتراض كي وجد سدينيس كها جاسكا كديد كتاب العلم كاباب تماس وكا تب كي وجد سدينيس كها جاسكا كديد كتاب العلم كاباب تماس وكا تب كي وجد سدينيس كها جاسكا كديد كتاب العلم كاباب تماس وكا تب كي وجد سديبال لكوديا كيا - ي

جواب ثانی: اس ترجمہ سے مقصود قیاس النظیر علی النظیر ہے مقصد ایمان کی کی زیادتی بیان کرنا ہے اس کو کمی پیشی پر قیاس کیا۔ سے

جواب ثالث:علم معرفت، یقین سب ایمان کے ساتھ متحد ہیں باتحادِ ذاتی و تغایرِ منہوی تفصیل اس کی بہ ہے کے علم کے دودر ہے ہیں۔

(١) درجة عمال جس كوعم حالى بهى كتبة بين اورجامع الاعمال بهى كتبة بين - (٢) دوسرا درجه جوغلبة حال ندموليني

جامع للاعمال نسهوب

پہلی قتم میں اور ایمان میں اتحاد ذاتی ہے تو یہاں اعلمکم باللہ سے کہی درجہ مراد ہے تو اعلمکم کا مطلب ہواازید کم ایمان اب کتاب الایمان سے مناسبت بھی ہوگی اور زیادت ونقصان بھی اابت ہوگی۔ جو اب رابع: علم کے دودر ج ہیں۔ (۱) غیرا ختیاری، اس کو معرفت کہتے ہیں۔

٠ (٢) اختيارى ،اس كوتفىدىق كہتے ہيں _تويہال علم سے مراد اختيارى ہے جو كہ تفعديق كا درجہ ہے اور بيايمان كے مرادف ہے لہذا كتاب الايمان سے مناسبت ہوگئی۔

الجزء الثاني:وان المعرفة فعل القلب.

ای میں شراح حدیث کی دورا کیں ہیں۔

ا عندالبعض مستقل ترجے كاذكر باوراس سے مقصود كراميه پردد ہے جوفقط اقرارِ لسانى كوايمان كے ليے كافی قرار ديت بيل قو ان پردفر مايا كدفقط اقرارِ لسانى كافی نہيں بلكہ معرفت ضروری ہے اور معرفت فعل قلب ہے اس ليے صرف ذبان سے اقرار كافی نہيں بالا عندالبعض دوسر سے جزء سے پہلے كی تشریح مقصود ہے كہ پہلے جزء میں علم سے مراد معرفت ہے اور معرفت بھی افتيارى جو كفتل قلب ہے ولذا قال ان المعرفة فعل القلب .

سوال: معرفت وعلم ارتبیل کف بین نه کدارتبیل فعل توام بخاری نے کیے کہ دیا ان المعرفة فعل القلب جو اب: امام بخاری بتانا چاہتے ہیں کہ معرفت سے مرادا فتیاری ہے جو کفعل قلب ہے ای انعقاد القلب یعنی قلب کوکسی کے ساتھ افتیاراً جوڑا جائے تو یفعل قلب ہے اس کا نام عقید الها یعنی قلب کوکسی کے ساتھ افتیاراً جوڑا جائے تو یفعل قلب ہے اس کا نام عقید انسان کاعقیدہ افتیاری ہے اورفعل قلب ہے۔ عقیدہ، فعیلة کے وزن پر ہے عقد سے افوذ ہے معقودة کے معنی انسان کاعقیدہ افتیاری ہے اورفعل قلب ہے۔ عقیدہ نے معنی القضیة دل کوکسی قضید کی ساتھ جوڑد ینا۔ تضید کہتے ہیں یحتمل الصدق و الکذب جو صدق وکذب (کے ، جموت) کا اختال رکھ، توحق کے ساتھ جوڑا تو عقیدہ حقہ وگا باطل کے ساتھ جوڑا تو عقیدہ وقد مقد ہوگا اللہ کوگا۔

شروع كرد يامسلمان مين آج اتني مرعوبيت ہے۔

الجزء الثالث: ﴿ وَلَكِنْ يُوَّاحِدُكُمْ بِمَا كَسَبَتُ قُلُو بُكُمْ ﴾

مدوال:امام بخاریؒ نے اس آیت سے استدلال کیا ہے کہ معرفت فعل قلب ہے یہ استدلال صحیح نہیں ہے کیونکہ آیت ایس آیت ہے اور دعوی ایمان (بالکسر) سے متعلق ہے ایمان فعل لسان ہے اور دعوی ایمان (بالکسر) سے متعلق ہے ایمان فعل لسان ہے اور معرفت وایمان پراستدلال کیے دایمان فعل قلب معرفت وایمان پراستدلال کیے صحیح ہوا؟ یہ

جو اب:ایمان کی ایک تم یمین لغو ہے جماتعلق اسان سے ہے اور وہ فعلِ اسان ہے اور دوسری تم یمینِ منعقدہ ہے مواخذہ اس پر ہے اور یہ علی معلیہ مواخذہ اس پر ہے اور یہ علیہ اس آیت کے اندریجی مراد ہے اور یہ یمین تام نہیں ہوتی جب تک انضمام عقیدہ اور اعتقاد نہ مواور یعلی قلب ہے فہو مناسب لقولہ وان المعرفة فعل القلب لہٰذار وی اور دلیل میں تطابق و وافق ہوگیا۔

وتحقيق وتشريح،

حدثنا محمد بن سلام: سلام بالتخفيف بي بابالتشديد؟ علام يمنى فرماتي مي كيصواب يهى به كه بالتخفيف بي بالتشديد بي علام أفروى فرماتي مي كه لايوافق على بالتخفيف بي وبه قطع المحققون بعض نه كها كه بالتشديد بي كيان علام نووى فرماتي مي كه لايوافق على هذه الدعوى فانها محالفة للمشهور ا

ل عدة القارى جا ص١٦٢

لسنا کھیئتک: کاف بمعنی علی ہے۔ مقصد یہ ہے کہ بمیں زیادہ عبادت کی اجازت ہونی چا ہے اس لیے کہ آپ تو مغور ہیں آپ تا ہم کی خرورت نہیں اس کے باوجود آپ تا اعمال کا اتا اہم ام فرماتے ہیں تو ہمادا کیا حال ہوگا جبکہ ہمارے گناہ بھی زیادہ ہیں اور ہم بخشے بخشائے بھی نہیں ہیں ہمیں حضوری ہے بھی زیادہ عبادت کی اجازت ہونی چا ہے بعضوری نے اس پروفر مایا کہ جھے زیادہ گل کرنے چا ہمیں اس لئے کہ ان اتفا کم درالحدین، اجازت ہونی چا ہے بعد الاذان درود شریف یا رسول اللہ:اسکی تفصیل پہلے گذر چی ہے۔ حدیث ہیں ہے کہ قبل الدعاء بعد الاذان درود شریف پر هناچا ہے ہریلوی اس پر عمل نہیں کرتے سنت ترک کرنا، بدعت کوروائ دیاان کا مقصود ہے۔ اصلح اللہ حالهم. پر هناچا ہے ہریلوی اس پر عمل نہیں کرتے سنت ترک کرنا، بدعت کوروائ دیاان کا مقصود ہے۔ اصلح اللہ حالهم. فیغضب : سسو ال: آپ ﷺ ناراض کیوں ہوئے حالانکہ لسنا کھیئتک صحیح ہے؟ جو اب: اس لیے کہ انہوں نے خلاف فی فطرت سلیمہ سوال کیا۔ فطرت سلیمہ سے بھینا چا ہیے تھا کہ کمال اور نجات جو اب: ... اس سنت سے تجاوز کرنے میں نہیں س

اس کا پس منظریہ ہے کہ تین صحابہ کرام حضور اللہ کے اعمال کے بارے میں تفتیش کے لیے آئے۔ازواج مطہرات سے بوچھا توانہوں نے بتایا کہ بھی سوتے ہیں اور بھی قیام فرماتے ہیں کہ بھی واحیاء لیل فرماتے ہیں بھی روزہ رکھتے ہیں اور بھی نہیں ،انہوں نے سوچا کہ بیتو کم ہے گراس لئے کہ آپ اور بھی بنیں ،انہوں نے سوچا کہ بیتو کم ہے گراس لئے کہ آپ بیا ہے بیش بخشائے ہیں۔

توایک نے کہا کہ میں ہمیشہ رات کونماز پڑھتارہوں گا دوسرے نے کہا میں ہمیشہ روزہ رکھوں گا بھی افظار نہ کروں گا۔تیسرے نے کہا میں ہمیشہ روزہ رکھوں گا۔توانہوں نے حضور ہے کے بتا ہے ہوئے معمول سے زیادہ ممل کا ادادہ کیا اور یہ بات خلاف فطرت سلیمہ اور ممانی اتباع سنت تھی اس لئے آپ تائی نا راض ہوئے اور فر مایا میں زیادہ تھا کی اور زیادہ کیا اور یہ باللہ انا) ہے 'آنا'' میں آپ تائی نا راض ہوئے اور فر مایا میں زیادہ تھی زیادہ ہما و اعلم کے باللہ انا) ہے'آنا'' میں آپ تائی نے یہ بتایا کہ میری معرفت بھی زیادہ ہوا ورتقوٰ ی بھی ، یعنی جھے قوت علمیہ اور عملیہ کا کمال صاصل ہے کوئی امتی ان چیز وں میں میرے برا برنہیں ہوسکا۔ است نباط نسب اس سے حضرت انور شاہ صاحب نے استباط کیا ہے کہ کمالی عبادت کمالی معرفت سے صاصل ہوتا ہوگی آتی ہی اس کے مطابق طاعت کرنے کو کہتے ہیں تو جس کواللہ تعالی کی مرضی جتنی زیادہ معلوم ہوگی آتی ہی اس کے مطابق طاعت کرنے کو کہتے ہیں تو جس کواللہ تعالی کی مرضی جتنی زیادہ معلوم ہوگی آتی ہی اس کے مطابق طاعت کرنے گا۔اور یہ کمالی عبادت زیادتی مشقت پر موقوف نہیں جنہوں نے زیادتی مشقت پر موقوف نہیں جنہوں نے زیادتی مشقت کر ساتھ ہے نہ کہ زیاد قی مشقت کے ساتھ ہے کہ ماری میں اس کے مطابق عبادی تر میں اس کے مطابق عبادی تر میں ہو تھیں البادی جا سے اس کے ساتھ ہے نہ کہ زیاد قی مشقت کے ساتھ ہے کہ میادی تا میں اس کے مطابق عبادی تر میں ہو تا میں اس کے مطابق عبادی تر بیادی تھیں اس کے مطابق تا میں اس کے مطابق تا کہ تا کہ تا میں دور تا میں اس کے مطابق تا میں دور تا میں

مثال: آپ کے پیرصاحب آپ کے ہاں مہمان ہوئے گری کا موسم ہے دو پہر کا وقت ہے کمالِ خدمت کا مقتضی یہ ہے کہ آپ پہچان لیں کہ ان کو بیاس کی ہے اور شندے پانی کا گلاس لا دیں نہ یہ کہ لوہاری گیث ہے تمہ وہشم کی آئس کریم لینے چلے جائیں وہال نہ طے تو ہو ہڑ گیٹ چلے جائیں دو گھنے بعد آئس کریم لیکرصاحب آئے ادھر پیر صاحب کا جگر پیاس سے ختک ، جل رہا ہے تو کیا ہے آئس کریم لا نازیادہ خدمت ہے یاصرف شندے یانی کا پلانا؟

معلوب فانتصر کہتا رہا اورضی سوگیا نمازرہ گئی یا جماعت رہ گئی ۔ دوسرا تمام رات سوتارہا اخرشب میں اٹھ کر باجماعت نماز پڑھ لی۔ کون سی اخرش میں اٹھ کر باجماعت نماز پڑھ لی۔ کون سی اور افضل ہے؟ باجماعت نماز فجرادا کر نیوالا افضل ہے جیسے حضرت عررضی اللہ تعالی عند نے ایک صحافی کے متعلق بوج بھا (جسکی والدہ کا نام شفاء تھا) کہ صبح نماز پڑھنے نہیں آیا تو انہیں بتایا کیا کہ ساری رات عبادت کرتارہا نیندآ گئی۔ ﴿ إِنَّمَا يَخْشَى اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلُمَاءُ ﴾ کا یہی معنی ہے۔ علاء عرفاء کے معنی میں ہے۔ فاضل خیر المدارس ، قاسم العلوم واشر فینہیں ہے بلکہ علم پڑس کرنے سے حقیقی عالم وفاضل بنرا ہے۔ اس سے اتھا کہ کے بعد اعلم کے فرمانے کی وجہ بھی معلوم ہوگئی کہ تقوی بلامعرفت حاصل نہ ہوگا۔ سنت کے مطابق دور کعتیں تمام رات خلاف سنت اور مخترع عبادت سے افضل ہیں۔

ان الله قد غفر لک: تکته: شاه ولی الدُّر مات بین که وعده کمغفرت کامقتضی عمل واحتیاط ہے نہ کہ ترکیم مل وعدم احتیاط ۔ ای وجہ جب آپ الله ایک وعدم احتیاط ۔ ای وجہ جب آپ الله ایک وعدم احتیاط ۔ ای وجہ ایک الله ایک وی الله ایک وی ایک الله ایک وی الله ایک وی ایک الله ایک وی ایک معلوم ہوا کہ مغفرت کامتھ می زیادہ عبادت کے طور پرعمل میں اضافہ اور زیادتی کی جائے نہ یہ کھمل کو کم کردے یا چھوڑ دے۔ ای طرح اصحاب بدر کے بارے میں ((اعملوا ما شائنم فقد غفرت لکم)) آیا ہے۔ افلا ایکون عبدالله کوردا سے یہ مشکل بھی مل ہوگئ کہ آمیس انہیں ترکمل کی اجازت نہیں مل رہی۔ (تفصیل جلد تانی کتاب المغازی میں آئی یا دائن تعالی)

جواب اول: ہم يتليم بي نہيں كرتے كم عفرت سبقت ذنب كا تقاضا كرتى ہاس ليے كمآ كنده ك

ذنوب کی مغفرت کا مطلب بیہ ہے کہ اگر گناہ صادر ہوا تو مؤاخذہ نہ ہوگا کیں مغفرت بمعنی عدم مؤاخذہ ہے ج جو اب ثانی: غفر کنا ہیہ عدم صدور ذنب سے کیونکہ مغفرت کے بعد ذنب نہیں رہتا یعنی بیر جاز بحسب مایؤول کے ہے۔

جواب ثالث: سن غفر لک کے معنی رکاوٹ اور پردے کے ہیں ای سے مِغفر ہے خود یعنی لوہے کی فوجی ٹولی ۔ تو غفر لک کامعنی ہوا کہ آپ ﷺ سے اسکا معرور نہ ہو سکے گا۔ صدور نہ ہو سکے گا۔

جواب رابع:اعلان مغفرت علم الهي كاعتبار سے ہے اورعلم الهي ميں ماضي ،حال ،ستقبل سب برابر جي يعنى علم الهي ميں سب موجود جين تو گناه كے بعد مغفرت ہے نہ كداس سے پہلے۔

جو اب خامس: مغفرت احکام آخرت میں سے ہے اور آخرت میں سب ماتقدم کے تحت داخل ہونے اگر جدد نیا میں بعض ماتقدم اور بعض ماتا خو ہیں لے

سوال: سنانبياءتوسب كيسب مغفورين بهرآب الله كاس ميس كياخصوصيت مولى؟

جواب: واقعی تمام انبیاء کرام سب کے سب مغفور ہیں کیکن حضور ﷺ کی خصوصیت اعلان کے اعتبارے ہے۔ کہ اعلان صرف آپﷺ کی مغفرت کا کیا گیا اور کسی نبی کی مغفرت کا اعلان نبیس کیا گیا ج تا کہ شفاعت بالاذن کرسکیں۔

﴿ مسئله عصمتِ انبياء عليهم السلام ع

قولہ یا رسول اللہ ان اللہ قد غفر لک ماتقدم من ذنبک وما تأخر اس سے اور سورة فتح کی دوسری آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ انبیاء کے خلاف ہوا ہا سال سے گناہ ہوجا تا ہے تو سے مصمت انبیاء کے خلاف ہوا ہا سال بارے میں مختلف مذاہب ہیں، اصولی طور پرتین مذہب ہیں۔'

المذهب الاول: انبياء قبل النبوة وبعد النبوة كفروشرك سيمعصوم بوت بي _اور بعد النبوة عمدأوسموا كبائر سيمعموم بوت بي _اور بعد النبوة عمدأوسموا كبائر سيمعموم بوت بي قبل النبوة سموا كبائر بوسكة بي _توصفائر بهي بوسكة بي _

المذهب الثانى:انبياء يهم السلام قبل النبوة وبعد النبوة كفروش كاور كبائر معصوم بوت بير البته صغائر قبل النبوة يا بعدالنبوة بوكية بير عدابول السحوار بياشاعره كالمرب ب-

المفهب الثالث: انبیاء یکیم السلام کبائر وصغائرے قبل النبوة وبعد النبوة باک ہوتے ہیں۔ پھر بعض کہتے ہیں قبل النبوة وبعد النبوة باک ہوتے ہیں۔ پھر بعض کہتے ہیں قبل المدوق سحواصغائر کے تین درجے ہیں میں المبتد ہیں کہ معائر کے تین درجے ہیں کے میں المبتد ہیں کہ معائد کے تین درجے ہیں کے میں المبتد ہیں کہ المبتد ہیں کہ معائد کے تین درجے ہیں کہ کہ معائد کے تین درجے ہیں کہ معائد کے تین درجے ہیں کہ معائد کے تین درجے ہیں کہ کہ دو تین کے تین درجے ہیں کہ دو تین درجے ہیں کہ کہ کہ دو تین کہ تین درجے ہیں کہ دو تین کر بھی کہ دو تین درجے ہیں کہ درجے ہیں کہ دو تین درجے ہیں کہ د

اول: سس الله تبارك وتعالى نے انبياء يهم السلام كى جماعت كاذكركر نے كے بعد فرمايا ﴿ وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَالَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ اللهُ عَلَيْهُمُ عِنْدَنَالَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَحْدَادِ ﴾ جوالله پاك كے چنے ہوئے پنديده ہول ان سے ناپنديده مل كيے ہوسكتا ہے؟ انبياء عليهم السلام سے ذنب كاصدُ ورمان لياجائے تو اس سے اللہ ياك كے چناؤمين غلطى لازم آئے كى اور يرمال ہے۔

ثانی الله تعالى كاارشاد ہے ﴿ لاَ يَنَالُ عَهُدِ مَى الظّلِمِينَ ﴾ يَنبوت والاعهدة ظالموں ُونيس ل سكتا ،اور گناة ظم ہے۔ ثالث: الله تبارك وتعالى كا ارشاد ہے ﴿ وَمَا اَرْسَلْنَامِنُ رَّسُولِ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذُنِ الله ﴾ يرسول اس لئے بھيج بيں تاكمالله ياك كافن سے ان كى اطاعت كى جائے۔ ظاہر ہے نبى ہروہ قدم اٹھائے گاجو قابل اطاعت ہونہ كماس كے برعس داور معصيت قابل اطاعت نبيس۔

رابع: مرتکب معصیت قابل عماب ہوتا ہے اگر نبی سے ارتکاب معصیت ہوجائے تو امت کی طرف سے معتوب ہونالا زم آئے گااور بیمقام نبوت کے خلاف ہے۔

خامس: سسامت میں جوانسانی کمالات ہوتے ہیں نبی ان سے بدرجہاولی مشرف ہوتا ہے،احسن صور تا،احسن عملاً ،ا بھی ،آخی واقعیٰ ہوتا ہے حالانکہ منصب نیوت تشریعی ہے لیکن اللہ پاک ظاہری کھاظ سے بھی اونچار کھتے ہیں۔تو ظاہر ہے کہ سب سے زیادہ اقلی بھی ہو نگے۔اللہ پاک وثبی میں کسی قتم کا عیب پسندنہیں ہے۔

خلافِ عصمت روایات کی تاویلات

الاول: جن روایات میں انبیاء کی طرف بظاہر ذنب کی نسبت ہان سے مراوامت کے ذنب ہیں مطلق ذنب مراز نہیں ذنبک ای ذنب امتک .

الثانى: علامه انورشاه صاحبٌ نے فرمایا که خلاف شان کوذنب کہتے ہیں معصیت کوئیں س

الثالث: ذنب دوتتم پر ہے۔(۱) ذنب حقیقی (۲) ذنب مزعوی ، کہ ذنب نہیں ہوتا لیکن نی اپنے زعم میں ذنب قرار دے لیتا ہے۔

الوابع: نيكول كدوورج بين (١) فاضليت (٢) افضليت

کوئی مقرب افضل کو چھوڑ کر فاضل بڑ کمل کرتا ہے تو اپنے آپ کو قصور وار تھہراتا ہے۔ حسنات الابوار سینات الممقربین ای کانام ہے۔

مزید و صاحت: سستمبھی نیکی کے دودر ہے ہوتے ہیں۔(۱) اعلیٰ (۲) ادفیٰ۔اللہ پاک بتلانے سے پہلے نبیوں کا امتحان کرتے ہیں تو نبی اپنے اجتہاد سے یا کسی اللہ یا کسی حکمت سے اعلی کوچھوڑ کرادنی پڑمل کرتا ہے تو اللہ یا ک کی طرف سے عمّاب آ جاتا ہے کہ مطلوب تو اعلیٰ درجے کی نیکی تھی۔

هشال:اس کی مثال ایسے ہے کہ ایک طالب علم کو استاد نے بہت محنت سے بڑھایا امتحان مین دوسوال دیے گئے ۱۰۰ انمبروں والا ،۹۹ نمبروں والا ۔استاد کواپنی محنت کے لحاظ سے امید ہوتی ہے کہ ۱۰۰ نمبروں والا سوال حل کریگا کئین ده ۹۹ نمبروں والا سوال حل کریگا ہے کہ ۱۰۰ نمبروں والا سوال حل کیوں نہیں کیا۔
جہر واقعہ: ایک مرتبہ حصرت مولانا خیر محمد صاحب ؓ نے ایک کتاب کا امتحان لیا پچاس میں سے انچاس نمبر آئے (نوٹ اس وقت کل نمبر پچاس ہوا کرتے تھے (آ جکل سو (۱۰۰) ہیں) تو استاد محترم حضرت مولانا عبداللہ صاحب ؓ جامعہ رشید یہ ساہیوال نے ایک نمبر کم لینے پر ڈائٹا اڑتا لیس نمبر لینے والوں کوئیس ڈائٹا۔

خلافِ عصمت روایات کی توجیه کے لیے دواصول

اصول اول:فاعل اورقائل کے بدل جانے سے فعل اور قول کی حقیت بدل جاتی ہے۔ مثلا انبت الربیع البقل یہی جملہ اگر موحد استعال کرتا ہے تو اسادِ مجازی ہے اور اگر کافر استعال کرتا ہے تو اسادِ حقیق ہے۔ اردو میں ''چلا' نعل ہے۔ انسان چلا، ہزار پا چلا، پانی چلا، آندھی چلی، عورت چلی اس میں ہرایک کے چلنے کی حقیقت جداجدا ہے۔ اگر صحابہ ایک دوسر ہے و منافق کہیں تو اور حقیقت ہے۔ اگر مودودی اور شیعہ صحابہ کو منافق کہتو حقیقت اور ہوگ۔ اصولِ ثانی : عنوان کی تخی کھی تعلی کے تخت ہونے کی وجہ سے ہوتی ہے اور کہی فاعل کی عظمت کی وجہ سے ہوتی ہوتی ہونے کی وجہ سے ہوتی ہواں کی عظمت کی وجہ سے ہوتی ہوتی ہونے کی وجہ سے ہوتی ہونے کی وجہ سے ہوتی ہونے کی وجہ سے ہوتی ہونے کی محنت سے ہوتی ہے۔ ایک چھی مالہ بچہ مدرسہ میں واغل ہوا۔ قرآن حفظ کیا ، تجوید پڑھی ، دور ہ صدیث تک محنت سے پڑھا۔ جب فارغ ہونے سے تقریبا دو ہفتے رہ گئے نظر نہ آیا پوچھا کہاں گیا ہتلایا گیا کہ کیر والہ چلا گیا ، نیوٹا وَن چلا گیا۔ اس نے کیا گناہ کیا گناہ کیا؟ اس پر کوئی شرعی تعزیز نہیں ۔ لیکن جب استاد سے ملتا ہے تو استاد کہتا ہے کہ چلا جاسبتی میں میٹھنے کے بعد پھر چلاجا تا ہے اس کے ساتھ میں عمالم نہیں۔ مت بیٹھ جب کہ دوسراطالب علم جو چنددن سبق میں جیٹھنے کے بعد پھر چلاجا تا ہے اس کے ساتھ میں عمالم نہیں۔ مت بیٹھ جب کہ دوسراطالب علم جو چنددن سبق میں جیٹھنے کے بعد پھر چلاجا تا ہے اس کے ساتھ میں عمالم نہیں۔

الله یاک انبیاء علیهم السلام کی یوری گرانی کرتے ہیں۔ اگر کہیں کی موقع پراجتہاد میں غیر مصیب

اللہ پاک اعماء علیہم اکسیلام می پوری مراق کرتے ہیں۔اگر میں بی منوح پراجتہاد کی فیر مصیب اول تو عنابآ تا ہے کدومی کا انتظار کرنا چاہیے تھا۔

إياره ١١ سورة طه آيت١٢١

بظاهر خلاف عصمت آیات واحادیث کی توجیهات

الاول: قال الله تعالى ﴿ وَعَصِلَى الْهُ وَبَعُهُ وَ فَعُوى ﴾ له جس نے اہل سنت والجماعت سے نہیں پڑھا وہ ترجمہ کرے گا '' اور کم اوہ وکئے'' لیکن جس کو وائل عصمت متحضر ہوں گے وہ جمہ کرے گا '' اور سے چوک ہوگئی ہیں بہک گئی' فافر ہائی کی قصہ یہ ہوا کہ آ وم وہ وا کہ آ وم وہ وا کہ تعلیہ الله تعالی نے ایک درخت کے قریب جانے ہے منع فر مایا مہمانی کی عایت یہ تھی کہ یہ درخت کھالیس گے تو زمین پر چلے جا نمیں گے ۔ آ وم علیہ السلام کے اصول موضوعہ میں تھا۔ ﴿ اِنّی عالیت یہ تھی کہ یہ درخت کے اور کی مہانی ختم کرواؤں ۔ اس نے خیال ڈالا کہ اس درخت سے اس لئے روکا ہے کہ اس کی تا ثیر ہے کہ اگر کھا لوگے وہ بھیشہ جنت میں رہو گے حضرت آ وم علیہ السلام کے اس چا بھی موافق ہوگئی ہوئی دوسرا خیال یہ ڈالا کہ شروع میں منع کی گئیل ہوئی کے ۔ تیسرا خیال یہ ڈالا کہ شروع میں منع کا دوخت مراد نہیں ہے ۔ تو حضرت آ وم علیہ السلام نے اجتہاد کر کے کھالیا تو عماب آ یا کہ تصویل وہ کا انتظار کر نے کھالیا تو عماب آ یا کہ تصویل وہ کا انتظار کرنا چا ہیئے تھا۔ اور اس درخت میں بوغ کی صفت تھی اور مردا فی کی طافت کی تا ثیر بھی ، جب کھالیا تو فوراً احساس پیدا ہوا کہ میں نگا ہوں۔ اپ آ پ کے میں بلوغ کی صفت تھی اور مردا فی کی طافت کی تا ثیر بھی ، جب کھالیا تو فوراً احساس پیدا ہوا کہ میں نگا ہوں۔ اپ آ پ کو دھانیا شروع کی مون کے چھوٹا بچے نگا بھر تار ہتا ہے گئیں اس کواحساس نہیں ہوتا۔ پھر بردا ہو کر شحور پیدا ہوتا ہے تو جس کو دھانیا تے ۔ تو یہاں نہ عصبی کا مطلب نافر مانی ہے اور نہ غودی کا مطلب گراہی ہے۔

كتاب الايمان

(تقریباپندره مرتبه ذکرکیاہے) ایک جزیرہ میں پہنچ جائے تواب ان کے لیے متعہ جائز ہوگا۔

الشانی: بدر کے سرقد یوں کے متعلق مشورہ ہواتو آپ آلی اور حضرت ابو برا کی رائے ایک تھی کہ فدید کی کرچوڑ دینا چاہیئے ۔ حضرت عمر کی رائے بیتھی کہ اکوان کے رشتہ داروں کے حوالے کردیا جائے تا کہ ان کولل کردیا جائے ۔ وی نہیں آئی تھی آپ علی نے نہیں ان کا تھی آپ علی ہے کہ ان کول کردیا جائے ۔ وی نہیں آئی تھی آپ علی ہے کہ ان کا میں اور فدید لیا۔ تو آپ تھی نہ کو کونسائر اکام کیا، اضل کو چھوؤ کر واضل پڑل کیا چنا نچہ آبت الری حکما کان لینے ان ٹیکھوئن کہ آئسوری حتی یُدُخِونَ فی الارُضِ کی اللہ المثالث : آپ علی ہے کہ باس کچھرو ساء قریش بیٹھے تھے ایک نابینا صحابی عبداللہ ابن کم تو م بھی آگئے آپ اللہ کے اس کے مروساء قریش بیٹھے تھے ایک نابینا صحابی عبداللہ ابن کم تو م بھی آگئے نفع عام کو نفع عام کو نفع کو خیال ہوا کہ بیتو بعد میں بھی آسکتے ہیں شاید ان روساء کو انجی آبت اتاری حکم عَسَسَ وَ تَوَلَّی کی کا اصل اور خاص کا فرق ہوگیا۔ عبداً نادیل محبت ہے۔ فاصل کا فرق ہوگیا۔ عبداً نادیل محبت ہے۔

الموابع: حضرت نوح عليه السلام شتى پرسوار ہو گئے بيثانيس آربا تعااس کے ليے دعا کردى تواس بيس کيا گناه ہے؟ آيت اترى ﴿ لا تُحَاطِبُنِى فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوا ﴾ س صرف اتنا کيا تھا که افضل کوچھوڑ کرفاضل پر گل کيا۔ المخاهس: حضرت يونس عليه السلام نے بددعاء كى اور تبوليت كى پيشين گوئى ہوگئى عام طور پريہ ہوتا كہ تين دن بعد عذاب آجاتا تھا ليکن تين دن تک عذاب نہ آيا تو قوم كى طامت يا اس خطرہ سے كہ كہيں زيادہ تو بين کر كے ذيادہ عذاب كے مستى نہ ہوں نكل گئے گئى من سوار ہوئے تو کشتى ڈو بينے گل پوچھا گيا كون ہے جوانے مالك سے بھا گا ہوا ہے؟ فرما يا كہ مستى نہ ہوں کئى بان نے کہائيس آپنيس ہوسكتے چنا نچے قرعہ ڈالاتو آپ كانام كل آيا آپ عليه السلام نے چھلا عگ لگادى آل اللہ پاک نے فرما يا ﴿ فَالْ اللّٰ اللّٰ كَانَ كِنَا اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ من اللّٰ اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه الله من الله من الله ا

السادس: ابراہیم علیہ السلام نے فرمایا ا۔ ﴿ إِنَّى سَقِیْمٌ ﴾ لا ٢- ای طرح فرمایا ﴿ فَعَلَه ' تَجِیْرُ هُمُ هذا فَاسْتَلُو هُمُ ﴾ کے ٣- حضرت الله فقرت ماده کے بارے میں فرمایا هذه احتی ان کے بارے میں آنخضرت مالی نے فرمایا (ثلث کذ بات)) ﴿ اب بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ نبی نے جموث بولا اور یہ گناہ ہے تو نبی معصوم کیسے ہوگیا۔ لحدا الی تغییر کریں جوشان عصمت کے خلاف نہ ہواوروہ یہ ہے کہ یہاں کذب صرح نہیں ہے بلکہ توریم راد ہے۔ کذب کی حقیقت ہیاسناد الشنی الی غیره. کذب ایک اصطلاح ہے جسکی کی اقسام ہیں۔

(۱) كذب صريح (۲) استعاره (۳) تشبيه

غ پاره ۱۰ سورةالانفال آیت ۲۷ س پاره ۳۰ سورة مجس آیت؛ سر چلهه ۱۲ سورة هود آیت ۳۲ س تخییرعایی م ۳۳۸ هی پاره سما سورةالانبیاء آیت ۲۷ بر پاره ۲۳ سورةالصافات آیت ۸۹ سی پاره کاسورة الانبیاء آیت ۲۱ م بخاری شریف ق م ۲۷ سرخالصاً رام پانگرایی هی جلالین ص ۳۷۲

آیت اولی:اِنِّی سَقِیْم ،ای سَاسُقِمُ و کینی مستقبل میں بیار ہونگا ہر مخص مستقبل میں بیار ہونے والا بے۔اور نہیں تو موت کے وقت تو ہوگا۔

آیت ثانیه:(۱) فَعَلَهٔ کَبِیرُهم هذا ،فعلهٔ پروتف کرلیل ابره گیا کبیرهم هذا دو کس کرنے والے بنے کیا۔ یدانکابرا ہے اس سے بوچھاؤ'۔

(۲) یا کبیر هم سے مراد حضرت ابراہیم علیہ السلام نے اپنے آپ کولیا۔ نبی اپنی امت میں سب سے براہوتا ہے یہی بات دیو بندیوں نے کہدوی تو ساری دنیا مخالف ہوگئ ۔ انسان سب بھائی بھائی بیں ۔ نبی سب سے برا بھائی ہوتا ہے ان کی برے بھائی کی طرح قدر کرنی چاہیے یہی ((افا سید ولد آدم)) کی گفتیر ہے لیکن بر بلویوں نے سبی بھائی سمجھا۔ جمله ثالثه:هذه احتى: اى احتى فى الاسلام ، بهن بھائی گئ شم کے ہوتے ہیں۔ دین بھائی، قبیلہ کا بھائی، استاد بھائی، پیر بھائی آج کل حاجی بھائی بھی بناہوا ہے جس سے پاکستانی عورتیں پردہ نہیں کرتیں۔ بھائی، استاد بھائی، پیر بھائی آج کل حاجی بھائی بھی بناہوا ہے جس سے پاکستانی عورتیں پردہ نہیں کرتیں۔

مو دو دی کا جو اب: مودودی نے ان سب کا ایک جواب دیا ہے کہ بخاری شریف کی روایت کو جھٹا دولا لیکن یہ بھی سلف سے بدگانی کرنے گی سازش ہے۔ لوگ کہتے ہیں دین کی بڑی خدمت کررہے ہیں۔ جب یہ الفاظ سنتے ہیں تو ہمارے رو نگٹے کھڑے ہوجاتے ہیں۔ کی مودودی فدہب والے کوکی نی سے عقیدت نہیں کیا یہ دین کی ضدمت ہے؟ سب سے پہلے حدود پر اس نے ظلم کا اطلاق کیا ، کہتا ہے جب معاشرہ سے بھوک دور نہیں کی اور اسی فعد غریب ہیں اوروہ بھوک کی وجہ سے چوری کرتے ہیں تو کیا حدگناظلم نہیں؟ سے پھر کہتا ہے کہ معاشرہ خراب ہے فیصد غریب ہیں اوروہ بھوک کی وجہ سے چوری کرتے ہیں تو کیا حدگناظلم نہیں؟ سے پھر کہتا ہے کہ معاشرہ خراب ہے عورتوں مردوں کا خلط ملط ہے تو جب تک کہ اس معاشرہ کو نہیں بدلتے حد زناظلم ہے۔ ہردین کا کام اخلاص کے ساتھ کرنے والے کو برا بھلامت کہولیکن نا جائز راستہ اختیار نہ کرنا۔

 دیتے ہیں وَلَقَدُ هُمَّتُ بِهِ ای باحذِ یوسفَ اور و هَمَّ بِهَا ای بدفعها وہی بات ہے کہ قائل اور فاعل کے بدلنے سے فعل اور قول کی حقیقت بدل جاتی ہے۔

 $(1^{\prime\prime})$

﴿باب من كره ان يعود في الكفر كما يكره ان يلقى في النار من الايمان ﴿ باب من كره ان يعود في الكيمان ﴾ جو تحف يحركا فر بوجاني كواتنا براسجه جيسي آ-ك مين دالا جانا، وه سيامون ب

(۲۰) حدثناسلیمان بن حرب قال ثناشعبة عن قتادة عن انس بم سے بیان کیا شعبہ نے ، انھوں نے قادہ سے ، انھوں نے انس سے عن النبی علی النبی علی اللہ قال ثلث من کن فیه وجد حلاوة الایمان ، انھوں نے آخیوں نے آخیوں نے انس من کن فیه وجد حلاوة الایمان ، انھوں نے آخضرت علی ہے ، فرمایا جس میں تین باتیں ہوئی وہ ایمان کا مزہ پائے گا من کان الله ورسوله احب الیه مماسواهما ومن احب عبدالایحبه الالله ایک تو اللہ اللہ ومن یک وہ ایمان کے دوتی رکھے ایک تو اللہ اللہ کے ایک تو اللہ کے ایک تو اللہ کی اللہ کے ایک تو اللہ کی اللہ کے اللہ کے اللہ کے اللہ کے اللہ کی اللہ کے اللہ کے اللہ کے اللہ کی اللہ کے اللہ کی کی اللہ کی کی کی اللہ کی ا

نوٹ:اس باب کے تحت صدیث کے تمام اجزاء پر بحث گزر چکی ہے اور روایت الباب کا ترجمۃ الباب سے رکبط بھی واضح ہے (10)

﴿باب تفاضل اهل الایمان فی الاعمال ﴾ ایمان دارول کے اعمال کے روسے ایک دوسرے پرانضل ہونے کے بیان میں

(۲۱) حدثنااسمعیل قال حدثنی مالک عن عمرو بن یحیی المازنی ام سے بیان کیااساعیل (ابن ابی اولیس) نے ،کہا مجھ سے بیان کیا (امام) مالک نے ،انھوں نے عمرو بن کی مازنی سے عن ابی سعید الحدری عن النبی علیہ قال انھوں نے اپنے عن ابی سعید خدری سے،انھوں نے آنخضرت علیہ سے، فرمایا

یدخل اهل الجنة الجنة واهل النار النار ثم یقول الله

(حاب کاب کے بعد) بہشت والے بہشت میں اور دوز نے والے دوز نے میں چل دیں گے، پھر اللہ تعالیٰ فرمائے گا

اخر جوا من کان فی قلبه مثقال حبة من خودل من ایمان فیخر جون منها

جس شخف کے دل میں رائی کے دانے کے برابرایمان ہوائی کو دوز نے نکالو، پھرالیے لوگ دوز نے نکالے جائیں گے

قداسو دوا فیلقون فی نهر الحیا او الحیاة شک مالک .

وه (جل کر) کالے ہوگئے ہوں گے، پھر برات کی نہریا (کہا) زندگی کی نہر میں ڈالے جائیں گے (ام) کما لک کوشک ہے

فینبتون کما تنبت الحبة فی جانب السیل الم ترانها

وه ای طرح (نے سرے سے) اگر آئیں گے جیے دانہ ندی کے کنارے اگر آتا ہے، کیا تو نہیں دیکیا تو نہیں کے جیل تو نہیں کے جیل تو نہیں کے جیل کے درد لیٹا ہوا ٹکٹا ہے۔ وہ بیب نے کہا ہم ہے عمر و (بن شخیل کی نیر) حیات کے الفاظ بیان کئی جیل وقال خودل من خیر یا

(اورایمان کے بدلے) حودل من حیو (رائی کےدانے کے برابر خیر) کالفظ کہا۔

(۲۲) حدثنام حمد بن عبیدالله قال ثنا ابراهیم بن سعند عن صالح عن ابن شهاب هم سے بیان کیا محد بن عبیدالله قال ثنا ابراهیم بن سعد نے ، انھوں نے صالح سے ، انھوں نے ابن شہاب ہے عن ابی امامة بن سهل بن حنیف انه سمع اباسعید والمحدری یقول قال رسول الله علی انھوں نے ابوامامہ (بن بہل ابن حنیف سے ، انھوں نے سنا ابوسعید خدری سے ، وہ کہتے تھے آنخطر تعلی اندا نائم رأیت الناس یعرضون علی وعلیهم قمص بینا انا نائم رأیت الناس یعرضون علی وعلیهم قمص ایک مرتبہ میں سور ہاتھا، میں نے (خواب میں) لوگوں کو دیکھا وہ میر سرامنے لائے جاتے ہیں اوروہ کرتے پہنے ہوئے ہیں منها ما دبلی و منها ما دون ذلک و عرض علی عمر بن الخطاب بعضوں کے کرتے چھاتوں تک ہیں اور بعضوں کے اس سے بھی کم اور عمر بن خطاب میرے سامنے لائے گے بعضوں کے کرتے چھاتوں تک ہیں اور بعضوں کے اس سے بھی کم اور عمر بن خطاب میرے سامنے لائے گ

لهام بخارق آن حديث و7بارايت بين (رقوم الأحاديث بمطابق بخاري مطبوعه الراسلام الرياض: ۳۲ ، ۱۵۸۱ ، ۱۹۵۲ ، ۱۵۲۸ ، ۲۵۲۸ ، ۲۵۲۸ اخريه النسائي

كتاب الايمان

وعليه قميص يجره قالوا فمااولت ذلك يارسول الله قال الدين وہ ایبا کرتہ پہنے ہوئے ہیں جس کووہ تھینچ رہے ہیں (اتنا نیجاہے)صحابہؓ نے کہا، یارسول النطاب آپ اس کی تعبیر كيادية بن؟ آپ عَلِيْكُ نِهُ مِايا، دين!

المتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض: المال من ايك دوسرے پر افضل ہونا، يعن فضيات ايك دوسرے پر اعمال میں ہوگی نفس ایمان میں نہیں ۔معلوم ہوا کہ امام بخاریؓ وہمی مسلک رکھتے ہیں جوائمہ حنفیہؓ رکھتے ہیں کہنفس أيكان، لايزيد ولا ينقص معلوم مواكهاس باب سي مقصودم جيداوركراميدكارد بندكه حنفيدكا

سوال:ام بخاريٌ نے ايک جگه فرمايا الايمان هوالعمل توترجمه کي حقيقت بدل جائيگي اور مقصود به هوگا تفاضل اهل الايمان في الايمان؟

جواب: يه كر جمه كالمقصد بدل جائ كار جمد ب عن تونيس بوكا - جيس تفاضل أهل العلم في العلم. اعتراض:اس باب يراعراض يه كرامام بخاري في جاص الير باب زيادة الايمان ونقصانه ك عنوان سے ایک باب قائم کیا ہے دونوں بابوں میں ایک ہی صدیث ذکر کی ہے تو تکر ارلازم آیا؟

جواب ا: محدثين فرمايا كه يهال كرار حقيقى نهيس، كرار حقيقى وه موتاب جس ميس كوئى فائده نه مواور جهال پر تکرار میں کوئی نہ کوئی فائدہ ہوا سے تکرارصوری کا نام دیا جاتا ہے تکرار حقیقی ممنوع ہےصوری نہیں۔اول تو الفاظ ہے ہی واضح ہے، یہاں اہلِ ایمان کی فضیلت کا ذکر ہے اور وہاں زیادتی کا۔زیادتی کے مقابلے میں نقصان ہے۔افضل کا مقابل فاصل اورفضل ہے۔انبیاعیصم السلام کے بارے میں آپ نے زیادتی کالفظنہیں سنا ہوگا کہ ان کا درجہ فلاں ے زیادہ ہے کہاس کے مقابلہ میں ناتص آجائے کیکن افضل کالفظ استعال ہوتا ہے۔

جواب ٢ : يهال موصوفين كابيان ہو مال صفت كاردوسر الفاظ ميں يوں كهدليس، يهال اشخاص كابيان ہے وہاں احوال کا۔

خودل:رائي كادانه

افشکال: حبة من حودل تو وزنی چیز ہے۔اور کیلی چیز ہے جب کدایمان تو ایمانہیں ہے پھر حبة من خودل كهنا كسے درست موا؟

جواب: تشبيه المعقول بالمحسوس ــــــ

المذكورة حديث الم بخاري بخاري شريف يس 4 بارلات (رقوم الاحديث بمطابق بخارى مطبوعة واراسلام الرياض: ٣٦٠ ، ٣٩٩١ ، ٢٠٠٥ ، ١٩٠٠ ، ايينا اخرجه الترين والنسائى)

نھو الحیا: حیا شرخندگی کے معنی میں نہیں۔ بلکہ حیازندگی کے معنی میں ہے۔ کل مابد تحصل الحیاق ا مرادوہ نہر ہے جس میں غوطروینے سے زندگی آجاتی ہے۔ یا حیا بمعنی بارش ہے اور حیاسے تعبیراس لئے کیا کہ بارش سے زمین آباد ہوجاتی ہے تو گویابارش زمین کی زندگی کا باعث ہے۔

او الحياة: "او شك ك لي ب-دوسرى روايت ك الفاظ مين شكنيس ب-معلوم بواك شك امام ما لك بيام ما لك سيني كسى راوى كوبواب-

کماتنبت الحبة: "حبة" اس خودرَ و دانے کو کہتے ہیں جو صحراء میں اُگناہے۔اور اس کی جمع حَبّات ہے۔اور حبّ کی جمع حبوب آتی ہے اِبعض نے کہا کہ المجبة پرالف الم عہدی ہے۔مراداس سے وہ دانہ ہے جو تالاب اور جو ہڑوں کے کنارے پراگنا ہے۔ عربی میں اس کو بقلة المحمقاء س کہتے ہیں اور پنجا بی میں پدیپڑا کہتے ہیں۔

صفر آء ملتوية: يدانه جب أكتاب توشروع من زرد بهي موتاب اور ثير حاجي _

قال و هيب :فائده: يهال تعلق كابيان ب-روايت ما لكُ اورتعليق و بيبٌ مين متعدوفرق بين ـ

فرق نمبر ا: مالك عنعنه بروايت كرتي بي اوروميب حدثنا س

فرق نمبر ٢: والفظحيا مين شك بي يهال نبين بـ

فرق نمبر ۳: پہلی روایت میں خودل من ایمان ہے اور اس میں خودل من خیر ہے یہ بتا تا چاہتے ہیں کہ پہلی روایت میں جو ایمان کالفظ ہے اس سے مراد بھی خیر ہی ہے تا کہ روایت الباب ترجمة الباب کے مطابق موجائے۔ اس لیے کہ خیر سے مراد علی ہے جا ہے اس بات کوسوال وجواب کے طور پر بیان کراو کہ ترجمة الباب میں اعمال کی کی بیشی ذکر ہے اور دوایت الباب میں کی بیشی ایمان کے کھا ظ سے ہے۔

ثُلِيّ : ثَدُي كَيْمُ عِهِ -

اللدین: دین سے مراد عمل ہے تو دین یعنی دین کے عمل کے لحاظ سے لوگ کم وہیش ہو گئے۔

ا شکال: باب کی دوسری روایت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عرسمام صحابہ سے افضل ہیں کیونکہ قبیص جواعمال پر دال ہے۔ان کی سب سے لمبی ہے حالانکہ ابو بکر "بالا جماع افضل ہیں۔

جواب:اشاعت وین کے لحاظ سے فضیلت جزئی ہے چنانچ عمر کے زمانہ میں جتنا دین پھیلا ہے اور اسلام کوغلبہ داا تناکس اور کے زمانہ میں نہیں ہوا۔

ل فتح الباري ج اص مسمطيع انساري ديلي ع ايضا سع الجند اردوس ١٨٣ع، والقاري ج اص ١٥٥

مضمونِ حدیث : اس اس حدیث میں شفاعت کا ذکر ہے کہ جنتی جنت میں اور دوزخی دوزخ میں داخل ہوجا کیں گے تو اللہ تعالی فرشتوں، نبیوں، اولیآ ءکرام حتی کہ اہل جنت سے فرما کیں گے جسکا دل چاہے رائی کے برابر بھی جس میں ایمان ہواسکو نکال لور تو وہ نکال کیں گے۔ ایک تفصیلی روایت میں ہے کہ اللہ تعالی اعلان فرما کیں گے جس کے دل میں اونی خودل عن الایمان ہواک کو نکال لور چراعلان ہوگا جس کے دل میں ادنی خودل عن الایمان ہونکال لور چراعلان ہوگا جس کے دل میں ادنی خودل مین الایمان ہونکال لور آ پ علیہ کو حکم ہوگا کہ جن اہل ایمان کو پہچان لیس نکال لیس، چنانچہ آ پ علیہ نکال لیس گے اس کے بعد اللہ تعالی فرما کیں گے سب نے شفاعت کرلی۔ اب میری باری ہے تو تین لیس بھر کر نکالیس گے اور جنتیوں میں ان کو عتماء اللہ کے نام سے پکارا جائے گا تو نفاض اہل ایمان ثابت ہوا کہ بچھ پہلے جنت میں چلے جا کیں گے اور جنتیوں میں النہ تعالی اپنے فضل سے بخش دیں گے۔ تو نفاض اہل ایمان ثابت ہوا کہ بچھ پہلے جنت میں چلے جا کیں گے اور جنتیوں میں اللہ تعالی اپنے فضل سے بخش دیں گے۔

میر کاشعر ہے لیکن اسکے نام کی جگدا پنانام رکھ دیا ہے۔

| جب نه کوئی اور صورت دیکھی | یہ کہہ کر بخش دیا داور محشر نے مجھے |
|------------------------------------|--------------------------------------|
| تونے اپنے گناہ اور میری رحمت دیکھی | عمر بحر بندہ بتاں رہ کر اے صدیق عاصی |

مسوال:الله تعالی فرمائیں گے کہ اہل ایمان میں سے جن کو پہچا نو نکال لو۔ سوال یہ ہے کہ جنتی کیسے پہچا نیں گ حالانکہ کچھا یسے اہل ایمان بھی ہونگے جنکو کوئی بھی نہیں پیچان سکے گا؟

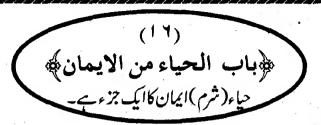
جواب (ا):ایے مومنین جن کوکوئی بھی نہیں پہان سکے گاان کواللہ تعالی اپنے ضل سے نکالیں گ۔ جواب (۲): جتنے بھی مومن ہوں گے اتکی تین شمیں ہوجائیں گ

ا ... المومنون الماثورون بآثار اعمال الجوارح.

المومنون الموصوفون بآثار الايمان اى بآثار اعمال القلب.

٣ المومنونُ بُلدون الآثار . ٢

پہلی قتم کولوگ جلدی پہپان لیں گے کہ تجدہ کا نشان وغیرہ ہوگا اور دوسری قتم کو آپ علی ہے۔
۔ صدیث پاک میں ایک جگہ آتا ہے کہ خاص حضور علیہ کو تھم ہوگا نکال او۔ اور جن پرکوئی آٹار نہیں ہو نگے ان کوصر ف
اللہ تعالیٰ ہی پہپانیں گے اور نکال لیں گے ۔ خلاصہ بیہ ہوا کہ جن میں اعمال کے آٹار زیادہ ہو نگے ان کواد فی سے ادنیٰ
جنتی بھی پہپان کرنکال لے گا ۔ تو تفاضلِ اہل ایمان دونوں طرف سے ثابت ہوا نکلنے والوں کی طرف سے بھی اور نکا لنے والوں کی طرف سے بھی۔



(۲۳) حدثناعبدالله بن يوسف قال اخبرنامالک بن انس عن ابن شهاب بم سے بيان كيا عبدالله عن ابن شهاب بم سے بيان كيا عبدالله عن ابيله ان رسول الله على يال بن انس نے ، انهوں نے ابن شهاب عن سالم بن عبدالله عن ابيله ان رسول الله على شهاب مر على رجل من الانصار انهوں نے سالم بن عبدالله عن ابيه ان رسول الله على سالم بن عبدالله سے، انهوں نے اپنج باپ (عبدالله بن عمر) سے كم تخضرت على انسان مرد پر گذر سول الله على الحياء من الايمان يا وهو يعظ احاه في الحياء فقال رسول الله على الله على الحياء من الايمان يا ادرده اپ بحال وسول الله على المان عن الايمان يا الايمان يا الايمان يا الايمان يا الايمان يا الايمان يا الله على الله على

وتحقيق وتشريح

اس حدیث کی سند میں پانچ راوی ہیں ، پانچویں عبداللہ بن عرابیں ، والد کے ساتھ مکہ کرمہ میں مسلمان ہوئے قال میمون بن مھوان مار أیت اور ع من ابن عمرو لااعلم من ابن عباس و مات سنة ثلاث و سبحتی العدقت الذہبیر بثلاثة اشھو . ع

ماقبل سے ربط: الحیاء من الایمان پہلے ضمنا گرر چکا ہے اب اس کو متقل باب میں ذکر کرر ہے ہیں روایت الباب سے ترجمۃ الباب واضح ہے۔

دعه فان الحیاء من الایمان:سوال: جب بهائی حیاء کی نصیحت کرد ہا ہے تو آنخفرت علیہ اس کومنع کیوں فرمار ہے ہیں؟ اور پھرمنع کرنے کی علت یوں بیان کردہ ہیں فان الحیاء من الایمان -جبکداس علت کا تقاضا تو یہ ہے کہ مزیدا ہمام کے ساتھ حیاء نصیحت کی جائے۔ الحاصل دعوی پردلیل منطبق نہیں؟

الظرد ١١١٨) ع مفكوة اكمال في الاجال ص ١٠٩

جواب:وهو يعظ احاه في الحياء كاير مطلب نہيں كد حياء كرنے كى نفيحت كرر ہاتھا بلكه ال كو حياء چوڑ نے كى نفيحت كرر ہاتھا كما تى حياء نه كياكر في الحياء اى في توك الحياء ـ

سوال ثانی: پھرسائل سوال کرتا ہے کہ جب حیاء ایمان میں سے ہتو صحابی محابی ہوکراس سے کیوں روک رہاہے؟

جواب:اصل میں وہ بہت حیاء کرتا تھا جس کی وجہ سے بہت سارے امور میں کمزوررہ جاتا تھا جب حیاء بہت زیادہ ہوتو آ دی اپنے حقوق بھی وصول نہیں کرسکتا۔ وہ بہت زیادہ حیاء سے روک رہا تھا جس سے بعض مرتبہ آ دمی دینی امور بھی بور نہیں کرسکتا۔

سوال قالث:اگرکوئی محض حیاء کی وجہ سے شریعت کے کسی امر پر عمل نہیں کرتا تو کیا ہے ایمان میں سے ہوا؟ جبکہ حدیث میں المحیاء من لایمان ہے۔ مثلاً حیاء کی وجہ سے نماز چھوڑ دے یاداڑھی ندر کھ؟

جواب: سیمیاءتین شم پرے۔ ا .حیاء طبعی ۲ حیاء عرفی ۳ حیاء شرعی

حیاء طبعی: سسطبی طور پرایک آدی باحیاء ہوتا ہے جس مل کولوگ تاپند کرتے ہیں آدی حیاء طبعی کی وجہ سے اس مل کوچھوڑ دیتا ہے۔

حیاء عرفی: عرف میں جے ناپند کرتے ہیں آ دی حیاء عرفی کی وجہ سے اس ممل کواسے چھوڑ دیتا ہے۔ حیاء شرعی: یہاں حیاء شرعی مراد ہے۔ ایک چیز عرف میں ناپندیدہ ہے لیکن شریعت میں پندیدہ ہے اوراس کووہ شریعت کی وجہ سے کرتا ہے تو حیاء شرع ہے۔ جیسے ایک آ دی کا لقمہ گرجا تا ہے تو شریعت کی وجہ سے لقمہ اٹھا کرصاف کرکے کھالیتا ہے۔

امام راغب ني كلها ہے كه حياء كے دوركن بيں۔ اجبن ٢ عفت,

اس لیے جس میں عفت ہوگی وہ مجھی فت کے کا منہیں کرے گا۔ جس میں جبن نہیں ہے بہادری ہے تو وہ کسی کا م کوچھوڑ نے کے لیے تیار نہیں ہوگا تو جبن اور عفت سے ملکر حیاء پیدا ہوتی ہے تو دین پر چلنا آسان ہوجا تا ہے۔

(٤١) ﴿ باب فَإِنُ تَابُوُ اوَ أَقَامُو الصَّلُو ةَ وَ التُو االزَّكُو ةَ فَخَلُو اسبِيلَهُمْ ﴾ اس آیت کی تغییر میں کہ پھراگر وہ تو بہ کریں اور نماز پڑھیں اور زکوۃ دیں توان کاراستہ چھوڑ دو

(۲۳) حدثناعبدالله بن محمد المسندى قال حدثنا ابوروح الحرمي بن عمارة قال الم سع بيان كيا ابوروج حرى بن عمارة قال محدثنا شعبة عن واقد بن محمد قال سمعت ابى يحدث عن ابن عمر ابن عمر الم سعبة عن واقد بن محمد قال سمعت ابى يحدث عن ابن عمر الم سعبة عن واقد بن محمد قال سمعت ابى يحدث عن ابن عمر الم سعبة عن واقد بن محمد قال سمعت ابى يحدث عن ابن عمر ان الله عمر الله الله الله الله وان محمد ارسول الله ويقيموا الصلوة ويؤتو االزكوة وي الله وان محمد ارسول الله ويقيموا الصلوة ويؤتو االزكوة وي الله وان محمد ارسول الله ويقيموا الصلوة ويؤتو االزكوة وي الله والله الا الله وان محمد ارسول الله ويقيموا الصلوة ويؤتو االزكوة وي الله والله الله وسابهم على الله والم الم الله وحسابهم على الله والم الله وحسابهم على الله وحسابة على الله وحسابة الم الله وحسابة على الله وحسابة الله الله وحسابة الله الله وحسابة الله وحسابة الله وحسابة الله وحسابة الله وحسابة الله الله وحسابة الله الله وحسابة الله و الله

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غرض: مين دو تقريرين كى جاتى بين ـ

اول:مرجد اور کرامیہ کارد ہے جو مل کوغیر ضروری قرار دیتے ہیں طرزِ استدلال بیہ کہ تو بہ کرنے کے بعد صلوٰ ۃ وزکوٰ ۃ اداکرنے کاذکر ہے۔

ثانی: امام بخاری کی غرض ترکیب ایمان کو ثابت کرنا ہے۔ فرمایا کہ کفر کی سز اید ہے کہ اس کے مرتکب کو مارا جائے ، قبل کیا جائے ۔معصوم قرار نہ دیا جائے۔معصوم الدم ہونے کی تین شرطیں ہیں۔ (۱) اقرار شھادتین

إ اخرجه البغارى اليضامن حديث الي هريرة مرفوعا واليضامن حديث الس في الصلوة واخرجه مسلم عمدة القارى ج الص ١٥٩

(٢) اقامت صلوة ٣٠ ايتاء زكوة

طریقِ استدلال:بیب که عصمت دم کے قحلیے نتیوں کا مجموعہ شرط ہے معلوم ہوا کہ ایمان ان تین چیز ول سے مرکب ہے اور عصمت دم ایمان سے حاصل ہوتی ہے۔ جمہور اس کے قائل ہیں کہ عصمت ان تین چیز وں سے ہے کیکن حنفیہ تو جید کریتے ہیں کہ کمال عصمت کمال ایمان کے لیے ضروری ہے۔

دلائل حنفیة:اول: ابوداودی روایت بے که اگر کوئی نماز قائم نہیں کرتا تو اس کا معاملہ اللہ تعالیٰ کے سپر د ب، چا ہے اللہ پاک اسکومعاف کردے چا ہے عذاب دے یا ۔تارک صلوٰ ق کومشیت ایز دی کے سپر دکرنا دلیل ہے کدہ کا فرنہیں ہوتا۔ کیونکہ کا فرکی بخشش مشیت پر معلق نہیں ہے۔

ثانى: تارك صلوة كوجهورائرة كافرنبيل كبتر

حكم تارك صلوة:

اول: امام شافق اورامام ما لك كنزويك مداقل كياجائ ال

ثانى:امام ابوضيفة كزويك قيدكياجائ حتى يتوبس اويموت.

فالت: امام احد قرماتے ہیں کہ تارکِ صلوة مرتد ہوجاتا ہے، مرتد ہونے کی وجہ سے قل کیا جائے گا۔

الحاصل: تارك صلوة كوتين امام كافرقر ارئيس دية ايك امام كافرقر اردية بير

امام شافعی وامام ما لک مدّ اقتل کے قائل ہیں۔امام احمدُّردّة اورامام اعظم بھی تعزیراً قتل کے قائل ہیں۔تعزیر اور حدمیں فرق ہے تعزیر معاف ہو سکتی ہے کیکن حدثہیں۔

لطیفہ:امام احد امام شافعی کے شاگر دہیں۔انھوں نے امام احد سے پوچھا کا کہ تارک ِ صلوۃ کا کیا تھم ہے؟ فرمایا مرتد ہے امام شافعی نے فرمایا تو بہ کی کیا صورت ہے؟ فرمایا نماز پڑھ لے،امام شافعی نے فرمایا کا فرکی نماز لا یعتبو (اس کا اعتبار نہیں) ہے۔ فرمایا کلمہ پڑھ لے۔ فرمایا کلمہ تو وہ پہلے ہی پڑھتا ہے، فسکت احمد ہے

ویقیمو االصلواق: بدروایت جمهورائمة کی دلیل ہے۔ یہاں سےمعلوم ہوا کہ جس طریقے سے شھادیتن کے منکر کوتل کیاجا تا ہے ایسے ہی اقامت صلوۃ کے چھوڑنے والے کو بھی قمل کیاجائے۔

جواب اول:احناف کہتے ہیں کہ یہاں قال ہے قل نہیں والقتال غیر القتل قال لڑائی کو کہتے ہیں اور قل باندھ کریا گل کر کہتے ہیں اور قل باندھ کریا گل کر کرمارنا۔قال کالفظ صدیت پاک میں ((مارّ ہین یدی المصلی)) کے بارے میں بھی آیا ہے اور اجماع ہے کہ مارّ ہین یدی المصلی کا قل جا کرنہیں۔قال المنع بشدة کے معنی میں ہے۔ام محرّ سے منقول ہے کہ

ل الوداؤدشريف ص ۲۰۸ ج اع فيش البارى ج اص ۲۰۱ ع عدة القارى ج اص ۱۸۱ ع ورس بخارى ص ۲۰

جوستی تارک اذان ہوجائے اس کے ساتھ قال کیاجائے گاجو قبیلہ ختنہ کروانا چھوڑ دیے اس سے بھی قال کیاجائے گا۔ ا جو اب ثانمی: یہاں ایتاءِز کو اُق کا حکم بھی ہے اگر اس حدیث سے تارک صلوق کے قل پر استدلال ہے تو تارک ایتاءز کو ق کے قل پر بھی استدلال ہونا جا ہے۔ .

جواب ثالث: ابتداء اسلام میں اقامت صلوة اور ایتاء زکوة کوعلامت کے درجہ میں قرار دیاجائے گالیکن امام عظم نے مجوعہ دلائل سے استدلال کیا ہے کہ تارک نماز کا فرنہیں۔

سوال: حضرت ابو بکرصد این مانعین زکو ہ کے بارے میں قال کے قائل تصاور حضرت عمر قائل نہیں متصے بلکہ روک رہے ہے اور اگر مرتد نہیں روک رہے ہے ؟ اور اگر مرتد نہیں ہے تو حضرت عمر کیوں روک رہے تھے؟ اور اگر مرتد نہیں ہے تو ابو بکرصد این نے قال کا حکم کیوں دیا؟

جواب : سسمانعین زکوة مرتذ نہیں تھے۔ حضرت ابو بکرصد این اُرتداد کی وجہ سے قال نہیں کررہے تھے۔ حضرت عمر اُلیّن کی بہی شبہ تھا حضرت ابو بکرصد این کامؤقف یہ تھا کہ جو ممل آنخضرت علیہ تھے کے زمانے میں ہوتا تھا اگراس کو چھوڑ دیا گیا تو دین میں کمزوری آجائے گی اس لیے قال کو ضروری قرار دیتے تھے وہ مانعین زکوة تھے منکرین زکوة نہیں تھے اور کا فرمنکرین زکوة کو کہتے ہیں۔ وہ کہتے تھے کہ اپنی مرضی سے جسکو چاہیں گے زکو قدیں کے یعنی مطلق زکوق کی اوائیگی کے مکر نہیں تھے بلکہ ادا الی الامیوکے قائل نہیں تھے۔

عصمو امنی د مآء هم:سوال: اس مدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ کافر جب تک کلمہ نہیں پڑھے گا خون معان نہیں ہوگا۔ حالانکہ اگر کافر جزید دینا قبول کر لے تو خون معاف ہے اس کوٹل کرنا جائز نہیں؟

جواب اول: بیرهدی خصوص عندالبعض ہے اپ عموم پر باقی نہیں۔ کیونکہ دوسرے دلائل سے ثابت ہے آ بھائے نے ان کے بارے میں فرمایا ((دمائھم کدمائنا و امو الھم کاموالنا و اعراضهم کاعراضنا)) یا جواب ثانی: یشھلوا کامصدات عام ہے کہ کمہ پڑھ لے یاکلہ کی حاکمیت کو سلیم کر لے البذاید ڈی کو گئی شائل ہے۔ الابحق الاسلام: هِ اسلام میں تین آ دمیوں کو تل کیا جاسکتا ہے ا۔ جو خص اسلام قبول کرے اور مرتد ہوجائے۔ اجماع ہے کہ مرتد کی سزائل ہے (پاکتان کے ساے کے آئین میں مرتد کی سزائل نہیں ہے ساے کہ آئین میں مرزد کی سزائل نہیں ہے ساے کے آئین میں مرزد کی سزائل نہیں ہے ساے کے آئین میں مرزائیوں کو کیونکہ سلمان لکھا ہوا نے پاکتانی قومی اسمبلی نے سے تمریم کا اور کو من کی کر مسلم قرار دیا) میں مرزائیوں کو کیونکہ مسلمان لکھا ہوا نے پاکتانی قومی آئی کرد ہے واس کو بھی تل کرد نے واس کو بھی تل کی دونوں شاخوں کو غیر مسلم قرار دیا) میں مرفق جو کی کوناحی قبل کرد ہے واس کو بھی تل کیا جائے گا۔ سے شادی شدہ زنا کر بے اس کو بھی رجم کیا جائے گا۔

ا عدة التاري ج الس ١٨٠ ع إيار لينت مين قادياني شك ص ١٩)

و حسابهم على الله: مطلب يه به كركى في ابنا ظاهر اسلام كمطابق كرليا اوردل سيسليم بين كياتو اس كامعامله الله باك كرسير و به كيكن جب وه اسلام ظاهر كرك كاتو دنيا مين اسلام اس كر ليم مفيد بو كا اور آخرت مين مفيداس وقت بو كا جبكه اندر بهي بو -

> (۱۸) ﴿باب من قال ان الایمان هو العمل﴾ الشخص کے بیان میں جس نے کہا کدایمان ایک عمل ہے

لقول الله تعالى (وَتِلُکَ الْجَنَّةُ الَّتِی اُوْرِثُتُمُوهَا بِمَا کُنْتُمُ تَعُمَلُونَ)
بیجدالله تعالی کے فرمان کے (سورہ زخرف میں) فرمایا یہ جنت جس کے تم وارث ہوئے تہمار ہے مل کا بدلہ ہے
وقال عدة من اهل العلم فی قوله تعالى (فَورَبِّکَ لَنَسْنَلَنَّهُمُ اَجُمَعِیُنَ عَمَّا کَانُوا یَعُمَلُونَ)
اوری عالموں نے اللہ تعالی نور میں جرم ہے تیرے مالکی ہم ان سباوکوں سان کے لک کار برس کرس کے تغیر میں
عن قول الاالله الاالله : وقال تعالی (لِمِشُلِ هَذَافَلَيْعُمَلِ الْعَامِلُونَ)
یکھاکہ لاالہ الاالله یہ اور (سورۃ والصَّفَت میں) فرمایا (ایس بی کامیابی کے لیے مل کرنے والوں کو ل کرناچا ہیے

(۲۵) حدثنا احمد بن یونس و موسیٰ بن اسماعیل قالاحدثنا ابر اهیم بن سعد اسماعیل تالاحدثنا ابر اهیم بن سعد اسماعیل عن کیا احمد بن یونس اورموی این اساعیل نے ،کہا دونوں نے ہم سے بیان کیا ابراہیم بن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن سعیدبن المسیب عن ابی هریرة ان رسول الله عَلَيْتُ کَهُمْ سے بیان کیااین شهاب عن سعیدبن میتب سے انھوں نے ابوہری سے کہ (لوگوں نے) آخضرت عَلِی الله میل ایک العمل افضل؟ فقال ایمان بالله و رسوله، قیل ثم ماذا؟ قال سئل ای العمل افضل؟ فقال ایمان بالله و رسوله، قیل ثم ماذا؟ قال سے پوچھاکون سائل افضل ہے؟ آپ عَلِی نے فرایا الله اوراس کے رسول پرایمان لانا، کیا گیا گھرکون سا؟ (علی) فرمایا الله علی شبیل الله، قیل ثم ماذا؟ قال حج مبرور در مقبول) ہو۔

المجھاد فی سبیل الله، قیل ثم ماذا؟ قال حج مبرور در مقبول) ہو۔

وتحقيق وتشريح،

ترجمة الباب كي غرض: غرض باب كى دوتقريري بين-

التقويو الاول:مرجدى ردى اور بعض كتب بين كدراميكى رديج بن كاعقيده بكراميان صرف قول على المراب المراب

وجهِ رد:انام بخارگُ ن بین آیات قل کی بین جن بین ایمان کُمُل سے تعبیر کیا گیا ہے اورا یک مدیث بھی۔ آیتِ اولی: ﴿ وَبِلُکَ الْجَنَّةُ الَّتِی اُوْرِ فُتُمُوهَا بِمَا كُنتُمُ تَعْمَلُونَ ﴾ تا یمان کم سےمرادایمان ہے۔ آیتِ ثانیه: ﴿ فَوَرَبُکَ لَنسُنَلَنَّهُمُ اَجُمَعِینَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴾ تا قول لااله الاالله.

آيْتِ ثَالَثْ: ﴿لِمِثُلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴾ واى فليؤمن المومنون

فی الحدیث:ای العمل افصل؟اس کے جواب میں فرمایا ایمان باللہ ورسوله معلوم بواکرایمان مل ہے۔ حج مبرور: اس کی گنمیریں منقول ہیں۔

تفسیرِ اوّل: وہ ج ہے جن میں ریا کاری وشہرت کی طلب نہ ہوآ تخضرت علی کے ارشاد کا منہوم ہے ہے کہ ایک وقت ایسا آئے گا کہ امیر لوگ سیر کے لیے اور غریب ما نگنے کے لیے متوسط درجہ کے لوگ کاروبار کے لیے اور علاء وصلی عشہرت کے لیے ج کا سفر کریں گے ۔ ۵

تفسيرِ ثانى: ج مبرور وحج الاالم فيه. لا

تفسيرِ ثالث: ج مبروروه بجوزند كي تبديل لاع كدج ك بعدما جي شريعت كا پابند موجائ - ٤

تفسير رابع: يول مجهليل ان تين تغييرول سے تين حالتوں كى طرف اشاره ہے اكه چلخ وقت نيت سيح موسلا مان ميں گناه ند ہو ساروا پس آكر ترك احكام ند ہو۔

التقرير الثانى: اس باب سے مقصودان اوگوں كارد ہے جوايمان كوعام كہتے ہيں تصديق اختيارى ياغير اختيارى -امام بخارگ فرماتے ہيں كدايمان تقديق اختيارى ہى ہے تقديق غير اختيارى معترنہيں -اس ليے كدامام بخارگ نے ترجمة الباب ميں بطور حصر كے كہا ان الايمان هو العمل -اگر بغير حصر كے كہتے تو يمرج شداور كراميد پر دد ہوتى -ليكن يہال حصر

لے عمدة القاری جما ص۱۸۳ سے پارہ ۲۵ بورة الزخرف آیت ۲۷ سے پاره ۱۳ مورة الحجر آیت ۹۲ سم پارہ ۲۳ مورة الصافات آیت ۲۱ هے ۱۸۸ سے ایضا

ہے کہ ایمان توعمل ہی ہے یعنی تصدیقِ اختیاری ہی ہے مرجہ اور کرامیہ کی رواس کئے نہیں بنتی کہ حصر کی کل تین قسمیں ہیں تینوں میں سے جونسا بھی حصر مان لیں مرجہ اور کرامیہ کی رہبیں بنتی۔

اقسام حصر : حفرتين قتم يرب. (١) حفرقلب (٢) حفرافراد (٣) حفرتين -

ا: حصرِ قلب: مخاطب کے عقاد کے خلاف حصر اس کو حصرِ قلب کہتے ہیں کہ خاطب جس کا عقادر کھتا ہے وہ مرادلیں۔

۲: حصرِ افو اد: مخاطب شرکتِ کا عقادر کھتا ہوائی کارد کے لیے حصر ہمرافراد ہے کہ شرکت نہیں بلکہ ایک ہی ہے۔

۳: حصرِ تعیین: مخاطب کوشک ہے اس کے شک کور فع کرنے کے لیے جو حصر لایا جائے گاوہ صرتعین کہلائے گا۔

اهشله: آپ کو کسی نے بتایا کہ جامعہ خیر المدارس میں علامہ محمد شریف صاحب شمیری بخاری شریف پڑھار ہے ہیں آپ نے جواب دیا کہ بیس (مولانا) محمرصد بی رفظ مراسای پڑھار ہے ہیں ۔ تو یہ حصر افراد ہے۔ اگر دونوں پڑھار ہے ہیں یہ حصر افراد ہے۔ اگر دونوں پڑھار ہے ہیں یہ حصر افراد ہے۔ اگر مائل کوشک ہو کہ علامہ شمیری صاحب پڑھار ہے ہیں یا (مولانا) محمصد بی صاحب) (مظلم العالی) آپ جواب میں مائل کوشک ہو کہ علامہ شمیری صاحب (مظلم العالی) پڑھار ہے ہیں تو یہ حصر تعین ہے۔ (جتنی ہماری کل عمر ہے است مائل کوشک ہو کہ عدیت پڑھائی ہے۔ تقریباً ساٹھ سال حدیث کا درس دیا ہے، بڑے تعلق کی بات ہے)

سال علامہ شرصاحب نے حدیث پڑھائی ہے۔ تقریباً ساٹھ سال حدیث کا درس دیا ہے، بڑے تعلق کی بات ہے)

ان الایمان هو العمل: مرجه اور کرامیگی رفتین بن سکتا ۔ یونکه اس معنی میں اُن تیوں حصر وں میں ہے کوئی بھی نہیں بن سکتا اس لیے کہ مرجہ کہتے ہیں کہ صرف تقدیق ایمان ہا اور کرامیہ کہتے ہیں کہ صرف تول ایمان ہے ۔ حصر قلب جب بنتا کہ بقول مرجه ایمان صرف تقدیق ہاس کے مقابلہ میں امام بخاری کا مذہب یہ ہوتا کہ ایمان تقدیق نیز نہیں بلکہ صرف عمل ہے ۔ یا کرامیہ کے لحاظ سے یہ ذہب ہوتا کہ ایمان قول نہیں ہے بلکہ صرف عمل ہے اور حصر افراد بھی نہیں ہوسکتا کیونکہ مرجہ اور کرامیہ شرکت کے تو قائل ہی نہیں ہیں کہ تقدیق اور عمل ال کریا قول وعمل ال کرایمان بنتے ہیں اور حصر تعین ہو گیا کہ امام کرایمان بنتے ہیں اور حصر تعین جب بنتا جب مرجہ اور کرامیہ کوتر دو ہوتا کہ ایمان سے ہا یہ؟ لہذا متعین ہو گیا کہ امام بخاری ان لوگوں کا رد کرنا جا ہے ہیں جو ایمان کو عام بتلاتے ہیں کہ تقدیق اختیاری اور غیر اختیاری دونوں کو شامل ہے۔ امام بخاری نے بتا یا کہ ایمان کے ایمان کے بینی تقدیق اختیاری ہوتا کہ ایمان کے بتا یا کہ ایمان کے ایمان کے ایمان کے بینی تقدیل کو تا میں ہوتا کہ ایمان کے بتا یا کہ ایمان کے ایمان کے ایمان کو عام بتلاتے ہیں کہ تقدیق اختیاری اور غیر اختیاری دونوں کو شامل ہے۔ امام بخاری نے بتا یا کہ ایمان عمل ہے یعنی تقدیل بی اختیاری ہوتا کہ ایمان کے بتا یا کہ ایمان عمل ہے یعنی تقدیل بی اختیاری ہوتا کہ ایمان کی بیمان کے بیان کو عام بتلا ہے بینی تقدیل کے ایمان کے بتا یا کہ ایمان عمل ہوتا کہ ایمان کو عام بتلا ہے بین کہ تقدیل کے ایمان کو عام بتلا ہے بین تقدیل کے دیا کہ کو تعدیل کے دیا کہ کہ کو تعدیل کے دونوں کو شام کو تعدیل کے دونوں کو شام کے دونوں کو شام کے دیا کہ کو تعدیل کے دونوں کو شام کو تعدیل کے دونوں کو شام کی کو تعدیل کے دونوں کو شام کو تعدیل کے دونوں کو شام کو تعدیل کے دونوں کو شام کو تعدیل کے دونوں کو تعدیل کو تعدیل کو تعدیل کے دونوں کو تعدیل کے دونوں کو تعدیل کو تعدیل کے دونوں کو تعدیل کے تعدیل کو تعدیل کو

(۱۹)

﴿باب اذالم یکن الاسلام علی الحقیقة
و کان علی الاستسلام او النحوف من القتل

کھی اسلام سے اس کے قیقی (شرعی) معنی مراز نہیں ہوتے
بلکہ ظاہری تابعداری یا جان کے ڈرسے مان لینا

لقوله تعالى قَالَتِ الْاَعُوابُ الْمَنَّ الْكُورُابُ الْمَنَّ الْكُورُابُ الْمَنَّ الْكُورُابُ الْمَنَّ الْكُورُانِ الْمَنَّ الْكُورُانِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

✡

فسکت قلیلا ثم غلبنی مااعلم منه فعدت لمقالتی فقلت مالک عن فلان پر تورند کریس خیر از ترسی نیس نیس از مرسی کرد می از مرسی کرد می کرد از ترسیل از مؤمن ای کار او مسلما فسکت قلیلا ثم غلبنی مااعلم منه فوالله انبی الأراه مؤمنا فقال او مسلما فسکت قلیلا ثم غلبنی مااعلم منه خلات می ارده مورن ایس ایس کرد می ایس کرد و مایس کرد و می ایس کرد و می کرد و می ایس کرد و می کرد و ک

﴿تحقيق وتشريح

اس صدیث کی سندیں پانچ راوی ہیں اور پانچوی حضرت سعد بن ابووقاص ہیں اور پی عشرہ میں سے ہیں ان کی کل مرویات میں ہے ہیں ان کی کل مرویات میں ہمات بقصرہ بالعقیق علی عشرة امیال من المدینة المنورة سنة سبع و صمعین سنة و حمل الی المدینة علی ارقاب الرجال و صلی علیه مروان بن الحکم و هو یومئذوالی المدینة و دفن بالبقیع و هو آخر العشرة موتا . ا

الاستلام: استلام كم عن ملح كرفي انقياد طاهرى كيس اذا لم يكن كى جزائحذوف ب لاينفع فى الآخرة. توجمة الباب كى غوض: يا تورفع تعارض بيا پر اسلام كي تفسيل اوراقسام كوبيان كرنا به تقويو اوّل:رفع تعارض كي صورت مين دواخمال بين -

احتمالِ اول:ام بخاریٌ پرسوال موتا ہے کہ آپ نے کہا کہ اسلام، ایمان، دین مترادف ہیں یہ دعویٰ تو قرآن پاک کے خالف ہے قرآن مجید میں ﴿قَالَتِ الْاَعْرَابُ امّنًا قُلُ لَّمُ تُوُ مِنُوا وَلَکِنُ قُولُو اَاسُلَمْنَا ﴾ یک ایمان کا دعویٰ تو نہ کر والبتہ یہ کہ لوکہ ہم اسلام لائے۔

معلوم ہوتا ہے کہ اسلام اور ایمان ایک ہی ہیں۔ جیسے لوط علیہ السلام کیستی میں عذاب آیا تو تھم ہوا کہ اہلِ ایمان کو است ے تکال او مینانچہ قرآن مجید میں ہے ﴿فَاحُرَجْنَامَنُ كَانَ فِیْهَامِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ۞فَمَاوَجَلْنَافِیْهَا غَیْرَ بَیْتِ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ كاوربعض آيات عايمان واسلام كاعلىحده علىحده مونامعلوم مونا بحبيا كرآيت الباب ميس بين وغرض باب رفع تعارض ہے جاہے وعو اور قرآن یاک کی آیت کے درمیان سے جاہے قرآن یاک کی آیتوں سے۔ رفع تعارض:ام بخاري فرفع تعارض الطريقه الكاكراسلام دوسم برب.

ا-اسلام حقق ٢-اسلام غير حقق _ تواسلام حقق ايمان كرمرادف إسلام غير حقق نبيل-

تقويو ثانى: غرض الباب مين تقرير انى يدے كمام بخارى اسلام كى اقسام بيان كررہے ہيں اراسلام معتبر ٢-اسلام غيرمعتبر- دوسر كفظول مين ميهي كهد سكته بي الاسلام منجي ٢-اسلام غيرمنجي اوربياقسام آ خرت کے لحاظ سے ہیں۔ دنیا کے لحاظ سے دودر جےنہیں ہیں کیونکہ دنیا میں اسلام حقیقی اورغیر حقیقی دونوں نافع ہیں جیے اعراب جو بھوک سے مجبور ہوکرآئے تھے روٹی مل جاتی ، چنانچہ ایما ہی ہوا کہ اسلام دنیا کے لحاظ سے معتبر ہوا۔ لار اہ مؤ مناً: معروف ہوتو یقین کے معنی میں ہوگا، مجبول ہوتو ظن کے معنی میں ہوگا۔

فقال مؤمنا او مسلما: او بسكون الواو بوتومعني به بوكا كه شك كے ساتھ كهو أكيلا مؤمناً نه كهو بلكه مؤمناً اومسلماً كهور ٢ ياحرف "او"اضرابييعى بل عمعى بين على مؤمناً بل مسلما ٣٠ يا " او" بقتح الواوي بمزه استفهاميه اورواوعا طفه باس صورت ميس معطوف عليه مقدر موتا باور تقذير عبارت اس طرح موگى اتقول مؤمنا واقول مسلمارة خرى دومعنول كاظ توقطعاً مسلماً كهدر عبي البذاكل تين تفيري موكي ایک تفییر کے مطابق شک کے ساتھ ہے اور دوسری دوتفییروں میں یقینا مسلما ہے۔

انطباق:غرض باب کی دوتقریریں کی گئی ہیں پہلی تقریر کے ساتھ انطباق اس طرح ہے کہ اس روایت سے ثابت ہوا کہ اسلام جب حقیقی ہوتو ایمان واسلام مترادف ہیں اور جب اسلام غیر حقیقی ہوتو ایمان کے مترادف نہیں ہوتا کیونکہ مؤمنا کے مقابلہ میں مسلما کولارہے ہیں۔غرض باب کی دوسری تقریر کدایمان معتبر اورغیر معتبر بیاقسام آ خرت کے لحاظ سے ہیں یعنی ایک کا نافع ہونا اور دوسرے کا نافع نہ ہونا بیآ خرت کے اعتبار سے ہے۔اس تقریر پر انطباق اس طرح ہوگا كەحفرت سعدٌ نے كہامؤ مناً آپ عليہ نے فرمايا دنياوي منافع ولوانے كے لئے توتم كومسلماً كهنا حامين كيونكه دنياوي منافع دلوان كاموقع تهار

ایک بحث: یہاں ایک متقل بحث ہے کہ وہ محص کون تھا؟ اوراس مدیث سے اس کا مؤمن ہوتا معلوم ہوتاہے یا منافق۔

ا بارد ۲۷ سورة الذاريات آيت ۳۲،۳۵ مرة القاري ج1 ص ١٩٥

ا.... بعض حضرات نے کہا کہ اس کا نام جعیل تھا اور بیمنافق تھا یعنی اسلام غیر حقیقی رکھتا تھا۔

۲ جہور شراح محد ثین اس رائے کو پیند نہیں کرتے وہ کہتے ہیں کہ نام تو بعیل میں سُر اقد ضمری ہی تھالیکن ہے بڑے مقبول صحابی سے اس پر دوشھاد تیں ہیں۔(۱) ان کے متعلق حضر تا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی کی ایک روایت ہے جسے انور شاہ صاحب ؓ نے نقل کیا ہے اور روایت اس طرح ہے جعیل ؓ آپ آپ ایک کے سامنے سے گزرے تو آپ ایک نے صحابہ ؓ سے دریافت فرمایا کہ یہ کیسا آ دی ہے صحابہ کرام ؓ (ابوذرؓ) نے عرض کیا وہ ایک غریب فقیر آ دی ہے و صحابہ کرام ؓ (ابوذرؓ) نے عرض کیا وہ ایک غریب فقیر آ دی ہے (عام مہاجرین کی طرح ہے) ایک دوسر المحص گزرا تو حضور قالی نے دریافت فرمایا کہ اس کے متعلق کیا خیال ہے تو صحابہ کرام ؓ نے عرض کیا سید من سادات آ ہے آئے ہے۔ ارشاد فرمایا ایسے آ دمیوں سے اگر زمین و آسان بھرجا کیں تو وہ ایک (فقیر) اللہ کے ہاں زیادہ قیتی ادر مجبوب ہے۔ (۲) نیز حدیث الباب میں آ پ تیک مجرد میں متعدی اور مزید میں لازی معنی کے لیے آتا ہے۔ احب الی منه حشید ان یک اللہ فی الناد کی آ مومن ہے تو آ پ باربار مسلما کیوں فرمار ہے ہیں؟

جواب: يتأديب الفاظ كقبيل سے بكتهبيں تومسلماً كہنا چابىئے كيونكداسلام ظاہرى چيز ہاورايمان

امر باطنی ہے۔

. (۲۰) باب افشاء السلام من الاسلام، سلام كا يجيلانا اسلام مين داخل ہے

وقال عمارٌ ثلاث من جمعهن فقد جمع الايمان ،الانصاف من نفسک اورعار نے کہا تین باتیں جس نے اکھی کرلیں اس نے ایمان کو جوڑ لیا،(ایک تو) اپن ذات سے انصاف و بذل السلام للعالم، والانفاق من الاقتار اور(دوسرے)سبلوگوںکوسلام کرنا(یعنی برمسلمان کو)اور (تیسرے) تنگدی کی حالت میں (راہ خدامیں) خرج کرنا اور دوسرے) سبلوگوں کوسلام کرنا (یعنی برمسلمان کو) اور (تیسرے) تنگدی کی حالت میں (راہ خدامیں) خرج کرنا اللہ عن بن بدین اس حسب عن اس المخد

(۲۷) حدثناقتیبة قال حدثنا اللیث عن یزید بن ابی حبیب عن ابی المخیر می المخیر می ابی المخیر می المخیر المخیر می المخیر المخیر می المخیر می المخیر المخیر می المخیر می المخیر الم

عن عبدالله بن عمرو ان رجلا سأل رسول الله عَلَيْ اى الاسلام خير انهوں نعبدالله بن عمرو ان رجلا سأل رسول الله عَلَيْ ای الاسلام کی انهوں نعبر انهوں نے عبدالله بن عروب بن عاص اسلام کا انہوں نے تعرف کے قال تطعم الطعام وتقرأالسلام علی من عرفت ومن لم تعرف کے ؟ آپ عَلَیْ نے فرمایا کھاناکھلانا اور ہر ایک کوسلام کرنا بخواہ اس سے تیری پیچان ہویانہ ہو۔

وتحقيق وتشريح،

ترجمة الباب كى غوض:اس باب كامقعد كرامية أورمرجد پررد ب جواعمال كوغير ضرورى قرار دية بين ـ

قال عمارًى: بظاہر بيوريث موتوف ہے كيكن مديث مرفوع كے هم ميں ہے اى ليے تو ترجمه ميں ذكر كررہے ہيں۔ الانصاف من نفسك: انى ذات ہے انھاف كرنا۔ اس لئے كہ جب ايك آ دى انى ذات سے انساف كرتا ہے تو وہ حقوق جو اس كے اور اللہ تعالى كے درميان ہيں ان كو بھى ضائح نہيں كريگا۔

الانصاف من نفسك اس جمله كى مختلف تفيرير.

تفسیر اول: پہلی تفسیر جو کہ ظاہراً اور متبادراً سمجھ میں آ جاتی ہے وہ یہ ہے کہ اپ نفس کے حقوق اداکر و حدیث پاک میں ہے روفائے کھانا کھلائے بیاسا ہے تو نفس کو حدیث پاک میں ہے روفائی کھلائے بیاسا ہے تو نفس کو پانی پلائے تھک گیا ہے تو آ رام کرے ایک حدیث میں آتا ہے کہ عبداللہ بن عمر وسماری رات کھڑے رہتے تھے بیوی کی طرف النفات نہیں کرتے تھے اور دن کوروزہ رکھتے۔ بیوی نے آنخضرت علیقی سے شکایت کی تو آ ہے علیقی نے فرمایا کہ تیرے نفس کا بھی تھے برحق ہے اور تیری بیوی کا بھی سے

تفسیرِ ثانی:انصاف کرتو این نفس سے لینی محلی عن احد ہوکر قطع نظر کسی سے مرعوب ہونے کے اور بغیر کسی تم کی لا کی ہوئے ہوئے کے اور بغیر کسی تم کی لا کی ہوئے ہوئے کے اور بغیر کسی تم کی لا کی ہوئے ہوئے کے دو آپ کا ضمیر آپ کو ہتلائے وہ کرو۔ بیا پنے نفس سے انصاف کرنا ہے۔

تفسیرِ ثالث: انصاف من نفسک ای باعتبار نفسک. کرآپ کانس ملوک اورقیدی ہونے کی صورت میں جس چیز کا تقاضا کرتا ہے ایے ہی برتا واپنے مملوک اور قیدی کے ساتھ کرو۔

تفسير رابع: الانصاف من نفسك باعتبار العمل يعنى البينفس يوه كام لوجود نياوآخرت ميل آرام يبني ني من المنطرى ندكري كيونكه ان كى سزايه به كدكرم سلائيال آئكهول ميل والى جائيل كيس تويه المينفس يرظم موال خلاصه يدكم معصيت جهور دواطاعت كرو

ل (راجع ۱۴ بخاری مطبوعه دارالسلام الریاض ایسنا اخرجه سلم والنسائی) ۲ عمارے مرادابن یاسر میں ان کی والدہ کا نام سید ہے جن کوابوجہل نے شہید کیا و کانت اول شھیدہ فی الاسلام (عمرة القاری جا ص ۱۹۷) سے بخاری شریف جام ۲۲۵

تفسیرِ خامس:مطلب یہ کہ اپ بھائی کے لیے وہ پند کرے جو اپنے لیے پند کرتا ہے۔ وبذل السلام للعالم:ای العالم المسلم۔

مسئله: غیرسلم کوابتداء سلام کهناد فع شرکے لیے جائز ہے جلب منفعت کے لیے جائز نہیں۔ والانفاق من الاقتار: من بمعنی عند کے ہے کہ خود تنگ دست ہو پھر خرچ کرے۔

﴿ (۲۱) باب كفران العشير و كفر دون كفر خاوندكى ناشكرى بھى ايك طرح كاكفر ہے، اورايك كفردوسرے كفرسے كم موتا ہے

| فيه عن ابى سعيدٌ عن النبى عُلْكِ الْمُ |
|--|
| ال باب میں ابوسعید نے آنخضرت علیہ سے روایت نقل کی ہے |
| (٢٨) حدثناعبدالله بن مسلمة عن مالك عن زيد ابن اسلم عن عطاء بن يسار |
| ہم سے بیان کیاعبداللہ بن مسلمہ نے انھوں نے (امام) مالک سے انھوں نے زید بن اسلم سے انھوں نے عطاء بن بیار سے |
| عن ابن عباس قال قال النبي عَلَيْكُ اريت النار |
| انھوں نے ابن عبال سے کہ آنخضرت علیہ نے فرمایا (ایک لمبی حدیث میں) اور مجھے دوزخ دکھلائی گئی |
| فاذا اكثر اهلها النساء يكفرن قيل ايكفرن بالله؟ قال |
| کیا دیکھا ہوں کہ دہاں عورتیں بہت ہیں وہ کفر کرتی ہیں ،لوگوں نے کہا کیا اللہ کا کفر کرتی ہیں؟ آپ علی نے فرمایا |
| يكفرن العشير ويكفرن الاحسان لواحسنت الى احدهن الدهر ثم |
| (نہیں) خادند کا کفر (اسکی ناشکری) کرتی ہیں اوراحسان نہیں مانتیں ،اگر توایک عورت سے ساری عمراحسان کرے پھر |
| رأت منك شيئاً قالت ما رأيت منك خيرا قط ا |
| وہ (ایک ذرای) کوئی بات تچھ ہے دیکھ (جس کورہ پسند نہ کرتی ہو) تو کہنگتی ہے میں نے تو تجھ سے بھی کوئی بھلائی نہیں پائی |

﴿تحقيق وتشريح

كفران العشير كامطلب خاوندكى ناشكرى - عشير ميل جول واليكوكيت بين - چونكه خاوند كساته

یا بیجد بیث بخاری مطبوعه دارالسلام الریاش میں ان نمبرول کی ترسیب پرہے: رقوم الاجادیث: ۳۲۰ ، ۱۰۵۵۲ ، ۳۲۰۲ ، ۵۱۹۷ ، ایضاافریه مسلم فی احیدین

زیادهمیل جول والامعامله بوتا ہے اس لیے خاوند کوبی عشیر کہددیتے ہیں۔

و كفر دون كفر:سوال: اس كاعطف تو كفران العشير پر به تو بجرور بوتا جابيئ جبكه اسكوم فوع الرحاحاتا بيدي المسكوم فوع الرحاحاتا بيدي المسكوم فوع المس

جواب : دوطرح پڑھا جاتا ہے۔ اجر کے ساتھ کفوان العشیر پرعطف کی بنا پر ۲۔ رفع کے ساتھ عطف تو کفران پر ہی ہے کین اعراب حائی ہے۔

' اعراب حکائی کی تعریف : کلمه یا جمله کی حکایت کی جائے تو اس کا اصل اعراب باقی رکھا جائے ہوگئی عند میں تھا جیسے ضَرَبَ زیدٌ کوئی شخص یہ جملہ ذکر کرتا ہے تو کہتا ہے۔ ''زیدٌ'' مرفوع فی ضَرَبَ زیدٌ للفاعلیة .

دون : دون کے معنی قریب کے بھی ہیں اور غیر کے بھی۔ اسسطامہ ابن جُرُ اور علامہ عینی گی رائے یہ ہے کہ یہ قریب کے معنی قریب کے بھی اور غیر کے بھی۔ قریب کے معنی میں ہے کفو دون کفو ای کفو اقرب من کفو کمایقال هذا دون ذلک ای اقرب منه یا اس معنی کے لاظ سے کفر ایک نوع ہوگی جسکے افراد ہوں گے اسسابعض شرائ کی رائے یہ ہے کہ دون بمعنی غیر کے ہے۔ ای کفو سوی کفو ۔اس وقت کفر ایک جنس ہوگی جس کے انواع ہو نگے اور باقی افراد ہوں گے ۔جنس کے انواع ہو نگے اور باقی افراد ہوں گے ۔جنس کے انواع آپس میں غیر غیر ہوتے ہیں اور بہی تین وجوہ کی بناء پر رائے ہے۔

اول:اس ليكه عام طور برقر آن ياك من بهي دون "كالفظ غير كمعن مين استعال موتاب-

ثانی:امام بخاری بھی اکثر ابواب میں "دون "کالفظ غیر کے معنی میں استعال کرتے ہیں۔

ثالث: محاورات مين 'دون" كالفظ غير كمعنى مين استعال موتاب-

سوال:اس باب کو کتاب الایمان سے کیا مناسبت ہے؟ اس میں تووہ چیزیں ذکر ہونی چاہییں جو کہ ایمان کے اجزاء بنیں نہ کہ کفر کے۔

جواب:اس کاربط مختلف طریقوں سے بیان کیا گیا ہے۔

اول: کفرضد ایمان ہے۔ جب کفر کی انواع مختلف ہیں توایمان کی انواع بھی مختلف ہوں گی توامام بخار کُ علاقہ تضاد سے ایمان کی انواع بیان کررہے ہیں۔

ثانی: یابون جھنا چاہیے کہ کفر میں تشکیک ثابت کر کے ایمان میں تشکیک ثابت کرنا چاہتے ہیں۔ جیسے کفر میں کی وہیشی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہے اور سابطہ ہوتی ہے ایک الاشیآء.

ثالث: جیسا کہ بعض اعمال کو کفر کہاجاتا ہے ایسے ہی بعض اعمال کو ایمان کہاجاتا ہے بعنی جیسے اعمال کو کفریس ڈخل ہے ایسے ہی اعمال کو ایمان میں دخل ہے۔

رابع: چوتها ربط اس طرح بیان کیا جائے کہ اعمال دوشم پر بین اسساعمال کفر، یہ جوملت اسلامیہ سے نکال دیتے ہیں اسسادہ اللہ اسلامیہ سے نکال دیتے ہیں ایسے ہی ایسے ہی کفری ہیں ایسے ہی کفری بھی کئی اقسام ہیں اسسکفر انکار ۲ سسکفر جو د ۳ سسکفر عناد ۲ سسکفر نفاق۔

اریت النار: سساس معلوم ہوا کہ اللہ تعالی نے آپ تھی ہے گوآ گاور جنت کامشاہدہ کروایا تھا تا کہ آپ تھی علی وجہ البصیرة تبلیغ کریں کیونکہ جیسے عارف اور عالم کی تبلیغ میں فرق ہے ای طرح دونوں کی عبادت میں بھی فرق ہوتا ہے۔ فاذا اکثر اهلها النسباء: سس آپ تھی ہو کوہ عورتیں دکھلائی گئیں جو قیامت تک بیدا کی جانیوالی تھیں فاذا اکثر اهلها النسباء: سونوں قول ہیں۔ جو کہتے ہیں کہ دکھانے کے وقت کی عورتیں تھیں وہ کہتے یا کہ اس وقت کی عورتیں تھیں۔ دونوں قول ہیں۔ جو کہتے ہیں کہ دکھانے کے وقت کی عورتیں تھیں وہ کہتے ہیں کہ اس ان کو جھ آئی اور انہوں میں حضور تھی ہے گاتھ کے اسلام ان کو جھ آئی اور انہوں نے ناشکری چھوڑ دی۔

سوال:ال حدیث سے معلوم ہوا کہ دوزخ میں عورتیں زیادہ ہوگی اور مردکم ہونگے۔اس تقابل سے معلوم ہوا کہ جنت میں عورتیں کم ہوگی اور مردزیادہ حالانکہ مسند احمد کی روایت میں ہے ((ان لکل رجل من اهل الجنة امر أتان)) کہ کم از کم ایک مرد کو دو یویاں ملیں گیں توجب ہر مرد کے لیے دو یویاں ہوگی توجنت میں عورتوں کی تعدادزیادہ ہوگی جبکہ روایت الباب سے معلوم ہوتا ہے کہ جہنم میں عورتوں کی تعدادزیادہ ہوگی فعاذا حلّه؟

جواب:مند احمد کی روایت میں اطلاق ہے جب کہ بخاری کی روایت میں تخصیص مذکور ہے کہ ((ان لکل امری زوجتان من الحور العین یری منح سوقهن من ور آء العظم واللحم)) عجنت کی عورتیں دوتم کی بیں اردنیا کی صالح عورتیں ۔ ۲۔ وہ عورتیں جو جنت کی مخلوق بیں اور حدیث الباب میں وہ عورتیں مراد بیں جو جنت ہی کی مخلوق ہیں۔ جن کے بارے میں قرآن نے کہا ہے ﴿ لَمْ يَطُمِسُهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنَ ﴾ سے اور سادنی درجہ کی حوریں ہوں گی لہنواد نیا کی نیک عورتیں کم ہوگی، تقابل دنیا کی عورتوں کے لحاظ سے ہے کل عورتوں کے لحاظ سے میں میں دنیا میں انسان جن چیزوں کا مکلف ہوگا ارائیان ۲۔ نکاح۔ بین میں ان سے صرف دو چیزوں کا مکلف ہوگا ارائیات اللہ تعالی نے فرمار کھا ہے ﴿ وَ ذَوّ جُنَاهُمْ بِحُورٌ عِیْنٍ ﴾ سے یہ تشبیھاً کہا

لِ مَا صَهِ اتِّن صَهُ وَ اللَّهِ عَنْ أَنْ شَرِافِ مَا أَنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِ

ہے۔اوربی تقابل دنیا کی عورتوں سے ہے نہ کہ کل عورتوں سے اوربی ظاہر ہے کہ دنیا کی نیک عورتیں کم ہیں۔سوال کیا گیا ایکفون باللہ ؟ فرمایا یکفون العشیو اس سے دوقسموں کی طرف اشارہ ہو گیا۔عورتیں تھوڑی مصیبت میں کہددیتی ہیں کہ تیرے گھر میں کیادیکھا چند لیتھو ہے، چند صیرے، چند چیتھڑ ہے۔ پنجابی میں اس کی جگہ بیتو کہددیتے ہیں۔

(۱۲) المعاصى من امر الجاهلية و لايكفر المحاهلية و لايكفر صاحبها بارتكابها الابالشر.ك ﴿
كناه جالجيت ككام بين اوركناه كرنے والا كناه سے كافر نبين موتا مرشرك كرنے سے (يا كفر كا اعتقادر كھتو كافر ہوجائے گا)

لقول النبي عُلَيْكُ انك امرؤ فيك جاهلية ،وقول الله تعالى كيونكية تخضرت علي البوزي) فرماياتواليا آدي ب جس مين جابليت كي خصلت ب،اورالله في سورونها مين) فرمايا (إِنَّ اللهَ لاَيَغُفِرُ أَنُ يُشُرَكَ به وَيَغْفِرُ مَاذُونَ ذَٰلِكَ لِمَنُ يَّشَاءُ، وَإِنْ طَائِفَتَٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيُنَ اللدتوشرك كونبيس بخشے كا اوراس سے كم جس كوچاہے گا (اس كے كناه) بخش دے گا،اورا گرمسلمانوں كے دوگروہ آپس ميں فأصلِحُوا اقْتَتَلُوْا بَيْنَهُمَا) المومنين ال ا صلح کرادو، اللہ نے دونوں کو (٢٩)حدثناعبدالرحمن بن المبارك قال ثنا حماد بن زيد قال ثنا ايوب ويونس ہم سے بیان کیا عبدالرحمٰن بن مبارک نے کہا ہم سے بیان کیا حماد بن زید نے ، کہا ہم سے بیان کیا ایوب ویوس نے عن الحسن عن الاحنف بن قيس قال ذهبت لانصر هذا الرجل فلقيني ابوبكرة فقال حسنٌ ہے،انھوں نے احف بن قیسٌ ہے،کہامیں چلااس مخص کی مدد کرنے کو،راستہ میں مجھے سے ابو بکرہؓ ملے تو انہوں نے بوچھا این ترید قلت انصر هذاالرجل،قال ارجع فانی سمعت رسول الله عُلَيْتُكُمْ کہاں جاتے ہو؟ میں نے کہااں شخص (علیؓ) کی مدد کرنے کو،کہاا پنے گھر کولوٹ جا،میں نے آنخضرت علیہ سے سنا

يقول اذا التقى المسلمان بسيفيهما فالقاتل والمقتول فى النار،قلت آپ الله فرمات تح جب دومسلمان إلى الم تواري لي كرائي تو قاتل ومقول دونون دوز في بين مين في عن المسلمان الله هذا القاتل فما بال المقتول،قال انه كان حريصا على قتل صاحبه الله كان تو في الله قتل صاحبه الله كان تو في (ضرور دوز في بوكا) مقتول كون دوز في بوكا؟ فرمايا! اس كواين بمائي كومارؤ الني خوابش تقى

(٣٠) حدثناسليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن واصل الاحدب عن م سے بیان کیاسلیمان بن حرب نے ،کہا ہم سے بیان کیا شعبہ نے ،انھوں نے واصل احدب عقے،انھوں نے المعرور قال لقيت اباذر اللربذة وعليه حلة وعلى غلامه معرورٌ ہے ، کہامیں نے ریزہ میں ابوذرؓ ہے ملاقات کی وہ ایک جوڑا پہنے ہوئے تھے،اوران کاغلام بھی ویساہی ایک حلة فسألته عن ذلك، فقال انى ساببت رجلا فعيرته بامه جوڑا بہنے ہوئے تھا، میں نے ان سے اس کی وجہ یوچھی، انھوں نے کہامیں نے ایک شخص سے گالی گلوچ کی اور اسکو مال کی گالی دی فقال لى النبى عُلَيْكُ بااباذر اعيرته بامه انك امرؤ فيك جاهلية آ تخضرت عظیم نے مجھ سے فرمایا تو نے اس کو مال کی گالی دی ہووہ آ دمی ہے جس میں جاہلیت کی خصلت ہے اخوانكم خولكم جعلهم الله تحت ايديكم فمن كان اخوه تحت يده تمھارے غلام تمھارے بھائی ہیں ،اللہ نے آتھیں تمھارے ہاتھ تلے کردیا ، پھرجس کا بھائی اس کے ہاتھ تلے ہو فليطعمه مماياكل وليلبسه مما يلبس ولاتكلفوهم مايغلبهم وہ اس کو وہی کھلائے جوآپ کھائے اوروہی بہنائے جوآپ پہنے اوران سے وہ کام نہلو جوان سے نہ ہوسکے فان كلفتموهم فاعينوهم ع اگراییا کام لیناچا ہوتو انکی مدد کرو

الظريف ١٨٠ ، ١٨٠٠ * ع الظريف ١٩٠٥ ، ١٠٥٠

_ ﴿تحقيق وتشريع ﴾

توجمة الباب كى غوض:ال باب سے سے مقصود مرجد ، كرامية معتزلد ، فارجيد كى رو بے۔ال ليے كد معاصى من امو الجاهلية كهدكر مرجد اوركراميدكى روكردى كدامر جا بليت كا ارتكاب معصيت بے اوردوسر بي بن الموال جيدكى رو ب كد كائيكَفُرُ صَاحِبُهَا۔

دلیل: سانک امرؤ فیک جاهلیة ہم ایسے آدمی ہوجس میں جاہلیت ہے بیایک خاص قصہ تھا کہ ابوذر غفاری نے کی کہ الودر غفاری نے کو باندی کا بچہ کہد میا تھا حضور علیہ نے نئے کی کرفر مایا انک امرؤ النح تم میں جاہلیت ہے بعنی آپ نے سمجھایا کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کہ سمجھانے کہ ک

سوال: بعض لوگ کتے ہیں کہ شرک تو نہیں بخشا جائے گا البتہ کفر بخشا جائے گا کیونکہ شرک کفر کے ساتھ ساتھ غیرا للد کی عبادت بھی کرتا ہے اور کفر میں صرف انگار ہوتا ہے تو معلوم ہوا کہ کفر بخشا جائے گا کیونکہ کفر، شرک کے مادون ہے۔ جو اب اول:مادون ذلک سے مراد کفر کے علاوہ ہے۔

جوابِ ثانی: شرک کاذکر کفر غالب واقعی کے طور پر ہے کیونکہ اکثر کفارانکار کے ساتھ شرک بھی کرتے تھے۔ جو ابِ ثالث: ایک تھم عبارة النص سے ثابت ہوتا ہے اور ایک دلالة النص سے عبارة النص میں شرک کاذکر ہوا اور دلالة النص میں کفر کا۔ اس لئے کہ شرک تواللہ کے وجود کا قائل ہوکر غیر کوشر یک کرتا ہے جبکہ کا فرسرے سے خداکی ذات کا بی انکار کرتا ہے۔

جواب رابع: کفرکاذکربطورلازم کے ہے جب ملزوم یعنی شرک کاذکرتو کیالازم کاذکر بھی آگیا۔اس لئے کہ کفر، شرک کولازم ہے۔

جو ابِ خامس: سب یہاں پر بیان سبیت ہے۔ شرک چونکہ سبب کفر ہے توایک سبب کاذکر کردیا۔ مرادیہ ہے کہ جو اب خامس بخشا جائے گاتو بذات خود کفر کیے بخشا جائے گا۔ یہ جواب اقرب الصواب ہے۔

ہے کہ احف بن قیس اسلے مدد کے لیے نکے ہیں اور بعض روایات میں ہے اپنی قوم کے ساتھ نکے ۔
المقاتیل و المحقتول فی النار: سسابو بحرہ گا استدلال احف بن قیس کورو کئے کی حد تک تو جائز ہے کیونکہ روکئے کے لیے عمومی عنوان اختیار کر لئے جاتے ہیں۔ تو ابو بحرہ ڈنے بھی ایسے ہی کیا۔ جمہور محد ثین ؓ کے نزدیک یہ حدیث اپنے عموم پڑئیں۔ جمہور محدثینؓ کے نزدیک قاتل ومقول سے مرادوہ ہیں جو کسی غرض دنیاوی اور طافس کی وجہ سے لڑتے ہیں۔ جو قاتل ومقول مؤول ہیں مجتمد ہیں وہ اس حدیث میں واخل نہیں۔ اس لئے جمہورؓ اہل سنت والجماعت کے نزدیک جنگ جمل وصفین وغیرہ میں جان دینے والے حضرات شہید ہیں۔ خلاصہ یہ کہ حدیث اس پر محمول ہے جو مؤول نہ ہواس مشاہرات صحابہ ہے۔

مسئله مشاجراتِ صحابه ۖ

یہ بڑا اہم اور نازک مسلہ ہے دعا کرواللہ تعالی لطافت سے بچھنا ور سمجھانے کی توفیق عطاء فرمائے۔ مسلہ کو بچھنے سے پہلے اہل سنت والجماعت کا موقف مشاجرات صحابہ کے بارے میں سکوت اور تو قف ہے کوئی بوجھے کون سچا کون جھوٹا؟ ہم خاموش رہیں گے۔ایک خف جھزت تھا نوگ کے پاس آیا کہ کون حق پر ہے آپ نے فرمایا کہ آپ تو بے فکر ہوجا کیں آپ سے قیامت کے دن نہیں بوچھا جائے گا۔ اس سے یہ بات معلوم ہوئی کہ جواس بارے میں قلم اٹھائے گاکسی کو بچا جھوٹا ٹابت کرنے کی کوشش کرے گاوہ اہل سنت والجماعت سے نہیں۔ مشال: سے طالب علم باپ سے خرج ما نگتا ہے باپ کم دینا چاہتا ہے ماں کہتی ہے اور زیادہ دوبات بڑو ہے لگے تکرار مشال : سے طالب علم باپ سے خرج ما نگتا ہے باپ کم دینا چاہتا ہے ماں کہتی ہے اور زیادہ دوبات بڑو ہے لگے تکرار ماموش رہیں۔ خطا گرفتن بر بر فردگاں خطا است

اسمسككو سمجينے كے ليے سلے تين اصول سمجھنے جا سيس -

اصولِ اول: جس جماعت کی اللہ پاک نے خود مدح فرمائی پھران کے ایمان کی شہادت دی ان سے راضی ہونے کا اعلان کیا۔ آئخضرت الله شہادت دیے ہیں کہ یہ جماعت ایسی ہے شاید کہ اللہ تعالیٰ نے ان کو کہ دیا ہوا فحم کو اُما الله نور جس کو آئخضرت علیہ فی نے معیاری قرار دیا ((اصحابی کا لنجوم)) سے خصوصا شیخین کے بارے میں فرمایا ((اقتدو اباللین من بعدی ابی بکو و عمر)) ہوتو جس جماعت کی عدالت سے خصوصا شیخین کے بارے میں فرمایا ((اقتدو اباللین من بعدی ابی بکو و عمر)) ہوتو جس جماعت کی عدالت قرآن وحدیث بیان کرے آپ تاریخی حوالوں سے ان پر جرح نہیں کرسکتے۔ جوتاریخ صحابہ کرام پر جرح کرے ایسی تاریخ چھوڑ دیں گے اور قرآن وحدیث کولیں گے۔ تمام محدثین منا قب صحابہ میں ابواب قائم کرتے ہیں جرح صحابی کا یہ درس بخاری سے بیاری جرح سے میں جرح صحابی کا درس بخاری سے بیاری جرم سے میں میں میں سے میں ہوا ہے ہیں جرح صحابی کا درس بخاری سے بیاری جرم سے میں میں میں سے میں ہوتوں سے میں ہوتوں سے میں میں میں سے میں ہوتوں سے ہوتوں سے میں ہوتوں سے میں ہوتوں سے ہوتوں سے میں ہوتوں سے ہوتوں سے ہوتوں سے میں ہوتوں سے میں ہوتوں سے ہوتوں

(نعوذبالله) سي في كوئى باب قائم كياب؟ اللسنت والجماعت كاموقف يهى ب كه حديث بهى تاريخ باورسب معتر تاریخ صدیث ہے۔مشاجرات کے باوجود اہل سنت والجماعت کاعقیدہ ہے الصحابة کلهم عدول _گویا مشاجرات کے باوجود آپ اللے کے فرمان کی وجہ سے صحابہ کرام عادل ہی رہے۔ قرآن وحدیث کوچھوڑ کرتاریخ کومعیار قرار دینے والا خار جی ہوجائے گایارافضی۔ کیونکہ مؤرخین متأثر ہوئے بغیز ہیں رہ سکتے لوگ کہتے ہیں کتابوں میں لکھاہے حوالہ دیتے ہیں اول تو وہ حوالے ہی جھوٹے ہوتے ہیں اگر بالفرض حوالے سیح بھی ہوں تب بھی ردی ٹی ٹو کری میں سیکھے کے قابل ہیں۔ کالج کا تعلیم یافتہ ایک نوجوان مودودی کی کتابوں کا مطالعہ کرتار ہتا تھا میں نے اسے روکا۔اس نے کہا کہ آب نے مجھے اتنا ہی بیوتوف سمجھ لیا ہے کیا مجھے اتنا ہی پہنہیں کہ کوئی بات سچی ہے اور کوئی غلط وہ اڑکا باز نہیں آیا۔ ایک مرتبه میرے پاس بیفامیں نے کہامودودی نے صحابہ کرام پر جرح کر کے بہت براجرم کیا ہے اس نے کہاا جی حوالے سے لکھتا ہے اس نے صحابہ کرام پر جرح شروع کی میں نے صحابہ کرام کا دفاع کیا پھر میں نے کہا تواب سوچ لے اس وقت تیری حیثیت کیا ہے اور میری حیثیت کیا ہے میں صحابہ کرام کی صفائی میں دلائل پیش کرر ہاہوں اور تو مودودی کی صفائی میں اور صحابہ کرام میں مودودی کے لٹریج کی مثال ایسے ہے جسے زہر کھانے والاجس کے پاس تریا تنہیں اور کہتا ہے ان شاءاللدا ثرنبیں ہونے دول گاپیة تواس وقت حلے گاجب اثر ہوچکا ہوگا۔ ایک جگد لکھتاہے کہ کوئی شخص اگر کہے آپ نے ابن العربي كي اورشاه عبد العزيز كي كتاب تحفه اثناعشريه براعماد كيون بيس كياتو ميس كهون كاكه الكي مثال وكيل صفائي كي ب اوروكيل صفائى اچھى باتىس بى چن كركہتا ہے تو گويا كہنا يہ جا ہتا ہے كدوه وكيل صفائى بيں اور ميں صحابة پروكيل جرح مول _ اصول ثانی: آپ الله کافر مان ہے کہ مجہد جب اجہاد کرتا ہے تو بھی مخطئ ہوتا ہے اور بھی مصیب چونکہ وہ دین کی ضدمت کے لیے اجتہا دکرتا ہے اگر صحیح ہوتو دواجر اور خطاء ہوجائے تو ایک اجر ہمہور کہتے ہیں کہ صحابہ کرام کا اختلاف اجتهادی تھانیک نیتی پرموقوف تھا حظفس کے لیے نہیں تھااس لیے سب ماجور ہیں کسی کو تھوڑ اکسی کوزیادہ۔اگر آ پ نے بیان کرنا ہو کہ کون حق پر تھا تو آ پ کوبہت ادب کے لفظ ال سکتے ہیں کان علی علی الحق و کان معاوية على الحق في الاجتهاد.

اصولِ ثالث: سسفرج میں ایک ساتھی نے مجھ سے مشاجرات صحابہ کے بارے میں سوال کیا اس وقت میں نے اس کو جو جواب دیا اس کو میں نے اصول بنالیا اور وہ اصول صلابت فی المدین ہے یہ شان حضور علیہ کے کم محبت کی وجہ سے صحابہ کرام میں کوٹ کوٹ کر بھری ہوئی تھی کہ جس کو دیں بجھ لیا ہے اس کو نہیں چھوڑ ااس پر جان قربان کر دی اب آب اس تو جیہ کو بھی سمجھ جا کیں گے۔ توریثِ انبیاء کے مسلم میں حضرت فاطمۃ کی طرف سے جواب دیتے اب آب اس تو جیہ کو بھی سمجھ جا کیں گے۔ توریثِ انبیاء کے مسلم میں حضرت فاطمۃ کی طرف سے جواب دیتے

ہوئے بیان کی جاتی ہے۔کیاوہ آنخضرت سیالیہ کے بعد طالب دنیا ہوگئ تھیں؟ نہیں بلکہ انہوں نے دین سمجھ کر اصرار کیا۔کیاوہ دنیا کے لیے آنخضرت اللہ کے دوست حضرت ابو بکرصدین کوناراض کرسکتی تھیں؟ بلکہ انھوں نے اس کو حق سمجھا تھاان کومعلوم نہیں تھا کہ اہل بیت اس عام حدیث ((لانورٹ ماتو کنا صدقة)) سے مخصوص ہیں ل

ایک اور بات بھی سن لیں ۔ اہل سنت والجماعت کا اجماع ہے کہ الصحابة کلهم عدول جو بھی ان کے خلاف قلم اٹھا تا ہے وہ مسلمانوں میں تفریق ڈالتا ہے جماعت اسلامی نے دین کی کوئی خدمت نہیں کی بلکہ صرف ایک فرقہ بیدا کیا ہے تا کہ حفیت کمزور کی جا سکے اور تا کہ فقہ حفی ملک و دنیا میں نافذ نہ ہو۔ یا در ہے کہ آخری پائیدار حفی حکومت عالمگیر کی تھی۔ برما ہے کیکر افغانستان تک چالیس سال کی عمر میں اسلامی شریعت کا جھنڈ الہرایا، ۹ سال کی عمر میں اسلامی شریعت کا جھنڈ الہرایا، ۹ سال کی عمر میں وفات پائی۔ ۱۵ سال حکومت کی ، فتافی عالمگیری کے مطابق فیصلے ہوتے تھے اس کو فقاوی ہند ہے تھی کہتے ہیں۔ طالبان نے تقریباً سال تک افغانستان کے اکثر حصہ میں فقد خفی نافذکی اور مثالی عدل وانصاف قائم کیا)

مودودی لکھتا ہے کہ صحابہ کے عادل ہونے کا مطلب سے ہے کہ وہ روایت کرنے میں سے ہو لئے تھے میں دعوی سے کہتا ہوں کہ تہمیں پتہ ہی نہیں چا کہ وہ کیا کہنا چا ہتا ہے۔ شرح نخبہ میں حافظ ابن ججر محسقلانی نے عدالت کی تعریف اس طرح کی ہے عدالت ملکہ را سخہ ہے تحصل علی المروّة والتقوی ہے تو تمام صحابہ مقی اور عادل ہیں لیکن مودودی ذہن دینا چا ہتا ہے کہ وہ صرف روایت تو بچی کرتے تھے ور ندان میں بہت کی کوتا ہیاں ہو سکتی ہیں۔ صحابہ کے اختلاف کا منشاء صلابت فی المدین ہے۔ دوسر اوگوں کی جب غرضیں پوری ہوتی ہیں تو اختلاف بھی ختم کردیتے ہیں۔

تھمرو۔اب اگران سے کوئی بوچھتا کہ یہاں کیوں تھمرے ہوتو کہتے امیر کے حکم ہے۔ بیتو حضرت عثالیٰ ہیں۔اگر کوئی عبدحبثی بھی میراامیرین جائے گاتواس کی بھی اطاعت کروں گا۔معلوم ہواامن کی خاطرنظر بندی جائز ہے۔ فسألته عن ذلك:اى عن تساوى الحلة ١١٠ روايت من ٢٠ دونول في جوزًا بهن رها بقا

بعض میں ہے کہ صحابی نے حضرت ابوذر ؓ سے کہا کہ ریم نے کیا کیا؟اگرایی جا درغلام کودیکر یاغلام کی جا درخود کیکر جوڑا

بنا لیتے تو تھیک تھا۔اس سے معلوم ہوا کہان کے اوپر جوڑ انہیں تھا۔

سوال: يه كدان يرجور اتفايانهين؟

جواب او ل: ····· ایک چادرغلام پر همی اور دوسری حضرت ابوذر "پر کیکن مجاز اَ حله کهد دیا بیسے خاوند یا بیوی کو زوج کہددیاجاتا ہے۔حالائکہزوج تو جوڑے کو کہتے ہیں اورخاوند بیوی کوزوج اس لئے کہددیتے ہیں کہ ہرایک کو ز وج بننے میں دخل ہے اس طرح چونکہ جا در کو جوڑا بننے میں دخل ہے اس لیے ہرایک جا در کومجاز أمستقل حله کهد یا۔ جواب ثانی: دوسری تطیق بہ ہے کہ ہرایک پر جوڑا تھا۔دورنگ کے جوڑے تھے ہررنگ کی ایک جادر حضرت ابوذر ؓ نے لے رکھی تھی اورای طرح حضرت کے غلام نے بھی۔تو کہنے کامطلب یہ ہے کہ ایک رنگ کرلو۔حضرت ابوذیرٌرنگ میں بھی تساوی جاہتے تھے۔

فعیرته بامه: پس نے اے ال کی عار دلائی۔

مسو ال: بیہے کہ دہ صحابی کون تھے جن کوعار دلائی۔ دوقول ہیں اے حضرت بلال خود بھی کا لے تھے! ماں بھی کالی تھی تو انہوں نے یا بن سود آ ء کہا ا بعض روایات ہے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عمارٌ تھے بہوان کولونڈی کے بیٹے کہددیا ربط: انک امرؤ فیک جاهلیة: تووه آ دی هجس میں جالمیت کی خصلت ہے آپ تالگئے نے ینہیں فرمایا کہ تو کا فرہو گیا کلمہ پڑھ لے۔معصیت کو جاہلیت کہا کفرنہیں کہا۔معتزلہ اورخار جیہ کا رد ہے۔معاصی نقصان دہیتے ہیں جھی تو تعبیفر مائی ۔تواس تعبیفر مانے سے مرجدا در کرامید کی ردہوگی۔

مسئله سب صحابة

سب صحابة كى اولا دوسمين بي السب صحابي الصحابي، يعنى صحابي ، صحابى كو كالى دے ٢-سب غير صحابي لصحابی اس کی چردوشمیں ہیں اکسی ایک صحابی کوایک آدھ گالی دے۔ ۲۔ سب کویا اکثر کو گالی دیتارہے۔ تیسری قشم کفر ہےاور دومزی فسق ہے پہلی قشم نہ کفر ہے نہ فسق ۔اس لیے صحابی کا صحابی کو گالی دینا اس کا کوئی داعیہ ہوتا ہے کوئی ایذاء یا تکلیف پہنچی ہے اس کومنشاءتو ہیں نہیں بنالینا جا ہیے اس کو ہم اتنا کہہ سکیں گے کہ مناسب نہیں ہے۔جیسے آنخضرت عليه نے فرمایا جاہليت والا کام ہے۔

ل مدة القاري ننا س٨٠٠ بمجتم ير بخاري جنا م ١٣٠٩ ، محتم الباري جنا ص٢٠٠ مطبع انساري وبلي ، فيض الباري جنا ص١٠٠ ع فيض الباري جنا ص١٠٠

ظاصر كلاموالمحقق ان سب الصحابة كلهم اواكثرهم كفر وسب صحابى واحد اواثنين فسق وسب صحابى واحد اواثنين فسق وسب احدهما الآخرليس بكفر فانه يكون لداعية ل

حکم رو افض: تکفیرروافض کے بارے میں دورائیں ہیں اعلامہ شامی اورصاحب بح الرائق شارح کنز، کفر کے فتو نے کی ذمہ داری نہیں لیتے بلکہ عدم تکفیرکو ترجیح دیتے ہیں سے بعض محدثین نے تکفیرکو ترجیح دی ہے۔ شاہ عبدالعزیز نے کافرکہا اور یہ بھی فرمایا کہ جنہوں نے انکوکا فرنہیں کہاوہ واقف نہیں ہوئے ہے۔

فائدہجن حضرات نے مطلقا تکفیز نہیں کی انہوں نے احتیاط برتی ہے کیونکہ مطلق تکفیر میں احتیاط برتی جا ہے۔ مسئلہ تکفیو: اگر کوئی شخص کسی پرلعنت کرے اگروہ ستحق ہوتو اس پر ہوجاتی ہے ور نہ ساری دنیا میں گھوئتی ہے جب کوئی دوسرافت نہ ملے تو اس کی طرف لوٹتی ہے یہی حکم تکفیر میں ہے۔ مسئلہ تکفیر از قبیل حدود ہے کسی کی تکفیر کرنا گویا اسے واجب القتل قرار دینا ہے جیسے کسی کوزانی کہا جائے تو مطلب یہ ہوگا کہ اس کوکوڑے لگنے جا ہیں۔

مسئلهٔ افلار آء حلو د: تخضرت علیه نے ارثاد فرمایا ((ادرء وا المحدودعن المسلمین ماسئلهٔ افلار آء حلو د: تخضرت علیه نے ارثاد فرمایا ((ادرء وا المحدودعن المسلمین ماستطعتم)) سے ((تندری المحدود بادنی بالشبهات)) لہذاادنی شبہ می اگر عدم فرکا ہوجائے تو کا فرنہیں کہا و یہ بات غلط ہے) اگر کی کی جس سومعنی فر کے بنتے ہیں اورایک معنی اسلام کے مطابق بنتا ہے تو کا فرنہیں کہنا چا ہے آ ہے ہی سمجھیں کہ بہی اسلام والے معنی اس کی مراد ہیں۔ امام اعظم کے پاس ایک خص آیا اس نے کہا اقول ماقالت النصاری واقول ماقالت البهود دام صاحب نے حاضرین سے پوچھا اس کے بارے میں کیا خیال ہے۔ سب نے کہا فقد کفر کیونا اس کا عقیدہ یہود یوں اور نفر انہوں والا ہے آ پ نے فرمایا نہیں۔ پہلے اس سے تشریح طلب کروتو اس نے کہا اقول ماقالت البهود کی ست البہود علی شنی ۔ واقول ماقالت البهود و قالت البہود و قالت النصاری و قالت النصاری کی بنت ہیں ان کو کیا مجودی پیش آئی۔ ہم احتیاط و قالت البہود کریا بھودی پیش آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی پیش آئی۔ ہم احتیاط ہوئی ہوری پیش آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی پیش آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی پیش آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی بیش آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی بین آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی بین اور کی بین اور کی بین اور کی بین آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی بین آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی بین آئی۔ ہم احتیاط ہوئی بین اور کی بین اور کی بین اور کی بین اور کی بین آئی ہوں۔

اخو انکم خولکم:اخوان کالفظ پہلے آیا تا کہ پہلے بھائی ہوناذ ہن نثین ہوجائے۔حضرت ابوذر ٹنے اس حدیث سے مساوات پراستدلال کیا ہے لیکن جمہور سے ایک جمہور سے متفق نہیں ہیں تو اسکا جواب دینا پڑے گا۔ جو اب: حدیث میں آنخضرت علیہ نے جوارشاد فر مایا اس کا منشاء مواسات ہے اپنے غلاموں کے ساتھ رحمہ لی جمنی اری کا تھم ہے۔ حضرت ابوذر ٹنے مساوات پر محمول کرلیا۔ حالانکہ ایسانہیں۔

ا محيش الهاري شاكر المساوعة الشاوعيدالعزير وحمة الله تعالى وقال ان من لايكفرهم لم يلو عقائلهم البيش الباري جامطيع تجازي كابروج (ترقري س٢٦٣)

جواب پر دلائل

دلیلِ اول: یهی روایت بی که اس کی آخریس آنخضرت این این ارشادفر مایا که ایسا کام مت کهوجوان کی طاقت سے باہر ہو۔ اگر ایسا کام کہ ہی دوتو مدد کرو۔ اگر یہاں مساوات مراد ہوتی تو آپ ایک فرماتے ساتھ مل کرکام کرو۔ اور پھرغالب کام کی قید بھی نہ لگاتے۔

دلیلِ ثانی:ایک مدیث میں ہے کہ اگر تمہارے غلام تمہارے لیے پچھ پکا کرلائیں توان کو بھی شریک کرو۔ آخر میں ارشاد فرمایا اگرتم ان کوشریک نہیں کر سکتے تو چند لقے ان کے ہاتھ پررکھ دو تاکہ ایسانہ ہوکہ انہوں نے پکایا ہوا دران کو پید بھی نہ چلے کہ کیسا پکایا۔ جس نے اسکی گری پکھی ہے دہ اس کی ٹھنڈک (مزہ) بھی چکھ لے۔

(۲۳) ﴿باب ظلم دون ظلم﴾ ایک گناه دوسرے گناه سے کم ہوتا ہے

ظلم دون ظلم: بیحدیث کے الفاظ ہیں۔امام بخاریؓ کی عادت ہے کہ جوحدیث ان کی شرائط کے موافق نہ ہوا گرغرضِ باب کے موافق ہوتو اس کوتر جمۃ الباب میں لاتے ہیں۔

تو جمة الباب کی غوض: جیسے ایمان اور کفر کے درجات ہیں ای طرح معاصی کے بھی درجات ہیں۔ نیز یہ بیان کرنامقصود ہے کہ ایمان عمل کے ساتھ کامل ہوتا ہے اور معاصی سے ناقص ہوتا ہے لیکن مرتکب معاصی ایمان سے نہیں نکلتا۔ اس سے غرض مرجمہ ، کرامیہ ، معتز لداور خارجیہ کی رد ہے۔

عبله الله:مسلّمات میں سے ہے کہ عندالاطلاق عبداللہ سے عبداللہ بن مسعودٌ مراد ہوتے ہیں بھی عبداللّٰہ بن عمر بھی مراد ہوتے ہیں کیکن یہاں پر عبداللہ ابن مسعودٌ مراد ہیں۔

فائده:اس باب مين كل يانچ بحثين بين پهلى بحث غرض باب مين تقى جس كا بهى تذكره موار

بحث ثانی: ترجمة الباب سے مطابقت - صحابہ کرام نے سوال کیا اتنا لم مظلم ، صحابہ کے سوال میں ظلم سے مراد معاصی ہیں اور آیت میں شرک وظلم قرار دیا ہے قطلم کی قسمیں ثابت ہو گئیں ایک وہ قسم جو صحابہ مراد لے رہے ہیں دوسری دوقتم جوقر آن کی مراد ہے۔

بحث ثالث: لَظُلُمٌ عَظِيمٌ ميں ظلم كى تعيين: صحابة كرامٌ نے آيت ميں مذكورظم سے كونياظم مرادليا اور آخضرت عليه في جواب ميں كونيايان فرماياس ميں محدثين كى دورائيں ہيں۔

ا: الله خطائی فرماتے ہیں کہ عرف میں ظلم معاصی پر بولا جاتا ہے اس لیے صحابہ کرام نے معاصی پر محمول کیا۔
آنخضرت الله نے نے فرمایا کہ تھیک ہے کہ ظلم کاوہ مطلب بھی ہے کیونکہ ظلم معاصی اور شرک کوعام ہے کیاں یہاں شرک مراد ہے۔
۲: سعلامہ ابن جُرِّفر ماتے ہیں صحابہ کرام نے بیجا نے تھے کہ ظلم کا مصدات معاصی اور شرک بھی ہے اور پھر نکرہ تحت الفی واقع ہے تو صحابہ کرام نے عام سمجھ لیا جھوٹے گناہ سے کیکر شرک تک ۔ آنخضرت علیا تھا کے جواب کا خلاصہ بیہ ہے کہ یہاں خاص مصدات مراد ہے یعنی شرک۔

الحاصل: معلامه خطائی فرماتے ہیں کہ آنخضرت علیہ نے عام مرادلیا اور صحابہ کرام نے خاص۔ جبکہ حافظ ابن ججر کہنا چا ہے است میں کہ کا میں استحر کہنا چا ہے است میں کہ کا میں استحر کہنا چا ہے است میں کہ کا میں استحر کہنا چا ہے است کہ میں ہوتا ہے صداحق یہی ہے کہ صحابہ کرام نے خاص مرادلیا جو کہ عرف ہے۔

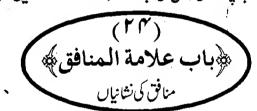
بحث رابع: سوال: بظاهر يمعلوم موتاب كه ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلُمْ عَظِيْمٌ ﴾ بعد مين نازل مولى

جواب اول: جواب مل الله الله المسلم على على الله المسلم الله المسلم الله المسلم على آيت كاحصه ﴿إِنَّ الشَّرُكَ لَظُلُمٌ عَظِيمٌ ﴾ فازل مو چكاتها و حابر كرامٌ كے سوال پرآپ عَلِي الله كار كرائي الله عظیم الله عند ول آيت كی طرف توجه مبذول كرائي اور الله تعالى نے دوبارہ اتاردى يعنى بيآيت كررالنزول كے قبيل سے ہے۔

ہت چور سمجھا جاؤں گا اور چور کو سرزا ہوتی ہے اور جیسے آپ کسی بچے سے پوچھتے ہیں کہتم نے فلاں چیز اٹھائی ہے وہ کہتا ہے میں اس طرف گیا ہوتو وہ جانے کی ہی نفی ہے میں اس طرف گیا ہوتو وہ جانے کی ہی نفی کردیتا ہے۔ تو اس کے ذہن میں استدلال ہے کیونکہ جب ثابت ہوگیا کہ بیاسطرف نہیں گیا تو فقرہ مسلمہ ساتھ ملایا جائے گا کہ جواس طرف نہیں گیا وہ اٹھا ہی نہیں سکتا۔ لہذا اس چیز کواس نے نہیں اٹھایا۔

جوابِ اول:علامه انورشاه صاحب فرماتے ہیں کہ قرآن منطقی اصطلاحات کے موافق نازل نہیں ہوا بلکہ عرف کے مطابق نازل ہمیں اس مخص کا عرف کے مطابق نازل ہوا اور عرف میں کہ سکتے ہیں کہ ایک شخص میں محاصی اور ایمان ہو جب دل میں ایمان ہوا ور جوارح میں معاصی ہوں تو جمع کیوں نہیں ہو سکتے لے

جو ابِ ثانی: حفرت شخ للهند قرماتے ہیں کہ بیاشکال لغت نہ بچھنے کی وجہ سے پیدا ہوا ہے۔ منطقیوں کو لغت کا کیا پہتان کو تو عبارت بھی پڑھنی نہیں آتی۔ آیت میں لفظ لبس ہے اور انہوں نے خلط بحور لیا حالانکہ خلط اور لبس میں فرق ہے مثلا آگ سے پانی گرم ہوجا تا ہے لبس تو ہوجا تا ہے لیکن اس کو خلط نہیں کہہ سکتے تو جس طرح آگ کی گرمی پانی کو پہنچ کر گرم کردیتی ہے ای طرح قلب پر معاصی آبس کی وجہ سے ضرور اثر انداز ہوتے ہیں لیکن خلط نہیں ہے ب



(۳۲) حدثناسلیمان ابوالربیع قال حدثنا اسمعیل بن جعفر قال حدثنا نافع بن مالک ہم ہے بیان کیا سلیمان ابوری نے نہا ہم ہے بیان کیا آمعیل بن جعفر نے نہا ہم ہے بیان کیا نافع بن مالک ابن ابنی عامر ابوسھیل عن ابیہ عن ابی ہریر قاعن النبی عالیہ قال ابن ابوعام ابو ہمیل نے ،انھوں نے اپنے باپ مالک ہے،انھوں نے ابو ہم ریر قاسے،انھوں نے نبی عیلیہ ہے،فرمایا ابن ابوعام ابو ہم نافق ثلاث،اذا حدث کذب،واذا وعد احلف،والخااؤ تمن خان سل منافق کی تین نثانیاں ہیں (۱) جب بات کے جھوٹ کے اور (۲) جب وعدہ کرے ظاف ورزی کرے،اور منافق کی تین نثانیاں ہیں (۱) جب بات کے جھوٹ کے اور (۲) جب وعدہ کرے ظاف ورزی کرے،اور (۳) جب اس کے باس امانت رکھیں خیات کرے

ا فيض البارى خاص ١٣١٢ ايضا سر الظر: ٣٩٨٢ ، ٣٤٣٩ ، ٩٠٩٥ نوث: بيرتوم الأحاديث بخارى مطبوعه دارالسلام الرياض كى ترتيب يربين مرتب

(۳۳) حدثناقبیصة بن عقبة قال حدثنا سفیان عن الاعمش عن عبدالله بن مرة هم سیبان کیا قبیصہ بن عقبہ قال حدثنا سفیان عن الاعمش عن عبدالله بن مروت عمر میں النبی عَلَیْ الله البع من کن فیه عن مسروق عن عبدالله بن عمرو ان النبی عَلَیْ الله قال اربع من کن فیه الحول نے مروق سے ،انھوں نے عبدالله بن عمر ق سے کہ فرایا نی علی الله نی میں ہوں گ کان منافقا خالصا و من کانت فیه خصلة منهن کانت فیه خصلة من النفاق حتی کان منافقا خالصا و من کانت فیه خصلة منهن کانت فیه خصلة من النفاق حتی و پورامنافق ہوگا اورجس میں ان چار باتوں میں سے ایک بات ہوگی اس میں نفاق کی ایک خصلت ہوگی جب تک کہ یدعها اذا اؤتمن خان، واذا حدث کذب یدعها اذا اؤتمن خان، واذا حدث کذب وہ اسے تجوز نہ دے، جب اس کے پاس امانت رکیس تو خیانت کرے ،اور جب بات کے تو جموث کے واذا عاهد غدر ،واذا خاصم فجر ،تابعه شعبة عن الاعمش یا اور جب عهد کرے دغادے، اور جب بھڑ ہے تو ناحق کیلر ف چلے ، سفیان کے ساتھ شعبہ نے بھی اس مدیث کو اور جب عہد کرے دغادے، اور جب بھڑ ہے تو ناحق کیلر ف چلے ، سفیان کے ساتھ شعبہ نے بھی اس مدیث کو اعمش سے روایت کیا۔

﴿تحقيق وتشريح﴾

ترجمة الباب كى غرض: ﴿ وَمُنْ اللَّهُ عَلَى عَلَى عَلَى مَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

تقریرِ اول: یہ تلانامقصود ہے کہ معاصی ایمان کونقصان پہنچاتے ہیں جیسا کہ طاعات ایمان کو بر حاتی ہیں ع تقریرِ ثانی: یہ بیان کرنامقصود ہے کہ جیسے کفراورظلم کی گی انواع ہیں، کفر دون کفر و ظلم دون ظلم ایسے ہی نفاق کی گی اقسام ہیں اگر چہ نفاق دون نفاق کے الفاظ نہیں ہولے۔

انطباق:روايت الباب سيرجمة الباب واضح ب_

منافق: نافق سے ماخوذ ہے نافق گوہ کے اس سوراخ کو کہتے ہیں جس کوہ تخفی رکھتی ہے اس کی بل کے دوسوراخ ہوتے ہیں جس کوہ تخفی سوراخ کا نام' نافقاء "ہے اور آنے جانے ہوتے ہیں جب اسے کوئی پکڑنے آئے تو دوسرے سے نکل جاتی ہے تخفی سوراخ کا نام' نافقاء "ہے اور آنے جانے والے سوراخ کو' قاصعاء " کہتے ہیں سے منافق بھی چونکہ اپناعقیدہ چھپا کررکھتا ہے اس کے اس کا نام منافق رکھا گیا۔ الممنافق: لغت کے کاظ سے نفاق سے لیا گیا ہے۔ معالفہ الباطن للظاهر کونفاق کہتے ہیں بیلغوی ترجمہ ہے عام ہے کہ وہ مخالفت فیج کے ساتھ اوروہ اظہار الاسلام مع

اقسام نفاق: نفاق کی کی قسمیں ہیں۔

قسم اول: نفاق اعتقادى ، كفركا عقادر كمت بوع اسلام كا اظهار كرنا_

قسم ثانی: نفاقِ عملی، ایمان کا عقادر کھتے ہوئے اعمال کفریہ ظاہر کرے اور ان کا ارتکاب کرے۔

قسم ثالث: نفاق حالی، دوحالتوں کامختلف ہوجانا ظاہر وباطن کے لحاظ سے ۔نفاق حالی کمال کے منافی نہیں ہے اور نفاق عملی بھی ایمان کے منافی نہیں البتہ نفاق اعتقادی ایمان کے منافی ہے اب آپ کو وہ حدیث بھی ہجھ آگی ہوگی کہ حضرت خظلہ خضرت ابو بکر صدیق کے پاس آئے اور پھر دونوں آنخضرت الله کے پاس آگے کہ ہم منافق ہوگئ اور وجہ یہ بیان کی کہ جب آپ الله کے پاس ہوتے ہیں تو حالت اور ہوتی ہے اور آپ الله کے پاس سے چلے جاتے ہیں تو حالت اور ہوجاتی ہے آپ آپ الله کے پاس ہوتے ہیں تو حالت اور ہوتی ہے اور آپ الله کی نفسی بیدہ لوتد و مون علی ماتکونون عندی و فی الذکر لصافحت کم الملائکة علی فرشکم و فی طرقکم و لکن یا حنظلة ساعة و ساعة شاعة و ساعة مو الت آپ الله کو المدائکة علی فرشکم و فی طرقکم و لکن یا حنظلة ساعة و ساعة شائل مو الت) کے ا

میں نے آپ کو بتلایا کہ ہرظا ہر وباطن کی مخالفت مذموم نہیں ہوتی لغوی لحاظ سے عام ہے کوئی اچھی ہوگی کوئی ایس کے بری ۔ جیسے میں نے پہلے بتایا کہ دل میں محبت ٹھا ٹھیں مار رہی ہولیکن محبت کوظا ہر نہیں کرتا ہے بھی نفاق کی ایک قتم ہے۔

الکم ذنبِ مولّدۂ الدلالُ ﷺ و کم بعد مولّدۂ اقترابُ

ایة: سن بمعنی نشانی، جس ہے کوئی چیز بیجانی جائے۔

حدیث الباب میں منافق کی تین علامتیں بیان کی ہیں۔

ا مسلم شریف ت انس ۳۵۵

تعریف کرو۔انہوں نے تورید کیا۔

البی خانهٔ انگریز گرجا 🗗 پیه گرجا گھر بیہ گرجا

علامت ثاني:اذا وعد احلف.

الفرق بین الوعد و المعاهده: ا: وعده ایک طرف سے ہوتا ہے اور معاہده دونوں طرف سے ہوتا ہے المعاہده کی خلاف ورزی کوخلاف ورزی کوخلاف وعد معاہده ہویا وعده اگر شر پر ہوتو تو ٹرنا واجب ہے مثلا کالج کے نو جوان مر د اور عورت نے معاہدہ کرلیا کہ رات فلال جگہ گزاریں گے تو جوان تبلیغ والوں کے ہاتھ آگیا انہوں نے اسے دین کی ہاتیں سمجھا کیں تواس نے سوچا کہ یہ بہت بڑا جرم ہے ایسے معاہدہ کوتو ٹرنا واجب ہے۔ آگیا انہوں نے اسے دین کی باتیں سمجھا کیں تواس نے سوچا کہ یہ بہت بڑا جرم ہے ایسے معاہدہ کوتو ٹرنا واجب ہے۔ الحا و عد الحلف : خلاف وعدہ کی دوسری صورت یہ ہے کہ وعدہ کرتے وقت پورا کرنے کی نیت ہی نہیں افکا و عدہ کی دیسے آج کل کے ساتی معاہدے۔ اگر وفا کی نیت ہوا ورکوئی عذر پیش آجائے اس صورت میں خلاف وعد پر گنا ہی۔

علامت ثالث:واذا التمن خان، خيانت بلااجازت غيرك مال مين تصرف كرنے كو خيانت كمتے بيں۔ اذن كي في عام ہے حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات اذن حكمي ہوتا ہے اذن كي في عام ہے حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات اذن حكمي ہوتا ہے اذن كي في عام ہے حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات اذن حكمي ہوتا ہے اذن كي في عام ہے حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات اذن حكمي ہوتا ہے اذن كي في عام ہے حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات اذن حكمي ہوتا ہے اذن حقیقاً بساوقات اذان حكمي ہوتا ہے اذن حكمي ہوتا ہے ادن حكمي ہوتا ہے ادن حكمي ہوتا ہے ادن كي خلاصت كي حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات ادن حكمي ہوتا ہے ادن حكمي ہوتا ہے ادن كي خلاصت كي حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات ادن حكمي ہوتا ہے ادن كي حكم ہوتا ہے ادن كي خلاصت كي حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات ادن كي حكم ہوتا ہے ادن كي خلاصت كي حكما ہو يا حكما ہو يا حكم ہوتا ہے ادن كي خلاصت كي حكما ہو يا حكما ہو يا حكما ہو يا حكما ہو يا حقيقاً بسااوقات ادن كي حكما ہو يا حك

خيانت كى اقسام: خانت كى دوشمين بين ـ (١) خانتِ مالى (٢) خانتِ تولى ـ

حصہ کا بھی معائنہ کروائیں۔ پھر میں سمجھا کہ کیوں کہا تھا کہ اندر جانہیں سکتا میں وہیں کھڑار ہاجب پورے کھر کی تلاشی لے لی تو تھانیدار کہنے لگا کہ حضرت میرے فرائض میں سے تو نہیں گر آپ ایک بات بتلادیں کہ پورا گھر چھان مارا آئے کی تھیلی نظر نہیں آئی۔ حضرت نے فرمایا تمہیں اس سے کیا مطلب؟ جا وَاپنا کام کرو! اس نے اصرار کیا گر حضرت نے نہ بتلایا پھراس نے کچھرو بے دینے چاہے کہ آئے وغیرہ کا بندوبست کرلیں حضرت نے فرمایا میں تو مسلمان ہو نمازی کے ہاتھ سے کیسے لےلوں؟ اس کی ہدایت کا وقت تھا کلمہ پڑھ کرمسلمان ہو گیا اور آپ نے ہدیے قبول کرلیا۔

دیانتِ دینی: حضرت الاستاد نفر مایا که میں نے مولانا عبیداللدانور سے خود سنافر مایا کہ جب خاکسار تحریک ، زوروں ریکھی علامه مشرقی سے اسلام کے خلاف کچھ باتیں ظاہر ہو کیں اس وقت کا وزیر علامه مشرقی کے خلاف فتو کی لینا عاہتا تھا۔ کیکن جب تک حضرت لا ہورگ کے دستخط نہ ہوتے ،عوام قبول نہیں کرتے تھے۔بادشاہی مسجد لا ہور کے خطیب مولا ناغلام مرشدٌ صاحب سے اس نے فتوی لے لیا تھااب اس نے حضرت لا موری سے وستخط کروانے کے لیے لا مورمیں ایک بہت بڑی دعوت کی۔ بہت سار ہے سرکاری مفتی مدعو تھے حضرت لا ہوری موجھی بلایا گیا۔ کھانا کھایا ، چائے بی ، آخر میں وہ استفتاء لائے ، پہلے سب سے دستخط کروالئے تا کہ حضرت لا ہوری پر رُعب پڑجائے کہ استنے آ دمیوں نے دستخط کر دیئے ہیں تو میں بھی کردوں۔ آخر میں حضرت لا موری کے پاس آ یا حضرت نے دیکھ کرد سخط کروانے والے کے منہ پر مارااور فرمایا کہ احمالی کا بیان اتناہی کمزور ہے کہ ایک جائے کی پیالی کے بدلے میں خریدا جاسکے اوراٹھ کرچل دیئے۔وزیر کی بڑی تو ہیں تھی اس نے نوکر ہے کہا گاڑی لے چلو نوکر نے گاڑی لے جاکر آ گے کھڑی کی اور کہا جی سوار ہوجا کیں ۔ حضرت نے فرمایا کہ احماعلی کی جوتی کی تو ہین ہے کہ اس گاڑی پر پڑے۔ چنانچہ چل پڑے ابھی تھوڑی دور چلے تھے کہ پولیس آئی اور پکڑ کرجیل میں ڈال دیا تا کہ جمعہ کے خطبہ میں نہ کہددیں کہ سارابول ہی کھل جائے پچھ عرصہ بعد چھوڑ دیا۔ (٢) خيانتِ قولى: كى كى بات اس كے پاس امانت ہو،اس ميں خيانت كرنا مثلاً (١) آپ كے پاس كوئى راز ر کھتا ہے آپ اس کو پھیلا دیتے ہیں (۲) آپ سے کوئی بات چھیا تا ہے گر آپ اسے معلوم کرتے ہیں (٣) کسی نے خط بکس میں ڈالنے کے لیے آپ کودیا آپ نے چیکے سے پڑھلیا۔ (٣) دوآ دی آپ کوسوتا مجھ کربات کرہے ہیں لیکن آپ جاگ رہے ہیں اورزیادہ کھیں وَ ٹ(خوب کمبل اوڑھ) کرسوجاتے ہیں۔الہٰ داہم نے عام ترجمہ کیا کہ جس کوامین سمجھا جائے وہ خیانت کرے۔ مسئلہ: حکومت اور ناظم کا فساد کوختم کرنے کے لئے راز لینا تو اس سے مشتنیٰ ہے مگر مدرسہ میں لڑکوں کو مقررنه کیاجائے لڑکوں کا وقت امانت ہے اوروہ پڑھنے کے لیے آتے ہیں تم ان کے اخلاق کو بگاڑر ہے ہو کسی باہر کے آ دی کومقرر کرلو _ میں تو اس کوحرام سجھتا ہوں کوئی مفتی فتوی د ہے نہ د ہے _

حضرت معی تابعی تھے گرعمر میں حضرت ابن عباس سے بڑے تھے حضرت عمر ان کواپنے مشورہ میں بلاتے تھے حضرت معی تابعی تھے گرعمر میں حضرت ابن عباس کو جین سے جھوٹ نہ آزمانا کے حضرت معی نے حضرت ابن عباس کو جین نہ کھانا۔ جو طالب علم لیافت کی وجہ سے یا خدمت کی وجہ سے استاد کے قریب ہوجائے تواسے ان باتوں کو سوچ لینا جا ہیے۔

روايت الباب پر چند سوالات:.....

مسو ال اول:اس روایت میں منافق کی تین نشانیاں بیان کی ،اگلی میں جار، بظاہر دونوں میں تعارض ہوا؟ تواس کے متعدد جوابات ہیں۔

جواب اول: قلیل کثیر کے منافی نہیں ہے۔

جواب ثانی: بیان فاطبین کے مال کے لحاظ سے ہے۔

جوابِ ثالث: ازدیا عِلم کے قبیل سے ہے کیونکہ آپ کی دعاء ﴿ رَبِّ زِ دُنِی عِلْمًا ﴾ کی وجہ ہے آپ عَلَاللَّهِ كَاعَلَم بِرُحْتَا بَى رہتا ہے۔

جواب رابع: یا بیان انواع ہے پہلی حدیث میں منافق کی نشانیوں کی تین نوعیں بیان کیں ہیں اوراگلی حدیث میں ان گاہ،اذاحدث کذب کے اندرای نوع کا حدیث میں اس کی ایک جزی کو بیان کردیا۔ گناہ تین قتم پر ہے اقولی گناہ،اذاحدث کذب کے اندرای نوع کا ذکر ہے ۲ نیتی گناہ،اذاو عدا حلف کے اندرگناہ کی اسی نوع کا ذکر ہے سے تیسری نوع عملی گناہ کی ہے واذا او تمن خان کے اندرای کا ذکر ہے اوراگلی حدیث کے اندرو اذا حاصم فحر گناو تولی کے قبیل سے ہے۔ سوالی ثانی: ان میں سے بہت ماری علائیں تو مسلمانوں میں پائی جاتی ہیں تو کیاوہ می کافر ہیں جبکہ ان کاعقیدہ می تھے ہے؟ جو اب اول: نفاق عملی مراد ہے۔

جوابِ ثانی: تثبیه پرمحمول بمنافقوں کے مشابہ ہوگیا۔

جوابِ ثالث: یا حادیث آنخضرت علی کے زمانہ کے ساتھ خاص ہیں اس زمانہ میں جس کے اندریہ علامتیں پائی جاتی تھیں وہ منافق ہوتا تھا۔

جو ابِ رابع: بیساری خصلتیں کی مسلمان میں نہیں پائی جاتیں۔ اگرایک آدھ پائی جائے تو اس کو منافق نہیں کہتے ہیں۔ ہر آدمی کو منافق کہد ینا کوئی آسان بات نہیں ہے آپ یوں تو کہد سکتے ہیں کہ ھذہ حصلة من النفاق لیکن یہیں کہد سکتے کہ ھذا منافق مشتق کاحمل کرنے کے لیے قیام میدء کافی نہیں ہے دوام میدء ضروری

ہے جیسے کسی کوایک آ دھ بات معلوم ہوگئ تو عالم نہیں کہو گے سعدی نے فرمایا

طلبگارباید صبور وحمول 🖨 که کیمیاگر ندیده اند ملول

طالب علم کی پھچان: طالبِ علم وہی ہے جودوام سے اسباق میں شریک ہوتار ہے (جسما، وجھا، قلباً)

(۲۵) ﴿باب قيام ليلة القدر من الايمان. ﴾ شبقدر مين عبادت بجالانا ايمان مين داخل ہے

(۳۳) حدثناابو الیمان قال اخبرنا شعیب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج هم سے بیان کیا ابو دیان نے کہا ہم کوخر دی شعیب نے ،کہا ہم سے بیان کیا ابو زیاد نے ،انھوں نے اعری سے عن ابی ھریو ق قال قال رسول الله عَلَیْ من یقم لیلة القدر ایمانا انھوں نے ابو ہری سے ،کہا فرمایا رسول الله عَلَیْ فی شب قدر میں عبادت کرے ایمان کے ساتھ واحتسابا غفر له ماتقدم من ذنبه . الله قواب کی نیت کرے اس کے اگر گناہ بخش دئے جا مینگے۔

﴿تحقيق وتشريح

سوال:اى باب كويمل باب كماته كياربط ہے؟

جواب ا:اصل میں امام بخاری ایمان کا ذواجزاء ہونا بیان کررہے ہیں۔ درمیان میں و بصدها تنبین الاشیاء کے قبیل سے کفروغیرہ کے ابواب قائم کردیئے تواب پھررجوع الی الاصل ہے۔

جو اب ۲: یہ جواب نہیں جوابا ہے ہم جومنا سبتیں بیان کرتے ہیں یہ تکلفات ہیں مصنف فاعل مخارہے وہ کسی تر تیب کا پابند نہیں ہوتا اس کے اختیار میں ہے جس کو جا ہے پہلے رکھے جس کو چاہے بعد میں۔اسی لیے صحاح ستہ کی تر تیب مختلف ہو جاتی ہے البتہ روایت الباب کی ترجمۃ الباب کے ساتھ منا سبت ضروری ہوتی ہے۔

جواب ٣: بعض نے افشاء سلام کے ساتھ اس باب، یعنی باب قیام لیلة القدر کو بھی جوڑا ہے کیونکہ سلام کا لفظ الیا تا القدر میں آتا ہے پھر لیلة القدر کی طرف انتقال ہوا۔

قوله ايمانا و احتسابا:ربط: معلوم مواكه ليلة القدر مين كمر امونا بهي ايمان بي يعني قيام كافتاء

لے انظر: ۲۸ ، ۲۸ ، ۱۹۰۱ ، ۲۰۰۹ ، ۲۰۰۹ ، ۲۰۱۰ نوٹ رقوم ۱۱ مادیٹ بغاری مطبع درالسلام الریاش کی ترتیب پر میں یاک وہند میں جیسے ہوئے بخاری کے شخوں کے مطابق ایک نبسر کافر ق ہے۔

ایمان ہوا دوقیدیں پائی جائیں گیس تو تواب ملے گا الیمان ۲۔احتساب۔احتساب کی قید بھی احر ازی ہے رہاء سے احر از ہے لیعنی نیت میں فسادنہ ہو۔اگر نیت پائی جائے اوراحتساب نہ ہوتب بھی تواب مل جائے گا احتسابا کی شرط تواب کے لیے نہیں لگائی گئی۔

کے تفصیل اس طرح ہے ایک ہے عمل ، ایک ہے اجرعمل ، صرف نیت پائی جائے تو تو اب ال جاتا ہے اور اگر نیت کے ساتھ احتساب التخصار اللہ اور استحضار فضائل بھی ہوتو زیادتی ثواب ہے تو قیدِ احتساب لازی نہیں ہے۔ لہذا حضور علیہ استحساب کا لفظ ایسے مواقع میں استعال فرمایا ہے کہ اجن میں انسان سجھتا ہی نہیں کہ رہم بھی کوئی ثواب کا کام ہے جسے مصائب وغیرہ ۲۔ یا مشکل مواقع میں جن میں مشقت زیادہ ہو۔

سوال: حدیث ہے معلوم ہوا کہ ایمان ہوتو اعمال کا ثواب ہے کا فرکوثوا بنہیں ملے گایہ تو انصاف کے خلاف ہے کہ ک ہے کہ کم کرے اور بدلہ نہ ملے؟

جواب اول: الله تعالى اس كى جزاء دية بين مُر دنيا مين نه كه آخرت مين ـ

جوابِ ثانی: آخرت میں تخفیف عذاب ہوگا بایں طور کہ نفر جس عذاب کا مقتضی ہے نیکی کی وجہ سے کچھ تخفیف ہوجائے گی ا۔ جسیا کہ خواجہ ابوطالب کو آپ علی ہے کہ دکرنے کی وجہ سے صرف جہم کی جو تی پہنائی جائے گی۔ ۲۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ کی نے خواب میں ابولہب کو دیکھا بوچھا کیا حال ہے اس نے کہا بہت تکلیف ہے مگر اتنی کی انگل کے بورے کے برابر نرمی ہے وہ جو محمد بن عبداللہ (علیات کی پیدائش پرخوشی کی وجہ سے اس انگل سے اشارہ کر کے باندی کو آزاد کیا تھا اس سے معلوم ہوا کہ پیدائش کی خوشی سے عذاب میں کمی ہو سکتی ہے مگر منجی نہیں۔

جوابِ ثالث: سسساری نیکیاں ضبط ہوجائیں گی کیونکہ جب اس نے اللہ تعالی کے لیے کیا ہی نہیں تو اللہ تعالی تواب کیے دیں گے اگرنیت میں اخلاص نہ ہوتو مسلمان کو بھی تواب نہیں ملتا چہ جائیکہ کا فرکو ملے۔

جو اب ر ابع: بعض جرم ایسے ہوتے ہیں جوسب نیکوں کوضائع کردیتے ہیں جیسا کہ ایک شخص حکومت کا تعاون کرتا ہے سڑکیں وغیرہ بنوا تا ہے لیکن حکومت کے آئین کے خلاف بغاوت کرتا ہے اب کون اس کی رعایت کرے گاای طریقہ سے کفرا تنابزا جرم ہے جوساری نیکیوں کوضائع کردیتا ہے۔

احتساباً: دوسری چیز ثواب کی نیت ہے یہاں پرعلاء نے ایک بحث چلائی ہے اورامام بخاری اس اختلافی مسلمیں فیسلدد رے ہیں۔اختلافی مسئلہ اور بحث بیہ کہ جوآ تمہ اعمال کی جزئیت کے قائل ہیں تو کیا نوافل بھی جزء ہیں اوراو پرامام بخاری نے قیام لیلة جزء ہیں اوراو پرامام بخاری نے قیام لیلة القدر من الایمان کاباب قائم کیا ہے۔

من يقم ليلة القدر: قيام سے كيا مراد ہے؟ اسكى دوتفيرين بيں۔ (١) قيام فى الصلوة (٢) قيام من يقم ليلة القدر: قيام سے كيا مراد ہے؟ اسكى دوتفيرين بيں۔ (١) قيام للطاعة ليل على الله الله نوم ہے كہ و تے نہيں احياء كيل كے معنى ميں ہے۔ عمدة القارى ميں ہوا كه المال سے صغيره معاف بوجاتے ہيں خفوله ماتقدم من ذنبه: ذنب كالفظ صغيره يربولا جاتا ہے معلوم بواكه المال سے صغيره معاف بوجاتے ہيں

گناہ صغیرہ کی معانی کے تین طریقے

ا..... سيحي توبه ٢١ عمال صالحه سيت ايز دي

ایک عمومی شبہ: اعمال سے مغفرت کے بارے میں مختلف روایات آئی ہیں جن میں ایک عمومی شبہ: است دوسری نمازتک کی مغفرت کی روایت جمعہ سے جمعہ تک سارے گناہوں کا معاف ہوجانا تو ابلیۃ القدر سے کو نے گناہ معاف ہوں گے؟

جواب: ضابط بیہ کہ عفوله ماتقدم من ذنبه ان کان فی ذمته ذنب اوراگر ذنوب صغیرہ نہیں ہیں کہائر ہیں تو کہ اللہ کے بارے میں کہائر ہیں تو کہائر میں تخفیف ہوگی اگر دونوں نہیں ہیں تو ترقی درجات ہے یہاں سے انبیاء کی ہم السلام کے بارے میں مغفرت ذنوب کا لفظ استعال ہونے کی وجہ بھی معلوم ہوگئی۔ ایمانا واحتسابا کی تقریر ہرجگہ یہی ہے۔

(۲۲)
﴿باب الجهاد من الايمان ﴾
جمادايمان مين داخل ۽

وتحقيق وتشريح

تو جمعة الباب کی غوض: ۔۔۔۔۔ جہادہی ایمان کا حصہ ہے۔ غرض باب میں وہی تقریریں ثابت کرنا چاہتے ہیں کہ اعمال ایمان کا حصہ ہیں معزلہ، خارجیہ، کرامیہ کی رد ہے۔ اس سے یہ بھی سمجھیں کہ بھن لوگ جہادہ بھی کہ سیاست میں داخل ہوجاتے ہیں اگر وہ احقاقِ حق اور ابطالِ باطل کی نیت سے داخل ہوتے ہیں تو اس پر ثو اب ملے گااگر قاری اور مدرس کی نیت سے سیاست میں حصہ لیا ہے۔ مدرسہ ادر مدرس کی نیت سے سیاست میں حصہ لیا ہے۔ مدرسہ سیاست سے نہیں رو کتا۔ بات صرف آئی ہے کہ علم بھی جہاد ہے پہلے ایک جہاد کر لوچر دومراکر لیمنا ایک ساتھ کرنے سے سیاست منافق سیاست ہیں کرسکتا ہے یا کا فرد یہ مسلمان نہیں کرسکتا ہے بیا کہ دوم ہے معنی اول دین کا شعبہ ہے اور دومرا علامت منافق سیاست بیا کافر۔ یہ مسلمان نہیں کرسکتا ہے سیاست بیا موجودہ سیاست تقریبا نفاق پرخی ہے البندا اس پلعت سے اور دومرا علامت منافق سیاست پنہیں علماء تو دھوے والی سیاست پلانت ہے اور موجودہ سیاست تقریبا نفاق پرخی ہے البندا اس پلعت سے ما اور دومرا علامت سیاست پنہیں سیاست بیا ہوگا کہ میں آ پ کے ساتھ ہوں پھر منکر ہوجائے گا۔ حضرت لا ہوری فرایا کرتے تھے کہ ان سرمایہ داردں کے خرورکوا ہے استفناء سے پامال کرو۔ سرمایہ دار کے ذہن میں مولوی کا دینا، لیمنا نہ ہوور نہ سرمایہ وجوائے گا۔ حضرت لا ہوری فرایا کرتے تھے کہ ان سرمایہ داردں کے خرورکوا ہے استفناء سے پامال کرو۔ سرمایہ دار کے ذہن میں مولوی کا دینا، لیمنا نہ ہوور نہ سارام تہ تم ہوجائے گا۔ سیاست تول میں خیات کے ذراقیہ باطل ترقی کی کوشش کرتا ہے اہل حق کی ترقی نی علی تھے کے طریقہ پر ہے جو ان فریوں سے خال ہے۔

ر انظر ۱۳۸۱ ، ۱۳۵۷ ، ۱۹۷۲ ، ۱۳۲۳ ، ۲۴۲۷ ، ۲۳۷۷ ، ۲۳۵۷ ، ۲۳۸۵ وقومالا حاویث بخاری مطبوعه دارالسلام الریاض کی ترتیب پر مین

انتدب الله:ا الشفامن ب ٢ ـ الله نقول كرايا ـ انتداب اصل مين كى كبلا نفي رآن كوكت أير ـ لا يخرجه الا ايمان بى او تصديق بوسلى:

اشكال: "أوُ" احدالامرين كي ليه بال"أوُ" معلوم بواكه الله تعالى كى صانت كي ليه احدالامرين كافي بالله يرايمان بونايار سولول كى تصديق _

جواب اول: "أو" بمعنى داوے چنانچ بعض شخوں میں داو بھی ہے يقرينه بوجائے گا۔

جوابِ ثانی: یشک رادی ہے دونوں میں سے کسی ایک کاذکر ہے اور بیا یک دوسر سے کولازم ہے جونسا بھی ایک ہود وسرے کی نفی نہیں۔

جواب ثالث: "أوُ" تُويك لي بجياك جالس الحسن أوُا بن سيرين يل بـ

جوا ب رابع: ''اَوُ'' تولِع کے لیے ہا ایمان کی نوعیں بیان کیں۔ ایمان ہی بھی ایک نوع ہا اور تصدیق ہوسلی دوسری نوع ہے۔

جو ابِ خامس: أَوُ انفصال مانعة المخلو ك ليے ہے اشكال اس صورت ميں ہوتا ہے جب مانعة الجمع كے ليے بنائيں۔

من اجو او غنیمة: ساشكال: بظاہر معلوم ہوتا ہے كه دونوں ميں سے ایک چيز ملے گی اجريا غنيمت۔ دونوں نہيں مليں گيں كيونكه أؤتر ديديدلائے ہيں؟

جوابِ اول: يهال كلام محذوف ہے من اجر او اجر وغنيمة ـ

جو ابِ ثانی:بزرگوں نے باہد کی چارشمیں بتائیں ہیں۔ بجاہد ابتدا دوحال سے خالی نہیں۔ مخلص ہوگا یا غیر مخلص پھر انتہاءً دوحال سے خالی نہیں فاتح ہوگا یا غیر فاتح ۔ جومخلص اور فاتح ہوگا اس کو اجر ملے گا اور غنیمت بھی مخلص غیر فاتح کو صدف اجر ملے گا اور نہیں غیر فاتح کو صدف اجر ملے گا اور نہیں غیر فاتح کو صدف اجر ملے گا اور نہیں فیر فاتح کو صدف اجر ملے گا اور نہیں فنیمت کا فنیمت کا مشتق ہے اور ثانی الذکر کومش اجر ماتا ہے۔

جوابِ ثالث: أو مفصله مانعة المحلو كي بين ايمانيس بوسكنا كه يحويهي نه طح البند دونون ال سكتة بير - (۱) او ادخله المجنة: مطلب بيب كه بلاحماب جنت مين داخل كرتا بون - (۲) يام ته بي جنت مين داخل كرتا بون - (۲) يام ته بي جنت مين داخل كرون كاريا جرى كي تفير ب

لولاان اشق على امتى:سوال: آنخفرت الله الربرريين تشريف لي جات توامت بركيا مقت تقي ؟

جو اب اول:امت سے مزادامراء وظفاء ہیں اگرآ ب علیہ کی بھی سریہ سے پیچے ندر ہے تو امراء وظفاء کے لیے کی سریہ سے پیچے ندر ہے تو امراء وظفاء کے لیے کی بھی سریہ سے پیچے رہنا جائز نہ ہوتا تو ان پر مشقت ہوتی۔

جواب ثانی:امت سے مراد مجاہدین ہیں کیونکہ اگر آنخضرت علیق نطق تو سارے صحابہ کرام ہمی نطح تو سارے صحابہ کرام ہمی نطح تو سواری نہاتی تو سواری نہاتی تو اس است پر مشقت ہوتی۔

جو اب ثالث:امت سے مراد ضعفاء امتی ہیں جو کمزور تفنیس جاسے تھے اگر حضور علیہ تکے تو وہ روتے کہ استان کے میں اور ہم یہاں۔ان کو صدمہ ہوتا چنا نچہ ایسے ہی لوگوں کے لیے آپ علیہ نے ارشاد فر مایا کہ پچھ لوگ یہاں رہ کر بھی جانے والوں کے برابر ثواب پالیتے ہیں۔ صحابہ کرام نے عرض کیا وہ کیے؟ تو آپ علیہ نے ارشاد فر مایا خدانے ان کورد کا مگروہ دعا کیں کرتے ہیں۔

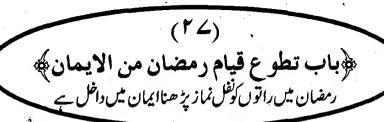
ولوددت انی اقتل فی سبیل الله ثم احیی:سوال: آنخفرت الله نے باربارایک چیز کننا کی اوراللہ تعالی نے باربارایک چیز کی تناکی اوراللہ تعالی نوری کرنے پرقادر تھے؟

جواب اول:دوچزی آپ الله کی تمناکے پورا ہونے سے مانع تھیں۔(۱) آپ الله کی شان رحمت الله المینی۔ آپ الله کی شان رحمت اللعالمینی۔ آپ الله کی شان کے خاصب سے براعذاب ہوگا یہ رحمۃ اللعالمین کی شان کے خلاف ہے۔ (۲) آپ الله کی عظمت کے آپ الله کی کا کی کا فر کے ہاتھ سے واصل بحق ہونا آپ الله کی شان کے خلاف ہے۔

جوابِ ثانی: آپ علی کی بیتمنا پوری ہوئی۔نواسوں کی شہادت گویا آپ کی شہادت ہے کہتے ہیں کہ آ دھاجسم حضرت حسین کے مشابہ تھااور آ دھاجسم حضرت حسین کے مشابہ تھا تو الواسط بیتمنا پوری ہوگئی۔

جواب ثالث: آپ علی کا وفات زہر کے اثر کی وجہ سے ہوئی تو آپ علی کی شہادت ہے۔

جو اب رابع: تمناءشهادت بھی شہادت ہے چنانچدابوداؤد میں ہے بہت سے لوگ بستر پر جان دے دیتے ہیں اوروہ شہید ہوتے ہیں ا



(۳۲) حدثنااسمعیل قال حدثنی مالک عن ابن شهاب عن حمید بن جم سے بیان کیا اسلیل نے، کہا جھ سے بیان کیا مالک نے، انھوں نے دید بن عبدالرحمن عن ابی هریرة ان رسول الله علاق قال من قام رمضان ایمانا عبدالرحمن عن ابی هریرة ان رسول الله علاق قال من قام رمضان ایمانا عبدالرحمٰن سے، انھوں نے ابو ہریرہ سے کہ آخضرت علیہ نے فرمایا: جوکوئی رمضان میں (راتوں کو) ایمان رکھ کر واحتسابا غفر له ما تقدم من ذنبه. اورثواب کے لیے عبادت کرے اس کے اگلے گناہ بخش دئے جائیں گے۔

وتحقيق وتشريح

تر جمة الباب كى غوض:اى باب مين دوباتوں كى طرف اشاره ہے الية القدر كاقيام واجب نہيں نفل ہے ٢- قيام لية القدر جونفل ہے يہ بھى ايمان كے اجزاء ميں سے ہے قيام سے مراد تراوح بين اوردوتفيرين پہلے گزر چكى بين كه قيام من النوم بھى مراد ہوسكتا ہے اور قيام الى الصلوة بھى۔

سوال:ال باب كوباب الجهاد من الايمان ع كياربط م؟

جواب : چونکه رمضان السبارک کی رات میں قیام مجاہدہ ہوتا ہے توامام بخاریؓ نے جہاد کی فضیلت بیان کردی۔

مسئله تراويح پر چند مناظريے

ترجمة الباب میں قیام سےمرادتر او یکے ہیں اس مناسبت سے غیرمقلدین سے چندمناظرے۔

پھلامناظر ٥: مولانامحمرامین صاحب اوکاڑوگ کواللہ تعالی نے مناظرے کا بڑا ملکہ دیا تھا غیر مقلدین کے کسی مناظرے میں تشریف لے گئے تو فر مایا کہ بھائی تعداد کی بات تو بعد کی ہے پہلے بیتو طے کرلیں کہ حیثیت کیا ہے وہ پریشان ہوگیا وہ تو بیسوچ کر آیا بی نہیں تھا آخر کار کہنے لگا کہ مستحب ہے مولانا نے فر مایا مستحب تو وہ ہوتا ہے کہ کرلوتو ثواب نہ کروتو گناہ نہیں پھر تو بیس کی جگہیں پڑھ لینی جا ہمیں وہ خاموش ہوگیا۔

دوسر امناظر ٥:ايكمرتبه يهال (خيرالمدارس) چند حفى آئے كه جى فلال جگه غيرمقلدآيا مواہمناظره كرنا جا بتا ب حضرت مولانا خير محمد صاحب كازمانه تفا انهول في مجمع بهيج ديا اور فرمايا كه مؤ طاوغيره ساتھ ليتے جانا۔ میں چوک شہیداں (مان کا ایک چوک کانام ہے) گیا تو وہاں انہوں نے کہا کہ یہاں پولیس کی چوکی قریب ہوئی فساد ہو گیا تو گرفتار ہوجائیں گے کسی بستی کی مسجد میں مناظرہ رکھ لیتے ہیں میں نے کہا کہ میں اپنے ساتھیوں کی ضانت دیتا ہوں کہ دہ فسادنہیں کریں گےتم اپنے ساتھیوں کی صانت دواس نے کہا میں صانت نہیں دیتا۔ چنانچے بستی میں بہنچ وہاں بہت مجمع تھاان کے آ دمی زیادہ تھے ہمارے کم مناظرہ شروع ہوااس نے سب سے پہلے آ بہت پڑھی ﴿فَإِنْ تَنَازَعُتُمُ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللهِ وَالرَّسُولِ ﴾ پهراس نے وہ شہور حدیث پڑھی جس میں آتا ہے کہ آب رات کوآٹھ رکھتیں پڑھتے تھے۔ میں نے کہایاتو تہجد کے بارے میں ہے تراوی کے متعلق حدیث لاؤ۔ پھر میں نے چاریا نچ آ ٹارپیش کردیے۔ پھراس نے وہی حدیث پرھی، میں نے پھریمی کہدکر کہ یہ ہجد کے بارے میں ہے جاریا نج آثار رعب ڈالنے کے لیے اور سنادیئے۔اس نے تیسری باروہی حدیث پڑھی، میں نے پھریہ کہہ کر کہ بیتو تبجد کے بارے میں ہے جاریانج اور سنادیئے۔ پھراس نے کہا یہ جوآپ عن عن پڑھ رہے ہیں بیرف جر ہے اور حرف جرکسی کے متعلق ہوتا ہے میں نے کہا ہاں!اس نے کہا یکس کے متعلق ہے میں نے زوی کے ساتھ بتایا۔اس نے کہارُوی کونسا صیغہ ہے میں سمجھ گیا کہ میہ مجھ سے مجہول کا لفظ کہلوانا چاہتا ہے اور پھریہ شور مجادے گا کہ مجہول کا کیا اعتبارے میں نے لوگوں سے مخاطب ہو کر کہادیکھا!اب سے جان چھڑانا چاہتا ہے مسئلہ کی بحث کوصر فی بحث میں لے جانا چاہتا ہے اس نے چھر پوچھامیں نے چھرلوگوں کومخاطب کر کے کہاد یکھا! اب یہ بحث سے نکلنا چاہتا ہے صرفی بحث كرنى ہے تواس ميں مقابله ركھ لے۔ پھر جوبات مجھ سے كہلوانا جا ہتا تھا خود ہى اس نے كہددى كه بيم مجهول كاصيغه ہے فاعل نامعلوم من مجهول كاكيااعتبار ب_مين في كهاتم في شروع من آيت يرهي هي فان تَنَازَعُتُم في شيء فَوُ دُّوهُ اللّٰهِ وَالوَّسُولِ ﴾ إتمهارادعوى ہے كہ ہم ہربات قرآن وحديث سے بتاتے ہيں لہٰذاقران وحديث ے ثابت کردوکہ سیجھول کاصیغہ ہے؟ پس وہ خاموش ہو گیااور میں جیت گیا۔

(۲۸)
﴿ باب صوم رمضان احتسابا من الایمان. ﴾ رمضان کے دوزے دکھنا ثواب کی نیت سے ایمان میں داخل ہے

(۳۷) حدثنا ابن سلام قال اخبرنا محمدبن فضیل قال حدثنا یحیی بن سعید جم سے بیان کیا ابن سلام آن ، کہا ہم کو خردی محمد بن فضیل آن ، کہا ہم سے بیان کیا بی بی سعید آن ، انھوں نے عن ابی سلمة عن ابی هریر ق قال قال رسول الله عَلَیْ من صام رمضان ایمانا ایسلم سی سلمة عن ابی هریر ق قال قال رسول الله عَلَیْ فی مفان کے دوزے ایمان کی حالت میں ایسلم سی ابو ہریر ق سے ، کہا فرمایا رسول الله عَلَیْ نے جو فی رمضان کے دوزے ایمان کی حالت میں و احتسابا غفر له ماتقدم من ذنبه.

اور ثواب کی نیت ہے رکھے اسکے اسکے اگلے گناہ بخش دیے جا کیں گے

وتحقيق وتشريح

(باب) اى هذاباب ، (صوم رمضان) كلام اضافى مرفوع بالابتداء وخبره قوله من الإيمان (احتسابا)....حال بمعنى محتسباا ومفعول له او تمييز ل

الله تعالیٰ کے محبوب نبی تفیق نے رمضان کی راتوں کے قیام اوردن کے روزوں کومغفرت کا ذریعہ قرار دیااورامام بخاریؒ نے اپنے نقطہِ نظر کے مطابق انہیں ایمان میں داخل بتایا ہے

(rq)

(۳۸) حدثناعبد السلام بن مطهر قال ناعمر بن على عن معن بن محمد الغفارى بم عن بن محمد الغفارى بم عن بن محدٌ غفارى ما أخردى بم كوعر بن على في المعول في معن بن محدٌ غفارى سے المحول في

ا (الدة القاري ج اص ٢٣٨) ير (ورس بخاري ص ٢٨١)

عن سعید بن ابی سعید المقبری عن ابی هریرة عن النبی عَلَیْ قال ان الدین یسر سعید ابن ابوسعید مقبری سان ابوسعید مقبری سانه ابو بریرهٔ سانه انعول نے نی الله سعید ابن ابوسعید مقبری سانه الحد الا غلبه فسددوا وقاربوا وابشروا اوردین میں جوکوکوکن تی کرے گاتودین اس پرغالب آئے گا اس لئے تی کی چال چلواور ثواب کی امیدر کھ کراس سے خوش رہو واستعینوا بالغدوة والروحة وشیء من الدلجة اواستعینوا بالغدوة والروحة وشیء من الدلجة اور اخررات کے چلئے اور اخررات کے چلئے سے مدلو۔

وتحقيق وتشريح

مسوال:اس باب کو یہاں ذکر کرنے میں اشکال ہے کہ بدر دین میں آسانی کا ہونا) نہ تو جزء ایمان ہے اور نہ ہی مکملات ایمان میں سے ہے۔ لہذا اس کو کتاب الایمان کے اخیر میں ذکر کردیتے تو مناسب ہوتا۔

جواب: اس باب وكتاب الايمان سے متعدد طرق كے ساتھ ربط ہے۔

ر بط اول: جب ایمان کے بارے میں ذکر کیا تھا کہ اس کے درجات ہوتے ہیں کی وہیثی ہوتی ہے تو اس کوثابت کرنے کے لیے ابواب قائم کئے ۔ تو اب اس باب کے اندر دو درجے ذکر کیے ہیں۔(۱) پسر(۲)عر

ر بطِ ثانی: قرآن پاک میں جہاں رمضان المبارک کاذکر ہوا، وہاں بیار اور مسافر کے لیے یسو کاذکر کیا ہے تو امام بخاری نے یسو کا جا کہ کیا۔

ر بطِ ثالث:معزله اورخارجيكارد بكره ومربات بركفركافتوى لكادية بير يتوفر مايادين مين اتن تكي نيين بيسر بي تارك اعمال خارج عن الايمان نبيس ب-

ربط رابع: پہلے جاہدہ کا ذکر تھا اب فر مایا کہ جاہدہ بھی اپنی وسعت کے مطابق کرنا چاہیئے زیادہ تنگی برداشت نہیں کرنی چاہئے کیونکہ دین میں آسانی ہے۔

حنیفیہ: حنیف، جوتمام باطل دینوں سے بٹ کرحق کی طرف مائل ہو۔ یا تمام ماسواسے بٹ کراللہ پاک کی طرف مائل ہو یہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کالقب ہے تا

السمحه: بمعنى آسانى ـ

حق دوسم پر ہوا۔ (۱) حق مشکل (۲) حق آسان۔ جنیفیت کامعنی حق ہوا۔ الحنیفیة السمحة ای المملة السمحة التي لاحرج فیهاو لا تضیق فیها علی الناس وهی ملة الاسلام. الفریدالدین عطار ؓ نے کہا

ازیجے گو وز ہمہ کیموئے باش 🖨 کیک دل کیک قبلہ کیک روئے باش

تفسير اول: ١٠٠٠٠١عال كردودرج بين (١)درج عزيمت (٢)درج رخصت

ا: درجہ عزیمت وہ درجہ ہے جومقصود بالعبادت ہواور رخصت اصل کو چھوڑ کرجسکی اجازت ہو۔ تو اس جملہ کا مطلب یہ ہے کہ ایک آدئی کہتا ہے کہ میں عزیمت پر ہی عمل کروں گارخصت پڑمل نہیں کروں گا تو نسی نہ سی وقت وہ عاجز آجائے گا ور رخصت پڑمل کرنا پڑے گا۔

تفسیر ثانی: پہلی تفسیر میں اِلَّا عَلَیه، کامطلب بیرلیا کہ اس کوسی نہ کسی وقت رخصت پڑمل کرنا پڑے گا دوسری تفسیر بیہ ہے کہ وہ عاجز آ جائے گا بینی اگر اس نے بیسوچا کہ عزیمت پر ہی عمل کروں گا اور دخصت پر عمل نہیں کر صلے گا دونوں چھوڑ بیٹھے گا۔ اس پر حضرت تھا نویؒ نے ایک قصہ لکھا ہوں گا تو وہ دونوں میں سے کسی پر بھی عمل نہیں کر سکے گا دونوں چھوڑ بیٹھے گا۔ اس پر حضرت تھا نویؒ نے ایک قصہ لکھا ہے ایک شخص ہر دلعزیز تھا ہر کسی کا کام کرتا تھا ایک شخص نے اس سے کہا کہ دریا پار کروادو۔ جب اس کولیکر درمیان میں پہنچا تو دوسرے نے آ واز دی اس نے کہا کہ آ دھا تھے پار کروادیا ہے اب آ دھا اسکو کروالوں ۔ تو ذرا یہاں تھم ہر، اس کو درمیان میں پہنچا تو اس کو چھوڑ کر پہلے کو پکڑنے لگا تو درمیان میں پہنچا تو اس کو چھوڑ کر پہلے کو پکڑنے لگا تو درمیان میں پہنچا تو اس کو چھوڑ کر پہلے کو پکڑنے لگا تو درمیان میں پہنچا تو اس کو چھوڑ کر پہلے کو پکڑنے لگا تو درمیان میں پہنچا تو اس کو چھوڑ کر دوسرے کی ظرف آیا تو وہ بھی ہاتھ سے نکل گیا اس طرح دونوں ڈوب گئے۔

سددو او قاربو ا: سددو کی تین تفسرین بین، قاربوا کی دو۔ اس طرح اس جملہ کی کل جارتفسرین بن جائیں گی۔ تفسیرِ اول:سددوا، سَدادے لیا گیا ہے سداد درست عمل کو کہتے ہیں۔ معنی ہوگا درست عمل کرو۔ قاربوا کامطلب یہ ہوگا کہ درست عمل پورانہیں کر سکتے تو درست کے قریب قریب تو کرو۔

تفسير ثاني: درست كام كرواورايك دوسر ي حقريب رمو

تفسير ثالث: سددوا مياندوى اختيار كروقاربوا اس يقريب قريب مل كرو

تفسير رابع: سددوا، سداد بمعنى ۋائ سے ليا گيا ہے مطلب بيه وگا كه مضبوطي سے عمل كروكه برائى

قریب ندآئے برائی کوڈاٹ لگ جائے کما قال الثاعر نے

اضاعونی وای فتی اضاعوا 🖨 لیوم کریهة وسداد ثغر

و ابشرو ا: عمل كـ ثواب مين خوش محسوس كرد ـ

واستعینوا بالغدو قوالروحة: صبح وشام کے وقت چلنے سے مدوطلب کرو۔ وشیء من الدلجة اور کھاندھرے سے۔ غدوة والروحة لفظی معنی صبح کو چلنا اور شام کو چلنا، غدوة کا اطلاق سیر من اول النهار الی النووال ہوتا ہے اور دوحه کا اطلاق سیر من الزوال الی الغروب پر ہوتا ہے۔ اس دوران میں چلنے کو کہتے ہیں۔ تینوں اوقات نشاط کے ساتھ چلئے کے ہیں مقصد یہ ہے کہ ان اوقات میں عبادت کرنی چاہیے فل وغیرہ پڑھنے چاہیں۔ حضرت انگوری نے یہاں سے استدلال کیا ہے کہ ان اوقات میں دوام کے ساتھ کچھ عبادت کو معمول بنالینا چاہیے۔

(m+)

باب الصلوة من الايمان وقول الله تعالى (وَ مَا كَانَ اللهُ تعالَى الله تعالَى اللهُ تعالَى اللهُ يَعالَى اللهُ كَانَ اللهُ يُكِمَانَكُمُ) يعنى صلوتكم عندالبيت الله نمازايمان مين داخل ما ورق تعالى نے در القربی و فرمایا اوراییا نبین جوتم مارا ایمان اکارت کرد بے بین بیت اللہ کے پاس جوتم نے نمازا پڑھی دیا المدی و مری

وتحقيق وتشريح

مدیث کی سندیس چاردادی ہیں، چو تھے حضرت برآ ء ہیں (برآء بتخفیف الواء وبالمدعلی المشهور) ان کی کل مردیات ۳۰۹ ہیں، توفی ایام مصعب بن الزبیر بالکوفة ۲

توجمة الباب كى غوض:اس باب مين امام بخارى في يثابت كياب كه نمازايمان كالهم جزءب _ يهان تك كم آيت مباركه مين الله ياك في صلوة كوايمان في تعيير كيا-

وقول الله وَ مَا كَانَ الله لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمُ :اس آيت كوذكركر في سيمقصود وليل ترجمه به ياترجمة الباب كاجزء بنانا؟ عندابعض ترجمة الباب كاجزء بنانا مقصود بهاورروايت الباب سيدونول جز ول كاثبوت به فانول الله تعالى ﴿ وَ مَا كَانَ اللهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمُ ﴾ مارى روايت ذكركر في كابعد آيت كوذكركياس سيدوبا تين معلوم الله تعالى ﴿ وَ مَا كَانَ اللهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمُ ﴾ مارى روايت ذكركر في كابعد آيت كوذكركياس سيدوبا تين معلوم موكن السنة وكي المنان عليمان عابت موكي كفان موكن السنة وكي المنان عابت موكي كفان الفرز ١٩٩٩ ، ١٩٨٤ ، رقوم الا عاديث بخارى مطبوع دادالسلام الرياض كي ترتيب بين جو مارى ترتيب سياكي أي المعلوق وفي الفير المرجوال في العلوة وفي الفير ع عمدة القارى جامع مودة القارى المودة المناني العلوة وفي الفير المرجوال في العلوة وفي الفير ع عمدة القارى جامع المود ع المسلم المود المودة ال

ایمان کا اتنا ہم جزء ہے کہ اس کو ایمان سے بی تعبیر کردیا تو ترجمۃ الباب کے دونوں جزء ثابت ہوگئے کہ دوقال البعض آیت دلیل ترجمۃ الباب ہے تو ترجمۃ الباب کے اندر آیت کی تغییر کردی کہ ایمان سے مرادصلو ق ہے یعنی صلوت کم عند البیت ۔ ﴿ وَمَا کَانَ اللهُ لِیُضِیعُ اِیْمَانَکُم ﴾ کی تغییر امام بخاریؒ نے صلوت کم عند البیت سے کی۔ اس تغییر پر زیردست اشکال ہے اس اشکال اور اس کے جواب کو بچھنے کے لیے آیت کا شان نزول جاننا ضروری ہے۔

شان نؤول: نى پاك عَلِيْكَ مَهُ مَر مه مِن مَازي بِرُحة تَحَال وقت يه بات واضّى نهي كه آپ عَلِيْكَ كَ مَر طرف منه كرتے بين كيونكه آپ عَلِيْكَ مَهُ مَر مه مِن حَجِب كرنمازي بِرُحة تَحَد جب بجرت كي آپ عَلِيْكَ فَ تَقريبا ١١٠ ك اماه بيت المقدى كي طرف منه كرك نماز بِرُحى آپ عَلِيْكَ كي خوا بهن تقى كه بيت الله قبله بن جائي اس كي دوه جبين تحيين الآب كامولد تقا ٢ حضرت ابرا بيم عليه السلام كا قبله بحى وبى تقار چنانچه آپ عَلِيْكَ نظرين أَثَمَا كر آسان كي طرف و يُحَمِي كه كب حكم آئي جنانچه مَم نازل بهوا ﴿ فَوَلُ وَجُهَكَ شَطُو الْمَسْجِدِ الْمُحرَامِ ﴾ المسوال: يَحَم كب نازل بهوا؟

جواب: آپ علی بوسلمہ کسی تضیہ کے فیصلہ کے لیے ہوئے تھے ظہری نماز پڑھارہ سے کہ آپ علیہ فیصلہ کے لیے ہوئے تھے ظہری نماز پڑھارہ سے سے کہ آپ علیہ کے سی مند پھرلیا۔ پھر آپ علیہ مجد نبوی میں تشریف لائے اور تمام نمازیں بیت اللہ کی طرف مند کرکے پڑھیں اور سجد بوسلمہ خوالقبلتین کہلائی مسجد قباوالے نجری نماز اواکررہ سے کہ کسی نے آوازلگائی اَلااِنَّ القبلة قلد حولت بن اوقبلہ تبدیل ہوگیا پس تمام لوگ نماز میں ہی قبلدرخ ہوگئے است کال : امام بخاری کی اس تفیر پڑا شکال یہ ہے بیت اللہ کے پاس جونمازیں پڑھی گئیں ان میں تو کوئی شبہ نہیں ہے اور صلو تکم عند البیت سے معلوم ہوتا ہے کہ بیت اللہ کی طرف منہ کرکے پڑھی جانے وائی نمازوں کے بارے وال ہے کوئکہ البیت جب معرف بالام ہوتو بیت اللہ مراد ہوتا ہے جیسا کہ الکتاب جب معرف بالام ہوتو کی اللہ مراد ہوتا ہے جیسا کہ الکتاب جب معرف بالام ہوتو کی سے جو مدینہ منورہ میں بیت اللہ سے دور بیت المقدی کی طرف منہ کرکے اواکی گئیں۔ تو اس کے تین جواب دیے گئیں۔

جواب اول: بعض نے بیجواب دیاہے کہ بیوتقیف رواۃ ہے۔

جوابِ ثانی:عند بمعن الی ہاور البیت سے مراد بیت اللہ بیت المقدس ہے۔

سوال:البيت مرادبية المقدس ليناعرف ك خلاف م؟

جواب: صیح یہ ہے کہ عندالاطلاق عرف میں بیت اللہ ہی مراد ہوتا ہے لیکن قرینہ کی وجہ سے یہاں خلاف

ل ياره ٢. سورة القره آيت ١١٨٣ مسلم شريف جامل٢٠٠

عرف برجمول ہے کیونکہ بھی کسی لفظ کو قرائن کی وجہ سے خلاف عرف پر بھی محمول کرلیا جاتا ہے۔

جواب ثالث: بیت سے مراد بیت اللہ ہی ہے صورت بیتی کہ بیت اللہ کے پاس بھی آپ اللہ رخ بیت اللہ کے اللہ رخ بیت اللہ کے المقدس کا کرتے تھے جس کی تفصیل شان نزول کے تحت گزر چکی ہے تو آیت کا معنی بیہ ہوا کہ جونمازیں بیت اللہ کے پاس پڑھی ہیں بیت المقدس کی طرف منہ کر کے ان کواللہ پاک ضا کع نہیں کریں گے تو جو بیت اللہ سے دوررہ کر یعنی مدید میں بیت المقدس کی طرف منہ کر کے پڑھیں ان کو کیسے تبول نہیں کریں گے؟

اس باب کے متعلق چند بحثیں

البحث الاول: سستویل کتنے ماہ بعد ہوئی؟ اس بارے میں چارروایتیں ہیں۔(۱)۲۱ماہ(۲)کاماہ (۳)۸اماہ (۳)۸اماہ (۳)۸اماہ (۳)وفی روایت بلاشک ہے مند بزاز وطبر انی میں کاماہ کی روایت بلاشک ہے مند بزاز وطبر انی میں کاماہ کی روایت بلاشک ہے اور بخاری شریف میں ۲ایا کاماہ شک کے ساتھ ہیں۔

تطبیق: آنخضرت علی ۱۲ اربیج الاول کومدینه منوره تشریف لے گئے اورا گلبسال نصف رجب میں تحویل ہوئی جنہوں نے جبر کسر ہوئی جنہوں نے جنہوں نے جبر کسر کیا انہوں نے حذف کسر کیا انہوں نے جبر کسر کیا انہوں نے ۱۸ ماہ کہد دیا اور ابوداؤد کی روایت مقابل نہیں ہو سکتی سے اور ۱۸ ماہ والی روایت کے مطابق کہد سکتے میں کتھویل قبل قبل میں ہوئی ہے۔

البحث الثانى: آپ كااول قبله كياتها اورآپ عليه كي كم مرمه مين كس طرف منه كرك نماز پر هت سے ميختين اس بات پر بنی ہے كمآب عليه في ابنا قبله وى سے معين كيايا عرف سے۔

تحقیق اول: محققین کی رائے بیہ کہ وقی سے متعین کیا جب مکمرمہ میں تھے تو وقی سے حکم تھا کہ بیت اللہ کی طرف منہ کرو ۱ ایا اے ماہ کے بعد تحویل قبلہ کی وحی آئی۔ طرف منہ کرو ۱ ایا اے ماہ کے بعد تحویل قبلہ کی وحی آئی۔ الشکال:اس صورت میں نئے مرتبی نازم آئے گاجس کے بعض حضرات قائل نہیں؟

البحث الثالث: تویل قبله کے بعد سب سے پہلی نماز کون ی ہے؟ اس بحث کا تعلق مدیث کے ان الفاظ سے ہے (روان صلی اول صلوة صلاها صلوة العصر)) اس میں دو تحقیقیں ہیں۔

نزل على اجداده اوقال اخواله: اجداداوراخوالكامصداق ايك بي المناسيال

راكعون: ركوع من تع يام اديب كماز برهدب تعد

فمو على مسجد: من عندالبعض بوسلم مرادين س بهار ئزديك رازجيه بنوحادث مرادين-المبحث الوابع: مسهوال: جب بيت المقدل كاقبله موناقطعى تفاتو كس بنا پرايك آدى كے كہنے پر سحابہ كرام نے قبلہ كوتبديل كرليا حالا تكہ تم قطعی خرواحدے منسوخ نہيں ہوتا؟

جواب اول: علامه ابن جرِّ في شرح نخبه من ايك اصول قائم كيا به كه اگر خبر واحد محتف بالقر انن موتو يقين كافائده ديتى به چونكه حضور نبي كريم اللطيطة اور صحابه كرام مين اس بات كاچر جاتها كه قبله بدلنے والا ب آپ اللطيطة دعائيں كرد بے تقاق جب انہوں نے سنا تو يقين كرليا۔

جواب ثانی:دوسراجواب، دوسرے اصول کا سمجھ لینا ہے خبرواحدیا جس حدیث کوامت تلقی بالقبول کرلے اوراستدلال کرے تو وہ حدیث فی درجة المشہور ہوجاتی ہے لہذا آپ کا بیکہنا کہ تحویل قبلہ خبرواحدہ ہے درست نہیں۔

اوراستدلال کرے تو وہ صدیث فی درجة المشہور ہوجاتی ہے لہذا آپ کا بیکهنا کرتو یل قبلہ خبر واحدے ہے درست نہیں۔ واهل الکتاب:اس کا عطف المیھود پرے۔اس سے مراد نصاری ہیں ا

سوال: نصارى كا قبله بيت المقدى تونيين بوه تويت اللحم ب محران كى بيت المقدى كو پندكرنى كى كيا وجه بي جب كه مديث ين قداعجبهم كالفاظ بين _

جواب اول: دونون کی جهت ایک هی اس لئے پند تمار

الخيرالساري

جواب ثانی:اس لیے کدونوں الل کتاب تھے جیہا کہ ﴿ غُلِبَتِ الرُّوْم ﴾ میں مشرکوں کوختی ہوئی۔ فلم نلومانقول فیھم: سوال: اور بھی بہت سارے احکام منسوخ ہوئے جیسے کلام فی الصلو قویگر احکام کاکی کوخوف نہ ہوا مثلا جو کلام فی الصلو آکرتے فوت ہوگئے ان کی نمازوں کا کیا ہے گالیکن تحویل قبلہ کے بعد پہلوں کی نماز کا اتنا خوف کیوکر ہوا؟

جواب اول:دومقام میں صحابہ کرام کوفکر لائق ہوئی ایٹی بلی تبلہ کے موقع پر ۲ تحریم خمر کے موقع پر جب اوب اس کی سیے کہ یددونوں مواقع ایسے ہیں کہ ان میں صحابہ کرام شہد ملی تھم کے منتظر تھے شراب کے بارے میں قطعی تھم کا انتظار تھا اور تحویل قبلہ میں محل ہے۔ جب ننخ ہوگیا تو ان کومعلوم ہوا کہ اصل تھم یہی تھا اب جوفوت ہو چکے ہیں ان کا کیا ہے گا۔

جواب ثانی: يهودكوتويل قبله رغم مواكونكه قبله اول ان كا قبله تعاتوانهول في يرز دو دالا اور صحابه كرام مم

وَ مَا كَانَ اللهُ لِيُضِيعُ إِيْمَا نَكُمُ:سوال: الآيت يصوال اجواب كير بوكيا؟ موال توية قا كرجوم كان كانماذول كاكياب كا؟

جواب: یہ کرزندوں نے بھی توان کے ساتھ نمازیں پڑھی تھیں تو جب زندوں کی ٹھیک ہوگئیں تو مردوں کی جو اب استعمار کی بھی ٹھیک ہوگئیں تو مردوں کے۔

انه مات على القبلة قبل ان تحول رجال وقتلوا:....سوال: كياتحويل تبله على الله على القبلة قبل ان تحول رجال وقتلوا: الله على الله عل

جواب اول: علامه ابن جرّ نے جواب دیا ہے کہ آل کاذکر صرف روایت زہیر میں ہے اور کی جگہ نہیں ملاکہ کوئی مسلمان تح بل قبل کہ کوئی مسلمان تح بل قبلہ سے پہلے آل ہوا یک کوئلہ عدم ذکر سے عدم وجودلا زم نہیں آتا لیکن پیرجواب درست نہیں۔ جو اب ثانی: قبل کے لیے ضروری نہیں کہ لڑائی میں بی آل ہوا ہو بلکہ ظلماً بھی مراد ہوسکتا ہے۔

جواب ثالث: يريان شرف موت بن كديان واقعد

ل فیض البادی جا ص ۱۳۹۰ ع ایسنا

(۳۱) راب حسن اسلام المرء بياب اسلام كى خوبى كے بيان يس ہے

قال مالک اخبرنی زید بن اسلم ان عطاء بن یسار اخبره ان ابا سعید المخدری اخبره اما کل نے کہا مجھ کوزید بن اسلم نے خبردی ان کوعطاء بن یبار نے خبردی ان کو ایوسعید خدری نے خبردی ان که اسلامه انعه سمع دسول الله علی نے تھے جب کوئی بنده مسلمان ہوجائے پس اچھا ہوا اس کا اسلام تو المحفول الله عنه کل سیئة کان زلفها و کان بعد ذلک القصاص یکفر الله عنه کل سیئة کان زلفها و کان بعد ذلک القصاص الله اسکا برایک گناه اتاردے گا جووہ (اسلام سے پہلے) کرچکا تھا، اور اس کے بعد جب حماب شروع ہوگا الحسنة بعشر امثالهاالی سبع مائة ضعف و السیئة بمثلها الک سبع مائة ضعف و السیئة بمثلها الک تنجاو زالله عنها الان یتجاو زالله عنها

مرجب التداسي معاف كردي

000000

وتحقيق وتشريح،

ترجمة الباب كى غوض:اس سے بحى مقعود اسلام كے درجات كوابت كرنا ہے۔ احسن اللہ على عرض دودر جات كوابت مو كئے۔

فحسن اسلامه: ظاہر وباطن میں اسلام ہواور ان معاصی کا ارتکاب ترکردے جن کو اسلام سے پہلے کرتا تھا ا زلفها: جو میلے کیے۔

الى سبع مائة ضعف: الساساسام كدرجات معلوم بوك

الاان یتجاوز الله عنها: یبال سے معتر لداورخوارج کی روہوگی اور اہل سنت کا ندہب ٹابت ہوگیا۔ سوال:ام بخاریؒ نے ابوسعید خدریؒ کی روایات میں اس قطعہ عبارت کو ذکر کیوں نہیں کیا جودیگر بعض روایات میں ہے۔جس کا مفہوم ہیہے کہ کا فرجب اچھی طرح مسلمان ہوجائے تو کفروشرک کے زمانہ میں کی ہوئی تمام نیکیاں لکھودی جاتی ہیں؟

جواب اول:قال البعض هذه القطعة كانت خلافا لامورمسلمة في الدين فلذا توكع اورامورمسلم في الدين فلذا توكع اورامورمسلم في الدين بيب كونكركن حديث كوك مسئله اورامورمسلم في الدين بيب كونكركن حديث كوك مسئله كخطاف هوني كل وجرب في الله كافرول كوثواب كانه جلي المسلم كالمحديث كوبيان كركاس كي توجيد كي جائي جائي جمين تسليم كرت كه كافرول كوثواب كانه ملئا امورمسلم ي جهد بلك كافرون في جوئي في جاس كواس پرثواب ملتا بها كرثواب نه طوتو بيد ملك كافرون في جوئي اورعذاب بين تخفيف جوگ داس كي دودليل بين حليل اول مسلم شريف مين ميم من من ورنافع جوئي اورعذاب مين تخفيف جوگ داس كي دودليل بين كي كم من الملك المن الكواب طي كافراكر دنيا مين مي كي كام كرت تقويد كونك كي ميان كرت مين بي مي المي كافراكر دنيا مين في كرت تواس كاثواب المودنيا مين بي مي الكواب على مالسلفت من حيور) على من الكونك في الكونك في الكونك الكونك كي جوتيال بيبنائي جائيل جس دن الكونك مي الكونك كونك كونك الكونك مين ويكونك الكونك جس ون الكونك كونك مين الكونك الكونك

باقلت والعرادمن احسان الأسلام عندی ان پسلم قلبه ویتضمن اسلامه التوبة عمافعل فی الکفرفلم یعدبعدالاسلام الیهافهذاالذی غفرله ذنبه:فیض البادی ج است ۱۳۵ ، ۱۳۱ ع فیض البازی چا ص۱۳۵ فیض الباری چا ص۱۳۳۱ سلم شریف ص۱۱ چاهے سپرت مسطفیٰ کا پرملوی س۱۲ ج۲ کمتیریجائی لابور جیجو آبِ ثانی: حضرت انورشاہ صاحب فرماتے ہیں کہ مسدلین کو بھی مغالطدلگا ہے اور شراح مجیبین کو بھی کیونکہ حیات فاردوقتم پر ہیں ا۔۔۔۔۔ازقبیلِ صلد حی جیسے صدقہ ،اعماق، رخم علی المخلوق وغیرہ ۲۔۔۔۔۔ازقبیلِ عبادات کافرکوعبادت کا کوئی ثو اب ملے گاکافرکی تو نیت کافرکوعبادت کر بے تو ثو اب ملے گاکافرکی تو نیت بی نہیں ہے۔ چنا نچے حضرت انورشاہ صاحب نے یہ جواب دیا ہے کہ بیروایت متعدد صحابہ کرام ہے مردی ہے اور اس جملہ کوفل کرنے والے بھی صرف حضرت ابوسعید خدری سے قال کرتے تھے اور ان کے بھی بعض طرق میں ہے اور بعض میں نہیں تو چونکہ اس جملہ کامر تبہ شرائط بخاری سے کم تھا اس لیے اس کوذکر نہیں کیا۔

قال مالك:سوال: قال كيون كبااخبرنا اور حدثنا كيون نبيس كها؟

جو اب: یعلی ہے امام بخاریؒ کا استاد نہیں ہے بیر حدیث امام مالکؒ کی ہے اور دار قطنی نے اپنی کتاب ''غرائب مالک''میں بیر حدیث درج فرمائی ہے۔

(۳۲) پاب احب الدین الی الله عزو جل ادومه الله کوده عمل بهت پندہے جو ہمیشہ کیا جائے

وتشريح وتشريح

توجمة الباب كى غوض: أول: دين سراد عمل بخارى كامقعدية ابت كرنا به كه الايمان يزيدو بنقص دين كرنا به كه الايمان يزيدو بنقص دين كدوورج بين اراحب ٢ فيراحب اس ايمان كايزيدو بنقص بونا ثابت بوار ثانى: دين سراعمل بهاس من ابت كياكه دين كالفظ اعمال يرجمي بولا جاتا بها بذااعمال دين كاجزء بين ايك اور حديث مين من (خير الاعمال الى الله ما ديم عليه))

لایمل الله حتی تملو ا: ملال رنجیده فاطر بونا ملال استحکان کو کہتے ہیں جو مشقت کرنے کے بعد احق بوتی ہوتی ہے ا

سوال: الله تعالى تو نفسيات سے ياك بين اور ملال رنجيده خاطر مونا نفسيات كى شان سے ہے؟

جواب:مشاکلت کے طور پرکہائ اللہ تعالی کے ملول ہونے کا مطلب یہ ہے کہ تواب منقطع کردیتے ہیں جیسے ﴿ جَزَآءُ سَیّنَةِ سَیّة مِنْلُهَا ﴾ اور ﴿ يَخَادِعُونَ الله ﴾ تو قائل اور فاعل کے بدلنے سے فعل کی حقیقت بدل جاتی ہے جیسے دھت بندہ کی صفت ہوتو رقت قلب مرادہ وتی ہے خدا تعالی کی طرف منسوب ہوتو جودوا حسان کے معنی میں ہوتی ہے۔ ماداوم علیه صاحبه: تھوڑا ممل دوام کے ساتھ اللہ پاکوزیادہ پندیدہ ہے بنسبت اس زیادہ ممل کے ماداوم علیه صاحبه:

جس میں دوام نہ ہو۔ دوام عمل کی وجوہ احبیت (زیادہ پندیدہ ہونے کی دجوہات) محدثین نے متعدد بیان کی ہیں۔

الاول: قليل عمل دوام كي ساته كثير موجاتا بينسبت اس كثير كيجس يردوام ندهوً

الثانى:امام غزالی کھتے ہیں كەقطرہ قطرہ اگر پھر پرگرتار ہے تو سوراخ كرديتا ہے اورايك مرتبة اگرسلاب بھی گزرجائے تو كچنہيں ہوتا ہے معلوم ہوا كە دوام عمل میں تا ثیر بھی ہے۔

الثالث: دوام عمل استطاعت كے مطابق ہوتا ہے تو نشاط ہوتا ہے تو تو اب بھی ماتا ہے۔

ر ابع:عزم عملِ دوام عمل سے بوتا ہے جوآج بہت زیادہ کرتا ہے وہ کل کوکرنے کاعزم نہیں رکھتا۔

الحامس:وائى عمل بورى زندگى كى خدمت كى طرح بے جاہے تھوڑى ہو۔

السمادس: دوام عمل کی مثال روزانه ملاقات کی طرح ہے کثرت عمل بلا دوام کی مثال ایسے ہے کہ ایک مرتبہ دن رات بیٹھے رہے بھر دونوں ایک دوسرے سے بیزار ہوگئے۔

السابع: كثرت مين توغل موتاب اور حضور علي في في افراط منع فرمايا بـ

الشاهن: بعض اوقات كثرت عمل سے طبیعت میں انقباض ہوجا تا ہے بینی بسا اوقات آ دمی جس عمل كوكثرت سے كرتا اس سے طبیعت منقبض ہوجاتی ہے۔

خلاصه: دوام عمل سے محبت برهتی ہے۔

ا در زیناری س ۲۶۰ س فیفس الباری جا ص ۱۳۱ ، درس بخاری می ۲۷۰ س باره ۲۵ سوره شوری آیت ۳۰ سیاره اسورة بقر و آیت ه

سس) (سس) في المان و نقصانه المان كريون المان كريون المان كريون المان عن المان عن المان عن المان عن المان عن المان كريون كريون المان كريون

00000

(۲۲) حدثنا مسلم بن ابراهیم قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة عن انس الم بیان کیامسلم بن ابراهیم قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة عن انس الم بیان کیامسلم بن ابراهیم نے بیان کیامشام نے کہا الم سے بیان کیامشام نے بیان کیامشام نے انس عن النبی علاق الله المالله ا

ل الكر: ٢١٠٦ ، ٢٥١٥ ، ١٣٥٠ ، ٢٣٠ ، ٢٥٠٩ ، ١٥٥٠ ، ٢١٥١ (بياماديث كربر بي صفحات كريس)

\$\$\$

(٣٣) حدثنا الحسن بن الصباح سمع جعفر بن عون حدثنا ابوالعميس اخبرنا ہم سے بیان کیا حسن بن صباح نے انھول نے جعفر بن عون سے سنا کہا ہم سے بیان کیا ابومیس نے کہا ہم کوخبردی مسلم عن طارق بن شهاب عن عمر بن الخطاب نیس بن مسلمؓ نے انھوں نے طارق ابن شہابؓ سے انھوںنے عمرابن خطاب "سے کہا کہ ان رجلا من اليهود قال له يااميرالمومنين اية في كتابكم تقرء ونها ایک یہودی آ دمی نے ان سے کہا،اے امیرالمونین جمہاری کتاب(قر آ ن) میں ایک آیت ہے جس کوتم پڑھتے رہتے ہو لوعلينا معشر اليهود نزلت لا تخذنا ذلك اليوم عيدا، قال اى اية ؟ اگروه آیت ہم یہودلوگوں پراتر تی تو ہم اس دن کورجن وروز ہے اور کا دن محمر الیتے ،انھوں نے پوچھاوہ کون سی آیت ہے؟ قَالَ (ٱلْيَوْمَ ٱكْمَلُتُ لَكُمُ دِيْنَكُمُ وَٱتُمَمُتُ عَلَيْكُمُ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمُ ٱلْإِسُلامَ دِيْناً اس نے کہاریآ یت (آج میں نے تمہارے لئے تمہارادین پورا کیااورا پنااحسان تم پرتمام کردیااوراسلام کادین تمہارے لئے پیند کیا) قال عمرٌ قد عرفنا ذلك اليوم والمكان الذي يزلت فيه على النبي عُلَيْكُمْ حضرت عمرٌ نے کہا ہم ایں دن کو جانتے ہیں اوراس جگہ کو بھی جس میں یہ آیت آنحضرت علیہ میں اتری تھی وهو قائم بعرفة يوم جمعة. (انظر: ٢٠٨٨ ، ٢٠٠٨) ٢٢١٨) وہ جمعہ کا دن تھا جب آپ آیا تھے۔

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض: وفي البرجمة الباب دواضح بـ

فاذاتر ك شياء: يهال سام بخاريُّ أيك شبه كاجواب در به بي كدامام بخاريٌّ في دليل ترجمة الباب مين ونقصانه كا بهي ذكر الباب مين ونقصانه كا بهي ذكر الباب مين ونقصانه كا بهي ذكر مين حيو شبه كواس طريقه سي ذائل كيا كه جب بحم كمال كوچموز كا تو نقصان ثابت بهوجائيگا-

من ایمان مکان من خیر:سوال: باب تفاضل اهل الایمان فی الاعمال میں حضرت ابوسعید خدری کی روایت نقل کی روایت نقل کی حالاتک بظاہراس کے برعکس میں مطابقت زیادہ

ہے کیونکہ حضرت انس کی روایت کے اندر من خیر کالفظ ہے جس سے مرادا کال ہیں جبکہ ترجمۃ الباب کے اندر زیادہ الایمان و نقصانه کی صراحت ہے اور ابوسعید خدر گا کی جوکہ باب تفاضل اهل الایمان فی الاعمال کے تحت درج ہے اس میں من الایمان کی صراحت ہے۔ لہذا معاملہ اس کے برعس ہونا چاہیے تھا کہ حضرت انس کی روایت کو تفاضل اهل الایمان کے تحت درج کردیتے اور حضرت ابوسعید خدر گا کی روایت کو اس باب میں درج کرتے ۔ حضرت انس کی روایت میں من خیر اصل ہے اور متا لع میں من ایمان ہے جبکہ حضرت ابوسعید خدر گا کی روایت کے اندراس کے برعس ہے۔

جواب اول:امام بخاری صرف الفاظ مدیث بی کونمین دیکھتے بلکسیاق وسباق پربھی نظرر کھتے ہیں روایت ابوسعید خدری میں اصل اعمال کاذکر کم ہے اس کود ہاں ذکر کیا اور حضرت انس کی روایت میں اعمال کاذکر کم ہے ایمان کاذکر زیادہ ہے تو حدیث انس کا اصل موضوع ایمان ہے اس لیے یہاں ذکر کیا۔

جوابِ ثانى: حديث ابوسعيد خدري ميل جن اعمال كاذكر بوه اجزاء ايمان بين اور حديث انس مين جن اعمال كاذكر بوه اجزاء ايمان بين - اعمال كاذكر بوه مرات ايمان بين -

مسوال ثانى: يهال پرمن ايمان كواصل روايت كطور پرلانا چاہي تھا كيونكه ترجمة الباب ميں ايمان كا ذكر ہے اور باب تفاضل اهل الايمان فى الاعمال ميں من حير والى روايت جس كوبطريق متابعت ذكر كيا ہے اس كواصل كے طور يرذكركرنا چاہئے تھا؟

جواب:امام بخاريٌ من خير والى روايت كومتابعت من ذكركر كے باب تفاضل اهل الايمان من اور من ايمان والى روايت كومتابعت من الاكر مفطّل بنانا جائے ؛ ن تاكمتاكيد موجائے۔

من قال لااله الاالله :موال: اس سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ سرف کلم توحید بنی ہے ، کلم رسالت ضروری نہیں ہے؟

جواب اول: یہاں پر مقصود ساری امم کے مونین کی نجات کاذکرکرتا ہے ساری امم کے مومنوں کی نجات کے لیے جزء مشترک بلااللہ الا اللہ ہے جزء مشترک کے بیان سے بدلازم نہیں آتا کہ دسالت ضروری نہیں۔ جو اب ثانی: بسااوقات کسی چیز کا ایک عنوان اور لقب مقرر ہوجاتا ہے تواس ساری شکی کو اسی عنوان اور لقب سے ذکر کیاجاتا ہے جیسے کہتے ہیں الجمد للہ ، قل طواللہ ، تولا الدالا اللہ بطور عنوان اور لقب کے ہے۔ جو اب ثالث یاک پر ایمان لانار سالت پر ایمان لانے کومسترم ہے تو رسالت پر ایمان استار ال

مقصود ہے كيونك لااله الله كو بتانے والےرسول ياك بين قرسول برايمان بوگاتو لااله الاالله برجى ايمان بوگا۔

ان رجلا من اليهود: كت بين كربل كعب احبار تصابحي مسلمان بين به عنظ الله و اكمملت لكم دينكم: زيادتى ونقصان ثابت بواتو ترجمة الباب سيمطابقت بوئى علا المتحذنا ذلك اليوم عيدا: سسوال: يبودى كت بين كه بم عيد بنالية اور حفرت عرض كت بين كه بمين معلوم به كرب نازل بوئى اوركهان نازل بوئى تو سوال يه به كده خفرت عرض في عيد بنانات ليم كياب يانبين؟ محواب اول: تشليم كياب كربم في يوم جمعه اوريوم وفي كوعيد بناركها بي جيسا كدوسرى روايت سي ثابت به جواب اول: حضرت عرض في عيد بنانات ليم بين كيا كربم الني مرضى سي عيد بين بنات بلكه بمار في توقيد في المنافية في المنافية بلكه بمار في توقيد في المنافية بين كيا كربم الني مرضى سي عيد بين بنات بلكه بمار في المنافية في المنافية بين مرضى سي عيد بين بنات بلكه بمار في المنافية في المنافية بين مرضى سي عيد بين بنات بلكه بمار في المنافية بين مرضى سي عيد بين بنايا بمارى كوبنات بين من المنافية بين مرضى سي عيد بين بنايا بمارى كوبنات بين المنافية بين المنافية بين مرضى سي عيد بين بنايا بمارى كوبنات بين المنافية بين مرضى سي عيد بين بنايا بمارى كوبنات بين من المنافية بين مرضى سي عيد بين بنايا بمارى كوبنات بين المنافية بينافية بين المنافية بينافية بين المنافية بينافية بين المنافية بين المنافية بينافية بين المنافية بين المنافية بين المنافية بين المنافية بين المنافية بينافية بين المنافية بينافية بينافي

(۳۳)

﴿باب الزكوة من الاسلام

زكوة دينا اسلام مين داخل ہے



(۳۳) حدثنااسمعیل قال حدثنی مالک بن انس عن عمه ابی سهیل بن مالک می سهیل بن مالک می سهیل بن مالک می سیال نی بیان کیا، انصول نے بیان کیا ابو بہیل بن مالک عن ابیه انه سمع طلحة بن عبیدالله یقول انصول نے اپنے باپ (مالک بن ابوعام ") سے، انصول نے طلح بن عبیداللہ سے، وہ کہتے تھے

ا فيض الباري ج الص ١٣٤٠ ع نزلت الاية في حجة الوداع في يوم عرفة في عرفات لتاسع من ذي الحجة فيض الباري ج الص ١٣٥

جاء رجل الى رسول الله على الل نجدوالوں میں سے ایک مخص آنخضرت اللہ کے پاس آیا اسر پریشان دین عبل ترے ہے ہم بھن بھن اسکی آواز سنتے تھے يقول حتى دنا فاذا هو يسأل عن الاسلام اوراسکی بات سمجھ میں نہیں آتی تھی یہاں تک کہ وہ نزدیک آپہنچا،جب (معلوم ہوا) کہ وہ اسلام کا پوچھ رہاہے فقال رسول الله عُلِيليه خمس صلوات في اليوم والليلة فقال هل عليَّ غيرها آتخضرت الله في في السلام، دن رات ميں پانچ نمازيں برهنا ہے، اس نے کہااس کے سواتو اورکوئی نماز مجھ برنہيں؟ الا ان تطوع ،قال رسول الله عَلَيْكُ وصيام رمضان قال فر مایانہیں! مگریہ کہ تو نفل پڑھے(تواور ہات ہے) آنخضرت علیہ نے فرمایا اور رمضان کے روزے رکھنا قال هل على غيره؟قال لا،الا ان تطوّع، قال وذكرله رسول اللهُمَالِكُ الزكواة اس نے کہااورتو کوئی رزوہ مجھ برنہیں؟ فرماینہیں! مگریتونفلی روزے رکھے طلح انے کہااوررسول التعلیق نے اس سے زکوۃ کابیان کیا هل عليٌ غيرها قال لا الا ان تطوع، قال قال وہ کہنے لگا،بس اورتو کوئی مجھ پزہیں؟ آپ آلینے نے فر مایانہیں! مگرنفل صدقہ دو(تو اور بات ہے)۔راوی نے کہا کہ فادبرالرجل وهويقول والله لاازيد على هذا ولاانقص،قال رسول الله عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ ا وہ تحص پیٹے مور کرید کہتا ہوا کہ خدا کی قتم میں نہ اس سے بڑھاؤں گا نہ گھٹاؤں گا، آنخضرت علیہ نے فرمایا افلح ان صدق ي اگرييچا ہے تواپی مراد کو پہنچ گيا۔

وتحقيق وتشريح

حدیث کی سندمیں پانچ راوی ہیں پانچویں طلحہ بن عبیداللہ رضی اللہ تعالی عنہ ہیں، یعشرہ میں سے ہیں۔ان کی کل مرویات ۸۸ ہیں، جنگ جمل میں شہید ہوئے، آخری آ رام گاہ بھرہ (عراق) میں ہے ع

ا انظر: ۱۸۹۱ ، ۲۷۵۸ ، ۲۹۵۲ رقومالا حادیث بخاری مطبوعه دارالسلام الریاض کی ترشیب پر بین . ۲ عمدة القاری جا ص ۲۲۵

و ذلک دین القیمه: یکل استدلال بی اشیاء مذکورة فی الأیه دین متقیم بوتر معلوم مواکدز کوة دین جاور آن میں بی وائدین عِنْدَ اللهِ الْاِسُلام پر البنداز کوة اسلام میں سے مولی۔ سوال: آیت رحمۃ الباب میں ہے کدر کوة اسلام سے ہاور آیت الباب کے اندرز کوة کودین کہا گیا ہے؟

جواب:الله پاک کنزدیک جودین معتر بوه صرف اسلام بلنداز کو قاسلام سے ہوئی۔ جآء رجل:رجل کا نام ضام بن تعلبہ ہے اور بعض نے کہا ہے کہ ضام بن تعلبه والا واقعه اور ہے اور بیا اور ہے۔ من فجد: نجد اونچی جگہ کو کہتے ہیں اس کے مقابلہ میں تہامہ ہے تہامہ پست علاقہ کو کہتے ہیں اور ان دونوں کے درمیان حجاز کا علاقہ ہے۔

دَوِ يَّ صَوْتِه: اس كي آواز كي جنبه منابث بشهد كي تهيول كي طرح كي آواز كودَوِي كتب أي ___

سوال: يه واز كيول كرتا آر باتها؟

جواب او ل: پیرعت سیری آ وازهی ـ

جوابِ ثانی: مسافرتهائی میں سفر کرتے ہوئے کچھ گنگنا تار ہتا ہے توبیا پنی زبان میں کچھ گنگنار ہاتھا۔

جواب ثالث: جوبات الوچفى كلى اسد مراتا مواآر باتها ـ

جو ابِ رابع: یایددور بی سے او نجی آواز دے رہاتھا لیکن دوری کی وجہ سے کھیوں کی بھنھنا ہٹ کی طرح محسوس ہور ہی تھی۔

ثائر الرأس: بهر بالون والا، اس معلوم بواكه طالب علم كوبن طن كرنيين ربنا عاليئ - خمس صلوات في اليوم واليلة: سوال اول: آپ الله في جواب مين شهادتين كاذكر كون نبين كيا؟

جواب اول: شهادتین کاجواب دیالیکن طلحہ نے سنانہیں۔

جوابُ ثانی:شهرت کی وجه نے قل کرنے کی ضرورت نہیں مجھی کیونکہ وہ مسلمان تھا۔

سوال ثاني: جواب شرائع اسلام كے بارے ميں ہے جبكہ سوال اسلام كے بارے ميں ہے؟

جو اب : سوال ہی شرائع اسلام کے بارے میں ہے کیونکہ آپ علیہ اس کے سوال کوزیادہ سجھتے ہیں۔ بعض روایات میں صراحت ہے میسئل عن شرائع السلام.

ا عُدة التّارَكُ نَّا السَّلِمَةُ وَفِي فَيضِ الباري واعلم ان قصة هذا الرجل تشبه بقصة ضمام بن ثعلبة فاختلفوافي انهاو اقعتان اور اقعة واحدة واتي ضمام في سنة الخامسة فاعلمه: ج الصِّها اللهِ الاان تطوع: دوم مسلول میں جمہور گاا حناف سے اختلاف ہے اور یہ جملہ احناف کے خلاف جمہور کا مسلل ہو مسئلہ او لی : ان النوافل تلزم بالشروع عندالاحناف ، بخلاف الجمهور لان عندهم لا تلزم دلائل احناف :ا قرآن پاک میں ہے ﴿ وَ لَا تُبُطِلُوا اَعُمَالَكُمُ ﴾ اعمال کو باطل کرنے سے نہی وارد مولی ہوئی ہے اور ضابطہ ہے کہ النهی عن المسنی امر بخلافہ اور دوسر اضابطہ ہے الامر للوجوب. ان دونوں ضابطوں کو طانے سے بینتی ماصل ہوا کہ اعمال کو پوراکرنا واجب ہے۔

۲ ﴿ اِللَّهُ اللَّذِينَ آمَنُوا اَوْفُوا بِالْعُقُودِ ﴾ ت عقداورعبدایک قولی موتا ہے اور ایک فعلی قولی جیسے کوئی منت مان لے علَی دکھتان اور علی صوم فعلی حیسے کسی کام کی نیت کرے شروع کردے تو یہ عبد فعلی ہے جس طرح تولی ناز رکا پورا کرنا بھی ضروری ہے۔ تولی نذرکا پورا کرنا بھی ضروری ہے۔

سروزےاور حج میں جمہور بھی اسکے قائل ہیں کہ شروع کرنے سے واجب ہوجاتے ہیں۔

دليل جمهور :الاان تطوع مين استناء منقطع مان كروليل بنات بين-

جواب: احناف كت بين كهاصل استثناء مين متصل مونا به متصل مانن كي صورت مين سيحنفيه كي دليل بن

جاتی ہےاورتر جمہ یوں ہوگامگریہ کہ تونفل شروع کردیتو وہ بھی شروع کرنے سے واجب ہوجاتے ہیں۔

مسئله ثانيه: احناف يكزر يك وترواجب بي عندالجمهو رواجب نبيل

دليل جمهور: يهى جمله استناء مقطع مان كردليل بنى بـ

جواب اول: يوجوب ورس يهلي كاواقعب

جواب ثانى: تطوع سے مرادعام ہے كه فرض نه موتواس ميں واجب بھى آ گئے۔

جو ابِ ثالث: وتروں کی نفی ہی نہیں ہوئی کیونکہ وہ عشاء کی نماز میں آگئے اس لیے کہ وتر عشاء کے تابع ہیں جب حضور اللہ نہیں خصور اللہ نہیں اللہ کی تعلیم کے تابع میں جب حضور اللہ نہیں سلوات کا ذکر فرمایا تو اس کے تو ابع واجبات اور سنن وغیرہ بھی تو ذکر کئے ہوں گے تو نماز عشاء میں وتر بھی بتلائے ہوں گے۔

جواب رابع: انو کھا جواب ہے کہ بحث یہاں چھٹرنا ہی غیر مناسب ہے کیونکہ نومسلم کواحکام آ ہتہ آ ہتہ بتاائے جاتے ہیں۔

جو ابِ حامس:الاان تطوع کاذکرصیام رمضان اورصدقد فطرکے بارے میں بھی آتا ہے اورصدقہ فطر کے بارے میں بھی آتا ہے اورصدقہ فطر بالا جماع واجب ہے واجب ہیں۔

مسوال: آپ نے کہا کہ متنیٰ متصل ہے تو نقل تو شروع کرنے سے واجب ہوتے ہیں فرض تو نہیں ہوتے جبکہ دوسری نمازیں فرض ہیں تو استثناء متصل تو نہ ہوا؟

جواب: اتحادِ جنس باعتبار عمل کے ہے کیونکہ واجب عمل کے لحاظ سے فرض ہے تونفل کا وجوب بالشروع فرضِ اعتقادی تونہیں ہے کیکن فرضِ عملی ہے۔

سوال: جب استناء منقطع بن سكتا باورسب بناتے بين توتم كيون بين بناتے بية تعصب عي؟

جواب:جباوردلائل سے بھی وجوب فل بالشروع کا ثبوت ہے تو تعصب پرمحمول نہیں کرنا جا ہیے بلکہ تائید پرمحمول کرنا جا ہیے۔

· ذكر له رسول الله عَلَيْكَ الله عَلَيْكَ الله عَلَيْكَ الله عَلَيْكَ الله الله عَلَيْكَ الله عَلَيْكُ الله عَلِيْكُ الله عَلَيْكُ الله عَلِيْكُ الله عَلَيْكُ الم

الاان تطوع:سوال: زكوة كى بارى مين جبهل على غيرها سے سوال كيا تو يہاں پرآپ نے الاان تطوع كر جمين شروع كرنے كے معنى كيون نيس ليے؟

جو اب:ای فعل میں امتداد نہیں ہے کیونکہ جب زکوۃ دے گاتو فعل پورا ہوجائے گااس میں امتداد نہیں کہ شروع کرےاور پھرابھی پورا کرنے سے پہلے درمیان میں چھوڑنے کی گنجائش ہو۔

لاازيدعلى هذا ولاانقص:اشكال: اسكامطلب توييهواكرزيادة كاعكم نازل بواتو بهي نبيس ان كار

جواب اول: مطلب بیرے کمن حیث الفرض زیادہ نہیں کروں گا اور کی بھی نہیں کروں گا۔

جوابِ ثانى:مبلغ تفاقوم كى طرف سے آیاتھا تو كہنے كامطلب يہوگا كماني طرف سے كھى وبيشى نہيں كروں گا۔

جوابِ ثالث: قائل نے لغوی معنی مراز نہیں گئے بلکہ بیعهد اطاعت سے کنامیہ ہے جیسے دوکان پرچیز

خریدنے جاتے ہیں تو کہتے ہیں کہ پچھ کی وبیشی نہیں ہوگی یعنی بات کی ہے۔اس سے آپ کو آیت کی تفسیر مجھ آجائے

گ ﴿ إِذَا جَآءَ اَجَلُهُمُ لَا يَسُتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَ لَا يَسْتَقُدِمُون ﴾ إمالانكماستقدام حال بي قرجواب يبي بي ك

یر محاورہ کے طور پر ہے اس کا ایک اور جواب یہ بھی ہے کہ ﴿ لا يَسْتَقُدِمُون ﴾ ، ﴿إِذَا جَآء ﴾ کے نیچ نہیں ہے جب

﴿إِذَا جَآءِ اَجَلُهُمُ ، لَا يَسُنَأُ حِرُونَ ﴾ كهانوسوال بواكه كياتقديم بهي نبيس بوسكق توفر ماياتقديم بهي نبيس بوسكتي

افلح ان صدق بعض روايات مين شرطنيس بوق بظاهر تعارض موا؟

جواب اول: فلاح کی دوشمیں ہیں۔

ا فلاح کامل ۲ فلاح مطلق ميشرط فلاح کامل تے اعتبار سے ہے۔

إبال يوس آيت ٢٧٩

جوابِ ثانی: دوحالتیں ہوتی ہیں ا۔ حالتِ موجودہ ۲۔ حالت مستقبلہ۔ حالت موجودہ کے لحاظ سے بالشرط ہوا۔ بالشرط ہے۔

سوال:ایک اورروایت ش افلح و ابیه ہے اور آپ آلیکے نے فرمایا ((من حلف بغیر اللہ فقد کفر و اشرک) نیز فرمایالا تحلفو ابابائکم . ع

ر جواب اول: يه واقعتل منوعيت وطف بغير الله كاب

جواب ثانی: عذف مفاف ہافلح ورب ابید قائل اورفاعل کے بدلنے سے کلام کی توجید بدل جاتی ہے۔ جواب ثالث: ایک شم لغوی ہے دوسری شم شری ہے۔ شم شری جس میں شم کا ارادہ بھی ہواورالفاظ بھی جبکہ قتم لغوی یاعرفی میں الفاظ توقتم کے ہوں ارادہ نہ ہواس کو یمین لغوبھی کہتے ہیں مختر جواب یہ ہے کہ یمین لغو پرمحمول ہے۔ جواب رابع: ہرجگہ واؤقتم کے لیے نہیں ہوتی لہذا یہاں واؤقمی نہیں ہے بلکہ استشہادیہ واشھد ابیہ نہ کہ اقسم ابیہ۔

(۳۵) ﴿باب اتباع المجنائز من الايمان ﴾ جنازے كساتھ جانا يمان ميں داخل ہے

ا (ترندی شریف جام ۱۸۰) بر بخاری شریف جهم ۹۸۳

عن محمد عن ابی هریرة عن النبی عَلَیْتُ نحوه ا انھوں نے محدان سیرین سے سنا، انھوں نے ابو ہریرہ سے ، انھوں نے آنخضرت عَلَیْتُ سے گزشتہ روایت کی طرح

المتحقيق وتشريح

توجمة الباب كى غوض: غرض بخارى يه به كداتا ع جنائز بهى ايمان كاشعبه -والمشى عندنا حلف الجنائز اولى لانه للتعظيم وعندالشافعى امامها اولى لانه للشفاعة ع ايمانا و احتسابا: ان پرتقرير گرز بكى به كه جنازه پرض كه كئنيت فالص بونى چائے -احلاص نيت پر ايك و اقعه: ايك بزرگ كا جنازه تفادوس بزرگ جناز ك لي كي الحالا مر جنازه مين شريك نهيس بوك پوچها گيا تو بتلايا كه نيت سيرهي نهيس تفي اور مين نيت سيرهي كرتار باس ليے جناز بهيں شريك نه بوسكا - بي غالبا علامدابن سيرين كا واقعه به -

مسئلہ مختلف فیہ: یہ کہ جنازہ ہے آگے چلنا چاہیے یا پیچھے۔من اتبع سے معلوم ہوا کہ پیچھے چانا چاہیے یا پیچھے۔من اتبع سے معلوم ہوا کہ پیچھے چلنا چاہیے۔ ای طرح الجنازة متبوعة سے بھی معلوم ہوا، جو کہ دوسری حدیث میں ہے، حنفید اس کے قائل ہیں، شوافع کے زدیک جنازے کے آگے چلنا چاہئے۔

(۳۹)
﴿ باب خوف المؤمن ان يحبط عمله وهو لايشعر ﴾
مومن كودُرنا عائي كركهين اسكمُل مث نه جائين اوراس كوخرنه هو

و انظر ۱۳۲۰ ، ۱۳۲۵ ، ع فیض الباری جا نسا^{۱۸}

ومایحذرمن الاصرار علی التقاتل والعصیان من غیر توبة لقول الله تعالی ای باب مین آپس کی از آنی اور گذاه پر اثرے دین اور توبه ندکرنے سے بھی ڈرایا گیا ہے ، کیونکہ اللہ تعالی نے فرمایا (وَلَمْ يُصِرُّ وُ اعَلَى مَافَعَلُو اوَهُمْ يَعُلَمُونَ)
اوروہ این (برے) کام پرجان ہو جھ کرنہیں اڑتے۔

(۲۲) حدثنامحمد بن عرعرہ قال حدثنا شعبہ عن زبید قال سألت اباوائل الله عن الله عن زبید قال سألت اباوائل الله عن الله عن الله الله الله الله عن الله عن

(۲۷) حد ثناقتیبة بن سعید حد ثنا اسمعیل بن جعفر عن حمید عن انس می سے بیان کیا تعیب بن سعید نی کیا تعیب بن سعید نی کیا تعیب بن بعش نے ، انھوں نے مید سے انھوں نے انس قال احبر نی عبادة بن الصامت ان رسول الله عالیہ خوج یخبر بلیلة القدر کہا بھی کو خردی عباده بن صامت نے کہ آن خضرت الله عالیہ دو بری میادہ بن صامت نے کہ آن خضرت الله عالیہ دو بری شامی نی میں المسلمین فقال انی خوجت لا خبر کم بلیلة القدر فتلاحی رجلان من المسلمین فقال انی خوجت لا خبر کم بلیلة القدر در بری بری بری بری میں دو مسلمان کر پرے، آپ نے فرمایا میں تو اس لیے باہر نکلا تھا کہ کم کو شب قدر براؤل والله تلاحی فلان و فلان فر فعت و عسی ان یکون خیرا لکم ، التمسوهافی السبع و الله تلاحی فلان و فلان فر فعت و عسی ان یکون خیرا لکم ، التمسوهافی السبع و التسع و الخمس ع

انتیس اور بچیس رمضان کی را توں میں تلاش کرو۔

النُّظر: ٦٠٢٠، ٢٥٠١ اخرجه مسلم في الايمان والترمذي في البر والنسائي في المحاربة ٢٠ إلُّظر: ٢٠٢٩ ، ٢٠٣٩

وتحقيق وتشريح

ر بط: يبال سامام بخاريُّ ايمان كوبيان كرد ب بير اس سے پہلے زياده ترمكملات ايمان كابيان تعالى كويا اس باب كاتعلق كفردون كفراورظلم دون ظلم سے ہے۔

توجمة الباب كى غوض: سسام بخارىً كى غرض اس معرجه كى رد بي جوكه ال بات ك قائل بين كم معصيت ايمان كى ساتھ نقصان دونہيں ہے جيسا كه كفر كے ساتھ نيكى فائده مندنہيں ہے۔ تو ترجمه كا مقصديد بواكم معصيت ، ايمان كے ساتھ نقصان دہ ہے۔

وهو لايشعر:اى جمله كى دوتفيرين بين _

ا: الطرف اشاره ہے کہ بسااوقات انسان کو پیتہ بھی نہیں ہوتا کہ مجھے سے گناہ ہوا ہے۔

۲: گناہ کا توعلم ہے لیکن یہ معلوم نہیں کہ اس گناہ سے میر اایمان باقی رہے گایا چلا جائے گا۔ (بعض اوقات انسان کوئی عمل اللہ تعالی کی رضاہی کے لئے کرتا ہے لیکن اس میں کوئی ایسا نفسانی امر شامل ہوجاتا ہے جوثو اب سے محروم کردیتا ہے اور انسان کو یہ بھی نہیں چلتا۔

مسئلہ: وهو لایشعراس سے علاء کرام نے علم الکلام کا مسئلہ ستنبط کیا ہے کہ بے شعوری میں اگر کلمہ کفر کہہ لے تو کا فر ہوگا یا ہیں؟ علامہ نو دی نے لکھا ہے کہ کلمات کفر جب قصد کے ساتھ کے جائیں تو کفر ہے اور اگر بلاقصد کے جائیں تو کفر ہیں۔ علامہ کر مائی نے علامہ نو دی پر ددکیا ہے اور فر مایا کہ کلمات کفر کے کہنے سے کا فر ہوجا تا ہے خواہ قصد و خبر کے کہا تہ میں جمہور کی رائے ہے امام بخاری نے ای قول ثانی کی تائید فر مائی جنانی و هو لایشعر بڑھا کرای کی طرف اشارہ فر مایا یہ

واقعہ: شیخ عبداللہ اندلیؒ ج کو جارہے تھے دیکھا کہ عیسائی صلیب کو پوج رہے ہیں تو کہا یہ کیے بے وقوف
ہیں۔ دل میں تحقیر آئی تو حیط عمل ہوگیا۔ آگا کو کیاں کو یں پر پانی پی رہی تھیں ایک لڑکی پر عاشق ہو گئے۔ اس کے
باب کو کہا کہ اس سے نکاح کرنا چاہتا ہوں۔ باپ نے تین شرطیں لگائیں۔ (۱)لبس صلیب (۲) خزیروں کا
ریوڑ چرانا (۳) تو ہیں قرآن ۔ پہلی دوبا تیں قبول کرلیں۔ دومر بدحال دیکھنے آئے ،خزیر چرارہے تھے ،شاگردوں
نے شیخ سے سوال کیا! قرآن یاد ہے؟ کہاا کیک آیت یاد ہے ﴿ یُضِلُ مَنُ یَشَآءُ ﴾۔ احادیث کے بارے میں بو چھا
تو فرمایا ایک حدیث یاد ہے ((من بدل دینہ فاقتلوہ)) شاگردوں (مریدوں) نے کہا! ہمارے ساتھ چلو، کہا میں
تہارے کام کانہیں ہُوں! گر گرا کرانہوں نے دعاکی ، اللہ یاک نے شیخ کو واپس کردیا۔

ہوجائیں ،ان کوڈرنا چاہیے کیمل حبط نہ ہوجائے۔ دوسرے ترجمہ کامقصد طالحین کوتوبہ کی ترغیب دلانا کہ گناہوں پر اصرار نہ کریں۔خلاصہ دونوں کا ایک ہے کہ معصیت نقصان دہ ہے اور مرجمہ کی ردہے۔

دلائل مرجئه

اول:ان کی دلیل عقلی ہے کہ جیسے کفر کے ساتھ طاعت فائدہ مندنہیں ہے ایسے ہی ایمان کے ساتھ معصیت نقصان دنہیں ہے۔

جو إب: بیاستدلال صحیح نہیں ہاس لئے کہ گفر کے ساتھ طاعت تخفیفِ عذاب کا فائدہ دی ہے یاس دنیا میں نعتیں لل جاتی ہیں۔حضور علیق نے ارشاد فر مایا سب سے ہلکا عذاب میرے بچا ابوطالب کو ہوگا آگ کے دلدل میں ہوں گے یاجو تے بہنائے جائیں گے جس سے دماغ اُلے گاریخ فیف صرف آپ اللّی سے مجت کی وجہ سے ہے۔ اعتبر اض: قرآن پاک میں ﴿فَلا يُحَفِّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ ﴾ ہے تو تعارض ہوا؟

جواب اول: بتلاب وتخفيف كاحساس نبيس بوكاليكن سبتا باكا بوجائ كار

جواب ثانی: رفع تعارض کے لئیآیت کا مطلب سمجھنے کی ضرورت ہے۔ آیت کا مطلب یہ ہے کہ عذاب بموزہ (تجویز شدہ) میں شخفیف نہیں ہوگی اللہ تعالی عالم الغیب ہیں پہلے ہی سے مناسب عذاب دیں گے۔

دلیل ثانی : جب ایمان اندر ہے تو دوزخ میں نہیں جاسکتا۔ کیونکہ ایمان دوزخ کے منافی ہے ، بڑی ذات کا کلمہ پڑھنے والاجہنم میں جائے یہ ایمان کی شان کے خلاف ہے۔

جوابِ اول: مسايان كامل قلب بيتودل تك آكنيس بنچ گ باقى جن كولول ميس ايمان نبيس موكا ان كولول تك ينج كي ﴿ مَطَّلِعُ عَلَى الْالْفِئدَة ﴾

جو ابِ ثانی : عاصی و جب تهذیب کے لیے داخل کیا جائے گاتو ایمان نکال کرر کھایا جائے گا کافروں کا داخلہ تعذیب کے لیے داخل کیا جائے گا تو ایمان نکال کرر کھایا جائے گا کافروں کا داخلہ تعذیب کے لیے ہوگا۔ حضرت مدتی ہے منقول ہے کہ اس مسئلہ میں شرح صدر نہیں ہوتا تھا کہ ایمان نکال لیا جائے گا۔ چر جب باہر نکالیس گے تو ایمان داخل کر دیا جائے گا۔ فرمایا ایک مرتبہ انگریز کے خلاف تقریر کی تو جیل میں ڈالا گیا تو انہوں نے کہا کہ جیل کے کپڑے کہن لیس اور اپنے کپڑے اتار دیں ایسے ہی پڑے دہیا گے واپسی برآ پ کو بہنے کے لیے دیے جائیں گے تو اس مسئلہ کی بھی تھے آگئی، شرح صدر ہوگیا۔

قال ابو اهیم التیمی: یہاں سے امام بخاری دلاک شروع کررہے ہیں اوریہ بہلی دلیل ہے۔

ماعرضت قولى: قولى مرادعقيده ماعط ب

الاخشيت ان اكون مكذبا: مكنباً فاكل كاصيغه على السيغه الى تين تفيري كى جاتى بير-

تفسیرِ اول: مجھے ڈر ہے جب میں وعظ کرتا ہوں اور اس پڑمل نہیں کرتا کنفس کو جھٹلانے والا نہ بن جاؤں۔ تفسیرِ ثانی: جب میں کہتا ہوں کہ مؤمن ہوں اور حقیقت میں ایمان نہ ہوتو مجھے خطرہ ہے کہ اپنے آپ کو جھٹلانے والا نہ بن جاؤں ، ان دونوں صورتوں میں بیفاعل کا صیغہ ہے۔

تفسییر ثالث: یااس کومفعول مانیں کہ مجھے خطرہ ہے کہ میں جھٹلایا نہ جاؤں کہ وعظاتو فلاں کیااور عمل نہ کیا۔ یہ سب تواضع پرمحمول ہے۔

واعظاںکه جلوه برمحراب ومنبر می کنند 🕏 چوں بخلوت می رسند آن کاردیگر می کنند

قال ابن ابی ملیکةالنج: بیغایت ورع اورخوف کا اثر تھا۔ ابن ابی ملیکہ فرماتے ہیں کہ صحابہ کرا مُمُکا عام حال بیتھا کہ ڈرتے تھے کہ نفاق عملی کا الزام اللّٰہ پاک کی بارگاہ میں ان پر نہ آجائے اس کا اثر بیتھا کہ وہ بہت مختاط زندگی گزارتے تھے اور ہروفت اخلاص کی راہ تلاش کیا کرتے ہے

سوال: کس نفاق کا خوف تھا؟ نفاق تو واضح چیز ہے جب ان کاعقیدہ درست ہے اللہ پاک کوایک مانتے ہیں۔ تو پھر کس نفاق کا خوف ہے؟

جواب: نفاق چارتم پر ہے۔ انفاق اعتقادی: اس کا خوف نہیں تھا ۲۔ نفاق عملی فت ہے اس کا بھی خوف نہیں تھا سے نفاق حالی: یعن تغیر حالت اس کا بھی خوف نما کہ جو کہ نہ کفر ہے اور نفت ہے

م . نفاق دلالی: کمتے ہے کہ دل میں نجت تھا تھیں ماردی ہواوراوپر سے اسکے خلاف ظاہر کیا جائے اسکو ہماری اصطلاح میں ناز کہتے ہیں مثل الہن کا شوہر کے گر روانہ ہوتے وقت رونا الکون اندر سے خوش ہوتی ہے لغتا اس کونفاق کہا جاتا ہے۔ عن عائشة قالت قال لی رسول الله انی لاعلم اذا کنت عنی راضیة واذا کنت علی غضبی قالت فقلت من این تعرف ذلک فقال اما اذاکنت عنی راضیة فانک تقولین لا ورب محمد واذا کنت غضبی قلت لا ورب ابراهیم قالت قلت اجل والله یا رسول الله ما اهجو الا اسمک. ع

حضرت الوبمرصدين كوحفرت حظله ملاور به تصيف وجها كيابات ب؟ كهاجب حضورة الله كي باس موت بهن تو حالت اورموتي به اوربوی بجول كي باس موت بهن تو اورحالت موتی به افق حظله حضرت الوبكرصدین نے فرمایا حالت اور مهری بهی بهی به به دونون آ ب الله كه باس آ گئتو آ ب الله نے فرمایا ((ساعة هذه وساعة هذه)) مامنهم احد یقول انه علی ایمان جبریل و میكائیل: سسد یعن جس طرح جریل مامنهم احد یقول انه علی ایمان کوبهی نفاق اورمیكائیل كائیان میں جزم ب اورجیسے ان كے ایمان کونفاق عارض نہیں موسكتا ایسا بی ان كے ایمان کوبهی نفاق عارض نہیں موسكتا نہیں بلکہ ایسانہیں ہے۔

اِ(درس بخاری س ۲۷۱) م بخاری شریف تی ۲س ۷۸۷

امام بخاري كامقصوداس جمله سے كيا ہے اس ميں تين قول ہيں۔

القول الاول:بعض نے کہا کہ امام بخاریؒ نے مرجہ کی ردکی ہے کہ صدیقین اور غیرصدیقین کا ایمان ایک ہے۔ القول الثانی:بعض نے کہا کہ پیام عظمؓ رِتعریض ہے کیونکہ آنہوں نے فرمایا یمانی کایمان جریل و میکائیل۔ جواب:امام اعظم ابوصنیفہؓ سے تین قتم کی روایتی منقول ہیں۔

ا أو من كايمان جبريل وميكائيل لامثل ايمان جبريل وميكائيل.

۲ سساکره ان اقول ایمانی کایمان جبریل ومیکائیل بل اومن بماامن به جبریل ومیکائیل اسسسایمانی کایمانی کایمانیل به جبریل ومیکائیل به تیسری روایت غیرتام هیمک بات کی طرف رجوع کیاجائے گا۔ ہم کہیں گے کہام بخاری کو پوری بات نہیں پیچی ۔
 گا۔ ہم کہیں گے کہام بخاری کو پوری بات نہیں پیچی ۔

شرح قول الامام ابھی حنیفہ:دوچزی ہیں جن کا سمحمنا اہم ہے ا۔ کیفیت ایمان ۲۔ موثن بہ۔
امام اعظم ابوصنیفہ موثن بہ کے لحاظ سے تشبیہ وے رہے ہیں نہ کہ کیفیت ایمان کے لحاظ سے ۔ کہ جتنی
چیزوں پر ایمان لانا جریل اور میکائیل کے لیے ضروری ہے اتن ہی چیزوں پر ایمان لانا ابوصنیفہ کو بھی ضروری ہے
ابو بکرصد این کو بھی انہی چیزوں پر ایمان لانا ضروری ہے لامثل ایمان جبویل و میکائیل۔ البتہ کیفیت الی نہیں
ہے جیسی جرئیل ومیکائیل کے ایمان کی۔

القول الثالث: بعض نے کہا کہ اس جگہ ایک اختلافی مسئلہ بیان کرنا مقصود ہے جوکہ اسمہ اورامام اعظم ابوصنیفہ کے درمیان مختلف فیہ ہے۔ امام بخاری جمہور کی طرف سے امام صاحب کی ردکرتے ہیں۔ مسئلہ یہ ہے کہ کوئی شخص ایخ آپ کوانا مو من کہ سکتا ہے یانہیں؟

امام اعظم ابوصنیفہ قرماتے ہیں قطعاً دعویٰ کرسکتا ہے۔جمہور کہتے ہیں کہ ان شاءاللہ کے ساتھ کہ سکتا ہے۔امام صاحبؓ فرماتے ہیں کہ ان شاءاللہ کے ساتھ نہ کہے کیونکہ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اس کواپنے ایمان میں شک ہے اور شک کے ساتھ ایمان قبول نہیں ہوتا تو امام بخاریؓ ابن ابی ملیکہ کا قول نقل کرتے ہیں کہ میں ۱۳۳ صحابہ کرامؓ سے ملاکوئی بھی ایمان کا دعویٰ نہیں کرتا تھا بلکہ ہرایک نفاق سے ڈرتا تھا۔

جواب: جواب علی سیل المحاکمه ہے ایک ہے حالت موجودہ راہنہ۔حالت موجودہ کے اعتبار سے اس کو بلاتر دو کہنا چاہید دوسری ہے حالت مستقبلہ کے لحاظ سے ان شاءاللہ کہنا چاہیے تو امام صاحب کا قول حالت موجودہ کے لحاظ سے ہے۔اور جمہور آئمہ کا قول حالت مستقبلہ کے لحاظ سے ہے۔

و اقعہ: حضرت مولانا اسعد مدنی نے حضرت مدنی کے حوالہ سے ایک مرتبہ ترک عالم کا قصہ سنایا کہ حدیث پڑھاتے ،وئے کھی آ ہ بھر کر کہتے کہ چروا ہا بازی لے گیا۔ شاگر دوں کے پوچھنے پر بتایا کہ ایک دفعہ مجھے اورایک چروا ہے کوشب قد رنصیب ہوئی دونوں نے دعا کی چروا ہے نے دعاماً گی اے اللہ ایمان کے ساتھ کلمہ پڑھتے ہوئے دنیا سے لے جا۔ چنانچہ وہ میرے سامنے کلمہ پڑھتے ہوئے فوت ہوگیا میں نے دعا کی کہ اے اللہ! حلقہ درس وسیع کرد ہے۔ میرا حلقہ درس تو بہت وسیع ہو چکا ہے کین خاتمہ کی سوچتا ہوں تو کہتا ہوں کہ چروا ہا بازی لے گیا۔ ویڈ کر عن المحسن ما حافہ الا مؤمن: سسن خافہ کی ضمیر میں دوا حمال ہیں اے اللہ تعالی کے نفاق جس کے پاس کچھ ہو ہی ڈرتا ہے جس کے پاس کچھ نہ ہوا سے کیا ڈر ہے۔

لنگکے زیرو لنگکے بالا 🖾 نے غم دردو نے غم کالا

گناہوں پراصرار نہ ہونا چاہیے۔حفرت ابو بکرصدی ی کا قول مااصو من استعفر توبہ سے اصرار ذاکل ہوجا تا ہے اوراصرار سے ایمان کے زائل ہونے کا خوف ہے اور توبہ قین حرفوں کا نام نہیں صرف لفظ توبہ بول دینا اور چھوڑنے کا ارادہ نہ کرنا ہے استہزاء ہے۔حضور علیہ نے فرمایا ((المتوبة الندم))

تو بہ کے ارکان: تو بہ کے تین رکن ہیں اگر شتہ پرندامت ہو ۲۔معافی کی طلب ہو ۳۔آئدہ نہ کرنے ، کاعزم، میں کہا کرتا ہوں آجکل دعا بھی مٰداق ہے ہم دعا کیں پڑھتے ہیں کرتے نہیں۔

حدثنا محمد بن عوعرة:الموجئة: مرجه ایک فرقه بجومرج کلقب سے ملقب بهان کومرجه کنف بن عوعرة است ملقب بهان کومرجه کنے کی دووجهیں ہیں اوچونکه بهلوگ عمل کو ایمان سے مؤخر کرتے ہیں اور غیر ضروری قرار دیتے ہیں السیال بیان کے ساتھ کوئی گناه نقصان دہ نہیں ہے۔ السیال بیان کے ساتھ کوئی گناه نقصان دہ نہیں ہے۔ مرجہ اعتقادی جواعتقاداا عمال کوغیر ضروری تجھتے ہیں اسم جنمی جواعتقاداا عمال کوغیر ضروری تجھتے ہیں اسم جنمی جواعتال کوایمان کا جزنہیں مانتے ایمان سے مؤخر مانتے ہیں۔

تعبیر ثانی: سیایوں کہ لیں کہ مرجہ دوتتم پر ہیں۔ ا۔ مرجہ بدی۔ جن کاعقیدہ ہے کہ اعمال ضروری نہیں ۲۔ مرجہ بدی۔ جن کاعقیدہ ہے کہ اعمال ضروری ہانے ۲۔ مرجہ سن جن کاعقیدہ یہ ہے کہ اعمال ایمان کا جز نہیں اور اعمال کو ایمان سے مؤخر مانے ہیں البتہ ضروری مانے ہیں۔ لفظ کے التباس کی وجہ سے معنی کا التباس نہیں ہونا جا ہیئے کیونکہ حفیہ میں سے سی سے منقول نہیں کہ وہ اعمال کوغیر ضروری سمجھتے ہوں۔ بعض نے حفیہ کو مرجہ کہا ہے تو نہ کورہ طریقہ پر فرق واضح ہوچکا۔

سباب المسلم فسوق:اس سے ثابت ہوا کہ عمل ضروری ہے اور معصیت سے ایمان کونقصان موتا ہے ورندآ یہ معلقہ بیار شادندفر ماتے اس طرح وقتاله کفر ہے۔

سوال:مرجه كى ردتو موكئ كيكن خارجيه كى تائيه موكئ كيونكه وه كبيره سے دخول فى الكفو كوتاك بيں؟ جواب :اس كى مختلف توجيهات بين التخليظ بولاگيا ٢ مفضى الى الكفر موجائے كاس تشيها ہے سمت حل برحمول ہے جومومن كو من حيث المؤمن قتل كرنا طلال سمجتنا مويدوعيداس كے بارے ميں ہے۔

یخبر بلیلة القدر: لیلة القدرسارے سال میں گوئی ہے یارمضان البارک کے ساتھ فاص ہے؟ البعض حفرات کا فد جب سیے کہ فاص تو نہیں لیکن اکثر رمضان میں ہوتی ہے۔

۲۔ بیض کے نزدیک رمضان المبارک کے ساتھ خاص ہے ان کے پھر دوقول ہیں اوپورے رمضان میں ہوسکتی ہے اور اکثر عشرہ اخیرہ میں ہو تی ہے اور اکثر عشرہ اخیرہ میں ہوتی ہے کا قول سے جات را توں میں اور اکثر عشرہ اخیرہ میں ہوتی ہے پھران میں سے طاق را توں میں ۔ زیادہ مشہور ستائیسویں رات ہے۔ ۲ کی تعین بالنص نہیں ہے لیکن بزرگوں کے مشاہرات ای رات کی نشاند ہی کرتے ہیں۔

فتلاحی ر جلان: مرادکعب بن ما لک اورعبدالله بن مدرد بین، بددونوں جھڑ پڑے،ان کا قرض کا جھڑا ا تھا۔حضور علی نے فیصلہ فرمایا کہ کعب سے فرمایا آ دھالے لے اور عبداللہ کوفرمایا آ دھادیدے؛

فو فعت: اس کی ایک تفری شیعه نے کی کرات ہے ہی نہیں ،سرے سے اٹھالی کی لیکن می نہیں ہر نعت کامنی دفعت تعیینها ہے قرینہ المتمسو ھاہے۔

عسلى أن يكون خيرا لكم:سوال: چمان مين كياخر موكتى ب؟

جواب : جب طالبین تلاش میں زیادہ کوشش کریں گے تو ثواب زیادہ ہوگا۔ مخضر لفظ میں عرض کروں کہ اس کے چھپانے میں عاشقوں کے لیے ستاری ہے، عاشق کوشش کڑے ہردات عبادت کریں گے ہم جیے گنا ہگاروں کے لیے ستاری ہے کہ ہوسکتا ہے کہ پیشب قدر ہواس طرح گنا ہوں ہے جیس گے۔ التمسوھا فی السبع و التسبع و المخمس:سوال: دوسری ردایت میں التمسوھا فی المسبع و المخمس:سوال: دوسری ردایت میں التمسوھا فی المسبع و المخمس:سوال: دوسری ردایت میں التمسوھا فی المسبع و المخمس:سوال: دوسری ردایت میں التمسوھا فی المسبع و المخمس بیں تعارض ہوا؟

جواب اول: تعارض نہیں ہاں لیے کہ مقصدیہ ہے کہ مہینہ کے آخر میں تلاش کرو۔اب مہینے کی تقسیم بھی عشرے ہوتی ہو اور بھی اسبوعات سے۔جب سبع کہا تو مراد سبع اخیر ہے تسبع بولا تو مراد تسبع اخیر ہے علی هذا القیاس جو اب ثانی : اگر تعارض مان بھی لیں تورفع تعارض کی صورت یہ ہے کہ ان کے ساتھ عشرین کا لفظ بھی لگادیا جائے تو اس سے اخیر عشرہ کی طاق را تو ل کی طرف اشارہ ہوگا۔

انطباق: انطباق كى دوصورتين بير

الصورة الاولى: دوسرى مديث بهلي ترجمه كمطابق بكه جسطر حليلة القدر كي تعين ايك كناه ك وجه الصورة الاولى وجه المحال ال

روسرت جمد عكروو مايحدر من الاصرار على التقاتل والعصيان.

الصورة الثانية: ساب مين قى كرك كهتا هول دونول سے دونوں ثابت بين اور يتبرع ہے ورنہ پورے باب سے ترجمہ ثابت ہو ال كفر حقال كفر كاسب بنتا ہے اور كفر سے حط المال ہوجاتا ہے اور دوسرى حديث دوسرى ترجمہ سے اس طرح منطبق ہے كہ تلاحى كمي قال كاسب بن جاتى ہے تو تنازع ہے دوك ديا گيا تاكة تقاتل كى نوبت نه آئة و ما يحذر من التقاتل كے ساتھ بھى انطباق ہوگيا۔

وبیان النبی علمکم دینکم اور خضرت النبی علیه السلام یعلمکم دینکم اور خضرت النبی علیه السلام تعربی النبی علیه السلام تعربی النبی علی النبی النبی علی النبی النبی علی النبی علی النبی علی النبی علی النبی علی النبی علی النبی النبی علی النبی علی النبی علی النبی علی النبی علی النبی النبی علی النبی علی النبی علی النبی النبی علی النبی النبی علی النبی النبی النبی علی النبی النبی علی النبی النبی النبی علی النبی النب

ان تؤمن بالله وملآئكته ماالايمان قال فاتاه رجل فقال ا نے میں ایک شخص آیا اور یو چھنے لگا ہمان سے کہتے ہیں؟ آپ انگھ نے فرمایا کہ ایمان یہ ہے کہتو اللہ اور اسکے فرشتوں کا وبلقآئه ورسله وتؤمن بالبعث قال ماالاسلام؟ اوراس سے ملنے کااوراس کے پیغمبرول کالفین کرے،اورمرکرجی اٹھنے کومانے اس نے یوچھا اسلام کیاہے؟ قال الاسلام ان تعبد الله ولاتشرك به وتقيم الصلوةوتؤدّى الزكوة المفروضة آ پینائیں نے فرمایا اسلام بیہ ہے کہ اللہ کو پوہے اس کے ساتھ شریک نہ کرے ہم از کوٹھیک کرے اور فرض شدہ زکو ۃ اداکرے ان تعبدالله رمضان، قال ماالاحسان؟ قال اوررمضان كروز ير كه،اس نے يو جها:احسان كيا ہے؟ آپ نے فرمايا حسان بيہ كماللدكواييا (راناس) بوج كانك تراه فان لم تكن تراه فانه يراك قال متى الساعة ؟ گویا کہ تو اس کود کھے رہا ہے، اگر بینہ ہوسکے تو اتنا خیال رکھ کہ وہ تجھ کو دیکھ رہاہے اس نے کہا قیامت کب آئیگی؟ ماالمسول باعلم من السائل وسأخبرك عن اشراطها قال آ ہے۔ آ ہے ایک نے فرمایا جس سے پوچھتا ہے وہ بھی پوچھے والے سے زیادہ نہیں جانتااور میں تجھ کواس کی نشانیاں بتلائے دیتا ہوں ولدت الامة ربها واذا تطاول رعاة الابل البهم في البنيان جب لونڈی اپنے میاں کو جنے اور جب کالے اونٹ جرانے والے کمی کمی عمارتیں مھونگیں (برے بن جائیں) تلاالنبي عَلَيْكَ تلاالنبي عَلَيْكَ الاالله لايعلمهن قیامت کاعلم غیب کی ان پانچ باتوں میں ہے جن کواللہ کے سواکوئی نہیں جانتاہ پھرآ مخضرت کیا گئے نے (سور اقتمان کی) بیآیت بڑھی اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ (الاية) ثم ادبر فقال ردوه بیشک اللهٰ،ی جانتا ہے قیامت کب آئیگی آخرآیت تک پھروہ خض پیٹیم وز کرچلاء آنخضرت آلیا ہے فرمایا کہ اس کو پھر (مرے ساتا ملاؤہ الناس دينهم يرواشيئا فقال هذا جبريل جاء يعلم (لوگ گئے) تو دہاں کسی کو نہ دیکھا ،آپ نے فرمایا یہ جبریل علیہ السلام تھے ،لوگوں کوان کا دین سکھانے آئے تھے۔ ابوعبدالله جعل ذلک کله الايمان قال من امام بخاری ﷺ نے کہا آنخضرت علیہ نے ان سب باتوں کو (دین کہہ کر)ایمان میں شامل کردیا

وتحقيق وتشريح

توجمة الباب كي غوض: غرض مصنف مين دو تقريري بين _

تقریرِ اول:امام بخاری کامقصداس باب سے بہ ہے کہ دین، ایمان، اسلام شی واحد ہے۔ حدیثِ جبریل میں آپ اللہ نے فرمایا ((یعلمکم دینکم)) سوال ایمان واسلام سے بارے میں تقا اور امام بخاری نے جوآیت ذکری ہے اس میں بھی اسلام کو دین کہا ہے۔

تقویو ثانی: غرض رفع تعارض ہے کہ حضرت جریل نے ایمان، اسلام اوراحسان کے بارے میں سوال کیا آ پ سیالیہ نے ایمان، اسلام اوراحسان کے بارے میں سوال کیا آ پ سیالیہ نے فر مایا ((یعلمکم دینکم)) تو معلوم ہوا کہ ایمان اوراسلام دونوں پردین کالفظ اطلاق کیا جا تا ہے اورقر آن کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ و وَمَن یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاسْلَامِ دِیْنا کی کہدین کالفظ صرف اسلام پر بولا جا تا ہے رفع تعارض دولر تقے ہے۔

الوجه الاول:ایمان اوراسلام میں اتحاد ذاتی اور تغایرا عتباری ہے کہ ایمان تقیدیق باطنی مع انقیاد ظاہری کا نام ہے اور اسلام انقیادِ ظاہری مع انقیادِ ظاہری کا نام ہے۔ توجب اتحاد ذاتی ہواتو کہیں اکھے بھی ہو سکتے ہیں اور تغایرا عتباری ہے تو کہیں مقابلے میں بھی آسکتے ہیں علماء اس کو یول تعبیر کرتے ہیں اذا اجتمعا افتر قاو اذا افتر قااجتمعا۔ توجب دونوں متقابل استعال ہوں گے تو دونوں کے مختلف معنی مراد لیے جائیں گے اور اگر اکیلا لفظ ایمان یا اکیلا لفظ اسلام استعال ہوگا تو وہاں اتحاد ذاتی ہوگا کہ اس لفظ سے دونوں مراد ہوں گے۔

نگتہ: لفظ وسط کے بارے میں آتا ہے الساکن متحرک والمتحرک ساکن کہ جبسین کے سکون کے ساتھ ہوگاتو متحرک اوراگرسین کی حرکت کے ساتھ ہوگاتو ساکن لیعنی کسی چیز کے بالکل بھے کے ایک نقط کو وَسط بفتح السین کہتے ہیں ایسے کہاالمتحرک ساکن اور کسی چیز کے ایک کو نے سے دوسرے کو نے تک کے علاقے کو وَسُط کہتے ہیں اسے کہاالمساکن متحرک جبو سُط سین کے سکون کے ساتھ ہوگاتو اس کامصداق بین الطرفین کئی ہو کتے ہیں اور اگر وَسَط سین کی حرکت کے ساتھ ہوگاتو اس کامصداق آیک ہی ہوگاتونی عین درمیان ۔ الطرفین کئی ہو کتے ہیں اور اگر وَسَط سین کی حرکت کے ساتھ ہوگاتو اس کامصداق آیک ہی ہوگاتی عین درمیان ۔ اللو جعہ المثنانی : ایک مقام درس ہے اور ایک مقام وعظ مقام درس میں ایمان اور اسلام جدا جدا ہوتے ہیں اور مقام وعظ میں ایک ہی ہوتے ہیں ۔ تو حضرت جریل علیہ السلام آپ ایس آئے تو یہ مقام درس تھا تو یہاں پر ایمان اور اسلام کو جدا جدا ہیان کر دیا اور قرآن کی آ یت میں اکٹھا ہے تو وہ مقام وعظ ہے۔ سو ال

إيس سورة آل مران ٨٥

جواب :ران حید کہ جہ الوداع کے بعدوفات سے چند ماہ بل۔ چونکہ جہ الوداع میں اسلام کمل ہو چکا تھا تو اللہ تعالی نے جریل کو بھیجاتا کہ اسلام کا خلاصہ صحابہ کرائم کوؤ ہرادیا جائے۔ جریل نے چار چیزوں کے بارے میں موال کئے۔(۱) ایمان (۲) اسلام (۳) احسان (۴) ساعة۔

بارزا يوما للناس: سنمايال بوكربيشے بوئے تصمعلوم بواكر آپ علي تعليم كے ليے بيشے تو نمايال بوكر بيشے _ رامعلم كے ليے نمايال بوكر بيشے اور بھی ايسے بيٹے كرآنے والول كو پية بى نہ چاتا تھا۔

ان تؤمن بالله: حفرت جريل عليه السلام نے سوال كيا كه ايمان كيا ہے؟ تو آپ علي نظر مايا أَنُ تُؤمن الع اعتراض: سوال ميں تعريف يوچي گئ تو آپ علي في ايمان كى تعريف تو بتلائى نہيں اورا كريمى تعريف ہے تعريف الشئى بنفسه لازم آئی۔ ہے تو تعريف الشئى بنفسه لازم آئی۔

جواب اول: خاطب سائل کے مشاء کو بھی کر جواب دیتا ہے اور سائل کا مشاء حقیقت ایمان کا سوال نہیں ہے بلکہ مؤمن بہ کی تفصیل ہے چنا نچہ آپ علی نے مؤمن بہ کی تفصیل بیان کردی۔

جو اب ثانی: منشاءایمان کی تعریف بی ہے۔ سوال میں ایمانِ اصطلاحی مراد ہے اور جواب اور معرف والی جانب میں ایمانِ انعوی مراد ہے یعنی تصدیق ای اللہ جیسا کقر آن مجید میں ہے وَمَا انْتَ بِمُوْمِنِ لَنَا ای بِمُصَلِّقِ لَنَا اِللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الل

جواب:ای بات کی تصدیق که الله واجب الوجود ہے تمام صفات کمالیہ کا جامع ہے لیمی نه اس نے کسی کو جنا ہے اور نہ وہ جنا گیا ہے۔

و ملائکتہ ملائکہ،مَلک (اللّے الله م) کی جمع ،فرشتہ مَلِک (بسرالله م) بمعنی بادشاہ ،یافظ اُلو کہ سے لیا گیا ہے۔ملک اصل میں ملئک تھا اور ملئک اصل میں مئلک تھا قلب مکانی ہوئی تو ملئک ہوا۔یَولی والا قاعدہ جاری ہواتو مَلَک ہوگیا کہ ہمزہ متحرک ماقبل ساکن ،حرکت نقل کرکے ماقبل کودے دی چرہمزہ گرگیا۔ (مَلَک کی جمع ملائکہ،مَلِک کی جمع ملوک اور مِلک کی جمع الملاک اور مُلگ کی جمع ممالک آتی ہے: مرتب)

سوال: ايان بالملائكة كامطلب كياب؟

ل سورة ليسف يارو ١١ أيت عداع بارو ١٨ سورة تحريم آيت ٢ سع ورس بخاري ش ٢٨٥

بلقائه: يقين ركم كم الله تعالى سے لقآء (ملاقات) موكى _

سوال: سائل سوال كرتا ب كرايك فخص كيد يقين ركھ كدالله بإك كاديدار موكا يالقاء موكا جب كرحسن خاتمه كايد نبيس؟

جواب اول: نفس الامريس لقا ء بوگاخاتم اگراچها بواتو بالفعل نعيب بوجائے گا ورا كرخاتم اچهانه بواتو محروم رہے گا۔

جو اب ثانی: اس جمله کا مطلب بیت که انتقال من دار الدنیا الی دار الاخره پرایمان لائے۔ آیک صدیث میں ہے ((من لم یومن بلقائی ولم یقنع بعطائی ولم یرض بقضائی فلیطلب رباً سو آئی))

. مسئله رؤية بارى تعالىٰ

رؤیت باری تعالی ممکن ہے کیکن اس دنیا میں وقوع نہیں ہے اس لیے اس لقاء سے مراد رؤیت اخروی ہے حضور علیت کومعراج میں رؤیت نصیب ہوئی یانہیں اس میں اختلاف ہے۔

جہور محققین کے نزدیک رؤیت باری تعالی ہوئی ہے کین اس کی کیفیت ﴿ لَیْسَ تَحْمِثُلِهِ هَنَی اللّٰ کَونکه رؤیت کے لئے حداور حدود خروری ہیں اللہ تعالی اس سے پاک ہے۔ حضرت شاہ صاحب فرماتے ہیں کہ رؤیت باری تعالی رؤیت تجلیات ہے۔ آنخضرت اللّٰنَا کہ وجورؤیت حاصل ہوئی وہ عالم آخرت کی ہے اسی طرح مومنوں کو بھی حاصل ہوگی۔ معتز لدا نکاری ہیں۔

دليل معتزله: ﴿ لِاتُدُرِكُهُ الْاَبْصَارُ ﴾

دلائل جمهور

اول: مفصل روایات میں آتا ہے هل نوی ربنا کے جواب میں آپ علیہ نے فرمایاتم چاندی طرح الله کودیکھو گے کوئی مزاحت نہیں ہوگی۔

ثانى: قرآن پاك نے كفاركا خسران بتلاتے ہوئے ﴿ كَلاّ إِنَهُمْ عَنُ رَّبِّهِمْ يَوُمَئِذٍ لَّمَحُجُو بُونَ ﴾ ٢ اگر مومنوں كورؤيت نہ ہوتو ان كو پرده ميں ركھنے كاكيا فائدہ؟ فائدہ تو تب ہوگا جب مومنوں كو رؤيت حاصل ہواوركا فروں كونہو۔

دلیل معتزله کاجواب ا:الابصار پرالف لام عهدی ہے ابصار دنیا مراد ہیں۔ ہم اخروی رویت کے قائل ہیں۔

الي باره مسورة الانعام آيت ١٠٠ عي باره ٣٠ سورة أمطففين آيت ١٥

جواب ۲: آیت میں ابصار کے مدرک ہونے کی نفی ہے اپنے مدرک ہونے کی نفی نہیں ہے۔ ابصار کامدرک نہوناکی مانع کی وجہ سے ہے جب وہ مانع زائل ہوجائے گا تورؤیت ہوگی۔

جو اب ثالث ﴿ لَا تُدُرِ كُهُ الْا بُصَارُ ﴾ ای بالاحاطة کیونکداللہ تعالی مکان اور مکانیات ہے پاک ہیں۔

و اقعہ: حضرت مولانا قاری طیب صاحب نے یہاں بیان کرتے ہوئے فرمایا کہ معزلد اس کے
منکر ہیں تو اس کا جواب ایک عالم نے بری عمد گی سے نمٹا دیا عالم نے معزلہ سے کہا کداللہ پاک کا وجود مانتے ہو کہا
مانتے ہیں! فرمایا با کمال مانتے ہو، کہا ہاں! پھر فرمایا با کمال چیز دیکھنے کوجی چاہتا ہے معزلہ نے کہا ہاں! عالم نے
فرمایا کہ جی چاہنا ہی امکان کی دلیل ہے تحال کودیکھنے کوجی نہیں چاہا کرتا۔

نصیحت اساتذہ: ہمارے اساتذہ نے ہمیں ایک نصیحت کی تھی کہ جوبات جس سے تی ہوای کے حوالہ سے بتایا یا کرواس سے علم میں برکت ہوگی ورنہ تدلیس کی صورت ہے۔ اگر بیمسکلہ ہم اپنی طرف سے بھی کہدو ہے تو آپ بھے کہ بڑا عالم ہا بہ اب آپ کہیں گے کہ تی سائی باتیں کرتا ہے۔ آج اکثر بیدھوکا لگا ہوا ہے کہ اپنے آپ کوعلا مہاور عالم بھے تا ہیں حالانکہ ہم مدرس ہیں باتیں نقل کرتے ہیں عالم اور علامہ تو کوئی کوئی ہوتا ہے جس کو اللہ کی طرف سے علم آئے۔

ورسله:رسل،رسول کی جمع ہے۔

تقیمو ا: اقام العود اذا قومه سے ہمنی سیدھاکرناتونمازکوبھی آ داب وسنن کے ساتھ سیدھاکرکے پڑھے۔ بیضادی شریف (ص۱۹) پر ہے اویو اظبون علیها من قامت السوق اذانفقت و اقمتها اذا جعلتها نافقة قال .

اقامت غزالة سوق الضراب ۞ لاهل العراقين حولاقميطا

فانه اذاحوفظ عليهاكانت كالنافق الذي يرغب فيه واذاضيعت كانت كالكاسد المرغوب عنه اويتشمرون لادائهامن غيرفتورولاتوان من قولهم قام بالامرواقامه اذاجدّفيه وتجلد الخ

٢- يايد اقام المحرب سے ماخوذ بجبكدوام حرف بوتوا قامت صلوة ، دائما نماز يرصف سے بوگ۔

اقامتِ صلوة كى شرائط:ا قامتِ صلوة تين شرائط سے ب

ا سنن اور آ داب کے ساتھ پڑھے ٢ بمیشہ پڑھے ٣ جماعت سے پڑھے۔

سوال: ج كاذكر كيون بين كيا؟

جواب: سسب بعض نے کہا کہ ج کی فرضیت ابھی تک نہیں ہوئی تھی اس لئے ذکر نہیں کیا۔ لیکن اس کے برعکس را حج سے کہ یہ سہوراوی ہے یا اختصار راوی۔ کیونکہ بعض روایتوں میں صوم کا ذکر بھی نہیں حالانکہ وہ تو بہت پہلے فرض ہو چکے تھے یہ بالکل آخر اسلام کا واقعہ ہے۔

سوالِ ثالث: ماالاحسان؟ درجه احبان كيابي؟ احبان كي كتب بين؟ قرآن پاك بين متعدد جلّه احسان كاذكر آياب هي متعدد جلّه احسان كاذكر آياب هي الله عَمَ اللَّذِينَ اللهُ مَعَ اللَّذِينَ اللهُ مَعَ اللَّذِينَ هُمُ مُحْسِنُونَ ﴾ [

جواب: ال حديث ميل آب عليه في جواب ديا كها حمان يه عبادت ال طريقه بركرے كه كويا تو خدا كود كيور باہے۔اس سے كيامقصود ہے اس ميں دو قول ميں۔

اول:علامہ نوویؒ فرماتے ہیں کہ کمال فی العبادت مقصود ہے اور پیہ جب ہی ہوتا ہے کہ بید دھیان ہو کہ اللہ مجھ د کیور ہاہے۔ جواب کے دو جملے ہیں کہ تو خدا کود کیور ہاہے در نہوہ مجھے د کیور ہاہے۔اس درجہ کا نام مقام اخلاص ہے۔ ثانبی:علامہ ابن مجرُ قرماتے ہیں عبادت کے درجات بیان کرنامقصود ہے۔ درجات عبادت تین ہیں۔

ا.....براُتِ عهده: عبادت ال طریقہ سے کرے کہ ذمہ تکلیف سے بری ہوجائے بحیث یتفوع ذمة التکلیف یعنی عبادت بجمیع الشرائط والارکان ہو۔

سسمقامِ مشابده: الله پاک کے ساتھ اتنا حضور ہوجائے کہ کو یا الله سامنے ہیں جیسے جضور عظیمی فرماتے ہیں ((قرّة عینی فی الصلوة)) بی شندک جبی ہوگی کہ مقام مشاہدہ نصیب ہو۔

سامقام مراقبہ: اگرید دسرا درجہ حاصل نہ ہوتو یہ سوچ حاصل ہوجائے کہ اللہ پاک دیکھ رہا ہے اب شرح الفاظ یوں ہوگی فان لم تکن تو اہ فاستمر فی العبادة فانه یواک "فا" تعلیلیه ہے پہلا درجہ تو ہم کو بھی نصیب ہے اور جمہور کونھیب سے پہلا درجہ فرض ہے دوسرے درجے مستحب ہیں۔

کے حضرت تھانویؒ فرماتے ہیں کہ نماز میں کسی وقت تو اللہ کا دھیان ہرایک کونصیب ہوجا تا ہے اور کہیں نہیں تو تکبیر اولی کے وقت تو دھیان ہو ہی جاتا ہو گا۔اگر کوئی آ دمی کمزور اور بوڑھا ہوتو اس کوتل تو نہیں کر دیا جاتا اسی طرح اگر بالکل دھیان نہیں پھر بھی نقشہ تو ہے اگر نقشہ ہوتو روح پڑتی ہے اگر نقشہ نہ ہوتو روح کیسے پڑے گی ؟

ماالمسئول باعلم من السائل: اسائل: استمقصديه كمعدم علم مين دونون مساوى بين قيامت كي بارك مين جس ساوى يا مين تساوى؟ مين جس ساوى يا مين تساوى يا مين تساوى؟ مين جس ساوى يا مين تساوى يا مين تساوى يا مين كم مين تساوى يا كم مين تساوى يا كم مين كم تيرامير اعلم مساوى به وه كيد؟ كيونكه دونون شوح اول: سن لغوى لحاظ سے يه كها جاسكتا به كم الفاظ مشير بين كم تيرامير اعلم مساوى به وه كيد؟ كيونكه دونون

لِ بِارو ٢٨ مورة النحل آيت ١٢٨ ع نضائل نماز ٣٠٥ بحواله منهمات لحافظ ابن جرّ

کوا تناعلم ہے کہ قیامت آنی ہے اور یہ بھی علم ہے کہ وقت کی تعیین نہیں ہے۔

شوح ثانی: مقصود عدم علم میں تساوی ہے کہ عین کاعلم نتہیں ہے نہ ہمیں۔دوسری شرح میں قضیہ سالبہ ہادر کہلی شرح میں مقدولہ المحمول ہے۔

تساوی فی عدم العلم کی دلیل اولی سید دوسرامعیٰ تساوی بتساوی فی عدم العلم محاورے میں استعال ہوتا ہے۔ آگر چدلغتا وہ پہلی شرح ہے ای لئے آپ اللیفی نے اس کے بعد فرمایا ساخبر ک عن السواطها نیز جرئیل نے کہا احبر نی عن امار اتھا بیتساوی فی عدم العلم مراد ہونے کی دلیل ہے۔

دلیلِ ثانی: شراح محدثین نے بھی ای پرمحول کیا ہے۔ میں اس پر زوراس لیے لگار ہا ہوں کہم کی کی ترویر میں نہ آ جاؤکہ جی اعضور علیقی کا معلم تھا اور جرئیل کو بھی لیکن آپ علیقی کے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ یہ راز کی بات ہے بتانے کی ضرورت نہیں ہے تی بیف کرنے والوں کا ایک قصہ بھی سن لیجئے۔ ﴿ قَلْدُ نَو ٰی تَقَلَّبَ وَجُهِکَ فِی السَّمَاءِ فَلَنُو لَیْنَگُ قِبْلَةً تُوضُهَا فَوَلٌ وَجُهَکَ ﴾ لوبدل ہی لو مفسرین ومحدثین واس کا ترجمہ کرتے ہیں، السَّمَاءِ فَلَنُو لَیْنَگُ وَاس کا ترجمہ کرتے ہیں، ضرور بدل دیں گے اس قبلہ کی طرف جس پر آپ راضی ہیں ۔ لوبدل ہی لو ۔ لیکن طحدین ، مخرفین یوں ترجمہ کرتے ہیں "نہم ضرور بدل دیں گے اس قبلہ کی طرف جس پر آپ راضی ہیں اس پرہم بھی راضی ہیں اس لئے کہ آپ کی رضا کے خلاف ہم کر ، یہ نہیں سکتے ۔ مفسر کی تغییر ہوگی ، خطیب کا خطبہ ہوگا نعرہ تکمیر لگا اور مختار کل خابت کیا۔

دوسرا خطیب کہتا ہے ہم آپ کے چہرے کے بلنے کود کیھتے ہیں تو آپ بلنتے رہیں اختیار تو ہماراہے ہم جب

جاہیں گآ پ کے چہرے کو ملیث دیں گے تو لو ملیث دیتے ہیں۔

سوال: آب علي المجالة في جواب من طول كيون اختيار فرمايا؟ اتنا كيون نهين كهدد يالااعلم؟

جواب اول:اس میں اس واقعہ کی طرف اشارہ ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے جریل ہے بہی سوال کیا تھا تو جو اب دیا۔ کیا تھا تو حضرت جریل نے بہی جواب دیا تھا تو آپ علیہ نے تأسیا وہی جواب دیا۔

جو اب ثانی: سستا کی خطبین کومعلوم ہوجائے کہ اللہ پاک کے سواکوئی نہیں جانتا۔ اس جواب میں مبالغہ فی الھی ہے کہ افضل البشر والرسل اور افضل الملائکہ جب دونو ہی نہیں جانتے تو معلوم ہوا کہ اللہ کے سوااورکوئی نہیں جانتا۔ سیا خبر ک عن امنسو اطھا: سسا شراطِ ساعت ابتداءً دوسم پر ہے۔ (۱) بعیدہ (۲) قریبہ پھران میں سے ہرایک و وسم پر ہے۔ (۱) جربہ خیر (۲) فریبہ شر۔ ہرایک کی مثال دوسم پر ہے۔ (۱) خیر (۲) شریبہ شر۔ ہرایک کی مثال

بعيده خير بعثت نبوى اللطلة ،بعيده شو ان تلد الامة ربتها قريبه خيو نزول عيس ،قريبه شو برم بيت الله تريف.

ا **ذاو لدت الامة ربھا:** جب لونڈی اپنے مالک کو جنے گی بعض روانیوں میں دہتھا ہے دونوں کا ایک ہی مطلب ہے تانیث بطورنسمہ کے ہے۔

اذا ولدت الامة ربها:اس جمله كي متعدد شرحيل بير

الشرح الاول: لونڈیاں بہت ہوجائیں گی پھرلوگ ان کو ام الولد بنائیں گے امِ ولد کثیر ہوجائیں گے۔ قرار کا میں گ۔ تو ظاہر ہے کہ مال بیٹے کی وجہ سے آزاد ہوجائے گی تو بیکٹر ت اِما آء کی طرف اشارہ ہے۔

المشوح المثانى: ئىج امهات الولد كنايە بے تصبيع حقوق سے يعنى اس ميں اشارہ ہے كه امهات لولدكى المشوح المثان تضييع حقوق سے يعنى اس ميں اشارہ ہے كہ امهات لولدكا و تاج ائز تونبيں كيك مينا بھى اس كوٹريد لے گا۔ المشوح المثالث: كثر توفساد سے كنايہ ہے اسے فساد ہوں كے كہ لوگ عورتوں كو پکڑ كر بيچنا شروع كرديں كر برز برد ھے گى پہنیں چلے گا كه ماں كہاں ہے اور بیٹا كہاں اور بھى ايسا بھى ہوگا كه ماں كوثر يدلے گا۔

و اقعہ: ایک مرتبہ م ج کے لیے گئے ہوئے تھے کمد کرمہ میں یہ بات مشہور ہوئی کہ ماں بیٹا مل گئے جو کتقسیم ہند کے وقت بچھڑ گئے تھے اسھے طواف کررہے تھے بڑھیا بیٹے کو بہت غور سے دیکھر ہی ہے، بیٹا کہتا ہے، بڑھیا کیوں دیکھر ہی ہو؟ کہنے گئی بیٹا تم میں مجھے اپنے بیٹے کی جھلک نظر آتی ہے۔اس نے بیٹا ہوناتسلیم کیا، تقسم ہند کے فسادات کے بعدایک دوسرے سے ملے۔

المشرح الموابع: عقوق والدین سے کنایہ ہے کہ نوجوان اپنی مال سے وہی سلوک کریں گے جوآ قا اپنی لونڈی سے کرتا ہے۔ رعب سے کام لیتا ہے کام نہ کرنے پر ڈائٹتا ہے۔ میں یہاں ایک بات کہا کرتا ہوں کہ جبتم بنج سے مال تہماری خدمت کرتی رہی اب نہ کرواؤ۔ اب تم ان کے کپڑے دھوؤ۔ ایبانہ ہو کہ تم چار پائی پر بیٹھواور مال باپ نیچے۔ کھانا نہ کچاتو ڈائٹ دو۔ ہم جب پڑھے لگ گئے تو چھیوں میں گھر جاکر ماں سے کپڑے نہیں دھلواتے تھے۔ جھڑت مولانا محمد قاسم صاحب کی گھروائی حضرت مولانا محمد طیب صاحب کی دادی فرماتی ہیں کہ جب میرا تکاح ہواتو سب سے پہلے بات یہ کہی کہ میں غریب ہوں اور تو امیر ہے میرا تہمارانباہ مشکل ہے یا میں امیر ہوجاؤں یا پھرتو غریب ہوجا۔ کئی باریہی بات کہی کہ میں غریب ہوں اور تو امیر ہے میرا تہمارانباہ مشکل ہے یا میں امیر ہوجاؤں یا پھرتو غریب ہوجا۔ کئی باریہی بات کہی بہاں تک کہ میں نے سب زیورات صدقہ کردیئے۔ پھر میں جب بھی میکے جاتی اس پر رزیورات سے آراستہ) ہو گآتی ۔ شو ہر کے گھر پہنی کرسب صدقہ کردیتے۔ پھر میں جب بھی میکے جاتی اس کی میت نکل گئی تھی ایک مرتب میں بھرگئی کہ ان کا کی میت نکل گئی تھی ایک مرتب میں نے ایک خوبصورت جا در ہدیہ کی تو فر مایا کہ بیتور کھنے کے قابل ہے میں بھرگئی کہ ان کا می مصدقہ کردے تا کہ ذخیرہ آخرت بن جائے۔ ان کا ایک اورواقعہ ہے جو یہاں سانا مقصود ہوہ ہے کہ مقصد ہے کہ صدقہ کردے تا کہ ذخیرہ آخرت بن جائے۔ ان کا ایک اورواقعہ ہے جو یہاں سانا مقصود ہوہ ہے کہ ان گا کے معرفہ دور ناپا کہ ہوجاتے تھے تو بیوی سے فر مانے گئے کہ کہ کے آگی میں میں ہوجاتے تھے تو بیوی سے فر مانے گئے کہ کہ

تخصے نفرت ہوگی میری تو مال ہے میں اپنی مال کے کپڑے دھوؤں گا ہوی نے کہا میں خدمت کے لے آئی ہوں میں دھوؤں گا، وی دھوؤں گی ، کافی دیریزاع ہوتار ہا آخر فیصلہ ہوا کہ ایک دن تو اور ایک دن میں دھوؤں گا۔

الشرح المخامس: انقلاب احوال سے کناریہ ہے کہ عالی، سافل ہوجا کیں گے اور سافل عالی نہیں سمجھے توسمجھ لو! مردینچے ہوجا کیں مجے اور عورتیں اوپر۔ (بےنظیر کی حکومت کی طرف اشارہ ہے)

باپ کی بیے ادبی کا ایک و اقعہ:ایک فض اپنے بیٹے کے ہاں مہمان ہواباپ دیہاتی تھابیٹا افسر۔ بیٹے کے ہاں مہمان ہواباپ دیہاتی تھابیٹا افسر۔ بیٹے کے پاس دوست واحباب بیٹے تھاس نے ذرا بے اعتنائی سے کہاادھر بیٹھ جاؤتا کہ دوستوں کو پتہ نہ چلے کہوں سے دوستوں نے پوچھ لیا کہ بیکون ہے؟ بیٹے نے کہا ہمارانوکر ہے۔ باپ نے سن لیا تو کہانوکر نہیں ہوں اس کی ماں کا قصم ہوں اور بیکھ کہ کراٹھ کرچلاگیا۔

باپ کے ادب کا ایک و اقعہ: مولانا عبراکیم سیالکوئی جن کتابوں پرحواثی کشرت سے پائے جاتے ہیں خصوصاً منطق کی کتابوں پرحواثی کشرید ہوئے ہیں میں جو کھی ہیں سکتا بہت کم حضرات مستنفید ہوتے ہیں۔ان کے تعلق مشہور ہے کہ وہ جب تصنیف کرتے تو پاؤس پٹر لیوں تک بادام روغن میں ڈبوکر بیضتے تھے۔ مغلیہ خاندان کے بادشاہوں میں سے کسی بادشاہ نے ان سے کہا کہ مولانا آپ کے والدصاحب کا بیان سننا چا بیٹے ہیں۔ مولانا نے گوارہ نہ کیا کہ والدصاحب کا بیان سننا چا بیٹے ہیں۔ مولانا نے گوارہ نہ کیا کہ والدصاحب کا ناخوا تدہ ہونا فطام ہوجائے۔کہاٹھ کے جائے والدصاحب کی خدمت میں جاکر عرض کیا کہ بادشاہ نے بیٹواہش کی ہے آپ منبر پر کھڑے ہوکر فاری میں کہدینا کہ جو کھوئیں نے بڑھا وہ عبدا کھیم کو سکھلا دیا۔ لہٰذا اس سے من لو۔ چنانچ ایسانی ہوا۔

عالی کے مسافل هونے کا ایک و اقعہ: سسایک کھنے اپنی ملازمہ کو کہا کہ طبیب کومیرا قارورہ دکھلالا کو املازمہ کے ہاتھ سے دو اقعہ: سسایک کے ہاتھ سے دو قارورہ کر کیا اس نے اپنا قارورہ طبیب کودکھادیا بطبیب نے کہا قل کی بات ہے کہ انہوں کے ہاتھ بھو بسوار نہ ہوا کراب نتیجہ جھے بھکتنا پڑے گا۔ بات جا کرسکھ کو بتلائی تو وہ کھرچا کرا بی بیوی سے جھڑنے لگا کہ بچھے کہا تھا جھے بسوار نہ ہوا کراب نتیجہ جھے بھکتنا پڑے گا۔

رعاة الابل البهم: بم ابل ك صفت بيارعاة ك ابل كى صفت بوتو بحرور بوكامعنى سياه اونث اكررعاة كى مفت بوتو معنى بوكاء اونث الروعاة كى صفت بوتومعنى بوكاء اونثول كوچران واليكالوث تقد

فى خمس لايعلمهن الاالله:سوال: كيامرف باغ چيزي بي جن كومرف الله بإك جائة بين جمير الله بإك جائة بين جبر آن مجيد شن دورى جكد من وكاليعكم خنود ربعك الافول في

جواب:اصل میں سوال صرف پانچ چیزوں کے بارے میں تعاور نظم غیب متنائی نہیں ہے اس کے علاوہ بھی چیزیں ہیں مثلاً قرآن میں ہے کا یَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّکَ إِلَّا هُوْلِي بِقِيدواتِق ہے احترازی نہیں کیونک مذکور فی السوال آیت سے پانچ کی قیداد ٹوٹ گئ۔

سوال:بت سارے لوگ کشف سے بتادیتے ہیں کہ کیا ہوگا لڑکا ہوگایالڑ کی۔ ایسے آلات بھی تیار ہوگئے حضرت ابوبرصدين جبفوت مون سكتوبوى عفرمايا بي كاحصد كاليناني مى بيداموكى جوكد لا يعلمهن الاالله كظاف -جواب: کشف جزئیات کانام علمنہیں علم قانون کلی کانام ہے جس سے پیۃ چل جائے کہ بچہ ہے یا بچی۔ای طرح کسی کواینے کلیات کاعلم ہوجائے کہ کل کیا کرنا ہے اور کہاں مرنا ہے، اس کا نام علم ہے ا۔مثلا میاں جی کونماز کے سومسئلےمعلوم ہو گئے تو کیا کہو گے کہمیاں جی عالم فقہ یافقیہہ ہو گئے؟ بلکہ فقیہہ اسے کہو گے جوفقہ کی گلیات جانتا ہو۔ ۲۔ جیسے طب کی کتاب ایک آ دمی کے ہاتھ لگ گئی اس نے طب کے جالیس پچاس مسئلے یاد کر لیے تو کیا طبیب بن گیا؟ یمی بات علم غیب کی ہے کشف جزئیات اور چیز ہے اور علم کلیات اور چیز ہے۔ بریلوی اس میں فرق نہیں کرتے۔ لطيفه: لطيفه كي طوريهم كهتر بين كم علم غيب الله تعالى ني آتخضرت عليك وكب دياتها جرت سے يهل يابعد میں مذکورہ بالا باتیں وفات سے چندون پہلے کی ہیں علم غیب مرض الوفات میں مل گیا تھا؟ جبکہ مرض الوفات میں آپ علی سوال کرتے میں اَصَلّی الناسُ؟ لوگ کہتے ہیں کہ ہیں سرِهی۔ پھر جب آپ علیہ کی طاری ہوجاتی ہے پھر جب افاقہ ہوتا تو استفسار فرماتے۔عالم آخرت کے متعلق آنخضرت علیہ فرماتے ہیں کہ میرے اُمتی آئیں گے اللہ تعالی درمیان میں یردہ حاکل کر دیں گے۔آ ہے ایک فی فرما کیں گے اصحابی، اللہ تعالی فرما کیں گے اِنگ الاتلوی مااحلتو ابعدک^ل آ تخضرت النه في الما كرقيامت كرن الله ياك كالعريف كرول كا يلهمني المحامد احمده بها لم يحضوني الآن ع معوال:ايمان، احمان، اسلام اور قيامت ان حيار چيزون كي حضرت جريل عليه السلام في خصيص كيون كي؟ جواب: ترتیب واقعی کا تقاضا یہی تھا کہ سب سے پہلے دل میں ایمان آتا ہے جب دل میں تائید کرتا ہے توبدن میں اعمال ،اسلام آتا ہے پھر اعمال کرتے کرتے احسان پیدا ہوجاتا ہے پھر جب احسان پیدا ہوتا ہے تواللہ کود کھنے کاشوق پیدا ہوتا ہے۔ درجہا حسان میں رؤیت تھکی ہے بید نیاہی میں نصیب ہو جاتی ہے کیکن حقیقی رؤیت مرنے کے بعد ہوگی۔'



(۲۹) حدثناابراهیم بن حمزة قال حدثناابراهیم بن سعد عن صالح بم سے بیان کیا ابراہیم بن معد عن صالح بم سے بیان کیا ابھوں نے صالح بن کیات سے عن ابن شہاب عن عبید اللہ بن عبداللہ ان عبداللہ بن عباس اخبرہ انھوں نے ابن شہاب سے انھوں نے عبیداللہ بن عبداللہ سے یہ کہ ان کوعبداللہ بن عباس نے خردی،

ا بخاری شریف ج ۲س ۹۷۴ سیخاری شریف ج ۲ ص ۱۱۸

﴿تحقيق وتشريح﴾

باب بلاتر جمه كي حكميتي اورفوائد:

فائده اول: یا تو پہلے باب کا نتیجہ ہوگا اگر اس کو پہلے باب کا تتمہ بنا کیں توبات آسان ہے کہ پہلے باب میں دین واسلام کا ایک ہونا ٹابت کیا اور اس باب میں بھی۔

فائده ثاني: يا بهى طلبه كاامتحان مقصود بوتائ كه طلبه خود ترجمه قائم كرير-

و گذلک الایمان حین تخالط:سوال: استدلال نةول صحابی سے ہاورنہ ی آنخضرت علیہ کے خرات علیہ الایمان حین تخالط استدلال ہے تو یہ استدلال سے قبیلا ہے کہ علیہ برقل کے قول سے استدلال ہے تو یہ استدلال سے نہوا کیونکہ استدلال اس طرح ہے کہ برقل نے اپنے سوال میں دین کا لفظ استعال کیا ہے سخطة لدیند۔ اور جواب کے بعدای دین کوایمان سے تعبیر کیا و کذلک الایمان حین تخالط.

جوابِ اول: قولِ برقل پہلی کتابوں پر بنی ہے لہذا قولِ برقل سے بیاستدلال نہیں بلکہ کتبِ سابقہ سے ہے قو سنب سابقہ میں بھی یہ بات ہے کہ ایمان ووین ایک ہے۔

جوابِ ثانی: ناقل حضرت ابن عباس اور بغیر انکار کے نقل کررہ ہیں تو یہ استدلال ابن عباس کی تقریرے ہیں تو یہ استدلال ابن عباس کی تقریرے ہے۔

فائده ثالث: يايداختبارطلبك ليه عقال عضلف راجم ك عاكة بي

ا استمن یشرح صدره للاسلام لایرتد قط ۲ سبب الایمان اذا خالطه بشاشته القلوب تویزید وینقص ثابت بواکیونکه بشاشت کی کوکم بوتی ہے اور کی کوزیادہ۔ سسبباب الایمان یزیدوینقص کماً و کیفا کیف کے لحاظ سے تو آپ س چکے ہیں "یزید" میں زیادتی کم کے لحاظ سے ہے۔ اسموقع پراستادِ محترم نے بیشعر پڑھا۔

ایک طرف زوئے جاناایک طرف بہشت کی ہتاروح جلدی کدھر جائے گی؟

(۳۹) باب فضل من استبرأ لدینه، جو خض اپنادین قائم رکھنے کے لیے (گناہ سے) بچاس کی نضیلت

(۵۰) حدثناابونعیم حدثناز کریا عن عامر قال سمعت النعمان بن بشیر ایم ابونیم نے بیان کیا کہا ہم سے زکر گئے نے بیان کیا انھوں نے عام سے کہا میں نے نمان بن بشر سے نام سمعت رسول الله علاق اللہ علال بین والحرام بین یقول الحلال بین والحرام بین یقول سمعت رسول الله علاق سے نا آپ فرات سے: طال کھا ہوا ہے اور ترام کھا ہوا ہے وہ کہتے سے میں نے آخضر سیالت سے نا آپ فرات سے: طال کھا ہوا ہے اور ترام کھا ہوا ہے وہ بین وابینهما مشتبهات لایعلمها کثیر من الناس فمن اتقی المشبهات اور ان دونوں کے بچی میں بحض چزیں شہری ہیں جن کو بہت لوگنیں جانے رسال ہراہ ہی جوکوئی شہری چزوں سے بچا استبراللدینه وعرضه ومن وقع فی الشبهات کراع استبراللدینه وعرضه ومن وقع فی الشبهات کراع اس نے آپ دین اور عزت کو بچالیا اور جوکوئی آن شہری چزوں میں پڑگیا اس کی مثال اس چروا ہے کسی یو می میں یوشک ان یواقعه الاوان لکل ملک حمی یو علی حول الحمی یوشک ان یواقعه الاوان فی الجسد مضغة اذا صلحت جوزئیں بچاگاہ کے آس بیاس (ہے براس میں جرام چزیں ہیں ، من لو بدن میں ایک (گوشت کا) لوتم وائے ، جب وہ درست ہوگا ، برا لواللہ کی چاگاہ آگی زیمن میں جرام چزیں ہیں ، من لو بدن میں ایک (گوشت کا) لوتم وائے ، جب وہ درست ہوگا ، برا لواللہ کی چاگاہ آگی زیمن میں جرام چزیں ہیں ، من لو بدن میں ایک (گوشت کا) لوتم وائے ، جب وہ درست ہوگا ، برا لواللہ کی چاگاہ آگی زیمن میں جرام چزیں ہیں ، من لو بدن میں ایک (گوشت کا) لوتم وائے ، برا دورات ہوگاہ ، برا لواللہ کی چاگاہ آگی زیمن میں جرام چزیں ہیں ، من لوبدن میں ایک (گوشت کا) لوتم وائے ، برا دورات ہوگاہ ، برا دورات ہوگاہ ، برا دورات ہوگاہ کی ایک دورات ہوگاہ کیا کھرائی کو برائی میں میں دورات ہوگا

صلح الجسد كله واذا فسدت فسد الجسد كله الاوهى القلب الارا بدن درست موكا اور جب وه بكرا سارا بدن بكراكيا، من لو وه لوترا (آدى كا) ول ب

وتحقيق وتشريح

مديث كى سنديس جار رواى بين ،چوشخ نمان بن بشروش الله تعالى عنه بين وهواول مولودولد

للانصاربعدالهجرة والاكثرون يقولون ولد هووعبدالله بن زبير رضى اللهعنهم في العام الثاني من الهجرة وقال ابن الزبيرهواكبرمني روى له مائة حديث واربعة عشره حديثا قتل في مابين دمشق وحمص يوم واسط سنة خمس وستين وليس في الصحابة من اسمه النعمان بن بشيرغيرهذا فهومن الافرادي

توجمة الباب كى غوض: امام بخارى كى غرض يه ب كه پر بيز گارى مكملات ايمان سے ب ايمان كى خرض يه ب كه پر بيز گارى مكملات ايمان سے ب خالى ايمان كى طرح پر بيز گارى كے بھى درجات بيں ا۔ شرك سے پر بيز ب ٢- كبائر سے بچنا ٣- مروم بيز جوالله پاك سے عافل كرنے والى ب مستعبات سے بچنا ٥- مباحات سے بھى اپ آپ كو بچانا ٢- بروه چيز جوالله پاك سے عافل كرنے والى ب اس سے اسے آپ كو بچانا۔

صوفی کے بارے میں کہتے ہیں کہصوفی وہ ہوتا ہے جواکیلا ہو،ا کیلے کے ساتھ رہے دیکھنے کو تو جمع میں بیٹیا ہولیکن مجمع میں نہیں ہوتا اس کی توجہ اللہ پاک کی طرف ہوتی ہے۔ سائیں بلص ثاہ کہتے ہیں۔ جودم غافل سودم کا فر

| | شاید که نگاه کنند توآگا ه نباشی | \$ | یك چشم زدن ازآ س شاه غافل نباشی |
|---|---------------------------------|-----------|---------------------------------|
| - | بسيارسفر بايد تاپخته شود خامے | | صوفی نشود صافی تادرنکشد جامے |

ایک موقع پراستاد محرم نے درس بخاری میں مولا ناروم نے بیشعر پر ها۔

قال رابگزارمرد حال شو 🗘 پیش مرد کاملے پامال شو

حمى :حمى ال جكركوكة بين جسكوبادشاه الني ليخاص كرلة الم اسلام بين الى اجازت بين -وبينهما هشتبهات : سوال: هشتبهات كم متعلق چرروايتي التي بين (١) روايت الباب (٢) متشبهات (بضم أميم وتشديد الباء أمكوره) (٣) مشبهات (بضم أميم وفتح الشين وفتح الياء المشدده) (٣) مشبهات (بكسر الباء على صيغة الفاعل (۵) مشبهات (بضم أميم وسكون الشين وكر الباء المحقفه) سياور الوداؤدكي روايت مي وبيهما أمو د متشابهات إن مين بظام تعارض مي؟ جواب: المساريكي تين روايتون مين كوئي تعارض نبين بلكه بيان انواع بي تين قسمين بين-

ا: مشبهات: جن مين تعارض أدله موان كومشهات كهتم بين توان مين اشتباه في الدليل موتا ہے۔

٢: مشتبهات : تكورض اجتهاد موج تهدين كا، اختلاف موايك حلال كيدوسراحرام

۳: متشابهات: ایک جانب حلال کی طرف جواور دوسری جانب حرام کی طرف اوروه حلال کے مشابہ ہے ؟ اورحرام کے بھی۔اس کومتشا بہات کہتے ہیں۔اس کومکر وہ کہتے ہیں۔

ان تین روایتوں میں کوئی تعارض نہیں البتہ ابوداؤد کی روایت سے تعارض ہے کیونکہ اس سے معلوم ہوتا ہے کان کوچھوڑ ناضروری نہیں کہے جبکہ باقی ان سب روا بتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کوچھوڑ نا چاہیئے۔ جواب اول: بخارى شريف كى روايت مين درجه ورع كابيان ہے اور ابوداؤد كى روايت مين درجه بجواز

جواب ثانی: سین بخاری شریف کی روایت کامصداق وہ ہے جس میں تعارض ادلہ ہوجو کہ همات کا درجہ ہے اورابودا ؤدكى روايت و ماسكت عند سے مرادوہ درجہ ہے جس میں تعارض ادلہ نہ ہوبلکہ مسکوت عنہ ہو۔

ان فی الجسد مضغة : طب ظاہری کے لحاظ ہے بھی یہی ہے کہ دل بگڑ گیا تو ساراجم بگڑ گیا اور طب باطنی کے لحاظ ہے بھی اگر دل کے اندر محبت الہی محبت رسول علیہ خشیت، ورع، تقوی، ایمان اور خدا کا خوف ہوتو اس کے ا عمال آخرت کے لئے ہوجاتے ہیں۔اگر دنیا کی محبت بھری ہو بغض،حسد ہوتو اعمال دنیا کے لئے ہوجاتے ہیں۔ عقل کھاں ھر ؟: عقل ول میں ہے یا د ماغ میں؟ احناف کہتے ہیں عقل د ماغ میں ہے۔ شوافع کہتے ہں مقل ول میں ہے۔

< صنرت ملامدانورشاہ کشمیری فرماتے ہیں عقل کا مرکز دل ہے اظہار د ماغ سے ہوتا ہے۔ جیسے بجلی کا مرکز بلن ے اورا ظہار عکھے وغیرہ ہے ہوتا ہے۔ دل ہے برقی روئیں جب د ماغ تک پہنچتی ہیں تو د ماغ سو چتا ہے اس لیے دل کو ذراد کیولیا کرو کو کس طرف ہے لیکن ہے بیر دامشکل کام ۔ کیونکدول ہی جانتا ہے اورول ہی نے جاننا ہے۔ شعر دل دریا سمندورں ڈونگا کون دِلاں دیاں جانے ھو

حدیث پاک میں آیا ہے کہ دل ایسے ہے جیسے ایک میدان میں پرندے کاپر پڑا ہوا ہوا ور ہوائیں بھی اس کو اس طرف بات ويت بين اور بهي اس طرف ، ايك حال يزبين ربتا ماسمى القلب الاليتقلب حضرت عبدالله اندگ کا قسہ پہلے گز رچکا ہے۔



(۴۰) (۴۰)باب اداء الخمس من الايمان غنيمت كمال مين سے پانچوال حصد ديناايمان مين داخل ہے

(۵۱)حدثناعلي بن الجعد قال اخبرناشعبة عن ابي جمرة قال كنت اقعد مع ابن عباس ہم سے بیان کیاعلی بن جعدؓ نے ،کہاہم کوخبر دی شعبہؓ نے ،انھوں نے ابوحز ٌہ سے،کہامیں ابن عباسؓ کے ساتھ بیٹھا کرتا تھا فيجلسني على سريره فقال اقم عندى حتى اجعل لك سهما من مالي وہ مجھ کو خاص اپنے تخت پر بٹھاتے ،ایک بار کہنے لگے تومیرے پاس رہ جامیں اپنے مال میں تیرا حصد لگادوں گا فاقمت معه شهرين ثم قال ان وفد عبدالقيس لما اتواالنبي السلم تو میں دومہینہ تک ان کے پاس رہا، پھر کہنے لگے،عبدالقیس کے بھیجے ہوئے لوگ جب آنخضرت اللغ کے پاس آئے قال من القوم اومن الوفد قالواربيعة قال مرحبا بالقوم تو آب نے فرمایا یکون لوگ ہیں؟ یافرمایا کون بھیج ہوئے ہیں؟ اُنھوں نے کہار بیعہ کے لوگ ہیں! آپ نے فرمایا مرحباان لوگوں کو اوبالوفدغير خزاياولا ندامي فقالوا يارسول الله انا لانستطيع ان نأتيك الا یاان بھیج ہوئے لوگوں کو، نیڈ کیل کئے ہوئے نہ شرمندہ کئے ہوئے۔وہ کہنے لگے یارسول اللہ ہم آپ کے پاس ہیں آ کتے لیکن في الشهر الحرام بيننا وبينك هذاالحي من كفار مضرفمرنا بامر فصل ادب والع مهينه مين، كيونكه مهار ساورآب كورميان كفارمضركا قبيله ہے، تو ممكو خلاصه أيك اليي بات كا بتلا و تحيينے نخبربه من وراء نا ندخل به الجنة ک جس کی خبر (ہے) ان او گوں کوکر دیں جو ایہاں نہیں آئے ، اور اسپر عمل کر کے ہم بہشت میں جائیں ، اور انھوں نے وسألوه عن الاشربة فامرهم باربع ونهاهم عن اربع، أمرهم آنخضرت الله الله المان کے بارے میں بھی یو چھاء آپ نے چار باتوں کا انکو تھم دیااور چار باتوں مے نع کیاءان کو پیکم دیا کہ بالايمان بالله وحده قال اتدرون ماالايمان بالله وحده؟قالوا ا كيل تي) خدار ايمان لاؤ،آپ فرمايا جانة مواكيل سي خدار ايمان لاناكياب؟ انهول في كهاريوبين

الله ورسوله اعلم ، قال شهادة ان لااله الاالله وان محمدا الله الدالله والله وان محمدا الله الدادراركارسول خوب جانتا بي آپ نے فرماياس بات كي گوائل دينا كدالله كسواكوئي عبادت كدائل نيس اور محمدا رسول الله واقام الصلوة و ايتاء الزكوة و صيام رمضان وان تعطو امن المعنم اس كرسول بين، اور نماز نحيك اداكر نا اورزكوة دينا اور مضان كروز بركفنا، اور (برزرت) جولوث ملياس كالمخمس و نهاهم عن اربع، عن المحنتم و المدباء يا نجوال حصد (بيت المال كو) دينا اور چو تول سے ان كو منع كيا، سبز لاكھي اور كدوك تو نے والمنقير و المحرفت و ربما قال المقير و قال احفظوهن و احبرو ابهن من و رائكم اور كريد يہ ہوئي لائن در من اور من الله يا تو الله الله يا تو الله يا الله ي الله يا تو الله يا تو الله يا تو الله يا ته الله يا ته يا يا الله يو يعلى بتلادو ركو و لوگ ته ادر يه يك ين ان كو بحى بتلادو

وتشريح

تعارف حضوت ابو جمره: ابوجره تابع بین ان کانام نفر اور والد کانام غران ہے جو کے قبیلہ ضعیہ ہے بین ضعیہ عبرالقیس کی ایک شاخ ہے ای وجہ سے غالبًا ابن عباس ٹے آئیس ان کی قوم کے متعلق صدیث سائی۔ تو جمعة الباب کی غوص:اس سے مقصو وایمان کا ذوا جزاء ہونا بیان کرنا ہے اور بیکہ اوا غمس ایک جزء ہے۔ فیے جلسنی علمی مسویوه:اپ ساتھ سریر پر بھلانے کی دورجہیں بتلائی جاتی ہیں۔ الموجه الاول: حفرت ابن عباس شحصرت علی کی طرف سے بھرہ کے امیر شے حضرت ابن عباس شک کے بیت مائی آتے تھے تو ابوجرہ فاری جانے کی وجہ سے حضرت ابن عباس شک کے ترجمان کی حیثیت سے بیٹھتے تھے۔ الموجه الثانی:ایک مسلم میں اختلاف تھا کہ جج تہ ہم کی انہ بعض صحابہ کرام شرح تھے کا احرام باندھالوگوں الموجہ الثانی:ایک مسلم میں انتقال نے تو فیمانی کی کرایا تو جو باندھتااس پر کیر کر تے دھزت ابن عباس شک کی قائر ام باندھالوگوں نے آئیس منع کیا۔ حضر سابق بان سے بوچھا تو آپ نے فرمایا جائز ہے ابن عباس شک فتوی کے مطابق عمل کرلیا تو خواب میں دیکھا کوئی کہ در ہا ہے ، حج مبرود و عمرة متقبلة انہوں نے لوٹ کر ابن عباس شکو تو دی تو ابن عباس شک کوئی کی میں انتقال کرتا تو معلوم ہوا کہ ترب بال ظہر و میرے کھانے سے کھایا کرتا تو معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ سے موالے کوئی کی مدر کرنا جائز ہے ۔ سے موالے کی خواب سے دور کی خواب سے اور اس صدیث سے بہت خوش ہوئی کہ میں انتقال کرتا ہوں سے بہت خوش ہوئی کہ مدر کی جائے ہوا مسئلہ درست ہوا۔ پھی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ سے دور اس صدیث سے بی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ سے دور اس صدیث سے بی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ سے دور اس صدیث سے بیست معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ اور اس صدیث سے بیستی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ سے دور اس صدیث سے بیستی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت مقرد کرنا جائز ہے ۔ سے دور اس صدیث سے بیستی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجرت کے مقرد کرنے کے دور اس صدید سے بیستی معلوم ہوا کہ ترجمان کی اجران سے دور اس صدید سے بیستی معلوم ہوا کہ تر جملا کو بیستی میں کی سے دور اس صدید سے بیستی میں مورد کوئی کے دور اس صدید سے بیستی میں میں کرنے کوئی کر میں کرنا ہوں کے دور اس صدید سے بیستی میں کرنے کوئی کرنے کرنے کر م

ل انظر: ۸۷ ، ۱۳۹۳ ، ۱۳۹۸ ، ۳۵۱۰ ، ۳۵۱۰ ، ۳۳۱۸ ، ۲۲۲۷ ، ۲۲۲۷ ، ۲۵۵۷ : دقوم الاحاديث بخاری مطبوعه دارالسلام الرياش کي ترتيب پر پيري بخاری شريف جاص ۳۳۱۳ قر بری بخاری جام ۱۸۵

وفد عبدالقيس: وفرعبرالقيس دومرتبة يا پهلى مرتبه هين الآدى آئے دوسرى مرتبه هين جالين آدى آئے ان كے سرداركانام افتح تفاد مدينه منوره پنچ توباقى ساتنى دالها نداز مين حضور الله كا كال مين آگئين اس نے سواريول كوسنجالا، نهايا، كار حضور الله كا خدمت مين حاضر موارة بالله نے فرمايا تير اندردو حسلتين بهت پنديده بين، المحلم، والاناء ق.

من القوم او من الوفد: شكراوى بــ مرحباً: فعل محذوف كامفعول مطلق بــ

غیو خوایا: خزایا بخزیان کی جمع ہے (بمعنی نذلیل کئے ہوئے)، کیونکہ یہ لوگ خوشی ہے مسلمان ہوگئے تھے۔

الملمی : ندامی، ندمان کی جمع ہے شراب پینے والا ساتھی لیکن یہاں یہ معنی درست نہیں بنا بلکہ نادم کی جمع مانیں تومعنی حمیح ہیں کیونکہ معنی ہوگانہ نادم کئے ہوئے ۔ تو یہ جمع بھی نادم کی ہی ہے خلاف قاعدہ اس کو جمع از دواجی کہتے ہیں لیعنی جوڑا بھانے کے لیے ۔ جیسے غدایا، وعشایا ۔ جیسے لا ملجاء ولامخی اصل میں منجی تھا یہ ہمزہ از دواجی ہے ورنہ مخباکی کا مطلب جلدی کرنا اور یہ معنی یہاں درست نہیں بنا ۔

هذاالحي: مرادكفارم عركا قبيله-

الشهو حوم:ا ـ ذوالقعده ٢ ـ ذوالحجه ٣ ـ محرم ١٠ ـ رجب

الشهو حج:ا شوال ٢- ذوالقعده ٣- دس دن ذوالحبك

لانستطیع:سوال: وفدعبدالقیس نے کہا کہ ہم صرف اشہر حرم میں آسکتے ہیں حالانکہ یہ فتح مکہ کے بعد آئے جبکہ اسلام غالب ہو چکا تھا اب کون روک سکتا تھا تو کیے کہد دیا انالانستطیع.

جواب:انالانستطيع والاواقعه لا ه كاب اس وقت اسلام غالب نہيں ہوا تھا ہے جمری میں دوسری بار آئے تھے (انہوں نے آپ علیہ سے دوسوال کئے)(ا)امرفصل (۲)....عن الاشرب

فامرهم باربع: سوال: اجمال وتفعيل من مطابقت نبين؟

جواب اول: سسایک ہی چزیان کی ہے باقی سباس کی تفصیل ہے باقی تین کوسی وجہ سے چھوڑ دیا۔

جوابِ ثانی: شھادتین کاذکرتوتمہیداورتبوک کے لیے ہے۔

جواب ثالث: نمازاورزكوة كوشدت اتصال كى وجه ايك بى شاركيا ـ

جو اب رابع:وان تعطوا من المعنم الحمس الكاعطف اربع برب بدار بع كتحت داخل نبيل به يعنى آپ عليه في المعنم المعن

لرُ الى ضرورى تقى اس ليه ام بخارى في على ده باب باندها (باب اداء الحمس من الايمان)

فنهاهم عن اربع: سوال: وقد في اشرب كمتعلق سوال كيا اورآب علي جواب مي برتول ك احكام بيان فرمار بي اين؟

جو اب : سائل کے سوال کو نخاطب بہتر طریقہ سے مجھتا ہے اصل سوال ہی برتنوں کے متعلق تھا۔

حنتم: سنررنگ كا گفرا-

الدبآء: كدوت بنايا بوابرتن _

نفير: كجعور كى ككڑى كھودكر بنايا ہوا برتن بقير بمعنى منقر ـ

المذفت: زفت ملا موالك كي طرح كى چيز باس سوزرا مكى سيابى مأل موتى باورليس مارزياده موتى بـ

فائدہ:ان برتنوں سے نہیں منسوخ ہو چی ہے دلیل مسلم شریف ص ۱۲۲ج۲ کی روایت ہے۔

11)

راباب ماجآء ان الاعمال بالنية و الحسبة و لكل امرء مانوى الربات كابيان كمل بغيرنيت اور ظوص كر الميح البين موت اور برآ دى كودى ملى المونيت كرب

فدخل فیه الایمان والوضوء والصلوة والزكوة والحج والصوم والاحكام توعمل میں ایمان اوروضواورنماز اورزکوة اورج اورروزه اورمارے معاملات (جے قرفرہ میں مسان دیر،) آگئے وقال الله تعالیٰ: (قُلُ كُلَّ یَّعُمَلُ عَلیٰ شَاكِلَتِهِ) علیٰ نیته اورالله تعالیٰ نے (سوره بنی اسرائیل میں) فرمایا: اے پینی کہدو ہرکوئی ایخ طریقے یعنی اپن نیت پگل کرتا ہے نفقة الوجل علی اهله یحتسبها صدقة وقال النبی عَلَیْ ولکن جهاد ونیة اور (ای وجہ ہے) آدی اگر ثواب کے لیے خدا کا عم جمح کرایخ گروالوں پر فرج کرے قوصد قد کا ثواب ماتا ہے (اور جب مکہ فتح ہوگیا) تو آئے خضرت عَلَیْ نے فرمایا (اب جمرت نہیں رہی) اورلیکن جماد اور نیت باتی ہے۔ (اور جب مکہ فتح ہوگیا) تو آئے خضرت عَلیْ نے فرمایا (اب جمرت نہیں رہی) اورلیکن جماد اور نیت باتی ہے۔

سے بیان کیا عبداللہ ابن مسلمہ ؓنے ،کہا خبردی ہم کو امام ما لگ نے،انھوں نے کیجی بن سعیدؓ سے

عن محمدبن ابراهيم عن علقمة بن وقاص عن عمر ان رسول الله عَلَيْكُمْ انہوں نے محمد بن ابراہیم سے، انھو ل نے علقمہ بن وقاص سے، انھول نے حضرت عمرٌ سے کہ رسول اللہ علیہ بالنية ولكل امرئ مانوى فمن الاعمال نے فر مایاعمل نیت ہی سے (صحیح) ہوتے ہیں (ایت ہے ان برازا ہے ہے) اور ہرآ دمی کووہی ملے گا جونیت کرے، پھر جو کوئی كانت هجرته الى الله ورسوله فهجرته الى الله ورسوله اپنا دلیس اللہ اوراس کے رسول کے لئے چھوڑے گا اس کی ججرت اللہ تعالی اوراسکے رسول کی طرف ہوگی ومن كانت هجرته لدنيا يصيبها او امرأة يتزوجها فهجرته الى ماهاجراليه اور جوکوئی دنیا کمانے کے لیے ایک عورت کوبیا ہے کے لیے دیس چھوڑ سے اتواس کی جمرت آئی کاموں کے لئے ہوگی جن کے لئے اس نے جمرت کی (۵۳) حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني عدى بن ثابت قال ہم سے حجاج بن منہال ؓ نے بیان کیا کہاہم سے شعبہ ؓ نے بیان کیا، کہا مجھ کوعدی بن ٹابت ؓ نے خرری، کہا معت عبدالله بن يزيد عن ابي مسعودً عن النبي عَلَيْكُم قال میں نے عبداللہ بن بزید سے سنا،انھوں نے ابومسعود سے،انھوں نے نبی کریم اللہ سے ،آ یہ ملک نے فرمایا اذا انفق الرجل على اهله يحتسبها فهى صدقة جب کوئی اینے گھروالوں پر تواب کی نیت سے (اللہ کاعکم سجھ کر) خرج کرے تو صدقہ کا تواب یائے گا۔ (۵۴)حدثناالحكم بن نافع قال اخبرنا شعيب عن الزهرى قال حدثنى ہم سے ابویمان علم بن نافع نے بیان کیا کہا ہم کوشعیبؓ نے خبردی، انھوں نے زہریؓ سے کہا مجھ سے بیان کیا عامر بن سعد عن سعد بن ابي وقاص انه اخبره ان رسول اللهُ الله الكه الكرا الله الكراك الله الكراك الله الله الكراك الله الله الكراك الكراك الله الكراك الكراك الله الكراك الكراك الله الكراك الكراك الكراك الكراك الكراك الله الكراك عامر بن سعدٌنے کہ سعد بن ابی وقاصؓ نے انہیں خبر دی کہ رسول اللہ علیہ کے فرمایا توجو کچھ خرچ کرے

ل نام عقبه بن عمرو بن تغلبه به کل مرویات ۱۰۲ مین کوفه مین رئیس و تقال بواد وسراتول مدیند کا به: مین مرویات ۱۳۹۵ مین انظر: ۱۳۹۵ مین ۱۳۹۳ مین ۱۲۵۳ مین ۱۲۸۳ مین ۱۲۸ مین از ۱۲۸ مین ۱۲۸ مین از ۱۲۸ مین از ۱۲۸ مین ۱۲

تبتغي بها وجه الله الااجرت عليها حتى ماتجعل في فم امرأتك ع

اوراس سے تیری نیت اللہ کی رضامندی موتو تجھ کواس کا تواب ملے گایبال تک کماس پھی جوتوایی بیوی کے مندمیں ڈالے

﴿تحقيق وتشريح

تر جمة الباب کی غوض:اس باب سے یہ بیان کرنا مقصود ہے کہ صرف زبانی ایمان کوئی چیز نہیں جب تک دل کے اندر تقدیق نہیں جب کہ دل کے اندر تقدیق نہیں جب تک دل کے اندر تقدیق نہیں جب

الحاصل: كراميكارد محققين في الكهام كرايمان كين درج بير

ا : و جودِ عینی: یه ایک محسول چیز ہے قلب میں نور پیدا ہوتا ہے بیریزید وینقص ہے جب اس کا وجود ہوتا ہے۔ تو سب سے پہلے انسان شرک سے بچتا ہے پھر دوسرے کہائر سے رکتا ہے۔ اہل مکاففہ کواس کا احساس ہوتا ہے۔ ۲ : و جودِ ذھنبی: کرذ ہن میں تصدیق وسلیم کر ہے۔

سا: و جودِ لفظی: شها دتین کا تلفظ کرے تو اس کا کوئی فائدہ نہیں اس سے مرف لوگوں کو دھوکا دے سکتا ہے کہ میں مسلمان ہوں۔

الم بخارگُ فرمارے بیں الاعمال بالنیة اورالایمان هوالعمل لهذا الایمان بالنیة ای بالتصدیق القلبی ۔ تو کرامیہ پرردموگئ ۔

نیت اور حسبه میں فرق: ا بعض کتے ہیں کہ نیت اور حبد ایک ہی چیز ہے معنی تواب کی نیت کرنا۔ ۲ سے علامدانور شاہ صاحبؒ فرماتے ہیں حبہ نیت صححہ کے علاوہ ہے حبہ نیت سے او نچا درجہ ہے نیت کے پائے جانے سے حبہ کا پایا جانا ضرور کی نہیں جبکہ جہال بھی حبہ پائی جائے گی نیت ضروری پائی جائے گی۔

و الموضوء: يهال سے امام بخاري حنفيه پرردكرنا جا ہتے ہيں جن كے ہاں وضوميں نبيت ضروري نہيں۔

جواب اول:احناف وسائل اورمقاصد میں فرق کرتے ہیں۔وسائل کے لیے نیت ضروری نہیں مقاصد کے لیے نیت ضروری نہیں مقاصد کے لئے نیت ضروری ہے۔ کیڑا بدن وغیرہ بغیرنیت کے بھی پاک ہوجاتے ہیں ،البتہ مقاصد میں مقصد ہی تواب ہوتا ہے نیت بھی ضروری ہوگی۔وضووسائل کے قبیل سے ہے۔

جوابِ ثانی:وضومیں دو چزیں ہیں الطہیرِ بدن ۲۔ ثواب۔ ثواب کے لیے حنفیہ کے زدیک بھی نیت شرط ہے تو امام بخارگ وضو کا ذکر کر کے ردعلی الحفیہ نہیں کررہے بلکہ تائید کررہے ہیں کیونکہ امام بخارگ نے ترجمۃ الباب میں کہاہے المحسبة ای طلب ثواب اور طلب ثواب کے لیے نیت ضروری ہے نہ کہ تطہیر کے لیے۔

قُلُ كُلُّ يَّعُمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ:

تفسير اول: شاكلهاصل مين طبيعت كوكت بين اوريهان نيت كمعني مين بـــ

تفسیرِ ثانی:امام بخاریؒ نے ایک تفیر کوذکر کیا ہے دوسری تفیر شاکلہ کی بواطن سے کی جاتی ہے بینی جواس کے اندر ہوگا اسکے لحاظ سے ظاہری عمل کرے گا اگر معصیت کے جذبات ہوں تو معصیت ، اور اگر طاعت کے جذبات ہوں تو طاعت ۔ اگر اندر گالیاں بھری ہوں گی تو گالیاں بی دے گا۔

يحتسبها صدقة: ثواب كى نيت كرتائة ثواب ملے گاورند حقوق توادا موجائيں گے ثواب نہيں ملے گا۔ يېمى حنفيد كى تائيد ہے۔

جهاد و نیة: معلوم ہوا کیملوں میں نیتوں کا اعتبار ہے جہادشروع ہے تو جہادور نہ نیت جہاد کوئی امیر المونین جہاد کے لیے بلائے تو ہم جا کیں گے۔

حدثناعبدالله: فهجرته الى الله ورسوله: اشكال: تاتحاوِثر طوجزاب؟

جواب اوّل: شرط كى جانب في الدنيا اورجزاء كى جانب في الآخره محذوف بـــ

جواب ثانى: شرطى جانبنية محذوف ١ اورجزاء كى جانب ثواماً.

جواب ثالث: وهو الجواب: جزاك جانب جولفظ بيمقبولة سي كناييب

فہجرتہ الی ماہاجر آلیہ: سسوال: اس سے پہلے جملہ میں جزاء کی جانب یہ اختصار نہیں کیا گیاجو یہاں کیا گیا؟

جو اب: سن تعلیم ادب ہے کہ مجوب چیز وں کا تکرار باعث لذت ہوتا ہے اور غیر مجوب چیز وں کا تکرارا چھانہیں "ہوتا۔ دنیااور عورت مستحن چیزیں ہیں ہمیں بری حیرانی ہوتی ہے اس جہالت پر کہ ایک طرف عورت کہتے ہیں پھر کہتے ہیں کہ باہر نگلنے کا حق ہے۔

فائدہ: قرآن پاک میں سورة مریم وغیر ہامیں حضرت مریم کے سواکسی عورت کا نام نہیں آیا اور مردوں کا نام کئی جگہ آیا ہے وجہ اس کی میہ ہے کہ حضرت عیسی کے بغیر باپ کے پیدا ہونے کی تصریح ہوجائے۔ (44)

بابقول النبى عَلَيْكُ الدين النصيحة الله ولرسوله و لائمة المسلمين وعامتهم وقوله تعالى (إِذَانَصَحُو الله ورَسُولِه) وقوله تعالى (إِذَانَصَحُو الله ورَسُولِه) آخضرت عَلَيْكُ كَايفِر مانا (كردين كيابي؟) يَجِدل عَلَيْكُ كَايفِر مانا (كردين كيابي؟) يَجِدل عَلَيْكُ فرمانبردارى اوراس كي يغيراور سلمان حاكمول كي اورتمام سلمانول كي فيرخوا بي اورالله تعالى اوراس كرسول كي فيرخوا بي مين رين الله تعالى من كافر مان (مرة عنى) جب وه الله اوراس كرسول كي فيرخوا بي مين رين

ا حديثُ كَ سَرَيْنَ بِا فَيْ رَاوَى بِينِ بِانْتِج يَن جويوبن عبدالله بن جابوبن مالك بن نضو بن تعليه البجلي الاحمسى بين قرقيبيا مين ۵جبرى كوانقال بوا(وتيل غيرة لك)كل مرويات ۲۱۵۰ اظر: ۵۲۵ ، ۱۰۱۱ ، ۱۳۵۷ ، ۲۷۱۳ ، ۲۷۱۵ ، ۲۷۱۳ کا

واثنی علیه و قال علیکم باتقاء الله و حده الاشریک له و الو قار و السکینة حتی اوراس کی خوبیان کی اورکهاتم کوالله کا درکها و الیان شم قال استعفوا الامیر کم ، فانه کان کا در درا ما کم تمار فانما یأتیکم الان شم قال استعفوا الامیر کم ، فانه کان کوئی دو درا ما کم تمار ما تا یک مغفرت کی دعا با گوئی دو درا ما کم تمار ما تا یک مغفرت کی دعا با گوئی کوئیده یا یعب العفو شم قال اما بعد فانی اتیت النبی علی قلت المنبی علی تیت النبی علی تا تا که مسلم (مغیرة) بی معانی کوپند کرتاتها، پر کهاس کی بعدتم کو معلوم بوک می آخضرت الله کی بی تا یا در می المسلام فشوط علی و النصح لکل مسلم می آبی بی تا بیات کی بی تا بی الله کان می مسلم می تا بی تا بی که الله که شرط علی و النصح لکل مسلم می آبی بی تا بی الله که تا بی که الله که شم شرار اخرخواه بول، پر استخفار کی فیلی تا الله می شرط پر آبی بی الله که قدم می شرار اخرخواه بول، پر استخفار کیا و نزل و نزل

وتحقيق وتشريح

تو جمه الباب کی غوض:ای باب سے بھی امام بخاری فابت کرنا چاہتے ہیں کہ اجزاء
دین بیل نفیحت بھی ہے بلکہ نفیحت اتنا اہم جزء ہے کہ اگر یہ کہد دیا جائے کہ دین نفیحت بی ہے تو بھی مناسب ہے۔
قاعدہ کلیہ: مبتداء اور خبر کی تعریف حصر کا فائدہ دیتی ہے پھر حصر کی دوصور تیں ہیں۔(۱) مبتدا کا حصر خبر پر
قاعدہ کلیہ: سیم مبتدا ہے اور خبر کی تعریف حصر کا فائدہ دین نفیحت بی ہے حالا نکہ یہ تو ٹھیک نہیں
(۲) خبر کا حسر مبتدا پر۔اگر پہلی صور ہے بہوتو اس صورت میں ترجمہ ہوگا کہ دین نفیحت بی ہے حالا نکہ یہ تو ٹھیک نہیں
ہے حالا نکہ اور بہت ساری چیزیں دین ہیں۔ تو جواب یہ ہے کہ حصر مبالغہ کے لیے ہے۔ اگر دوسری صورت ہوتو اس صورت یہ کوئی اشکال نہیں۔
صورت میں ترجمہ یہ ہوگا کہ نفیحت تو دین بی ہے اس صورت پرکوئی اشکال نہیں۔

نصیحة کاماخذ:نصیحة، فعیلة کے وزن پر ہے۔ لغتِ عرب میں اس کا استعال دوطریقے پر ہے انصحت العسل (میں نے شہدکوصاف کیا) ۲۔ نصحت الثوب (میں نے کپڑے کوسیا اور جوڑا) تولفظ نفیحت ان دونوں سے لیا گیا ہے۔ تھیجت کا مطلب ہوا کہ ہروہ عمل جو خلوص کے ساتھ ہوا ور جوڑ پیدا کرے اگر کوئی عمل تو ڑ

بیدا کر ہادرا خلاص کے ساتھ ہوتو آ دھی نفیحت۔ اسی طرح ایک بات اگر جوڑ پیدا کر ہاورا خلاص کے ساتھ نہ ہوتو وہ بھی آ دھی نفیحت ہے۔ جیسے اللہ الصمد کا پورا ترجمہ اردو میں نہیں ہوتا۔ الصمد الذی یصمدالیہ۔ ایی ذات کہ وہ کسی آ دھی نفیحت ہے۔ جیسے اللہ الصمد کا پورا ترجمہ اردو میں نہیں ہوتا۔ الصمد الذی یصمدالیہ۔ ایی ذات کہ وہ کسی کی بھتاج نہ ہوا ورسب اس کے متاح ہوں۔ شاہ عبدالقادر ؓ نے سب سے پہلے اردو میں ترجمہ کم ساتھ اس کا ترجمہ کیا'' نر ادھار'' تو ایک ہندو نے سن کر کہا لیے ترجمہ تم نے کہاں سے لیا ہے؟ پھر ہندو نے بتایا کہ یہ ہندی زبان کا لفظ ہے اسکامعنی ہے کہ جو کسی کا محتاج نہ ہوا ورسب اس کے متاح ہوں۔ تو لفظ نصیحت جب دونوں محاوروں سے لیا گیا ہوتو کہی اس کے معنی اخلاص کے لئے استعال ہوگا تو خیرخواہی کے۔ یعنی جب اللہ تعالی کے لئے استعال ہوگا تو خیرخواہی کے معنی ہوں گے اور جب محلوق کے لئے استعال ہوگا تو خیرخواہی کے معنی ہوں گا ور جب محلوق کے لئے استعال ہوگا تو خیرخواہی کے معنی میں ہوگا۔

النصیحة لله: یعنی الله کی ذات وصفات اورعظمت کا قائل ہوجائے بایں طور کہ جواللہ تعالیٰ کی عظمت کے خلاف بولے یاشرک کاار تکاب کرےان کی تر دید کرے۔

النصیحة لرسوله: سینین رسول الله علیه کرفتون کاخیال رکھ، طاعت بخطمت بمحبت کرے اور جمع ما جاء به النبی علیه کی تصدیق کرے۔ ماجآء به النبی علیه کی تصدیق کرے۔

النصیحة الائمة المسلمین: انتما کامصداق دو ہیں ادکام ، تو مطلب یہ ہوگا کہ جائز کاموں میں انکی اطاعت کر باورت نہ کر باور کو لواطاعت کی طرف مائل کرے ۱۔ اگر آئم جمہتدین مراد ہوں تو پھراس کا مطلب ہے کہ ان پراعتاد کر باتوں پھل کر بے خود بھی ان کی عزت کر بے اور دوسروں ہے بھی کروائے۔ النصیحة لعامة الناس: عامة الناس میں اختلاف اور شقاق نہ ڈالے دوین و دنیاوی لحاظ سے مدد کر بے ، خدمت کر بے خدوم نہ بنے ، طریقت اصل میں بہی ہے۔ شخ سعد کی نے فرمایا ہے طریقت بجز خدمت کر بے ، خدمت کر بے خدوم ان سے خلق نیست اس لئے معاشرہ نے مولوی کو تھکرادیا۔ وین کی قدر ہے نہیں ، دنیاوی خدمت کر تے نہیں تو وہ ان سے خلق نیست اس لئے معاشرہ نے مولوی کو تھکرادیا۔ وین کی قدر ہے نہیں ، دنیاوی خدمت کرتے نہوں وہ وہ ان سے اخروی خدمت کرتے رہو۔ وین تعلیم اخروی خدمت سے دنیاوی مدد دنیاوی خدمت ہیں برداشت کرتے رہو۔ وین تعلیم اخروی خدمت ہے دنیاوی مدد دنیاوی خدمت ہے۔

حدثنا مسدد عن جویو بن عبدالله البجلی: جرین عبدالله آخضرت الله کوفات سے ایک ماہ بل یا چھاہ بالله کی احتلاف الووایتین بہت زیادہ حسین سے آپ الله نے فرمایا (ریوسف هذه الامة)) اسلام سے بل بزار درہم کا جوڑا پہنتے سے اور بعد میں موٹا کیڑا ااور بٹن کی جگہ کا نالگاتے سے ۔

استعفو الامير كم: جيداوگوں كماته معاملة كرتا بالله تعالى بهى اس كماته ويهاى معاملة كري گے۔ استغفر و نزل: امام بخاري كى عادت بكة واضعاً باب كة خريس استغفار فرماتے ہيں - كتاب الايمان كة خريس استغفار كيا۔ نيز باب كة خريس ايما لفظ لاتے ہيں جس سے باب كا اختام كى طرف اشاره موتا ہے۔ اخير ميں نزل اى حتم لائے جيے كه حديث برقل كا خير ميں ايسے بى الفاظ لائے تھے۔





سوال: بعض شخول مين بم الله يمل باوريال يربعد مين ايما كون؟

جواب: یکوئی تعجب کی بات نہیں ناقلین کانسخوں میں اختلاف ہوتا ہی ہے۔ زیادہ دانتے ہے کہ ہم اللہ پہلے ہو۔ کتاب الایمان سے ربط: امام بخاریؒ نے کتاب الایمان سے فارغ ہوکر کتاب العلم کوشر وع کیا کیونکہ ایمان کے بعد انسان احکام کا مکلف ہوتا ہے۔ اور احکام کا دارومدار علم پر ہے۔ اس لیے کتاب الایمان کے بعد کتاب العلم وذکر کیا یے

سوال: دوسرے احکام کامدار بھی علم ہے، ایمان کامدار بھی علم ہے تو پھر کتاب الایمان کو کتاب العلم سے کیوں مقدم کیا؟

جواب أول: أيمان مبدء كل خير علماً وعملاً باس ليم اس كومقدم كيا ع

جوابِ ثانی:اعقاد بھی علم ہی کی ایک قتم ہے جسکو ایمان سے تعبیر کیا جاتا ہے چونکہ ایمان ایک امتیازی شان رکھتا ہے اس لیے اس کوعلم کے تالع نہیں کیا بلکہ علیحد وعنوان میں ذکر کیا۔

جوابِ ثالث: سسامام بخاریؒ نے ترتیب میں نہایت اطافت ملح ظار کھی کہ ایمان وعمل کامدار وی ہے، علم وعمل کامدار بھی وحی ہے اس لیے پہلے وحی کاذکر کر کے گویا علم کا اجمالاً پہلے ذکر کردیا اور چونکہ مقصود بالذات اور "مبدء کل خیر" ایمان ہے اس لئے اس کے بعدایمان کوذکر کیا اور پھر کتاب العلم کو تفصیل سے ذکر کیا۔

العلم ا

علم كالغوى معنى:داستن، جانا

علم كالصطلاحي معنى:اصطلاح معنى مين متكلمين اورفلاسف كاختلاف بــ

العلم: نلاء متكلمين كے دوگروہ ہيں۔

ا۔ماتر پدیہ

ا_اشاعره

و مدة القارى ع السياس والينا سع علم اور مرفت مين فرق: اوراك بزر نيات كالام معرفت باورادراك كليات كولم كتبة مين

المعنوية " و (فواكر قيور): "صفة من صفات النفس توجب تمييزا الابحتمل النقيض في الامور المعنوية " و (فواكر قيور): توجب جمييزاء مالم يوجب تمييزاً (كالمحياة) على احراز بدلا المعنوية عراب فاجره مت احراز الابحتمل النقيض كي ذريع فن اورشك عاحر از بدفي الامور المعنوية عراب فاجره مت احراز الابكان ادراكها في الامور الطاهرة المحسوسة . ع

س. عند المفلاسفة: ا . حصول صورة الشنى عند العقل ١- المحاضر عند المعدرك على السلم المعلم عند المفلاسفة: فلاسفك زد يك علم دوتم يرب ا حصولي ١- حضوري

حصولی جوصورت کواسط کافتاج مو-

حفوري: جوصورت كواسط كافتاح ندمو-

علم حضوري كامدارتين امور برہے۔

ا ينيت :معلوم عالم كاعين موجيك نفس ناطقه كوا بناعلم -

٣_موضو فيتمعلوم عالم كي نعت اوروصف موجيسے نفس ناطقه كوا بني صفات كاعلم _

س معلولیت معلوم عالم کے لیے معلول ہواور عالم اسکی علت ہوجیسے باری تعالی کومکنات کاعلم۔

الفرق بين تعريف المتكلمين والفلاسفة: كل تين فرق بير

(۱).... فلإسفه كنز ديك علم صورت كالحقاج بوتاب منتظمين كنز ديك علم صورت كالحقاج نبيل-

(۲) فلاسفہ کے نزدیکے علم ومعلوم متحد بالذات میں اور ان میں تفایراعتباری ہے، متعظمین کے نزدیک ان میں تغایر ذاتی ہے کہ معلومات ذوات وعوارض ہول مجے اور علم صفت انجلائے جومقولہ کیف سے ہے ان سے الگ ہے۔
دری من میں متعلقہ سے مت

(٣)غلاسفے نزد کی علم معدوم سے متعلق نہیں ہوسکتا اور متعلمین کے زدیک علم معدوم سے متعلق ہوسکتا ہے۔

علم کی اقسام

علم دوشم پرہے اعلم دنیاوی ۲ علم دبی علم دنیاوی:.....وعلم ہے جس کا قرب خداوندی میں کوئی ڈل نہو۔

لِ فَيْضَ البَارَىٰ يَّا صَا١٦ عِيمَةَ القَارَى جَمَّ صُمَّ عِينِينًا عَ فَانَهُمَ قَالُواانَهُ حَصُولَ الْصُورة اوالصورة الرحاصلة : فيض البارى جا ص ١٢١ في ايناً لل المعلوم: عبارة عن الصورة من حيث هي فيض البارى جَا ص ١٢١

علم دین جس کے حاصل کرنے سے قرب خداوندی حاصل ہو۔ علم و نیاوی کی اقسام

(۱)..... جومفضى الى الكفرو المعصية بو، جيس علم نجوم اورعلم سحراور شراب بنانے كاعلم _

حكم :..... جومفضى الى الكفر بواس كاحصول كفراور جومفضى الى المعصية بواسكاحصول معصيت بـ

(۲)..... جومفضى الى الكفرو المعصية شهو.

حكم:اس كاحصول مباح ہے۔

علمِ دینی کی اقسام

تقسيم اول:

(۱) ظلهری احکام کا علم: قرآن دوریث سے دواد کام متنبط ہوتے ہیں شلاف درکیے کرناہے نماز کیے ردھنی ہے؟

(٢) احكام باطنه كا علم: ول كي كيفيات،ان كي يماريال أوران كاعلاج

ماهرين علوم ديديه كى اقسام

الاول: احكام ظاهره كي جانع والعلاء وفقيد كتي مين -

الثانى: احكام باطند ك جائة والعام كوصوفى كيت بين.

الثالث: دونوں كے جانے والے كوجامع كتے ہيں۔

فائدہ: ائمہ مجتدین کی شہرت احکام ظاہری کے لحاظ سے ہاں لئے انہیں صوفی کوئی نہیں کہتا ،گرحقیقنا حضرات ائمہ مجتدین دونوں کے جامع تنے اس لیے امام اعظم ابوحنیفہ سے فقہ کی تعریف یوں منقول ہے" معوفة النفس مالھا و ما علیها علامة تفتاز الی ،امام رازی احکام ظاہرہ کے عالم تنے۔سیدا حمد شہید نے ہدایت النو تک بڑھا تھا ہندوستان میں شاہ ولی اللہ کا خاندان" جامع" ہے پھر حضرت گنگوئی ،حضرت نانوتوی ،حضرت انورشاہ تشمیری، حضرت مدنی ،حضرت تفانوی اور حضرت سہار نپوری۔

بركف جام شريعت بركف سندان عشق 🐧 بر بوسناك نداند برجام وسندال باختن

حکم حصولِ علم: حصولِ علم، فرض عين ب؟ يا فرض كفايه؟ ايساعلم كه جس كے بغير چاره نہيں، فرض به تحت محصولِ علم بخرا من اللہ بنائل كه جن كے بغير چاره نہيں ہے كونكه ان سے بى حلال وحرام كاعلم ہوتا ہے اس كو حاصل كرنا فرض عين ہے اس كے كه كتب فقه كتب تصوف بى بيں اور فرض كفايد كا درجہ يہ ہے كه جرمدت مسافت بيں ايك پوراعالم ہونا چاہيئے۔

ل حديث ياك بس ب تخضرت الله فرمايا ((طلب العلم فريضة على كل مسلم، مكلوة ص٢٢٠ بحالد يعلى وابن باير)) وفي رواية ((مسلمة))

Y ...

تقسيم ثاني:

علم دینی کی دوسری تقسیم کی بھی دوشمیں ہیں۔

(ا)علم كسبى: جس مين كسب واختيار كادخل مو-

(٢)علم و هبي: جس مين كسب واختيار كادخل نه بويه الله تعالى كي طرف عصعطا موتا ي

علم وهبی کی تقسیم اول:

(١)....بصورت وحى: يدانبياء يهم السلام كوبوتاب اوربيخاتم الانبياء سلى الله تعالى عليه وسلم يرفتم مو كيا-

(۲)....بصورت الہام: ينبيوں کو بھی ہوتا ہے، وليوں کو بھی ہوتا ہے، دل ميں اللہ تعالیٰ کسی آيت کی تغيير يا کوئی تطبيق ڈال ديتے ہيں۔

علم وهبى كى تقسيم ثانى:.....

(۱)ایک مقام نبوت ہے۔

(۲)....ایک مقام ولایت ہے،

مقام نبوت ختم ہوگیامقام ولایت باقی ہے۔ نبوت وہی ہوتی ہے اور ولایت کبی بھی ہوتی ہے۔ مقام نبوت افضل ھے یا مقام ولایت؟

اس میں محققین کے دوگروہ ہیں۔

فدہب اولمقام نبوت افضل ہے اس لئے کہ مقام نبوت میں نی کوعامۃ الناس اور خواص کوہلیغ کرنی پڑتی ہے تو مقام نبوت ہیں تبایغ ہے اور تبلیغ متعدی ہے اس لیے بہتر ہے۔
فدہب ثانیدوسرا گروہ کہتا ہے کہ مقام ولایت افضل ہے کیونکہ مقام نبوت میں توجہ الی المعلوق ہوتی ہے اور مقام ولایت افضل ہے کیونکہ مقام نبوت میں توجہ الی المعلوق ہوتی ہے اور مقام ولایت افضل ہے لیکل و جھے قد مُولِیٰ ہا۔
تنبیہ: سیس کی کو فلطی ندلگ جائے کہ ولی نبی سے افضل ہے کیونکہ یوفرق نبی کے دومقاموں کا ہے ولی اور نبی کے مقاموں کا فیصلہ نہیں ہے۔ نبی کی ایک حالت یہ ہے کہ تبلیغ کر رہا ہے دوسری حالت یہ ہے کہ اللہ کے ساتھ ہے کہ اللہ کے ساتھ ہے کہ اللہ کا ہے دوسری حالت یہ ہے کہ اللہ کے ساتھ ہے کہ اللہ کے ساتھ ہے کہ اللہ کا ہے کہ اللہ ہوت و لایس عنی فیہ ملک مقد ب و لانبی موسل) خلاصات کا یہ ہے کہ ایک وقت دربار میں حاضری کا ہے دونوں میں کون سافضل ہے؟

استحقاقِ حلافت کامدار:اتحقاق خلافت علم سے ہے؟ یاعبودیت سے؟ الله تعالی نے حضرت آدم علی الله تعالی نے حضرت آدم علیه الله الله کوکس بنیاد پر خلیفه بنایا؟ اس میں تین رائیں ہیں۔

یہلی رائے :..... استحقاق خلافت علم کی وجہ ہے ہے افر شتوں کووہ اسا نہیں آئے اور حضرت آ دم علیہ السلام کو آگئو آنکوخلیفہ بنادیا بیرائے علماءِ خلا ہریہ کی ہے۔

دوسری رائے: سیسطامہ انورشاہ کشمیری فیض الباری میں لکھتے ہیں کہ عبودیت کی وجہ سے خلیفہ بنائے گئے کیونکہ تیں گروہ سے البیس میں عبودیت توتھی ہی نہیں انا نیت تین گروہ سے البیس میں عبودیت توتھی ہی نہیں انا نیت تھی ما ملا کہ میں عبودیت تھی کیکن شائعوں نے کہاتھا ﴿ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِکَ وَنُقَدِّسُ لَکَ ﴾ ج تقی ما کا کہ میں عبودیت ہی عبودیت ہی عبودیت تھی اس لیے سختی خلافت ہوئے۔

تیسری رائے:.....اکیلی کسی چیز سے استحقاق نہیں ہے نہ محض علم سے اور نہ محض عبادت سے علم کے ساتھ عمل ہوتو مد پھراستحقاق خلافت ہوتا ہے۔

ا خلاصہ یہ ہے کہ پہلی رائے محض احکام ظاہرہ کے جانے والوں کی ہے، دوسری رائے محض احکام باطنہ کے جانے والوں کی ہے، دوسری رائے محض احکام باطنہ کے جانے والوں کی ہے، دوسری رائے جامعین کی ہے۔

فائدہ: بعض اوقات شیخ خلافت دے دیتا ہے، شیخ کا خلافت دینا تو ظاہری استعداد ،عبودیت اور علم کو دیکھ کر ہوتا ہے، یہ شیخ کی اجتہادی چیز ہے اس میں خطاء بھی ہوسکتی ہے، اس میں شیخ قصور وارنہیں ہے۔

⁾ فيش الباش فأس الدارج وهمي عندي عبو ديته لان الخلافة يستحقهاباعتبارالظاهر ثلاثة،ادم مملائكة ، ابليس فيض الباري ج1 ص 11 ا هم يارو اسورةاأنف آيت ٣٠

بسم الله الرّحمن الرّحيم (٣٣)

باب فضل العلم وقول الله عزوجل ﴿ يَرُ فَعُ الله الله الله الله العَلْمَ المَنُو المِنكُمُ وَالَّذِينَ اَو تُوا الْعِلْمَ دَرَجْتِ وَالله بِمَا تَعُمَلُونَ خَبِيرٌ. وقوله (رَبِّ زِدُنِي عِلْماً) ﴾ علم كى فضيلت، اورالله تعالى كافر مان (سوره مجادله مِس) جوتم مِس ايمان والعيم اورجن كوعلم ملاالله ان كورج بلندكرك كا، اورالله كوتم ارداله مان كخبر م

﴿تحقيق وتشريح

تر جمة الباب. كى غوض: امام بخارى ئے باب باندھ كرمرف دوآيتي ذكرى بيركى روايت كوذكرنبين فرمايا شراح اليے موقع پر چندتو جيهات بيان فرمايا كرتے ہيں۔

الاول: تراجم كے بیان میں ذكر ہواتھا كہ امام بخاریؒ كے تراجم میں ابوابِ مجردہ غیر محصد بھی ہیں كہ تراجم میں دلیل تو ہوتی ہے لیکن ترجمہ کے تحت حدیث ذكر نہیں ہوتی۔

الثاني قرآن قوى جمت باس كي اى براكتفا كيا كيا يا

الثالث: علامه كرماني "كاجواب يه يه كه امام بخاري ابواب بهلي بانده دية تضاحاديث تدريجا ذكركرت

تھ مگر يہال مديث الحق كرنے سے پہلے رخصت ہو گئے ع

الرابع: سن شرطوں كے مطابق مديث بيس لمي س

خامس: تشحید از هان کے لئے۔ می سادس: تکثیرِ فوائدیعنی فضائل ودلائل میں مختلف احادیث بیان فریائیں کے تو فائد وزیاد و ہوگا۔

اعتراص: الساب باعتراض يه كم فعد ١٨ برباب فضل العلم قائم كيا ب ويترار موكيا؟

 جواب اول: يهال به باب ناتخين كى غلطى سے درج ہوگيا ہے ور نه مصنف في نے كتاب العلم كاعنوان قائم كركة يات ذكركيس تطيل _

جوابِ ثانمی: یہاں فضیلت علاء ہے اور وہاں فضیلت علم ، اور تکرار حقیق تو تب ہوتا ہے جبکہ غرض ایک ہو یا جو اب حواب ثالث: فضل بمعنی فضیلت ہے اور بمعنی زیادتی بھی ، پہلے باب میں فضل بمعنی فضیلت ہے ، اور دوسرے باب میں فضل بمعنی زیادتی ہے۔ ، اور دوسرے باب میں فضل بمعنی زیادتی ہے۔

يرفع الله : قيل يرفعهم في الثواب والكرامة وقيل يرفعهم في الفضل في الدنيا والمنزلة، وقيل ير فع الله درجات العلماء في الآخرة على المؤمنين الذين لم يؤتو االعلم ع

در جات: درجات درجه کی جمع ہے در کہ کے مقابلے میں ہے، او پرکو چڑھتے ہوئے جومنزل ہوتی ہے اس کو درجہ کہتے ہیں اور نیچے کو اتر تے ہوئے جومنزل ہوتی ہے اس کو در کہ کہتے ہیں، جنت میں درجات ہیں اور چھنم میں در کات۔ والمذین او تو االعلم در جات: عطف خاص علی العام ہے کہ ایمان والوں کو بھی او نیچا کرتے ہیں مگر ان میں علم والوں کو تو بہت ہی او نیچا کرتے ہیں۔

و الله بماتعملون خبير : ال مين اشاره بي كمام و بي مفيد بي جوكه مفضى الى العمل بو علماء في الكام العمل بو علماء في الكام العمل علم مع العمل صراط متقيم . علم مع العمل صراط متقيم .

کے قصدہ: سب جانل عابد کا قصہ ہے۔ ایک شمزادہ، بردی عیش میں رہتا تھا تو برنصیب ہوئی جنگل میں چلا گیا، ریاضت شروع کی ، شیطان نے کہا کہ تو نے جواتی خوشبو کیں سونگھی ہیں انکا کفارہ اس طرح ادا ہوگا کہ پاخانے کی ایک ڈلیکر ناک میں رکھ لے ادرعبادت کرتا جا،اس نے ایساہی کیا توساری عبادتیں بے علم ہونے کی وجہ سے بے کارگئیں۔

بحث: سساس میں بحث چلی ہے کہ فرائض کی ادائیگی (یعنی مطلوب من الشارع کوادا کرنے) کے بعد زائد وقت کہاں صرف کرنا جا ہیے؟علم میں یاعمل میں؟اس میں ائر مجتهدینؓ کا اختلاف ہے۔

ا الم اعظمُ اورامام ما لكُ فر ماتے ہيں كملم ميں مشغول ہونا افضل ہے۔

۲ امام احمدٌ ہے دوروایتیں منقول ہیں۔(۱)علم میں لگناافضل ہے(۲) جہاد میں مشغول ہوناافضل ہے۔

سے حضرت امام شافعی فرماتے ہیں کیمل میں مشغول رہنازیادہ بہتر ہے سے

۴ شاہ ولی اللّٰدُ فرماتے ہیں کہ تم کھا کر کہتا ہوں کتعلیم وتعلم میں مشغولی زیادہ افضل ہے۔

ل عمرة التماري بن مس ع ايضاً مع وفي فيض الباري انمامالكاو اباحثيفةً ذهباالي ان الاشتغال بالعلم خير من الاشتغال بالنو افل على عكس ماذهب اليه الشافعيّ وعن احمدّروايتان احداهمافي فضل العلم و الاخرى في فضل الجهاد: ج ا ص ١٢ ا فائده:امام غزائی نے انسان کی چارحالتیں بیان کیں ہیں کہ بعدالفر انصاولاًتواشتغال بالعلم ہے نانیا:تج و تقدیس ہے اگراس سے بھی قاصر ہوتو ثالاً:خدمت علاء وصلحاء ہے رابعاً: بعدالفرائض کسب معاش ہدوسرے و تکلیف نددے ، طال کمائے ، غیرکا مال نہ کھائے۔

شخ الحدیث نے لکھاہے کہ بعض صوفی ذکر کررہے ہوں کوئی مسئلہ پوچھ لے تو ناک بھوں چڑھالیتے ہیں فر مایا پیھی تو ذکر ہے بلکہ بیاس سے افضل ذکر ہے۔

(۳۳)
﴿باب من سئل علما و هو مشتغل فی
حدیثه فاتم الحدیث ثم اجاب السائل ﴿
جُنْ خُصْ ہے علم کی کوئی بات پوچھی جائے اور وہ دوسری بات کررہا ہو
پھراپی بات پوری کرئے پوچھے والے کا جواب دے

پھراپی بات پوری کرئے پوچھے والے کا جواب دے

(۵۷) حدثنا محمدبن سنان قال ثنا فليح حقال وحدثني ابراهيم بن مم سے بیان کیا محمد ابن سنان نے کہا ہم سے بیان کیا قلیع نے دوسری سند اور مجھ سے بیان کیا ابراہیم بن المنذر قال ثنا محمد بن فليح ثنا ابى قال حدثنى هلال بن على منذر ؓ نے ،کہاہم سے بیان کیا محمر بن فلیٹے نے ،کہاہم سے بیان کیا میرے باپ فلیٹے نے ،کہا مجھ سے بیان کیا ہلال بن علی نے عن عطاء بن يسار عن ابى هريرة قال بينما النبى عَلَيْكُم في مجلس انھوں نے عطاء بن بیار سے، انھوں نے ابو ہریرہ سے، کہاایک بار رسول اللہ علیہ لوگوں میں بیٹے ہوئے متى الساعة؟ يحدث القوم جاءه اعرابي فقال ان سے باتیں کرزے تھ اتنے میں ایک گنوار آپ اللہ کے پاس آیا اور پوچھنے لگا قیامت کب آئے گی؟ فمضى رسول الله عَلَيْكِ الله عَلَيْكُ يحدث فقال بعض القوم سمع ما قال فكره ما قال آپ علی بات میں مصروف رہے (ور تواد کا جواب ندیا) بعضاؤگ (جواب بعن مصرف) کہنے لگے آپ علی کے تواد کی بات ی مگر پسندند کی اذا قضى بعض بل لم يسمع حتى وقال اور بعضے کہنے لگے نہیں،آپ علیفہ نے اس کی بات سی ہی نہیں،جب آپ ملیفہ اپنی باتیں بوری کر چکے تو قال اين اراه السائل عن الساعة قال ها انا يارسول الله قال میں سمجھتا ہوں بوں فرمایا وہ قیامت کو پوچھنے والا کہال گیا؟اس گنوارنے کہامیں حاضر ہوں یارسول الله،آپ علیہ نے فرمایا فاذا ضيعت الامانة فانتظر الساعة فقال كيف اضاعتها تو(س لے)جبانات (ایمانداری دنیاہے)ضائع کی جانے لگی توقیامت کا منتظررہ،اس نے کہاایمانداری کیوکراٹھ جائے گی؟ قال اذا و سدالامرالي غير اهله فانتظر الساعة. (انظر ١٣٩٦) آپ ﷺ نے فرمایا جب کام نالائق کودیا جائے تو قیامت کامنتظررہ ا

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض: اس باب مين آ داب تعليم وتعلم بيان فرمار بم بين - اگر كوئى شخص بات

ا عمة القاري تع صكر عن المناداب المتعلم ال لايسنل العالم مادام مشتغلاب حديث اوغيره الخ

میں مشغول ہوتو جب تک فارغ نہ ہوسوال نہیں کرنا چاہیے۔اگر کوئی شدت ضرورت یا نا دائی کیوجہ سے کرلے تو جواب دینے والے کو اختیارہ کہ اپنی بات پوری کرلے یا در میان میں ہی اسکو جواب دے دے۔اسکا مدار سوال پرہا اگر سائل کا سوال شدت ضرورت کی بناء پر ہوتو جواب دیدے اوراگر نا دائی کیوجہ سے ہوتو چاہے بعد میں دے،اوراگر کوئی در میان میں سوال کر ہی دینو رفت کا معاملہ کرنا چاہیے ،اوراگر سوال تا پہندیدہ ہوتو جواب دینا ضروری نہیں ہے۔ اُر اہُ:راوی یا کوشک ہوا کہ استاد نے من یسئل کہایا السائل کہا یا

یارسول اللہ کھنے کاحکم

یہ کہنا حکایتاً جائز ہے۔خطاب بھی اس عقیدے سے جائز ہے کہ جب میرایدسلام وکلام فرشتے روضہ اقد س پر پہنچا کیں اس وقت میں بیسلام عرض کرتا ہوں اور حضور فی التصور کے اعتبار سے بھی جائز ہے، چوتھی صورت بریلو پوں والی ناجائز ہے کہ جہاں آپ علیقے کا ذکر کیا جاتا ہے وہیں تشریف لے آتے ہیں بیہ بے اوبی ہے۔

کیف اضاعتها: سوال: اس آدی نے ساعت (قیامت) کے بارے میں سوال کیا تو حضور علی اللہ نے فرایا ((اذا ضیعت الامانة فانتظر الساعة)) بظاہر سوال وجواب میں کوئی جوڑ معلوم نہیں ہوتا؟

جو اب یہ جواب علی اسلوب اکلیم ہے یعنی جب سوال سائل کی سمجھ سے بالاتر تھا تو حضور علی نے اشارہ فرمادیا کہ سوال یوں نہیں کرنا چاہیے تھا بلکہ قیامت کی نشانیوں کا سوال کرنا چاہیے تھا اور پھر آپ علی نے فرکورہ جملے میں قیامت کی نشانی کاذکر کیا۔ حاصل اس کا یہ ہے کہ امر کو اہل کے سپر دکر نے میں برکت ہوتی ہے یعنی خلافت اہل کو دینی چاہیے نا اہل کو نہیں دین چاہیے ایسے ہی پیر بھی اہل کو مانا جائے۔

پیروں کی اقسام

کر پیروں کی تین قسمیں ہیں ا۔ پہتہ ۲۔ پھر ۳۔ لکڑی۔ پتہ اگر دریا میں تیرر ہاہوکوئی اسکاسہارالیا چاہے گا توینچ سے نکل جائے گا،اور بیسہارالینے والا ڈوب جائے گا۔ پھر خود بھی ڈوب جاتا ہے جوسہارالے گاوہ بھی ڈوب جائے گا۔ پھر خود بھی تیراتی رہتی ہے تو ہم پیروں کے خالف نہیں لیکن پتے جائے گا لکڑی خود بھی تیرتی رہتی ہے تو ہم پیروں کے خالف نہیں لیکن پتے اور پھروں کے خالف نہیں ہیں پیر بھی اسی کو بنانا چا ہیے جو پیر بننے کا اہل ہو شریعت کا پابند ہونا اہل کو بیر ماننا مقل مندی نہیں۔

ا محسد بن فلیح عسدة القاری ج۲ ص۲ - ۲ اس لیے انہوں نے اراد بر حایا کیونکدان کواپئے استاد کے القاظ یاد نیس سے کہ استاذ نے این کے بعد آیا فرمایا علی من السامة فرمایا کوفی اور لفظ فرمایا ای شک کی وجہ ہے راوی نے اراد بر حادیا محدثین نے کس قدرا حتیاط سے کام لیا ہے۔

(۳۵) باب من رفع صوته بالعلم، جس نام کیات پارکهی

(۵۸) حدثنا ابو النعمان قال حدثنا ابو عوانة عن ابی بشوعن یوسف بن ماهک امم سے بیان کیا ابونمان نے کہا ہم سے بیان کیا ابوعوائ نے انھوں نے ابوبش سے انھوں نے یوسف بن ما ہک سے عن عبد الله بن عمرو قال تخلف عنا النبی مُلاہی ہی سفرة سافر نا ها انھوں نے عبدالله بن عمرو قال تخلف عنا النبی مُلاہی ہی سفرة سافر نا ها انھوں نے عبدالله بن عمرو قال تخلف عنا النبی مُلاہی ہم سے بچےرہ گے (وہ کر کہ سے انھوں نے فادر کنا وقد ار هقنا الصلواة ونحن نتوضاً پر آپ ہم سے اس وقد ار هقنا الصلواة ونحن نتوضاً فجعلنا نمسح علی ار جلنا فنادی با علی صوته فجعلنا نمسح علی ار جلنا فنادی با علی صوته پاک کو کو کر خوب وجونے کے بدلے ایوں ہی سادھور ہے تھے پاک اور خوب وجونے کے بدلے ایوں ہی سادھور ہے تھے پاک المحقاب من النار مرتین او ثلثال

وتحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمة ظاهرة.

تو جمة الباب كى غوض: ضرورت كوقت او نجى آ واز سے تعلیم جائز ہے يا امام بخاری نے به باب تعارض كور فع كرنے كے ليے قائم كيا ہے بعض دلائل سے معلوم ہوتا ہے كداو نجى آ وازكو پسند نہيں كيا گيا جبكداس حديث ميں بلند آ واز سے پكارنے كا تذكرہ ہے۔

اقرآن پاک میں ہے کہ حضرت لقمان نے بیٹے کونصیحت کی کداونچی آواز سے ند پکارا کرو بے شک کہ گد سے کی

ل انظر: ٩٦ ، ١٩٣٠ اخرجيدُ سلم في الطبارة والنسائي في العلم اخرجه الطحاوي: عمدة القارى ٢٥ ص ٨

ع رفع الصوت بالعمل جائز عندالحاجة فيض البارى ج ا ص ٢٣ ا

آ وازسب سے بری آ واز ہے۔اس سے معلوم ہوا کہ آ وازاد نجی ہیں ہونی جا ہے۔

٢حديث ياك من آپ الله ك بارے من آتا ك ((ولا صحابا في الاسواق!))بازارول من او كي آواز عن الاسواق!) بازارول من او كي آواز من يك الاسواق!) بازارول من او كي ا

السنتيسرابيكه وقارعلمي اورعظمت كالقاضا بهي يبي معلوم بوتاب

الحاصل: دلاكل معلوم بواكراو في آواز ناپنديده بـ توامام بخارگي يه باب بانده كربتلار بين كه عندالعرورة جائز بـ

ویل: دوزخ کاایک طبقہ ہان ایر ہوں کے لئے جن کے دھونے میں تقفیر کی علی

ويل للاعقاب من النار:اعقاب سيصاحب اعقاب مرادب يعنى ان ايزيول والول كوجهم ميل والاجاسكات النادي باعلى صنوته: الاست ترجمه الباب ثابت موار

يوسف بن ماهك ع:اختلاف مواكريلفظ عربي جياجمي؟ پرجوعربيت كائل بين ان مين اختلاف هو سف بن ماهك ع :اختلاف ماعل؟ البعض كيزديك ماضى جاور غير منصرف ج ٢ لبعض كي نزديك اسم فاعل جاور منصرف جداور جوعميت كقائل بين وه كيتم بين كه ماه واود كن الفنيروالا جيمونا ساجاند ه اده هنا المصلوة : نماز مين مين دريروكي توسرعت وضوء كافشاء تا خيرصلوة جد

نمسح على ارجلنان:سوال: كياسلام من نظر إور برسم ع

جواب: یادر کھنا چاہے کہ نگے پاؤل پرسے اسلام شنہیں ہاس صدیث کا مقصد یہ بتلانا ہے کہ جلدی جلدی و دورہ سے تصدیق اللہ اللہ بیس کردیا۔ دھورہ سے تصدیق کردیا۔ ورب سے دھورہ میں مبالغ نہیں کررہ سے جسکی وجہ سے کھوجگددہ رہی تھی اسکو نمست علی ارجلنا سے تبیر کردیا۔ ویل للاعقاب من النار:اس سے الل سنت نے استدلال کیا ہے کہ پاؤں کا دھونا ضروری ہاس سے معلوم ہوا کہ پاؤں کا دھونا شروری ہے اس

ا شَاكُلَّ مَنْ مُ ١٣٠٥ على اوروق وول الم من بين قرق مرف بين كراكر حقى بها كت بالاست الفقاد بل بولت بين اوراكر من بها كون الفقاد كاستعال المعانية من عمورة قال رجعامع رسول الله من المحالية من عمورة قال رجعامع رسول الله منظلي مكالى معالم المعانية حتى اذا كتابماء بالطريق تعجل قوم عندالعصر فتوضأوا وهم عجال فانتهينا اليهم واعقابهم تلوح لم يمسها الماء فقال رسول الفنين الناوال المنظلة المورود على المناوض عن المناوض عندالعصورة على المناوض المنظلة المناوض ال

(۲۲)

(باب قول المحدث حدثناو اخبر ناو انبأناو قال لنا الحمیدی
کان عندابن عیینة حدثناو اخبر ناو انبأناو سمعت و احدا
محدث کایوں کہنا ہم سے بیان کیااور ہم کو خردی اور ہم کو بتلایا،اورام محیدی نے
ہم سے کہا کہ سفیان ابن عیینہ کے نزدیک ہم سے بیان کیااور ہم کو خردی
اور ہم کو بتلایا اور میں نے سنا،ان سب لفظوں کا ایک ہی مطلب تھا

وقال ابن مسعود حدثنارسول الله عَلَيْتُ وهو الصادق المصدوق اورابن مسعود نها بم عبان كيارسول الله عَلَيْهُ في اور آپ يج تقاور وآپ عها كياوه بمي يج تقاور وآپ عها كياوه بمي يج تقاور وقال حذيفة يا وقال شقيق عن عبدالله سمعت النبي عَلَيْهُ كلمة كذاوقال حذيفة يا اورشقين في عبرالله (بن مسعودٌ) عن كيا بين في آخضرت عَلَيْهُ عنه بات في اوراوالعالية عن ابن عباس محدثنا رسول الله عَلَيْهُ حديثين وقال ابوالعالية عن ابن عباس من النبي عَلَيْهُ في ما يروى عن ربه وقال انس عن النبي عَلَيْهُ عن وابه وقال انس عن النبي عَلَيْهُ عن وابت كيا ابن عباس عن النبي عَلَيْهُ عن وابه وقال انس عن النبي عَلَيْهُ عن وابه وقال ابوهويو قال الوهويو قال ابوهويو قال الوهويو قال ابوهويو قال الوهويو قال ال

ا كان صاحب سرالنبى النه في المنافقين يعلمهم وحده وسأله عمر هل في عمالهم احد منهم قال نعم واحد قال من هو قال اذكر ه فعزله عمر كانما دل عليه وكان عمر اذامات ميت فان حضر الصلوة عليه حديفة صلى عليه عمر والا فلاو حديثه ليلة الاحزاب مشهور فيه معجزات وكان فتح همدان والرى والدينور على يده و لاه عمر المدائن وكان كثير السول لله المسول الله المسلم عشرون حديثا وكان كثيرة روى له عن رسول الله المسلم عشرون حديثا توقى حديثة بالمدائن سنة ست و ثلثين بعد قتل عثمان باربعين ليلة روى له الجماعة عمدة القارى ج٢ ص١٢

وتحقيق وتشريح

امام بخاری دلیل میں چند تعلیقات پیش کررہے ہیں ا

قال لناالحميدى: سوال: قال لنا كيون كها، حدثنا اوراخرنا كيون نبين كها؟ حالا نكه حميدي استادين -

جو آب او ل : بلاواسط نبيس سنا بوگابالواسط سنا بوگااس ليے حد ثنا اور اخر نائبيس كها-

جواب ثانبي: مجلس تعليم مين نبين سنامو كالبكم مجلس نداكره مين سناموگا-

جو اب ثالث: یالطافت پیدا کرلوکه اس میں نکتہ ہے کہ چونکہ وہ ان الفاظ کے بارے میں بتلارہے ہیں کہ ان میں فرق نہیں ہے تو قال لناحمیدی کہہ کراشارہ کر دیا کہ یہ بھی ان دونوں کی طرح ہے

نكته كى تعريف: ئكت كغوى معنى بين كريدنا اورجس چيز كوكريد كرنكالا جائے اسكونكت كہتے بيں۔

النكتتين لنكتة: تكتے كے ليے جى دو تكتے ہيں النكتة للفار اللقار لينى جوبات قاعدے ہئ ہوئى ہواس كے ليے تكت تلاش كياجا تا ہے۔ ٢ ـ نكتے كے ليے جامع مانع ہونا ضرورى نہيں ہے يعنى كسى جگه پرادنى مناسبت كيوجہ سے نكتہ قائم كرديتے ہيں ضرورى نہيں ہے كہ ہرائي جگہ ميں نكتہ قائم ہوجيے بعض مرتبہ جورمضان ميں پيدا ہوتا ہے اسكانام رمضان ركھ ديتے ہيں اور رات كو پيدا ہونے والے كانام طارق ركھ ديتے ہيں اب بيضرورى نہيں ہے كہ ہر رمضان ميں پيدا ہونے والے كانام طارق ركھ ديتے ہيں اب بيضرورى نہيں ہے كہ ہر رمضان ميں پيدا ہونے والے كانام رمضان اور ہر دات كو پيدا ہونے والے كانام طارق ہو۔

فیمایروی عن ربه: یعنی جوحضور علیه الله تعالی دوایت کرتے ہیں اسکوحدیثِ قدی کہتے ہیں بیہ حدیث کی ایک اعلی قتم ہے۔

سوال: جباس مديث كالفاظ الله تعالى سي بين قرآن مين كيون نبين ركها؟

جواب: مديث قدى اورقر آن مين تين فرق بير-

الاول: قرآن پاک مصاحف میں مکتوب ہے اور صحابہ کرام نے مابین الدفتین جمع کیااس میں حدیث قدی نہیں ہے۔ الہول نہیں ہے۔ البیار ہے۔

الثانى: مديثِ قدى رواية عن الله جوالقرآن ليس كذلك يعنى قرآن مين قال لى الله وغيره نبين كهد كة جبد مديث قدى مين يون كهد كته بين -

الثالث: ثبوت قرآن کے لیے قل متوار ضروری ہے بخلاف حدیثِ قدی کے کماس میں نقل متوار ضروری نہیں۔

ا هذه ثلث تعاليق رقال ابن مسعود قال شقيق قال حفيفة)وردها تبيهاعلى ان الصحابي تارة كان يقول حدثناو تارة كان يقول سمعت فدل ذلك على انه لافرق بينهما:عمدة القارى ج٢ ص٢ أوقال أبوالعاليه:....هذه ثلث تعاليق اخرى اوردها تبيها على حكم العنعنة وان حكمها الوصل عند ثبوت اللقى وفيه تبيه اخروهوان رواية النبي منتسل الماهي عن ربه سواء صرح بذلك الصحابي ام لا عمدة القارى ج٢ ص٢ ا

(۵۹) حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن عبدالله بن دینار عن بم سختید بن سعید نیان کیا، کها بم سے اساعیل بن جعفر نے بیان کیا، انھوں نے عبداللہ بن دینار سے اساعیل بن جعفر نے بیان کیا، انھوں نے عبداللہ بن دینار سے اساعیل بن جعفر نے بیان کیا، انھوں کے بیان کیا، انھوں ورقها ابن عمر قال قال رسول الله عَلَیْ نے فرمایا درخوں میں ایک درخو الیا ہے جس کے بی نیس جمر نے وانھا مثل المسلم حدثونی ماھی فوقع الناس فی شجر البوادی اور سلمان کی مثال دی درخوں کی طرف دوڑا قال عبدالله و وقع فی نفسی انھا النحلة فاستحییت ثم قالوا قال عبدالله و وقع فی نفسی انھا النحلة فاستحییت ثم قالوا عبدالله و می با رسول الله قال ھی النحلة فاستحییت ثم قالوا حدثنا ماھی یا رسول الله قال ھی النحلة ا

﴿تحقيق وتشريح﴾

حدثنا قتیبة بن سعید:روایة الباب كاترجمة الباب كے ساتھ انطباق انطباق كاتر جمة الباب كے ساتھ انطباق انظباق كے بارے ميں دوتقريرين بين السيروني تقرير ٢اندروني تقرير

بیرونی تقویر:ام بخاری نے اس روایت کواپی کتاب میں بہت جگہ ذکر کیا ہے اس جگہ حدثونی فرمایا دوسری جگہ اخبرونی کے الفاظ ہیں تو معلوم ہوا کہ حدثنا ور اخبر نابر ابر ہیں۔

اندرونی تقریو:ال حدیث سے انطباق اس طرح ہے کہ جب حضور علیہ نے سے سوال کیا تو ''حدثنا'' کہا کھذا معلوم ہوا کہ او ''حدثونی '' فرمایا، ای طرح جب صحابہ کرام " نے حضور علیہ کے سے سوال کیا تو ''حدثنا'' کہا کھذا معلوم ہوا کہ استاد کی سوال کرے تو اسوقت بھی استاد کی نے سوال کرے تو اسوقت بھی تحدیث بولا جا سکتا ہے اور جب شاگر داستاد سے سوال کرے تو اسوقت بھی تحدیث کا لفظ استعمال کیا جا سکتا ہے ی

سوال: ساس مدیث میں حضور علیہ نے چیتان یعنی ایک پہلی پوچھی،اسکو بجھارت اور معمد بھی کہتے ہیں جبکہ ابوداؤد کی روایت میں ہے((نھی النبی علیہ النبی علیہ الاغلوطات)) سے

و انظر علا . عدة القار و معم ، معمم ، معمم ، معمد ، معمد الفرج معمل تكوكتاب التوجة ع عمدة القارى حم ص ال ع عمدة القارى حمة على الفراء

جو اب اول: أن اغلوطات منع كيام جوتفسيج اوقات كاباعث بنت بين اوركوئي على فائده ان سے متعلق نه بوليكن الرعلمي فائده بولو و تعليم كي مانند م

جو ابِ ثانی:منع ان اغلوطات سے ہے جن کو ہو جھنے کے لیے قرید نہ ہو قرید ہوتو وہ جائز ہے تفصیلی روایتوں مین آتا ہے کہ جب بیسوال کیا گیا اس وقت جمار پیش کیا گیا تھا۔

جواب ثالث: منع وہاں ہے جہاں تھیذاذ ہان کا فائدہ نہ ہو۔

انهامثل المسلم: حضور عليه في محور كوسلمان كساته تشيد كا تشيدك بارك مين دوسم كى روايات بين البعض روايات بين البعض روايات من تشبيه بالانسان ب ٢-اوربعض مين تشبيه بالمسلم بـــ

تشبیه بالانسان: (۱):جیسے انسان کے سارے کمالات سر میں ہیں ایسے ہی اسکے سارے فوا کدسر میں ہیں، کدانسان کاسر باقی ہو باقی ساراجسم ڈوب جائے توسیح سلامت رہے گاایسے ہی تھجورہے۔

(٢) :.... جيانان متقيم القامت بأيهي ميتقيم القامت ب-

مسلم کے ساتھ تشبیہ کی بھی دودجہیں ہیں۔(۱) تشبیه بالبر کت ہے، کثر ت نفع کو برکت کہتے ہیں تو جسلم حسلم بتمام اجزائه نافع ہے۔ جس طرح مسلم بتمام اجزائه نافع ہے۔

(۲)مثل المسلم اى مثل كلمة المسلم بيئ آن مجيدين كلم طيب كوهجورك ساتم تشيدوي كَلْ ب ﴿ اَلَمُ اللَّهُ مَثَل اللَّهُ مَثَلا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصُلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرُعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴾ [

قال هي النخلة ي: آخضرت الله في النخلة ع المايا "وه مجورب"

0000000000000

ل باره ٣ اسورة ابراهيم أيت ٢٣ تعريف شجره: ماكان على ساق من نبات الارض (عمدة القارى ج٢ ص١٣)

ع استنباط الاحكام من هذالحديث: ١ . فيه استجباب القاء العالم المسئلة على اصحابه ليختبرافهامهم زيرغبهم في الفكر

r توفير الكبار وتركب التكلم عندهم ٣٠ فيه جواز ضرب الامثال والأشباه لزيادةالافهام وتصوير المعانى في الذهن وتحديد الفكر والنظر في حكم الحادثة (عمدةالقاري ج٢ ص ١٥)

(۲۲)

هباب طرح الامام المسئلة على
اصحابه ليختبر ماعندهم من العلم استادا پئ شاگردول كاعلم آزمانى كيليان كوئي سوال كرے، اسكابيان

﴿تحقيق وتشريح

(۳۸) باب القراء قوالعرض على المحدث شاگرداستاد كرما منے پڑھاوراس كوسنائے،اس كابيان

ورأى الحسن والثوري ومالك القراءة جائزة واحتج بعضهم في القرآءة على العالم اورامام حسن بھری اور سفیان توری اورامام مالک نے شاگر د کے پڑھنے کو جائز رکھاہے،اور بعضوں نے استاد کے سامنے پڑ جنے کی دلیل بحدیث ضمام بن ثعلبة انه قال للنبی عَلَيْ الله امرک ضام ابن نغلبہ کی حدیث سے لی ہے، یہ کہ انہوں نے آنخضرت اللہ سے عرض کمیا کیا اللہ نے آیے اللہ کو رہم دیا ہے کہ ان نصلى الصلوة قال نعم فهذه قراءة على النبي ہم لوگ نماز پڑھا کریں؟ آپ ایک نے فرمایا ہاں، تویہ (گویا) آنخضرت علیہ کے سامنے پڑھنا ہی تھبرا اخبرضمام قومه مذلك فاجازوه ،واحتج مالك بالصك ضام نے (پھرجاکر) اپنی قوم سے یہ بیان کیا تو انھوں نے اس کوجائز رکھا، اور امام مالک نے دستاویز سے دلیل لی يقرأعلى القوم فيقولون اشهدنافلان ويقرأعلى المقرى جو پڑھ کراو گوں کو سنائی جاتی ہے وہ کہتے ہیں ہم کوفلاں شخص نے اس دستاویز پر گواہ کیا،اور پڑھنے والا پڑھ کراستاذ کو سنا تا ہے القارئ اقرأني فيقول فلان کہتا ہے کہ مجھ کو فلاں نے بڑھایا والأ (١١) حدثنامحمدبن سلام قال ثنامحمدبن الحسن الواسطى عن عوف ہم سے محمد بن سلامؓ بیکندی نے بیان کیا،کہاہم سے محمد بن حسنؓ واسطی نے بیان کیا،انھوں نے عوف سے عن الحسن قال لابأس بالقراءة على العالم وحدثنا عبيدالله بن موسى انھوں نے امام حسن بھریؓ ہے، انھوں نے کہاعالم کےسامنے پڑھنے میں کوئی قباحت نہیں،اور ہم سے عبیداللہ بن موی نے بیان کیا قال اذا قرأ على المحدث فلا بأس سفيان انھوں نے سفیان توریؓ سے سنا،وہ کہتے تھے،جب کوئی شخص محدث کوحدیث بڑھ کرسنائے تو بچھ قباحت نہیں ان يقول حدثني قال و سمعت اباعاصم يقول عن مالك وسفيان ریوں کے کہاس نے مجھ سے بیان کیااور میں نے ابوعاصمؓ سے سناوہ امام مالک ؓ اور سفیان تورک کا قول بیان کرتے تھے

استدلالِ ثانی:امام مالک نے استدلال کیا ہے کہ چیک رجسڑی پڑھی جاتی ہے توسارے سنے والے کہتے ہیں کہ ہمیں گواہ بنایا ایسے ہی یہاں بھی کہد سکتے ہیں کہ اقوء نی فلاں فلال شخص نے مجھے پڑھایا۔ استدلال ثالث:یا جیسے قاری کوکوئی اپنی گردان سنا تا ہے وہ س کر کہدویتا ہے تم تو بیسنانے والا کہتا ہے۔ استدلال ثالث: حضوراقدی عظیمہ کے سامنے آللہ امرک بھذا (کیااللہ نے آپ کو یہ کم دیاہے) کہتے جاتے اور آپ عظیمہ مرف تم فرات جات بیت تاکرد پر حتاجات اور استاذباں باں کرتاجاتے تریبخاری کتاب اعلم ص اقرء نى فلان حالاتكه ال نے توصرف س كرنعم كهاتھا توجب بيصورتيں جائز بيں توقراة على المحدث والعرض على المحدث بهي جائز ہوني جا بيئ ۔

واحتج بعضهم: "بعض" كامصداق عندالعض حيدى بي جوكدامام بخارى ك استاد بي (اراد بالبغض هذاشيخه الحميدي فانه احتج في جوازالقرأة على المحدث في صحةالنقل عنه البض في المحدث في صحةالنقل عنه البعض في كما كرابوسعيد صدادً بين عن

(۲۲) حدثناعبداللهبن يوسف قال حدثنا الليث عن سعيدهو المقبرى عن شريك ہم سے عبداللہ بن یوسف ؓ نے بیان کیا، کہا ہم سے لیٹ نے بیان کیا، انھوں نے سعید مقبریؓ سے، انھوں نے شریک ابن عبدالله بن ابونمرسے، اُمھوں نے انس ابن مالک سے ساایک بارہم معجد میں آنحضرت علق کیساتھ بیٹھے تھے في المسجددخل رجل على جمل فاناخاه في المسجد ثم عقله قال لهم ايكم محمد اتنے میں ایک مخص اونٹ پرسوار آیا اور اونٹ کو مجد میں بٹھا کر باندھ دیا، پھر پوچھنے لگا (بھائیو) تم میں محمد کون ہے؟ والنبي المتكئ بين ظهرانيهم فقلنا هذا الرجل الابيض المتكئ آ تحضرت الله الله وتت لوگوں میں تکیدلگائے بیٹھے تھے ہم نے کہامحد ریسفیدرنگ کے مخص ہیں جو تکیدلگائے بیٹھے ہیں فقال له الرجل ياابن عبدالمطلب!فقال له النبي عُلَيْكُ قد اجبتك فقال له الرجل تبوه آ یا الله ہے کہنے لگاعبد المطلب کے بیٹے! آپ نے اس فرمایا (کہ) میں نے تیری تصدیق کردی وہ کالہنے لگامیں آپ انى سائلك فمشددعليك في المسئلة فلاتجدعلي في نفسك ،فقال سے پوچھنا چاہتاہوں اور خی سے پوچھوں گا توآب اپنے دل میں برانہ مانے گا آپ ایک نے فرمایا سل عمابدا لک فقال اسألک بربک ورب من قبلک (س)جوتیراجی جاہے یو چھانب اس نے کہامیں آپ کو آپ کے پروردگاراور آپ سے پہلے کو گول کے پروردگار کی شم دے کر بوچھتا ہول فقال اللهم نعم، ارسلک الی الناس کیااللہ نے آپ کو (بائے)سب لوگوں کی طرف بھیجائے؟ آپ ایک نے فرمایا ہاں، یامیرے اللہ، تب اس نے کہا انشدك بالله آلله الله الله المرك ان تصلى الصلوات الخمس في اليوم والليلة؟قال میں آپ کواللہ کو تم دیتا ہوں کیااللہ نے آپ کورات دن میں پانچ نمازیں پڑھنے کا تھم دیا ہے؟ آپ آپ اللہ کے نے فرمایا

اعدة القارى ج عص ١٤ عدرس بخارى ص٢٢٠

اللهم نعم،قال انشدك بالله آلله امرك ان تصوم هذاالشهرمن السنة؟ بال، يامير الله، چركهنا كاليس آب كوالله كاتم ديتا مول كياالله في آب كوريكم ديا كرسال بجريس اس مهينه بين (يعني رمضان ميس) روز الدر ككور؟ اللهم نعم قال انشدك باالله آلله امرک قال آپ الله نے فرمایا ہاں، یامیر سے اللہ، پھر کہنے لگا میں آپ کواللہ یقسم دیتا ہوں کیا اللہ نے آپ کو پی تھم دیا ہے کہ ان تأحدهده الصدقة من اغنياء نا فتقسمهاعلى فقراء نا افقال النبي عَلَيْكُمْ ہم میں جومالدار لوگ ہیں ان سے زکوۃ لے کرہارے مختاجوں کوبانٹ دو؟ آنخضرت اللہ نے فرمایا فقال الرجل المنت بما جئت ہاں، یامیرے اللہ، تب وہ مخص کہنے لگا جو مکم آپ (اللہ کے پاس سے)لائے ہیں میں ان برایمان لایا وانارسول من ورائي من قومي واناضمام بن ثعلبة الحوبني سعدبن بكر اور میں اپنی قوم کے لوگوں کا جو یہال نہیں آئے بھیجا ہوا ہول،میر انام ضام بن نغلبہ ہے بنی سعد ابن بر کے خاندان سے رواه موسى وعلى بن عبدالحميد عن سليمان عن ثابت اس حدیث کو (لیث کی طرح) موی اور علی بن عبدالحمید "فیسلیمان سے روایت کیا، انھوں نے ثابت سے انھوں نے مَدِياللهِ ا**لنب**يعَلُوسِيْهِ

00000000000

(۱۳) حدثنا موسی بن اسمعیل قال ثناسلیمان بن المغیرة قال ثنا ثابت نهم ہے بیان کیا مولی بن اساعل نے ،کہا ہم ہے بیان کیا سلیمان بن مغیرہ نے ،کہا ہم ہے بیان کیا طبت نے عن انس قال نهینافی القرآن ان نسأل النبی علیہ اللہ وکان یعجبنا انموں نے انس قال نهینافی القرآن ان نسأل النبی علیہ اللہ وکان یعجبنا انموں نے انس ہے ،کوقر آن میں آخضر تا اللہ اللہ ونص نسمع ان یجئ الرجل من اہل البادیة العاقل فیسالہ ونص نسمع کد کوئی شخص دیبات ہے آئے دس کوس مان کی فرد یہ وہ آپ سے سوالات کرے ہم سیل فجاء رجل من اہل البادیة فقال اتانا رسولک فاخبرنا فجاء رجل من اہل البادیة فقال اتانا رسولک فاخبرنا فجاء رجل من اہل البادیة فقال اتانا رسولک فاخبرنا قرد یہات والوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المجیہمارے پاس پہنچا ،اس نے یہ بتایا ہے آخرد یہات والوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المجیہمارے پاس پہنچا ،اس نے یہ بتایا ہے آخرد یہات والوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المجیہمارے پاس پہنچا ،اس نے یہ بتایا ہے آخرد یہات والوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المجیہمارے پاس پہنچا ،اس نے یہ بتایا ہے آخرد یہات والوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المجیہمارے پاس پہنچا ،اس نے یہ بتایا ہے آخرد یہات والوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المجیہمارے پاس پہنچا ،اس نے یہ بتایا ہے المحدود المحدود کیا تھا کہ المحدود کیا تھا کہ المحدود کیا تھا کہ کی کے انہوں میں سے ایک شخص آن ہی پہنچا اور کہنے لگا آپ کا المحدود کیا تھا کہ کو تھا کہ کو تھا کہ کیا تھا کہ کو تھا کہ ک

انك تزعم ان الله عزوجل ارهلك قال صدق فقال فمن خلق السماء؟قال ب كت بين كراللد في آب كوجيجاج؟ آب الله في فرمايات كها، بهر كمن لكا جها آسان كس في منايا؟ آب الله في فرمايا الله عزوجل قال فمن خلق الارض والجبال قال الله عزوجل قال الله نے، کہنے لگا زمین کس نے بنائی اور پہاڑ کس نے بنائے؟ آپ اللہ نے فرمایا اللہ نے، کہنے لگا فمن جعل فيهاالمنافع قال اللهعزوجل قال فباالذي بھلا (پرزوں) میں فائدے کی چیزیں کس نے بنا کیں؟ آپ ﷺ نے فرمایا اللہ نے ، تب اس نے کہافتم اس (خدا) کی جس حلق السماء وخلق الارض ونصب الجبال وجعل فيهاالمنافع آللهارسلك نے آسان کو بنایا اورز مین کو بنایا اور پہاڑوں کو کھڑ اکیا اوران میں فائدے کی چیزیں بنائیں ، کیا اللہ نے آپ کو بھیجا ہے قال نعم قال زعم رسولك ان علينا خمس صلوات وزكوة في اموالنا آ بﷺ نے فرمایا ہاں، پھراس نے کہا آ پ کے ایکی نے کہاہم پر پانچے نمازیں فرض ہیں اوراپنے مالوں کی زکوۃ دینا ہے قال صلاق قال بالذي ارسلك آلله امرك بهذا؟قال نعم آپ اللہ نے اور مایاس نے سچ کہا، تب دہ کہنے لگا توقعم اس کی جس نے آپ کو بھیجا ہے کیا اللہ نے آپ کواس کا حکم دیا ہے وزعم رسولک ان علینا صوم شهرفی سنتناقال قال توآ بينائيك نفرمايان، پراس نے كهاآ بكاليلى كہتا ہے كہم برسال بحريس ايك مهيندكروز فرض بين؟ آپ الله في في في الله صدق قال فبالذى ارسلک آلله امرک بهذا؟ قال نعم سے کہتا ہے تب وہ کہنے لگافتم اس کی جس نے آپ کو بھیجا ہے کیا اللہ نے آپ کواسکا تھم دیا ہے؟ آپ تھے کے فرمایا ہال قال وزعم رسولك ان علينا حج البيت من استطاع اليه سبيلا؟ تب وہ کہنے لگا آپ کے ایکی نے بیابھی کہا کہ ہم پر جج فرض ہے لینی اس پر جووہاں تک پہنچنے کاراستہ پاسکے؟ قال صدق قال فبالذي ارسلك الشامرك بهذا؟قال آ پ الله نے فرمایا کی کہا! تب وہ کہنے لگافتم اسکی جس نے آپ و بھیجا ہے کیا اللہ نے آپ کواس کا تھم دیا ہے؟ آپ الله نے فرمایا قال فوالذي بعثك بالحق لاازيد عليهن شيئا نعم ہاں تب اس نے کہافتم اس (خدا) کی جس نے آپ کوسچائی کے ساتھ بھیجامیں نہ ان کا موں پر پچھ بڑھاؤں گا والاانقص فقال النبي السيام النبي الم البياس اور نہ میں کمی کرون گا یہ س کرآ تخضرت اللہ نے فرمایا گر یہ سے بولتاہے توضرور جنت میں جائے گا

وتحقيق وتشريح،

حدثنا عبدالله بن يوسف السلط المسجد: المسجد: المام الك في السيام الك السياسة الله الكريام كاونك كالول و براز پاك بهاس حضور الله كالمرام الله التوجائز بيس به اوريهاس حضور الله كالمرام آن والاالين اون كوم بيس بانده رباب -

جواب:ی مطلب تھیک نہیں ہے بلکہ مجد کے قریب جوا عاطم مجد ہے اس میں بٹھایانہ کہ مجد میں ع کیونکہ حضور ﷺ جب القاء بصاق فی المسجد برداشت نہیں کرتے تو اونٹ کابول و براز کیے برداشت کریں گے؟ امام بخارگ نے (بناری س۳۵ پر) باب من عقل بعیرہ علی البلاط س او باب المسجد قائم کیا اوراس روایت کوذکر کرکے ثابت کیا ہے کہ اناخه فی المسجد ای فی قرب المسجد منداح بن فنبل میں بھی ہے کوذکر کرکے ثابت کیا ہے کہ اناخه فی المسجد ای فی قرب المسجد منداح بن فنبل میں بھی ہے (دلانا خ بعیرہ علی باب المسجد فعقله ٹم دخل س))۔ للمذااس سے استدلال صحیح نہیں ہے۔

دليل ثاني: سيه كرآب عظي في اومني رمور مي طواف كيار

جواب ا: سینصوصیت برمحمول ہے آ کی اوٹمنی مجدمیں بیٹاب ہیں کرتی تھی یہ آ کی صحبت کا اثر تھا۔

جواب ٢:يا آپ علي في في في الناقه (يعني اونمني پرطواف) بوجه ضرورت فرمايا_

والنبی متکئی: سوال: آپ عَلِی معابہ کرامؓ کے مقابلہ میں جب ابیض ہیں اور متکئی بھی ہیں تو پھر اللہ علیہ کی میں تو پھر اللہ تو پھر اللہ علیہ کی میں تو پھر اللہ علیہ کی میں تو پھر اللہ علیہ کی تو پھر اللہ علیہ کی تو پھر اللہ علیہ کی تو پھر تو پھر تو پھر اللہ تو پھر تو

سوال کی ضرورت کیوں پیش آتی ؟ خواجه ابوطالب نے آپ عَلِیْنَ کی مدح میں کہا ا

ابيض يُستسقىٰ الغمام لوجهه ۞ المال اليتامىٰ غنية للارامل

ا اخرجه ابوداؤدفى الصلوة والنساني فى الصوم وابن ماجة فى الصلوة على المراد من قوله فى المسجدفى هذا الحديث فى رحبة المسجدونحوها (عمدة القارى ج٢ ص٢٢) چانچ دوسرى ردايات ش تصريح كه دفت مجدك قريب بخلايا پرمجدين واش بوت (درس خارى المسجد من البلاط: حجارة مفروشة عندباب المسجد من انه اناحه حارج المسجد فلاحجة فيه للمالكية على طهارة اذبال ماكول اللحم وابواله (فيض البارى ج١ ص ٢٥٥١) تنبيه: رقم الحديث (٢٣) ليس بموجود فى البحارى مطبوعه دار السلام الرياض كتاب العلم ص ١ فافهم

جو ابِ ثانی: محابہ کرام بھی لباس، وضع قطع میں کم ل آپ کی مشابہت اختیار فرماتے تھا سے اخیاز نہ ہوسکا۔ جو ابِ ثالث: ہوسکتا ہے کہ شخص ہوگیا ہولیکن سائل تثبیت چا ہتا ہوتو یہ سوال للتثبیت ہے۔ جو اب ر ابع: ہم نے مولا نا عطاء اللہ شاہ بخاری سے سنا اور اساتذہ نے توثیق کی کہوہ کفر کے اندھرے سے مجد کی روثن میں آیا جہاں آپ تا ہے تو انوارت کی بارش ہور ہی تھی توجب آدی اندھرے سے روثنی میں آتا ہے تو اس کی آتا ہے تو اس کی تاب تو اس کی آتا ہے تو بھی تھے بھی تھے بھی تھے بھی تھے بھی تھے ہمی تعلیم مقصود ہوتی تو اس کی آ

، ال المسين بينها نے کے ليے منبر پر یا کسی او نچی جگه پر بھی بیٹھ جاتے۔ دورتک آواز پہنچانے کے لیے منبر پر یا کسی او نچی جگه پر بھی بیٹھ جاتے۔

بین ظهر انیهم:ظهر ان کیارے میں دو را نیں ہیں۔

ا یافظ هم کہا تا ہے یعنی یدز اکد ہوتا ہے اسکے معنی نہیں کے جاتے تو بیاس صورت میں نقد بری عبارت ہوگی ہیں ہے الفظ ظهر کا شنیہ ہے پھر کٹر تاستعال کی وجہ سے اسکو مفرد قرار دیکر تثنیہ کرلیا توظهر انین ہوگیا اضافت کی وجہ سے نون گرگیا لے جیسے آپ حدثنا عبدان کر سے ہیں یہ دراصل عبدان بالکسر تثنیہ کا صیفہ تھا ہے لیکن کثر ت استعال کی وجہ سے اسکو عکم اور مفرد بنادیا جیسے لم یک ، لم تک ، ان یک جیسے کی شاعر نے کہا ہے ___

لايدرك الواصف المطرى خصائصه كالله وان يك واصفاً كل ماوصفا

ان یک وغیرہ میں پہلے تو جازم کی وجہ سے صرف حرف علت کو حذف کر دیا پھر کثر ت استعال کی وجہ سے جازم کود و بار ممل دیکرنون کو بھی حذف کر دیا۔

۲ خفرت شخ الحدیث قرماتے ہیں کہ میرے والدصاحب نوراللہ مرقدہ فرماتے سے کہ اسکوز اکد مانے کی ضرورت نہیں ہے کیونکہ جب آپ تھے ہوں تو آپ تھے ہوں کے درمیان ہوں گے ایسے ہی پشتوں کے درمیان بھی تو ہوں گے ہے۔

هذا الرجل الابيض:مراد خالص بياض نهيل بلكه بياضِ مشوب بحمرة مراد بجي گلاب چونكه اس ميل مشوب بحمرة مراد بحي گلاب چونكه اس ميل مفيدى غالب بوتك بياض تعبيركيات

یاابن عبدالمطلب: دادا کی طرف نبت تو عرب دالے عام طور پرمحمود بھے ہیں۔ ان کے ہاں یہ اکرام ہے فزوہ خین میں آ ب ان ابن عبدالمطلب ف

ا سوال نون و عنداا سنانة گرجاتا بیبال کیون میس گرا؟ جوب ظهر کاشنیة وظهر ان بیکین کثر قاستعال کی وید سے اس شنید کو بمزار مفرد کے قرار ذیکر پھراس کوشنید بنایا قطهر اندین و گیاا ضافت کی وید سنانون نانی گرگیا اور بیانون ان با توظهر انده به موگیا ورس بخاری ۱۲۳ پر که هار کاشنید ظهر ان سی پھر ظهر ان کومفرد کے تیم بن قرار دیود و باره شنید کی ملامت استک ساتھ دگادی اور ایسابطور شیون محتاب اور بیانقط اسونت بولنے میں جب مجمع کشیر ، واور ایک دوسرے کی طرف چیھے نظیمی وال ع فیش الباری جا ص ۱۱۵ سے تقریر بخاری جا کتاب العلم ص ۱۰ سے ورس بخاری ص ۳۲۳ ہے عمدة القاری ت مس قداجبتك: سو ال: ابهى توسوال كيابى نبيل توقد اجبتك كاكيامطلب بوا؟

جواب اول: اجبتک جمعنی سمعتک ہے۔

جوابِ ثانی: سبجاز پرمحول ہے۔مطلب ہے کہ میں جواب دینے کے لیے تیار ہوں آپ بات کیجے ا جو ابِ ثالث: سبجب اس نے سوال کیا ایکم محمد؟ پھر کس نے جواب دیدیا هذاالرجل الابیض المتکئی پھراس نے کہایا ابن عبدالمطلب! تو حضور علی نے نصدیق کی کہ جواب پہلے ہو چکا وہ صحیح ہے میں ہی محر ہوں ،اس سے علم کلام کا مسلم بھی ثابت ہوا کہ اگر کوئی کے میں محرکو مانتا ہوں مگر اس محرکونیس مانتا جوعبدالمطلب کا بیٹا ہے یااس محرکونیس مانتا جو مہا جرمدنی ہے جس پرقر آن نازل ہواتو وہ کا فرہے۔ آپنیس سمجھے! یہ لوگ کہتے ہیں کہ ریشی کیڑے میں لیب کر آمند کی گود میں رکھ دیے گئے۔ یہ اس لئے کہ جب ہم آئیس کہتے ہیں کہتم تو نور مانے ہو پھر یوم میلادکس چیز کامنا تے ہو؟ تو کہتے ہیں کہ بقعہ نور کو لیب کر جریل علیہ السلام نے آمند کی گود میں رکھ دیا۔

اللهم نعمی:ای جملہ سے قرأت علی المحدث ثابت ہوگئ کہ ادھرتو حضور عَلَیْ ہے فرمایا اللهم نعم تصدیق کردی اورواپس جاکریے کے گاکہ آپ عَلِی ہے نوں یوں فرمایا۔

اناصمام بن تعلبة:سوال: يخصمومن هاياب ايمان لايا؟

و جه الاول: بعض روایوں میں آتا ہے کہ صحابہ کرام فرماتے ہیں کہ ہمیں سوال سے منع کردیا گیا تھا ہم چاہتے تھے کہ کوئی عاقل آدمی آئے سوال کرے اور سوال کی نہی ہم جمری میں ہوئی۔

و جه ثانی: سیاس دقت آیا جبکہ ج فرض ہو چکا تھا اور ج ہ جری میں فرض ہوالہذا پانچ ہجری والی روایت مرجو ت ہے۔ رو اه هو سیی: سسامام بخاریؒ نے اس کواستشھا دائی پلی روایت کی تائید میں ذکر کیا نیز تعلیقاً ذکر کیا موصولاً ذکر نہیں کیا۔ ہوسکتا ہے کہایئے شخ مولی سے بالواسط روایت کرتے ہوں۔

ا ورس بناری سست سی اس مبارت سے پہلے فیمشد دعلیک ہے تی سے مرادیہ ہے کہ وہ موالات آپ کی شان کے خلاف ہو کی یک مال فطانت سے کہ پہلے معذر سے خوامی افتیار کرتے ہوئے ناگواری کے خوف ہے آگے کے لیے روک بگادی: درس بخاری ص ۳۲۵ سے عمرة القاری ج۲ مسا۲ سے فیض الباری ج اس ۱۲۱ مطبع مجازی قاہرہ ه المناولة و كتاب العلم المناولة و كتاب العلم العلم العلم البلدان مناوله كاييان اورعالمول كاعلم كى باتول كولكه كر دومر يشهرول مين بيميخ كابيان

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض:اسباب مين المام بخارى دوسكے بيان فرمار بين المام بخارى دوسكے بيان فرمار بين المام بخارى كى غوض: المناوله اور مكاتبه برابر بين الافوق بينهما - تعريفِ مناوله:كولى شخاني كسى بولى مرويات ياتصنيف كى كے والے كردے لا تعريفِ مكاتبهكولى شخاني تعريفِ كى كور ليے كى كى طرف روانه كردے ـ

ا مرویات حوالے کرنے کے بعد کئے کدمیں سنجھے اجازت ویتاہوں تو اس کو بیان کر: درس بخاری ص ۳۲۸

فرق: یه واکه مناوله میں مشافهه ہے کہ جس کودے رہاہے وہ حاضر ہواور مکا تبت میں مشافهت نہیں ہے۔ مناوله کی اقسام: مناوله کی دوسمیں ہیں۔

(1):مقرون بالا جازت لیعنی دینے کے بعد کہے کہ روایت کرنے کی اجازت دیتا ہوں اس صورت میں طالب علم حد ثنا اوراخبر نا کہہ کر روایت کرسکتا ہے۔

(۲): سنغیر مقرون بالا جازت اس کی بھردو تشمیں ہیں اسکوت اختیار کیا ہو ۲ روایت کرنے سیمنع کر دیا ہو۔ سکوت کی صورت میں دورائیں ہیں۔

رأى اول: احبرنا اورحدثنا يروايت جائزے

ر أى قانى: عندالبعض جائز نهيس كيكين جمهورٌ جواز كقائل بير.

جمهور کی دلیل اوّل دین کامقصد بی روایت کرنا جا گرمنع کردیا تو علیحدهات بی که اس صورت میں جا ترنہیں ، وگا۔ اقسمام و احکام مکاتبہ : مکتاب اقسام واحکام میں مناولہ کی مثل ہے۔

اس باب میں امام بخاری مناولہ اور مکا تبد کی قشم اول یعنی مقرون بالا جازۃ کا تھم بیان کرنا جا ہتے ہیں۔اس بارے میں اختلاف ہے کہ بید دونوں برابر ہیں یاا کے تھم میں فرق ہے؟ نیز ایک راج اور دوسرا غیررانج ہے؟ توامام بخاری کے نز دیک تو برابر ہیں لیکن عندالبعض مناولہ رانج ہے ا۔ ھلذا ھو غوض الباب.

بعث بھاالی الافاق:اس جملہ ہے معلوم ہوا کہ مکا تبت جائز ہے حضرت عثمان ؓ نے چند نسخ مختلف علاقوں میں بھیجے تھے وجہ استدلال میہ ہے کہ ظاہر ہے کہ سب نے اس کو معتبر قرار دیا، پڑھاپڑھایا معلوم ہوا کہ مکا تبت معتبر ہے۔ دلیلِ ثانبی:دوسری دلیل امام بخارگ نے میہ ذکر کی کہ عبداللہ بن عمرؓ اور یحیی بن سعیداور امام مالک نے اس کو جائز سمجھا ہے۔

بعض اهل الحجاز:بعض الل جاز عمراد حيديٌ، استاد بخارى بين ع

مناولة كر جو از كى دليل: سكتب لامير السرية كتاباً: آب الله في الكمرتب عبدالله بن جحث الولة كريد عبدالله بن جحث الولة كله في الموال قريش كي تفتش كي ليجيجا اوران كوايك خط ديا اور فرمايا كه جبتم مدينه سے دومنزل دور موجا وَتو

المناولة ايضاحجة وان اقترنت بالاجازة فهى الاقوى واماالمكاتبة فهى ايضا حجة بشرط تعيين المكاتب والمكتوب اليه وقال بعض القاصرين ان الحط يشبه الخط فلا تكون حجة فيض البارى ج اص٢١١ ٢ المكتوب في عمدة القارى ج ٢ ص٢٥ من القاصرين ان الحط يشبه الخط فلا تكون حجة فيض البارى ج اص٢١١ ٢ المكتوب في عمدة القارى ج ٢ ص٢٥ من في غير البخارى ان عثمان بعث مصحفا الى المحاز ومصحفا الى البحرين وابقى عنده مصحفا للى البنس على قرأة ما يعلم ويتيقن وقال ابوعمرو الدانى اكثر العلماء على ان عثمان كتب اربع نسخ فبعث احدهن الى البنسرة واخرى الى الكوفة واخرى الى الشام وحبس عنده اخرى وقال ابوحاتم السجستاني كتب سبعة فبعث الى مكة واحدا والى البنسرة أخر والى النام أخر والى البحرين أخروالى البصرة أخروالى الكوفة أخرو دلالة هذاعلى تجويز الرواية بالسكات غاهرة الله المناولة الى في صحة السناولة بحديث النبي النبي المناولة الى في صحة السناولة بحديث النبي النبي المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة المناولة المناولة المناولة الله المناولة المناولة المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة الله المناولة المناولة المناولة المناولة المناولة المناولة المناولة المناولة الله المناولة الله المناولة المناولة المناولة الله المناولة المناولة

اس خط کو کھول اپنی جماعت کوسنادینا۔ چنانچہ انہوں نے وہاں جا کر پڑھااور اپنے ساتھیوں سے کہا کہ حضور علی ہے لیے فریایا اِقومعلوم ہوا کہ مناولہ میں روایت جائز ہے۔

مسوال:اس خط مين كيا تهااوراتي دورجا كركهو لنه كاحكم كيون فرمايا؟

جو اب: وہیں پر کھولنے کا تھم اس لیے نہیں فرمایا تا کہ منافقوں کو پہتہ نہ چل جائے اس میں لکھا ہوا تھا کہ تہہیں فلاں کام کے لیے بھیجا جارہا ہے چوچا ہے آگے بردھے اور جوچا ہے والیس آ جائے ۔ چنانچہ دوآ دمی والیس آ گئے (انہوں نے ضرورت نہ مجھی اور اجازت ل ہی گئی تھی ع

وتحقيق وتشريح

حدثنااسماعیل بن عبدالله:عظیم البحرین: ائکانام منذر بن ساوی تقایه مدیث مکانیة می جمت ہے۔ فلد عاعلیهم: چنانچر آکی بید عاقبول ہوئی خط پھاڑنے والے کانام پرویز بن ہر مزتقا اسکی بیوی شیریں تھی اس پرا سکا بینا شیر و بی عاشق ہوگیا اس نے سوچا کہ شیریں تک رسائی کے لیے باپ کا پیٹ بھاڑنا ضروری ہے۔ چنانچہ پیٹ بھاڑ دیا ، یکام چھ مہنے میں ہوگیا۔ پرویز بن ہر مزکو جب موت کا یقین ہوگیا تو اس نے ایک دوا کے اوپر لکھ دیا "دو آء نافع للجماع" جب خاوندمر گیا تو بوی نے بھی زہر کھالیا۔ شیر و بیے جب خزانہ کھولاتو وہاں بیدوالمی اسکو کھایا تو وہ

ا تقریر جان ااع درس بخاری ص mrx

بھی مرگیا اور بھائی کوتو حکومت حاصل کرنے کے لیے پہلے ہی ہلاک کر چکا تھا اسکی حکومت پر ایک عورت تخت نشین ہوئی جس کو بعد میں تخت سے اتارا گیا، حضرت عمر رہائی سعد بن ابی وقاص کے کہ کے بیجا تو ساری حکومت ختم ہوگی۔ (فان قلت لم لم یقل الی ملک البحرین وقال عظیم البحرین قلت لانه لاملک و لاسلطنة للکفار اذالکل ٹرسول الله علی اللہ علی ولاه) ل

وتحقيق وتشريح

حدثنا محمدبن مقاتل: يقشه محمدرسول الله: محمد ينج قارسول درميان من اورالله اوير



اس سے معلوم ہوا کہ ضرورت کے لیے جار ماشے جا ندی کی انگشتری جائز ہے ا۔ پھر مہر پر اپنانا م لکھنا ہی ضروری نہیں کوئی علامت متعین کرسکتا ہے۔

ا حضرت عمر الكشترى يرتفا "كفى بالموت و اعظاً" موت واعظ مون كاظ سے كافى ہے يا

٢ حضرت امام عظم كا الكوشي برتها "قل الحير و الافاسكت"

٣ حضرت شيخ الصند كي انگوشي برتها "اللهي عاقبت محمود كردال-

م حصرت تعانويٌ كي انگوشي برتها'' ازگرو واوليآ ءاشرف علي''

۵ حضرت مولا ناخیر محمدٌ کے استاد حضرت مولا ناکر یم بخش صاحب کی انگوشی پرتھا ''یا کریم ، بخش'

. ٢حفرت مولانا خيرمحم صاحبٌ كي انگوهي پرتها" خير المطلوب خير محمد"

كمولاناعزيز الرحمن صاحب كالمحفى برقعا "المتوكل على العزيز الرحمن"

٨ حضرت الاستادمولا نامحرصدين صاحب كى انگوشى بر بخليف محمر، بلافصل صديق -

(4.0)

﴿ باب من قعد حیث ینتهی به المجلس و من رأی فرجة فی الحلقة فجلس فیها ﴾ اس خف کابیان جوملی کا خیر میں (جہاں جگہ ہو) بیٹے میں اور جو ملقہ میں کھی جگہ یا کراس میں بیٹے جائے۔

(۲۲) حدثنااسمعیل قال حدثنی مالک عن اسحق بن عبداللهبن ابی طلحة هم سے اساعیل نے بیان کیا کہا بھے سے امام الک نے بیان کیا، انھوں نے اسحاق بن عبدالله بن ابوطلح سے، ان کو ان ابامرة مولی عقیل بن ابی طالب اخبرہ عن ابی و اقد اللیثی ان رسول ابوم، عقیل بن ابو طالب کے غلام نے خردی ، انھوں نے ابوداقد لیڈی سے ساء کہ آنحضر سے اللہ علاقت بین ماھو جالس فی المسجدو الناس معه اذاقبل ثلثة نفر فاقبل اثنان ایک بارمسجد میں بیٹے سے اورلوگ آپ کے ساتھ (پنے) سے اسے میں تین آدی (برے) آئے، دوتوان میں سے الی رسول الله علی رسول الله علی سے اللہ علی سے اللہ علی رسول الله علی اس کے اللہ علی اللہ

إفيه جوازاستعمال الفضة للرجال عندالتختم عمدة القارى ج٢ ص٣٠ ع فيض الباري ج ا ص٢٤ ا

وتشريح

توجمة الباب کی غوض: امام بخاری اس باب میں طلبہ ویکس درس میں بیٹے کاطریقہ بتلارہ ہیں کہ مجلس درس جہال ختم ہوہ ہیں بیٹے جا کربھی بیٹے سکتا ہے۔
اماا حد هم : اس جملہ سے ترجمہ انی ثابت ہوااورو اما الآخو سے ترجمہ اولی۔
سوال: اس اس باب کو کتاب العلم سے کیا مناسبت ہے؟ حالانکہ پوری حدیث میں کہیں علم کا ذکر نہیں ہے۔
جو اب: سدھو جالس فی المسجد و الناس معه وہ طقے میں بیٹے تھے اور حلقہ عندا ابخاری کم کا تھا۔
قوینه: سد فلما فوغ سے معلوم ہوا کہ کوئی کام کررہے تھے وعندا ابخاری و تعلیم تھی کیونکہ امام بخاری نے اس دوایت کو قوینه نے سام بعلیم میں ذکر کیا ہے۔ و یسے احتمال "حاق الله اور استحیی الله میں دو بحثیں ہیں بحث اول: سد الفاظ کی شرح میں ہے۔ آو اہ الله اور استحیی الله مفاعوض الله عنه وغیرہ الفاظ میں صحت مثا کلہ ہے تا

فوجه:بضم الفاء او بفتح الفاء دونوں احتمال میں بلکہ علاء لغت سے منقول ہے کہ تینوں لغتیں اس میں جائز میں۔ لفظ فُو جه سیے متعلق ایک قصه:حضرت مولانا اعز ازعلی صاحبؓ نے ابوعمر ونحوی کا قصہ کھا ہے کہ ان کی قر اُت بالفتے تھی کسی نے حجاج کوشکایت کردی کہ وہ آپ کی مخالفت کرتا ہے حجاج نے بلایا ، ابوعمر و نے اس کو

ا احرجه الترمذي ومسلم في الاستئذان واخرجه النسائي في العلم:: صيث كَ سَرَيْلَ بِالْحَ رَوَاكَ مِن :: المخامس ابوواقداسمه المحارث بن عوف وقيل الحارث بن مالك توفي بمكة ودفن بمقبرة المهاجرين روى عن النبي المسلحة عشرون حديثاوفي الصحابة من يكني بهذا الكنية ثلثة هذا احدهم وثانيهم ابوواقدمولي رسول الله المسلحة وثالثهم ابوواقد النميري :: عمدة القاري ج ٢ ص ١٨٠٠ واماقوله فاستحيى الله منه على صنعة المشاكلة :: فيض الباري ج ١ ص ١٨٠

ٹابت کرنے کے لیے مہلت مانگی۔ حجاج نے کہا کہ پندرہ دن کے اندردلیل لاؤ۔ ورنہ میں تحقیق کر دوں گا۔ چند سپاہی اس پرمقرر کردیے۔ وعدہ کے دفت تک کوئی دلیل نہ تلاش کر سکے تو سپاہیوں نے اسے تھسیٹنا شروع کردیا تا کہ حجاج کے پاس لے جائیں راستے میں ایک چرواہا پڑھ رہاتھا ۔

ربما تجزع النفوس عن الام ۞ راله فرجة كحل العقال

ابومرونوی نے پوچھا فرُجة یافرُجة اس نے کہالنافیہ ثلث لغات فعلہ بفعلہ پھر چروا ہے ہے پوچھا کہ یشعر
کیوں پڑھ رہاتھا اسنے کہاہم جاج سے فوف کھاتے ہیں اور ابھی خبر پیچی ہے کہ جاج مرکیا۔ (علم کی بات اگر ال جائے تو بہت فوق ،
موتی ہے) نحوی کہتا ہے کہ میں فرق نہ کر سکا کہ کس بات پر جھے زیادہ خوشی ہوئی جاج کی موت کی خبر پر یاعلم کی بات ال جانے پر؟ لے
بحثِ ثانی: سان تین شخصوں میں سے افضل کون ساہے؟ محدثین کا اس میں اختلاف ہوا ہے۔

(۱) بیعض نے کہا ہے کہ خالی جگہ میں جو جا کر بیٹھ گیاوہ افضل ہے کیونکہ اس کے بارے میں الفاظ ہیں آواہ اللہ ووسرے نے حیا کیا۔

(۲)ایکن بعض نے کہا ہے کہ ایسانہیں ہے بلکہ حیا کرنے والاافضل ہے کیونکہ مجلس میں بھی شرکت کی اور حیا بھی کیا (۱لحیاء شعبة من الایمان)) دونوں کا تواب لیا البذایہ افضل ہے بعض تفصیل کے قائل ہیں کہ جزاء جواس صدیث میں ذکر ہے وہ جزا عن جنس العمل کی قبیل سے ہے جیسا عمل و لی ہی جزا حیاوا لے عمل کی ایک جہت بیشے کے لخاظ سے ہے کہ گیا نہیں بلکہ بیٹھ گیا تھے کیا دوسری جہت یہ ہے کہ حیا کیا اور چیچے بیٹھ گیا آ گے نہیں بڑھا گردنیں نہیں بھلا تھی تھے گیا تھی حیا مراد ہے تو آ گے آنے والا افضل ہے اگر دوسری قسم مراد ہے تو یہ افضل ہے اس کو کہتے ہیں ہو لآء لایشقی جلیسهم تو یہ چھے بیٹھے والا ای قبیل سے ہے۔

تیسر شخص کے بارے میں فرمایا اعرض فاعوض عند (۱)بعض نے کہا کہاس اعراض سے پیش نظراسکوٹو ابنہیں ملے گا(۲)بعض نے کہا ہے کہاس اعراض کے پیش نظراس کواعراض کی سزاملی۔

(۲) تیسرا مطلب میہ ہے کہ اسکو جز ااور سزاد سینے سے اعراض کیااب اعراض دوشم پر ہے اگر تکبو آ اور تھاو ما ہے کہ مجلس کواپنے بیٹنے کے قابل نہیں سمجھا تو گناہ ہوگااور اگر ضرورتِ دنیاوی کے پیش نظر ہے تو سزانہیں ہے اگر ضرورت دینی کے پیش نظرنہیں بیٹھا تو ثواب ہے۔

مسائلِ مستنبطه:ادام بخارگ نے یہ بتلایا کہ حلقہ درس میں جہاں جگہ ملے وہاں بیٹے جانا چاہیے۔ ۲۔اگر قریب جگہ ہوتو وہاں بیٹھے۔ ۳۔ بجالسِ علم سے استغنا نہیں ہونا چاہیئے۔ ۲۔ مسجد میں تعلیم وتعلم جائز ہے۔ کیونکہ احادیث میں مجالسِ ذکر سے مرادعموماً تعلیم وتعلم ہی ہوتی ہے۔

ل نفحة العرب ص٣١ ٢ مكتبه امدايه ملتان وفي فيض الباري ج١ ص١٧٨ ٢ عمدة القاري ج٢ ص٣٣

مدالله (۵۱)

﴿ باب قول النبى عَلَاسِتُهُ رِب مبلغ او على من سامع ﴾

آنخضرت عليه کارفر مانااکثر اليا موتا ہے کہ جس کو (ميرا کلام) پنچايا

مائے وہ اس سے زيادہ يادر کھنے والا ہوتا ہے جس نے مجھ سے سنا

(٢٤) حدثنامسددقال حدثنا بشرقال حدثنا ابن عون عن ابن سيرين عن ہم سے بیان کیامسدڈ نے ،کہاہم سے بیان کیابشرؓ نے ،کہاہم سے بیان کیا ابن عونؓ نے ،انھوں نے ابن سیرینؓ سے عبد الرحمن بن ابي بكرة عن ابيه قال ذكر النبي عُلَيْظُهُم انھوں نے عبدالرحمٰن بن ابو بکراہ سے،انھوں نے اپنے باپ ابوبکراہ سے،انھوں نے آنخضرت علیہ کاذکر کیا قعد على بعيره وامسك انسان بخطامه اوبزمامه قال اى يوم هذا آپ تالنٹ پر بیٹھے تھے وٹی ندویری اور ایک آدمی اوٹ کی گیل یا اس کی باگ تھا مے تھا آپ نے دوس فرمالی کون سادن ہے؟ فسكتنا حتى ظننا انه سيسميّه سواى اسمه قال اليس يوم النحر؟ ہم لوگ جب ہورہ، یہاں تک کہ ہم سمجھ کہ آ باس دن کا اور نام رکھیں گے، پھر آ پ ملک نے فرمایا کیابیہ یوم انحر نہیں؟ قلنا بُلٰی قال فای شهر هذا؟ فسکتنا حتی ظننا انه سیسمیّه نے کہا کیوں نہیں ایو نجر ہے آ پ علانے فرملا یکون سام ہینہ ہے؟ ہم چپ رہے یہاں تک کہ ہم سمجھ آ پ علان کاجونام ہے اسمه قال اليس بذى الحجة؟ قلنا بلى ار كسواكوكى اورنام ركيس كرة ب يعد فرمايا كيابيذي الحبكام بينهيس بيء بم في عرض كيا كيون بيس ابيذي الحبركام بينه فان دمائكم واموالكم واعراضكم بينكم حرام كحرمة يومكم هذا في شهر كم هذا في بلدكم هذاليبلغ الشاهدالغائب فان جیسے تبہارے اس دن کی حرمت اس مہینہ میں ، اس شہر میں ، جو یہاں موجود ہے وہ اس کوخبر کردے جوموجو دنہیں کیونک الشاهد عسى ان يبلغ من هو اوعيٰ جو حاضر ہے شاید وہ ایسے مخص کو خبر کردے جو اس بات کو اس سے زیادہ یادرکھے

وتحقيق وتشريح

اور معلوم ہوا کہ سا کر دہشتاد سے بڑھ کراوی اورا ہم ہوسلائے بید بی تصیلت بڑی ہے بیہ بھے کہ استاد تو تصیلت بی حاصل ہے اور استاد کو بنظر تحقیر نہ دیکھے کیونکہ وہ وسا تطاعلم میں سے ہے۔اور استاد کو بھی خوش ہونا چاہیے کیونکہ اس

شاگرد کے علم وعمل سے استاد ہی کوفائدہ ہوگا علاء نے لکھا ہے کہ تین شخصوں پر تین شخصوں کوحسد نہیں ہوتا۔

ا۔ شاگر دیراستادکو ۲۔ مرید پر بیرکو ۳۔ بیٹے پر باپ کو بلکہ تمنا ہونی چاہیے کہ اس میں اضافہ ہو۔ آھیں تین کو تین سے سوال کرنے میں کوئی عیب نہیں ہوتا ا۔ بیٹے کو باپ سے ۲۔ شاگر دکو استاد سے ۳۔ مرید کو بیر سے۔ میلغ اور سامع کا ایک معنی تو ہو چکا دوسرے معنی یہ ہے کہ بلغ سے مراد بالواسطہ سننے والا اور سامع سے مراد بلا واسطہ سننے والا۔

على بعيره:ا ين اونث پرياابو بكره كاونث پردونون احمال بين _

ذكر:سوال: ذكر كافاعل ابوبكره بياكونى اور؟

جواب: صبح ترجمة تب بى بنما ہے كه ذكر كافاعل ابوبكره مواور بعير ه كي مير كامرجع حضور علي ما

امسك انسان:قال البعض كان بلالٌ وقال البعض كان ابابكره ع. اراد نفسه.

بخطامه او بزمامه:زمام اورخطام مين بعض فرق ك قائل نهيل مين حافظ ابن جركا يمي نظريه باور بعض

کے نزد یک خطام وہ چھوٹی رسی ہوتی ہے جوناک پر ہوتی ہے زمام کمبی رہی سے

او: شک راوی کے لیے ہے اور تنویع کے لیے بھی ہوسکتا ہے۔

فسكتا: يا تواس ليے خاموش بي كتثبيت مقصور في محض توجد دلانا ٢- بعض نے كہااس كئے كه شايد آپ عليقة نام بدليس كيـ

كحر مة يو مكم:حقيقت ميں انسان كے جان ومال كى حرمت اس سے بھى زيادہ ہے ليكن تشبيه ان كے ساتھ اس كے ساتھ ان كے ساتھ ا

(۵۲)
﴿باب العلم قبل القول والعمل
علم مقدم بقول اورعمل پر

لقول الله عزوجل (فَاعُلَمُ أَنَّهُ لَاإِلَهُ إِلَّالله) فبدأ بالعلم بیجہ اللہ تعالی کے فرمان توجان رکھ کہ اللہ کے سوا کوئی سیا معبود نہیں،اللہ نے علم کو پہلے بیان کیا،اور دید می م وان العلماء هم ورثة الانبياء ورثوالعلم من اخذه اخذ بحظ وافر کہ عالم اوگ وہی بیغیبروں کے دارث ہیں پیغیبروں نے علم کائر کہ چھوڑا، پھرجس نے علم حاصل کیااس نے پورا حصہ (ان ریمالیا ومن سلك طريقا يطلب به علماسهل الله له طريقا الى الجنة.وقال. ادر (مدیدیں ۔) جوکوئی علم حاصل کرنے کے لیے داستہ چلے تو اللہ اسکے لیے بہشت کا راستہ آسان کردے گا اور اللہ نے فرمایا (إِنَّمَا يَخْشَى اللهَ مِنُ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ) } وقال (وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ) ٣ • خدات اسکے وہی بندے ڈرتے ہیں جوعالم ہیں اور فرمایااللہ تعالی ان مثالوں کو وہی سیجھتے ہیں جوعلم والے ہیں وقال (وَقَالُوا لَوُكُنَّا نَسُمَعُ أَو نَعُقِلُ مَاكُنَّا فِي أَصْحُب السَّعِير) ٣ اور فر مایادہ (دوزخی) کہیں گا گر ہم پنجبروں کی بات مانتے یا عقل رکھتے ہوتے تون کی دوز خیول میں سے نہوتے ُوقال (هَلْ يَسْتَوى الَّذِيْنَ يَعُلَمُونَ وَالَّذِيْنَ لَايَعُلَمُوْنَ) ﴿ وَقَالَ النَّبِي عَلَيْكُمُ اور الله تعالى نے فرمایا (میفیرین) کیا جانبے والے اور نہ جانبے والے (دونوں) برابر ہیں؟ اور آنخضرت علیہ نے فرمایا من يرد الله به خيرا يفقهه في الدين وانما العلم بالتعلم. وقال ابوذر لو الله جس كى بهاائى جا ہتا ہے اس كو دين كى سمجھ ديتا ہے اور فر مايا علم سكھنے ہى سے آتا ہے۔اورابوذر سنے كہا اگر ١٦٠- ، أندأية إلى إلى والمسورة فاطرأية ٢٨ سياره ٢٠ جورة تنكوت أيت ٢٣ مع باره ٢٩ سورة ملك آيت ١٠ هي باره ٢٢ سورة زمراً يت ٩

﴿تحقيق وتشريح

توجمة الباب كى غوض: المام بخارى السبام من الله عن بلات بين كه وعظ اور عمل سے پہلے علم حاصل كرنا جائے ہيں كه وعظ اور عمل سے پہلے علم حاصل كرنا جائے ہيں كار علم بڑھنے كى ترغيب و سے رہے ہيں) قبل سے مراد قبليت زمانى ہے يارتبى ہے۔ علم كازمانه بھى عمل سے مقدم ہے اور د تب بھى۔

ا . قبلیتِ زهانی:امام بخاریؒاں باب میں بتلانا چاہتے ہیں کہ چونکہ زمانۂ کم عمل سے قبل ہے لہذا اس بناء پر کیمل ہوسکے یانہ ہوسکے علم حاصل کرنے کا کیا فائدہ؟اس سے متأثر ہوکرکوئی سستی یاترک اختیار نہ کرے کیونکہ جب علم حاصل ہوگا تو داعی الی العمل ہوگا۔

۲. قبلیتِ رتبی:فرائض وواجبات وسنن کی ادائیگ کے بعد خالی وقت علم میں صرف کرنا چاہیے یا عبادت میں؟ توامام بخاری فرماتے ہیں کہ علم کارتبہ زیادہ ہے لہٰذا فرائض، واجبات وسنن کی ادائیگی کے بعد زائد وقت تعلیم وتعلم میں صرف کرنا چاہئے۔

تعبیرِ ثانی: علم و معتبر ہے جو کہ بچے ہوا در توی ہوا در توی علوم دیدیہ ہیں اس کخاظ سے علوم دینیہ کو حاصل کر کے آگے ہنچانا چاہیے۔ علم سیحے وہ ہے جو شریعت کے مطابق ہوا در قوی وہ ہے جو اسکے اعضاء و جوارح پراٹر انداز ہو۔ ام غزائی نے اس کوا کی مثال ہے سمجھایا مثلاً ایک شخص جارہا ہے اس نے آگے ہے دیکھا کہ کوئی جانور آرہا ہے، تھا گھوڑا، اس نے شیر سمجھ لیا اس نے بھا گنا شروع کر دیا تو یہ بے فائدہ ہے اور بیاس لئے کہ اسکاعلم قوی تو ہے مرضح نہیں ہے۔ نہیں ہے اگراس کو ہیجان لے کہ اسکاعلم قوی تو ہے مرضح نہیں ہے۔ نہیں ہے۔ اگراس کو ہیجان لے کہ شریع ہے گر تو کہ نہیں ہے۔

[[] ارادان الشيء يعلم اولاثم يقال ويعلم به فالعلم مقدم عليهابالذات وكذامقدم بالشرف:عمدةالقاري ج٢ ص ٣٩

فائده:ير جمه، راجم مجرده غير خضه مين سے سامام بخاري اس باب كوتابت كرنے كے ليكوئي مندروايت نہيں لائے بحردہ غیرمحضہ وہی ہوتا ہے کہ کوئی مسندروایت دلیل نہ ہو کوئی قول سلف اور آیت وغیرہ بھی نہ ہوتو مجردہ محضہ ہے۔ ورثو االعلم: ورثواكو باب تفعيل سے پڑھيں تو متعدى ہوگا اور خمير راجع الى الانبياء ہوگى مجردسے ہوتولازی ہوگا اورضمیر راجع المی العلماء ہوگی تو مقام نبوت ہے ہی یہی کہ اللہ سے علم حاصل کر کے آگے پہنچائے تو جواییا کرے وہ انبیاء کا دارث ہے۔ انبیاعی تھم السلام کی فضیلت بھی اسی دجہ سے ہے کیکن پیربات یا در کھنی جا ہے کہ انبیاء کاعلم قوی ہوتا ہے جوطاعت کی طرف مفضی اورنواہی ہے اجتناب کروا تا ہے تو جوعلاءعلم قوی رکھیں وہی وارثِ انبیاء کہلانے کے حق دار ہیں ﴿إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاء ﴾ جتناعكم ہوگا اتنى ہى خثيت ہوگى توسب سے زیاده علم آی الله کا کے اس لیے فرمایا ((انا اختساکم واتقاکم)) تجیرالمدارس کا فاضل عالم نہیں ہے سندیں مل جائيں نمبر بھی مل جائیں اس آیت کا مصداق عرفی علانہیں بلکہ وہ علاء ہیں جوذات وصفات کے عالم وعارف ہوں۔ قصہ: ایک دیہات کا چوہدری اینے چھوٹے بیٹے کے ساتھ شہریں آیا پت چلا کہ بادشاہ کی بواری آرای ہے چوہدری د بوار کے ساتھ لگ کرخاموش ہوکر کھڑ اہو گیا نیج نے کہااباجان!آپ اتنے کیوں ڈررہے ہیں ،باپ نے کہا بیٹا خاموش رہو،جب بادشاہ وہاں سے گزرگیاتو چوہدری نے کہا بیٹا!یہ بادشاہ کی سواری تھی اس لئے ڈرا،چوہدری چونکہ بادشاہ کی قدرومزنت اوررعب ودبدبه سے آگاہ تھااس لئے ڈرابچہ چونکہ جامتانہیں تھااس لئے اس پرکوئی اثر نہ ہوا۔ جانے والا ہی ڈراکرتا ہے چونکہ الله رنب العزت کی ذات وصفات کوجانے والےعلاء وعرفا ہیں اس کئے وہ اللہ سے ڈرتے ہیں۔ كنانسمع او نعقل: سسمع علم تقليدي ثابت بوااور نعقل علم تحقيق.

هل يستوى الذين يعلمون:مفعول محذوف بالعلم الدين

اندها العلم بالتعلم:معلوم ہوا کہ علم وہ معتبر ہے جوانبیاء کے وارثوں سے سکھنے سے حاصل ہوا ہواس لئے علامہ شائ نے لکھا ہے کہ صرف مطالعہ سے علم حاصل کرنے والافتوی ندد سے اسکاعلم معتبر ہیں ہے۔

قال ابو ذراً: مسلوذر ﷺ کا جمہور صحابہ کرام ﷺ ہے کنزیعنی مال جمع کرنے کے بارہ میں اختلاف ہو گیاتھا ،اصل کنزا ہے کہتے ہیں کہ مال جمع کیاجائے اور حقوق ادانہ کیے جائیں ﴿ وَالَّذِیْنَ یَکُنِزُوُنَ الدَّهَبَ وَالْفِضَّةَ ﴾ ی

اک آیت کی بنا پر حفرت ابوذر رہ فرماتے تھے کہ بیت المال میں بھی مال کونہیں رکھنا جا ہے لاٹھی کیکر پہنچ جائے ، حفرت امیر معاویہ ہے تھا کہ ہوئے تو حضرت عثمان گواطلاع دی چنانچہ حضرت عثمان کے بلالیا اور اس مسئلہ پربات کرنے سے دوک دیا۔ حج پرآئے احادیث سنار ہے تھے کہ کسی نے کہا کہ آپکوتو حضرت عثمان کے بیاتھا

ا هذالتعليق رواه الدارمي في مسنده من طريق الاوزاعي :عمدةالقاري ج٢ص٣٣ ع پاره: • ١،سورة: التوبة، آية:٣٣

ال پردہ شدت سے کہدر ہے تھے لو وضعتم الصمصامة على هذا اگر ميرى گردن پر آل كرنے كے ليے تلوادر كھ دواوراتى ديريس بھى بيں اگركوئى كلمه (حديث) سناسكول توسناؤل كال

الشكال: بيتو حضرت عثان امير المؤمنين كحمم كى خلاف ورزى ہے۔

جواب:اس کوخلاف ورزی پرمحمول نہیں کرنا چاہیے کیونکہ خاص مسئلے سے روکا تھا اور وہ دیگر احادیث سنار ہے تھ لیکن کہنے والے نے عام مراد لے لیا۔

ر بانیین:تغیرات نبی میں ہے ہے ہے معنی اصل ضابط کا عتبار سے رہی ہونا چاہیے کی نبست کی وجہ سے ربانی کہا گیا۔ صغار العلم:(۱) مراد اس سے کلیات سے پہلے جزئیات کاعلم ہے۔ (۲) یاسائل کاعلم دقائق سے پہلے (۳) یا مبادی مراد میں جیسے اصطلاحات مدیث مدیث سے پہلے کہ پہلے اصول مدیث پڑھنے ہیں ان سب سے معلوم ہوگیا کہ پہلے علم پھڑل پھر تبلغ سے

(۱۸) حدثنا محمد بن يوسف قال انا سفيان عن الأعمش عن ابى وائل بهم سے بيان كيام مربن يوسف آن ،كہا بم كوسفيان آن خبردى، انھوں نے الموس نے ابووائل سے، انھوں نے ابووائل سے، عن ابن مسعود قال كان النبى علائية يتخولنا بالموعظة فى الايام انھوں نے ابن مسعود سے بہا تخضرت عليا في ونوں ميں نفيحت كرنے كے ليے وقت اورموقع كى رعايت فرمات كراهة السامة علينا . (اظر ۲۰۱۰)

وتحقيق وتشريح

توجمة الباب كى غوض: وعظ كرنے ميں رعايت كرتے تھاس سے مقصود بديان كرنا ہے كه وعظ اورتعلیم میں اس بات کالحاظ کرنا جاہیے کہ سامعین کوملال نہ ہو ی اور سننے اور قبول کرنے کی طرف رغبت ہواس لئے کہ سلسل اورلمبی وعظ کرنایامسلسل تعلیم میں مشغول رکھنااس سے ملال کا خطرہ ہوتا ہے۔تو بجائے قبول کے ذہن عدم قبول كى طرف مأل ہوتا ہے اس كے تعليم وبليغ ميں اسكادھيان ركھنے كى ضرورت ہے آ پ يود وعظ ميں وقت كالحاظ ركھتے تھے تا كەسخابەكرام كوملال نە بورايىيى آپ كارشاد ب(يسروا)) آسانى بىداكرولىنى دىن سمجانے ميں اور ممل پرلانے میں آسانی پیدا کرویعنی اس طریقے ہے دین کوپیش کروکہ اس کو سمجھنااور عمل کرنا آسان ہوجائے بیرمطلب نہیں ہے کہ دین میں مداہنۃ اختیار کرواورغیر دین کودین بنا کر پیش کر کے آسانی کرو۔ دین کو چھوڑ کر جوآسانی ہے وہ دین کے کیے آسانی نہیں ہے کہ خواہشات اور مزاجوں کے مطابق مسئلے گھڑنے شروع کردوائمہ مجتهدین کے اجتہاد اورآ جکل کے پانچوں سواروں کے اجتہاد میں یہی فرق ہے کہ خواہشات اور مزاجوں کود کیھتے ہیں چھر قرآن وحدیث ہے استدلال كرتے ہيں ايك توبيہ كم محنت كركے لوگوں كودين كے مطابق لايا جائے اور ايك بيہ كرجس پرلوگ چل رے ہوں اس کودین کہددیا جائے۔(۱) ایک نام نہاد مجتبد لکھتاہے کہ آپ ساری سیرت کی کتابیں اٹھا کردیکھ لیس آپکو کہیں نہیں ملے گا کہ داڑھی آ کی کتنی تھی اگریہ ڈاڑھی کا قضہ کے برابر ہونا ضروری ہوتا تو بیان کیا جاتا ہاں البتة اتنامعلوم ہوتا ہے کہ داڑھی رکھی جائے میرے خیال میں اگرا یک آ دمی ایک دوہفتہ آئی داڑھی رکھ لے کہ لوگ کہنے لگ جائیں کہ اس نے داڑھی رکھ لی تو کافی ہے۔اسکا جواب میہ ہے کہ سوانح نگار بدیمی چیزوں کو ذکر نہیں کیا کرتے بھی کسی نے سوانح لکھتے ہوئے ینہیں لکھا ہوگا کہ جس کی میں سوانح لکھ رہا ہوں اسکی دوآ تکھیں تھیں اور پھر رہے کہ شریعت کا منشاء بیمعلوم وتا ے كرواڑهى ركھ لى جائے اوربس بيسراسرمغالط بحديث ميں توبيہ ((اوفروا اللحي)) س

ا انظر ۱۲۲۰ رواه مسلم في المغازي عن عبداللهن معاذواخرجه النساني في العلم ۲ ان النبي سُلَطَّتُ كان يعظ الصحابةُ في اوفات معلومة ولم يكن الاستغراق خوفاعليهم من الملل والضجر :عمدةالقاري ج٢ص٣٥ - ٣ مشكوة ص ٣٨٠

(۵۴) ﴿ باب من جعل لاهل العلم ایاما معلومةً ﴾ جو خض علم سکھنے والوں کے لیے پھودن مقرر کردے

(• ک) حدثنا عثمان بن ابی شیبة قال ثنا جریوعن منصورعن ابی وائل قال بم عوثان بن ابوشیر نیز بیان کیا، انهوں نے منصور سے انهوں نے ابو واکل سے کہا کان عبدالله یذکر النامی فی کل خمیس فقال له رجل یا اباعبدالرحمٰن لو ددت عبدالله بر جعرات کولوگوں کو وعظ ساتے سے، ایک خص نے ان سے کہا اے ابوعبدالرشن میری آرزویہ بم انک ذکر تناکل یوم قال اما انه یمنعنی من ذلک انی اکره ان املکم کیآ پیرروز بم کو وعظ سایا کری، انهوں نے کہار پر شین ایس لئے ایبائیس کرتا کیم کواکر ویا جھے چھائیس معلوم ہوتا کیآ پیرروز بم کو وعظ سایا کری، انهوں نے کہار پر شین بال کے ایبائیس کرتا کیم کواکر ویا جھے چھائیس معلوم ہوتا وانی اتخولکم بالموعظة کما کان النبی عالیہ اور قت و کھی کرتم کو افیحت کرتا ہوں جیسے آنخفرت علیہ ہماراوقت و کھی کرتم کو ایسامة علینا.

و ان مخافة السامة علینا.

﴿تحقيق وتشريح

تو جمة المباب کی غوض:اس سے امام بخاری پیمسکد بنان چاہتے ہیں کہ تعلیم کے لیے دن ، وقت متعین کرنا جائز ہے۔ اس لئے کہ تعلیم و تعلم ایک فریضہ ہے اور تعین اوقات یا کوئی خاص طریقہ تعلیم موقوف علیہ کے درج میں نہیں ہے اگر اس کو ذریعہ ثو اب قرار دیا جائے اور اس کے خلاف کونا جائز قرار دیا جائے تو اس کے خلاف کونا جائز قرار دیا جائے تو گنہگار ہوگا پھر یہ بدعت ہوجائے گی جسے بخاری کا گھنٹہ اسے و اب ہے تک اب بیعقیدہ کہ اس کوآ گے بیچھے کرنے سے گناہ ہوگا یہ بدعت ہے اس سے معلوم ہوا کہ تعین بدعت ہے کہ تعین کو بی ثو اب سمجھ لیا جائے اور اسکے خلاف کو گناہ بحولیا جائے اور اسکے خلاف کو گناہ بحولیا جائے کو کہ بید میں بنی بات ہوگی۔ ((من احدث فی امر نا فہور کہ)) مزید وضاحت بہ ہوگئیں ، وقتم یہ ہے۔ (ایعین انتظامی (۲) تعیین قانونی۔

(1) تعیین انتظامی: یہ کہ آ باپ کامول میں ہوات کے لئے کوئی ترتب بنالیں۔
(۲) تعیین قانو نی: یہ کہ کوئی تعین کرلیں اور پھراس کوشر بعت قرار دیدیں کہ جوابیا نہیں کرے گاوہ گناہ گار ہوگالہذا تیجہ چالیہ وال، گیار ہویں سب بدعت ہیں جسے دائے ونڈ کا اجتماع کوئی نہیں کہتا کہ جونہیں جائے گاوہ گناہ گار موگا۔ معلوم ہوا کہ بریلویوں کاذکر بدعت ہیں اجتماع کوئی نہیں ہے، ابتک تو نہیں ہے آئندہ پیت نہیں کیا ہوگا۔ معلوم ہوا گناہ ہے کوئکہ یہ حقیقت میں شریعت کی تنقیص ہے کہ شارع اسکو بھول گیا گویا کہ بدعتی حقیقت میں شریعت کی تنقیص ہے کہ شارع اسکو بھول گیا گویا کہ بدعتی حقیقت میں دریدہ مدی نبوت ہے۔ یہ مار احسان ہمارے اسا تذہ کا ہے کہ انہوں نے سنت و بدعت کا فرق سمجھایا۔

مولا ناخیر محرصا حب ''کاارشاد:آپؒ نے فر مایا کہ بدعت میں بھی شریک نہ ہونا اگر ایک مرتبہ شرکت کرلی تو پھر بھی نہ نکل سکو گے چاہے جس نیت سے بھی شریک ہوا در پھر یہ بھی فر مایا تھا کہ زبان نرم رکھنا اور عمل سخت۔ جیسے علامہ اقبال مرحوم نے صحابہ کرامؓ کی تعریف میں فر مایا ہے

نرم دم گفتگو گرم دم جتجو 🖨 رزم ہو یا برم ہو پاک دل و پاکباز

(۵۵)
﴿ باب من يود الله به خير ايفقهه في الدين ﴾ الله جير ايفقهه في الدين ﴾ الله جير الله عنه الدين الله عنه ال

وتحقيق وتشريح

تو جمة الباب كى غوض: اس باب مين امام بخارى ثابت كرنا جائي مين كفيم علم دين الله تعالى كانتها كي الله تعالى كانتها كي الله تعالى الل

فقه من فقد کہتے ہیں کہ دوسرے کی کلام کے مقصد کو مجھ لینا پیلم سے زائد درجہ ہے کہ منشاءِ متعلم کیا ہے۔ فقہ ،ملم فہم ،فکر ،تصدیق بیالفاظ مترادف نہیں ہیں متقاربہ ہیں علم کامعنی جاننا فہم کامعنی مجھنا ،تصدیق کامعنی یقین واذعان اور فکر کامعنی سو جنا۔

انىمااناقاسىم والله يعطى:ىيكلام عرف پرمحول بىمقصداس كايەب كەمىن برايك كودەسكما تابول جو اسكىلائق بى پھراللەتغالى جس كوچا بىتى بىل اس كىعلىم مىں فېم وفكر، تفقد پىداكردىية بىل -

الشكال: اگراس كوظا مر رجمولى كياجائ تومعطى محى حضور عليلية ميں اور قاسم بھى ، اگر حقيقت رجمول كياجائية معطى محمل بھى الله ميں اور قاسم بھى كيونكر نصيب كا ملنا ہے اور نصيب اسے كہتے ہيں جواللہ و يو حديث ميں تقسيم كيوں كى؟

جو آب ا: یکام عرف پرمحول ہے معطی عرف میں مالک کو کہتے ہیں اور قاسم با مٹنے والے کولہذا عرف میں اللہ کی عظمت کا لحاظ کرتے ہوئے اعطاء کی نسبت اللہ کی طرف کردی جاتی ہے اور تقسیم کی حضور علیہ کے کا طرف۔

جو اب ۲:اس جملہ سے مقصود عالم سے غروراور تکبر ہٹانا ہے کہ علم پر ابرائے نہیں بلکہ اس کوعطاء اللی سمجھے اور قاسم ہونے میں اس طرف اشارہ کرنااور رغبت دلانا ہے کہ آرام نہ کرے علم میں بخل نہ کرے بلکہ علم پڑھائے۔ لن تنوال هذه الامة:اقبل کے جملے سے اس کاربط یوں ہے کہ یہ تقسیم ہمیشہ دہے گی۔

آهة:كون ى امت اوركون ساطا كفه مراد ہے؟ اس ميں متعدد اقوال ہيں (ا)فقهاء نے كها كه بيدفقهاء ہيں (۲) مجاہدين نے كہا بيد مقاتلين ہيں (٣) محدثين نيں (٣) محدثين نيں امام احمد بن نبيل قرماتے ہيں كه محدثين نہيں ہو نگے توميں نہيں جانتا كه اوركون ہو نگے؟ حضرت انورشاہ كشميرگ فرماتے ہيں كه محدثين نہيں ہو نگے توميں نہيں جانتا كه اوركون ہو نگے؟ حضرت انورشاہ كشميرگ فرماتے ہيں كه چونكه بعض روايتوں ميں يقاتلون كالفظ آتا ہے اس ليے اوّلى طور پر مجاہدين ہى مراد ميں پھر ثانوى در ہے ميں تمام طبقات داخل ہوجا كيں گے۔

اشکال: سیباں ایک بات مشکل ہوگئ کہ حدیث الباب میں ہے حتی یاتی امر اللہ اور بعض روایوں میں ہے حتی یاتی امر اللہ اور بعض روایوں میں ہے حتی یاتی یوم القیامة حتی کا مابعد غایت ہے اور مغیّا اور غایت عنه غیر غیر ہوتے ہیں اس جملے سے معلوم ہوا کہ غایت تک تو حق زیر ہیں گے اس کے بعد حق رنہیں رہیں گے؟

ل ترنية الباب كي أيد غرض ينتي او على جكماس بيعلم كي فعايات ميان كرنامقسود ب خاص طور برفقه كي اجميت اوراس كيفلم برنج ليفن ب القرير بخار كي كماب العلم ص ١٧ ع فقة الوزائري الفيده وهي الاصطلاح العلمه بالاحكام الشرعية الفرعية عن ادليها النفصيلية بالاستدلال: عمدة القارى ج٢ ص ٣٩

قال البحارى هم اهل العلم وقال الامام احمد أن لم يكونوا أهل الحديث فلا أدرى من هم وقال القاضي عياض أنما أو ادلامام احمد أهل السنة و الجماعة وقال الورى ومنهم وهادالي غير ذلك عمدة القارى ج٢ ص١٥ الورى ومنهم وهادالي غير ذلك عمدة القارى ج٢ ص١٥ المورى ومنهم وهادالي غير ذلك عمدة القارى ج٢ ص١٥ المورى ومنهم وهادالي غير ذلك عمدة القارى ج٢ ص١٥ المورى ومنهم وهادالي غير ذلك عمدة القارى ج٢ ص١٥ المورى ومنهم وهادالي غير فلك ومنهم المورى المورى ومنهم المورى المورى المورى المورى ومنهم وهادالي غير ذلك المورى والمورى المورى المو

جو ابِ اول:قیامت کے بعدتو حق پر ہونایا ناحق پر ہونا تو مقصود ہی نہیں ہے کیونکہ مکلف ہی نہ ہوگا۔ جو ابِ ثانی:تابید سے کنامیہ ہے، یعنی ہمیشہ حق پر رہیں گے۔ جو ابِ ثالث:اس کا تعلق لایضر هم کے ساتھ ہے کہ اس کو ان کا معاملہ تکلیف نہیں دےگا۔ یہاں تک کہوئی بلاء آجائے۔

(۵۲) (باب الفهم فی العلم العلم العلم العلم العلم الفهم فی العلم الفهم فی العلم الفهم فی العلم الفهم فی العلم الفهم فی

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض: السال سام بخارى ية ابت كرنا جائة بين كدانسان كوچا سيكم وارقرائن

ے مسائل استباط کرے (بعن طریق مطالعہ میں اپنی کوشش اور فہم سے کام لے) اس پر حدیث ابن عمر رہے ہے استدلال کیا ہے کہ جم حضور علیقہ کے پاس بیٹھے ہوئے تھے کہ جُمار لایا گیا ی اور پھر آپ علیقہ نے اگلاسوال کیا کہ ایسادر خت کون ساہے جس کے بیے نہیں جھڑتے ؟

حدیث کو باب سے مطابقت ومناسبت: اردت ان اقول ہے۔

سوال:ابن عمر الله في في محمد ليا؟

جواب: انہوں نے آثار وقرائن سے مجھ لیا۔

مسائل مستنبطه:

ا حضرت ابن عمر کش توروایت سے پر ہیز کرتے تھے عام طور پر جب کوئی پوچھتا تو بیان فرماتے تھے، اس کئے سارے سفر میں ایک ہی حدیث بیان کی۔

٢ آ فارے استدلال جائز ہے اس کوفہم فی العلم کہتے ہیں۔

م بروں کی موجود گی میں چھوٹوں کو بات کرنے سے پر ہیز کرنا جا ہے۔

(۵۷)

هباب الاغتباط في العلم والحكمة
علم اوردانائي كي باتول مين رشك كرنا

وقال عمرٌ تفقهو اقبل ان تسودو اقال ابوعبد الله و بعد ان تسودو ا اور حفرت مرّ فرمایا تم بزرگ بننے کے بعد بھی حاصل کرو امام بخاریؒ نے فرمایا کہ بزرگ بننے کے بعد بھی حاصل کرو وقد تعلم اصحاب النبی عَلَیْ بعد کبر سنهم.
اور آ تخضرت الله کی اصحاب نے بڑھا ہے میں علم حاصل کیا ہے

وتحقيق وتشريح

علم اسرار کوئکمت کہتے ہیں یعنی احکام کی علل بیان کرنا (۲)ہر چیز کواس کا مقام دینا۔ (۳) بی مشہور معنی میں ہے ،سب سے زیادہ مشہور بیہے کہ حکمت جمعنی سنت ہے ،ویسے علماء نے ۲۲ کے قریب اس کے معنی بیان کئے ہیں لے ربط : ترجمة الباب میں اغتباط فی المعلم ہے اس کا مطلب بیہ ہے دوسرے کے علم کے مطابق اور اس کے علم کے مثابت اور اس کے علم کے مثابت اور اس کے علم کے مثابت کی سعی کرنا۔

تفقہوا قبل ان تسودوار بنے سے پہلے فقہ حاصل کرو۔اس کے کہ سردار بنے سے پہلے فقہ حاصل کی ہوگ تو سردار بنے سے پہلے فقہ حاصل کی ہوگ تو سردار بنے کے بعد خلاف دین فیصلہ نہیں کرےگا۔

وبعد ان تسودوا: اس جليس دواحمال سير

ا:امام بخاری بيعطف تلقيني كے طور پر فرمار ہے ہيں۔

۲امام بخاری کامقصود حفرت عمر کاس جملے کی شرح کرنا ہے کہ قبل ان تسودوا میں قبلیت کی قیدا تفاقی ہے۔ مقتمد یہ ہے کہ اس جملہ میں بعدان تسودوا کی فی نہیں ہے بلکہ حفرت عمر کا قول اولویت پرمحمول ہے۔ قد تعلم اصحاب النبی علائشیہ:اس سے امام بخاری نے اپنے قول پراستدلال کیا ہے۔

تفصيلِ غبطه: معزت عرر عقول كارجمة الباب كساته مناسبت سي ببلي غبطه كاتفسل سي والفيت

ضروری ہے۔ اردومیں غبطہ کامعنی رشک (ریس کرنا) ہے۔ اصطلاح میں تمنی مثل نعمة الغیری

غبطه کی اقسام: غبط کی دوشمیں ہیں ا۔اگر نعمت امور دنیا سے ہوتو غبط مباح ہے ۲۔اوراگرامور دینیہ سے ہوتو مستحن ہے اور محمود وافضل ہے تو غبطہ کی دوشمیں ہوگئیں ا۔غبطہ مباحه ۲۔غبطہ مجمودہ۔ غبطہ کو ریس بھی کہہ دستے ہیں۔ غبطہ کے مقابلے میں حسد ہے۔

حسد کی تعریف: سستمنی زوال النعمة عن الغیر: بیرام بـاب اندازه لگاؤکه زوال نعمة . عن الغیر کی تمنای حرام ہے توکوشش کرناکتنا براجرم ہوگا حضور علیہ نے حسد سے پناه مانگی ہے۔

رجط: علامہ مینی فرماتے ہیں کہ سردار بھی ہواور پہلے علم بھی حاصل ہو،تو کون اس کونہیں چاہے گا کہ سرداری بھی مل جائے اور علم بھی تو اغتباط فی العلم ثابت ہوا قرآن سے بھی بیثابت ہے۔

﴿ وَفِي ذَٰلِكَ فَلَيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴾ ٣

ا و نقل في البحر المحيط في تفسيرها نحوامن اربعة وعشرين معنى فيض الباري ج ا ص ١٤٢

٢ وفي عمدة القاري و الخبط ان يرى النعمة فيتمناها لنفسه من غير ان تزول عن صاحبها وهومحمود: ج٢ ص٥٥

ع پاره ۳۰ سورةالمطففين آية:٢٦

(۳) حدثناالحمیدی قال حدثنا سفیان قال حدثنا اسمعیل بن ابی خالد علی جم سے حیدیؓ نے بیان کیا کہا ہم سے حیدیؓ نے بیان کیا کہا ہم سے حیدیؓ نے بیان کیا کہا ہم سے حیدیؓ نے بیان کیا اسمعت عبدالله بن مسعود غیر ماحدثناہ الزهری قال سمعت قیس بن ابی حازم قال سمعت عبدالله بن مسعود زمریؓ نے جوہم سے بیان کیا اس سے الگ طور پر کہا ہیں نے قیس بن ابو حازم قال سمعت عبدالله بن مسعود سعود سے قال قال النبی عالیہ السطالا فی اثنتین رجل اتاہ الله مالاً کمنر ساتھ نے فرمایا: دورہ میں کی حصدالا فی اثنتین رجل اتاہ الله مالاً کمنر ساتھ نے فرمایا: دورہ میں کی خصلتوں پر کوئی دشک کر سے قوہوسکتا ہے، ایک قاس پر جس کو اللہ نے دولت دی فسلطہ علی هلکته فی الحق و رجل اتاہ الله الحکمة فہویقضی بھاویعلمها یا فسلطہ علی هلکته فی الحق و رجل اتاہ الله الحکمة فہویقضی بھاویعلمها یا دول کی کاموں شی فرج کرتا ہے دردور ساس پر جس کو اللہ اللہ الحکمة فہویقضی بھاویعلمہا ا

وتحقيق وتشريح

لاحسد الافى الاثنتين:سوال: اثنتين مؤنث كاصيغه باوراسك بعد رجل اتاه "ب جوكه لذكر بتواجال اورتفيل مين مطابقت نهوكي؟

جو اب: سن حذف مضاف ہے ای حصلة رجل اتاه ضاف حذف کر کے مضاف الیکواس کے قائم مقام کردیا گیا۔ سو ال ثانی: سندروایت الباب کی ترجمۃ الباب سے مطابقت نہیں ہے کیونکہ ترجمۃ میں اغتباط فی العلم ہے اورروایت میں حدکاذکر ہے؟

جو اب: بیر جمد شارحه به ام بخاری بتلانا چاہتے ہیں کہ یہاں حمد جمعنی غبطہ بے رجل آخر میں غبطہ کے قابل تین چیزیں ہیں ۔ اعلم حاصل کرنا ۲ یقضی بھالنفسه و لغیرہ لیمن علم کے مطابق عمل کرتا ہے اور کرواتا ہے ۔ سرویعلم اللہ علی علم کھاتا ہے۔

_ احرجه مسلم في الصلوة عن ابي بكربن ابي شيبة والنسائي في العلم عن اسحاق بن ابراهيم وابن ماجة في الزهدعن محمدين عيدالله(انظر: ١٣٠٩/١٠١٢)

 $(\Delta \Lambda)$

﴿باب ماذكر في ذهاب موسى في البحر الى الخضر وقوله تعالى (هَلُ اتَّبِعُكَ عَلَى انُ تُعَلِّمَنِ (الآية) ﴾ حضرت موى كاسمندرك كنار فضرى تلاش مين جانا ورالله تعالى كاحضرت موى عليه السلام كا يقول قل كرنا كيامين تمهار ساته ساته ربول اس شرط سے كه آپ مجھ سكھلائيں اخر آيت تك

(۷۴) حدثنامحمدبن غریرالزهری قال ثنایعقوب بن ابراهیم قال ثنا ابی ہم سے محد بن غریرز ہریؓ نے بیان کیا،کہاہم سے یعقوب بن ابراہیمؓ نے بیان کیا،کہاہم سے میرے باپ نے عن صالح يعنى ابن كيسان عن ابن شهاب حدثه ان عبيداللهبن عبدالله اخبره انھول نے صالح بن کیمان سے بیان کیا، انھول نے ابن شہاب ہے ،ان کو عبید الله من عبدالله نے خبر دی عن ابن عباس انه تماري هو والحربن قيس ابن حصن الفزاري في صاحب موسى انہوں نے عبداللہ بن عباس سے روایت کیا،ان سے اور حربن قیس بن حصن سے جھکڑا ہوا کہ موکیٰ علیہ السلام کس کے باس گئے تھے قال ابن عباس هو خضرفمربهماابی بن كعب فدعاه ابن عباس فقال ا بن عبا ل ؓ نے کہا:خضر کے پاس گئے تھا تنے میں ابی بن کعبؓ ان کے پاس سے گذرے ابن عباسؓ نے ان کو بلایا اور کہا انى تماريت اناوصاحبي هذا في صاحب موسىٰ الذى سأل موسىٰ مجھ میں اور میرے دوست (حربن قیس) میں یہ جھگڑاہے کہ مویٰ کس کے بیاس گئے تھے اور کس ہے. ملنے السبيل الى لقيه هل سمعت النبيء کا انھوں نے راستہ یو چھاتھا؟ کیاتم نے آنخضرت ایک ہے اس بارے میں کچھ سنا ہے؟ انھوں نے کہاہاں! سنا ہے يقول بينماموسي في ملأمن بني اسرائيل اذجاء ه رجل آنخضرت الله في فرمات تصايك بارموي عليه السلام بن اسرائيل كى ايك جماعت ميں بيٹھے ہوئے تصابيخ ميں ايک شخص آيا تعلم احدااعلم منك؟قال موسىٰ فقال !\ ادران سے یو چھاتم کسی ایسے خص کوجانتے ہو جوتم ہے بھی زیادہ علم رکھتا ہو؟ موسیٰ علیہ السلام نے کہانہیں! میں تونہیں جانتا

وتحقيق وتشريح

توجمة الباب کی غوض اول:ای باب سام بخاری عظمت شان علم بیان کرنا چاہ ہیں اور تعلیم و تعلم کی عظمت بیان کرنا چاہتے ہیں ارکعلم اتنا عظیم ہے کہ اگر اس کے لئے سمندر کا سفر کرنا پڑے تو کرے ۲ ۔ یا اس طریقے سے بیان کرنا چاہتے ہیں کہ علم اتن عظمت والا ہے کہ اسکے لئے اگر مصائب بھی برداشت کرنے پڑیں تو گرے۔ غوض ثانی: پہلے باب کا تمہ ہے کہ علم حاصل کر وسر دار بننے کے بعد بھی اس کی ایک دلیل تو وہیں بیان کردی مقی یہ دوسری دلیل ہے کہ دیکھوموئی علیہ السلام نی بننے کے بعد بھی علم حاصل کرنا اتنا ضروری ہے کہ اگر چھوٹے سے غوض ثالث:ای سے مقصود امام بخاری کا یہ ہے کہ علم کا حاصل کرنا اتنا ضروری ہے کہ اگر چھوٹے سے حاصل کرنا اتنا ضروری ہے کہ اگر چھوٹے سے حاصل کرنا یہ تو گریز نہ کرے۔

فی البحوالی الخصو:سوال: موی علیه السلام نے ساحل سمندر پرسفر کیا سمندر میں تو سفر ہیں کیا

ل موسى بن عسران وعموه مانة وعشرين سنة :عمدةالقاري ج٢ص ٥٩ ٪ ع انظر: ٢٢٨ ، ١٢٢٧ ، ٢٢٢٨ ، ٣٢٧٨ ، ٣٣٠١ ، ٣٣٠١ ، ٣

اوريهال مے ذهاب موسى في البحر؟

جواب اول:مقصداس حصے كے سفركوبيان كرنا ہے جوموى عليه السلام كا حضرت خصر عليه السلام كے ساتھ ہوا اس صورت بيس المي بمعنى مع ہوگا۔

جواب ثانی: یہاں پر ساحل محذوف ہے اور بیر مذف مضاف کی قبیل سے ہے۔ ای فی ساحل البحر. جو اب ثالث: سمندر کے ساحل پر جو سفر کیا جاتا ہے عرف میں اس کو بھی سمندری سفر سے تجمیر کرتے ہیں۔ جو اب رابع: یہ مذف عطف کی قبیل سے ہے ذھاب موسیٰ فی البحرو ذھاب موسیٰ الی البحضر تو اب سفر کے دوجھے ہوئے ایک حضرت خضر کی طرف اورا یک بحرمیں۔

حصرت حضر عليه السلام:ان ك بار عين عار بحش بين

البحث الاول: سان كانام بليابن ملكان بياورخطرلقب باس لقب بران كى كى وجوه بيل البحث الاول: سان كانام بليابن ملكان بي اورخطرلقب الماس لقب بران في وجوه بيل المجال بيئة تقدم السنزه أكر تا تعالى ٢-كثرت سيسزلباس مين ملبوس رجة تقد

البحث الثانى: يكن زمانے مين ہوئے جين؟ البعض كہتے جين كه بلاواسطة دم عليه السلام كے بيٹے تھے ٢ يعض نے كہا ہے كه حفزت نوح عليه السلام كى پانچويں پشت ميں سے تھے ٣ يعض نے كہا ہے كه حضزت ابراجيم عليه السلام كى چوتھى پشت سے تھے ٣ يعض نے كہا ہے كه ذوالقر نين كيزمانے ميں ہوئے ہيں ٣

البحث المثالث: بنبی سے یاولی؟ دونوں قول ہیں دونوں کے لئے مرخ بھی ہیں لیکن اُرنے ہیے کہ ہی ہیں ی لیکن اُرنے ہیے کہ ہی ہیں ی لیکن نبی مرسل نہیں تشریع میں کی اور نبی کے تابع سے انکوعلوم تشریعیہ کے ساتھ ساتھ علوم تکوینیہ عطاء کے گئے تھے۔

البحث المر ابع: سنزندہ ہیں یا فوت ہو گئے؟ اصحابِ ظواہر کہتے ہیں کہ فوت ہو گئے، اصحابِ بواطن کہتے ہیں کہ زندہ ہیں فوق ہو گئے ، اصحابِ بواطن کہتے ہیں کہ زندہ ہیں فواور معمر ہیں محجو ب عن ابتصاد نا ہیں قال البعض خروج دجال کے وقت دجال جس شخص کوئل کی کہ زندہ کرے گا جب یشخص دوبارہ زندہ ہوگا تو دجال اس سے کہے گا کہ اب تو یقین ہوگیا کہ میں خدانوں فو شخص کے گا اب تو اور بھی یقین ہوگیا کہ تو مجال ہے اور پیشخص حضرت خصر علیہ السلام ہو نگئے کے اور دونوں میں مناسبت بھی ہے کہ دجال ہی کمی والا اور محجو ب عن ابتصاد نا ہے اور آپ علیہ السلام بھی کمی اور دونوں میں مناسبت بھی ہے کہ دجال ہیں اس سے اس قول کوئر جج عاصل ہوجاتی ہے۔

اور دونوں میں مناسبت بھی ہے کہ دجال ہیں اس سے اس قول کوئر جج عاصل ہوجاتی ہے۔

ا بليابفت الياء الموحدة وسكون اللام وبالياء آخر الحروف عمدة القارى ج٢ص ٢٠ ع انماسمى الخضر لانه جلس على فروة بيضاء فاقراهى تهتزمن خلفه خضراء والفروة وجه الارض عمدة القارى ج٢ ص ٢٠ وقيل سمى به لانه كان اذاصلى اخضر ماحوله عمدة القارى ج٢ص ٢٠ ع وصحيح انه كان مقدماعلى زمن افريدون حتى ادركه موسى عليه السلام عمدة القارى ج٢ص ٢٠ ع ايضا في الجمهور على انه باق الى يوم القيامة عمدة القارى ج٢ص ٢٠ ع ايضا

حدثنا محمدبن غویو:قوله انه تماری والحوبن قیس اس مدیث کے تت چنداشکالات ہیں۔ الشکال اول:حضرت تر اورابن عباس الله میں یہ بحث ہوئی کہ صاحب مولی کون ہیں؟ ابن عباس الله فرماتے ہیں کہ وہ خضر ہیں اور حضرت حراس کاروکرتے ہیں کیکن وہ کس کانام لیتے ہیں بیروایات میں ذکر نہیں ۔حضرت ابن عباس الله بن ابن عباس الله بندات خودموی نی بین کعب سے فیصلہ کروایا جبکہ ایک اور روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ جھر اصاحب موی میں نہیں بلکہ بندات خودموی علی الله میں ایس الله بندات خودموی میں ایس الله بندات خودموی علی الله میں ایس الله بندات خودموی میں ایس الله بندات خودموی بن ایس الله بندات بندا موی میں ایس الله بندات ہیں یا موی میں الله بندات ہیں بارے بی موی الله بندات ہیں الله بندات ہیں بار کے بارے میں الله بندات ہیں بار کی مورد بندا کی بندات ہیں بار کی مورد بار بندات ہیں بار کی مورد بندات ہیں بار کی مورد بار کی مورد بندات ہیں بار کی مورد بندات ہیں بار کی مورد بندات ہیں بار کی بندات ہیں بار کی مورد بندات ہیں بار کی مورد بار کی بار کی مورد بار کی بندات ہیں بار کی بندات ہیں بار کی مورد کی بندات ہیں بار کی مورد بار کی بندات ہیں بار کی بار کی

جواب:ابن عباس کے ساتھ دوواقع پیش آئے۔ا۔ایک موٹی کے بارے میں بیسعید بن جبیرادرنو فالبر کالی کے درمیان ہوا۔ ۲اوردوسراصاحب موٹی کے بارے میں اور بیمناظرہ حربن قیس سے ہوا جبیا کہ باب ۵۸ پر ہے۔ انشکالِ ثانمی:اس روایت سے معلوم ہوا کہ موٹی علیہ السلام کوخضر علیم السلام کے پاس علم سکھنے کے لیے بھجا اس سے بظاہر معلوم ہوا کہ خضر علیہ السلام افضل ہیں؟

جواب ثانی:فضیلت دوتم پرے ارجزئی ۲ کی۔ توہم کہتے ہیں کہ ضر کوجزئی نضیلت ماصل ہے۔

اشکالِ ثالث:اب بھرسوال ہوا کہ جب خصر علیہ السلام مفضول ہیں تو افضل کو یوں مفضول کے پاس بھیجاجار ہاہے؟ جو اب اول:حدیث میں ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام نے ایک مرتبہ خطبہ دیا ، اسرار ورموز بیان کے کسی نے پوچھا ہل تعلم احداً اعلم منک آپ نے فرمایا لاایہ جواب واقع کے مطابق ہے کیونکہ نبی سب سے زیادہ عالم ہوتا ہے تو جب نبی آپ ہیں تو اعلم بھی آپ ہیں لیکن چونکہ اس میں دعوے والی شان ہے اور دعوی اللہ تعالی کو پندنہیں تو دعوی تو رہے ہیں اللہ تعالی کہ سب سے بندنہیں تو دعوی تو رہے ہیں اللہ تعالی کو پندنہیں تو دعوی تو رہے ہیں سلسلہ چلایا۔ مقرباں رابیش بود حیر اندی

جوابِ ثانی:یاس لئے کہ جواب کے اندر عموم ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ علم تکوین میں بھی آپ اعلم میں جو کہ واقع کے خلاف ہے اس لیے بیسلسلہ چلایا۔

مسائلِ مستنبطہ:(۱)غلم سے استغناء کی وقت بھی نہیں ہوتا عالم کو بھی علم سے استغناء نہیں برتا چاہیے وفوق کل دی علم علیم (۲) فر میں زادِراہ ساتھ لینا تو کل کے خلاف نہیں ہے (۳) کوئی مخدوم خادم ساتھ لے لئے وجائز ہے حضرت موگی علیہ السلام ، نوجوان ہوشع کو ساتھ لے گئے (۴) چوتھا مسئلہ جواس واقعہ ہے تعلق ہے نہ کہ حدیث سے کہ استاد کے لیے طالب علم شاگر درپشر انظالگا ناجائز ہے (۵) تھم عدولی کی صورت میں تین مرتبہ مہلت ہونی چاہیہ عصیت نہ ہو۔

لے عمدةالقارى ج٢ ص ٦٣

پاس پہنچا، بیسہ دے کر پانی کا گلاس لیاجب پینے لگاتو کہا کہ یہ پھیاہے اوردو!صاحبِ خدمت نے کہا ایک پیسہ دے۔ ۔ کردوسرا گلاس مانگتاہے طمانچے رسید کیاساتھ کہاتو نے خربوزے والاسمجھ رکھاہے؟

مولا ناشاہ عبدالعزیز صاحب کا قصہ ہے کہ ایک مرتبہ تلامذہ کے ساتھ جارہے تھے تو حضرت نے ہتلایا کہ یہ ایک صاحب خدمت ہے فرمایا اس کے پاس جاؤا سے ایک صاحب خدمت ہے فرمایا اس کے پاس جاؤا سے کہو کہ اپنا کام دکھلائے اس نے جوتے پھیلائے ادھر سارے شہر میں کہرام کچ گیا فوج ادھر اُدھر بھا گنا شروع ہوگئی خطرے کے الارم نج گئے اس نے آ ہتہ آ ہتہ اپنا سامان سمیٹنا شروع کیا تو سارا نظام درست ہوگیا ،امن کے الارم بجنے گئے پھر دوبارہ اس نے جوتے پھیلائے اور سمیٹے تو ایسا بی ہوا۔ فوج والے کہتے تھے کہ ہمارے حکام پہنیس کیسے بیں ان کو جی پہنیں جا۔

سوال: سامام بخاری نے جو کتاب العلم قائم کیا ہے بیضروری اور فرض علم کے بارے میں ہے اور یہ باب نقل علم کے بارے میں ہے اور یہ باب نقل علم کے بارے میں ہے موضوع ہوا؟

جواب :امام بخاری نے بطوراستدلال کے باب قائم کیا ہے کہ جب نقل علم اور دنیاوی علم کے لیے مشقت اُٹھائی جاسکتی۔ اُٹھائی جاسکتی۔

وتحقيق وتشريح،

ترجمة الباب كي غرض:غرض باب مين دوتقريرين مين ـ

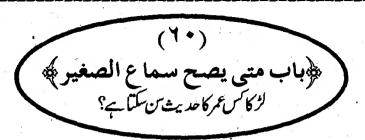
تقریر اول:امام بخاری کامقصودیه بیان کرنا ہے کہ طلباء کومخت پر ہی بھروسنہیں کرنا چاہیے بلکہ استاد سے دعاء بھی لینی چاہیے جیسے محنت کی ضرورت ہے ایسے ہی دعاءِ استاد کی بھی ضرورت ہے بھی صرف محنت رنگ لاتی ہے اور بھی صرف دعاؤں سے کام بن جاتا ہے لیکن کمال ، محنت اور دعاؤں دونوں سے ہوتا ہے ی

تقریر ثانی: یایہ باب دفع دخل مقدر کے لیے ہے کہ پہلے باب سے معلوم ہوا کہ علم محنت سے حاصل ہوتا ہے استاد کی رضاءودعاء کا دخل نہیں ہے اس باب میں اس شبہ کوز اکل کر دیا کہ معاملہ ایسانہیں ہے۔

اساتذہ کی ہے ادبی کے واقعات

واقعه ا: حضرت مولانا خیر محمر صاحب مطل حمزه والے کا واقعہ ہے کہ ان میں زہر بہت تھا اپنے پاس سے ہی طلبہ کا خرچہ برداشت کرتے تھے ایک مرتبہ کھیت میں پانی لگایا ہوا تھا جب کھیت بھر گیا تو ایک طالب علم نے پانی دوسر سے کھیت کولگادیا کہتے ہیں کہ وہ سارا کھیت والا غلہ صدقہ کردیا یہی استاد سبق پڑھار ہے تھے ایک طالب علم کمزور تھا اس کو توسیحی دوسر تبدا ستاد نے سمجھا یا ستاد نے بچو جھا کر کہا اس کوتو سمجھا میں نہیں آئے گا آپ کیوں وقت ضائع کرتے ہیں استاد نے زور سے کتاب بندگی کہ میں جو اس کے لیے تبجد میں دعا کیں کرتا ہوں وہ رائیگاں جا کیں گی ؟ بس اتنا کہنا تھا وہ لڑکا سب چھے بھول گیا۔

أ تقرير بخارى كتاب العلم ص ٢١
 إو توفي النبي منتها وهو ابن ثلث عشرسنة : عمدة القارى ج٢ ص ٢٠



(۲۷) حدثنا اسمعیل قال حدثنی مالک عن ابن شهاب عن عبیدالله بن هم عاملی عن ابن شهاب عن عبیدالله بن هم عاملی نا این شهاب عن عبیدالله بن عبیدالله بن عباس قال اقبلت را کباعلی حمار اتان و انایو منذ عبدالله بن عباس قال اقبلت را کباعلی حمار اتان و انایو منذ عبدالله ابن عباس قال اقبلت را کباعلی حمار اتان و انایو منذ عبدالله ابن عتب عبدالله بن عباس است که عبی ایک گدی پرسوار بوکرآیا اوران دول عبی قلد ناهزت الاحتلام و رسول الله علی بمنی الی غیر جدار جوانی کریب تا را دین بران بین بران برسوان الله علی عبل مناز پرسار ب تنی الی غیر جدار جوانی کریب تا را دین بران برسوان المن و ارسلت الاتان تو تع و دخلت فی الصف فمر رت بین یدی بعض الصف و ارسلت الاتان تو تع و دخلت فی الصف عبی توری مف یک آگ سے گذرگیا اورگری کوچوڑ دیا، وہ چی ربی اور عبی صف عبی شریک ہوگیا فلم ینکو ذلک علی درانظر: ۲۳۱۲،۱۸۵۷ ۱۸۵۷ انورجه مسلم و الترمذی و النسانی)

000000000000000000

(22) حدثنام حمد بن یوسف قال حدثنا ابو مسهر قال حدثنی محمد بن حرب بم سے بیان کیا گرابن یوسف آن براہم ابو میر آنے بیان کیا، کہا ہم سے گرابن حرب نے بیان کیا، کہا ہم سے محدابن حرب نے بیان کیا، قال حدثنی الزبیدی عن الزهری عن محمود بن الربیع قال کہا بھی سے زبیری نے بیان کیا، انھوں نے زہری سے، انھوں نے محمود بن رہے ہے ، انھوں نے کہا عقلت من النبی عالی محمد مجھا فی و جھی و اناابن خمس سنین من دلو. محکود بی ایک میں من دلو. محکود بی ایک میں من برادی تھی الربی الله میں من کی الله من من دلو. میکود بی ایک میں من برادی تھی الله میں برادی تھی الله میں برادی تھی الله میں برادی تھی الله میں برادی تھی برا

ا انظر: ۱۸۹ ، ۱۸۹ ، ۱۱۸۵ ، ۱۳۵۴ ، ۱۳۳۲ ، حدیث کی سندمیں چھ راوی هیں چھے محمود بن الربیع مدنی هیں مات سنة تسع و تسعین و هو ختن عبادة بن صامت نزل بیت المقدس و مات بها:عمدة القاری ج۲ص ۷۵

﴿تحقيق وتشريح

محدثین کاایک اصولی مسئلہ مختلف فیہ ہے کہ مملِ حدیث کے لیے عمر کتنی ہونی چاہیے؟ حدیث کے سکھنے سکھانے میں دورر ہے ہیں ایحملِ حدیث ۲۔اداءِ حدیث۔ ان کے لیے بالاجماع بلوغ شرط ہے کہ مسند تحدیث پراداءِ حدیث میں ہے

(۱) سیحی بن معین کے نزد یک بلوغ شرط ہے یعنی کم از کم پندرہ سال۔

(۲) سامام احمد بن عنبلٌ فرماتے ہیں کہ بلوغ شرطنہیں ہے بلکہ صرف تمییز شرط ہے۔

(m)بعض حضرات جارسال کے قائل ہیں۔

(س)اوربعض پانچ سال کے اور بید ونوں قول محمود بن ربیع کی عمر میں اختلاف کی وجہ سے مختلف ہیں۔

(۵) بعض حفرات سات سال کی قیدلگاتے ہیں کیونکہ سات سال کا بچینماز پڑھنے کا مامور ہے۔

(١) بعض نے ایک لطیفہ قائم کیا ہے کہ عرب کا جارسال کا اور مجم کا سات سال کا۔

لیکن را جح عقل وتمیز والاقول ہے یا

حضرت گنگو بی نے اس کور جیج دی ہے۔ مولانا جامی دوسال کی عمر میں پڑھنے لگ گئے تھے۔ حضرت شیخ کے والد کو دورہ چھڑانے کے زمانے میں پاؤ پارہ حفظ ہوگیا تھا۔ امام بخاری بھی اس کے قائل ہیں کہ کوئی تعیین نہیں ہے کیونکہ بہلی روایت قریب البلوغ کی ہے اور دوسری پانچ سال کی عمر میں تحل حدیث کی ہے اور جوحضرات تعیین کے قائل ہیں وہ کہتے ہیں کہ اپنچ سال سے کم جائز نہیں ہے۔

حدثنا اسماعیل: مسجمار: فرکرومؤنث کوعام جلیکن چونکه اکثر فدکر کے لیے استعال ہوتا ہے تو یہاں پر تذکیر کے وہم کور فع کرنے کے لیے بعد میں اُتان کا لفظ بول دیا۔

یصلی بمنی: منی کامعیٰ بہانا ہے جو چیز بہائی جاتی ہے اس کومنی کہتے ہیں منیٰ میں چونکہ خون بہائے جاتے ہیں، قربانیاں کی جاتی ہیں اس لیے اس کومِنی کہتے ہیں۔

الميٰ غير جدار:اس كَيْفير مِين محدثين كااختلاف مواج_

(۱) سعلامہ یہی فرماتے ہیں کہ مطلب حدیث کا یہ ہے کہ آپ علی اللہ بغیرسترہ کے نماز پڑھارے تھے تی کہ بعض المَدیث پر باب قائم کردیاباب صلوة بغیرسترة اور بیروایت نقل کی ہے۔

ا گریادرے کربہتر بات وہی ہے جوابن ہام نے تر برااصول میں کہی ہے اور جس کو حافظ نے بھی تسلیم کیاہے کہ یہ تفاوت واقعات کی نوعیت اور بیچ کی تو توں اور طبائق کے مجارت : وتا ب ند ہر بیچ کی ہر بات مردود ہے اور ند ہر بیچ کی ہر بات متبول مثلا موانا ناجاتی کہتے ہیں کہ میں دوسال کا تھا کہ میرے والد نے علامہ تفتاز انی کے شار مزمیر دے تواہد نالے اور اسلامیا میں کوئی تامیر توہیں متعین کراجا سکتا گئر ہے کہ تو توں اور واقعات کی نوعیت کا بقیار تو گاروں بیغار کہ دعر 1830۔ (۲)امام بخاری اورعلامه کرمانی کی رائے یہ ہے کہ سترہ تھالیکن دیواز نہیں تھی اس کوخوب سیحصنے کے لیے ایک باب صاکے پر ملاحظہ ہواس میں باب باندھا ہے ستوۃ الامام ستوۃ من خلفہ اور روایت یہی ہے تو دلیل اس طرح بن کہ سترہ تھا جبھی تو آگے ہے گزرتے تھے۔

اصل الاختلاف: لفظ غیر میں ہے غیر دو تم پر ہے اصفی ۲۔ استثنائی۔ غیر صفی کی مثال جیسے جاء نبی غیر زید ای الازید. غیر استثنائی کی مثال جیسے ماجاء نبی غیر زید ای الازید.

اگر حدیث الباب میں غیر سے غیر صفتی مرادلیاجائے تو امام بخاری گی رائے قوی ہے اور تقدیر عبارت یول ہوگا لیے شدی غیر جدار اورا گرغیرا ستنائی مان لیاجائے تو پھریہ ثابت نہیں ہوگا کہ غیر جدار کی طرف نماز پڑھ رہے تھے۔خلاصہ یہ کہ ستر ہ کی فنی ہوجا گیگی کیونکہ عام طور پر ستر ہ دیوار ہوتی ہے تو جہاں دیوار نہیں ہے تو ستر ہ بی نہ ہوا۔ فلم ین کر ذلک عَلَیّ :ضمیر کا مرجع حضور علیہ یا کوئی اور ہے معنی یہ ہوگا کہ حضور علیہ نے انکار نہیں کیا یا گسی نے انکار نہیں کیا یا۔

عقلت و اناابن خمس سنین: پانچ سال کی تمرین محملِ مدیث ثابت موار

من دلو: سبعض روایات میں فی دار ہے اور بعض میں من بئو ھم ہے تو یہ کوئی تعارض نہیں ہے کہ گھر میں جو کنوال تھااس کے لیکر لئکے ہوئے ڈول میں رکھاتھا تو عبارت یوں بن گئ من دلو معلق منحوج من بئو فی دادِ.

مسوال: دونوی روایتوں میں ماع کا تو ذکر نہیں ہے تو ترجمۃ الباب کے مناسبت مطابقت نہ ہوئی؟

جو آب:مراد تحملِ حدیث ہے اور تحملِ حدیث کے لیے قول ضروری نہیں بلکہ تحملِ حدیث اقوال، احوال اور تقاربر سب طریقے سے ہوسکتا ہے البتہ خاص ساع کے لیے قول ضروری ہے۔ (۱۱) (باب الخروج في طلب العلم علم عاصل كرنے كے ليے ستركرنا

ورحل جابو بن عبدالله مسيرة شهر الى عبدالله بن أنيس فى حديث واحد اور جابر بن عبدالله "في مهينه كا سفر كيا

(4٨) حدثنا ابوالقاسم حالد بن خلى قاضى حمص قال ثنا محمد بن حرب ہم سے بیان کیا ابوالقاسم فالد بن ظی قاضی محمص نے، کہا ہم سے بیان کیا محمد ابن حرب نے قال الاوزاعي اخبرناالزهري عن عبيداللهبن عبداللهبن عتبة بن مسعود عن ابن عباس کہااوز ائ نے، ہم کوخردی زہری نے ، انھوں نے عبیداللہ بن عبداللہ بن عتب بن مسعود سے، انھوں نے ابن عباس سے کہ انه تماري هو والحربن قيس بن حصن الفزاري في صاحب موسى فمربهماابي بن انھول نے اور حربن قیس این حصن فزاری نے موی کے دفیق کے بارے میں جھکڑا کیا، پھران دونوں پرسے گزرے الی ابن كعب فدعاه ابن عباس فقال انى تماريت اناو صاحبى هذا فى صاحب موسىٰ کعب توابن عباس بنے ان کو بلایا اور کہا جھے میں اور میرے اس دوست میں جھگڑا ہوا کہ موی کا وہ رفیق کون تھا الذى سأل السبيل الى لقيه هل سمعت رسول اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْكِ عَلَيْ عَلِي عَلِي عَلِيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْكِ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْعِمِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلِي عَلِي عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْكِ عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْكِ عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْكِ عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْكِعِي عَلَيْكِ عَلِي عَلِي عَلِي جس سے مویٰ نے ملناحایاتھا؟ کیاتم نے آنخضرت اللہ سے البارے میں کھیناہے؟ آیافیہ اس کا حال بیان کرتے تھے؟ فقال ابى نعم سمعت رسول الله عليه الله على الله عليه الله عليه الله عليه الله عليه الله على الله عليه الله عليه الله على اني ن كهابان! مين في رسول التُعلِيني كويرقصه بيان كرت موع سناب آب فرمات تصايك بارموسي عليه السلام في ملأمن بني اسرائيل اذجاء ٥ رجل فقال هل تعلم احدااعلم منك؟ بى الرائيل كاوگول ميں بيٹے ہوئے تھاتنے ميں ايك شخص آياوران سے يوچھاتم كى ايك خص كوجائے ہوجوتم ہے بھى زياد علم ركھتا ہو؟ قال موسىٰ لا! فاوحى الله الى موسىٰ بلىٰ عبدنا خضر فسأل موی عایدالسلام نے کہانہیں! پھراللد نے وی بھیجی موت ای طرف کہ ہاں ہماراایک بندہ ہے خصر (وقع سے داد بار کما ہے) موتی نے سوال کیا

وتحقيق وتشريح

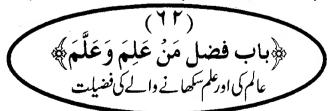
توجمة الباب كى غوض: الله بيل الم بخارى فرمات بيل كمام حاصل كرنا ضرورى ہے جاہے اللہ ميں الم مفرک ماری کے اللہ ميں عام سفر ہے سمندری سفر کرنا پڑے یا خطک كا۔ پہلے باب میں خاص سفر (سمندری سفر) خاص علم كے ليے تقااس باب ميں عام سفر ہے اور عام علم كے لئے ہے۔

رحل جابر بن عبدالله :دهرت جابر بن عبدالله خود صحابی بین لیکن ان کومعلوم بوا عبدالله بن أنیس ایک صدیث سات بین بالواسطه توسی بولی تقی اب بلاواسطه سننے کے لیے سفر کیا وہ حدیث واحد کیا ہے؟ البحض نے کہامن ستر مؤ منافی الدنیاعلی عورة سترہ الله یوم القیامة یا والی روایت ہے علامہ عینی فرماتے بین کہ جابر بن عبدالله عن منافی الدنیاعلی عورة سترہ الله یوم القیامة یا والی روایت ہے کہ قیامت کے دن الله تعالی نداء دیں گے کہ انا عبدالله بن ایک روایت امام بخاری نے نقل کی ہوہ روایت ہے کہ قیامت کے دن الله تعالی نداء دیں گے کہ انا الملک انا الدیان ی پوری حدیث یوں ہے (سمعت النبی علیہ بقول یحشر الله العباد فینادیهم بصوت

یسمعه من بعد کمایسمعه من قوب انا الملک انا الدیان)) کہتے ہیں کہ جابر بن عبداللہ اللہ اللہ کا تو چھامُن ؟ کہا جابر بن عبداللہ کہامن اصحاب رسول اللہ علیہ اللہ علیہ کہانعم باہر تکل کر چٹ گئے ہے تو حدیث کا علم ہے۔ فنون حاصل کرنے والوں نے بھی بہت ی قربانیاں کی ہیں علامہ سید شریف جرجانی کو شرح مطالع پڑھنے کا خیال مواکد جس نے کھی ہہت ی قربانیاں کی ہیں علامہ سید شریف جرجانی کو شرح مطالع پڑھنے تھے ہوا کہ جس نے کھی ہوا کہ جس باس کے پاس جا کر پڑھوں۔ چنا نچ سفر کر کے مصنف کے پاس گئے استادا نہائی بوڑھ میں پڑھا تا میر اپڑھانا میر اپڑھانا میں موانا نامبارک پوری ہیں انکا پڑھانا میر اپڑھانا میر اپڑھانا کہ ہو ان کے پاس گئے تو بتالیا کہ مصنف نے بھیجا ہے کہا جی ہاں۔ استاذ نے کہا تمارے ہاں تو بیشرط ہے کہا بی اسی انٹی کا وسیق پڑھانیا کروں گا تو بیش کی دینی ہوگی انہوں نے کہا اچھا۔ جب اشرفی مل جایا کرے گی تو سبق پڑھانیا کروں گا خیال ہوال کہ کہو ما نگ کرکوشش کروں گا جب باوشاہ کو خبر ہوئی کہ ایک طالب علم پسے نہ ہونے کی وجہ سے پڑھ نہیں سکتا تو خیال ہوا کہ جب باوشاہ کو خبر ہوئی کہ ایک طالب علم پسے نہ ہونے کی وجہ سے پڑھ نہیں سکت کر وہ کی اجازت نہیں تھی میں سب سے اخبر میں بیشھنا ہوگا کہ رہ کہا ہوال کہ کہ بین میں اشکالات ہوتے کی وجہ سے کر ایک اجازت نہیں تھی میں میں اشکالات ہوتے کیاں بولے کی اجازت نہیں تھی میں میں کہا ہوں استاد نے آ واز تی تیج پوچھا کہ فلاں کمرے سے میں کون تھا تھا یا گیاتو قریب بیٹے اور استاد نے آ واز تی تیج ہوں کہا ان استاد نے آ واز تی تیج ہو کہا کہ فلاں کمرے میں کون تھا تھا یا گیاتوں استاد نے آ واز تی تیج ہو کہا کہ فلاں کمرے میں کون تھا تھا یا گیاتو قریب بیٹے انہوں کہتا ہوں استاد نے آ واز تی تیج ہو کہا کہ فلاں کمرے میں کون تھا تھا یا گیاتوں استاد نے آ واز تی تیج ہو کہا کہ فلاں کمرے میں کون کہتا ہوں استاد نے آ واز تی تیج ہو کہا کہ فلاں کمرے میں کون تو کہا کہا گئی۔

سوال: مسامام بخاریؓ نے جو تعلیق ذکر کی ہے ور حل جاہر اس میں تر دونہیں ہے لیکن جوحوالہ ذکر کیا ویڈ کر ہے اس میں تر دد ہے۔

جواب:محدثین نے جواب دیا ہے کہ جابر کا ابن أنیس سے سننے میں تر دونہیں ہے لہذاتعلق میں جزم ہے کیکن اس مخصوص حدیث کوسنا ہے یانہیں اسکی تعیین میں تر دو ہے فلا تعارض



ابى بردة عن ابى موسى عن النبي عَلَيْكُ قال مثل مابعثنى الله به من الهُدى والعلم ابوبردہ سے ہنھوں نے ابومویؓ سے ہنھوں نے آنخضر ت آلیف ہے، آپ آلینڈ نے فرملیاللہ نے جوہدایت اورعلم کی ہاتیں مجھ*کودے کرجیج*یں كمثل الغيث الكثير اصاب ارضا فكان منهانقيةً قبلت الماء ان کی مثال زوردار مینہ کی سی ہے جوزمین پربرساتو بعضی زمین عمدہ تھی جس نے یانی چوس لیا فأنبتت الكلاء والعشب الكثيروكانت منهااجادب امسكت المآء فنفع الله بها الناس اوراس نے سبزی اور گھاس خوب اگائی اور بعضی سخت تھی (پڑلی)اس نے پانی تھام لیا اللہ نے اس سے لوگوں کو فائدہ دیا فشربواواسقوا وزرعوا واصاب منهاطائفة احرى انماهي قيعان لاتمسك ماء پیااور (باورون) پلایااور کھیتی میں دیااور بعضی الیی زمین پریہ مینہ برساجو صاف چٹیل تھی نہ تویانی کواس نے تھاما الله و لاتنبت كلأ فذلك مثل من فقه في دين اورنہ گھاس اگائی (امرانی اس بے بہ ایا) یہی اس شخص کی مثال ہے جس نے خداکے دین میں سمجھ پیدا کی ونفعه بمابعثنی الله به فعلم وعلم ومثل من اوراللہ نے جو مجھ کودے کر بھیجاہے اس سے اس کوفائدہ ہوا تو اس نے خود سیکھااور دوسروں کو سکھایا اوراس شخص کی جس نے لم يرفع بذلك رأسا ولم يقبل هدئ الله الذي أرسلت به اس پر سرہی نہیں اُٹھایااوراہلہ کی ہدایت جومیں دے کربھیجا گیا،نہ مانی قال ابوعبدالله قال اسحاق عن ابي اسامة وكان منها طائفة قَيَّلَتِ الماء امام بخاری نے کہااسحاق نے ابواسامہ سے اس حدیث کوروایت کیا اس میں یوں ہے بعضی زمین نے پانی بی لیا الماء، والصفصف المستوى من إلارض (اس مد يد مرة مان ان جام ك) يعنى وه زمين جس يرياني چر صحائے (خريس)اور (قرآن من جوام مصف اجر) صفصف كہتے ہيں ہموارز مين كو

وتحقيق وتشريح،

تو جمة الباب كى غوض: سس تعلم كانضيات مسلم اورعلم كافضائل تسليم، مربقاء علم تعليم سے ہوتا ہے تو گوياس باب سے تعليم كى فضيات كى طرف اشارہ ہے۔

كلا: ختك اورتر كهاس كوعام ب عشبتر كهاس كو كہتے ہيں۔

اس حدیث میں تشبید کے طریقے سے فرمایا کمیر علم وہدایت کی مثال بارش کی ہے۔

مسوال:زمین کی تین قشمیں بتلائیں اور مشبہ کی دوقشمیں بیان کیں پہلی قشم کے ساتھ پہلی ، تیسری کے ساتھ تيسرى، دوسرى قىم اجادب والى اس كے مقابلے ميں كوئى مشبہ به كى قىم بريان نہيں كى؟

جواب : مسمحدثین شراح کا اختلاف ہوا ہے کہ تشبیہ میں تقسیم ثنائی ہے یا ثلاثی اے ملامہ عینی کی رائے یہ ہے کہ ثنائی ہےاں طرح کہ زمین کی دونشمیں بیان فرمائی ہیں۔(۱) نافع (۲)غیرنا فع۔

اسی طریقے سے انسانوں کی بھی دوشمیں ہوگئیں پہلی دوشمیں نافع میں آگئیں ۲۔علامہ کر مائی کی رائے یہ ہے کہ یہ تقسیم ثلاثی ہے امتفع اور نافع ۲ نافع غیرمنتفع ۳ نے برنافع غیرمنتفع ۔ مشبہ کی طرف بھی لوگ تین قسم پر ہوجاتے ہیں ازایک وہ جوملم حاصل کر کے عمل کرتے ہیں غور وفکر کرے مسائل نکا لتے ہیں ۲۔ دوسرے وہ جوملم حاصل کرتے ہیں اس پڑنمل کرتے ہیں لیکن غور وفکر کر کے مسائل مستنبط نہیں کرتے سے تیسری قتم وہ ہے جو کہ علم کی طرف دھیان ہی نہیں دیتے۔ گویاعلم کی بارش پڑتی ہے تو مسائل کے بودے پھول نکا لتے ہیں انکی مثال فقہا اُوکی ہے اور پیاس زمین کی طرح ہیں جو پانی کو چوس کر پھل پھول نکالتی ہے دوسری قتم علاءِ محدثینٌ ہیں کہ صرف یاد کر کے آگے پہنچاتے ہیں اسکی مثال وہ زمین ہے جویانی کوجمع کر لیتی ہے اور لوگ اس سے استفادہ کرتے ہیں

لطبیفہ: بعض مرتبہ لطائف کے طور پرمطالع میں کوئی بات یاد آ جاتی ہے کہ کسی گھروالے کے نوکر نے اچھا کھانا تیار کیا اگروہ نوکر آپکا معتمد علیہ ہے تو آپ فورا کھالیتے ہیں تفتیش نہیں کرتے لیکن اگروہ آپکا معتمد علیہ نہیں ہے تو آپ ہر چیز کی تفتیش کریں گے یہی مثال فقہاء کی ہے اگروہ ہمارے لیے قابل اعتاد ہیں تو ہمیں ان کی بات بغیر چون و چرا کے مان لینی حیا ہے۔

قال اسحق : المام بخاري جب بغيرنست كصرف الحق ذكركرتے بي تو مراد الحق بن را بوية بوتے بير آپ کومعلوم ہونا جا ہے یہ حنفی ہیں امام بخاری کے اساتذہ میں سے بے شار حنفی ہیں حنفیہ کی روایتوں کو نکال دیں توباقی مجھ بچتاہی ہیں۔

قیعان:قیعان جمع ہقاع کی جمعنی چٹیل ہموار بغیر گھاس کے میدان۔

الصفصف: صفصف، الشي باشئ يذكو كتبيل سے بامام بخاريٌ نے قاع كى مناسبت سے صفصف کے معنی بھی بیان کردیئے کیونکہ قرآن میں دونوں استھے آئے ہیں ا

(۲۳) باب رفع العلم و ظهور الجهل په (دنياسے)علم اٹھ جانے اور جہالت پھیلنے کابیان

وقال ربیعة لاینبغی لاحد عنده شیء من العلم ان یضیع نفسه اور ربید نے کہا جس کو (دین کا) تھوڑا ساعلم ہو وہ اپنے تیں بے کارنہ کردے

0000000000000000

(۱۸) حدثنامسددقال ثنا یحیی بن سعید عن شعبة عن قتادة عن الله عن الله علی الله عن الله الله

وتحقيق وتشريح

سوال: سسكم بين وعلم كثبوت كابيان مونا جائية كرفع العلم وظهور الجبل كا؟ جواب: سسكم ثبوت علم كي ليضدكول آتي وبضدها تعبين الاشياء

ندمهم وبهم عرفنا فضله ۞ وبضدها تتبين الاشيآء

قال ربیعة:ان کالقب الرّائے ہے۔ امام مالکؒ کے استاد ہیں رائے پہلے زمانے میں مدح کالفظ تھا کیونکہ اس زمانے میں محدثین روایت کم کرتے تھے اور تحقیق زیادہ کرتے تھے ان پراس کا اطلاق ہوتا تھا آ جکل کسی کواگر خود رائے کہد یں ذم ہے ہم اس سے آ گے کا بھی ایک لفظ بول دیتے ہیں'' خود رَوْ' جوخود بخو دہی اُگ آتے ہیں آ جکل کے مفسرین کا یہی حال ہے۔

ان یضیع نفسہ: ساس کی گئ تفیریں ہیں ارپڑھے اور پڑھائے نہیں ۲ یا ہلوں کو پڑھا تا ہے جنگی استعداد نہیں ہے یا قدروان نہیں ہیں سے یعنی زرخر یدنہ بے تنخواہ کے پیچھے بیچھے نہ پھرے ہم پگل نہ کر بے تو جس نے اپنا کہ بیان کیا ہے کہ اتن جس نے اپنا کہ بیان کیا ہے کہ اتن تواضع کر دیا ۵ حضرت شیخ نے ایک اور مطلب بیان کیا ہے کہ اتن تواضع کر ہے کہ کو کی استفادہ ہی نہ کر ہے مولا ناغلام رسول صاحب یونٹوی عرف لالہ کالا جو کہ وقت کے سیبو یہ ہلاتے تھے ایک مرتبہ حضرت کشمیری کے پاس بیٹھے تھے فرمانے گئے کہ ساری عمر اپنے استاد کے اس جملے کی لج پالنے میں گزاردی ہے کہ جہاں بھی جاناعلم پڑھانا۔

تعارضِ حدیث:اس باب میں رفع علم کا ذکر ہے لیکن کیفیت رفع کا ذکر نہیں اس سلسے میں ایک باب بخاری شریف سے ۲۰ پرقائم کیا ہے باب کیف یقبض العلم اس میں بتلایا کہ علماء فوت ہوجا کیں گے آ گے عالم پیدائہیں ہو نگے لیکن ابن ماجہ میں رفع علم کی صورت یہ بیان کی گئی ہے کہ قرآن پاک کے نقوش اُٹھا لیے جا کیں گے اور علماء کے سینوں سے علم اُٹھا لیا جائے گا تو یہ بظاہر تعارض ہوا؟

دفع تعارض: حقیقت میں کوئی تعارض نہیں، پہلے بض علاء ہوگا پھر قیامت کے قریب سینوں سے بھی علم اُٹھا لیا جائے گا تقدم تا خرکی بات ہے تعارض نہیں ہے۔

لایحد ثکم احدبعدی: مطلب یہ بے کسمعت رسول اللہ عظیم کم کرکوئی بیان کرنے والانہیں ہوگا کیونکہ حضرت انس نے کمبی عمر یائی اور دیگر صحابہ کرام فوت ہو چکے تھاس لئے فرمایا۔

ل (اخر حه مسلم في القدرو الترمذي في الفتن والنسائي في العلم وابن ماجة في الفتن واجع: ٥٨٠)

تکثر النسآء:اس کی دوصورتیں بتلائی جاتی ہیں الرئکیاں زیادہ پیداہونگی لڑے کم '۱ فسادات زیادہ ہونکے عورتیں باتی رہ جائیں گی مرد مارے جائیں گے۔

لخمسين إمو أق:عدد بھى مراد ہوسكتا ہے اور كثرت بھى العض نے كہاہے كدا كيك ايك مرد بچاس بيكمات بنالے گاليكن ية بحين بين ہے كونكه بعض روايات ميں ہے كدا يك ايك نيك آدى بچاس كا نگران ہو گاصالح تو نكاح ميں عارسے تجاوز نه كرے گا۔ تو مقصودا حاديث الباب سے ہے كہ علم يڑھنا پڑھانا جا ہے۔

> (۱۳) ﴿باب فضل العلم﴾ علم كانشيات

(۱۲) حدثناسعیدبن عفیر قال حدثنی اللیث قال حدثنی عقیل عن ابن شهاب ایم سے سیدبن عفیر نے بیان کیا، کہا بھے سے قیل نے بیان کیا، انھوں نے ابن شہاب سے عن حمزة بن عبدالله بن عمر اَنّ ا بن عمر قال سمعت رسول الله عَلَيْ الله عَلْمُ الله عَلْمُ الله عَلْمُ الله عَلَيْ الله عَلْمُ الله عَلْم

وتحقيق وتشريح

مسوال: یہ باب مکررہے اس سے پہلے کتاب العلم کے شروع میں ص ۱۲ پر فضل علم کاباب قائم کیا ہے۔ اس کئے شراح محدثینؓ نے متعدد توجیہات کی ہیں۔

اول: سبعض تو کہتے ہیں کہ کتاب العلم کے شروع میں جو باب فضل العلم ذکر کیا ہے وہ ناتخین کی فلطی ہے۔ قرینہ: سس وہاں کو کی فضل العلم کی حدیث بیان نہیں گی۔ ثانی: اوربعض یہ کہتے ہیں کہ وہاں بیان فضیلت علاء ہواور یہاں بیان فضیلت علم ہے مرف بعاً اوراصلاً کافرق ہے۔
ثالث: سوہاں بیان فضیلت علم کلی ہے یہاں بیان فضیلت علم جزئی ہے یہاں پر فاص علوم نبوت کی فضیلت ہے۔
ر ابع: سوہاں فضل فضیلت کے معنی میں تھا اور یہاں فضل ہمعنی زیادۃ العلم ہے اسکی پھر دوتفسیریں ہیں۔
تفسیر اول: سیخصیل زیادۃ العلم کی میں قناعت نہیں کرنی چاہیے آپ علی ہے کہ کی یہی دعاء ماگل رب زدنی علماً.
تفسیر ثانی: سفضل العلم ای بذل فضل العلم یعنی زائد علم کی تقسیم کرنی چاہیے۔
تفسیر ثانی : سے مرادکت علم بھی ہو سکتی ہیں۔ ۲: اور اس سے مراد پڑھانا بھی ہو سکتا ہے۔

ان دوآ خری مطلبوں کی وجہ ہے روایت ترجمۃ الباب کے بھی مطابق ہوجائے گی۔

(۱) پہلی تغییر کی مطابقت معنوج فی اظفاری سے ہوجائے گی ضمیر کا مرجع سیرانی یا دودھ ہے بیعنی اتناعلم حاصل کروکدرونیں رونیں سے علم شیکے۔

(۲) دوسری تفییر کے ساتھ مطابقت نم اعطیت فضلی ہوگی یہاں سے یہ بات بھی معلوم ہوگئی کہ خواب کے اندردود ھلم سے تعبیر ہے۔

(۱۳۸) حدثنااسمعیل قال حدثنی مالک عن ابن شهاب عن عیسیٰ بن طلحة مم اساعیل نیبان کیا، انهوں نے ابن شهاب سے، انهوں نے عیسیٰ بن طلحه ابن عبدالله عن عبدالله بن عمروبن العاص ان رسول الله علیہ وقف فی حجة الوداع بمنی ابن عبیدالله عن عبدالله بن عمروبن العاص ان رسول الله علیہ وقف فی حجة الوداع بمنی شم برے، ابن عبیدالله کے عبدالله بن عمروبن العاص الله علیہ کے آن خضرت علیہ الله علیہ الوداع میں منی میں شم برے، ابن عبدالله کے عبدالله بن عمروبن العاص کے اسلام الشعر فحلقت قبل ان اذبح الله اس یسئلونه فجاء ہ رجل فقال لم اشعر فحلقت قبل ان اذبح اس لئے کوگ آپ کے باس آیادر کہنے گائی کھ کوخیال نہیں رہائی نے ربانی میں بیلے مرمنذالیا قال اذبح و لاحوج ، فجاء انحر فقال لم اشعر فنحوت قبل ان ارمی ، قال اذبح و لاحوج ، فجاء انحر فقال لم اشعر فنحوت قبل ان ارمی ، آپ نے نرایا ابتر بانی کرلے کوئ مضا نقہ نیس ، پھرا کی اور کہنے لگائی کوخیال نہیں رہائی نے کیکریاں مار نے سے پہلے تربانی کرلی ا

قال ارم ولاحرج قال فماسئل النبي عُلَيْكُمْ عن شئى قدم ولااخرالاقال افعل ولاحرج إ

وتحقيق وتشريح

قوله على ظهر الدابة اوغير ها: غيردآبين كل دنياآگن ـ

توجمة الباب كى غوض: غرض باب مين كئ تقريري مين -

تقریر اول: سایک حدیث کی توجیه بیان کرنامقصود ہے۔آپ علیہ سے ایک حدیث مروی ہے (لاتتحدو اظھور دو ابکم منابر) را اپ بو پاؤں کی پتوں کو مبرند بناؤ) کہ چو پائے پر بنیٹا ہے اور باتیں کررہا ہے امام بخاری یہ باب قائم کر کے اس حدیث کی شرح کرنا چاہتے ہیں کہ طویل باتیں اور طویل خطبات ندد و مختصر بات سے منع نہیں ہے، اور غیر ضروری باتیں جانور پر کھڑ ہے ہو کرنہ کرو، الحاصل ضرورت کی اور تھوڑی بات ہو سکتی ہے۔

تقریرِ ثانی: بعض نے کہا ہے کہ بیامام مالک پرتعریض ہے امام مالک داہ چلتے ہوئے کوئی مسکنہیں بتاتے سے فرری ضرورت کا تھے کہا ہے حالانکہ اس سے ضروری علم رہ جائے گا آپ سے کسی نے فوری ضرورت کا مسلہ یو چھا آپ کہتے ہو کہ گھر جا کر بتا کیں گے۔

تقرير ثالث:فقى اورقضاء مين فرق كرنامقعود بك فقوى سوارى يرديا جاسكتا باورقضاء نبيس

تقریر رابع: سعلم کے لیے سکینداوروقار ضروری ہے کہ سکون اوروقار سے پڑھایا جائے اوردرس ویا جائے لیکن ضرورت کے تحت سواری کی حالت جو کہ اطمینان کی حالت نہیں ہے اس پڑھی جائز ہے۔

تقریرِ خامس: معلمین اوراسا تذہ کو بتانا ہے کہ ضرورت مندا گر کوئی مسئلہ رائے میں پوچھ لے توناراض نہوں۔ تقریرِ مساد مس: مسللہ کو تعلیم ہے کہ عندالصرورۃ راہ چلتے ہوئے بھی سوال کر لینا چاہیے باقی حالات میں تخصیل علم وقار اور سکون کے ساتھ ہونی چاہیے۔ حاصل یہ ہے کہ اس باب میں علم کا ضروری ہونا بتلا نامقصود ہے۔

سوال:روایت الباب سے ترجمۃ الباب ثابت نہیں۔ اس لیے کہ روایت کے اندروقوف کا ذکر تو ہے لیکن علی ظہر الد آبة کاذکر نہیں ہے۔

جواب اول: ترجمة الباب كروجز عين اروقوف على ظهر الدآبة ٢ ـ اور وقوف على غيرها

ا انظر: ۲۲ ۱٬۱۲۳ / ۱٬۷۳۷ / ۱٬۷۳۵ / ۲۲۲۵ : انجرجه مسلم في الحج عن يحيي بن يُحيى ابوداؤد في الحج والترمذي في الحج والنساني في الحج وابن ماجه في الحج. "٢ مشكوة ص ٣٣٠

صدیث میں مطلق وقون سے جزء ثانی ثابت ہوگیا اس پر قیاں کر کے وقوف علی الد آبة کو ثابت کرلیا جائے گا۔ جو اب ثانی: سسحدیث کے اندر وقوف عام ہے جو کہ دونوں وقو فوں کو شامل ہے۔

جواب ثالث:تشخیذ اذبان ہے کہ طلبہ تلاش کرتے ہوئے کتاب الحج (بناری سسم) میں پینچیں گے تو وہاں مل جائے گا وقف علی نافته تو اس روایت کے پیش نظر باب قائم کردیا۔

مسئلہ:ایام منیٰ میں پہلے ری جمرہ عقبہ ہے پھر قربانی ہے پھر حلق ان میں ترتیب ہے یانہیں؟ دونوں بڑے امام (امام ابو صنیفہ وامام مالک کی وجوبے ترتیب کے قائل ہیں امام شافعی اور امام محمد وجوب کے قائل نہیں ہیں۔

دليل: سام منافعي اورامام مر دليل من يهي حديث بيش كرتے بي افعل ولاحوج.

جواب: سين ہے كمابھى احكام متحكم نہيں ہوئے تھے بہلا ہى جج تھاال لئے آپ اللہ في نوسع اختياركياال سے دجواب: سين ہے كمابھى احكام متحكم نہيں ہوئے تھے بہلا ہى جج تھاال لئے آپ اللہ في الاحرج يعنى دنيا ميں گناه نہيں ہوگا باقى دَمُ تو دنيا ميں واجب ہوجائے گايدم گويا جج كا تجده ہو ہے۔ دليلنا: سيد حضرت ابن عباس بي سے موقوف روايت ہے عن ابنعباس انه قال من قدم شيئاً من حجه او احره فليهرق ذلك دميًا ليكن جان ہو جھ كرج ميں كوئى واجب نہيں چھوڑ اجائے گاكيونكماس سے تحقير لازم آتى ہے۔

(۲۲)
﴿ باب من اجاب الفتياباشار قاليدو الرأس ﴾ جمل في المرك الثاره على مسئله كاجواب ديا

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض اول:تعليم اتى ضرورى بكر اگربين كرتفصيل سينيس پرهاسكة تواشارك سيجي بوسكة تواشارك سيجي بوسكتي بوسكتي تواشاره مبهمه نهو

امام اعظم کے پاس ایک شخص آیا کچھ دیر کھڑارہا پھررکوع کردیا ، پھرداڑھی پرہاتھ پھیراامام صاحب ؒ نے فرمایا کہ آیے ادریس (صاحب) ادھر بیٹھے۔حاضرین نے سوال کیا کہ آپکواسکانام کیے معلوم ہوگیا؟ فرمایا کہ کھڑارہا توالف رکوع کیا تو دال کی طرف اشارہ ہوگیا داڑھی جھاڑی تو گویا ش کے نقطے جھاڑ دیتے ادریس بن گیا۔ عموض ثانمی: سساس باب سے مقصود حضور عقوق کے تعلیم کے بارے میں جوحدیث آتی ہے کہ آپ عقوق جب کلام فرماتے تو تین مرتبہ فرماتے اس سے بظاہر میں معلوم ہوتا ہے کہ تین مرتبہ ایک بات کو کہنایا زبان سے بولنا ضروری اعماد میں ہوتا ہے کہ تین مرتبہ ایک بات کو کہنایا زبان سے بولنا ضروری اعماد میں ہوتا ہے کہنایا دبان سے بولنا ضروری

ہوا ام بخاری اس باب کو باندھ کر ہتلا نا چاہتے ہیں کہ ضرورت کے وقت اشارے سے بھی تعلیم ہوجاتی ہے خواہ اشارہ ہاتھ سے ہویا سرسے ہو۔

فائده: سامام بخاری نے دو روایات ہاتھ سے اشارے کی قل کی بین اورایک سرسے اشارے کی قل کی ہے۔

(۱۲) حد ثناموسی بن اسمعیل قال ثنا و هیب قال ثنایوب عن عکرمة عن این کیامون کیاموسی بن اسمعیل قال ثنا و هیب قال ثنایوب عن عکرمة عن این کیامون کیاموسی کیاموسی

(انظر: ١٤٢١، ١٤٢٢، ١٤٢٢، ١٤٣٢، ١٤٣٢ : اخرجه مسلم في الحج عن محمدبن حاتم اخرجه النسائي في الحج)

(٨٥) حدثنا المكى بن ابراهيم قال اناحنظلة عن سالم قال سمعت اباهريرة

ہم ہے کی بن ابراہیمؒ نے بیان کیا،کہاہم کوخظلہؒ نے خردی،انھوں نے سالمؒ ہے،کہامیں نے ابوہریوؓ سے سنا، عن النبی اللہ قال یقبض العلم ویظھر الجھل والفتن

ويكثر الهرج قيل يارسول اللهو ماالهرج؟فقال هكذابيده فحرّفهاكانه يريد القتل

اور ہرتی بہت ہوگا عرض کیا: یارسول الله ہرج کیا ہے؟ آپ نے ہاتھ کو (ترچھا) ہلا کرفر مایا جیسے قل آپ نے مرادلیا

(واجار: ۲۳۱ م ۱۳۱۱ م ۲۳۱ م ۱۳۱۰ م ۲۳۱ م ۱۳۱۲ م ۲۰۱۲ م ۱۳۱۲ م

(۸۲) حدثناموسی بن اسمعیل قال ثنا و هیب قال ثناهشام عن فاطمة عن مین اسمعیل قال ثنا و هیب قال ثناهشام عن فاطمة عن می این کیاموی بن اساعیل نے بہان کیامانعوں نے فاطمہ سے میں کیامانعوں نے فاطمہ سے میں کیامانعوں نے فاطمہ سے اسمآء قالت ماشان الناس؟ انھوں نے اسامانی کیامیں حضرت عائشہ کے یاں آئی وہ نماز پڑھوری تھیں میں نے کہا الوگول کو کیاموا (دربان کی ایس آئی وہ نماز پڑھوری تھیں میں نے کہا الوگول کو کیاموا (دربان کی ایس آئی وہ نماز پڑھوری تھیں میں نے کہا الوگول کو کیاموا (دربان کی ایس آئی وہ نماز پڑھوری تھیں میں نے کہا الوگول کو کیاموا (دربان کی ایس آئی وہ نماز پڑھوری تھیں میں نے کہا الوگول کو کیاموا (دربان کی ایس آئی وہ نماز پڑھوری تھیں میں نے کہا الوگول کو کیاموا (دربان کی ایس کی ایس کی کیاموا (دربان کی ایس کی کیاموا (دربان کی کی کیاموا (دربان کی کیاموا کی کیاموا کی کیاموا (دربان کی کیاموا کی کیاموا کیاموا کی کیاموا کیاموا کی کیاموا کی کیاموا کی کیاموا کیاموا کیاموا کیاموا کیاموا کیاموا کیاموا کیاموا کیاموا کی کیاموا کیام

فاشارت الى السمآء فاذاالناس قيام فقالت سبحان الله، قلت انھوں نے آسان کی طرف اشارہ کیاد یکھا تولوگ کھڑے ہیں حضرت عائشہ نے کہا سجان اللہ! میں نے کہا ایة فاشارت برأسها ای نعم فقمت حتی علانی کیا کوئی (مدب اتاست) بنشانی ہے؟ انھوں نے سر ہلا کر کہاہاں! تب میں بھی (مادیں) کھڑی ہماں تک کہ مجھ کوغش آنے لگا فجعلت اصب على رأسي الماء فحمدالله النبي الملاي النبي عليه ثم قال مامن شيءٍ میں اپنے سریریانی ڈالنے لگی پس آنخضرت اللہ کی تعریف کی اورخو بی بیان کی پھرفر مایا جو چیزیں الی تھیں ا لم اكن اريته الارأيته في مقامي هذا حتى الجنة والنار جوجھ کودکھائی نہیں جاسکتی تھیں ان سب کو میں نے (آج) اس جگہ دیکھ لیا یہاں تک کہ بہشت اوردوزخ بھی فاوحى الى انكم تفتنون في قبوركم مثل اوقريب لاادرى اى ذلك قالت اسماء پھر مجھ پر دحی بھیجی گئی کہتم لوگ اپنی قبروں میں اس طرح یااس کے قریب آنر مائے جاؤ کے (مین نہیں جانق کہ اساءنے کون ساکلہ کہا) فتنة المسيح الدجال يقال ماعلمك بهاذا الرجل مسے وجال کے فتنے سے (م مے) کہا جائے گا اس شخص کے باب میں کیااعتقاد رکھتے تھے؟ (مین مخرور کے باب میر) فاما المؤمن او الموقن لاادرى ايهماقالت اسماء فيقول هومحمد هورسول الله ایمان داریایقین رکھنے والا مجھےمعلوم نہیں کہ اساء نے کون سالفظ کہا کہے گاوہ مجھوالی میں ، وہ اللہ کے بھیجے ہوئے ہیں جائنا بالبينات والهدى فاجبناه واتبعناه هومحمد ثلثا ہارے یاس کھلی نشانیاں اور ہدایت لے کرآئے ہم نے ان کا کہنا مان لعیا اور انکی راہ پر چلے وہ محمدہ ہیں تین باراییا ہی کہے گا فيقال نم صالحاً قد علمنا ان كنت لموقنا به واما المنافق اوالمرتاب پھراس سے کہا جائے گا تو مزے سے سوجا ہم تور بیدی جان چکے تھے کہ تو ان پریقین رکھتا ہے اور منافق یا شک کرنے والا ذلک قالت اسماء فیقول لاادری مجھے نہیں معلوم اساء نے کون سالفظ کہا(ان دونوں میں ہے) یوں کہے گامیں کچھنہیں جانتا (میں نے تو دنیامیں کچھنوری نہیں کیا) سمعت الناس يقولون شيئافقلته ل لو گول کو جو کہتے سناو ہی میں بھی کہنے لگا۔

وتحقيق و تشريح،

> دونوں باتیں نہیں تو غیر مثقل ہے اور اس سے نماز نہیں او تی۔ قرینہ: سیفٹی غیر مثقل ہونے برقرینہ آئے آنے والے الفاظ ہیں جعلت اصب علی راسی.

> > مسوال: يتوعمل كثير بے جوكه ناتض صلوة ہے۔

جواب: بإنى قريب موكااورايك دو حصينة وال لئ موسكر

سوال: سو کونى نمازهى؟

جو اب: كسوف كاواقعه ہے۔ازواجِ مطہرات اپنے حجروں سے حضور علیقیہ كی اقتداء كررہی تھیں اور حضور علیقیہ مع الجماعت مبحد میں تھیں۔ مع الجماعت مبحد میں تھیں۔

مامن شئى لم اكن اريته الارأيته:

بريلويوں كا استدلال; نكره تحت النفى واقع ہے جوكة عوم كے ليے ہوتا ہے نفى اوراشناء نے جوكه حمرك ليے ہوتا ہے نفى اوراشناء نے جوكه حمرك ليے ہوتا ہے نفى اوراشناء نے جوكه حمرك ليے ہوتا ہے تاروگا۔

جو اب اول: ما من شئى اى شئى مهم. اشياء مهمه جركانى كے ليے جانا ضرورى تھاان كود كھ ليا۔

قرينه:حتى الجنة والنار كالفاظ بي كه اشياء مهمه مراد بي مطلق اشياء مراد بين

جوابِ ثانی:اس کے بعدے فاوحیٰ الی، اگردیکھنے علم غیب کلی حاصل ہوگیا تھا تو وی کی کیا ضرورت تھی؟ جواب ثالث:رؤیت سے مرادرؤیت اجمالی ہے جے بجل کی چک ہاس سے تفصیلی رؤیت لازم نہیں آتی۔

ل انظر ۱۸۵۰ ، ۲۵۲ ، ۱۸۵ ، ۱۰۵۳ ، ۱۰۲۰ ، ۱۳۳۵ ، ۱۳۲۹ ، ۲۵۲ ، ۲۵۲ ، ۲۸۲ عدرت بخاری س ۱۳۹

جو اب رابع:عقیدہ ثابت کرنے کے لیے دو شرطیں ہیں اقطعی الثبوت ہو ۲ قطعی الدلالة ہو۔

قطعی الثبوت: عمرادیے کتواتر کےدر ہے میں ہو۔

قطعی الدلالة: ہے مرادید ہے کہ اور اختالات نہ ہوں تو کیا یہاں پرایسے ہے؟ یہاں تو کتنے اختالات اور ہیں جو بیان ہوئے۔

جوابِ خامس:اگراس روایت سے استدلال ہوتا، تو اہل سنت والجماعت محدثین اس کی توجیہات نہ کرتے بلکداس سے استدلال کرتے یعنی اِس زمانے کے لوگوں کوتوبیا سندلال سجھ میں آگیا پہلوں کو سجھ میں آیا۔ جو اب سادس:علم غیب کی فی جب قطی دلائل سے ثابت ہوتے نیظنی دلیل معارض نہیں ہو سکتی لھذا اس سے استدلال نہیں ہوسکتا ماعلمک بھذا الرجل ای محمد علی فی استدلال نہیں ہوسکتا ماعلمک بھذا الرجل ای محمد علی فی استدلال نہیں ہوسکتا ماعلمک بھذا الرجل ای محمد علی فی استدلال نہیں ہوسکتا ماعلمک بھذا الرجل ای محمد علی فی استدلال نہیں ہوسکتا ماعلم کے بھذا الرجل ای محمد علی فی استدلال نہیں ہوسکتا ماعلم کے بھذا الرجل ای محمد علی فی استدلال نہیں ہوسکتا ماعلی نفی اللہ علی اللہ علیہ اللہ علیہ فی اللہ علیہ اللہ علیہ اللہ علیہ فی اللہ علیہ فی معلیہ علیہ اللہ علیہ فی اللہ علیہ فی اللہ علیہ فی معلیہ فی معلیہ فی اللہ علیہ فی اللہ علیہ فی معلیہ ف

سوال:آپ علی نام وقع پرید کون نمین فرمایا ماعلمک فیی؟

جواب : ﴿ آپ عَلِيْ حَكَاية عن سوال الملائكة فرشتوں كا قول نقل فرمار ہے ہیں پھر فرشتے سوال میں رسول اللہ بھی نہیں کہیں گے كيونكہ سوال بطريق تعميه ہوتا ہے۔

ماعلمك بهذاالرجل:

بریکوبوں کا ایک اوراستدلالاس سے بریلوبوں نے حضورعلیہ الصلوۃ والسلام کے حاضرناظر ہونے پر استدلال کیا ہے۔ استدلال میں کہ ھذاہے اشارہ محسوس مُبصر کے لیے ہوتا ہے معلوم ہوا کہ جہاں بھی کوئی دفن ہوتا ہے دہاں آپھا کوئی دفن ہوتا ہے دہاں آپھا کوئی دفن ہوتا ہے دہاں آپھا کے بیانہ محسوس مصر ہوتے ہیں لہذا آپ اللہ معربوتے ہیں لہذا آپ اللہ معربوتے ہیں۔

جمله معترضه: یہاں سے رفع ذکر نابت ہوا کہ فرشتے ہرجگہ ہروقت سوال کرتے ہیں اور جواب دینے والا کہتا ہے محمد رسول الله رفع ذکر کی ایک اور دلیل بھی ہے۔ ایک ہندو نے سوال کیا کہ تمہارا قرآن کہتا ہے ﴿وَرَفَعُنَالُکَ دِحُرَکَ ﴾ جبکہ مسلمان بہت کم ہیں الہذا قرآن کی آیت جھوٹی ہوئی (نعوذ باللہ) مسلمان نے جواب میں کہا آپ جغرافیہ سے واقف ہیں؟ ہندو نے کہا ، ہاں۔ مسلمان نے کہا کہ کہیں صبح ہوگی کہیں شام ، کہیں ون ہوگا تو کہیں رات اور ہر علاقے میں مسلمان ہیں تو ہر علاقے میں کہیں نہ کہیں اذان ہوتی رہتی ہے اور اذان میں آپ سے ایک قرفع ذکر ہے تو رفع ذکر عالم شہود میں اور عالم برزخ میں بھی ثابت ہوا۔

بریلویوںکے استدلال کے جوابات:.....

جو ابِ اول: جمیں تعلیم نہیں ہے کہ ھذااسم اشارہ محسوں مصربی کے لیے ہے کیونکہ بھی حاضر فی الذہن کے لیے بھی ہوتا ہے تنزیل المعقول بمنزلة المحسوس جیسے ہرکتاب کے شروع میں پڑھتے ہوا مابعد فھذا کے بھر صدیث ہوتل میں ہرقل نے ابوسفیان سے کہا انبی سائل عن ھذا لے

جواب ثانی:هذا کااشارہ محسوں مبصر کے لیے ہونے کو تسلیم کرتے ہوئے ہم کہتے ہیں کہ اس کے لیے وہی دوتو جہیں کی جو سلف صالحین کرتے ہیں (۱)ایک سے کہ بیام شہود ہے عالم برزخ میں جا کر پردے اُٹھ جاتے ہیں یہ پردے عالم شہود میں ہوتے ہیں (۲)دوسری توجید بیکرتے ہیں کہ جسم مثالی پیش کیا جاتا ہے،اس کو باتے ہیں سے ہردے میں کا دیا ورنہ تو ان سب کو جو ٹیلی ویٹرن میں آتے ہیں حاضر ناظر ماننا پڑے گا۔

جواب ثالث: پہلوں نے کیوں استدلال نہیں کیا؟

جوابِ رابع:عقیدے کو ثابت کرنے کے لیے دلیل کا قطعی الثبوت اور قطعی الدلالة ہونا ضروری ہے۔

نم صالحاً:عالم برزخ كى مالت كونوم كماته تعيير كرنے كى متعددوجوه بير۔

الوجه الاول:جس طرح سونے میں انتقال من حالة الى حالة ہوتا ہے الیے بی یہاں بھی انتقال من عالم شہود الى عالم برذخ ہے اس لئے نوم سے تبیر کردیا۔

الوجه الثانى:نوم، حيات اورممات كه درميان ايك حالت باور برزخ بھى آخرت اور دنيا كے حالت كي بين بين ہوگى كچھ دنياوالى اور كچھ آخرت والى اس لينوم تجيير كرديا۔

الوجه الثالث:نوم آرام کی حالت ہوتی ہا اور یہ جی ایک آرام کی حالت ہا بانے والے کو جوحالت پندہ وی ہوگی چا ہے ناز کی حالت ہوچا ہے کوئی اور حالت ہو۔

ا ربخاری ناس به سطر به مطبوعة ورمحرآ رام باغ کراچی: اس سے پہلے بھی ایک م اقرب نسبابھ فداالوجل الذی یز عم اند نبی ہے اس صدیث سے معلوم جواکہ حاضر فی انذ بن کے لیے بھی هذااسم اشار واستعال ہوائے)

(۲۲) صلیله باب تحریض النبی عَلَیْتُهُ و فد عبدالقیس على ان يحفظو االايمان والعلم ويخبروامن وراء هم وقال مالكب بن الحويرث قال لناالنبي المنالة ارجعو االى اهليكم فعلموهم ﴾ آنخضرت علی کاعبدالقیس کےلوگوں کواس بات کی ترغیب دینا کہ ایمان اورعلم کی باتیں یاد کرلیں اور جولوگ ان کے پیچھے (اپنے ملک میں) ہیں ان کوخبر کردیں اور مالک ابن حویرث نے کہا ہم سے

آ تخضرت الله نفر ما یا این گھر والوں کے پاس لوٹ جا وَان کودین کی باتیں سکھا وَ

(٨٨) حدثنامحمدبن بشار قال حدثنا غندرقال ثنا شعبة عن ابى جمرة ہم ہے محمد بن بشار ؓ نے بیان کیا، کہاہم سے غندر (مورن منر) نے بیان کیا، کہاہم سے شعبہ نے بیان کیا، انھوں نے ابوجمرہ سے قال كنت اترجم بين ابن عباس وبين الناس فقال ان وفدعبدالقيس کہامیں عبداللہ بن عباسؓ اور (ہر، نے)لوگوں کے درمیان میں مترجم تھا عبداللہ بن عباسؓ نے کہا عبدالقیس کے (بیبے ہوئے)لوگ اتوا النبيءَ الشيء فقال من الوفد؟ اومن القوم؟ قالوا ربيعة آنخضرت الله کے باس آئے آپ نے فرمایا یکس کے بھیج ہوئے لوگ ہیں؟ یا کون لوگ ہیں؟ انھوں نے کہا ہم ربیعہ والے ہیں قال مرحبابالقوم اوبالوفدغير خزاياو لاندامي قالوا انانأتيك من شقة بعيدة آ پ نے فرمایامر جبان لوگول کویان بھیج ہوئے لوگول کونیذلیل ہوئے نہ شرمندہ ہوئے وہ کہنے لگے ہم آپ کے پاس دور کاسفر کر کے آئے ہیں وبيننا وبينك هذا الحي من كفار مضر ولانستطيع ان نأتيك الافي شهر حرام اور ہارے آپ کے چیمیں مفر کے کافروں کا یقبیلہ (آڑے)اور ہم سواادب کے مہینے کے اور دنوں میں آپ کے پاس نہیں آسکتے فمرنا بامر نخبربه من ورائنا ندخل به الجنة اس لیے ہم کوایک ایسی (۱۰، بات بتلادیجئے جس کی خبر ہم اپنے بیچھے والوں کو کردیں اوراس کی وجہ سے ہم بہشت میں جا کیں فامرهم باربع ونهاهم عن اربع امرهم بالايمان بالله وحده قال پّ نے ان کو چار باتوں کا حکم کیااور چار باتوں ہے منع کیاان کو حکم کیا خدائے واحد (اکیلے خدا) پرایمان لانے کا فرمایا

وتحقيق وتشريح

تو حمة الباب كى غوض: اسال باب سے مقصود بي ثابت كرنا ہے كه (۱) سدر سكوچا ہے كہ طالب علموں كو پڑھے ہوئے سے آگے علموں كو تاكيد كرے كہ پڑھا ہما كى بار ھائىں (۲) سايا يہ كہ طالب علموں كو پڑھا ہوئے سے آگے پڑھا نوا با كار مائو ہوئے سے آگے بڑھنا چا ہے اور يا دہمى كرنا چا ہے (۳) سايا يہ كہ تبليغ قرآن كى طرح حديث كى بھى تبليغ كرنى چا ہے (۴) ساس سے تبليغ كى اہميت كى طرف اشاره كرنا مقصود ہے۔

احفظوه و اخبروه من ورائكم:اس عريمة الباب ثابت موا

ربماقال النقيروربماقال المقير:

شبه او لى: بظاہر يه معلوم ہوتا ہے كه تر دونقير اور مقير ميں ہے كيكن سيخ نہيں ہے اس وجہ سے كه بيچھے الموفت كاذكر بھى ہے اور الموفت اور المقير ايك ہى چيز ہے اس سے تكر ار لازم آئے گا۔

شبه ثانیه:بعض روایتول سے معلوم ہوتا ہے کہ تر دومقیر اور مزفت میں ہے جبکہ شعبہ کی روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ تر دو مقیر میں ہے۔

دونوں شبھات کاجواب: دونوں شبہوں کا حل ہے کہ شعبہ کو یہاں دور دولات ہیں(۱) سایک یہ کہ تین چیزوں کا ذکر کیا اور بھی ساتھ نقیر کا بھی تو صرف دبآء ، حنتم ،اور مزفت کا ذکر کیا اور بھی ساتھ نقیر کا بھی ذکر کردیا یہ پہلے جملے کا مطلب ہوا وربماقال النقیویاس تر دوکوزائل کرنے کے لیے کہا ہے کا دوسرا ترددیہ ہے کہ بھی

مزفت بولاجيسا كروايت الباب سے باور بھی اس جگه المقير ذكركيا۔

(۲۸)
﴿ باب الرحلة في المسئلة النازلة ﴾ كوئي مسئلة ويثن آيا مواس كے ليے سفر كرنا

(۸۸) حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال انا عبد الله قال انا عمر بن سعید بن هم سعید بن معاتل ابوس نے بیان کیا، کہا ہم کو عبر الله بن مبرک نے خبر دی کہا ہم کو عربی سعید بن ابھی حسین قال حدثنی عبد الله بن ابھی ملیکة عن عقبة بن الحارث انه ابوسین نے خبر دی کہا مجھ سے عبد الله بن ابو ملیہ نے بیان کیا، افعول نے عقبہ بن عارث سے سا، افعول نے توج ابنة لابی اهاب بن عزیز فاتنه امر أة فقالت انی قدار ضعت عقبة والتی تزوج بها ابواب بن عزیز فاتنه امر أة فقالت انی قدار ضعت عقبة والتی تزوج بها ابواب بن عزیز فاتنه امر أة فقالت انی قدار ضعت و لا اخبر تنی فر کب فقال لها عقبة ما اعلم انک قدار ضعتنی و لا اخبر تنی فر کب عقبہ نے کہا کہ بیں تو نہیں بھتا کرت نے بھی کو دودھ پایا ہونہ تو نے بھی بیان کیا پھر عقبہ نظر کے (اب عدی) مقبہ الله عالیہ الله عالیہ المدینة فسأله فقال و رسول الله عالیہ المدینة فسأله فقال و رسول الله عالیہ کی الله عالیہ المدینة فسأله فقال و رسول الله عالیہ کی کو (اب عدی) کو کر (اب عدی) و قد قبل ففار قها عقبة و نکحت زوجا غیرہ و قد قبل فار قها عقبة و نکحت زوجا کی درے کا کہ کر ایک کرنا کہ بیان کیا بی گئی (کر در بر بی بی م) تر عقبہ نے اس کو چھوڑ دیا اس نے دور سے نکا کہ کرنی بیات کی گئی (کر در بر بی بی م) تر عقبہ نے اس کو چھوڑ دیا اس نے دور سے نکا کہ کرنا کہ بیان کیا بیانہ کی گئی (کر در بی بی م) تر عقبہ نے اس کو چھوڑ دیا اس نے دور سے نکا کہ کرنا کہ بیانہ کی گئی (کر در بی بی م) تر عقبہ نے اس کو چھوڑ دیا اس نے دور سے نکا کہ کرنا کہ کو اس کو بیانہ کی گئی (کر در بی بی م) تر عقبہ نے اس کو چھوڑ دیا اس نے دور سے نکا کہ کرنا کہ کرنا کہ کو اس کر ان کو بیان کرنا کہ کرنا کہ کرنا کہ کرنا کہ کرنا کہ کرنا کہ کا کہ کرنا کہ کرنا کہ کہ کرنا کہ کا کہ کرنا کہ کرنا

وتحقيق وتشريح

سوال: بخاری شریف می اپر باب گررا ہے باب المحروج فی طلب العلم تواس باب سے کرارلازم آیا۔ جواب:ایک ہے عام علم حاصل کرنے کے لیے عام خروج پہلے باب کے اندراس کا بیان ہے اس باب کے

ل انظر: ۲۰۵۲، ۲۲۵۹، ۲۲۵۹، ۱۵۱۰ ۱۵۱۰

اندرکوئی خاص مسئلہ در پیش ہونے کی صورت میں خاص خروج کابیان ہے لہذا تکرار لازم نہ آیا۔ اس سے ضرورت علم حدیث بھی بیان ہوگئ اور عظمت علم بھی ثابت ہوگئ ہمارے اکابر میں مفتی اصغر حسین صاحب کا واقعہ شہور ہے کہ ایک مرتبہ رات کو لیٹے تو یہ آیت و بین میں آئی ﴿وَانَ لَیْسَ لِلْانسَانِ اِلّامَاسَعٰی اِ اور یہ کہ ہم تو ایصال تو اب کے مائل ہیں حالانکہ بیاس آیت کے خلاف ہے تو ڈرگئے کہ اگر اسی رات ہی موت آگئ تو ایک مسئلہ میں شک کرنے والا ہوکر مرجاؤں گا چنانچہ سولہ میل پر گنگوہ پنچ حضرت گنگوہ تی بھی تبجد کے لیے وضوء فرمار ہے تھے پوچھا تو فرمایا کہ یہاں سعی سے مرادسی ایمانی ہے۔

کیف و قد قیل:ای کیف تتزوجها و قدقیل انهااختک: آپ عَلَقْ نَ ایک عورت کی رضاعت کی خبر پر جدانی کرادی ۔ آ مَنگااختلاف ہوا ہے امام الگ کے جدانی کرادی ۔ آ مَنگااختلاف ہوا ہے امام المحرِّ کے نزدیک ایک عورت کی گوائی سے دام البوطنیف ی گوائی سے امام البوطنیف کے کزدیک ایک مرددو کورتوں کی گوائی سے امام البوطنیف کے کزدیک ایک مرددو کورتوں کی گوائی سے ۔ الحاصل عند المجمور تصاب شہادت جوجس کے نزدیک ہوتضاء ضروری ہے ۔

امام احمدبن حنبل كامستدل:يديديث ام احد بن طبل كامتدل بـ

جواب: یہ کہ یہ صدیت دیات پر محمول ہے تضاء پر محمول نہیں ہے نصاب قضاء کے لیے ضروری ہے تا اللہ اور الفرق بین اللہ اور الفرق بین اللہ اور الفرق بین اللہ اور فیما بینہ و بین النہ اور فیما بینہ و بین النہ اور اللہ فیما بینہ و بین اللہ الفاضی سے پہلے دیانت اوراس کے بعد قضاء ہوگی۔ آگر ساری دنیا میں مشہور ہوگیا لیکن قاضی کے پاس معامل نہیں بہو نی اتو دیانت ہے۔

الفرق بين القضاء والفتوى:

الفرق الاول:قاضی وہ ہوتا ہے جس کوامیر نے فصلِ خصومات کے لیے مقرر کررکھا ہواگر امیر مقرر نہ کرے تو وہ فتی ہوتا ہے۔

الفوق الثانی:قاضی مقدمه دائر کرنے پر فیصله کرتا ہے اور مفتی بغیر کھے کے بھی فتوی دے سکتا ہے۔ الفوق الثالث:مفتی کا فتو کی تقدیرات (برتقدیر صحت واقعہ) کی بناء پر ہوتا ہے اور قاضی کا فیصلہ تحقیق واقعہ برمحول ہوتا ہے۔

الاره ٢٥ سورة النجم آيت ٣٩ م فيض الباري جاس ١٨ ١٨

الفوق الوابع:قناء كے لئے گواه كا حاضر ہونا ضرورى ہوتا ہے اور فتوى كے لئے گواه ضرورى نہيں۔
الفوق المحامس:قاضى بھى مفتى بھى ہوسكتا ہے لئكن مفتى بھى قاضى نہيں ہوسكتا۔
الفوق المسادس:مسند قضاء پرجو فيصلہ ہوگاوہ قضاء۔اوراس سے باہروہ فتوى تو حضور عليہ ہوكو كہدونوں حيثيتيں حاصل تھيں اس ليے آ ہے اللہ بھى ديانتا فيصلہ فرماد ہے تھے اور بھى قضاء اور يہاں پرجو آ ہے اللہ نے فيصلہ فرمایہ دیانتا ہے۔

قرینه: اس پریہ ہے کہ آپ ایک ایک عورت کی گوائی بھی طلب نہیں فرمائی لہذایہ قضاء نہیں دیانت ہے۔

(۲۹)
﴿باب التناؤ ب فی العلم ﴾
علم حاصل کرنے کے لیے باری باری آنا

وتحقيق و تشريح،

تو جمة الباب كى غوض:امام بخارىٌ فرماتے بين كه اگر فرصت نه بوياكوئى عذر مانع بوتو يخصيل علم ميں بارى بھى لگالينى چاہيے بارى بارى حاصل كريں پھراكي دوسر سے سے تكراركريں۔

عوالى المدينة: دينه عمشرق كى طرف عوالى اورمغرب كى طرف كوسوافل كت بين اب توسب اطراف مدينه بى موكنين اوريملي كاسارامدينه اسمونبوى مين داخل موكيا ہے۔

قدحدث امر عظیم: یہاں پر اختصار ہے بعض روایات میں ہے کہ غسان کاباد شاہ حملہ کی تیار ہوں میں تھاہر وقت خطرہ رہتا تھا تو حضرت عرب نے بوچھا اُجآء الغسانی کیا غسانی آ گئے؟ چونکہ اس وقت بیشہرت ہورہی تھی کہ غسانی مدینہ پرچ ھائی کرنے والے ہیں اس لئے حضرت عرب گاذ ہن فور آاد ہر گیاانصاری نے جواب دیا کہ اس سے بھی براواقعہ پیش آیا ہے دوسری روایتوں میں ہے کہ آپ وہتلایا گیا کہ آنحضرت علیقہ نے اپنی از واج کوطلاق دیدی ہے حضرت عصم حضرت عرب نے آکر حضرت عصم اُنے بوچھاوہ رورہی تھیں کہ کیا آپ عیالتہ نے طلاق دیدی ہے؟ حضرت عصم حضرت عصم سے بوچھاوہ رورہی تھیں کہ کیا آپ عیالتہ نے طلاق دیدی ہے؟ حضرت عصم

نے کہا کہ طلاق کا تو پیڈ نہیں ہے البتہ ناراض ہوگئے ہیں، حضرت عمر نے فرمایا کہ ہیں تم کوئے نہیں کیا کرتا تھا کہ آ پ علی ایک کوئے نہیں کیا کروا تو جھے کہنا۔ آئے مضرت عمر ایک کوئی نہ کیا کروا ترخم کس بات پر جھر تی ہو؟ کیا نفقہ پر؟ آئندہ کی چیز کی ضرورت ہوتو جھے کہنا۔ آئے ضرت عمل ایک بھی تھے نہ کہنا پھر حضرت عمر آ پ علی ہے کے پاس آئے آپ علی ایک بالا خانہ ہیں تھ (آپ علی نے بالا خانہ میں دوبار سکونت اختیار کی ایک مرتبہ جبکہ آ پکے شخنے میں چوٹ آئی تھی اور دوسری مرتبہ جب آپ علی نے ناراض ہوکر ایلاءِ لغوی کیا اور وہ یہ ہے کہ مدت ایلاء سے کم کی شم کھائی ہواور یہائی ایلاء کا واقعہ ہے) حضرت عمر نے تین مرتبہ اجازت مائی تو اجازت می اور دوسری مرتبہ جب آپ کی اور دوسری مرتبہ جب کہ مدت ایلاء سے کم کی شم کھائی ہواور یہائی ایلاء کی دوست عمر نے تھے اور ایک دوشکیز نے پائی کے لئے ہوئے تھے جاتے ہی پوچھا کہ '' اطلقت نساء ک' کیا آپ علی نے اپنی از واج کو طلاق دیدی ہے؟ فرمایا شہیں ۔حضرت عمر نے یہن کی ایس کے کہ حفصہ " بیٹی تھی اکو طلاق پر پریشائی تھی جب معلوم ہوا کہ خوسہ " بیٹی تھی اکو طلاق پر پریشائی تھی جب معلوم ہوا کہ خوش کی دونت نعرہ تھی کی دفعہ سے بیٹی کی اکو طلاق پر پریشائی تھی جب معلوم ہوا کہ خوش کی دونہ نے البتہ خلونہ کرنا جا ہے۔

(۵۰)
﴿ باب الغضب في الموعظة و التعليم اذارأى مايكره ﴾
وعظ كنے ياپرُ هانے مين كوئى برى بات ديجھ توغمہ كرنا

(• ٩) حدثنا محمد بن کثیرقال اخبرنی سفیان عن ابن ابی خالدعن قیس بم عثم بن کثیر نیان کیا، کها خبردی جمینفیان (توری) نے، انھوں نے (اساعیل) ابو فالد کے بیئے ہے، انھوں نے تیں بن ابی حازم عن ابی مسعود الانصاری قال قال رجل یارسول الله بن ابو حازم ہے، انھوں نے ابوسعود انساری سے، انھوں نے کہا ایک شخص (در بن کت) نے عرض کیایارسول الله لا اکاد ادر کی الصلوة مما یطول بنا فلان میکل ہوگیا ہے قلاں صاحب (معاذبن جبل) نماز (بہت) لبی پڑھتے ہیں عمل وگیا ہے قلال صاحب (معاذبن جبل) نماز (بہت) لبی پڑھتے ہیں

ل انظو: ۴۳۶۸ ، ۹۱۳ ، ۴۹۱۵ ، ۴۹۱۵ ، ۲۱۸ ، ۵۸۳۳ ، ۷۲۵۷ ، ۲۲۵۷ فائده : وجادلی من الانصاد پژوی کانام تنبان بن مالک بن عمرو ہے۔

ἀἀἀἀἀἀἀἀἀἀἀἀἀάἀά

(1 ٩) حدثنا عبدالله بن محملقال حدثنا ابو عامر العقدى قال ثناسليمان بن بلال المديني ہم سے بیان کیاعبداللہ بن محدّ نے ،کہا ہم سے بیان کیا ابوعام عقدیؒ نے ،کہا ہم سے بیان کیاسلیمان بن بلال مدیجؓ نے عن ربيعة بن ابي عبدالرحمن عن يزيد مولى المنبعث عن زيد بن خالدالجهني انھوں نے ربیعہ بن ابوعبدالرحمٰن سے، انھوں نے بزید سے جومنعث کے غلام تھے، انھوں نے زید بن خالد جہی سے ان النبي عَلَيْسِهُ سأله رجل عن اللقطة فقال اعرف وكاء هااوقال وعاء ها وعفاصها كة تخضرت الله عنايك فخص ومراه ل بده) في يزى وكى جيز ي متعلق يوجها وآپ فرملاك ال ك بندهن ياظرف اوال كي تعلى يجيل كه ثم عرفها سنة ثم استمتع بها فان جآء ربها فادها اليه پھرا یک برس تک لوگوں ہے یو چھتارہ پھراپنے کام میں لا پھراگر (ایک ان سے بدہی)اس کا مالک آ جائے تو اس کوا دا کر قال فضآلة الابل فغضب حتى احمرت وجنتاه اوقال احمر وجهه فقال ال نے کہا گم شدہ اون اگر ملے؟ بینکرآ یا تناغصہ وئے کہ آی کے داوں کال سرخہ و گئے یا آی کامند سرخہ و گیا آ یا نے فرمایا مالك ولها معها سقاؤها وحذاؤها ترد الماء وترعى الشجر تخفے اونٹ سے کیاواسطہ وہ تو اپنی مشک اورا پنا موزہ ساتھ ر کھتا ہے وہ خود یانی پر جاکر یانی پی لیتا ہے اور درخت کے پیتا ہے لیتا ہے فذرها حتى يلقاها ربها قال فضالة الغنم؟قال لك اولاحيك اوللذئب ال كعيمُ ولد بنوے وجب تك الكالك آئال في كما كم الله مجرى؟ آپ في مايلة ويران مسبياتير يولان كالاس كالدى كان مسبيا بحير بيكا

(٩٢) حدثنا محمدبن العلاء قال ثنا ابواسامة عن بريد عن ابي بردة عن ہم سے محد ابن علاءً نے بیان کیا، کہا ہم سے ابواسا میٹ نے بیان کیا، انھوں نے بریڈ سے، انھوں نے ابو بردہ سے، انھوں ابى موسىٰ قال سئل النبى عَلَيْكُ عن اشياء كرههافلما اكثرعليه نے ابور وی اشعری سے کہا کہ لوگوں نے آنخضرت اللہ سے ایس با تنس پوچیس کہ آپ کوبرامعلیم ہواجب بہت زیادہ سوالات کئے غضب ثم قال للناس سلوني عماشئتم فقال رجل من ابي؟ توآب كوغصه آسكياآب فرمايا: (جريروي يه)اب جوچا مولوچية جاؤاليك شخص (مراشان مذاف) في وچها كدميرابات كون ب؟ قال ابوك حذافة فقام آخر فقال من ابى يارسول الله ؟قال فر مایا تیراباپ حذافہ ہے پھر دوسرا کھڑ اہوا (سعد بن سالم) کہنے لگایارسول اللہ میراباپ کون ہے؟ آپ عالیہ نے فرمایا ابوك سالم مولىٰ شيبة فلما رأى عمرما في وجهه قال يارسول الله : تیراباب سالم ہے شیبہ کاغلام جب حضرت عرض نے آ سے اللہ کے چرومبارک کے عصر کود یکھاتو کہنے گلے ہم یارسول الله، انا نتوب الى الله عزوجل. ي الله عز وجل کی بارگاہ میں تو پہرے ہیں۔

﴿تحقيق و تشريح﴾

مطابقة الحديث للترجمة:في قوله ((في موعظة اشدغضبامن يومئذ))

ترجمة الباب كى غوض: غرض باب ين كَلْ تقريري كى كُل بين ـ

تقريرِ اول: معندالبعض قضاء اورتعليم كافرق بيان كرنامقصود بآب عليه سي صحديث مروى ب ((لايقضى القاضى و هو غضبان)) يهال تك لكها ب كرجس ك خلاف فيصله بهوا بها كروه ثابت كرد ب كه حالت غضب ميس بهوا بي القاضى و هو غضبان) يهال تك لكها ب كرجس ك خلاف فيصله بهوا بها كروه ثابت كرد ب كه حالت غضب ميس بهى بوسكتى بهوا بي القاضى الماتة حالت غضب ميس بهى بوسكتى بهوا بي المات بي المات على المات على المات بي المات بي المات المات بي ال

تقريرِ ثانى:سيبيان كرنامقعود بكرواعظ يامعلم الركوئي ناپنديده حركت ويكهاتواس برغصه كااظهار كرسكتا به اوردانت سكتاب ع

تقریرِ قالت:مقصود ہے کہ پڑھنے والوں کو یا وعظ سننے والوں کو ایس باتوں سے پر ہیز کرنا چا ہے جس سے واعظ اور معلم کوغضب ہو۔

تقرير رابع:امام بخاري ايك اصول مين تخفيص كرناچا بيتے ہيں اصول يہ ہے كەتعلىم وقار ،اطمينان اور بثاشت كے ساتھ ہونى چاہيے۔نه كەغصەكى حالت ميں امام بخارى اس باب كوقائم كركے ثابت كرناچا ہتے ہيں كه اگر ضرورت پيش آئے تو حالت غضب ميں بھى وعظ اور تعليم كرسكتے ہيں۔

الشد غضباً:ا شکال: ناراضگی اس بات پر ہوئی کہ ایک شخص نے آکر شکایت کی کہ میں جماعت کے ساتھ نماز نہیں پڑھ سکتا کیونکہ امام لمبی نماز پڑھا تا ہے بظاہر علت ومعلول میں ربط معلوم نہیں ہوتا کیونکہ لمبی نماز ہوتو ڈھیلا آ دمی بھی شریک ہوسکتا ہے؟

جواب: " لا اکاداُدرک الصلو اقامطلب بیہ کہ میں اتن کمی نماز جماعت کے ساتھ نہیں پڑھ سکتا تھل نہ ہونے کی مجدے چھوڑ ویتا ہوں۔ کیونکہ میں کام کاح کرنے والا ہوں، کام کرتے کرتے تھک جاتا ہوں اور اتن طویل قرائت برداشت نہیں ہوتی سے

یطول بنافلان: البعض کہتے ہیں کہ حضرت معالاً تصل اور بعض کہتے ہیں کہ حضرت ابی بن کعب تصروایات میں دونوں کاذکر ہے لیکن بہاں کون مراد ہیں اس کے لیے علماء نے ایک ضابط لکھا ہے اگر مخرب کی نماز ہوتو حضرت معاد متعین ہیں اورا گر فجر کی نماز ہوتو حضرت ابی بن کعب تعین ہیں اگر نماز متعین نہیں تو پھر کہد دیجئے کہ یہ بھی متعین نہیں کہ حضرت معاد تصے یا حضرت الی بن کعب ا

فليخفف:غير مقلد كے نماز ميں ملنے كا واقعہ مظاہر حق شرح مشكوۃ كے پرانے چھائے ميں يائے معروف كويائے مجبول كى صورت ميں كھا ہواتھا" ہلكی" پڑھے كو يوں كھا ہواتھا" ہلكے" پڑھے توايك غير مقلد نے ويكھى اوروہ" ہلكی" كامعنی مجھا گرہ" حركت كركے" پڑھے ، تو وہ جب بھی نماز كے لئے كھڑا ہوتا تو خوب بال بال كرنماز پڑھتا لوگوں نے بوچھا كہ نماز ميں استے كيوں ہلتے اور حركت كرتے ہواس نے كہا كہ حديث ميں آيا ہے۔ بوچھا كس حديث ميں آيا ہے۔ بوچھا كس حديث ميں آيا ہے۔ بوچھا كس حديث ميں آيا ہے۔ بوچھا ك

ا عمدة القارى ج عص ١٠٥ ع الينا . ٣ درس بخارى ص ٣٤٩

دوسزاواقعه: ایک غیرمقلد لا صلوة الابحضورالقلب کمعن کلب کر کے جب بھی نماز کے لیے کھڑا ہوتا کتا پاس بندھ لیتا کہ صدیث میں آیا ہے کہ کتے کی موجودگی کے بغیر نماز نہیں ہوتی تو کسی نے کہا، کہال کھا ہے؟اس نے یہی صدیث سائی اور "قلب" کو کلب "بڑھا اور ترجمہ "کا" سمجھ لیا۔

حدثنا عبدالله بن محمد: عن اللقطه الري بوئي چيز كو جبكوئي اشالي و اس لقط كت بين اورا شاف سي بهلي سقط كت بين اورا شاف سي بهلي سقط كت بين اب جب الحالياتو لقط والله الكوبو كة اكر دوباره و بين بهينك دياتو آپ لقط كا حكام كا مخرف بوگة -

مسائل لقطه:لقط كمتعلق دومسك بين التعريف ٢-استمتاع

مسئلہ تعریف:یعنی لقط کی تعریف کرنے اور مشہوری کرنے کا تھم ہے ا۔ اگر قیمتی چیز ہوتو سال بحر مشہوری کرنے کا تھم ہے مسجدوں میں اور چوکوں میں اعلان کرو آ جکل کے لحاظ سے اخبار میں دو کیونکہ ہوسکتا ہے کہ کسی تاجر کا ہوا دروہ عام طور پر سال میں ایک مرتبہ ایک علاقے کا چکرلگاتے ہیں ۲۔ اگر کوئی معمولی چیز ہو تججور و نمیرہ جس کو گم پانے والا اس کی تلاش نہیں کرتا تو اس کو استعمال کر لینا چاہیے تعریف ضروری نہیں سے اگر متوسط ہے تو لاقط کا اجتہاد ہے ہفتہ ہو، مہینہ ہو، قیمتی چیز کے لیے آخری مدت سال ہے سے ایک چیز قیمتی ہے مگرضا کے ہوجانے کا خطرہ ہوتو ات کا خطرہ ہوتو ات کی اور سے ہوتو اس کو استعمال کر این جب تک ضائع ہونے کا خطرہ نہ ہواگر ضائع ہونے کا خطرہ ہوتو تقسیم کردیں۔

و اقعه: امام اعظم کا قصد مشهور ہے فرماتے ہیں کہ مجھے کسی نے بھی دھوکنہیں دیا مگرایک بڑھیانے۔ایک مرتبہ میں جار ہاتھا کہ رائے پر چادر پڑی ہوئی تھی اور بڑھیا اشارہ کررہی تھی میں سمجھا کہ کہدری ہے اُٹھا کرویدو میں نے اُٹھایا تواس نے فوراً کہالقطہ ہے، میں پھنس گیا۔

مسئله استمتاع: المام شافعی کے نزدیک استمتاع جائزے لاقط (اٹھانے والا) فقیرہویاغی امام اعظم ا فرماتے ہیں فقیر ہوتو خوداستعال کر سے غنی ہوتو کسی فقیر کودید لیکن لفطہ دونوں صورتوں میں مضمون ہوگالیمنی مالک کے ملنے پراگردہ مطالبہ کرتا ہے تو ضمان اداکر ناہوگا۔البتہ اگر مالک نہ لینے پر داضی ہوجائے تو فقیر پرتاوان نہیں ہے اوراگر غنی نے تقسیم کردیا ہوتو اتناصد قہ کرنے کا دونوں کوثواب ملے گا اگر راضی نہوا تو صرف لاقط کوثواب ملے گا۔

و كآء: ... و كآءً ال دهائ يارى كوكت بي جس كى برتن كامنه باندها جاتا ہـ

وكاء:في عمدةالقارى: وكاء بكسرالواووبالمد هوالذى تشدبه رأس الصرة والكيس ونحوهما ويقال هو الخيط الذي يشدبه الوعاء

وعاء:بكسرالواو وهوالظرف ويجوزضمهال

ا (عدة القاري ج الس ١٠٩)

الخيرالساري (٢٢٩) عفاصها:اس کے بارے میں دوتول ہیں۔(۱)اگر تھلی کیڑے کی ہے تو عفاص کہیں گے اورا گر دھات کی ہے تو وعاء کہیں گے۔ (۲) قال البعض عفا ٓ ءے مرادوہ کپڑا ہے جومنہ کے اوپر دے کراوپر سے دھا گاباندھا جاتا ہے۔ سقآء هاو حذاؤها:ائي مثك اورموزه ساته ركمتا بـ آنخفرت الله كاخشاء يرتما كداون ك ليً کسی چیز کاخوف نہیں کھانے پینے میں وہ اس کامختاج نہیں کہ کوئی پہنچائے تو کھانی سکے ور نہیں بلکہ وہ خودہی کھائی سکتاہے۔ حذاء یعنی اس کے جوتے اس کے ساتھ ہیں یعنی اسے جوتوں کی ضرورت نہیں بلکہ اس کے یاؤں ہی اسکے جوتے ہیں۔

فافله:ليكن يةغيراحوال كےمسائل ميں ہے ہے كه بياونٹ لقطة بيس ہے كيونكم آجكل تو كئي اونٹ يارا تو ارات مضم موجاتے ہیں وہ زماندامانت کا تھا۔

للذئب: اشاره فرمايا كرضياع كاحمال باس لئحفاظت كرنى جايي

فلما اكثر عليه غضب: يسوالات علم دين كم تعلق نبيس تقے مسائل نبيس يتے اصل ميں لوگوں نے کشف کونی کے متعلق غیرمتعلقہ سوالات کرنا شروع کردیے ،ایک بوچھتا ہے میراباپ کون ہے؟اس ہے معلوم ہوا کہ غیر متعلقہ سوالات پر استاذ کوناراض ہونے کاحق حاصل ہے۔کشف کونی انبیاء کوبھی ہوتا ہے اور اولیاء کوبھی ،گر دائما نہیں ہوتا اس لئے علم غیب ٹابت نہیں ہوسکتا جیسے حضرت یعقوب علیہ السلام کا قصہ ہے کسی نے کہا کہ حضرت یوسف عليه السلام جب قريب ہى كنويں ميں ڈالے محے تصور ديمانہيں اور كنعان سے قيص كى خوشبوسونگھ لى تو فرمايا جارى مثال توایسے ہے کہ بلی چمکی اُ جالا ہوا پھرختم ہوگئ۔

گہے بر طارم اعلیٰ نشینم 🕲 گہے بر پشت پائے خود نبینم یا

کشف کونی کمالات میں سے نہیں ہالبتہ کشف علمی کمالات میں سے ہم سب علمی کمالات سے عاری بين وري خانه بهدة فتاب الدهيقى علم سے سب عارى بين مثل الغيبة الله من الزناتو كياتم اس سے الى نفرت کرتے ہوجیسی زنا ہے کرتے ہو پھرزنا پرحد ہے اورغیبت پر پچھنیں تو اشد کیسے ہوا؟ جاتی امداد اللہ صاحبٌ جن کواللہ نے حقیقی علم دیا تھا فرمایا زنا باہی گناہ ہے اورغیبت جاہی گناہ ہے، باہی گناہ تو بیاری میں ختم ہو جائیگا اس لیے کہ خواہش · نبیں رہتی جبکہ جاہی گناہ جیسے غیبت تو قبر میں ٹائلیں ہوں پھر بھی نبیں جاتا۔

ل سقاؤها بكسرالسين هواللبن والماء والجمع القليل السقية والكثيراساقي كماان الرطب للبن خاصة والنحي والقربة للماء :حذاء ها:بكسرالحاء المهملة وبالمدوطيء عليه البعيرمن خفه والفرس من حافره والحذاء النعل ايضا 🕝 فضالة الابل ك تشرحَ میں درس بخاری میں کنھاہے گمشدہ اونٹ اگر کیلے بین کرآ پیا کیٹھ اسٹے غصے ہوئے کہآ پیا کیٹھ کے دونوں کال(دخسار) بیرخ ہو گئے یعنی اگر ادنٹ جنگل میں نچرتا نواورکوئی کچز کرلائے تو ؟اس پرآ ہے ملط کے کوفسہ آ عمیا کیونکہ بے مجھی کاسوال تھا یہ اس وقت اوراس زیانے کی بات تھی ورنہ آ جکل فقہا ، کہتے میں کہاں کوبھی پکز کراائے کیونکہ ضیاع کا حمال توی ہے۔ سے گلستان سعدی ص

حب جاہ کی طلب: جاہ کے معند نفسہ) کیا آپائے کام خود کیا کہ حدیث شریف میں آپائے (کان رسول الله علیہ اللہ علیہ کے مولوی اللہ علیہ کے مولوی اللہ علیہ کیا تھا ہے اپنا کام خود کیا کرتے ہیں؟ آجکل کے مولوی صاحب اپنا کام خود کرنے میں حقارت بیجتے ہیں اپنا سودا خوداُ ٹھانے میں عار محسوس کرتے ہیں ہمارے ہزے خدمت خلق کرتے تھا بنا کام کرنے سے بھی جی کتر انا عار محسوس کرنا میں ماید دارا نہذہ بن ہے درویشا نہذہ بن نہیں ہے سرمایہ دارا نہذہ بن ہے کہ کس سے اپنا کام کروار ہاہے دوسرے کاکوئی خیال نہیں کہ وہ کس حال میں ہے اس کا جی جاہ بھی رہائے یا نہیں وہ اندراندرکڑ ھرہاہے مگر میر کام لئے جارہاہے مفتی اصغر سین صاحب سارے بستی والے ضرورت مندوں کا سوداسلف شہر سے اُٹھا کرلایا کرتے تھے کمر ہو جھا ٹھانے کی وجہ سے ٹیڑھی ہو چکی ہوتی۔

(41)

﴿باب من برك على ركبتيه عندالامام والمحدث ﴾ امام يامحدث كسيفنا

(۹۳) حدثنا ابو الیمان قال اناشعیب عن الزهری قال اخبرنی انس بن مالک می سے ابو یمان نے بیان کیا، کہا ہم کوشعیب نے خردی، انھوں نے زہری ہے، کہا جھکوانس بن مالک نے خردی انھوں نے زہری ہے، کہا جھکوانس بن مالک نے خردی ان رسول الله علیہ خرج فقام عبدالله بن حذافة فقال من ابی ؟قالی کم آخضرت الله علیہ بر آمدہوئ تو عبدالله بن حذافة فقال من ابی ؟قالی ابوک حذافة ثم اکثران یقول سلونی فبرک عمر علی رکبتیه فقال ابوک حذافة ثم اکثران یقول سلونی فبرک عمر علی رکبتیه فقال تیراباپ حذاف ہے پھر بار بار فرمانے گے پوچھوا آخر حضرت عراد میں دوزانو ہو بیٹے اور کہنے گے رضینا بالله ربا و بالاسلام دینا و بمحمد عالیہ نبیاً ثلثا فسکت رضینا بالله ربا و بالاسلام دینا و بمحمد عالیہ نبیاً ثلثا فسکت بماللہ کو بین ہونے ساور حضرت خوش بین بین بار یہاں و ت آپ پی ہور ب

ه تحقیق و تشریح 🖟

مطا بقة الحديث للترجمة ظاهرة.

ہوکر بیٹھنا چاہیے چارزانوں ہوکر بیٹھنا ادب کے خلاف ہے۔

سوال:روايت الباب على وكروك وكبتين عندالامام ثابت بواعدالحد ثاتونهوا؟

جواب اول: جب عندالا مام ثابت موكيا توقياساً عندالمحدث بحى ثابت موكيا_

جواب ثانى:اى مديث يدونول اصالاً ثابت بيل كيونكه حضور علي كي ثان امام كي بهي ماور مدت كي بهي _

(44)

﴿ باب من اعاد الحديث ثلثًاليفهم فقال النبي عَلَيْكُ اللهُ وقول الزور فماز ال يكورها وقال ابن عمر قال النبي عَلَيْكُ هل بلغت ثلثا ﴾ الزور فماز ال يكررها وقال ابن عمر قال النبي عَلَيْكُ هل بلغت ثلثا ﴾ ايك بات خوب مجمان كي لين تين باركها المخضرت الله في المناه والمناه وال

(۹۳) حدثنا عبدة قال ثنا عبدالصمدقال ثنا عبدالله بن المثنى قال ثنا ثمامة ثم عورة في بيان كياء كهام عورة في بيان كياء كهام عورة في بيان كياء كهام عن النبى عَلَيْ الله الله كان اذا تكلم بكلمة ابن عبدالله بن انس عن انس عن النبى عَلَيْ الله انه كان اذا تكلم بكلمة ابن عبدالله بن انس عن انس عن النبى عَلَيْ الله الله كان اذا تكلم بكلمة ابن عبدالله بن انس عن انس عن انس عن النبى عَلَيْ الله على الله الله الله الله بن الله بن الله بكلمة ابن عبدالله بن الله بكلمة الله بكلمة الله بن الله بكلمة الله بن الله بكلمة الله بن الله بكلمة الله بن الله بكلمة الله بكلمة على قوم فسلم عليهم شلال الله به بن الله بن

وتحقيق وتشريح

توجمة الباب كى غوض اول:امام بخاريٌ كامقعوداس باب سے يہ بيان كرنا ہے كہ وہ مسئلہ جس كے تجمعنے كے ليے تكرار كى ضرورت ہو تكرار كر لينا جا ہے۔

غوض ثانی:دوسراییکهایک حدیث کی توجیه مقصود به حدیث میں به ((اذا تکلم بکلمة اعادهاللنا))
ام بخاری یہ مجھانا چا ہتے ہیں کہ ضرورت پرمحول بے ور نہ تو تکلم بی ضروری تہیں اشارے ہے بھی تعلیم ہو عتی ہے امام
بخاری نے ترجمہ کے اندر لیفھم کی قیدلگا کراس کو سمجھادیا۔ تکرار بھی تو مشکل امر سمجھانے کے لیے ہوتا ہے اور بھی نہ سنا
ہوتو سنانے کے لیے ہوتا ہے جیسے ویل للاعقاب من المنارتین مرتبہ آ وازلگوائی اور بھی بات کی اہمیت کی وجہ سے
ہوتا ہے جیسے الاوقول المؤود کو آپ علی ہے نہیں مرتبہ دہرایا۔ بعض روایات میں ہے کہ آپ اللہ نے نہ ان بار دہرایا کہ ہم کہنے گئے لیندہ سکت.

سلم عليهم ثلثا: سوال: ان كلمات عليهم ثلثا: سوال

جو اب اول:بک وقت تین سلام نہیں ہیں بلکہ تین وقتوں پر محمول ہیں ا۔ ایک سلام استیذ ان ہے جوعندالدخول ہوتا ہے ۲۔ اس کے بعد سلام تحیہ ہے ۳۔ لوٹتے وقت سلام وداع ہے۔

جو اب ثانی: بمجمع کثیر برمحول ہے کہ جب سی مجلس میں جاتے تھے تو شروع میں سلام کرتے پھر در میان میں پھر انتہاء میں۔ پھر انتہاء میں۔

جواب ثالث: سیاتین طرفوں پرمحول ہے برطرف ایک سلام۔

جواب رابع: يتنول سلام استيذان موت تفك تين مرتباً پ علي فرمات السلام عليم الدحل اس كي بعد بهي جواب نه آتا تولوث آت_

(۲۳)
﴿باب تعليم الرجل امته و اهله ﴾
اپن لونڈی اور گھر والوں کو (دین کاعلم) سکھانا

وتحقيق وتشريح

تو جمة الباب كى غوض:اس باب سے مقصود امام بخارى كايہ ہے كة عليم كومردول كے ساتھ ہى خاص نہيں كرنا جا ہے بلك المروالول ،عورتول اور بانديول كو بھى سكھلانا جا ہے۔

فاحسن تاديبها:ان الفاظ عديث الباب ورجمة الباب كساتهم طابقت مد

سوال:روایت الباب میں باندی کی تعلیم کا تو ذکر ہے کیکن گھر والوں کی تعلیم کا ذکر نہیں؟ .

جواب: ...قیاساًعلی الامة یکی ثابت ہے۔ ا

دواهم بحثين

البحث الاول:ابل كتاب مراد صرف نفرانى بين يا يهودى بهى بين العض حفرات كتم بين كمرف نفرانى مراد بين -

دليل اول: بعض روايتول مين امن بعيسى كالفاظ مين ـ

جواب: يصرف مثال كطور يرب، احرّ از مقصود نيين بـ

دلیلِ ثانی: یہودی اس لئے مراز ہیں کہ جب عیسیٰ علیہ السلام مبعوث ہوئے توعیسیٰ علیہ السلام کا انکار کرنے کی وجہ سے وہ امن بنبیہ بھی ندر ہے تو یہ یہود آپ اللہ پر ایمان لائے لیکن عیسیٰ علیہ السلام پر ایمان نہ لائے ۔عیسیٰ علیہ السلام بنی اسرائیل کے رسول ہیں۔

جواب: سسستے تحصیص قرآن پاک کے خلاف ہے کیونکہ بیآیت ﴿ اُولَیْکَ یُوْتُونَ اَجُوهُمُ مَّوْتَیُنِ ﴾ آیہ نازل ہی عبداللہ بن سلامؓ کے بارے میں ہوئی جو یہودی تھے۔ تمام فسرین اس بات پر تفق ہیں کہ قرآن پاک کی اس آیت مبارکہ میں دونوں مراد ہیں۔

ا شکال:عقل اور بعض روایتوں سے معلوم ہوتا ہے کتخصیص ہے جبکہ قرآن پاک کی آیت کہتی ہے کہ عام ہے؟ جو اب: اس اشکال کا جواب بیجھنے سے پہلے ایک تمہید ضروری ہے۔

تمھید: سالدتعالی جب سی نبی کومبعوث فرماتے ہیں تومن وجہ بعثت عامہ ہوتی ہے اور من وجہ بعثت خاصہ ہوتی ہے یعنی تو حیدور سالت کے لحاظ ہے بعثت عامہ ہوتی ہے کیکن شرائع کے لحاظ سے خاصہ ہوتی ہے۔ من کل الوجوہ بعثت عامہ آ کی خصوصیت ہے اس لیے نبی کا شرائع کی دعوت دینا اس قوم کوجس کی طرف مبعوث ہوا ہے ان میں سے جنکو پہنچے گی وہ اگر رد کریں گے تو کا فرقر اردیئے جائیں گے لیکن جن کو دعوت نہیں پہنچے گی اگر چہ ان کی طرف بھی مبعوث ہیں ان کو اس نبی کا منکر قر ارز ہیں دیا جائیگا۔

ا عددة الفارى ج ٢ ص ١١٨ ٢ إب: ٢٠ س: القصص: ايذ: ٥٣

اب جھ لیجینے کہ موسیٰ علیہ السلام بنی اسرائیل کی طرف مبعوث ہوئے، پھر عیسیٰ علیہ السلام مبعوث ہوئے۔
عیسیٰ علیہ السلام کی بعثت سے پہلے بچھ بنی اسرائیلی مدینہ منورہ آگئے تھے بعد میں عیسیٰ علیہ السلام مبعوث ہوئے، کین
ان کو دعوت نہیں پنجی لہذا یہ منکر نہیں کہلا کیں گے، انہوں نے تو ردہی نہیں کیا اس لیے کہ ردتو دعوت کی فرع ہے کیونکہ
عیسیٰ علیہ السلام کا اپنجی مدینہ تک نہیں چہنچنے پایا تھا کہ راستہ میں انقال ہوگیا لہذا عبداللہ بن سلام کے پاس دعوت ہی
نہیں پہنجی تو وہ عیسیٰ علیہ السلام پر بھی ایمان لانے کا مصداق بن گئے البذاوہ یہود جنہوں نے مارنے کا ادادہ کیاوہ ان
میں داخل نہیں ہونگے۔

البحث الثاني:انهى دومملول كا دوبرااجرب يابرعمل كادوبرااجرب اگرانهى دومملول كا دوبرااجرب؟ تواس صورت مين ان كي خصوصيت كيابوكى ؟ كيونكه برايك كوان دومملول پردواجر ملته بين -

ا بعض نے کہا ہے کہ ہم کمل پردواجر لیس کے ۱۔ انہی کادوہرااجر ملے گا یہ مطلب نہیں کھل دوہیں اس لیے دواجر ملیس کے اس لیے کہ اعمال دوشم پرہوتے ہیں۔ ایک وہ عمل جس میں کوئی مزاحمت نہیں ہوتی، رکاوٹ نہیں ہوتی، اس پرایک اجرماتا ہے۔ دوسری قتم وہ اعمال ہیں جو باوجود رکاوٹ کے کئے جا کمیں، ایسے اعمال پر دوہرااجرماتا ہوادران بینوں اعمال میں مزاحمت موجود ہاں لیے کہ اپنے عقیدے کوچھوڑ تا آسان بات نہیں ہے مزاحمت موجود دہونے کے باوجود آپ الیان کی شرحت موجود ہم الجرملی گا جبکہ وہ نبی بھی برحق ہیں لیکن اب ان کی شریعت منسوخ ہوچکی ہے ای طرح وہ غلام جومولائے حقیقی اور مولائے مجازی دونوں کی خدمت کرتا ہے تو اس کو بھی دوہرا اجربے۔ اس طرح لونڈی کو بیوی بنانا کوئی پسند نہیں کرتا لیکن سے تعلیم دے کرآ زاد کرکے بیوی بنا کر مساوی حقوق دیتا ہے تو دوہرا اجربے ملے گا البتہ فرضی مزاحمت معتبر نہیں کرتا لیکن سے تعلیم دے کرآ زاد کرکے بیوی بنا کرونگ ہونکہ دوکان چلا تا اور الل اجربے کیا نا شارع سے داجب نہیں ہے۔

بغیرشئی:معاوضہ لینے کے لیے ہیں بلکہ بے قدری سے بچانے کے لیے کہا۔

ا ممكن عيس سيالها من الشيخ وارى مدينطيب يحي يصبح بول اوراتهول نه تقد الى كا بو: ورس بخارى ص ٣٩٠ مسائل مستسطد (١) فيه بيان ماكان السلف عليه من الرحلة الى البلدان البعيدة في حديث و احداومستلة و احدة (٢) قال ابن بطال وفيه اثبات فضل المدينة و انهامعدن العلم واليهاكان يرحل في طلب العلم وتقصدفي اقتباسه

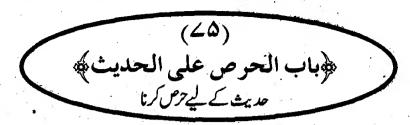
(4°) باب عظة الامام النسآء وتعليمهن امًام کاعورتوں کونفیحت کرنااوران کو(دین کی) باتیں سکھانا

(٩٤)حلثنا سليمان بن حرب قال ثنا شعبة عن ايوب قال سمعت عطاء بن ابي رباح ا سے سلیمان بن حرب نے بیان کیا، کہا ہم سے شعبہ نے بیان کیا، انھوں نے ابوب سے، کہامیں نے عطاء بن ابور باح سے سا قا ل سمعت ابن عباس قا ل اشهد على النبي مَلَيْكُ اوقال عطاء اشهد کہامیں نے ابن عباس سے سا، انھوں نے کہامیں استخضرت اللہ برگواہی دیتا ہوں یاعطاء نے کہامیں علی ابن عباس ان النبی الشهرخرج ه ومعه بلال فظن این عباس پر گواہی دیتا ہوں (مان مند ب) کمآنخضرت اللہ (مروں کا سے) نگلے اور آپ کے ساتھ بلال تھے، آپ کوخیال ہوا کہ لم يسمع النساء فوعظهن وامرهن بالصدقة فجعلت المرأة تلقى القرط وو عورتول تک میری آ وازنبیں پینچی پھر آ پ نے عورتول کو ضیحت کی اوران کو خیرات کرنے کا حکم دیا کوئی عورت اپنی ہالی چین کئے لگی کوئی لخاتم وبلال يأخذ في طرف ثوبه وقلل اسماعيل عن ايوب انگوشی اور بلال نے اپنے کپڑے کے کونے میں (یفرن) لینا شروع کی اس حدیث کواساعیل بن عتبہؓ نے ایوبؓ ہے روایت کیا ميرالله النبي عَل^{وسيله} علي ابن قال اشهد عباس عطاء وں نے عطاء سے کہ ابن عباس ؓ نے بوں کہا کہ میں آنخضرت اللّٰہ پر گواہی دیتا ہوں (اس میں شک نہیں ہے)

المحقيق وتشريح

توجمة الباب كى غوض: مقصوديه بي كورتول مين تعليم كانتظام مونا جائي كيونكه بيه بهت ضروري بـــــ اشھد: بدلفظ تاكيداوروثوق كے ليے ہورندروايت كے ليے ضروري نہيں ہے۔ وقال اسماعيل:اشهدعلى النبي عَلَيْكُيعنى بِهلى روايت مين شك تفاكرس كامقوله باوريهان (تعلیق میں)جزم ہے۔

ل بضم انقاف وسكون الراء مايعلق في شحمة الاذن وقال ابن دريدكل مافي شحمة الاذن فهوقرط سواء كان من ذهب اوغيره 🕹 - انظر: ٨٦٣ . عن ابني بكرين ابي شبية و النساني في الصلوة وفي العلم.



وتحقيق وتشريح

مطابقة المحديث للترجمة في قوله ((لمارأيت من حرصك على المحديث)) ترجمة المباب كي غرض: مديث كاعلم عاصل كرن ك ليه آدى كوريص بونا چاهي كونكه كون سيعلوم من علم مديث سب سافضل باورانتها كي مهم بالثان ب- عيلوم من علم مديث سب سوال: كين وال جب حضرت ابوهرية مين اور مديث بحى ويى بيان كررب مين توقيل عار مسول المله: سوال: كين وال جب حضرت ابوهرية مين اور مديث بحى ويى بيان كررب مين توقيل

كى بجائے قلت كهنا جا سيتها؟

جواب اول: بعض شخول میں قُلُتُ ہے رادی کو یہاں استحضار نہ ہواتو قبل کہدیا۔

جوابِ ثانی: توا ضعاً چھپارے ہیں الیکن کہاں چھپی رہتی ہے؟

ظننت یااباهریرة: مصور علیه نفر مایا میں جانتا تھا کہ تجھ سے پہلے کوئی بات مجھ سے نہیں یو چھے گااس سے معلوم ہوا کہ استاد کوا سے سوالات پرجو کہ علمی اور نافع ہوں خوش ہونا چاہیے البتہ بے فائدہ نہ ہوں جیسے پہلے گزرا کہ آ ہوا گئے نہوں جیسے پہلے گزرا کہ آ ہے البتہ نے آخر غصہ میں فرمایا سلونی۔

خالصامن قلبه:جس میں نفاق، شرک اور گناموں کی ملاوث نہ ہو۔

اسعدالناس:اس سے معلوم ہوا کہ حضور علیہ کی شفاعت سے کلمہ پڑھنے والوں اور نہ پڑھنے والوں دونوں کو نفع ہنچے گا۔

> . سوال: وه نفع كيا ہے؟

جواب اول: شفاعت دوسم پرہے اے شفاعت کبری حساب کتاب شروع کروانے کے لیے،اسکا نفع مسلم غیر مسلم سب کو پنچ گا۔ ۲۔ شفاعت ِصغری بیصرف لاالله الاالله کہنے والوں کے لئے ہے۔

جواب ثانی: شقاعت دوشم پر ہے ا۔ شفاعت منجیة من النار ۲۔ شفاعة محففة للعذاب پہلی مسلمانوں کے لئے۔ مسلمانوں کے لئے۔

یساری تقریراں وقت ہے کہ اسعد میں تفضیل کے معنی باقی رکھے جائیں اور کبھی ایسے بھی ہوتا ہے کہ تفضیل کے معنی سے خالی کرلیا جاتا ہے تو پھر اسعد بمعنی سعید ہوگا اب کفار کے لئے فائدہ ثابت نہیں ہوگا۔

اسعدبمعنی سعیدپر اعتر اضات: دوسری تفییر کی بناء پراس مدیث پردواعتر اض وارد ہوتے ہیں اعتر اض اول:اس مدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ ہرکلمہ گو کے لیے شفاعت ہے جبکہ ایک دوسری مدیث ((شفاعتی لاهل الکبائر من امتی)) اس میں تخصیص ہے۔ حدیث الباب میں تعیم ہے تو تعارض ہوا۔

جواب:شفاعت دوسم پرہا کی دوزخ ہے نکالنے والی بیتو صرف اہل کبائر کے لئے ہے اور دوسری سم شفاعت درجات کو بلند کرنے والی بیان ہے اور صدیث درجات کو بلند کرنے والی بیائل جنت کے لئے ہے تو حدیثِ باب کے اندر شفاعت کی ایک سم کا بیان ہے۔ مذکور فی الاعتراض میں شفاعت کی دوسری سم کا بیان ہے۔

اعتواضِ ثانی: بخاری شریف میں ایک اورروایت ہے کہ انبیاء وصلحاء کی شفاعت کر لینے کے بعد اللہ تعالی تین قضجھنم سے خود نکالیں گے اور فرما کیں گے کہ ان کومیں خود ہی جانتا تھا اس سے معلوم ہوا کہ اِن لوگوں کوآ کی شفاعت نہیں

بنچ گی اور یکلم گوہیں تو حدیث باب کے معارض ہوئی۔

جو اب:علامه کرمانی فرماتے ہیں کہ شفاعت کی گی انواع ہیں اور تمام انواع ثابت ہیں۔

ا شفاعت منفوده: يه شفاعت صرف آپ علي الكوماصل موگ ـ

۲. شفاعت بالشركة: يعنى سارے ملكرانبياء وصلحاء جوكريں كے وہ بھى آپ علي كو ماصل ہوگ -

٣. شفاعت اجمالي: كه جس نے بھى كلمه پڑھا ہاس كونكال دے يہ بھى آپ علي كوماصل موگا۔

م. شفاعت تفصیلی: خود جا کرنکالی گے تو کوئی بھی ایبانہیں ہے جوشفاعة سے متفع نه موجو قضد رحمٰن

سے نکالے جائیں گےوہ بھی آ کی شفاعت ہی سے نکالے جائیں گے بیشفاعت کی کل حیار تسمیں ہو گئیں

شفاعت كى اوراقسام: شفاعت كى تين تتميل يه بيل-

. الشفاعة بالجاه:يعنى ايغم تبداوررعب كى وجد كسى سيكوئى چيزمنوالينا-

٢ . شفاعة بالقربة: رشة دارى كى وجهد كى عدولى چيز منوالينا ـ

٣. شفاعة بالإذن : ١٠٠٠ (اجازت عصفارش كرنا)

ان تنوں قسموں میں سے پہلی دونوں منتفی ہیں اس کئے کہ نہ اللہ تعالی پرکسی کارعب ہے اور نہ ہی اللہ سے کسی کی رشتہ داری ہے اور تیسری قتم شفاعة بالاذن ثابت ہے قرآن یاک میں ہمن یشفع عندہ الا باذنه.

(۲۲) (۲۲) هباب کیف یقبض العلم په علم کونگرانه جائے گا

و کتب عمرین عبدالعزیز الی ابی بکربن حزم انظر ماکان من حدیث رسول الله علای اورعمرابن عبدالعزیز (طذ) نے ابو بکرابن عزم (میدے تانی) کولکھا: ویکھو! جوآ تخضرت الله علی مدیثیں تم کولکی فاکتبه فانی خفت دروس العلم و ذهاب العلماء و لا یقبل الاحدیث النبی علای ان کولکھو میں ڈرتا ہوں (میں دری) علم مث نہ جائے اور عالم چل بیں اور (یرخیال رکھو) وہی صدیث ماننا جوآ تخضرت الله کی حدیث ہو ولیفشو العلم ولیجلسواحتی یعلم من لایعلم فان العلم لایهلک حتی یکون سراً (دوکری کا قول یقی الاحدیث البیک علی بیشده مهال میں اور کری کا قول یقی میں بابٹر وع فرائ ہیں جلداول میں اور دی جلد علی اور یہ دومرا ہے۔ تقریر بخاری کا باب میں جلداول میں اور دی جلد علی میں اور یہ دومرا ہے۔ تقریر بخاری کا بابعلم ص ۳۳

(٩٩) حدثنا العلاء بن عبدالجبار حدثنا عبدلعزيزبن مسلم عن عبدالله بن دينار ہم سے علاء بن عبدالجبارؒ نے بیان کیا،کہاہم سے عبدالعزیز بن مسلمؒ نے بیان کیا،انھوں نے عبداللہ بن دینار سے بذلك يعنى حديث عمربن عبدالعزيز الى قوله ذهاب العلماء . انھوں نے عمر بن عبدالعزیز کا بیہ قول بیان کیا یہاں تک "اور عالم چل بسیں"

المتحقيق وتشريح

علم كر حاتمر كر اسباب: علم كنم موجانے كے ليے تين اسباب ہيں

اُٹھالیں گے کہ بینوں سے علم اور کتابوں سے نقوش مٹادیں گے۔

توجمة الباب كى غوض: ١٠٠٠٠١م بخارى ناس باب كاندعكم كختم بوجانے كے ذوطريقوں كوبيان کیاہے بعض نے کہاہے کہ مقصود امام بخاری کا ابن ماجہ والی روایت جس کے اندر تیسرے طبریقے کا ذکر ہے اس کوضعیف قرار دینا ہے لیکن سیجے میہ ہے کہ ان دوطریقوں کو بیان کرنامقصود ہے اس کی نفی نہیں کررہے۔اورتطبیق گزر چکی ہے کہ نقدم وتأخركا فرق ہے ابن ماجد كى روايت والى نشانى قرب قيامت كى ہے۔

الی ابی بکوبن حزم:ان کی وفات ۲۰ اه کی باس سے معلوم ہوا کہ عمرابن عبدالعزیر یا اوریث رسول الله جمع كرنے كاحكم يہلے أبو بكر بن حزيمٌ كوديا۔

سوال: آپ نے پہلے پڑھاہے کہ پہلے ابن شھاب زہری کو کھم دیا تو فماذاحله؟

جواب:اسكاييه كدونول كوهم ديا تفاليكن ابن شهاب زهري كامياب موئ اس لئے ان كواول مدون كہتے ہیں تو بھائی (تلانہ ہ کو بھائی ہے تعبیر فر مایا)ان علوم کو باقی رکھنا ہے تو پڑھنا پڑھانا پڑے گا سارے دینی شعبوں کی بنیا د تعلیم و تعلم پر ہے علم باتی نہیں رہے گا تو لوگ کیسے دین پرچلیں گے؟

قصه: ہمسراجی پڑھتے تھے وخیال آتا تھا کہ اب اس کو پڑھنے کا کیافا کدہ یہ سائل کہاں چلیں گے انگریز کے دور میں بیٹے کومیراث ملتی تھی بیٹی کونہیں ملتی تھی استاذ وں نے ہمیں بتایا کہ پڑھاتے رہوتو کوئی اللہ کا بندہ آئے گااس کونا فنز كرے كا چنانچه يا كستان بناتوا حكام نافذ ہوئے اب اگران كوچھوڑ ديتے اوران كوچھول جاتے تو كيسے نافذ ہوتے؟ ایک مولوی صاحب کاقصه: سسایک مارےمولوی صاحب تصان کو پڑھنے پڑھانے کاشوق ا عمر بن مبدا مزیز نے والی مدیندا بو بکر بن محمد بن عمر و بن حزم کو ۹۹ هیں خطائھا کہ استخضر تنایقید کی جس قدراحادیث ملیں ان سب کو کھوالو: ورس بخاری ۳۹۹

تھا ایک صاحب نے ان سے کہا کہ مولوی صاحب اب ڈھیلے استجاء والوں کے ساتھ نہ ہوجاتا لینی سیاست میں حصہ لین دھیے استجاء کے سنتی نے کی ؟ حضرت سلمان استعبال کے استجاء کے استجاء کی استعبال کے استعبال کے استعبال کے استعبال کے استعبال کے استعبال اور اور ان نست میں مالیا کہ اللہ المعال اور اور ان نست میں اور ان نست میں باقیل من ثلثة احجاد او ان نست میں بوجیع المقبلة لمعالما اور بول اور ان نست میں بالمیمین اور ان نست میں باقیل من ثلثة احجاد اور ان نست میں بوجیع اور بعطم اجس کو انہوں نے تھے کی چزیمی ہے استہاں کے استہ کی جزیم کے استہاں کے استہاں کے استہاں کی خطرت کیا بدل گئ ؟ پہلے منہ سے کھاتے تھے ذہر سے کہنا ہوں کہ اور دیا ہوں کردیا ؟ اور دیر سے کھانا شروع کردیا ہوں کہ جب تک سے فظرت باتی ہوں کہ دیا گئ اور دیر سے کھانا شروع کردیا ہوں کہا ہوں کہ بیٹ ان مسائل بھی چلیں گے، جب تم منہ سے بگنا اور دیر سے کھانا شروع کردوگ تو ہم بھی ان مسائل بھی چلیں گے، جب تم منہ سے بگنا اور دیر سے کھانا شروع کردوگ تو ہم بھی ان مسائل کو چھوڑد ہی گئے۔

عصری تعلیم والے کا قصد: افغانستان کا ایک جوان روس میں پڑھ کر آیا آ کرباب سے کہا کہ میری شادی بہن سے کردوباپ نے کہا چھا کرتا ہوں۔ کردوباپ نے کہا چھا کرتا ہوں۔

فانى خفت دوس المعلم:يمرين عبدالعزير كامقوله --

حدثنا المعالاتالمي قوله فعاب العلماء:اي علوم بواكماء على على علم تم م

فضلوا واضلو. (انظر: ۲۰۰۷: احرجه مسلم وابن ماجه والنسائي والترمذي ل

آپ بھی گمراہ ہوں گے اور (دوسروں کو بھی) گمراہ کریں گے

قال الفربرى ناعباس قال ثناقتيبة قال حدثنا جرير عن هشام نحوه.

فربری نے کہاہم سے عباسؓ نے بیان کیا کہاہم سے قتیبہ نے کہا،ہم سے جربر نے بیان کیا اُنھوں نے ہشام سے ماننداس کے

﴿تحقيق وتشريح

(24) باب هل یجعل للنسآء یوم علی حدة فی العلم الله کیاام عورتوں کی تعلیم کے لیے کوئی علیحدہ دن مقرر کرسکتا ہے؟

(۱۰۱) حدثنا ادم قال ثنا شعبة قال حدثنی ابن الاصبهانی قال سمعت بم سے بیان کیا آدم نے ،کہا ہم سے شعبہ نے بیان کیا ،کہا بھے سے عبدالرحمٰن ابن عبداللہ اصبائی نے کہا سامیں نے اباصالح ذکو ان یحدث عن ابی سعید الحدری قال قال النسآء للنبی علی ابوصالح ذکو ان سے ،وہ ابوسعید خدری سے روایت کرتے تھے عورتوں نے آنخضر ساتھ سے عرض کیا

غلبناعلیک الرجال فاجعل لنایوم من نفسک آپ الله پر ہم سے مرد غالب آگئے تو آپ الله اپنی طرف سے (ناس) ہمارے لیے ایک دن مقرد کرد بجئ فوعد هن دیوما لقیهن فیه فوعظهن و امرهن فکان فیماقال لهن آپ نے ان سے ایک دن طفح کا وعدہ فر مایا اس دن کو فیمت کی اور شرع کے ادکام بتا نے ان باتوں میں جو آپ نے فرما ئیں یہ بھی تھی مامنکن امر أق تقدم ثلثة من ولدها الاکان لها حجابا من النار کہ جو جورت اپنے تین نے آگر بی جا تیں گئی گئی گئی کے دور نے سے آڑ بن جا ئیں گ

فقالت امرأة واثنين فقال واثنين . (انظر: ٢٣١٥، ١٢٣٩)

ایک عورت نے عرض کیاا گردو بھیج؟ آپ آیٹ نے فرمایا اور دو بھی

(۲ * ۱) حدثنی محمد بن بشار قال ثنا غندر قال ثنا شعبة عن عبدالرحمن بن محص محربی بثار نے بیان کیا، کہا ہم سے غندر نے بیان کیا، کہا ہم سے غندر نے بیان کیا، کہا ہم سے شعبہ نے بیان کیا، انھوں نے عبدالرحمٰن بن الاصبھانی عن ذکوان عن ابی سعید عن النبی عالیہ بھذا اصبهانی سعید عن النبی عالیہ سے انھوں نے آخوں نے انھوں نے آخوں نے انھوں نے آخوں نے کی حدیث وعن عبدالرحمن بن الاصبھانی قال سمعت اباحازم عن ابی هریوة اور شعبہ نے اس کوروایت کیا عبدالرحمٰن بن الاصبھانی قال سمعت اباحازم عن ابی هریوة اور شعبہ نے اس کوروایت کیا عبدالرحمٰن بن اصبهانی سے انھوں نے کہا میں نے ساابو حازم سے انھوں نے ابو ہم ریو قال ثانة لم یبلغوا الحنث.

روایت میں یوں ہے،آپ آیک نے فرمایاد متن بچے جوجوان نہ ہوئے ہول'

وتحقيق وتشريح،

مطابقة الحديث للترجمة ظاهرة

تو جمة الباب كى غوض: امام بخارى بهال سے درتوں كے لئے تعليم كاجواز ثابت فرمار ہے ہيں كه تعليم كا اتن اہميت ہے كہم دول كی طرح عورتوں كے لئے بھى وقت متعین كرنا جا ہے اورا كھا بھى وعظ ہوسكتا ہے كيكن مفاسد سے بچانا جا ہے كوئكہ عورتوں ميں مفاسد زيادہ ہوتے ہيں زيادہ بہتر طريقه يہى ہے كہم دس كرجا كيں اورا بن گھر واليوں كوجا كرسنا كيں۔

سوال: جب صدیث میں عورتوں کے لیے دن مقرد کرنے کی تقری ہے تو پھر ہل سے کیوں ذکر کیا؟
جواب: حضرت شخ " نے جواب دیا کہ اس لئے ذکر کیا کہ مرادوا شخ نین اگر چہ صدیث میں دن مقرد کرنے کی تقری ہے گریہ عورتوں کا باہر نکل کرجع ہونا ایسانا ذک معاملہ ہے کہ اس میں ذراسوج سمجھ کرکام لینا چاہیے۔
واثنین: سیعطف تلقین کے طور پر ہے اور عطف تلقینی یہ ہوتا ہے کہ خاطب کے کلام پرعطف کردیا چائے فاشندن: سیدعطف تلقینی یہ ہوتا ہے کہ خاطب کے کلام پرعطف کردیا چائے فلا شخت من ولدھا: سے آگے آنے والی دوایت میں لم یبلغو االحنث کی قید بھی ہے چنا نچہ البعض نے کہا بالغ فرت ہوتا ہے اور اسکی فوت ہوتو غم زیادہ ہوتا ہے اس لئے اس کا بھی یہی تھم ہے کا وربعض صفرات نے بالغ نا بالغ کا فرق کیا ہے اور اسکی دورجہیں بناتے ہیں۔

الوجه الاول:نابالغ كماته قلبى لكاؤزياده موتاب_

الوجه الثاني:بالغ كى فوتكى سے حاصل شده صدے سے بالغ كے تناه بھى معاف ہوتے ہيں اس ليے يہ ايك بدلے كام بھى معاف ہوتے ہيں اس ليے يہ ايك بدلے كى صورت بن جاتى ہے ۔۔۔

حدثنى محمدبن بشارٍ: السرال روايت كولان كووفا كدي بيل اليهل روايت ميل جوابن الاصباني تقااسكو متعين كرديا ويمال متعين كرديا كرعب المعند كالراب المعين كوتعين كرديا

﴿بابِ من سمع شيئا فلم يفهمه فراجعه حتى يعرفه ﴾

کوئی شخص ایک بات سِنے اور نہ سمجھاتو دوبارہ پوچھے یہاں تک کہاس کو بمجھے لیے

(۱۰۳) حدثناسعیدبن ابی مریم قال انا نافع بن عمرقال حدثنی ابن ابی ملیکة هم سے سعیدبن ابو مریم نے بیان کیا، کہا ہم کونافع نے خردی، کہا بھے سے ابن ابی ملیکہ نے بیان کیا، کہا ہم ان عائشة زوج النبی عَلَیْ کانت لاتسمع شیئا لاتعرفه الاراجعت فیه حتی تعرفه انوں نے بی کی دوبه کم مرحز مائش کانت الاتسمع شیئا لاتعرفه الاراجعت فیه حتی تعرفه انوں نے بی کی دوبه کم مرحز مائش کی عادت می جم بات کونتی اور ایا ہوا کہ وال النبی عَلیْ الله قال من حوسب عذب قالت عائشة فقلت والی ایک کانت کا من حوسب عذب قالت عائشة فقلت (ایک بر) آن کنرت الله فی نظر می الله کانت مائش نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذاب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذاب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذاب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذاب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی نے کوش سے حمل ایاجا کے گادہ عذاب بی پڑے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی کوش کے دوبالیاجا کے گادہ کوش سے حمل کے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی کوش کے دوبالیاجا کے گاؤ دعرت عائشة نے کہا بی کوش کے دوبالیاجا کے گاؤ دعرت عائش کے کہا بی کوش کے دوبالیاجا کے گاؤ دی کوش کے دوبالیاجا کے گاؤ دعرت عائش کے دوبالیاجا کے گاؤ دی کوش کے دوبالیاجا کے گاؤ دی کوش کے دوبالیاجا کے کانست کوش کے دوبالیاجا کے دو

إعمدة القارئ سن تاص ١٣١١.

اوليس يقول الله عزوجل فسو ف يُحاسب حساباً يسيراً. قالت فقال انماذلك الله تعالى تورس الله عن مراتا باس كاحساب آسانى ساليا جائكا آپ نفر مايا (يرس برس برس) سراوتو العرض ولكن من نوقش الحساب يهلك والعرب ١٦٥٣٢، ١٦٥٣٤ عرجه مسلم والساء في الفسير) المال كابتلادينا بي يكن جس ساتيني تان كرحساب ليا جائكا وه تباه موكار

وتحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمة في قوله ((التسمع شيئا الاتعرفه الاراجعت فيه حتى تعرفه)) توجمة الباب كي غوض: الم بخاري بتلانا على بتي بي كرصول علم مين حيان بي كرفي على به بوجم مين نه آت يو چولينا على بياس خيال سينيس ركنا على بيك كوك كبيس كرد يكمواتي آسان بأت اس كونيس آتى سوال للفهم موقو جائز بيكن ادب محوظ رب بعض اوقات سوال كرن كرادر عادر عاد مناء بوسان كى بناء برسوال نا جائز ب

ا . ظهور علم : ا پناعالم بونا بتانا مقمود بوتا ہے۔

٢. ملال إستاذ: استادكوملال من دالناب

٣ . تضيع وقت: كهروال كراواستادصاحب الكلباب نشروع كردير ويقيع اوقات ب-

م امتحان استاد: ماشيروغيره من كوئى بات دكيه لى موتى بمرامتحان استادك ليه يوجهة بين ـ

واقعہ: مولانا شبیراحمر عثاثی نے حضرت شخ البند" کا واقعہ لکھا ہے کہ ان کو ھدایہ کا ایک مسکلہ بھھ میں نہیں آیا رشیداحمد گنگوئی صاحب کے پاس بھٹے کے لیے تشریف لے گئے ایک مرتبہ بھھایا پوچھا سمجھ میں آیا! انہوں نے عرض کیا نہیں، تیسری مرتبہ کے بعد حضرت گنگوئی کے چہرے پر خفگی کے آثار نمودار ہوئے والہی پر مسئلے کوسوچت آرہے کے انہیں، تیسری مرتبہ کے بعد حضرت گنگوئی کے چہرے پر خفگی کے آثار نمودار ہوئے والہی پر مسئلے کوسوچت آرہے سے کہ راستے میں ایک ندی تھی اس کو پارنہیں کیا تھا کہ مسئلہ بھے میں آگیا تو بیتہ چلا کہ کوئی بات اگر سمجھ میں نہیں آتی اور ادب میں پوچھی اور نہ بھھ آنے پر ادباغاموتی اختیار کی تو اللہ تعالی اسے استاد کاعلم عطافر ماتے ہیں۔

حدثنا سعیدبن ابی مریم سس لاتعرفه الار اجعت فیه: معلوم مواکه حضرت عائش سے کشرت محبت کی بری کشرت محبت کی بری کشرت محبت کی بری وہاں یہ محبت کی بری وہاں یہ محبت کی بری وہدے۔ صرف اساتذہ کی خوش کی وجہ سے ہم یہاں بیٹھے ہیں۔

م محنت مسے پڑھنے کا ایک واقعہ: ہمارے ساتھ ایک ساتھی پڑھتے تھے ان کا نام بھی محمد بی تھا ہم دونوں اول آنے کے لیے جھپ کرمحنت کرتے تھے بھی وہ اول اور بھی میں، جب وہ عالم فاضل ہوکر چلا گیا میں نے اس کو خط لکھا اس نے جواب دیا کہ جس صدیق کوتم خط لکھ رہے ہو وہ مرچکا ہے،اب تو کوئی

اورصدیق ہے جوکاروبار میں الجھا ہوا ہے اور چونکہ وہ حضرت رائے پورٹی کے خاندان سے تھااس کئے جواب میں لکھا کہ خدا کی شان ہے کہ گنوار کے بیچے کودین پڑھانے پرلگا دیا اورعالم کے بیچے کوکاروبار میں لگا دیا۔

فائدہ: يجومنرت عائش سے كثرت مجبت كى وجه بيان كى ہے يہ بات مير دون ميں ابھى آئى ہاس سے پہلے ميں نے نہيں بڑھى ۔اس لئے كہتے ہيں كہ طلب كى وجه سے لم حاصل ہوتا ہے۔

شوح جامی پڑھانے والے استاذسے ایک سوال: شرح جامی پڑھتے ہوئے آیک مرتبہ میں نے استاد کے سے الک سے تو جواب دے سکتا ہوں استاد کے سے الک سے تو جواب دے سکتا ہوں استاد کے سے الک سے تو جواب دے سکتا ہوں اسکان سی محقق اور شارح نے بیسوال نہیں اُٹھایا اس لیے میں اس کو کہیں نہ کہیں تلاش کروں گامل گیا تو بتلا دوں گا اور اُستادِ محتر مے سے سوال پر پُر امحسون نہیں فرمایا بلکہ اور اساتذہ کے سامنے میرے اس سوال کی تعریف کی۔

فقلت اَوَلَيْسَ يقول الله عزوجل فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَاباً يَّسِيُراً ﴾: گويا كه حفرت عائشة في معارضه كطور برآيت كويش كيااورآپ عليه جواب دينے كے ليے متوجہ موئے ـ تواس سے دواصول سيجھ ميں آئے۔

ا صولِ اول: عام اورخاص دونوں قطعی ہوتے ہیں کیونکہ اگراکی ظنی ہوتو فرمادیے قطعی اور ظنی کا کوئی تعارض نہیں لہذا جواب دینے کی طرف متوجنہیں ہوئے۔

اصول ثانی:دوسرایه که قرآن وحدیث میں بظاہراییا تعارض ہوجاتا ہے کہ استاد کی ضرورت پڑتی ہے تو جنہوں نے بغیراُ ستاذ کے خودمطالعہ کئے انہوں نے معارضات ڈالے۔

جواب المعارضه:جواب كاخلاصه يه كرايك اجمالي حماب ب اورايك تفسيلي

انماذلک العوض:اس معلوم ہوا کہ عرض تفصیل کوئیس چاہتا اس میں اجمال ہوتا ہے توجب آدم علیہ السماد لک باری آئی تو فرمایا ﴿عَرَضَهُمُ عَلَی علیہ السلام کی باری آئی تو فرمایا ﴿عَرَضَهُمُ عَلَی الْمُلاَئِكَةِ ﴾ تو فرشتوں کی باری آئی تو فرمایا ﴿عَرَضَهُمُ عَلَی الْمُلاَئِكَةِ ﴾ تو فرشتوں کو اجمالی علم دیا گیا اور یہ بھی المُملاَئِكَةِ ﴾ تو فرشتوں کو اجمالی علم دیا گیا اور یہ بھی معلوم ہوا کہ جمعرات اور پیرکوآپ اللہ پر جواعمال نامے پیش کیے جاتے ہیں اس سے آپاتفصیلی طور پر جانالازم نہیں آتا کیونکہ تعرض کے الفاظ ہیں۔ حضرت عائش نے جومعارضہ کیا ہم اس کا جواب دے رہے ہیں۔

جوابحدیث میں تفصیلی حساب سے مراد ہے اور آیت میں اجمالی حساب کا بیان ہے کیونکہ حضور ملاقیہ نے اس کے جواب میں فرمایا ہے انعما ذلک العوض.

ا موادن مشت آن مراوی مراوی جانده می بانده می ان سے شرح جای پڑھی پاکتان بنتے وقت بندوسلم ضاوات میں شہیدہوگئے۔ ع حضرت عائشگا میصال تماجب کوئی بت حضوف بت سندوسلم ضاوات میں شہیدہوگئے۔ ع حضرت عائشگا میصال تماجب کوئی بت حضوف بت حضوف بت حضوف بت مندوسلم میں ان کو بھی میں نہ آئی تو فورا سوال کرتی چنانچہ آپ اللی خصوص عذب تو فورا سوال کیا کر قرآن مجید میں ہی جس حساب کاذکر ہو وہ اور ہا اور آیت میں جس حساب کاذکر ہودہ وہ اور ہوائی میں جس حساب کاذکر ہودہ اور کر میاد کا استعمال اور مناقشہ باور سے آیت میں جس حساب کاذکر ہودہ وہ اور کی اور ایک مطالب اور مناقشہ باور سے آیت میں جس حساب کاذکر ہودہ وہ اور کر میاد کا میں ہوئی اور ایک مطالب اور مناقشہ ہوں ہوئی گئی وہ بارک ہونے والا ہے دری بخاری ص ۲۰۳ سے پارہ ۱ سورة البقرہ آیت اس

نوقش:نو قش، مناقشه ساليا گيا مناقشه كتيج بين احراج الشئى بالمنقاش، منقاش كتيج بين موچنا ديدُو بمعنى بال بهاور يُخا بمعنى جنن والاتو مناقشه كتيج بين باريك باتون كونكالنا اور درايات كو پكرنا ـ

(9) (9) ليبلغ العلم الشاهد الغائب قاله ابن عن النبي عَلَاثُ الله عن النبي الله عن النبي الله عن ا

(١٠٨٠) حدثناعبدالله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني سُعيد هو ابن ہم سے عبداللہ بن بوسف ٹینسی نے بیان کیا، کہاہم سے لیٹ بن سعد نے بیان کیا، کہا جھے سے سعید جوابو سعید کے بیٹے ہیں انہوں نے بیان ابى سعيد عن ابى شريح انه قال لعمروبن سعيد وهو يبعث البعوث الى مكة کیاانھوں نے ابوشری سے (جرمال ہے) یہ کہ انھوں نے عمروابن سعید سے کہا (جزیدی طرف سے مید کامام قا)وہ مکہ بیرفو جیس بھیج رہاتھا ائذن لى ايهاالامير احدثك قولا قام به رسول الله عَلَيْكُ الغد من يوم الفتح ا المرا بجھ کوا جازت دے میں تجھ کوا یک حدیث سناؤں جوآ تخضرت اللہ نے فتح مکہ کے دوسرے روز ارشاد فرمائی سمعته اذنای ووعاه قلبی وابصرته عینای حین تکلم به میرے کا نوں نے اس کوسنااور دل نے اسے یا در کھااور میری دونوں آئکھوں نے ان کودیکھا جب آپ نے بیرحدیث سنائی حمدالله واثنى عليه ثم قال ان مكة حرمها الله ولم يحرمها الناس آپ نے اللہ کی تعریف کی اورخوبی بیان کی، پھر فر مایا کہ مکہ کواللہ نے حرام کیا ہے لوگوں نے حرام نہیں کیا (س الدیم الی بے) فلا يحل لامرء يؤمن بالله واليوم الآاخر ان يسفك بهادما ولايعضدبها شجرة توجوكونى الله اورآ خرت كون روس برايمان ركفتا مواس كوومال خون بهانا درست نبيس اورنبيس كانا جائے گااس ميس كوئى درخت احدترخص لقتال رسول الله عَلَيْكُ فيها فقولواان الله فان گر (برے بد) کوئی ایبا کرنے کی بیدلیل لے کہ اللہ کے رسول وہاں اڑئے تھے تو تم بیکھو کہ اللہ نے تو (فتح مکہ کے دن)

اذن لرسوله ولم یأذن لکم وانما اذن لی فیها ساعة من نهار این رسوله ولم یأذن لکم وانما اذن لی فیها ساعة من نهار ایخ رسول کو (غاص) اجازت دی تی کو اجازت نمیس دی اور مجھ کو تھی صرف ایک گھڑی دن کے لیے اجازت دی تھی شم عادت حرمتها الیوم کحرمتها بالامس ولیبلغ الشاهد الغائب پراس کی حرمت آج و یہ بی ہوگی جیے کل تھی ،اور جو تف یہاں حاضر ہووہ اس کی خبراس کو کردے جوغائب ہے فقیل لابی شریح ماقال عمرو قال انا اعلم منک یا ابا شریح لوگوں نے ایج تربی تربی تھے ہے نیادہ میں کیا جواب دیا ؟ ایوشری کے کہا عمرو نے یہ جواب دیا کہ میں تھے سے نیادہ میں المجھ ولافار ابنحربة .

لاتعیذ عاصیا ولافار ابندم ولافار ابنحربة .

رانظر ۲۳۵۰،۱۸۳۱ عرجه مسلم فی الله جو عن فیہ والنوم دی فی العج والنسانی فی العج)

وتحقيق وتشريح،

مطابقة الحديث للترجمة في قوله ((وليبلغ الشاهدالغائب))

☆جوحاضر ہے غائب تک علم کو پہنچائے تو ثابت ہوا کہ جوحاضر ہیں وہ پڑھیں اور جوغائب ہیں آنے والے ہیں الکو
 پڑھائیں ای طریقے سے علم باتی دہے گا کیونکہ غائب تو قیامت تک ہیں مطابقت واضح ہے۔

قاله ابن عباس:هذاتعليق ولكنه اسنده في كتاب الحج في باب الخطبة ايام مِنى عن على بن يحيني الخ.

عمروبن سعید: سبعض نے تابعی کہاہ اور بعض نے کہانہ صحابی ہیں نہ تابعی سے بین کہتا ہی کہتا ہی دوسری قتم ہیں کہ تابعی دوسری قتم سے ہیں تواس قصد بیان کرنے سے کوئی یہ نہ سمجھے کہام بخاری اس کی توثیق کررہے ہیں۔

سمعته اذنای : ستثبیت مقصود ہے ،ورنہ ہرکوئی اپنے کانوں سے سنتا ہے ۔مطلب یہ ہے کہ میں نے اچھی طرح محفوظ کیا ہے۔

البتمتني ك ندب مين ايباب-

مًا الحل الا من اود بقلبه ۞ وارئ بطرف لا يرى بسوآئه

ساعة: ساعت سے مراد لیل وقت ہے اور من نھاد بیان ہے اور سے لے کرعفر تک تقریبا ایک دن ہی ہے۔ کے کرعفر تک تقریبا ایک دن ہی ہے مزدور صبح سے کیکڑ عصر تک کام کرتا ہے اس کودیہاڑی کہتے ہیں۔

من نھار:مندِ احمد کی روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ فجرسے لے رعصرتک کی اجازت تھی۔

انا اعلم منك:مستهجانه، متكرانطريق افتياركيا الى وجهد يكتم بين يخاف عليه الكفرول لا تعيذ عاصياً:مسئله قصاص في الحرم.

....اس میں امام صاحب اور جمہور گااختلاف ہے امام صاحب فرماتے ہیں۔

- (۱).....اگر کوئی جنایت کر کے حرم میں بناہ لے لے تو حرم میں اس سے قصاص نہیں لیاجائے گا بلکہ باہر نگلنے پر مجبور کیاجائے گا۔
 - (٢)لكن الروه اتن طاقت بكر جائے كه مجبور كرنے سے باہر نه نظيقو پھر حرم ميں ہى قصاص لے ليا جائے گا۔
 - (۳)ا گرفتل حرم ہی میں کیا ہے تو حرم ہی کے اندراس صورت میں قصاص لیا جا سکتا ہے
- (۴)اگر اطراف (ہاتھ ،کان ،ناک وغیرہ) میں جنایت کر کے حرم میں داخل ہوا ہے تو بھی حرم میں قصاص لیا جاسکتا ہے بیمالی جنایت کے علم میں ہے۔

مذهب جمهور :امام صاحب كاختلاف جهور كرساته إن عارصورتول ميل صصرف يبلى صورت كاندر بح جمهور مل القاص كائل بيل عن المائد من المائد ال

جمهور كى دليل: عروبن سعيد كا قول ب ((ان مكة لاتعيذ عاصياو لافاراً بدم))

جواب:باغی وعاصی کون ہے؟ کیا ابن زبیر؟ ہرگز نہیں ابن زبیر عاصی نہیں بلکہ تم خود عاصی ہو کہ فتق و فجور کے باوجود تم نے لوگوں کی گردنوں میں اپنی حکومت کا قلادہ ڈالا یا

دلائل ابی حنیفهٔ:....

اول: ابوشرت من و صحابی) کی صدیث احناف کے موافق ہے۔ کیونکہ ابوشرت اس کوجائز نہیں مجھد ہے منع کررہے ہیں ج ثانی:﴿وَمَنْ دَخَلَهُ ' کَانَ امِنا ﴾ م

حدثناعبدالله عن محمدبن ابی بکرة: یبال بظاہرانقطاع معلوم ہوتا ہے کین انقطاع نہیں ہے اصل میں عبارت یوں ہے ت محمدبن ابی بکرة عن ابی بکرة یبال عبارت چھوٹ گی ہے اصل سندوں میں اتصال ہے۔ فکان محمدیقول صدق رسول الله عادی الله عادیا ہے ہیں کہ آپ علی اسلام کے بین اسلام کے بین کہ اسلام کی بین الله کے بین کہ اسلام کی بین الله کی الله کی الله کی الله کا الله کی کر الله کی الله کی الله کی الله کی الله کی کر الله کر الله کر الله کر الله کر الله کی کر الله کر ا

(۱۰) مدراللہ باب اثم من كذب على النبي عَلَيْتِهِ ﴾ پياب ہاں شخص كے گناہ كے بيان ميں جو نج آليا ہے پرچھوٹ بولے

(۲ • ۱) حدثناعلی بن الجعد قال انا شعبة قال اخبرنی منصور قال سمعت ربعی بن حواش هم علی بن جعد نیان کیا، کها بم کوشعبه نیخ خردی، کها بمحکومضور بن معتمر نیخ خردی کها میں نے ربعی بن حراش سے سنا یقول سمعت علیایقول قال النبی عالی التکذبوا علی فانه من وه کمت سے میں نے حفرت علی سے سنا، کمتے سے آنخفرت الله فی فرمایا دیم، مجمع پر جموث نه باندهو کیونکہ جو خص مجمع پر کموث نه باندهو کیونکہ جو خص مجمع پر کموث نه بانده کو کونکہ جو خص مجمع باندھ کا دور ن فلیلج النار مجموط باندھ کا دور ن دور ن میں جائے گا۔

ل دراس بخارگ سنده به مع ابوشریح بضم الشین المعجمة وفتح الراء وبالحاء المهملة قیل اسمه خویلنقال ابوعمروقیل اسمه عمروبن خالد وقیل کعب بن عمر : وقال و الاصح عنداهل الحنیث اسمه خویلنبن عمروبن صخر :اسلم قبل فتح مکة روی له عن رسول الله الله عندون قال الواقدی و کان ابوشریح من عقلاء اهل المدینة توفی سنة ثمان وستین :عمدةالقاری ج۲ص ۱۳۹ سے پاره ۳ سورة آل عمران آیة ۹۷

لیکن میں نے سنا آ پیلینے فر ماتے تھے جوکوئی مجھ پرجھوٹ باندھےوہ اپناٹھ کا نہ دوزخ میں بنا لے۔

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

(۱۰۸) حدثنا ابومعمر قال ثنا عبدالوارث عن عبدالعزیز قال انس انه هم سے ابومعمر نے بیان کیا، انھوں نے عبدالعزیز سے ،کہ انس نے کہا لیمنعنی ان احدثکم حدیثا کثیر اان النبی عَلَیْ قال من تعمدعلی کذبا البتروکتا ہے مجھے کہ بیان کروں میں تمہیں بہتذیادہ صدیثیں کہ تخضر سے اللہ نے فرمایا جو کوئی جان ہو تھ کر مجھ کے میان کروں میں تمہیں بہتذیادہ صدیثیں کہ تخضر سے اللہ نے فرمایا جو کوئی جان ہو تھ کر مجھ کے اللہ علی النار .

وہ اپناٹھکانہ جہنم میں بنالے۔

☆☆☆☆☆☆☆☆

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غرض سوال وجواب كى شكل مين سمجه ليجرّ

سوال:اس رجمه كا كتاب العلم سي كيامناسبت مع؟

جواب:امام بخاری بتلانا چاہتے ہیں کہ تعلیم سیح وینی چاہیے کذب شامل نہیں کرنا چاہیے یعنی علم سیح کی ترغیب وینے کے لیے باب باندھا ہے۔

حكم كذب على النبي سيالله: محدثينًا

مجتھدین کامذھب: جھوٹی حدیث بیان کرناحرام ہے۔اس کے بارے میں جواحادیث ہیں وہ انتہائی قوی اور سیح ہیں یہاں تک کہ بعض نے ان کومتو اثر کہاہے

صوفیاء کامذهب: بعض جاہل صوفیاء حضرات اس کے قائل ہیں کہ ترغیب وتر ہیب کے لیے جموثی حدیث وضع کرنا جائز ہے۔

دلیل:کونکہ یہ کذب علی النبی علی النبی علیہ کذب للنبی علیہ کہ کہ کا اللہ علیہ کہ جام کے جس کہ حرام کے اس کے کہ کذب للنبی بھی کذب علی النبی ہے کیونکہ جھوٹ کو نبی کی طرف منسوب کیا اور یہ کسی حال میں درست نہیں محدثین کر جات و مراتب:

- (١)احادیث بیان کرنے کے لحاظ سے سب سے پہلا درجہ محدثین کا ہے۔
 - (٢)احادیث بیان کرنے کے لحاظ سے دوسرا درجہ فقہاء کا ہے۔
- (m)....تیسرے درج میں قد ماءاہل لغت ہیں جن کوغریب الحدیث سے لگاؤر ہاہے جیسے امام ابوعبیر مگراہے بھی

بے کھٹکے بیان نہیں کر سکتے جسیا کہ محدثین کی مختیق کو بغیر کھٹکے بیان کر سکتے ہیں یا

(٣):..... چوتھا درجه صوفیاء کا ہے کیان ان پرحسن ظن غالب ہوتا ہے۔

فليلج النار:ميغة امر بجركمعن مي بـــ

حد ثنا المكى بن ابو اهيم : محفى الروايت كم تعلق بين السطور لكمتاب هذا اول الثلاثيات ع ثلاثيات: ان حديثو لكو كهته بين جن مين امام بخاري أور حضور علي الله كالتي كالم واسط بول امام بخاري كى اس كتاب (بخارى شريف) مين ۲۲ ملاثيات بين -

امام اعظم "کی ثنائیات: اگر بخاری کی ثلاثیات کے بارے میں کہتے ہیں کہ یہ اصح الصحاح ہیں توامام اعظم کی حدیثوں کے بارے میں یہ کیوں نہیں کہتے ؟ اس لئے اگر بعد والاکوئی کہ بھی دے لا نعوفه، حدیث غریب تواس سے امام اعظم ابو صنیفہ کے استدلال پرکوئی فرق نہیں پڑتا۔ پھرامام بخاری کی ۲۲ ثلاثیات میں سے بیس (۲۰) حنی اساتذہ کی ہیں تو آپ کیسے کہ سکتے ہیں کہ امام بخاری حنف کے خلاف ہیں یا حنف کو ثقہ نہیں سی سے سے بیس دروی کی بن ابراہیم بھی حض تھے۔

تسمو اباسمی و الاتکنو ابکنیتی:کنیت: اب ادر این کی طرف منسوب کریں تو کنیت کہلاتی ہے۔ شان نزول کی تعریف:آیت کے نازل ہونے کا سبب ہویا کوئی واقعہ ہوتو اس کو شان نزول کہتے ہیں۔ شان ورو دکی تعریف: حدیث سنانے کا کوئی سبب یا واقعہ ہوتو اسکو شانِ ورود کہتے ہیں۔

حدیث کا شان ورود:آپ عَلِیْ ایک مرتبہ جارہے تھے تو کئی محض نے کہا یااباقاسم! آپ عَلِیْ اِنْ عَلَیْکُ کَا نے پیچے مؤکرد یکھا تو اس نے کہا آ پکونیس بلایا تھا اس پرآپ عَلِیْ نے بیار شادفر مایا۔

اختلاف :ا: بعض کہتے ہیں کہ آپ آلی کے نام پرنام اور کنیت پر کنیت رکھنا بھی مطلقا منع ہے۔

۲: بعض کہتے ہیں کہ آپ آلی کے زمانے میں جب التباس کا ڈرتھا اس وقت منع تھا اب جائز ہے اکثر محد ثین کا یہی ند ہب ہے بہت سارے محد ثین وصحابہ کرام گانام بھی محمد تھا بعض حضرات فرشتوں کے ناموں کے رکھنے ہے بھی منع کرتے ہیں ،حضرت عربھی منع کرتے ہے تھے تو یہ اوب کے درج میں ہے یہ کہ مسئلے کے درج میں تو اب اس کے جوازیرا جماع ہے کہ انبیاء میم السلام کے ناموں پرنام رکھا جائے۔

من رانی فی المنام فقد رانی فان الشیطان لایتمثل فی صورتی : کونکه شیطان میری صورت بین باسکناس کودرمیان میں لاکرآ پالی کی سید کرنا چاہتے کی میری صورت نہیں بناسکناس کودرمیان میں لاکرآ پالیکی یہ تنبیه کرنا چاہتے کی رویت کے بارے میں بیان نہ کرے نیز اگر کی نے واقعی دیکھا ہے تواس نے مجھے ہی دیکھا ہے۔

ا درس بخاری ص۲۰۰۱ سے بخاری شریف جا ص۲۱ بین السطور سے اس حدیث کی تشریح علامة عنی نے محقق اور مدلل انداز میں عمدۃ القاری شرح سیح البخاری ص۱۲۱۵ ۱۵ پرتح برفر مائی ہے۔ علم کی گہرائیوں تک رسائی حاصل کرنے والے ملاحظہ فرما سکتے ہیں۔

اشكال: محديث كاس جملي مين شرط وجزاء متحدي؟

جواب: ساس جملے میں مختلف روایات بیں ارایک تو یہی ہے ۲ وفی روایة فسیرانی فی الیقظة سروفی و رایة فسیرانی فی الیقظة سروفی و ایت فقدرای الحق اعتراض مرف روایت الباب میں ہے تو جواب یہ کرانی ، رؤیت صادقہ سے کنایہ سے یارؤیت حقہ سے۔

من رانى في المنام فقدراني ميس چندابحاث

البحث الاول:اس جملے کے معنی کو ثابت کرنے کے لیے تین تقریریں کی گئیں ہیں۔

تقريرِ اول:جس نے مجھے خواب میں دیکھاوہ مجھے متقبل میں دیکھ لے گا تورؤیت سے مرادرؤیت مستقبلہ ہے اور مستقبلہ ہے اور مستقبل سے مراد فی الآحوۃ ہے۔

سوال:خواب و یکھنے والے کی کیا خصوصیت ہاللہ تعالی ہر سلمان کو یہ تعت عطاء کریں گے؟

جواب:رؤیت خصوصی اور محبت خصوصی مراد ہے۔

تقریرِ ثانبی:رؤیت مستقبله ہی مراد ہے لیکن فی الدنیالیکن بی مطلب حضور علی کے زمانے کے ساتھ ہی خاص ہوگا کہ جوخواب میں مجھے دیکھ لے گاتو فی الیقظ بھی دیکھ لے گایعنی ایمان لے آئے گا ہجبت نصیب ہوگی۔

تقریرِ ثالث: سیعنی اس کاخواب بچاہے کہ اس نے مجھے ہی دیکھا ہے کیونکہ شیطان میری صورت اختیار نہیں کرسکتا۔
البحث الثانی: سیکھر جوخواب میں آپ اللّی کودیکھتا ہے وہ رؤیت صادقہ تو ہے لیکن رؤیت کیسی ہے؟
البعض نے کہا ہے کہ رؤیت عینی ہے پردے حیف جاتے ہیں ۲ بعض رؤیت مثالی کے قائل ہیں ۳۔ اور بعض رؤیت مثالی کے قائل ہیں ۳۔ اور بعض رؤیت خیالی کے قائل ہیں کہ اس کے خیال میں متصور ہوکر آتے ہیں۔

البحث الثالث: محدثین ی اس میں بحث کی ہے کہ جس طرح آپ علیہ عالم دنیا میں تھاتی کیفیت میں اگر دیکھاتو رؤیت صادقہ ہے البعض حفرات اول کے قائل میں چنا نچہ محمد بن سیرین جو کہ تعبیر رؤیا کے بڑے امام گزرے ہیں ان کو بتلایا جاتا اگروہ پڑھے ہوئے حلیہ مبارک کے مطابق ہوتا تو فرماتے کہ رؤیت حقہ ہے ور نہیں۔ ع

قریب زمانے میں شاہ عبدالعزیز اور شاہ رفیع الدین کا اختلاف تھا، شاہ رفیع الدین محمد بن سیرین کے موافق تھے کہ تھیک اپنی زی (حالت) پر ہونا چاہئے ۲۔ اور شاہ عبدالعزیز اس کے خالف ند ہب رکھتے تھے کہ رؤیت عام ہے کسی بھی حالت میں ہو حضور علی ہوں گے۔ اور جمہور علماء دیو بند کا بھی یہی مسلک ہے دل میں اگریہی ہے کہ آپ علی جمہور علماء دیو بند کا بھی یہی مسلک ہے دل میں اگریہی ہے کہ آپ علی میں ا

ل عدة القارى ج م ص ١٥٠ م ورس بخارى ص ٢١١

ادر ہمیت منکرہ دیکھی تو بھی ہماجائے گا کہ بیرو تہت صادقہ ہے البتہ ہمیت منکرہ میں دیکھا اپنی خلطی ہے یاراتی کی رو تہت کی کمزوری اور کی ہے ۔ مولانا عبدالعلی (حضرت نانوی کے شاگرہ) نے خواب میں دیکھا کہ میں عازی آباد اشیشن پرہوں اور حضور علیہ تھے کو دیکھا کہ تشریف لارہے ہیں اور کوٹ پہلوٹ ہیں بی گھبرائے کیونکہ مجرین نے لکھا ہے کہ دائی کے نقصان پردال ہے گھبرا کر حفرت مولانار شیداحم گنگوئی کولکھا، حضرت مولانا کو جیر کا خاص ملکہ تھا جواب میں لکھا کہ یہ ایک اور چیز کی طرف اشارہ ہے، یہ دکھلایا گیا ہے کہ آج کل دین پرنصلا کی کاغلبہ ہے، دین حضوظی کے ذات ہے اور لباس نصاری کا ہے یا البحث المرابع: سے اگر کوئی آپ علیہ کے خواب میں دیکھے اور آپ علیہ کے ارشاد فرما کیں تو کیادہ جمت ہوگا البحث المرابع: سے کہوار شاور کر میں ارشاد فرمایا گروہ بیداری میں فرما نے ہوئے کے موافق ہوتو جمت ہوگا اور بیتا کہ ہوگی ورنہ اصل جمت تو وہ بی ہے جو آپ علیہ حالت بیداری میں فرما بھی ہیں اورا گر طیق ممکن نہ ہوخلاف ہوتو جمت ہیں۔ اور بیتا کہ ہوگی ورنہ اصل جمت تو وہ بی ہی ہوتے ہیں اس عدم جمیت کی چندوجوہ ہیں۔

الوجه الاول:محدثین فرمایا کم مفل کی روایت معتبر نہیں ہے جب مغفل کی روایت معتبر نہیں ہے تو نائم کی کسے معتبر ہوگی؟

الوجه الثانى:اس كى توضانت بى كه شيطان آ كى صورت نہيں بناسكتا كيكن اس كى كوئى ضانت نہيں ہے كه تلميس بھى نہيں كرسكتا ايك خص كوحفور عظامت كى زيارت ہوئى تو فرمايا اشوب المحموث غلم على صاحب كز العمال كے پاس مدينه منوره ميں جب اس كو پيش كيا كيا تو فرمايا كه حضور عليك في تواسي فرمايا تھا لاتشوب المحموليكن شيطان نے تلميس كردى م

الوجه الثالث:نيز بيدارى كى رؤيت، رؤيت توبيه عن يصفه والاصحابي موجاتا به اور نيندكى حالت كى رؤيت اس درجه مين نيس بهاى كي خالى موتا ـ

الوجه الرابع: آپ علی کی ویت فی المنام ایک بثارت رحمانی ہے یکوئی شریعت بیان کرنے کی جگہیں ہے۔
المبحث المخامس: بیداری میں آپ علی کوئی و کھ سکتا ہے یانہیں ؟ ا۔ محدثین اور ابن تیمیہ اس کے مکن مکر ہیں ۲۔ صوفی آ واور اولیاء حضرات اس کے قائل ہیں تا حضرت شاہ صاحب نے لکھا ہے کہ حق بات یہ ہے کہ مکن ہے، اور انکار جہل ہے حضرت نے لکھا ہے علامہ سیوطی نے فرمایا کہ میں نے ۲۲مر تبد حالت بیداری میں آپ علی کی زیارت کی ہے۔ عبد الو ہاب شعرانی کے بارے میں ہے وہ کہتے ہیں کہ میں نے بخاری حالت بیداری میں آپ علی کے بیر سے میں کہ میں نے بخاری حالت بیداری میں آپ علی کے بیر سے بیر سے بیر سے بیر سے بیر سے بیر سے میں کہ میں نے بخاری حالت بیداری میں آپ علی کے بیر سے بیر

ا درس بخاری سوام یا اینها سے روح المعانی میں عالمه آلوی نے اس پر بہت عمدہ بحث کی ہے کروکیت مقصد میں بھی ہو عمق ہے: درس بخاری ص

فائله او لی:رؤیت کی دو شمیس ہیں ایک رؤیت عینی دوم رؤیت منامی _رؤیت منامی کے دواسباب ہوتے ہیں۔ سبب اول:بثارت محبب اللي اوربثارت فعل الهي موتى ہے بياعلى درجه ہے۔

سبب ثانى: تحديثِ نفس: كه كثرت سے آپ عَلَيْكُ كاذكركيا، در دوشريف برها توجس كا تذكره بیداری میں ہوتا ہے وہ خواب میں بھی آ جاتا ہے بیر بھی نوع بشارت ہے۔

سبب ثالث: مطلق خواب کاایک تیسراسب ضغطه شیطانی بھی ہوتا ہے

فائدہ ثانیہ: سیم کثرتِ تصور کی وجہ سے حالت بیداری کے اندرصورتِ خیالیہ بھی ہوجاتی ہے۔اس کا سیح ہوناضروری نہیں ہے کیونکہ حدیث میں فی المنام کی قید ہے ((من رانی فی المنام))

> ﴿باب كتابة العلم علم كي بانتيں لكصنا

> > المتحقيق وتشريح

توجمة الباب كى غوض:امام بخارى السباب مين علم كى الهيت بتلات بين كه اتناالهم كه بهول جانے كا خوف بوتو لكھ لينا جائيے لان الكتابة وسيلة الحفظ الرعلم ندمراد خاص علم حديث بيتو غرض الباب ایک اختلانی مسئلہ میں جمہوری تائیہ ہوگی کیونکہ بعض حضرات کتابت حدیث کے جواز کے قائل نہیں ہیں جبکہ جہور قائل ہیں تواس ہے جمہور کی تائید ہوگئی چنا نچہ محدثین کتابت کرتے ہیں۔

(۱۱۱) حدثنامحمد بن سلام قال انا وكيع عن سفين عن مطرف ہم سے محمد بن سلام (بیکندی) نے بیان کیا،کہاہم کووکیع (بن جراح) نے خبر دی ،انھوں نے سفیان سے انھوں نے مطرف سے عن الشعبي عن ابي جحيفة قال قلت لعلى "هل عندكم كتاب قال انھوں نے شعبی سے،انھوں نے ابو جحیفہ سے،کہامیں نے حصرت علیؓ سے یو چھا کیا تمہارے یاس کوئی کتاب ہے؟انھوں نے کہا لاالاكتاب الله اوفهم اعطيه رجل مسلم اومافى هذه الصحيفة کوئی نہیں مگراللّٰہ کی کتاب (مٓں شریب) یا سمجھ جومسلمان کودی جاتی ہے (اللّٰہ کا مرب ہے ہی ہے)یا جواس ورق میں لکھا ہوا ہے قال قلت ومافي هذه الصحيفة قال العقل وفكاك الاسيرو لايقتل مسلم بكافر

ابوجیفہ نے کہامیں نے پوچھا اس ورق میں کیا لکھا ہواہے؟ (حضرت علی ؓ نے) کہادیت کابیان اور قیدیوں کے چھڑانے کا اور بیہ عظم کہ مسلمان کو کافر کے بدلے قتل نہ کیا جائے

وتحقيق و تشريح،

مطابقة الحديث للترجمة في قوله ((في هذه الصحيفة))

حدثنامحمدهل عندكم:ا حضرت على كوخطاب ہے اور جمع تعظیم كے ليے ہے، الل بيت مراد ہیں حضرت علی محضرت فاطمہ مسین مسین مسین میں معظرت ابو بمرصد بن کے پاس تھا پھر حضرت علی پھر حضرت علی کے پاس تھا اس کے اندردیت ، ذکو قاور قیدیوں کے متعلق احکام تھے۔

لايقتل مسلم بكافر:..... مسئله اختلافيه

ا: سسائمہ ثلثاً س حدیث سے استدلال کرتے ہیں کہ مطلقا کا فر کے بدلے میں مسلمان کوتل نہیں کیا جائے گا ۲۔امام اعظم فرماتے ہیں کہ ذمی اس سے ستنی ہے امام صاحب کا مذہب بظاہراس حدیث کے خلاف ہے۔ .

دلائلِ احناف:

دلیلِ اول: ذمیوں کے بارے میں آپ علیہ کارشاد ب ((اموالهم کاموالناو دمائهم کدمائنا و اعراضهم کاعراضنا)) یعنی معاہدے سے ان کی اعراضهم کاعراضنا)) یعنی معاہدے سے ان کی تمام چزیں محفوظ ہوگئیں ہیں سے

ثانی: سنظرطحاوی میں ہداری چوری کرتا ہے تو ہاتھ کا ث دیاجاتا ہے تو جب مال میں بدلہ ہے تو جان میں بدلہ ہے تو جان میں مجھی بدلہ ہوگا۔

ثالث:عقدِ ذمہ ہوتا ہی مال وجان اور عزت کی حفاظت کے لئے ہے جب مسلمان کواس کے بدلے میں قتل نہ کیا جائے تو عقدِ ذمہ باطل ہوجائیگا۔

حدیث مبار که کاجو اب اول:ای مدیث میں کافرے کافر حربی مرادے۔ ع جو ابِ ثانی:حدیث مذکورہ فی الدلیل الاول من جانب الاحناف کی وجہ سے مدیثِ باب کی تخصیص ہوجا کی ذمی اس مدیث سے خاص کرلیا جائےگا۔

ل انظر: ۱۵۷۰،۳۰۰،۷۵۰،۳۱۷۹،۳۱۷۵۵،۳۱۷۹،۳۱۷۵۵،۳۱۷۹ ۱۵٬۲۹۰،۲۹۱۱ اخرجه الترمذي في الديات عن احمدبن منيع والنسائي في القودعن محمدبن منصور وابن ماجه في الديات عن علقمةبن عمرو اس حديث كي سند ميں چهر راوى حضرت ابوجحيفه بضم الجيم وفتح الحاء مهمله وسكون الياء هيں اوران كانام وهب بن عبدالله هي اوران كي كل مرويات ٣٥ هيں اورانكاكوفه ميں ٢٥هج ميں انتقال هوا وكان من صغار الصحابة قيل توفي وسول الله عليه الحلم عمدة القارى ج٢ص ١٥٩٤ سي ورن بخاري ٣١٣س درس بخارى ص١٣٠٠

ل بياض صديقي س٤٨١

فائدہ: سسمتاً من بھی کا فرحر بی میں شامل ہے بعض حضرات متاً من کوذی کے ساتھ ملاتے ہیں۔ جو ابِ ثالث: سسعلامہ ابن ہمام نے ہدارہ کی شرح فتح القدیر میں فرمایا کہ بیصدیث دماء جاہلیت کے بارے میں ہے یعنی اگر دور جاہلیت میں کسی کا فرکونل کیا ہو پھر اسلام لے آئے تو مسلمان کواس کا فرکے بدلے میں فل نہیں کیا جائے گالے

(۱۱۲) حدثنا ابونعيم الفضل بن دكين قال ثنا شيبان عن يحيى عن ابي ہم سے ابونعیم نصل بن دکین نے بیان کیا، کہاہم سے شیبان نے بیان کیا، انھوں نے کی بن ابو کشرسے سلمة عن ابى هريرة ان خزاعة قتلوا رجلا من بنى ليث عام انھوں نے ابوسلمہ سے انھوں نے ابو ہر مری ہے کہ خزاعہ والوں نے (جوریہ بنیاب) بن لیٹ (بنید) کے ایک شخص کواس سال مار ڈالا فتح مكة بقتيل منهم قتلوه فاخبر بذلك النبى ^{عَلَيْكَلْه} جس سال کہ مکہ فتح ہوا، اپنے ایک خون کے بدلے جو بی لیٹ نے ان کا کیا تھا اس کی خبر آ مخضر تعلیق کودی گئی فركب راحلته فخطب فقال ان الله حبس عن مكَّة القتل اوالفيل قال محمد آب این او تنی برسوار ہوئے اور خطبہ برم ھا پھر فرمایا اللہ تعالی نے مکہ سے تل یافیل (اِحیر) کوروک دیا، امام بخاری نے کہا واجعلوه على الشك كذاقال ابونعيم القتل اوالفيل وغيره يقول الفيل اس لفظ کوشک ہی کے ساتھ رکھو، ابونعیم نے بوں ہی کہافتل یا فیل ، اور ابونعیم کے سوااورلوگوں نے فیل کہاہے (عصری) وسلط عليهم رسول الله عَلَيْكُ والمؤمنون الاوانهالم تحل لاحد قبلي اوراللہ کے رسول اورمسلمان ان برغالب آ گئے (ین کدے) فروں) من رکھومکہ مجھے سے پہلے کسی کے لئے حلال نہیں ہوا ولاتحل لاحد بعدى الاوانها حلت لي ساعة من نهار الاوانها ساعتى هذه حرام نہ میرے بعد کسی کے لیے حلال ہوگا، من رکھو!میرے لئے بھی وہ ایک گھڑی دن کی حلال ہوا من لومکہ اب اس وقت حرام ہے لايختلى شوكها ولايعضد شجرها ولاتلتقط ساقطتها وہاں کے کانٹے نہ کانے جائیں اور وہاں کے درخت نقطع کیے جائیں اور وہاں کی پڑی ہوئی چیز نہ اٹھائی جائے الالمنشد فمن قتل فهو بخيرالنظرين اماان يعقل واما ان يقاد القتيل ،فجاء رجل من اهل اليمن فقال اهل ا پس مقول کے وارث اتنے میں یمن والوں میں سے ایک مخص (ابوشاہ) آیا اس نے عرض کیا

اکتب لی یارسول الله فقال اکتبوا لابی فلان فقال رجل من قریش یارسول الله فقال رجل من قریش یارسول الله! (زب یا برای برد) مجمه کولکه دیج آپ نے لوگوں سے فرمایا ابوفلاں کولکه دو، قریش کے ایک شخص الا الاذخو یارسول الله فانا نجعله فی بیوتنا وقبورنا (حضرت عباس) نے عرض کیایارسول الله افزی کی اجازت دیجے ہم اس کو گھروں اور قبروں میں لگاتے ہیں فقال النبی علیہ الله الاذخو الاالاذخو ال

وتحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمة في قوله ((اكتبوالابي فلان))وكل مايكتب من النبي عليه فهوعلم حدثنا ابو نعيمان خزاعة:يآ بِعَيْسَةُ كَامِيْفَ تَقَدَ

قتلو ار جلا:قصہ یہ ہوا کہ حضرت اساعیل علیہ السلام اور حضرت ہاجرہ علیما السلام سرزیمین مکہ میں آباد سے بنوبر ہم قبیلہ کوہ ہاں تھر نے کی اجازت دی حضرت اساعیل علیہ السلام کی شادی بنوجرہم میں ہوئی پھر بنوخزاعہ اور بنوجرہم کی لڑائی ہوئی تو بنوخزاعہ غالب آگے اور کعبۃ اللہ پر بنوخزاعہ نے قبضہ کرلیا پھر بنوخزاعہ فار آپش نے کر لیا تو قریش نے کرلیا اور بنوخزاعہ کو مکہ سے نکال دیا سلح حدیبیہ کے موقع پر حضور عظیمہ نے بنوخزاعہ وغیرہ کو اختیار دیا کہ جس کے ساتھ چا ہو حلیف بن جا کہ بنوخزاعہ عداوت قریش کی وجہ سے آپ علیہ کے حلیف بن گئے اور بنولیث کفار قریش کے حلیف بن گئے یہ معاہدہ ہوا کہ کوئی کی پر جملنہیں کرے گا۔ شرائط میں یہ بات طے ہوئی تھی کو اور بنولیث کفار قریش کے حلیف بن گئے یہ معاہدہ ہوا کہ کوئی کی پر جملنہیں کرے گا۔ شرائط میں یہ بات طے ہوئی تھی کہ قبل حلیہ نہ اس ہے چنا نچے دو سال بعد بنولیث نے بنوٹزاعہ کا آ دی قبل کردیا یہ حضور علیہ کے کہ سے مارا آ دی قبل کردیا گیا ہے آپ علیہ کے قبل کے قبل کردیا آپ علیہ کے اس کردیا آپ علیہ کے تعش عہد کا اعلان فر ماکر مکہ پر چڑھائی کردی اور فتح حاصل کرلی۔ بعد الفتح من نے دنوئرا عہد کا آپ دی قبل کردیا اور فتح حاصل کرلی۔ بعد الفتح خراعہ نے لیٹ کا آپ دی قبل کردیا آپ حضور علیہ نے فیصلہ کیا کہ تاکل کی دیت دی جائے یا قصاص۔

و لاتلتقط ساقطها الالمنشد:اورحرم كى كرى پرى چيز نداشانى جائے سوائ اس كى كه پېنچوانا چا ہے۔ سوال:اركامطلب تويہواكه غيرحرم كالقط تعريف كرنے والے كے علاوہ كے لئے بھى جائز ہے۔

جواب اول:عام طور پرج کے مشاغل ایسے ہوتے ہیں کہ تعریف مشکل ہوجاتی ہے اس لئے خصوصیت سے ذکر کیا کہ دہاں تعریف سے موانع موجود ہیں۔

ا انظر: ٢٨٨٠،٢٣٣٣ اخرجه مسلم في الحج عن زهير وابو داؤ دعن احمدين حنبل والنسائي عن عباس بن وليدوابن ماجه عن دحيم عن الوليد

جواب ثانی:رم میں تعریف انتہائی مشکل ہوتی ہے تو حقیقت میں اس حدیث کے اندراُ مُعانے سے ہی روکنا ہے نہ کہ استثناء۔

فهو بخیر النظرین: مرجع مَن قُتل ہے اور مراداهلُ مَن قُتل ہے۔ صنعت استخدام ہے۔

اذا نزل الشتاء بارض قوم ۞ رَعیناه وان كانوا غضاباً

اِمّاان یعقل و اماان یقاد:مرادیه به کدونوں میں وہ مختار بے چاہے دیت لے چاہے تصاص۔ مسئله احتلافیه:اگر کوئی شخص کسی کوئل کردیتواہل قتیل کواختیار ہے کددیت لیں یا قصاص لیکن یہ اختیار قاتل کو بھی ہے یانہیں؟ تو عندالجمہور قاتل کو بھی اختیار ہے کہ چاہے دیت دے یا چاہے قصاص لینی دونوں میں تسادی ہے ۲۔امام اعظم تساوی کے قائل نہیں ہیں امام اعظم فرماتے ہیں کہ اصل تھم قصاص ہے۔

دليل اول:مديث من ج ((كتاب الله القصاص)) ي

دلیلِ ثانی: قرآن میں ہے ﴿وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيْوةٌ يُأُولِي الْاَلْبَابِ ﴾ ع

دلیل شو افع:اس مدیث میں تقابل سے بہی معلوم ہوتا ہے ا ۔ کہ اگر وارث قصاص معاف کردیں ۲ ۔ یا وارثوں میں سے کوئی ایک معاف کردے سے یا اہل قتیل خاموش رہیں اور ایک زمانہ تک مطالبہ نہ کریں تو قصاص ساقط ہوکردیت کی طرف انقال کرجاتا ہے۔ ۲ ۔ یا دیت یرمصالحت ہوجائے۔

ثمر ٥ اختلاف:دوصورتون من ظاهر موكا

الصورة الاولى: اہل قتل کہیں کہ ہم نے تودیت ہی لینی ہے اور قاتل کہتا ہے کہ میں نے دیت نہیں دین میرے پاس تو پینے ہی نہیں ہیں تواب احناف کے نزدیک تصاص لیا جائے گاجب کہ جمہور ؓ کے نزدیک اس پردیت واجب ہوگ۔ الصورة الثانیة: یا اہل قبیل مطالبہ قصاص کا کرتے ہیں اور یہ کہتا ہے کہ میں تو دیت ہی دوں گا اب بھی عندالاحناف قصاص دینا پڑے گا اور عندالجمور رَّدیت دے گا۔

اکتبو الابی فلان:اوربعض می تصری ہے اکتبو الابی شاہ یہاں سے کتابت کا جواز بھی نکل آیا اوراس سے مطابقت بھی ہوگئ۔

ا بخارى شرىفى ٧٣٧ ج ٢ باره ٢ سورة البقره اية: ٩ ١ ١

اكثر حديثا عنه منى الاماكان من عبدالله بن عمروفانه كان يكتب ولااكتب

زیادہ صدیث کاروایت کرنے والاکوئی نہیں البتہ عبداللہ بن عمرونے بہت ی حدیثیں روایت کی ہیں کیونکہ وہ لکھتے تھے اور میں لکھتانہ تھا

تابعه معمرعن همام عن ابي هريرة.

وہب بن منبہ کے ساتھ اس حدیث کومعمر نے بھی جام سے روایت کیا ہے انھوں نے ابو ہر ریو ہے۔

﴿تحقيق وتشريح

مطابقة الحديث لترجمة الحديث ظاهرة وهوان عبداللبن عمرومن افاضل الصحابة رضى الله الشبعالية وضى الله عنهم كان يكتب مايسمعه من النبيء الله عنهم تكن الكتابة جائزة لماكان يفعل كذلك إلى حدثنا على بن عبدالله:

سوال: یہاں سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ عبداللہ بن عمر وی احادیث زیادہ ہیں اور حصرت ابو هرير وی کم جبکہ معامله آس کے برعس ہے۔

جواب:روایت کے لحاظ سے تو حضرت ابو ہر برہؓ کی احادیث زیادہ ہیں آپ روایت کے لحاظ سے نہیں کہہ رہے بلکہ لکھنے کے اعتبار سے کہدرہے ہیں کیونکہ حضرت ابو ہر برہؓ کے پاس لکھا ہوا مجموعہ کم تھا۔

اسبابِ كثرة رواية ابى هريرة:اس كروسب يس

اول: حضرت عبدالله بن عمرو گو پچھ اسرائيليات بھي ياد تھيں اس ليے عبدالله بن عمروخود روايت كرنے ميں اورلوگ روايت ليے ميں اورلوگ روايت ليے ميں احتياط برتے تھے كہ خلط نه ہوجائيں۔

ثانی : جفرت ابوهریره رضی الله تعالی عنه کواَ حادیث زیاده حفظ تھیں تو جس کوا حادیث یا دہوں وہ جہاں کہیں کھڑا ہوگا سناد ہےگا۔

مسوال:حضرت ابوهريره رضى الله تعالى عنه كوزياده احاديث كيون يا تفيس؟

جو اب:اس کے دوسب ہیں۔(۱) کثرت ملازمت حضرت ابو ہر رو گفر ماتے ہیں کہ مجھے اس لیے زیادہ احادیث یاد ہیں کہ انصار لوگ بھتی ہاڑی کے لیے اور مہا جر تجارت کے لیے چلے جاتے میں آپ کا لیے کے پاس پڑار ہتا۔

(۲) دوسراسب دعااستاد _حضرت ابو ہریرہ فرماتے ہیں کہ میں نے ایک دن عرض کیا کہ مجھے احادیث بھول جاتی ہیں تو آپ الله اور مجھے کہا کہ لپیٹ لومیں تو آپ الله فیصلے کے فرمایا کہ چا کہ لپیٹ لومیں نے لیٹ لومیں نے لپیٹ لومیں نے لپیٹ لومیں نے لپیٹ لومیں نے لپیٹ لومیں نہیں بھولا۔

اعمدة القارى ج اص ١٦٨

الم ا ا) حدثنا یحیی بن سلیمان قال حدثنی ابن و هب قال اخبرنی یونس عن ابن شهاب اسم یکی بن سلیمان نے بیان کیا، کہا بھی کو یونس نے بیان کیا، کہا بھی کا استدبالنبی عالیہ وجعلا عن عبیداللہ بن عبداللہ عن ابن عباس قال لما استدبالنبی عالیہ وجود آخوں نے ابنی عبداللہ بن عبداللہ عن ابن عباس قال عمر قال عمر قال انتونی بکتاب اکتب لکم کتابا لاتضلوا بعدہ قال عمر آلا انتونی بکتاب اکتب لکم کتابا لاتضلوا بعدہ قال عمر آلا ان بیاری کئی بین فربایا کھئی اسمان اوا بین تبارے لیے کتاب کسوادوں جس کے بعدتم گراہ نہو حضرت بھوا ان النبی عالیہ خلیہ الوجع وعندنا کتاب اللہ حسبنا فاختلفوا آخو موا عنی و لاینبغی عندی التنازع فخرج ابن عباس یقول و کثر اللغط قال قوموا عنی و لاینبغی عندی التنازع فخرج ابن عباس یقول او کثر اللغط قال قوموا عنی و لاینبغی عندی التنازع فخرج ابن عباس یقول ان الوزیة کل الوزیة ماحال بین رسول الله عالیہ اللہ عالیہ کتابہ یا مصیبت جس نے تخضرت الله علیہ اللہ عالیہ کسیات والے مصیبت جس نے تخضرت الله عالیہ کے مصیبت والے مصیبت جس نے تخضرت الله عالیہ کہا ہے مصیبت والے مصیبت جس نے تخضرت الله علیہ کے کہا ہے مصیبت والیہ کے مصیبت والے مصیبت جس نے تخضرت الله عالیہ کے موانے دی۔

ایتونی بکتاب:معلوم ہوا کہ صحابہ کرام میں لکھنے کامعمول تھا جھی تو مرض الوفات میں آپ علی نے کاغذ لانے کاغذ لانے کافر مایا۔

حديث قرطاس

صدیثِ قرطاس والا واقعہ وفات شریف سے چارر وزقبل یوم اخمیس کا ہے۔ آپ علی کے کواس وقت بہت تکلیف تھی اورای حالت میں آپ علی نے فرمایا قلم، کاغذ، دوات لا و میں تہمیں لکھوادوں تا کہ تم بہک نہ جا و حضرت عمر نے فرمایا کہ اس وقت حضور علی ہے گئی گئی ہے۔ اس لیے ہمیں چاہیے کہ اس وقت تکلیف نہ دیں (جیسا کہ شفیق استاد حالت مرض میں شاگر دسے کہے کہ میں پڑھا تا ہوں اور شاگر دعوض کرے کہ اس وقت رہنے دیجئیے) سوال: حضرت عمر نے لکھنے سے کیوں منع کیا؟

جو اب اول حضرت عمرٌ نے حضو تعلیق کے لیے تخفیف اور سہولت کا اراداہ فرمایا کہ جب طبیعت بحال ہو جائے گی تو لکھوالیں گے۔

ا. مشكوة ثريف بحوالهسلم ثريف ص ١٥

بحواب ثانی: کیاحفرت عرس و خطاب تھا؟ نہیں بلکہ سارے صحابہ کرام خاطب تھا اور کیاحفرت عرض اتنای رعب تھا کہ کوئی اور صحابی لائی نہ سکا؟ پھر جب حضرت عرش نماز وغیرہ کے لیے جائے تو انکی عدم موجودگی میں کھوالیتے؟ جو اب ثالث: ان کلمات کے بعد آنخضرت علیہ پانچ دن تک زندہ رہ تو پانچ دن تک کی نے کیوں نہ کھوالیا۔ جو اب ثالث: جو آپ علیہ کھوانا چاہتے تھے وہ کوئی استجابی امرتھا، وجو بی نہیں تھااگر وجو بی ہوتا تولازم ترکی کی کی کی کی کی کی کی ترکیل کے بغیر جارہے ہیں (نعوذ باللہ)

جواب سابع: فتح البارى ميں منداحد سے نقل ہے كه حضرت على گوتكم دياتھا اور مناسب بھى يَبى معلوم ہوتا ہے كيونكه بيرابل بيت نبوى سے تھے۔ رافضيوں نے خوب پروپيگنڈہ كيا اور حضرت عراقو ہدف ملامت بنايا يحكم تو حضرت على كوديا تھاوہ كيوں رك گئے؟

جواب ثاهن:اگركوئى دين كى ضرورى چيز كهوانى بوتى توخود صفور عليه الله مركز ندر كتے بلكه مركود اند ديت اور كاغذ منگوا كر ضرور كهوادية مركز ندر كتے بلكه مركود اند ديت اور كاغذ منگوا كر ضرور كهوادية مركز الله كافت الله كافت الله كافت الله كهوا كا الله حسبنا: سوال: حضور عليه كهوانا چائة تصاور جو كهوات وه حديث بوتى حضرت مركز في عرض كيا "كاب الله "آيا ب توبي حديث كا انكار موليا منكرين حديث الله "آيا ب توبي حديث كا انكار موليا منكرين حديث كي ضرورت تبيل؟

جواب:اس سے صدیث کی رونہیں ہوتی کیونکہ حضرت عمر کے اس قول میں کتاب اللہ سے مراد "الله ین الله الله سے مراد "الله ین الثابت بالوحی " ہے چونکہ حضور علی کے اسوال امتحانا تھا تو یہ جواب من کرآپ علی مطمئن ہوگئے تو حدیث کا انکار کسے لازم آبا؟

تابعه معمر : سسيعى وببكامتالع معمر بوبال احيه كهاتفااور يهال نام ليا

فخوج ابن عباس :اس سے یکوئی نہ سمجے کہ ابن عباس خوداس وقت موجود تھاور حضور علیہ کے پاس سے نکل تو فرمایا۔ سے نکلے تو فرمایا بلکہ موضع تحدیث جہاں روایت بیان کررہے تھو ہاں سے نکل کرفر مایا۔

ان الوزیة کل الوزیة: راء ک فتح اورزاء کے سرہ کے ساتھ ہے اوراس کے بعدیاء پھر ہمزہ ہے بمعنیٰ معیت۔ کل الوزیة: بیمصدر کی نیابت کی وجہ سے منصوب ہے۔

> (۸۲) ﴿باب العلم و العظة بالليل ﴾ رات كوتت تعليم اور وعظ

ا انظر : ۲۲ ا ، ۹ و ۳۵۹ ، ۵۸۳۳ ، ۹۲ ۱ ، ۹۲ و ۲۰ م ، اخرجه الترمذي في الفتن عن سويدبن نسر اخرجه مالک عن يحيي بن بن سعيد عيني ج۲ ص۱۸۳

وتحقيق وتشريح

الباب له ترجمتان وهماالعلم والعظة او اليقضة بالليل فمطابقة الحديث للترجمة الاولى في قوله (ماذاانزل الليلة من الفتن وماذافتح من الخزائن) وقوله ((رب كاسية في الدنياعارية في الآخرة) ومطابقته للترجمة الثانية في قوله (ايقظواصواحب الحجر)

ام سلمة:يامهات المؤمنين ميس سي بيل ي

ماذاانول اللية من الفتن بي:حقق فتنه راذبين ب بلكه مرادفتوں كے بارے ميں انزال وحى ہے كه انكا علم اتارا گيا۔

و ما ذا فتح من المنحز ائن:ا مراداس سے رحمت ہے ۲ میاروم وفارس کے خزائن مراد ہیں پہلامعنی ہوتو انزال بالفعل مراد ہوگا۔

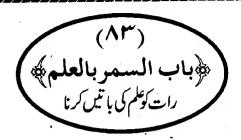
رب كاسية في الدنياعارية في الاخرة:اس كي چنتفيري بير.

التفسير الاول:بهت سارى عورتين اس دنيا مين اعمال كرنے والى ہوگى ليكن آخرت مين ان سے خالى ہوگى التفسير الثانى: بهت سارى عورتين لباس بيننے والى ہونگى ليكن چونكدلباس غير شرى ہوگا اس ليے آخرت مين نگا ہونے كى سزادى جائے گا۔

التفسير الثالث:بهت سارى عورتين دنيامين نعتون والى موگليكن ناشكرى كى وجهسة خرت مين نعتون سے خالى موگل ـ

مطابقت:ترجمة الباب میں دوجز عیں ارپہلا جزء ماذاانول سے ثابت ہوا کوفتوں کاعلم اتارا گیاتو معلوم ہوا کہ دات کو تعلم ہوسکتا ہے اس سے اسکی بڑی دلیل ہے ﴿اناانو لناہ فی لیلة القدر ﴾ ۳ دوسراجز ءالعظة باللیل ہے اور یہ ایقظو اسے ثابت ہے۔ کہ جگانے کا تھم نسیحت کرنے کے لیے ہے کہ تو بہوا ستغفار کرو۔ انول اللیل ہے اور یہ ایقظو اسے ثابت ہے ۔ کہ جگانے کا تھم نسیحت کرنے کے لیے ہے کہ تو بہوا کیونکہ بھی کی معنوی انول اللیلة:اس کی بعض حضرات نے بہتو جیہ کی ہے کہ یہ انوال جسم معانی کے ساتھ ہوا کیونکہ بھی کی معنوی چیز کوشکل میں مثمل کردیا جاتا ہے جیسے آخرت میں ہوگا۔

ا أم سلمة هندوقيل رملة زوج النبي سَنَصَّبنت ابي آمية حذيفه وروى لها عن النبي مَلَيُ لكُ مائة وثمانية وسبعون حديثاهاجرت الى الحبشة والى المدينة تزوجهارسول الله سَنَصُّ في شوال سنة اربع وتوفيت سنة تسع وخمسين وقيل في خلافة يزيدبن معاوية وكان لها حين توفيت اربع وثمانون سنة فصلى عليه ابوهريرةٌ في الاصح واتفقواانهادفنت بالبقيع :عمدةالقارى ج٢ص١٨٢ ، ١٨٣ ع آ بِهُ اللَّهِ يُمَكُّوفُ بُواكِماً كُي فَصُرَّآ فَ والسَّمِ عِسْلَ عَلَيْهِ الْعَالِمَةُ وَلَيْهِ عَلَيْهِ الْعَلَيْمَ عَلَيْهِ الْعَلَيْمَ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ الْعَلَيْمَ عَلَيْهِ الْعَلَيْمِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْتُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ مَنْ عَلَيْ عَلَيْهُ الْعَلَيْدِ عَلَيْهُ عَلَيْ



(۱۱۲) حدثناسعید بن عفیرقال حدثنی اللیث قال حدثنی عبدالرحمن بن خالد بن مسافر عن ابن شهاب عن سالم وابی بکربن سلیمان بن ابی حثمة ان عبدالله بن عمرقال ابن شهاب من سالم بن عبدالله اورابو بکربن سلیمان بن ابو همه سے که عبدالله بن عمر قال مسلی ابن شهاب سے انھوں نے سالم بن عبدالله اورابو بکربن سلیمان بن ابو همه سے که عبدالله بن عمر شان بیان کیا صلی لنا النبی علایت العشآء فی اخو حیاته فلماسلم قام فقال که آخضرت الله فی این آخری عمر میں بم کوعشاء کی نماز پڑھائی جب سلام پھیراتو کھڑے ہوئے اور فرمایا ادا یت کم لیلتکم هذه فان رأس مائة سنة منها الایبقی ممن هو علی ظهر الارض احد. کیاتم نے اس رات کود یکھان میں سے کوئنہیں دے گا

انظر ١٠٥٠ م ١٠ اخرجه مسلم في الفضائل عن عبدالله بن عبدالرحمن

 فقمت عن یسارہ فجعلنی عن یمینه فصلی خمس رکعات لویں بھی رجاگادر) آپ آلیہ کی بائیں طرف کو اہوا۔ آپ آلیہ نے بھی کو اپنی دائی طرف کر لیا اور پائی کو سیس پر میں اور مسلی رکعتین ٹم ملی رکعتین ٹم نام حتی سمعت غطیطه او خطیطه ثم خرج الی الصلوة یا پھردورکعتین (فری نیس) پڑھیں پھر آپ سوگئے یہاں تک کہ میں نے آپ کے فرائے کی آواز تی (لیمنی ایس عباس نے غطیطة فرمایا یا خطیطة فرمایا) پھر (منح کی) نماز کے لئے برآمہ ہوئے۔

وتحقيق وتشريح

سمر چاند کی چاندنی کو کہتے ہیں پھر چونکہ چاندنی رات میں بیٹھ کرلوگ کپ شپ، قصہ گوئی کرتے تھے تو رات کی قصہ گوئی کو ہے جات کی قصہ گوئی کو ہے ہیں ہے کہ روالوں کے ساتھ بات چیت کو بھی سمر کہہ دیتے ہیں جیسے کسی شاعر نے کہا ہے۔ چیت کو بھی سمر کہہ دیتے ہیں جیسے کسی شاعر نے کہا ہے۔ کان لم یکن بین الحجون الی الصفا کہا انیش ولم یسمر بمکة سامر'

توجمة الباب كى غوض: مديث مين عشاء كے بعد كپشپ منع كيا بوامام بخارى مديث كي خصيص كررے بين كيلم كى باتين كرنا اور پڑھنا پڑھانا اور مطالعه اس مين داخل نہيں۔ ترجمة الباب سے مناسبت واضح ہے۔

فان رأس مائة سنة منها لايبقي ممن هوعلى ظهر الارض احد:

اعتواض:اس حدیث ہے معلوم ہوتا ہے، آج کی رات سے سوسال تک اور اندر اندرسب لوگ جواس وقت موجود ہیں فنا ہوجا کیس گے اور یہ واقعہ وفات سے ایک ماہ قبل کا ہے لہذا ایک سودس ہجری تک سب کو فتم ہوجا نا چاہیے حالا نکد قرآن وحدیث سے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا اب تک زندہ ہوتا ثابت ہے اور بعض حیات خضر کے قائل ہیں اور بعض حضرات سے ریجی منقول ہے کہ دجال بھی زندہ ہے، تو پھراس حدیث کا صحیح مطلب اور مصداق کیا ہوگا؟

جواب اول:اصولى جواب يه المحديث اكثر افراد يمشمل الم

جواب ثانى:اگراس مديث كوعموم برخمول كرليس توجواب بيه كدوس دلائل كى بناء پرخصيص موعتى هـ -جواب ثالث:مديث من ظهر الارض كالفاظ بين اور على ظهر الارض إن تينول مين سے كوئى نہيں ہے، حضرت عيسى عليه السلام تو آسانوں پر بين ، خضراور د جال سمندروں مين توجواب بيه هـ كدمرادوه مخلوقات بين جومحجوب عن الابصاد نه بول -

ل انظر: ۱۳۸۱، ۱۸۳۳ ، ۱۹۷۳ ، ۱۹۹۷ ، ۲۹۷ ، ۲۲۷ ، ۲۲۸ ، ۵۵۹ ، ۱۱۹۸ ، ۲۵۷۹ ، ۵۵۰ ، ۲۵۷۱ ، ۳۵۷۳ ، ۵۹۱۹ . ۱۲۱۵ ، ۲۳۲۷ ، ۲۳۲۲ خرجه ابوداؤدفی الصلوة عن ابن المثنی والنسائی فیه عن عمروبن یزید

فائدہ اولی:جنوں کی چونکہ لمبی عمر ہوتی ہے اگر کوئی جن صحابیت کا دعوی کرے تو جائز اور ممکن ہے لیکن انسانوں کے لیے جائز نہیں ہے۔ ہندوستان میں ایک علاقہ ہے باٹھندہ وہاں ایک رتن بابا گزرے ہیں جس نے صحابیت کا دعلی کیا اس حدیث کی وجہ ہے اسکی تر دیدی گئی مشکو قشریف کے حاشیہ میں بھی تر دید ہے۔ علامہ انورشاہ صاحب نے بھی انکار فرمایا۔

واقعه:.....

شاہ اہل اللّٰدُ گامسجد میں سانب مارنا بنو آ کے بادشاہ کے سامنے حاضری برجن صحابی کی زیارت اور ساع حدیث تذكرة الرشيد ميں لكھا ہے كہ شاہ اہل الله مسجد ميں بيٹھے قرآن مجيدكي تلاوت كررہے تھا ما كا ايك جھوٹا ساسانی نمودار ہواشاہ صاحب نے اسے مارڈ الاءدوآ دی آئے اور انھوں نے کہا آپ کوبادشاہ بلار ہا ہے۔شاہ صاحب بيستحجه كدانسانون كابادشاه بلار باهوگا كيونكه اس ونت هندوستان برمغلون كى بادشاهي تقى حضرت شاه صاحب ان دونوں کے ساتھ چل پڑے اور وہ انھیں جنگل میں لے گئے اور شاہ صاحب بھی چلتے رہے اور یہی سمجھا کہ انسانوں کا بادشاہ شکار کے لیے جنگل میں نکلا ہے اور جنگل ہی میں انہیں بلایا ہے وہ ان دونوں کے ساتھ چلتے رہے یہاں تک کہ انھوں نے زمین پرایک دروازہ دیکھائس میں داخل ہو گئے ،تو کیاد کھتے ہیں جنوں کا بادشاہ عدالت لگائے فیصلے نمٹار ہا ہے شاہ صاحب نے اس پرسلام کہااور مجلس کے ایک کنارے میں بیٹھ گئے جب بادشاہ فیصلوں سے فارغ ہوئے توشاہ جی کوطلب کیا اور مدعی یہ کہتے ہوئے نمودارہوا کہ ان هذاقتل ابنی واطلبو القودمنه شاہ الل الله ﷺ نے فر مایانیں نے کسی کول نہیں کیا۔ پھریۃ چلا کہ آل ولد سے مدعی کی مرادیہ ہے کہ انھوں نے سانب کی صورت میں قتل کیا ہے۔ شاہ صاحب نے اسکیل کا قرار کیا اور قریب تھا کہ انھیں بادشاہ کے علم پرلل کرویا جا تالیکن وہاں ایک جن صحابی ظاہر ہوئے اور بیصدیث پڑھی ((من قتل فی غیرزید فدمد هدر))بادشاه نے اسکاخون معاف کردیاجب اس نے نبی یا کے تلکیت کی حدیث سی۔اورشاہ صاحب کو ہیں واپس پہنچا گئے جہاں سے لے گئے تھے۔ حکیم الامت حضرت تھانو گُ نے گنگوہی سے اس مدیث کی اجازت طلب کی ہے اور انھوں نے انہیں اسکی اجازت دی ہے لے فائده ثانية :اس حديث مين مقصود قيامت كي قسمين بيان كرنا ب الساعة صغرى اوروه من مات فقد قامت قیامته ۲ قیامت وسطی که ایک قرن ختم ہوجائے جیسے پاکتان بننے کے وقت جوموجود تھے وہ سب ختم ہوجا ئیں تو ایک قرن ختم ہو گیا کہتے ہیں کہ ابوالطفیل صحابی مکہ میں اور حضرت جابرٌ مدینہ میں صحابہ کرام میں ہےسب سے آخریں فوت ہوئے سے تیسری قیامت کمرای ہے۔

إ الفضل أميين في المسلسل من حديث النبي الإمن الله ص ١٥١ تذكرة الرشيدج اص ١٠١، تذكرة الرشيد ص ١٠١

غطيط او خطيط: غطيط سخت خرانااور خطيط مِلكا خرانا پيدماغ كي قوت كي نثاني موتى ہے۔

مناسبت:ترجمة الباب يمناسبت مشكل موكن اس كوثابت كرنے ميں متعددا قوال ميں۔

القول الأول: مصور المنطقة فرمايا ((نام الغليم)) اس مناسبت بـ

المقول الثانى:حضور النينة نے جوبائيں سے دائيں طرف كيااس ميں حكما كلام ہے اى قف على اليمين. اعتراض :مرتو كلام كوچا ہتا ہے كہ كى كلام ہواور كہلى تقرير ميں تو مخضر ساكلام ہے اور دوسر بے قول پر اعتراض ہے كہ مركا تقاضا كلام ہے نہ كفتل؟

جواب: بعض نے بواب دیا کہ سم کہی کلام کے ساتھ فاص نہیں بلکہ جو بھی کلام ہویافعل ہو جو کہ رات کو کیا جائے اسکوسر کہتے ہیں جیسے رات کو جو چیز دیکھی جائے اسکور و کیا کہ دیتے ہیں ایسے ہی سمر میں ہوائیکن یہ سب رجما بالغیب ہیں۔ جو اب ثالث: جسمح قین میں سے ابن جر قرماتے ہیں کہ بھی امام صاحب شخید اذبان کرتے ہیں کہ طالب علم کہاں تک تنبع کرتا ہے ابن جر نے فرمایا میری سمجھ میں صدیث کو باب سے یہ مناسبت ہے کہ امام بخاری یہی صدیث کتاب النفیر کرتا ہے ابن جر نے فرمایا میری سمجھ میں صدیث کو باب سے یہ مناسبت ہے کہ امام بخاری اپنی زوجہ کے ساتھ کھی دریا تیں کیس ((فہ رقد)) پھرسو گئے اب ترجمہ فکل آیاتو گویا امام بخاری اشارہ کررہے ہیں کہ اسے تلاش کر و کہیں نہیں ضرور ملے گا ابن جر نے تو تنبع کر کے نکال لیاور نہ بعض نے تو کہ دیا تھا کہ و کی مناسبت نہیں ایک بالنفیر میں ہے قام فصلی احد عشو رکعة کہ موکر الحق کے بعد آ ہے گئے ہے گیارہ رکعتیں پڑھیس اور یہاں اختصار سے کام لیا ہے۔ فصلی احد عشو رکعة کہ موکر الحق کے بعد آ ہے گئے تھیں۔ و گیارہ رکعتیں پڑھیس اور یہاں اختصار سے کام لیا ہے۔ فصلی احد عشو رکعة کہ کہ وکر الحق کے بعد آ ہے گئے تھیں گرھیس اور یہاں اختصار سے کام لیا ہے۔ فیصلی احد عشو رکعة کہ کے اور کعتیں کون می پڑھی تھیں؟

جواب: فرضوں کے بعداورور وں سے پہلے کی چار کعتیں مرادیں۔

(۸۳) ﴿باب حفظ العلم﴾ بابعلم كويا دركهنا

(۱۱۸) حدثناعبدالعزیزبن عبدالله قال حدثنی مالک عن ابن شهاب عن بم سے بیان کیا عبدالله نام کی این شهاب عن بم سے بیان کیا عبدالله نے کہا مجھ سے (ام) مالک نے بیان کیا انھوں نے ابن شہاب سے انھوں نے الاعرج عن ابعی هریرة قال ان الناس یقولون اکثر ابو هریرة ولو لا اعرج سے انھوں نے ابو ہریرہ شے کہالوگ کہتے ہیں کہ ابو ہریرہ نے بہت حدیثیں بیان کیں اور بات یہ ہے کہ اگر الله

ايتان في كتاب الله ماحدثت حديثا ثم يتلوإنَّ الَّذِيْنَ يَكُتُمُوْنَ مَا کی کتاب میں بیدوآ بیتی ندموتیں تو میں کوئی حدیث بیان ندکرتا پھر (مرہ ہرہ) بیآ بت پڑھتے جولوگ جھیاتے ہیں ان أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدِي الى قوله اَلرَّحِيم ان اخواننا من المهاجر ين کھلی ہوئی نشانیوں اور ہدایت کی باتو رکو جوہم نے اتاریں اخرآیت (بینی اناالمتواب) الموحیم تک ہمارے بھائی مہاجرین تو كان يشغلهم الصفق بالاسواق وان اخواننا من الانصار كان يشغلهم العمل في اموالهم بازاروں میں خرید وفروخت میں تھنے رہتے اور ہمارے انصاری بھائی اپن کھیتی باڑی کے کام میں لگے رہتے مَدالله عَلْشِهِ **بشبع** الله أباهريرة كان يلزم رسول بطنه و ان اورابو ہریرہ (ندکوئی پیشہ کرتا تھانہ سوداگری)وہ بیٹ مجراؤ کھانے کی مقدار کے لئے آبخضرت علیہ کے یاس جمار ہتا . مالايحفظون لايحضرون ويحفظ اورایسے موقعوں پرحاضر رہتا جہاں یہ لوگ حاضر نہ رہتے اوروہ باتیں یاد رکھتاجو وہ لوگ یاد نہ رکھتے۔

(۱۱۹) حدثنا ابو مصعب احمد بن ابی بکرقال ثنا محمد بن ابراهیم بن دینار عن امراهیم بن دینار عن امراهیم بن دینار نے بیان کیاانھوں نے ابن ابی ذئب عن سعیدالمقبری عن ابی هریرۃ قال قلت یارسول الله انی ابن ابی ذئب عن سعیدالمقبری عن ابی هریرۃ قال قلت یارسول الله انی (محر)ابن ابی ذئب سانھوں نے سعید مقبری سانھوں نے ابو ہریۃ سے کہا میں نے عرض کیایارسول الله میں آپ سے بہت اسمع منک حدیثا کثیرا انساہ قال ابسط ردآء ک فبسطته فغوف باتیں سنتا ہوں آپ نے فرمایا پی چاور کچھا میں نے کچھائی آپ نے اپنو دونوں ہاتھ سے ایک بیدیه شم قال ضم فضمته فمانسیت شیئا بعد. اپر نُهُو کے لیک ایس نے لیک لیا (یا اپنے سے میں کوئی چیز نہ بھولا۔ سے میں کوئی چیز نہ بھولا۔ سے میں کوئی چیز نہ بھولا۔

انطر: ۹ ا ، ۲۰۳۷ ، ۲۳۵۰ ، ۳۹۳۸ ، ۳۹۳۸ اخرجه مسلم في الفضائل عن قتيبة والنسائي في العلم عن محمدبن منصور وابن ماجة في السنةعن ابي مروان العثماني

| بهذا | فدیک | ابی | ابن | حدثنا | ذرقال | بن من | ناابراهيم | (۱۲۰)حدا |
|----------|-------------|-----------|--------|-----------|-------------|--------------|---------------|------------------|
| یہ ہے کہ | ں روایت میں | یان کی اس | مديث ب | یک نے یمی | ءابن الي فد | کیا کہاہم ۔۔ | ی منذرنے بیان | ہم سے ابراہیم بر |
| فيه. | | | بيده | | * | فغرف | | وقال |
| ڈ الدیا۔ | میں | اش | 5 | | چلو | سے ۔ | نے ہاتھ | عَنِيْتُ آ |

| ذئب عن | ابن ابی | اخى عن | حدثني | لعيل قال | مدثنا اس | -(141) |
|--|------------------------------------|--------------------|-------------------|------------------------|----------------|--------------|
| ن ابی ذئب سے | یان کیاانھوں نے ابر | بھائی (عبدالحیدے): | تھ سے میر ب | نے بیأن کیا کہامج | ل بن ابواولیس | ہم سے اساعی |
| الله الميالية الميالية الميالية | رسول الله عَلَا | فظت من | ةً قال ح | ابی هریراً | مقبری عن | سعيد ال |
| دو تھلے سیکھے بعنی | الله سے علم کے الفیاد سے علم کے | نے (آنخضرت | والمست كبامين | تھوں نے ابوہریر | عید مقبری سے ا | انھوں نے س |
| البلعوم. | قطع هذا | فلوبثثته | الاخر | ثثته واما | ندهما ف | فاما اح |
| كاث دُ الأجائ | بقيلا دون تومير ابلعوم | سرے کوا گرمیں ؟ |) پھيلا ديااور دو | و کو میں نے (اوروں میں | ماصل کئے آیک | دوطرح کے علم |
| الطعام. | مجرى | | البلعوم | دالله | أبوعب | قال |
| کھانااتر تاہے۔ | <u> </u> | <u> ج</u> | (زفرا)وه | كهابلعوم (| فاریؓ نے | امام ج |

وتحقيق وتشريح

توجمة الباب سے علم کو محفوظ رکھنے کاطریقہ بیان کیا تواس باب میں دوبا تیں امام بخاری کامقصود ہوئیں اے علم کویاد
اوردولیۃ الباب سے علم کو محفوظ رکھنے کاطریقہ بیان کیا اوردوطریقے بیان کئے۔ا۔کٹرت ملازمت ۲۔دعاءِ استاد
کرناچاہیے ۲۔حفاظت اوریاد کرنے کاطریقہ بیان کیا اوردوطریقے بیان کئے۔ا۔کٹرت ملازمت ۲۔دعاءِ استاد
صرف محنت پرجروسہ نہ ہوناچا ہے حضرت الو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ کی کل مرویات پانچ ہزارتین سوچو ہتر ہیں (۵۳۷۳)
بشوبیع بطنه: سدای قانعا بشبع بطنه بھی پیٹ جراؤ کھانے پر قناعت کر لیتا تھا،غلط ترجمہ نہ کرنا کہ پیٹ بحرکر
کھانے کے لئے پڑار ہتا تھا ۲۔ یہ تواس صورت میں ہے جبکہ کلام کو قیقی معنی پر کھیں اگر بجازی معنی مرادلیں تو مطلب
یہ ہوگا کہ علم سے پیٹ بھرنے کے لئے آپ کے پاس دہتا تھا۔

فمانسیت بعد:اس کے بعد میں کوئی چیز نہ بھولا۔ اگر کہیں آجائے کہ ابو ہریرہ کہتے ہیں کہ میں بھول گیا

تو دوجواب ہیں۔

او ل: ایک آ دھ بات کا بھول جاناا سکے منافی نہیں آخرانسان ہیں۔

ثانمی: یا ابو ہر رہؓ کی بھول کو قل کرنے والا بھول گیا۔

قطع هذا البلعوم: ووطرح كے علم حاصل كيے تھے ايك كويس نے لوگوں ميں كھيلاديا اور دوسرے كواگر كھيلا وكا وروسرے كواگر كھيلا وكار وسرے الله على ال

سوال: كونساعلم مرادي؟

جواب(ا):..... صوفی کہتے ہیں علم تصوف مراد ہے۔

جواب (٢): بعض نے کہااسرار ورموزِ شرائع مرادیں۔

جو اب (۲) : صحیح یہ ہے کہ فتنوں کاعلم تھا کیونکہ دعاء مانگا کرتے تھے اعو ذبک من رأس سنین سنة اس سے بزید بن معاویہ کی خلافت کی طرف اشارہ تھا۔معلوم ہوا کہ ہر بات بتانا ضروری نہیں ہوتا نیزوہ باتیں یاعلم جس سے فتنہ کا خطر ہوتو چھپانا چاہئے لہذا صوفیوں کوچاہئے کہ کوئی ایسی بات جس سے لوگوں کے اعتقاد بگڑنے کا خطرہ ہوتو نہیں بتانا چاہئے گریہ نہیں چانا کہ صوفی ایسی باتیں کیوں بیان کرتے ہیں؟

مدینه منوره میں جابل صوفی کی ملاقات : میں ایک مرتبہ فج پرتھامیرے ساتھ ایک آدی چلتے چلتے جب روضۂ اقدس کے ساتھ ایک آدی چلتے جب روضۂ اقدس کے سامنے آیا تو اسکی طرف منہ کر کے کھڑا ہوگیا اور کہنے لگا کہ حضور علی نے ابھی فرمایا ہے کہ فلاں مقطوع النسبت کی بزرگی کو مانتے ہیں۔ مقطوع النسبت کی بزرگی کو مانتے ہیں۔

(۸۵) باب الانصات للعلماء پ عالموں کی بات سننے کے لئے خاموش کرانا

(۱۲۲) حدثنا حجاج قال ثنا شعبة قال اخبرنی علی بن مدرک عن ابی زرعة مم سے تجائ نیان کیا کہا ہم سے شعبہ نے بیان کیا کہا خبردی مجھ کوئلی بن مدرک نے انھوں نے ابوزرعہ سے انھوں عن جریو ان النبی علی اللہ قلل عن حجة الوداع استنصت الناس فقال نے جریو ان النبی علی اللہ فی حجة الوداع میں ان سے فرمایا لوگوں کو خاموش کراور دریان میں رویا تو آپ نے فرمایا

لاترجعوا بعدی کفاراًیضرب بعضکم رقاب بعض ا (در) میرے بعد کافر بن کر نہ لوٹو کہ تم میں سے بعض بعض کی گردنیں مارتا پھرے

وتحقيق وتشريح

ربط: پہلے حفظ علم کا بیان تھا اب اسکے اسباب ذکر کررہے ہیں۔

ترجمة الباب كي غرض:ان باب كي تين فرضين بيان كي كي بير-

غر ضِ اول:طلبه کودورانِ سبق آپس میں باتیں نہیں کرنی جا نہیں۔

غوض ثانی: دوسراید کرهاظت علم کے لئے ادب سے سنا ضروری ہے۔

غوض بالت: سسایک مقصدیہ ہے کہ حدیث ((لاتقطع علی الناس کلامهم)) کے اندرآتا ہے کہ کی کے کار میں دخل نہیں دینا چاہئے اس حدیث کی تخصیص مقصود ہے کہ کوئی علم کی بات کرنا چاہیں وعظ کرنا چاہیں تو خاموش کرانا چائز ہے۔ کرانا چائز ہے۔

واقعه:حضرت مولا نالال حسین اخر کاواقعہ ہے کہ ایک مرتبہ تم نبوت پر برطانیہ میں قادیا نیوں کی مسجد میں تقریر کرنے گئے تھے پہلے قادیا نیوں نے تقریر کی انکاخیال تھا کہ جب انکی باری آئے گی توجب چاہیں گے تقریر بند کرا دیں گے چنا نچہ جب انکی باری آئے گی توجب انکی باری آئے گی توجب انکی باری آئی تو تھوڑی دیر تقریر کی جب ان قادیا نیوں کو خطرہ ہوا کہ لوگ اس مسئلے کو تجھ لیس گنو متاثر ہو نگے تو کہا کہ تقریر بند کردیں اور ہماری مسجد سے نکل جائیں مولانا نے خاصرین سے خاطب ہو کرفر مایا کہ تم نے تقریر سوچا کہ دومنٹ میں انہوں نے کیا کہ لینا ہے اجازت دیدی مولانا نے حاضرین سے خاطب ہو کرفر مایا کہ تم نے تقریر کے کہ تھو تھا کہ بین انہوں کے کہ تقریر کے دومری طرف ہو جائیں۔ تقریر کے کہ تاکس کو برقر ادر کھنے والے اور سننے کے شاکھیں نیاہ تھے تو مولانا نے فرمایا اب دیکھو بھائی بند کرانے والے کم ہیں ان کو چاہئے مسجد سے نکل جائیں کے ونکہ وہ تھو مولانا نے اپنی تقریر کمل کی۔

استنصت الناس:آپی این نے جریر بن عبداللہ بکل سے جمۃ الوداع کے موقع پر فر مایا تھا کہ لوگوں کو چپ کراؤ۔ای سے ترجمۃ الباب کی مطابقت ٹابت ہوئی۔

قال له فى حجة الوداع:ا شكال: روايت جرير على الله كالمير جرير كلطرف لوتى بجريع ضويلية كال له فى حجة الوداع: كالمناس المان بوئة وال كوكيس كهدد يا استنصت الناس .

[£] انظر: ٣٣٠٥ ، ٣٨٦٩ ، ٥٨٠ اخرجه مسلم في الايمان عن ابي بكربن ابي شبية والنسائي في العلم عن محمدين عثمان وابن ماجة في الفتن عن بندار

جوابِ اول: شراح يهال جران موكة اكثر شراح نے كها كدروايت ميں حذف موكياس لئے كه ميركام رجع جريبيس بے جسكى طرف ميرلوثتي بوه حذف موكيا ہے۔

جوابِ ثانی: حافظ ائن جُرِّ کہتے ہیں کہ چالیس دن قبل مسلمان ہوناغلط ہے بیرمضان میں مسلمان ہوئے اور جج میں شرکت ثابت ہے ایکے متعلق علامہ عنی فرماتے ہیں کہ بہت خوبصورت تصطویل القامت تصایک ذراع کا جوتا تھا اونٹ کی کو ہان تک اٹکا قد تھا لے

﴿باب مایستحب للعالم اذاسئل ای الله تعالی الله تعالم سے یہ پوچھا جائے کہ سب لوگوں میں بڑا عالم کون ہے واس کویوں کہنا چاہئے کہ اللہ کومعلوم ہے

(۱۲۳) حدثنا عبدالله بن محمد المسندى قال ثنا سفين قال ثنا عمروقال بم عبدالله بن محمد المسندى قال ثنا عمروقال بم عبدالله بن محمد البن عباس ان نوفاالبكالى يزعم ان موسى اخبرنى سعيدبن جبيرقال قلت لابن عباس ان نوفاالبكالى يزعم ان موسى كوسعيد بن جبيري نه نهرى كهايل نه ابن عباس عه كها نوفل بكالى كبتاب كه وه موك (ميرم عالم عنه عنه) ليس موسى بنى اسرائيل انماهو موسى اخرفقال كذب عدوالله حدثنا ابى بن بن ابرائيل كموك نبيل بيل انماهو موسى اخرفقال كذب عدوالله حدثنا ابى بن بن ابرائيل كموك نبيل بيل انماهو موسى النبى خطيبا فى بنى اسرائيل كعب عن النبى علاق قام موسى النبى خطيبا فى بنى اسرائيل كعب عن النبى عليه قال قام موسى النبى خطيبا فى بنى اسرائيل لاحب الله عزوجل عليه فسئل اى الناس اعلم فقال انااعلم فعتب الله عزوجل عليه لوگول فران عن يون بيل الله عزوجل عليه المول في ان عبدا من عبادى بمجمع البحرين الخليم يود العلم اليه فاوحى الله اليه ان عبدا من عبادى بمجمع البحرين كوكرافوي في بني الله اليه ان عبدا من عبادى بمجمع البحرين كوكرافوي في بني بالله الميه المي المنه المي المنه المي المنه المي المنه المي الله المي الله المي المنه ا

الم والقارئ س ١٨ أن

هو اعلم منك قال يارب وكيف به؟فقيل له احمل حوتا في مكتل فاذا فقدته وہ تچھ سے زیادہ علم رکھتا ہے موسیٰ نے عرض کمیا پروردگار میں اس تک کیے پہنچوں علم ہوا ایک چھلی زنیل میں رکھ لے جہاں تو اس کو گم یائے فهو ثم فانطلق وانطلق معه بفتاه يوشع بن نون وحملا حوتا في مكتل وہیں وہ ملے گا پھرموی علیہالسلام چلے اوران کے ساتھ انکے خادم پوشع بن نون بھی تتصاور دونوں نے ایک مجھلی زنبیل میں رکھ لی حتى كانا عند الصخرة وضعا رؤسهما فناما فانسل الحوت من المكتل جب دونوں صحرہ کے پاس پنچے تواپے سر(زمین پر)رکھ کرسوگئے مچھلی زنبیل ہے نکل بھاگ فَاتَّخَذَ سَبِيلَةً فِي الْبَحُر سَرَباً وكان لموسى وفتاه عجبافانطلقا اور دریامیں اس نے راستہ لیااور موی اوران کے خادم کو تعجب ہوا وہ دونوں چلتے رہے بقيةليلتهماويومهما فلما اصبح قال موسى لفتاه اتِنَا غَدَاءَ نَا لَقَدُ لَقِينًا مِنُ سَفَرِنَا هَذَا نَصَباً ولم يجد موسلى مسامن النصب حتى جاوز االمكان ہم تواس سفر سے تھک گئے اورموی کوتھان نے چھوڑ ابھی نہیں مگر جب اس جگہ سے آ گے بڑھ گئے جہاں تک ان کو الذي امربه فقال له فتاه أراكيت إذاوينا إلى الصَّخُوةِ فَانِّي نَسِيتُ الْحُونَ اللَّهِ اللَّهِ الْحُونَ جانے کا حکم ہوا تھا اس وقت ان کے خادم نے کہاتم نے نہیں دیکھا جب ہم صحرہ کے پاس پہنچے تھے تو (ٹھل مرا کی) میں مچھلی کو بھول گیا قَالَ مُوسَى ذَٰلِكَ مَاكُنَّا نَبُغ فَارْتَدَّا عَلَى اثَارِهِمَا قَصَصاً فلما موی نے کہا ہم تواس کی تلاش میں تھے آخروہ دونوں کھوج لگاتے ہوئے اینے یاؤں کے نشانوں برلو نے جب انتهياالي الصخرة اذارجل مسجى بثوب اوقال تسَجّى بثوبه فسلم موسى جب ال صحره کے پاس پہنچاجیا تک دیکھاتو ایک شخص کپڑ البیٹے ہوئے سونے والا ہے یااپنے کپڑے میں لپٹا ہوا ہے موی نے ااس کوسلام کیا فقال الخضر وأنّى بارضك السلام فقال انا موسىٰ فقال موسىٰ بني اسرائيل؟ کہا خصر نے تیرے ملک میں سلام کہاں سے آیا؟موی نے کہامیں موی ہوں،خصرنے کہائی اسرائیل کے موی؟ **فِقَالَ نِعِم قَالَ هَلُ اَتَّبِعُكَ عَلَى اَنُ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمُتِ رُشُداً** انھوں نے کہاہاں (پھر) کہامویٰ نے کیا میں تمہارے ساتھ رہ سکتا ہوں اس شرط پر کہتم کو جوعلم کی باتیں شکھائی گئی ہیں وہ مجھ کوسکھلاؤ

قَالَ إِنَّكَ لَنُ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبُراً يا موسى انى على علم من علم الله علمنيه لا تعلمه انت خفرنے کہاتم سے میرے ساتھ صبرنہ ہوسکے گا اے موی کہ اللہ نے ایک (حم)علم مجھ کودیا ہے جوتم کونہیں ہے وانت على علم علمكم الله الااعلمه قَالَ سَتَجدُنِي إِنْ شَاءَ الله صَابرًا اورتم کوایک (قتم کا)علم دیاہے جو جھ کونہیں ہے،موٹل نے کہاا گرخداجا ہے توضرور جھ کومبرکرنے والایاؤگ وَّالاا عُصِي لَكَ امرًا فانطلقا يمشيان على ساحل البحر ليس لهما سفينة اور میں کسی کام میں تمہاری نافر مانی نہیں کرنے کاء آخر دونوں سمندر کے کنارے کنارے روانہ ہوئے ان کے پاس کشتی نتھی فمرت بهما سفينة فكلموهم ان يحملوهما فعرف الخضر فحملوهما بغير نول فجاء عصفورفوقع على حرف السفينة فنقرنقرة اونقرتين في البحر اور موتی اور خصر کو بے کرایہ سوار کرلیا آتنے میں ایک چڑیا آئی اور شتی کے کنارے بیٹھ کراس نے ایک یا دو چونچیں سمندر میں ماریں فقال الحضر ياموسي مانقص علمي وعلمك من علم الله تعالى الا خضر نے کہا اے مویٰ میرے اور تمہارے علم دونوں نے اللہ کے علم میں سے اتنا لیاہے كنقرةهذه العصفور في البحر فعمدالخضر الى لوح من الواح السفينة فنزعه جیسے اس چڑیا کی چونج نے سمندر میں ہے،اسکے بعد خفر کشتی کے تختوں میں سے ایک تختہ کی طرف چلے اوراسکوا کھیڑڈ الا فقال موسى قوم حملونابغيرنول عمدت الى سفينتهم فخرقتها حضرت موی کہنے لگے ان لوگوں نے تو ہم کو بے کرایہ سوار کیا اور تم نے بیکام کیاان کی کشتی میں سوراخ کردیا لَتَغُرِق اهلها قَالَ اَلَمُ اَقُلُ اِنَّكَ لَنُ تَسْتَطِيُعَ مَعِيَ صَبُراً کشتی والوں کوڈبانا چاہاخفر نے کہامیں نہیں کہہ چکاتھا کہ تم سے میرے ساتھ صبرنہیں ہونے کا قَالَ لَاتُؤَاخِذُنِي بِمَانَسِيتُ وَلَاتُرُهِقُنِي مِنُ اَمُرى عُسُراًقال فكانت الاولى من مویٰ نے کہا بھول چوک پرمیری گرفت نہ کرواورمیرے کام کومشکل میں نہ پھنساؤ آنخضرت علیہ نے فرمایا کہ یہ پہلااعتراض موسى نسيانا فانطلقا فاذا غلام يلعب مع الغلمان فاخذالخضربراسه من اعلاه تو مؤیٰ کے بھولے ہی سے تھا پھر دونوں چلے اچا تک ایک لڑ کالڑکوں کے ساتھ سکھیل رہاتھا خصرنے اوپر سے اسکاسرتھاما

فاقتلع راسه بيده فقال موسى أَقَتَلُتَ نَفُسًا زَكِيَّةً بغَيْر نَفُس قَالَ ٱلَّمُ أَقُلُ لَّكَ اوراپنے ہاتھ سے اسکاسرا کھیڑلیا مویٰ نے کہا تو نے ایک معصوم جان کا ناحق خون کیا خصر نے کہا میں نےتم سے نہیں کہا تھا إِنَّكَ لَنُ تَسْتَطِينَعَ مَعِيَ صَبُرًا، قَالَ ابن عيينة وهذا اوكد فَانُطَلَقَا كدتم سے ميرے ساتھ صبرنہيں ہونے كا،ابن عيينہ نے كہايد پہلے كلام سے زيادہ سخت ہے خير پھردونوں چلے، حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهُلَ قُرُيَةٍ ﴿ اسْتَطْعَمَا أَهُلَهَا فَابَوُا أَنُ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا یہاں تک کہ ایک گاؤں والوں کے پاس پہنچے ان سے کھانا ہا نگاانھوں نے کھانا کھلانے سے انکار کیا پھر دونوں نے دیکھا فِيهًا جدارًا يُريدُ أَنُ يَّنْقَضَّ قال الخضر بيده فاقامه اس گاؤں میں ایک دیوارہے جوگرنا جا ہت ہے حضرت خضرنے اپنے ہاتھ سے اشارہ کیااوردیوارکوسیدھا کردیا فقال له موسى لَوُشِئْتَ لَاتَّخَذُتَ عَلَيْهِ ٱجُرًا قَالَ هَذَا فِرَاقُ حفرت موی نے ان (خفر) سے کہاتم چاہتے تو اس کی مزدوری (س ہوں اوں سے) لے سکتے تھے حفزت خفر نے کہا یہ جدائی ہے بَيُنِيُ وَبَيُنِكَ قال النبيءَلَلِيُهِيرحم الله موسى لوددنا لوصبر میرے اور آپ کے درمیان ، آنخضرت علی نے فرمایا اللہ موی پر رحم کرے ہم توبیہ چاہتے تھے کاش مویٰ صبر کرتے تو حتى يقص علينا من امرهما قال محمد بن يوسف ثنا به على بن خشرم ان کے اور حالات بھی ہم سے بیان کئے جاتے محمد بن توسف ؓ نے کہا ہم سے اس حدیث کوعلی بن خشرم نے بیان کیا عيينة قال سفيان بن ب خبردی اس کمی حدیث کے بارے میں ہم کو سفیان بن عيينہ نے

وتحقيق وتشريح

المسندى: مندحديثين تلاش كرتے تصاس ليے بيلقب مشهور موكيا ا

نو فاالبكالي: نوفل ابن نضاله البكالى تابعي بين سعيد بن جيرٌ بهي تابعي بين _

كذب عدو الله:اشكال: يتومسلمان بي الكوعد والله كيول كها؟

جواب اول:ابل حق جوقلوب صافيه ركھتے ہيں جب غير حق سنتے ہيں توان كے دلول ميں بہت محفن ہوتى ہے اس ليے زجر السے خيت الفاظ بول ديتے ہيں۔

ا ورش بخاری ۴۲۳

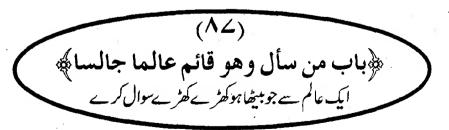
جواب ثانی: بعض نے کہا ہے کہ ہوسکتا ہے کہ ابن عبال گوان کے ایمان میں شک ہو گیا ہولیکن بیا حمال کے درج میں ہے۔

مجمع البحرين:روم وفارس كے جہال سمندر ملتے بين اس جگد كركتے بين

فانطلقايمشيان: سسوال: يرشع عليه السلام بهى ماته تقوتين موكة ال لي جمع كاصيفه مونا چا بيتها؟ جو اب: سبتالع كوزكرنبيس كيا ـ

الا کنقر ق هذه العصفور: یہ بیان تقلیل کے لیے ہے بیان تثبیہ کے لیے نہیں ہے ورنہ ادھر دونوں محدود ہیں۔ چڑیا گرقطرہ قبض لیتی رہے تو سمندر بھی ختم ہوسکتا ہے لیکن اللہ تعالی کے علم میں سے لیا جائے تو بھی ختم نہیں ہوسکتا اور نہ پورالیا جاسکتا ہے۔ استاذ مولا نا انہیں الرحمٰن صاحبٌ ، شخ الحدیث حضرت مولا نا زکریا کے حوالے سے فرمایا کرتے تھے کہ حاشیہ بجھنے کے لیے دس من عقل کی ضرورت ہے اے سائل! تیری اور میری عقل تو چڑیا کی چونی کے برابر بھی نہیں ہے۔

لوددنا: ساس حدیث میں حضرت خضرعلیه السلام اور حضرت موئی علیه السلام دونوں اس بات کا اقر ارکررہے ہیں کہ اللہ تعالی کے علم کے برابر کسی کاعلم نہیں ہے اور حضور علی اللہ تعالی کہ کراس شوق کا اظہار کررہے ہیں کہ ساتھ جلتے رہتے تو اور باتیں معلوم ہوتیں معلوم ہوا کہ علم غیب نہیں ہے۔



(۱۲۴) حدثنا عشمان قال ثنا جریرعن منصور عن ابی وائل عن ابی انکواک عن ابی انکواکن سے جریز نے بیان کیا کہا ہم سے جریز نے بیان کیا کہا ہم سے جریز نے بیان کیا کہا ہم

وتحقيق وتشريح

ترجمة الباب كى غوض:اىباب سام بخارى كى دوغرضين بير

غوض اول: مسلم حاصل کرنے کا اصل طریقہ یہ ہے کہ استاد کے پاس دوزانو ہوکر بیٹھ کرحاصل کرے البتہ ضرورت کے مواقع اس سے مشتیٰ ہیں کھڑے کھڑے بھی سوال کرسکتا ہے۔

غوضِ ثانی: سحدیث پاک میں ہے آپ اللہ کے ارشاد فرمایا (الاتقومو اکماتقومو الاعاجم)) کہ ایک بیٹا ہو باقی سارے ہاتھ باندھ کر کھڑے ہول تو یہ بھی اسکے مشابہ ہے توامام بخاری فرمارہ ہیں کہ مواقع ضرورت مشتیٰ ہیں اگر بیٹھنے والے کانفس مجب سے پاک ہوتو کوئی حرج نہیں ہے۔

فرفع اليه راسه: يهال عصطابقت موكى كهاس في كور عسوال كياجبي تو آ ب علي كوراً مانا يرا ـ

(۸۸)
﴿ باب السؤال والفتياعند رمى الجمار ﴾
کنگريال مارتے وقت مسله پوچھنااور جواب دينا

(1. ٢٥) بحدثنا ابونعیم قال ثنا عبدالعزیزبن ابی سلمة عن الزهری عن عیسی بن طلحة مسابعیم فی الزهری عن عیسی بن طلحة مسابعیم فی العزیزبن ابوسلم فی عدیث بیان کی زمری سے انھوں نے عیسی بن طلح سے

عن عبدالله بن عمرو قال رایت النبی علی عند الجمرة الهول نے عبدالله بن عمرو قال رایت النبی علی الهول نے عبدالله بن عمرو الهول نے آخفرت الله کوجمرہ عقبہ کے پاس دیکا و هو یسأل فقال رجل یارسول الله نحوت قبل ان ارمی آپ اوگ مسئل پوچرہ عقایک خف نے عرض کیایار سول الله نحوت قبل ان از می فقال ارم و الاحرج قال اخر یارسول الله حلقت قبل ان انحر فقال ارم و الاحرج قال اخر یارسول الله حلقت قبل ان انحر آپ نے نزمایا اب تکریاں اراد پھری نہیں دوسرے نے کہایار سول الله حلقت قبل ان انحر قال انحر جو الاقال افعل و الاحرج. قال انحر و الاحرج فماسئل عن شیء قدم و الا اخر الاقال افعل و الاحرج. آپ الله نظال الله عن شیء قدم و الا اخر الاقال افعل و الاحرج. آپ الله نے نور الاقال افعل و الاحرج. آپ الله نور الله الله کری کے حرج نہیں۔ آپ الله نور الله کی کے حرج نہیں۔ آپ الله کری کے حرج نہیں۔ آپ الله کری کے حرج نہیں۔

وتحقيق وتشريح

توجمة الباب کی غوض:امام بخاری کااس باب سے مقصودیہ ہے کہ اگر کوئی شخص کسی طاعت میں مشغول ہوا وراس سے کوئی سوال کرتا ہے علم کی بات بو چھتا ہے مسئلہ بو چھتا ہے جواب دے یا نہ دے؟ توامام بخاری نے فرمایا کہ جواب دے یا نہ دے؟ توامام بخاری نے فرمایا کہ جواب دے لیکن اس میں تفصیل ہے کہ اگر وہ الیکی طاعت میں ہے جو کہ استغزاق کا تقاضا کرتی ہے غیر کی طرف توجہ سے مانع ہے ایک صورت میں جواب نہ دے۔ مثلا اگر کوئی نماز میں مشغول ہے کوئی آ کرمسئلہ بو چھتا ہے تواس کو نماز بوری کر نے جواب دینا چاہیے ورنہ نمازٹوٹ جائے گی اگر ایسانہیں ہے تو پھر جواب دینے سے تواب میں کی نہیں آئے گی مثلا ری جمارے یہ بھی ذکر کا وقت ہے کوئی ذکر کر رہا ہے کوئی سبتی پڑھ رہا ہے تو جواب دینا چاہیے تو اب میں کی نہیں آئے گی اس باب میں فنو کی کا ذکر کیا قضاء کا ذکر نہیں کیا کہونکہ قضاء تواظمینان کی صورت میں ہوئی چاہیے کوئی اور مشغولیت نہیں ہوئی چاہیے قاضی کے لئے ضروری ہے کہ ہمتن متوجہ ہو کر گواہوں اور مد عیوں کے بیان می کر فیصلہ کرے۔

(۸۹) باب قول الله تعالى وَ مَااُو تِينتُهُ مِنُ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيَّلا ﴾ الله كا (سوره بني اسرائيل مين فرمانا) اورتم كوتھوڑ ابى ساعكم ديا تيا

(١٢١) حدثنا قيس بن حفص قال ثنا عبدالواحد قال ثناالاعمش سليمان ہم سے قیس بن حفص ؓ نے بیان کیا کہاہم سے عبد الواحد نے بیان کیا کہاہم سے اعمش سلیمان بن مهران عن ابراهيم عن علقمة عن عبدالله قال بيناانا بن مہران تے بیان کیا انھوں نے ابراہیم سے انھوں نے علقمہ سے انھوں نے عبداللہ بن مسعود سے کہاایک بار میں امشى مع النبيءَ النبيءَ المدينة وهويتوكاء على عسيب معه آ مخضرت اللي كالمريد ينك كفندرون (المون) من چل را الفاآب كفجورى چيرى يرجوآب كے پاس تقى سمارالكات جارب تق فمربنفرمن اليهود فقال بعضهم لبعض سلوه عن الروح فقال بعضهم لاتسالوه راہ میں چند یہودیوں پرسے آپ گذرے اُھوں نے آبس میں کہاان سے روح کے متعلق پوچھوان میں سے بعض نے کہامت پوچھو لايجيى فيه بشيء تكرهونه فقال بعضهم لنسألنه فقام رجل منهم ابیانہ ہودہ ایسی بات کہیں جوتم کوبری معلوم ہوبعضوں نے کہا ہم تواس کے بارے میں ضرور پوچھیں گے آخران میں سے ایک شخص کھڑا ہوا فقال يا اباالقاسم ماالروح؟ فسكت فقلت انه يوحىٰ اليه فقمت اور کہنے لگا اے ابوالقاسم روح کیا چیز ہے؟ مین کرآپ چیپ ہور ہے بین سمجھ گیا آپ پروحی آ رہی ہے لیں میں کھڑ اہو گیا فلما انجلى عنه فقال وَ يَسُأَلُونَكَ عَنِ الرُّوح جب وحی کی حالت جاتی رہی تو آپ نے (سورہ بنی اسرائیل کی ہے آیت پڑھی) فرمایا اے پیغمبر تجھے سے روح کو پوچھتے ہیں قَلِ الرُّوُحُ مِنُ اَمُرِرَبِّى وَمَا أُوتُوا مِنَ الْعِلْمِ الَّا قَلِيُلاً كبدے روح ميرے مالك كا حكم ہے اور ان لوگوں كو تھوڑا ہى علم ديا گيا ہے قال الاعمش هي كذافي قرائتنا:"ومااوتوا" اعمش نے کہاہم نے اس آیت کو یونهی پر هاہے' و مااوتوا''

﴿تحقيق وتشريح

وارادبايرادهذاالباب المترجم بهذاالأية التنبيه على ان من العلم اشياء لم يطلع الله عليهانبياً ولا غيره ل

اعمرة القاريج تس199

توجمة الباب كى غوض: ترجمة الباب ميں قرآن پاك كى آيت كوذكركر كے اس بات پر تنبيه مقصود ہے كہ بہت ساراعلم الياہے كہ جس پراللہ كے سواكوئى مطلع نہيں ہے بعنى كلى علم اللہ تعالى كے سواكسى كؤہيں ہے معلوم ہواكہ امام بخارى كافد ہب بھى ہر بلويوں والانہيں ہے۔

قُلِ الرُّوُ حُ مِنُ اَمُوِرَبِّی:اس کار جمہ یوں کریں گے کددہ میرے دب کے جیدوں میں سے ایک جیدے۔ مسوال:اس روح کا مصداق کیا ہے؟

جواب:اس میں یانچ قول ہیں

ا:....روح حیوانی مراد ہے۔

۲: بعض نے کہا ہے کہ روح سے مرادخلق عظیم ہے جو کہ ایک روحانی مخلوق ہے فرشتوں سے بھی اسکا درجہ زیادہ ہے اور قوی ہے۔

سن العض نے کہا ہے کہ جرئیل علیه السلام مراد ہیں قرآن مجید میں جریل کوروح سے تعبیر کیا گیا ہے۔

ا المنسب بعض نے کہا ہے کہ قرآن پاک مراد ہے۔ قرآن پاک پر روح کا اطلاق ہواہے جواب میں کہا ہمن امر رہی پہتواس معنیٰ کے لحاظ سے مطلب ہوگا کہ بیقرآن میرے رب کی دحی میں سے ہے۔

۵:ران یے بیروح بن آ دم کے بارے میں سوال کیا تھا۔

روح:روح بن آ دم بدنِ انسانی کے مشابہ ایک مخلوق ہوتی ہے جوجاندار چیز دں میں سرائیت کرتی ہے جس کا روح حیوانی کے ساتھ تعلق ہوتا ہے دوح حیوانی وہ ہوتی ہے جوخون کی گرمی سے پیدا ہوتی ہے جب بیر روح بنسی آ دم کھیئة الانسان نکل جاتی ہے تو روحِ حیوانی کچھکا منہیں کر سمتی اس روح کونسمہ کہتے ہیں اسکے نکلنے سے دوران خون ختم ہوجا تا ہے۔

رو ح کے بارے میں فلاسفہ اور متعکمین کا ختلاف :فلاسفہ روح کے منکر تھے اور کہتے تھے خون سے زندگی ہے روح کوئی چیز نہیں تو حضرت بایزید بُسطائی نے کرامت دکھائی فرمایا کہ میراخون نکال دو، چنانچہ ان کوخون نکال دو، خون نکلنے کے باوجود زندہ رہے۔

روح أورنفس ميس فرق: اختلف هل الروح والنفس واحدام لا ؟والاصح انهما متغايران فان النفس الانسانية هي الامرالذي يشيراليه كل واحد منابقوله "انا" واكثر الفلاسفة لم يفرقوا بينهما قالوا النفس هو الجوهر البحاري الطيف الحامل لقوة الحياة والحس والحركة الارادية ويسمونها الروح الحيوانية وهي الواسطة بين القلب الذي هو النفس الناطقة وبين البدن وقال بعض الحكماء

والغزالي النفس مجردة اى غيرجسم والاجسمانى وقال الغزالي الروح جوهر محدث قائم بنفسه غيرمتحيز وانه ليس بداخل الجسم والاخارجا عنه وليس متصلا به والامنفصلاعنه وذلك لعدم التحيزالذى هوشرط الكون فى الجهات!

و جه تو جیح: تورات اورانجیل میں کھا ہوا تھارو چ بن آ دم کے بارے میں کہ لایعلمه الااللہ للذا جواب بھی ای کے بارے میں ہے۔

شان نوول:قصدیہ واکر صور اللہ ایک مرتبد ید مورہ کے بعض ویرانے بھی یاکی گھیت میں اشریف لے گئے کا یہودگی ایک جماعت پاس سے گزری تو بعض نے کہا کہ ید می نبوت ہاس سے روح کے بارے میں سوال کرواور بعض نے کہا کہ نہ ہوگی ایک ایک ایک ایک کے ایک کے ایک ایک ایک ایک کے بارے میں سوال کرواور بعض نے کہا کہ نہ ہوگی کہ ایک ایک ایک ایک کو گئی تا گوار بات کہد دے اور بعض نے کہا ہوچھوتو ایک آدمی نے کہا اے ابوالقا سم روح کیا ہی معمول ہوا کہ آپ ہوگئے این مسعود ساتھ سے فرماتے ہیں کہ جھے محسوں ہوا کہ آپ ہوگی آرہی ہوتی آرہی ہوتی آ رہی ہوتی آ رہی ہوتی آ بات نازل ہوئی میں مبود نے میسوال اس لئے کیا کہا گرخود فلسفیانہ بحث شروع کردی تو پتہ چل جائے گئا کہ نی نہیں ہو۔ قائل کہ نی نہیں ہوت نہ ہوگا دی ہوگا حقیقت خدا ہی جا نہا ہوگئا کہ نی نہیں ہوت کے بیش فائل کے بیش فائل کے بیش نظر فرماتے ہیں کہ دوعالم امر کی چیز ہے علاء دلائل کے بیش نظر فرماتے ہیں کہ دوعالم ہیں۔ اوا کی عائم طلق ہے کا دوسراعاکم امر ہے انگی تعریفات تقریبا گیارہ یابارہ کی گئیں۔ چندا کی مشہور یہ ہیں۔

تعریف اول:عرش سے اوپر عالم امر ہے اورعرش سے نیچ عالم طلق ہے۔

تعریف ثانی:جومشاہدے میں آئے یعنی عالم شہودتو وہ عالم خلق ہے اور جومشاہدے میں نہ آئے یعنی عالم غیب کو عالم امر کہتے ہیں۔

تعریف ثالث:جس کواسباب ظاہری سے بیدا کیاوہ عالم طلق ہے اس لحاظ سے عیسیٰ علیہ السلام اور آ دم علیہ السلام عالم امرے ہیں۔ السلام عالم امرے ہیں۔

خلاصه:یک بیروح عالم امرفوق العرش کی کوئی چیز ہے یاکلہ کن سے پیداشدہ کوئی چیز ہے یاعالم غیب کی کوئی چیز ہے۔ فائدہ: یہاں امر کامعنی محض (صرف) تھم کرنا ناوانی ہے اوراگر امر کامعنیٰ تھم کرنا ہے جبیبا کہ بعض نے کہا سے تواس کی تفسیر میں او پروالی تین باتیں کہنا ہوں گی۔

وَمَا أُوْتِيْتُمُ مِنَ الْعِلْمِ:وال: روايت الباب من تو وَمَا أُوتِينتُمْ مِنَ الْعِلْمِ اور رَجمة الباب من ا

وهمة القارى في الأسارة اليات من بي كين منو ينطي المدرات من تشريف في المين المراب بينوال و بواب وعد ورس بخارى كس ١٣٣٣ من المنار الماري سيادا والماري المناور والماري والمناور والماري والمناور والماري والمناور والماري والمناور والماري والماري والماري والماري والماري والمناور والماري والما

وَمَا أُوتِينتُمُ مِنَ الْعِلْمِ إِن ترجمة الباب كيت ابت موا؟

جواب:دونو لقر أتين بين امام بخاريٌ في مشهور كوليا

فائدہ: ممکن ہے کہ امام بخاریؒ پیہتلا نا چاہتے ہوں کہ و مااوتو اقر اُت شاذہ ہے اور قر اُت شاذہ اگر چہقوی السند ہی کیوں نہوں آیت اور متواتر کے مقابلے میں جمت نہیں اس لئے امام بخاریؒ نے ترجمہ میں قر اُت مشہور کولیا ہے۔

ان یقصر فهم بعض الاختیار مخافة ان یقصر فهم بعض الناس فیقعو افی الشدمنه. پ باب بعض الباس فیقعو افی الشدمنه. پ باب بعض البین استجهاوگ اس کونت بجهیس البین استجهاوگ اس کونت بجهیس اوراسکے نہ کرنے سے بڑھ کرکسی گناہ میں نہ پڑجا کیں اوراسکے نہ کرنے سے بڑھ کرکسی گناہ میں نہ پڑجا کیں

الاسود قال المحدثنا عبيدالله بن موسى عن اسرائيل عن ابى اسحق عن الاسود قال به عبيدالله بن مون نيان كيانص نياس كيان عن الرائيل عن الواسحات الموق الموق الموق المحبة قال لى ابن الزبير كانت عائشة تسراليك كثير افماحدثتك فى الكعبة عبدالله بن زير ني بحص كها حضرت عائشة تسراليك كثير افماحدثتك فى الكعبة عبدالله بن زير ني بحص كها حضرت عائشة تسراليك كثير افماحدثت فى الكعبة قلت قالت لى قال النبي عائشة لولاان قومك حديث عهدهم عيل ني كها أخول ني يكها تقال النبي عائشة لولاان قومك حديث عهدهم عيل ني كها أخول ني تي الما تعاله النبي عائشة فجلعت لها بابيد خل الناس الزبير بكفر لنقضت الكعبة فجلعت لها بابين بابايد خل الناس الن زير ني كوران منه ففعله ابن الزبير و و بابا يخرجون منه ففعله ابن الزبير و الزبير و ادرا يك دروازه عن عنه ففعله ابن الزبير و ادرا يك دروازه عن عنه ففعله ابن الزبير و ادرا يك دروازه عن عنه ففعله ابن الزبير و ادرا يك دروازه عن عنه بابر نكلة بجرابن زير في ان دروازه عن عنه بابياني كيا و درا يك دروازه عن عنه بابياني كيا و درا يك دروازه عن عنه بابيان نير في عند ابن الزبير و ادرا يك دروازه عن عنه ففعله ابن الزبير و ادرا يك دروازه عن عنه بابياني كيا و درا يك دروازه عن عنه بابيان نير في عند النبير و ادرا يك دروازه عن عنه بابيان نير في عند ابن الزبير و المناس المناس

وتحقيق وتشريح،

اختیار: اختیار کے معنی جائز کے ہیں یا پندیدہ کے پھر جس کام کے کرنے اور نہ کرنے میں اختیار ہواس کو جائز کہتے ہیں پھر جس کو کرلیا جائے اس کو پندیدہ کہتے ہیں یعنی اختیار پیلفظ دومعنوں میں مستعمل ہے(۱) جائز (۲) پندیدہ۔

تو جمة الباب کی غوض: المام بخارگ بتلانا چاہتے ہیں کہ عوام کی رعایت کی وجہ سے بعض چیز وں کو چھپوڑا جاسکتا ہے تا کہ لوگ اپنی کم فہمی کی وجہ سے بدعت میں بتلانہ ہوں امام بخارگ نے استدلال کیا ہے کہ حضور تعلقہ نے حضرت عائشہ سے فرمایا کہ اگر تیری قوم نئ نئی مسلمان نہ ہوئی ہوتی تو میں کعبہ گوگر اکر حطیم کو کھیے میں شامل کر لیتا جو کہ بناء ابراہ ہی ہے لیکن اب اگر توڑوں تو بیا گئیں۔

حطیم کو کعبہ سے باہر کرنے کی تفصیل بوں ہے کہ قریش نے جب کعبۃ اللہ کو بنانے کا ارادہ کیا تو حلال مال ہے بنانے کا عہد کیا آپ ایک اس وقت چھوٹی عمر کے تھے حلال مال جوجع ہوا وہ تھوڑا تھا سارا کعبہ بیس بن سکتا تھا تو چھوٹا کمرہ سے تعمیر کردیا اور تین تبدیلیاں کیس۔

تغير اول: كعبه كأكميراؤكم كياحطيم كاحصه بابرچھوڑ دیا۔

تغیر ثانی: پہلے بیت اللہ شریف کے دو دروازے تھا یک مشرق کی طرف ایک مغرب کی طرف مغرب والا درواز ہبند کردیا۔

تغیر ثالث: سیتسری تبدیلی بیک که دہلیزاونچی کردی که کوئی جاری اجازت کے بغیراندر داخل نہ ہوسکے۔

تو حضور الله عن اس جاہت کا ظہار کیا کہ دہلیز نیجی کردوں دروازے دوکردوں اور نیجے کردوں حضرت عبدالله بن زیر شنے بیروایت حضرت عائش سے تن ہوئی تھی انہوں نے اپنے زمانہ خلافت میں ایساہی کردیا گر تجاج خیدالله بن زیر شنے بیدروایت حضرت عائش سے تن ہوئی تھی انہوں نے اپنے زمانہ خلافت میں ایساہی کردیا گر تجاج نے ضد کی وجہ سے خانہ کعبہ کودو بارہ قریش کی بناء پر تعمیر کردیا پھر ہارون الرشید کا ارادہ ہوا کہ بناء ابرا ہیں پر تعمیر کی جائے اور امام مالک سے مسئلہ بوچھالیکن امام مالک نے مشورہ دیا کہ ایساہی رہنے دوورنہ کعبۃ اللہ بازیج کے اطفال بن جائیگا اور حاسدین پھر اس کو منہدم کردیں گے بار بار انہدام کی وجہ سے لوگوں کے دلوں سے اس کی وقعت ختم ہوجائے گ چنانچا لیے ہی رہنے دیا گیا۔

مسائل مستنبطه:اس حديث علاء ن چندماكل مستبط ك بير

ا قوم َ بِعُمل ہو چکی ہوتور جائی حدیثیں بیان نہیں کرنا چاہئیں۔

٢ با دشاه ظالم موتوسختي والي احاديث نهيس بيان كرني حيا مكس _

سا با دشاہ عادل ہوتو بغاوت والی حدیث بیان نہیں کرنی چاہیے اس کو کتمان علم نہیں کہتے تو بید دوسری غرض ہوگئ کہ کتمانِ علم سے منع فر مایا ہے کیکن اگر بعض چیزیں بیان کرنے سے معصیت میں مبتلا ہونے کا خطرہ ہوتو اسکو بیان نہیں کرنا چاہئیے کیونکہ علم کو بیان کرنے سے مقصود ہدایت ہے جہاں ایسافا کدہ نہ ہوتو کتمانِ علم نہیں ہے۔

حدثناعبيداللهبن موسى:اسودشاگرديس اوراين زير جهانج ييل - اين زير ،اسودے يوچور ب

ہیں اور کہدر ہے ہیں کانت عائشة نسر الیک کثیر الدحظرت عائش چیکے چیکے تم سے باتیں کیا کرتی تھیں)اس عبارت مے معلوم ہوا کہ جب شاگر دلائق ہوتورشتہ داروں سے بھی درجہ بڑھ جاتا ہے۔

بكفو: سيعنى كفركاز ماندابھى گزراند ہوتاتو ميں كعبكوتو رُكراً سيس دودرواز كا تابيا بن زير كاتول ہے۔ ففعله ابن زَبير فَّ: سيان حالت ہے، اسورُ كى حديث كاجز نہيں۔

سوال: يهان وصرف ايك فعل ك طور برجهور في كاذكر بي و كتاب العلم سي كي تعلق م؟

جواب: سبعض مرتبعل سے علم حاصل ہوتا ہے اور بعض مرتبہ ترک فعل سے، اسکی مثال ایک قصہ سے بھیں۔

قصہ: ایک مرتبہ ایک گھر انے کی چوری ہوگئی رات چوروں نے بیٹا بھی اور کہا کہ تم کھاؤ کہ اگر بتلایا تو ہماری بیو یوں کوطلاق ۔ چنانچہ انہوں نے تم کھائی ، مبح امام صاحبؓ کے پاس آئے تو امام صاحبؓ نے فرمایا کہ میں ایک گھر میں سب بستی والوں کو جمع کرتا ہوں جو چور نہ ہوتو کہنا ہے بھی نہیں ہے ، یہ بھی نہیں ہے ، چور آئے تو خاموش رہنا چنانچہ ایسا ہی ہوا چور کیڑے گئے طلاق بھی نہ پڑی۔

(91)

وقال على "حدثوا الناس بما يعرفون اتحبون ان يكذب الله ورسوله اورحفرت على في كارسول الله ورسوله الرحفرت على في كارسول المعلم المراس المرسول المحمل المرسول المرسول المحمل المرسول المرسول المحمل المرسول الم

(۱۲۸) حدثنا به عبیدالله بن موسی عن معروف عن ابی الطفیل عن علی بم سے اس قول کو عبیدالله بن مول نے معروف سے اس قول کے ابولی کی سے اس قول کو عبیداللہ بن موگ نے بیان کیا انھوں نے معروف سے انھوں نے ابولیل کے انھوں نے حضرت علی رضی الله تعالی عنه.

رضی الله تعالی عنه ہے۔

000000000000

(٢٩) حدثنا اسحق بن ابراهيم قال انا معاذ بن هشام قال حدثني ابي عن

ہم سے احاق بن ابراہیم نے بیان کیا کہا ہم کومعاذ بن ہشامؓ نے خبر دی کہا مجھ سے میرے باپ نے بیان کیا انھوں نے

قتادة قال ثنا أنس بن مالك أن النبي المسلطة ومعاذ رديفه على الرحل قال قادة عكماتم سانس بن مالك في بيان كياكة تخضرت الله في عاد سفرما ياجب معاد آب الله كالدويف تف كاور ي يامعاذ بن جبل قال لبيك يارسول الله وسعديك قال يامعاذ قال لبيك ا معاذ! انھوں نے عرض کیا حاضر ہوں یارسول اللہ حاضر ۔ آپ اللہ نے فرمایا یامعاذ! انھوں نے عرض کیا حاضر ہوں يارسول الله وسعديك قال يامعاذ قال لبيك يارسول الله وسعديك ثلثاقال يارسول الله حاضر _ آب نفر ما يا معاذ انهول في عرض كيا حاضر مول يارسول الله حاضر تين بار (آب ناء و بارا عرب المرايا مامن احد يشهد أن لااله الاالله وأن محمد أرسول الله صدقا من قلبه جوكوئى يد كوابى دے كه الله كے سواكوئى سيا معبودنيس اور محد (عليلة)اس كے بيسي موسى بين سيے ول سے الاحرمه الله على النار قال يارسول الله افلااخبربه الناس فيستبشرون توالله اس کودوزخ برحرام کردیگا۔معاذ نے عرض کیایارسول اللہ! کیامیں لوگوں کواس کی خبر کردوں وہ خوش ہوجا کیں گے اذأ يتكلوا و اخبربها معاذ عند موته تأثما. آ پ نے فرمایا ایسا کرے گا توان کو بھروسہ ہو جائے گا۔اور معالاً نے مرتے وقت گناہ گار ہونے کے ڈرسے بیلوگوں کو بیان کر دیا۔ (انظر:۱۲۹) اخرجه مسلم في الإيمان عن اسحق بن منصورعن معاذبن هسشام. (۱۳۰) حدثنا مسدد قال حدثنا معتمرقال سمعت ابى قال سمعت انسا قال ذكرلى ہم سے مسدد نے بیان کیا کہاہم سے معتمر نے بیان کیا کہامیں نے اپنے باب سے سنا کہامیں نے انس سے سنا کہ ان النبي عَلَيْكُ قال لمعاذ من لقى الله لايشرك به شيئاد خل الجنة قال آنخضرت الله في معادًّ عفر ما ياجوَّخ ف الله سے ملے وہ ﴿ يَين اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى الله عَلَى الله الا ابشر به الناس قال لا انى اخاف ان يتكلوا. کیا میں لوگوں کو بیخوشنجری نه دوں؟ آ ہے آلینو نے فر مایانہیں ، میں ڈرتا ہوں کہیں وہ (اس پر) بھروسہ نہ کر ہیٹھیں۔

وتحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمة من حيث المعنى وهوانه عليه السلام خص معاذاً بهذه البشارة العظيمة دون قوم آخرين مخافة ان يقصروافي العلم متكلين على هذه البشارة ل

تو جمة الباب سے غوض:اگر کوئی علمی بات مشکل ہوجو کہ عام لوگوں کو بچھ میں آئی والی نہ ہوتو استاد جو بچھ سکیں پڑھانے میں اگر کوئی علمی بات مشکل ہوجو کہ عام لوگوں کو بخصے مقل لوگ فتنے میں پڑھتے ہیں۔ الفوق بین هذا الباب و الباب السابق:اس باب اور ماقبل والے باب کے درمیان دوفرق ہیں الفوق بین هذا الباب و الباب السابق:اس باب اور ماقبل والے باب کے درمیان دوفرق ہیں البیا باب افعال کے متعلق ہاور بیا قوال کے آ۔ پہلے باب میں بیان ترکیفعل ہاوراس باب میں بیان ترکیفول ۔ اب بیا باب افعال کے متعلق ہے اور بیا قوال کے آ۔ پہلے باب میں بیان ترکیفعل ہے اور اس باب میں بیان ترکیفول ۔ ہو الباب کے مشکل اور عمیق مسائل عوام کے سامنے بیان نہیں کرنے چا ہمین کیونکہ وہ سمجھیں گرنہیں تو انکار کردیں گے مثلاً اللہ تعالی کی ذات وصفات کی بحث نثر وع کردی جائے یا معتز لہ اہل سنت والجماعت کا اختلاف شروع کردی جائے یا معتز لہ اہل سنت والجماعت کا اختلاف شروع کردیا جائے۔

اشكال:حضرت علي عار كومقدم كيااورسند كومؤخر، سندكومؤخر كيول كيا؟

جواب اول:سنديس ضعف كى طرف اثاره بـ

جواب ثانی:اثراور مرفوع روایت کافرق بیان کرنے کے لیے بعد میں لائے۔

جواب ثالث:اس لئے كەاثر ترجمة الباب كاجزء بن جائے۔

على الرحل: وحل كاو كوكت بين جواون براستعال موتا كيكن آب عليه وراز كوش برتهد

يامعاذ: مقصودتين مرتبه كهني سي تيقظ (بيداركرنا) بي بيهمي سنت رسول عليه عيد

قال اذاً يتكلو ا:حفرت معاذً كوتو سنار به بين ليكن اورول كوبتلانے سے روك رہے بين تو ترجمة الباب ثابت ہو گيا۔ و مسعد يك: سعد كا تثنيه ہے اوراس كامعنى اسعاداً بعد اسعادٍ ہے لينى انا مسعد طاعتك اسعاداً بعد اسعاداً ا

الاحومه على النار:سوال: استقرم جدكانه بب ثابت موكيا؟

جوابِ اول:ناروقتم پرہے۔(۱) نارمعدہ للکافرین (۲) نارمعدہ للعصاة. حدیث میں نارے مراو نارمعدہ للکافرین ہے۔

جوابِ ثانی: سناردوسم پرے ۲ نارمؤبدہ اور نار غیرمؤبدہ ، نارمؤبدہ کاحرام ہونامراد ہے۔

جوابِ ثالث:احكام نازل مونى سے پہلے كى بات بے كيكن يفلط جواب بـ

جو اب رابع: سکوئی شی جب ثابت ہوتی ہے تو اپنے قیوداور فوائد کے ساتھ ثابت ہوتی ہے تو جب سب احکام بتلائے جا چکے ہیں تو وہ سلمانوں کے لئے ہی تو ہیں لہذا صدق دل سے کلمہ پڑھنے کا مطلب یہی ہے کہ اعمال سارے

اعمدة القارى ج السراح

كرنے ہيں لوگ اس بات كونبيں سمجھ يا كميں گے اس لئے اعمال جھوڑ دیں گے۔

جواب خامس: كلمد عن وبكاكلم عندالموت ياكلم ما اسلام عندالموت مراد ب-

جو اب سادس:مولانا قاسم نانوتو ی کااصولی جواب یہ ہے کہ مفردشی کی ایک تاثیر ہوتی ہے، توبتا ثیر بالمفرد کی قبیل سے کہ کی تاثیر ہوتی ہے، توبتا ثیر بالمفرد کی قبیل سے ہے کمدی تاثیر کا تاثیر کا ظہور بلک ہے کہ وہ آگ کو حرام کردھیتا ہے کیکن جب معاصی مل جا ئیں تو پھر تاثیر کا ظہور بلحاظ مرکب ہوگا۔

جواب سابع:ساتواں جواب اس سے پہلے والا ہی ہے لیکن یہ جواب ذرائجلی (واضح) ہے ایک کس شی کا خاصہ طبعیہ ہوتا ہے جیسے پانی کا خاصہ طبعیہ برودت ہے لیکن کسی چیز کے ساتھ التباس کی وجہ سے ہُرودت تبدیل ہو جاتی ہے جیسے گرم پانی ہاتھ پر ڈالوتو ہاتھ جل جاتا ہے تو یوں نہ کہا جائے کہ پانی کا خاصہ برودت زائل ہو گیا بلکہ وہ باقی ہے ایسی کے التباس کا اثر زائل ہوگا تو وہ اپنی اصلی حالت پر آجائے گا اس طرح گنا ہوں کی تا ثیر کو زائل کرنے کے لئے یا تو آگ میں ڈالنا پڑے گایا آ کی شفاعت ضروری ہوگی یا چرعفو۔

اخبر بهامعاذعندالموت:سوال: جباس مدیث کوبتلانے سے منع کیا ہے تو پھر کیوں بتلار ہے ہیں؟ جو اب:حضرت معاد محمد کے کہ حضو ملاق نے عام نشر واشاعت سے روکا ہے خواص سے نہیں اس لئے انہوں نے مرنے یہ فراص کو بتادیا کہ کتمان علم نہو۔

(۹۲) ﴿باب الحیاء فی العلم﴾ علم من شرم کیا ہے

وقال مجاهد لا یتعلم العلم مستحیی ولا مستکبر وقالت عائشة اور عالم نہیں آئے گااور حفرت عائش نے کہا اور عفر شرم کرے یا مغرور ہواس کو علم نہیں آئے گااور حفرت عائش نے کہا نعم النساء نساء الانصار لم یمنعهن الحیاء أن یتفقهن فی اللاین انصار کی عورتیں بھی کیا چھی عورتیں ہیں ان کوشرم نے دین کی سمجھ حاصل کرنے سے نہیں روکا

(۱۳۱) حدثنا محمد بن سلام قال اناابو معاویة قال حدثنا هشام عن ابیه مسام عن ابیه مسام عن ابیه مسام عن ابیه مسام عن باید عرده این کیا نمون کیا نمان کیا نمون ک

عن زینب ام سلمة غن ام سلمة قالت جاء ت ام سلمه الموس نرینب ام سلمة قالت جاء ت ام سلیم الموس نرینب اسے جو بی تھیں ام الموسین ام سلم الله ان الله الایستحیی من الحق اللی رسول الله علی الله علی الله ان الله الایستحیی من الحق آخضرت الله کی باس کی اور پوچنے گیں یارسول الله! الله حق بات سے شرم نہیں کرتا فهل علی المرأة من غسل اذااحتلمت فقال النبی عَلَّالِی اذارات الماء عورت کواگر احتمام بہوتو کیاس کوشل کرنا چاہے؟ آخضرت الله فقل الله او تحتم المرأة وه (جاگ کر) پانی دیکھ فغطت ام سلمة تعنی وجهها وقالت یارسول الله او تحتم المرأة؟ یین کرام سلمة آخ نابامند (شرم سے) ڈھا کہ لیا اورع شکیایارسول الله او تحتم المرأة؟ مین کرام سلمة آخ بیامند (شرم سے) ڈھا کہ لیا اورع شکیایارسول الله کیا عورت کوبھی احتمام ہوتا ہے؟ قال نعم تربت یمینک فیم یشبهها ولدها الله کیا عورت کوبھی احتمام المراقات آپ نے نرایا بال تیرے باتھ فاک آلود ہوں پھر پچرکی صورت مال سے کول باتی ہے۔

وتحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمة من حيث الوجه الاول من وجهى الحياء اللذين ذكوناهمافى اول البابي توجمة الباب كى غوض :انباب من بالمانا في بين كدياء محود بيكن الرعم عاصل كرنے سے مانع بوجائ تو ندموم بے امام اعظم سے كى نے بوچها كرآ ب وا تناعلم كيے عاصل بوا؟ تو فر مايا مابخلت عن الافادة و مااستحييت عن الاستفادة مي المراب منقول بي "لايتعلم العلم مستحي و لامستكبر" مرادحياء طبى ب جب حياء طبى مين غلو بوتو استفاده سے مانع بوجاتى ہے متكبرا بي آب وحاجت مندى نبير جمتا وه اب آب كوستغنى مجتا ب ب مستخلى مي مين فرقة الجهل.

غوض ثانی:حیاء دوسم پر ب اجوایمانیات کوعلماً وعملاً حاصل کرنے کا سبب ہوا۔وہ حیاء جوایمانیات کوعلماً وعملاً ترک کرنے کا سبب ہوتو جو حیاء دیں سمجھنے سے مانع ہووہ تیج ہے۔

لايستحيى من الحق:حياء كانبت جب الله تعالى كاطرف بوتومعنى ترك كي بوت بير

فغطت:اسکا فاعل یا توام سلمہؓ ہے اور قائل حضرت زینبؓ ہیں۔ ۲_یا فاعل وقائل دونوں ام سلمہؓ ہی ہیں اور غائب سے اینے آ پکونجیر کررہی ہیں۔

او : زجر و تنبید کے دفت بدالفاظ بولے جاتے ہیں گرمعنی مرادنہیں ہوتے اس روایت کی بناء پر بعض لؤگوں نے کہا ہے کہ از داج مطہرات کو احتلام نہیں ہوتا تھا جبی تو تعجب سے بوچھا۔ انبیاء علہیم السلام کے بارے میں بھی کلام ہوا ہے ہیں جا کہ بین اے ورتوں کے خیالات میں مشغول رہنا تو شیطان اس پر اثر انداز ہوتا ہے کہ کسی عورت یالا کے کی صورت میں آتا ہے۔ از واج مطہرات اور انبیاء اس سے پاک ہیں ۲۔ و عاء منی کے امتلاء کی وجہ سے ہائی بعض کو ہوتا ہے اور پہتے بھی نہیں چا۔

حدثنا اسماعیل:سوال: اس روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ ابن عمرٌ نے حیاء کیا تو یہ تو مانع علم ہوالہذا حیاء فرموم ہوئی جبکہ امام بخاری تو حیاء محدود کو بیان فرمار ہے ہیں لہذاروایت الباب ترجمۃ الباب سے منطبق نہ ہوئی؟

جواب اول:اپ کا حیاء مانع علم نہیں تھا کیونکہ انکومعلوم تھا کہ جب بینیں بتلا کیں گے تو آپ اللے خود بتلادیں گے دنیا میں تو نہیں ہوائیکن آخرت میں ضرور فائدہ ہوگا۔

جواب ثانى:مقصود حياء محمود بتو عبدالله بن عمر في ايباحياء كياجس مين ادب محوظ بريم مود باس ليد كه الغ علم توسيمين -

جوابِ ثالث: لله در امام ابخاري ابن عر على عام بخاري في استدلال نبيس كيا بلك قول عر على الم

وإعدة القارى يتم عنس أأم

(۹۳)
﴿باب من استحیٰی فامر غیر ۵ بالسوال ﴿
جوکوئی شرم سے آپ نہ پو چھے دوس شخص سے پوچھے کو کے

(۱۳۳) حدثنا مسددقال حدثنا عبدالله بن داؤد عن الاعمش عن منذر الثوری ہم سے مسدد نے بیان کیا، کہا ہم سے عبدالله بن داؤد نے بیان کیا انھوں نے اعمش سے انھوں نے منذر تورگ سے عن محمد بن الحنفیة العن علی بن ابی طا لب قال کنت رجلا مذّاءً انھوں نے محمد بن الحنفیة العن عنی رضی اللہ تعالی عنہ سے انھوں نے کہا میری مذی بہت نکلا کرتی تھی فامرت المقداد ان یسأل النبی عَلائش فسأله فقال فیه الوضوع میں نے مقداد ان یسأل النبی عَلائش فسأله فقال فیه الوضوع میں نے مقداد سے کہا تم آخضرت علی سے اس کا مسئلہ پوچھوانھوں نے پوچھا آپ نے فرمایا ذی سے وضوکرنا چا بیئے

﴿تحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمةظاهرة.

توجمة الباب كى غوض: يه يهل باب كابى تته بكه حياء وه مذموم به جوكهم سے محروم كردے اگر بلا واسط سوال كرنے سے حياء آئے تو بالواسط سوال كرے۔

کنت رجلاً مذّاء:قوت زیاده موتو ندی خارج موتی ہے جی کہ حضرت علی کی مرسردی کی وجہ سے نہاتے ، نہاتے پیٹ گئ تھی۔ نہاتے پیٹ گئ تھی۔

فامرت المقداد: حضرت على كوشرم آتى تقى تودوسر كوهم ديا مگر برايك نے تاخير كى آخرخود بى يو چه ليا پهر حضرت مقدادٌ نے بھى يو چھاباتى مجلس ميں موجود تھے۔

المنانى وكانت من سبى بنى حنيفة ولدلسنتين بقيتامن خلافت عمر مات سنة ثمانين اواحدوثمانين اواربع عشرة ومانة و دفن بالبقيع اور حضراوى اليمانى وكانت من سبى بنى حنيفة ولدلسنتين بقيتامن خلافت عمر مات سنة ثمانين اواحدوثمانين اواربع عشرة ومانة و دفن بالبقيع اور حضراوى حضرت في بنائي طائب بنى الله تعالى عند عشرت في بنائي طائب بنى الله تعالى عند عشرت في القليم عن الله الله عشرت بالله عنور مسلم في الطهارة عن ابى بكر والنسائي في الطهارة وفي العلم عن محمد بن عبدالاعلى والترمذي عن عمد بن عبدالاعلى والترمذي عن محمد بن عبدالاعلى والترمذي عن المودين عامر واخرج ابو داؤد حدثنا قتية عن سعيدوا خرج طحاوى عن ابراهيم بن ابى داؤد اخرجه السائى عن عنمان بن عبدالله.

(۳۹ ه) (۱۹ هر ۱۹ هر ۱۹

(۱۳۴) جد ثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اللیث بن سعد قال حدثنا نافع مولی بم سے تنیہ بن سعید نے بیان کیا کہا ہم سے افع نے جوغلام سے

میں نے یہ بات (کہ بمن دالے بلسلم ساحرام باندهیں) آنخضرت الله سے بیل مجی۔

لم افقه هذه من رسول الله عُلَيْكُم.

وتحقيق و تشريح،

مطابقة الحديث للترجمة ظاهرة وهوانه مشتمل على ذكرالعلم اعنى علم اهلال الحج في المسجدو المسجدو المسجدو المسجدو المسجدو المسجدو المسجدون الم

ترجمة الباب كى غرض: مقصود ايك حديث مين تخصيص كرنى ب (اياكم وهيشات الاسواق فى المساجد)) معرول كوبازارى شورشرابه سے بچاؤ المام بخارى فرماتے بين كه ويسے تو جائز نبيل ليكن

⁽ انظر: ۵۲۵،۱۵۲۲) ۱۵۲۸،۱۵۲۷ وافرجه مسلم والنسائی وابودا و د: عمد قالقاری ج ۲ص ۲۱۷) و عنی ج ۲س ۲۱۷)

تعلیم وقعلم وتکراراس سے سنٹنی ہیں۔

ذو الحليفه: آج كل اسكانام برعلي بجومدينت چميل كفاصلي بهكناب و آبادى بوصفى وجه كا وجد كا معرف المائل مع المائل ميرعلي مع والمائل ميري المائل موجهان ول كاليائل مي كونكه يمن مار دراست ميس ب-

(90) باب من اجاب السائل باكثر مماسأله ﴾ پوچنے والے نے جتنا پوچھااس سے زیادہ جواب دینا

(۱۳۵) حدثنا ادم قال حدثنا ابن ابى ذئب عن نافع عن ابن عمراً ہم سے آ دم (ابن ابوایاس ؓ) نے بیان کیا کہاہم سے ابن الی ذئب ؓ نے انھوں نے نافع سے انھوں نے ابن عمر ؓ سے سالم وعن الزهرى عن انھوں نے آنخضرت اللے ہے، دوسری سنداور (ابن ابی ذئب نے)اس کوز ہری سے بھی روایت کیا انھوں نے سالم سے عمرٌ عن النبيءَ الله أن رجلا سأله انھوں نے ابن عمر سے انھوں نے آنخضرت علیہ سے کہ ایک شخص نے آیالیہ سے یوچھا مايلبس المحرم فقال لايلبس القميص ولاالعمامة ولاالسراويل ولاالبرنس جو تحف احرام باند سے ہوئے ہے وہ کیا پہنے؟ آپ ایک نے فرمایا جیص ند پہنے اور ند عمامہ بہنا ند یا بجامداور نداو پی ولاثوبا مسه الورس اوالزعفران فان لم يجد النعلين فليلبس الخفين نہ وہ کیڑا یہنا جس میں ورس یازعفران لگی ہوپھراگر (پیننے کو)جو تیاں(چیل)نہ ملیں تو موزے پہن لے وليقطعهما حتى يكونا تحت الكعبين. ع اور ان کو نخنوں تک کاٹ لے یہاں تک کہ نخنوں سے پنیج ہوجا کیں۔

المحرة التارك ق المحرك و انظر: ۱۸۳۸ ، ۱۸۳۸ ، ۱۸۳۸ ، ۱۸۳۸ ، ۵۸۰۳ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۹۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۳۵ ، ۵۸۳۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ ، ۵۸۰۵ و ابن مالک و ابن مالک و ابن مالک و النسائی عن محمد بن اسمعیل و عمو بن علی کلاهما عن یزید عن یحیی بن سعید الانصاری عن عمو بن نافع عن ابن عمو مدر ا

وتحقيق وتشريح

مطابقة الحديث للترجمة في قوله ((فان لم يجد النعلين فليلبس الخفين)) الى آخره لان هذا المقدارز ائدعلى السؤال وقيل انه نبه على مسئلة اصولية وهي ان اللفظ يحمل على عمومه لاعلى خصوص السبب لانه جواب وزيادة فكأنه اشارالي ان مطابقة الجواب لسؤال حين يكون عاما اما اذا كان السؤال خاصا غير لازم لا سيما اذا كان الزائد له تعلق. 1

تو جمة الباب كى غوض: قاعده ہے كہ مجيب اتنابى جواب دے جتناسوال كيا ہے كيكن اگر نادان سائل غير ضرورى سوال كرے ياضرورت سے كم كرے قودانا مجيب ضرورى چيز كاجواب ديگا يعنى جواب عندالضرورة زياده دے گا ياجتنا ضرورى ہے اتنابى دے گا جيسے ﴿ يَسْنَلُونَكَ عَنِ الْاَهِلَة قُلُ هِي مَوَ اقِيْتُ ﴾ آمنا فع بتلاد يَحَمَّر اهله كے بارے ميں نہيں بتلايا كونكده غير ضرورى تھا۔

لا يلبس القميص: يهال بهى سائل سوال كرتا ب كدكيا پننې؟ آب عليه فرمار بي بين يديد پنه تو چونكه بهننه والى چزي بهت سارى بين اس ليه غير ملبوس جو تعورى بين ان كوبتلا دياياس لئے كدا حرام تو منع مونے پر دلالت كرتا ب اس لئے آپ عليه في اشاره كرديا كرمنوعات يو چھو۔

تحت الكعبين:ا گرنعلين نه مول تو خف پهن سكتا ہے مگر تعبين سے كاك كر، كعب وہ ہڑى جوكه ياؤل كى پشت يرا بحرى موئى موتى ہے۔

سوال:روايت البابرجمة الباب كمطابق نهيس ب

جو اب:اس نے پہننے کی چیزیں پوچھیں آپ علیہ نے نہ پہننے کی بتلادیں اس سے پہننے اور نہ پہننے کی بھی معلوم ہوگئیں جواب علی اسلوب اکلیم سے غرض بخاری ثابت ہوگئ۔

فائده:امام بخاريٌ نے آخريس به باب بانده كراشاره فرماديا كدا عطالب علم جتناعلم تيرے لئے ضروری تھا

میں نے اس سے زیادہ بیان کر دیا ہے۔

اعدة القارى ج الساااع ياره اسورة البقره اية ١٨٩

: بيان اللغات: قوله ((لايلبس)) من لبس بضم اللام يقال لبس النوب يلبس من باب علم يعلم واما اللبس بالفتح فهومن باب ضرب يضرب يقال لبست عليه الامر البس بالفتح في الماضى والكسرفى المستقبل اذاخلطت عليه ومنه التباس الامر قوله العمامة بكسر العين قال الجوهرى العمامة واحدة العمائم. قوله السراويل قال الكرماني السراويل اعجمية عربت وجاء على لفظ الجمع قوله البرنس بضم الباء الموحدة وسكون الراء وضم النون وهو ثوب رأسه منه ملتزق وقيل قلنسوة طويلة وكان النساك يلبسونها في صدر الاسلام وهو من البرس بكسرالباء وهوالقطن والنون زائلة وقيل غير عربي قوله الورس بفتح الواو وسكون الراء يعونت اصفريكون باليمن تصبغ به النياب ويتخد منه الغمرة للوجه قوله الزعفران : بفتح الزاء والفاء جمعه زعافروهواسم اعجمي قوله النعلين تثنية نعل وهو الحذاء بكسرالحاء وبالمد قوله الكعبين: تثنية كعب المرادبه ههناهوالمفصل الذي في وسط القدم عندمعقد الشراك العطم الناتي عندمفصل الساق فانه في باب الوضوء :عمدة القارى ج ٢ ص ٢٠٠٠

بخاری شریف وغیرہ کے اسماء اور کنی سے مشهور چند رُواة

| | | | | <u> </u> | |
|---------|--------------------|----------------------------------|-----|---------------------------|----------------------------------|
| ۱ ابو | ابوبكر الصديق | عبدالله بن عثمان بن عامر | 77 | ابو دجانه | سماک بن خرشه |
| ۲ ابو | ابوالدرداء | عويمر بن عامر انصاري | ۲۸ | أبومحذورة | اوس وقيل سمره بن معبرة |
| ۳ ابو | ابوسعيد الخدري | سعد بن مالک انصاری | 44 | ام حبيبة | رمله بنت ابی سفیان (ام المؤمنین) |
| ٤ ايو | ابوهريره | عبدالرحمان بن صخو | | | نفيع بن الحارث |
| ه ابو | ابو موسىٰ الاشعرى | عبدالله بن قبيس | ۲۱ | ابوبرزه | فضله بن عبيد السلمي |
| ٦ ابو | ابو ذر الغفاري | جندب بن جناده | 77 | آبى اللحم | خلف بن عبدالملک |
| ۷ ااب | ا بو طلحه | زید بن سهل انصاری | 74 | لهوامامة الباهلي | صدی بن عجلان باهلی |
| ۸ ابو | ابوجحيفه | وهب بن عبدالله العامري | 4.5 | ابوامامة انصاري | سعد بن سهل انصاری |
| ۹ ابو | ابووائل | شقیق بن سلمة اسدی | ٣٥ | ابر ایوب انصاری | خالد بن زید انصاری |
| ً ١ ابو | ابوحمزه | محمدبن ميمون يشكري | ٣٦ | ابوالزناد | عبدالله بن ذكوران |
| ۱۱ عب | عبدان | عبدالله بن عثمان بن جبله | ۲۷ | اعرج | عبدالرحمان بن هرمز |
| ۱۲ مق | مقبرى | سعید بن ابی سعید | ٣٨ | عمرو بن شعب عن ليه عن جله | عمرو بن شعيب بن محمد بن عبدالله |
| ١٢ اء | اعمش | سليمان | 44 | ابو اسامة | حماد بن اسامه |
| ۱٤ ابو | ايو مسعود | عقبه بن عمر و انصاري | ٤٠ | ابن ابی ملیکه | عبيدالله بن عبدالله بن ابي مليكه |
| ه۱ ابو | ابوموثد ِ | كنّاز بن حصين | ٤١ | ابو تراب | على بن ابي طالب |
| ١٦ ابو | ابولبابه | رفاعه بن عبدِالمنذر انصاري | ٤٢ | سيف الله | خالد بن وليد |
| ۱۷ ابو | ابوقتاده | حارث بن ربعی انصناری | ٤٣ | اسدالله | حضرت على الله |
| ۱۸ ابو | ابر قحافه | عثمان بن عامر (والدابي بكرٌ) | ٤٤ | ذوالنورين . | عثمان بن عفان |
| ۱۹ ابو | ابوالعاص | مقسم بن الوبيع | 6 | خشيدى | عبدالله بن زبير بن عيسى |
| ۲۰ ابو | ابوعبيده بن الجراح | عامر بن عبدالله بن الجراح الفهري | ٤٦ | ابوعبدالله | محمد بن اسماعیل بخاری |
| ۲۱۰ دو | ذو اليدين | خِوْباق | ٤٧ | ابوالاسود | محمد بن عبدالرحمٰن بن نوفل |
| ۲۲ ابو | ابوبرده | هانتی بن نیار | ٤٨ | سيدالشهداء | حضرت حمزة |
| ۲۳ ابر | ابو الطفيل | عامر بن واثله ليثي | ٤٩ | اوزاعى | عبدالرحمن |
| ۲۲ ام | ام هانی | فاخته بنت ابي طالب | ٥. | ابوبُرده | عامر بن قيس |
| | ام سلمةً | هند بنت ابي امية (ام المؤمنين) | ٥١ | ابوجندل | عاص بن سهل |
| ۲٦ ابو | ابو ظالب | عبدمناف بن عبدالمطلب | | , | |
| | | | | | |

﴿ تم بعون الله تعالى الجزء الاول من الخير السارى في تشريحات البخاري ويتلوه الجزء الثاني ان شاء الله تعالى نسأل الله الاعائة والتوفيق لاتمامه »